असुर

पराजित की कहानी
रावण और उसके लोगों की कहानी

आनंद नीलकंठन

ASURA

TALE OF THE VANQUISHED

The Story of Ravana and His People

ANAND NEELAKANTAN

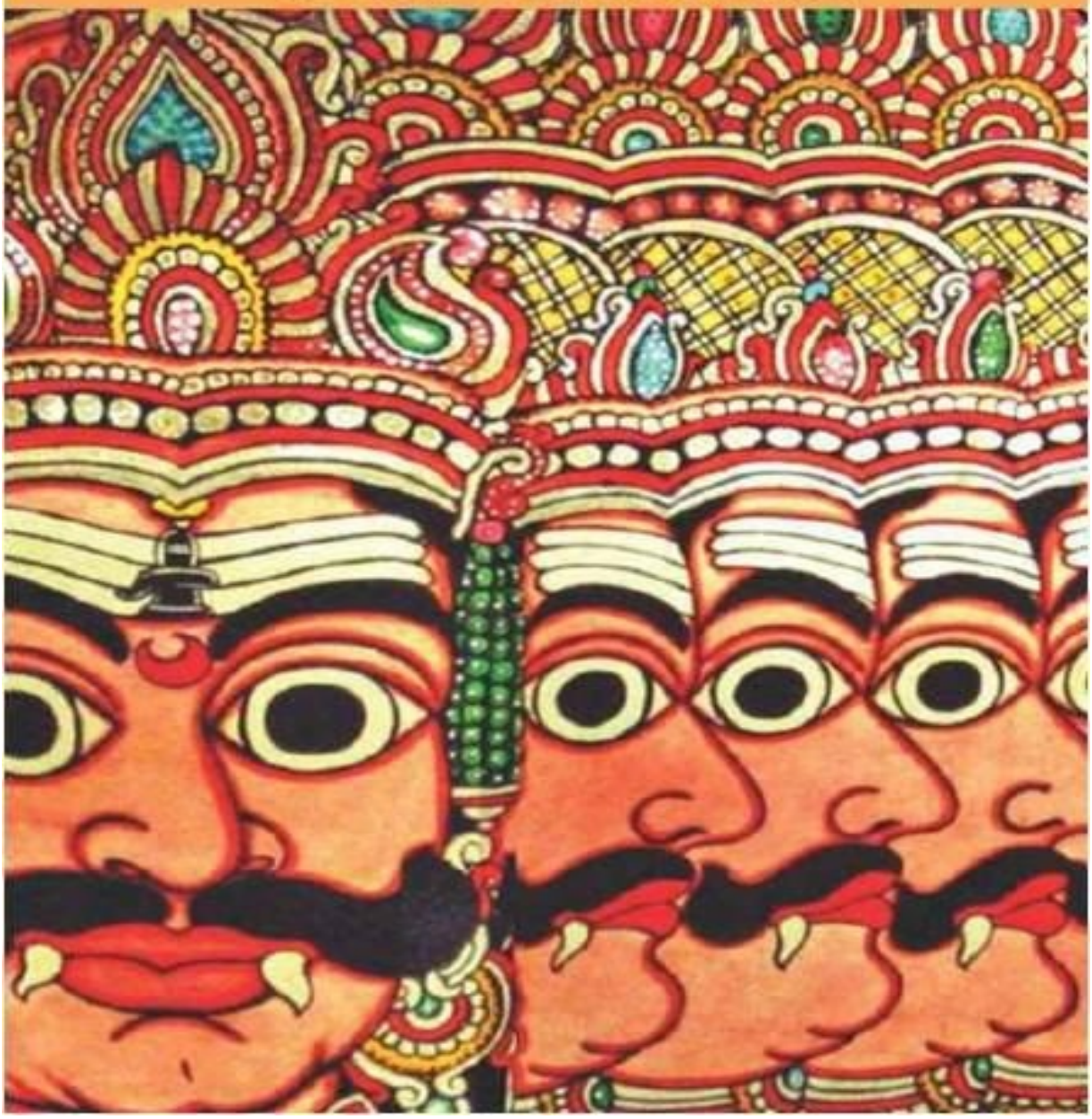

□□□□

□□□□□□□□□ □□ □□□□□

□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□

□□□□ □□□□□□□

PLATINUM PRESS

ISBN 978-93-81576-05-2
© कहानी: आनंद नीलकांतन, 2012
© चित्र: लीडस्टार्ट पब्लिशिंग, 2012 इलस्ट्रेशन एम्पलक्रिएशन स्टूडियो कवर डिजाइन: मिष्टा रॉय लेआउट्स लेआउट्स अजय शाह
प्रिंटिंग रीप्रो इंडिया लिमिटेड
भारत में प्रथम प्रकाशन 2012 में हुआ।
प्लैटिनम प्रेस
एक छाप
लीडस्टार्ट पब्लिशिंग प्राइवेट लिमिटेड
ट्रेड सेंटर, लेवल 1, बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स
बांद्रा (ई), मुंबई 400 051, भारत
T + 91 22 40700804 F +91 22 40700800
ई info@leadstartcorp.com डब्ल्यू www.leadstartcorp.com
अमेरिकी कार्यालय
एक्सिस कॉर्प, 7845 ई ओकब्रुक सर्कल, मैडिसन, विस्कॉन्सिन 53717, संयुक्त राज्य अमेरिका
पूरे विश्व में सर्वाधिकार सुरक्षित
इस प्रकाशन का कोई भी भाग प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से (इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्य) पुनरुत्पादित, संग्रहीत या पुनर्प्राप्ति प्रणाली में डाला या प्रसारित नहीं किया जा सकता है। इस प्रकाशन के संबंध में कोई भी अनधिकृत कार्य करने वाला व्यक्ति आपराधिक अभियोजन और क्षतिपूर्ति के लिए दीवानी दावों का पात्र हो सकता है।
अस्वीकरण
यह एक विशुद्ध काल्पनिक रचना है। इसमें चित्रित सभी पात्र काल्पनिक हैं और जीवित या मृत वास्तविक व्यक्तियों से कोई भी समानता केवल संयोगवश है। लेखक ने कहानी को प्रभावी बनाने के लिए प्रतिष्ठित नामों, तिथियों और घटनाओं का उपयोग किया है। इसका उद्देश्य किसी अन्य बात का संकेत देना नहीं है। इस पुस्तक की विषयवस्तु पूरी तरह से इसके लेखक की अभिव्यक्ति और विचार

है, और यह उनकी कल्पना की उपज है, और इसमें किसी भी प्रकार की धार्मिक प्रामाणिकता का दावा नहीं किया गया है। यह रचना प्रकाशक के विचारों का प्रतिनिधित्व नहीं करती है, न ही उनका किसी भी प्रकार से समर्थन करती है। प्रकाशक इस रचना में प्रयुक्त जानकारी की पूर्णता या सटीकता के संबंध में कोई प्रतिनिधित्व या वारंटी नहीं देता है। पाठकों से अनुरोध है कि वे ध्यान रखें कि यह रचना काल्पनिक है और किसी भी प्रकार की धार्मिक या आध्यात्मिक शिक्षा या प्रचार का दावा नहीं करती है।

मेरे माता-पिता को,

दिवंगत श्री एनटी>एल. नीलकांतन और
चेल्लम्मा नीलकांतन,
किसने जादुई दुनिया के द्वार खोले?
मेरे लिए भारतीय पौराणिक कथाओं का यही अर्थ है।

लेखक के बारे में
मेरा जन्म केरल के कोचीन के बाहरी इलाके में स्थित त्रिपुनिथुरा नामक एक छोटे से सुरम्य गाँव में हुआ था। मुख्य भूमि एर्नाकुलम के पूर्व में, वेम्बनाड झील के पार स्थित, इस गाँव को कोचीन राजपरिवार की राजधानी होने का गौरव प्राप्त था। हालाँकि, यह गाँव अपने सौ से अधिक मंदिरों, यहाँ से निकले विभिन्न शास्त्रीय कलाकारों और अपने संगीत विद्यालय के लिए अधिक प्रसिद्ध था। मुझे कई शामें मंदिरों से आती हुई चेंडा की मधुर ध्वनि और संगीत विद्यालय की खुरदरी दीवारों से छलकती बांसुरी की धुनें सुनने में बिताई हुई याद हैं। लेकिन खाड़ी देशों के धन और तेजी से बढ़ते कोचीन शहर ने उस पुराने जमाने के आकर्षण के सभी निशान मिटा दिए हैं। यह गाँव एक आम, साधारण, उपनगरीय नरक में बदल गया है, जिसकी नकलें पूरे भारत में फैली हुई हैं।
एक ऐसे गाँव में पले-बढ़े जहाँ ज़रूरत से ज़्यादा मंदिर थे, इसलिए रामायण का मेरे लिए आकर्षण होना कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। विडंबना यह है कि मैं महाकाव्य के खलनायक रावण और उसके असुरों की ओर आकर्षित हुआ। मैं उनकी जादुई दुनिया के बारे में जानने के लिए उत्सुक रहता था। लेकिन मेरा यह आकर्षण कई वर्षों तक सुप्त रहा, और पारिवारिक समारोहों में अपनी धर्मनिष्ठ चाचियों को चिढ़ाने और परेशान करने के लिए ही कभी-कभार उभरता था। जीवन चलता रहा... मैं इंजीनियर बना; इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन में नौकरी की; बैंगलोर चला गया; अपर्णा से शादी की और मेरी बेटी अनन्या और बेटे अभिनव का जन्म हुआ।
लेकिन असुर सम्राट ने मेरा पीछा नहीं छोड़ा। छह वर्षों तक वह मेरे सपनों में आता रहा, मेरे साथ चलता रहा और मुझे कहानी का अपना संस्करण लिखने के लिए प्रेरित करता रहा। वह अकेला नहीं था जो कहानी का अपना संस्करण सुनाना चाहता था। रामायण के एक-एक करके, महत्वहीन और गौण पात्र भी अपने-अपने संस्करण लेकर आते रहे। भद्र, जो रावण द्वारा प्रेरित, निर्देशित और धोखा दिए गए कई साधारण असुरों में से एक था, उसकी भी अपने राजा की कहानी से अलग एक अनोखी कहानी थी। और इन दोनों की कहानियाँ उस रामायण से भिन्न हैं जिसे पिछले तीन सहस्राब्दियों में एशिया भर में हजारों अलग-अलग तरीकों से सुनाया गया है। यही है असुरयान, असुरों की कहानी, पराजितों की कहानी। आनंद नीलकांतन से mail@asura.co.in पर संपर्क किया जा सकता है।

Dasamukha

रावण को दस मुखों वाला क्यों दर्शाया जाता है?
दस सिरों और बीस भुजाओं वाले रावण की छवि, जो सर्वोच्च खलनायक के रूप में है, प्रत्येक भारतीय और भारतीय पौराणिक कथाओं के विद्वानों के लिए परिचित है, लेकिन वास्तव में बहुत कम लोग जानते हैं कि उसे इस तरह क्यों चित्रित किया जाता है। पारंपरिक भारतीय ज्ञान भावनाओं पर नियंत्रण को महत्व देता है और केवल बुद्धि को ही सर्वोच्च शक्ति मानता है। महान राजा
महाबली रावण को क्रोध, अहंकार आदि नौ अन्य निम्न भावनाओं से दूर रहने की सलाह देते हैं।
ईर्ष्या; खुशी; उदासी; भय; स्वार्थ;
जुनून और महत्वाकांक्षा। केवल बुद्धि ही पूजनीय है। भारतीय
आध्यात्मिक गुरुओं ने हमेशा ही बाधाओं को दूर करने की आवश्यकता पर बल दिया है।
उन्होंने 'स्वयं' की भावना को हानिकारक माना है और इन भावनाओं को नुकसानदेह समझा है।
आत्मा का उत्थान।
लेकिन महाबली को दिए अपने उत्तर में रावण इन दस रूपों के होने का औचित्य सिद्ध करता है और उन पर गर्व करता है, क्योंकि ये उसे पूर्ण मनुष्य बनाते हैं। पौराणिक कथाओं में रावण को दशमुख, यानी दस मुखों वाला बताया गया है, जबकि उसकी बीस भुजाएँ पराक्रम और शक्ति का प्रतीक हैं। रावण स्वयं को पूर्ण मनुष्य का प्रतीक मानता है; वह न तो पवित्रता का दिखावा करता है और न ही सामाजिक एवं धार्मिक मानदंडों से बंधा है। वह किसी भी मनुष्य के समान अच्छा या बुरा है, और प्रकृति ने मनुष्य को जैसा बनाया है, वैसा ही है। समाज उसके अन्य नौ रूपों को नियंत्रित नहीं कर पाता, जैसा कि राम के मामले में होता है। इसलिए राम को भगवान माना जा सकता है, लेकिन रावण अधिक पूर्ण मनुष्य है। हमारे महाकाव्यों में रावण के दस सिरों का उपयोग एक ऐसे व्यक्ति के प्रतीक के रूप में किया गया है जो अपनी भावनाओं पर नियंत्रण नहीं रख पाता – जीवन को पूरी तरह से जीने और उसका आनंद लेने के लिए उत्सुक रहता है।
प्राचीन भारत अपने चरम पर

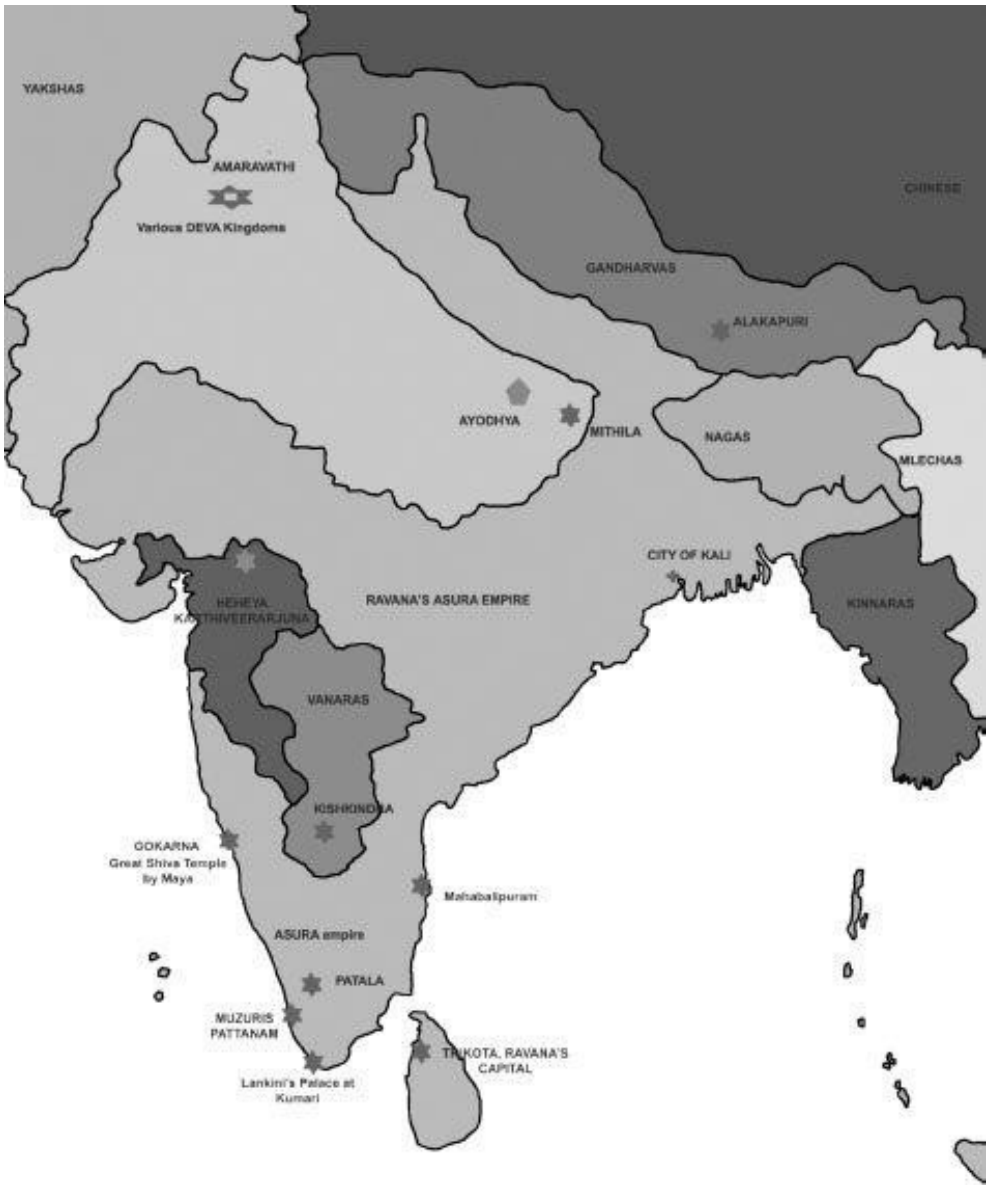

रावण का असुर साम्राज्य

YAKSHAS
AMARAVATHI
Various DEVA Kingdoms
CHINESE
GANDHARVAS
ALAKAPURI
AYODHYA
MITHILA
NAGAS
MLECHAS
CITY OF KALI
HEHEYA
KARTHIVEERARJUNA
RAVANA'S ASURA EMPIRE
KINNARAS
VANARAS
KISHKINDHA
GOKARNA
Great Shiva Temple
by Maya
Mahabalipuram
ASURA empire
PATALA
MUZURIS
PATTANAM
TRIKOTA, RAVANA'S
CAPITAL
Lankini's Palace at
Kumari

सामग्री

1 अंत
2 बीज
3 बंदी
4 गुरु
5 Dasamukha, the ten-faced
6 शैतान का छापा
7 हारने वालों की गाथा
8 महाराजा
9. प्रिय मरीचा
10. मोतियों का द्वीप बुला रहा है 11 गद्दार
12 प्रतीक्षा
13 लंका का स्वागत
14 विश्वासघात
15 जहरीले पेय
16 समुद्री डाकुओं की घेराबंदी 17 मीठी ज़बान वाले
18 भाई का भाई
19 समुद्री डाकुओं की समस्याएँ 20 शादी की घंटियाँ
21 खुशहाल परिवार
22 क्रांतिकारी
23 क्रांति घर लौट आई
24 एक क्रांतिकारी की मृत्यु 25 एक छोटा कीड़ा
26 अछूत राजा
27 अंततः प्रेम!
28 एक असुर राजकुमारी

29 [illegible]

[illegible] 30 [illegible]

31 [illegible]

32 [illegible]

33 [illegible]

34 [illegible]

35 [illegible]

36. [illegible]

37 [illegible]

38 [illegible]

39 [illegible]

40 [illegible]

41 [illegible]

42 [illegible]

43 [illegible]

44 [illegible]

45 [illegible]

46 [illegible]

47 [illegible]

48 [illegible]

49 [illegible]

50 [illegible]?

51 [illegible]

52 [illegible]

53 [illegible]

54 [illegible]

55 [illegible]

56 [illegible]

57 [illegible]

58 [illegible]?

59 [illegible]

60 □□ □□□□ □□ □□□
61 □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□
62 □□□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□
63 □□□□□□ □□□□
64 □□□□ □□ □□□□□
65 □□□□□□
□□□□□□□
□□□□□□□□□□□

1 अंत
रावण
कल मेरा अंतिम संस्कार है। मुझे नहीं पता कि वे मुझे किसी बीमार कुत्ते की तरह दफनाएंगे या किसी सम्राट के योग्य अंतिम संस्कार करेंगे – एक पूर्व सम्राट के योग्य। लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मुझे सियार की खुरचने की आवाजें सुनाई दे रही हैं। वे मेरे दोस्तों और परिवार को खाने में व्यस्त हैं। मेरे पैरों के ऊपर से कुछ सरक गया। वह क्या था?
मुझे मृत्यु से डर नहीं लगता। मैं कुछ समय से इसके बारे में सोच रहा हूँ। पिछले कुछ दिनों में हज़ारों लोग मारे गए हैं। समुद्र की गहराइयों में कहीं मेरा भाई कुंभा मृत पड़ा है, जिसे शार्क ने आधा खा लिया है। मैंने कल अपने बेटे मेघनाद की चिता जलाई थी। या परसों? मुझे समय का कोई आभास नहीं है। मुझे कई चीजों का आभास नहीं है।
ब्रह्मांड की गहराइयों में एक अकेला तारा सुलग रहा है। मानो ईश्वर की आँख हो। बिल्कुल शिव की तीसरी आँख की तरह, जो सब कुछ भस्म कर देने वाली और सब कुछ नष्ट कर देने वाली है। मेरी प्यारी लंका नष्ट हो रही है। मैं अब भी उस शहर की बुझती हुई चिंगारियों को देख सकता हूँ जो कभी एक सुंदर नगर हुआ करता था। मेरी राजधानी त्रिकोटा दुनिया का सबसे महान शहर था। यह तब की बात है जब वानर-पुरुष आया और उसने इसे आग लगा दी। त्रिकोटा कई दिनों तक जलता रहा। दुकानें, घर, महल, पुरुष, स्त्रियाँ और बच्चे, सब कुछ जल गया। लेकिन हमने इसे फिर से बसाया। लगभग हर सक्षम पुरुष ने त्रिकोटा के पुनर्निर्माण में भाग लिया। फिर वानर-पुरुष अपने स्वामियों के साथ आए और सब कुछ नष्ट कर दिया। हनुमान ने हमारे साथ ऐसा किया। वानर-पुरुष हमारे लिए मृत्यु, विनाश और पराजय लेकर आया।

मैं उस पर ज्यादा सोचना नहीं चाहती। जब मेरे बेटे ने उसे पकड़ा था, तभी मुझे उसे मार देना चाहिए था। लेकिन मैंने अपने छोटे भाई की बात मान ली, जिसने मेरे खिलाफ साजिश रची। पर असुरों के लिए राजद्रोह और विश्वासघात कोई नई बात नहीं है। मैं भोली थी। मैंने मूर्खता से यह मान लिया था कि मेरे भाई और मेरी प्रजा हमेशा मुझसे प्यार करेंगे। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मेरे साथ विश्वासघात होगा। मुझे हंसी आ रही है। पर जब किसी की आंतें माला की तरह बिखरी पड़ी हों, तो हंसना आसान नहीं होता।
मेरे शहर से खुशी की आवाज़ें मुझ तक पहुँच रही हैं। दुश्मन अपनी जीत का जश्न मना रहा है। बंदर जैसे दिखने वाले लोग त्रिकोटा को लूटने में व्यस्त होंगे। मेरे मंदिर लूटे जाएँगे; अन्न भंडार जला दिए जाएँगे और स्कूल-अस्पताल जला दिए जाएँगे। जीत की पार्टियाँ ऐसी ही होती हैं। जब विजय की देवी मेरी संगिनी थीं, तब हमने कई देव गाँवों के साथ ऐसा ही और इससे भी बुरा किया था। कुछ बदसूरत बंदर मेरे हरम में घुस आए होंगे। आशा है मेरी रानी कुछ भी होने से पहले किसी चट्टान से कूदकर जान बचा लेंगी। अब मैं कुछ भी नियंत्रित नहीं कर सकता। मुझे अपने चेहरे पर मौत की गर्म साँस महसूस हो रही है। सियार आ गए हैं। वे मेरे शरीर का कौन सा हिस्सा सबसे पहले खाएँगे? शायद मेरी आँतें, क्योंकि उनसे अभी भी खून बह रहा है। क्या होगा अगर मेरे कवच का कोई हिस्सा किसी सियार का गला घोंट दे? यह सोचकर मुझे हँसी आ जाती है। एक सियार मेरे गाल में अपने दाँत गड़ाता है और मांस का एक टुकड़ा फाड़ देता है। बस। मैं यह शर्त भी हार गया। उन्होंने मेरे चेहरे से शुरुआत की है। चूहे मेरे पैर की उंगलियों को कुतर रहे हैं।
मैं, रावण, बहुत दूर से आया हूँ। अब मेरे पास लड़ने के लिए कुछ नहीं बचा; सिवाय सियारों के साथ इस युद्ध के। कल, सड़कों पर जुलूस निकलेगा। वे मेरा सिर एक खंभे पर उठाएंगे और उन्हीं सड़कों से घुमाएंगे जहाँ से मैं अपने राज रथ में सवार होकर गुजरा था। मेरी प्रजा इस तमाशे को भय और विकृत आनंद के साथ देखने के लिए उमड़ पड़ेगी। मैं अपनी प्रजा को भली-भांति जानता हूँ। यह एक भव्य तमाशा होगा।
एक बात जो मेरी समझ से परे है, वह यह है कि मेरे गिरने के बाद राम क्यों आए और मेरे ऊपर खड़े हो गए। वे वहाँ ऐसे खड़े थे मानो मुझे आशीर्वाद दे रहे हों। उन्होंने अपने भाई से कहा कि मैं संसार का सबसे ज्ञानी पुरुष और महान राजा हूँ और मुझसे शासन कला सीखी जा सकती है। मैं लगभग ज़ोर से हँस पड़ा।

मैंने इतना अच्छा शासन किया था कि मेरा साम्राज्य मेरे चारों ओर बिखर गया था। मुझे अपने सैनिकों के जलते हुए शवों की गंध आ रही थी। मुझे अभी भी अपने मेघनाद का ठंडा और बेजान शरीर अपनी बाहों में महसूस हो रहा था। सुलगते त्रिकोटा की तीखी हवा ने मेरी इंद्रियों को जकड़ लिया था। मैं अपनी प्रजा को इन दो योद्धाओं और उनके वानर-पुरुषों से नहीं बचा सका। और वे कह रहे थे कि मैं एक महान शासक था? मैं इस विडंबना को समझ सकता था। मैं अपने शत्रु पर हँसना चाहता था; उन मूर्ख पुरुषों पर हँसना चाहता था जिन्होंने मुझ पर भरोसा किया था और जो अब मेरे चारों ओर सिर-पैर कटे और बेजान पड़े थे। मैं उन सभी मनुष्यों के लिए समानता के आदर्शवादी सपनों पर हँसना चाहता था जिन पर मैंने एक साम्राज्य खड़ा किया था। यह वाकई हास्यास्पद था। लेकिन एक सम्राट के लिए मरने का यह कोई तरीका नहीं था। मैंने कड़ी मेहनत की है और देवताओं और उनके चुने हुए लोगों से लड़ाई लड़ी है। मुझे संदेह है कि हंसते- हंसते मरने वालों के लिए स्वर्ग में कोई जगह होगी।

□□□ □□□□□ □□, □□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□, □□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□ □□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□, □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□? □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□, □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□ □□ □□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□?

मैं उसका चेहरा देखना चाहता हूँ। मैं उसकी आँखों में देखना चाहता हूँ, जो मेरे अंतिम क्षणों में भी अडिग और स्थिर हैं। उस सिर और घुंघराले बालों में कुछ ऐसा है जो मुझे मेरे अतीत की याद दिलाता है। क्या मैं उसे जानता हूँ? वह झुकता है और मेरे चेहरे को देखता है। आह! यह भद्र है। मेरा मित्र, शायद इकलौता बचा हुआ मित्र, लेकिन मुझे नहीं पता कि मैं उसे अपना मित्र कह सकता हूँ या नहीं। वह मेरा सेवक था, शुरुआत में एक सिपाही। फिर वह कहीं रास्ते में खो गया। वह मेरे जीवन में आता-जाता रहा, कभी-कभी तो सालों तक गायब ही रहा। जब मैं एक ऐसी सेना का मुखिया था जो क्रांतिकारी सेना की बजाय सड़क किनारे लुटेरों के गिरोह जैसी लगती थी, तब भद्रा को मेरे निजी शिविर तक पहुँच प्राप्त थी। फिर, जब मैं एक छोटे से द्वीप का राजा था, तब उसे मेरे निजी कक्षों तक पहुँच प्राप्त थी। अंत में, जब मैं भारत पर शासन कर रहा था, तब उसे मेरे शयनकक्ष तक पहुँच प्राप्त थी। इससे भी बढ़कर, भद्रा को मेरे मन के उन अँधेरे कोनों तक पहुँच प्राप्त थी, जिन्हें मैंने अपने भाइयों, अपनी पत्नी, अपनी प्रेमिका, अपनी प्रजा और यहाँ तक कि स्वयं से भी छिपा रखा था। भद्रा यहाँ क्या कर रहा है? लेकिन मुझे आश्चर्य क्यों हो रहा है? यह तो उसी जैसे लोगों के लिए सही जगह है जो छुपकर घूमते हैं। मुझे उसके रोने की आवाज़ सुनाई दे रही है। क्या भद्रा भावुक हो रहा है? वह कभी गुस्सा, दुखी या खुश नहीं होता था। वह अभी ऐसा दिखावा कर रहा है जैसे बहुत भावुक हो। लेकिन मैं जानती थी कि उसके अंदर कोई भावना नहीं है। और भद्रा को यह भी पता था कि मैं जानती हूँ।
“भद्रा, मुझे यहाँ से ले चलो। मुझे वहाँ ले चलो…” मेरी हिम्मत जवाब दे गई। सच कहूँ तो, मुझे नहीं पता कि शब्द सचमुच मेरे मुँह से निकल गए या मेरे गले में कहीं अटक कर खामोश हो गए। भद्रा ने अपना सिर हिलाया। मुझे ठंड लग रही थी, बहुत ज़्यादा ठंड। मेरी जान निकल रही थी। फिर भद्रा ने मेरा सिर अपने सीने से लगा लिया। मुझे उनके पसीने की गंध आ रही थी। दर्द हर तरफ से मुझमें दौड़ गया और अपनी ज़हरीली फूँकें मेरी नसों में फैला दीं। मैं कराह उठी। भद्रा ने मुझे गीली ज़मीन पर लिटा दिया, जो मेरे खून से भीगी थी, मेरे लोगों के खून से, मेरे सपनों के खून से और मेरे जीवन के खून से। सब खत्म हो गया था। उदासी और खालीपन का एहसास मुझ पर छा गया।
“महाराज, मैं आपका काम पूरा करूँगा। चिंता मत कीजिए। शांति से जाइए। मैं यह अपने वंश के लिए करूँगा। मेरे तरीके आपके तरीकों से अलग, यहाँ तक कि नीच

भी हो सकते हैं। मैं भी कभी योद्धा था, लेकिन अब बूढ़ा हो गया हूँ। अब मुझे हथियारों से डर लगता है। मैं युद्ध से भयभीत हूँ। मैं एक बच्चे को भी चोट नहीं पहुँचा सकता। फिर भी, मेरे तरीके घातक हैं। मैं आपके, अपने और अपने शापित वंश के लिए बदला लूँगा। राम ने हमारे साथ जो किया है, उसके लिए वह बरी नहीं होगा। मुझ पर विश्वास कीजिए और शांति से जाइए।”
भद्रा की कही हुई अधिकतर बातें मैंने नहीं सुनीं। फिर भी, अजीब बात यह थी कि मुझे शांति मिली और मैं उस दुर्गंधयुक्त असुर से दूर होकर अपने बचपन की यादों में खो गया। हजारों छवियां मेरे सामने उमड़ पड़ीं। मेरे शुरुआती संघर्ष, प्रेम और बिछड़ने का दर्द, वियोग, युद्ध और लड़ाइयाँ, संगीत और कला, ये सब मेरे मन में बिना किसी क्रम के, अर्थहीन रूप से कौंध गए। अर्थहीन, जीवन की ही तरह।
मुझे महसूस हुआ कि भद्रा ने मेरे पैर छूकर प्रणाम किया और फिर चले गए। “भद्रा…” मैं चाहता था कि वे वापस आएं और मुझे किसी डॉक्टर के पास ले जाएं जो मेरी आंतें ठीक कर दे, मेरी लटकती हुई बाईं आंख को उसकी जगह पर लगा दे और किसी तरह मेरे शरीर में जान डाल दे। मैं मुख्य भूमि के सह्यास वनों में जाकर गुरिल्ला युद्ध शुरू करना चाहता था, जैसा महाबली ने वर्षों पहले किया था। मैं फिर से शुरुआत करना चाहता था। मैं वही गलतियां दोहराना चाहता था, उन्हीं लोगों से प्यार करना चाहता था, उन्हीं दुश्मनों से लड़ना चाहता था, उन्हीं दोस्तों से दोस्ती करना चाहता था, उन्हीं पत्नियों से विवाह करना चाहता था और उन्हीं बेटों को जन्म देना चाहता था। मैं वही जीवन फिर से जीना चाहता था। मुझे स्वर्ग में राम द्वारा मेरे लिए आरक्षित स्थान नहीं चाहिए था। मुझे केवल अपनी सुंदर पृथ्वी चाहिए थी।
मुझे पता था कि ऐसा नहीं होने वाला। मैं साठ साल का था, सोलह का नहीं। अगर मैं ज़िंदा रहा, तो किसी सड़क किनारे मंदिर में एक आँख वाला, गंदा, बूढ़ा भिखारी बनूँगा, बदबूदार, फटे-पुराने कपड़े पहने। अपने पुराने रूप से बहुत दूर। मैं अभी मरना चाहता था। मैं चाहता था कि यह सब खत्म हो जाए। मैं दूर चला जाऊँ। जलते हुए शहर अपनी देखभाल खुद करें। असुर अपने युद्ध लड़ें और देवताओं के साथ नरक में जाएँ। मैं बस अपने बचपन में लौटना चाहता था और फिर से सब कुछ शुरू करना चाहता था, बार-बार, बार-बार...

2 बीज

रावण
मानसून की हवा पहाड़ की चट्टान पर लटकी छोटी सी झोपड़ी के चारों ओर बवंडर की तरह चल रही थी। गरजती हवा का एक और धक्का लगता तो झोपड़ी नीचे प्यासी काली धाराओं में गिर जाती। तब हम मौत के छोटे-छोटे कणों की तरह किनारे पर आ जाते। काश ऐसा ही अंत हो जाता। लेकिन यह तो अंत की शुरुआत थी। क्या मैं इतिहास के पन्नों से यूं ही मिट जाऊंगी? क्या मेरा मिशन असफल होना तय था? तब मुझे पता नहीं था, लेकिन मेरा जन्म किसी और की नियति को पूरा करने के लिए हुआ था। किसी और को ईश्वर बनने देने के लिए।
तीन भाई-बहनों और एक उदास माँ के साथ सिमटकर बैठी मैं अपने सौतेले भाई के जगमगाते महल को देख रही थी। वह काफी पास था, फिर भी एक अलग ही दुनिया था। मैं वहाँ एक बार गई थी, अपनी गरीब, काली माँ की शॉल के पीछे छिपी हुई, मेरे छोटे भाई मेरी उंगलियाँ खींच रहे थे। मेरी बहन माँ के कंधे पर एक पुराने गंदे चिथड़े की तरह बेजान पड़ी थी, थकी-हारी और भूखी। हम गरीब थे, बेहद गरीब। हमारे पास सिर्फ गरीबी, भूख और शर्म ही बहुतायत में थी।
आख़िरी हताशा में, माँ हमें घसीटकर अपने सौतेले बेटे कुबेरा के सामने भीख मांगने ले गई, जो तमाम दौलत का मालिक और दुनिया का सबसे अमीर आदमी था। महल की चकाचौंध और धन-दौलत की घिनौनी गंध में, हम भीख का कटोरा लेकर वहाँ खड़े रहे। हमें भीख के तौर पर कुछ सोने के सिक्के मिले, और साथ ही मेरे सौतेले भाई की पत्नियों की तिरस्कार भरी निगाहें भी। हमारी ज़रूरतें मामूली थीं और उसका समय इतना कीमती था कि वह हम पर बर्बाद नहीं करना चाहता था। बस एक इशारा, कुछ सिक्के, और फिर उसने हमारे बारे में सोचना बंद कर दिया। जब तक

आत्मा को धीरे-धीरे जकड़ लेता है। फिर भी, हम कभी भी धर्म के मार्ग से नहीं भटके। न्याय के प्रति हमारी समझ विद्वानों और विशेषाधिकार प्राप्त लोगों की समझ से भिन्न थी। हमने अपने तरीके से ही न्याय का निर्धारण किया और अपने अधिकारों को परिभाषित किया। हमने सीखा कि सत्य को अपने स्वार्थ के अनुसार मोड़ा जा सकता है। हमारा धर्म सरल बातों पर आधारित था: मनुष्य को अपने वचन का पालन करना चाहिए; उसे दिल से बोलना चाहिए और ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिए जिसे वह गलत समझे। धोखा नहीं देना चाहिए, चाहे असफलता निश्चित ही क्यों न हो। स्त्री का सम्मान करना चाहिए और किसी का अपमान नहीं करना चाहिए। यदि कहीं अन्याय होता, तो हमें हर कीमत पर उसका विरोध करना होता था। हमें प्राचीन असुर या देव संतों की महान शिक्षाओं का कोई ज्ञान नहीं था। हमने किसी परंपरा का पालन नहीं किया। हम लगभग नाजायज संतान थे।
अगले दिन हम इस द्वीप को छोड़कर जा रहे थे। मैंने सुना था कि उत्तर में महान राष्ट्र हैं। मैं भारत के कोने-कोने की यात्रा करूंगा। मैं हिमालय के बर्फ से ढके पहाड़ों पर चढ़ना चाहता था, मानसून की भीषण गर्मी में उग्र गंगा की खतरनाक धाराओं के विपरीत तैरना चाहता था। मैंने विंध्य और सह्य पर्वतों के घने जंगलों से गुजरने और वानर मानवों तथा यक्षों और किन्नरों के राज्य को देखने का सपना देखा था। मैंने गंधर्वों के संगीतमय संसार में होने का सपना देखा था। ओह, क्या अद्भुत संसार है जिसे जीतना है! क्या आनंदमय जीवन है! एक दिन रावण दुनिया पर राज करेगा। विशाल हिमालय से लंका तक, नहीं, लंका से हिमालय तक; मैं दुनिया पर राज करूंगा; सबके लिए न्याय, शांति और समृद्धि के साथ।
मेरे असंख्य सपनों की छाया में, एक छोटा सा संदेह मंडरा रहा था। क्या ये खूबसूरत सपने महज़ भूख से पैदा हुए भ्रम थे? हो सकता है मैं आज मर जाऊं, काली लहरों के स्पर्श में और गरजती धाराओं के साथ बह जाऊं। हो सकता है मेरा जीवन कुछ पल के लिए ही गुज़रे और फिर घोर सन्नाटे में समाप्त हो जाए। तब कौन जानेगा मेरे दिल में छिपी मेरी भावनाओं और महत्वाकांक्षाओं को? कौन जानेगा कि मैंने अपने लोगों के लिए क्या-क्या गौरवशाली सपने देखे थे? मेरा जीवन नीचे उफनते काले पानी के झाग जैसा होगा, ऊपर उठता हुआ, निरंतर फैलता हुआ, अभी है और फिर अज्ञात में विलीन हो जाएगा।
मेरी माँ के आँसुओं ने मेरी आत्मा में गहरा घाव कर दिया। वह चाहती थी कि हम बाहर जाकर दुनिया जीतें, फिर भी वह हमें अपने पास भी रखना चाहती थी। शायद,

उसने मेरी आँखों में जलती आग देखी और हमें न रोकने का फैसला किया। जब मैंने पीछे मुड़कर देखा, तो मेरी माँ फटे-पुराने कपड़ों में झुकी हुई सी मेरी बदसूरत बहन को गले लगाए खड़ी थी। वह हमारे लिए सबसे सुंदर बच्ची थी, लेकिन जब मैंने उसे उस निष्पक्षता की भावना से देखा जो मेरी माँ ने हममें पैदा की थी, तो मुझे अनिच्छा से अपने पिता की इस बात से सहमत होना पड़ा कि मेरी बहन अब तक देखी गई सबसे बदसूरत प्राणी थी। मुझे उस बयान के लिए उनसे नफरत हुई। मुझे उनसे और भी ज़्यादा नफरत इस बात के लिए हुई कि यह सच था।
मेरे सौतेले भाई के महल का चौकीदार अपने दोस्तों के साथ समुद्र तट पर बैठा था। हम तीनों किशोरों को कैटामरान चलाने में संघर्ष करते देख वे ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगे और हमारी मौत की कामना करने लगे। उन्होंने मेरी माँ का अपमान भी अश्लील गीतों से किया। मेरा मन कर रहा था कि मैं उनका गला घोंट दूँ! लेकिन मैंने अपनी माँ से वादा किया था कि जब तक मुझे दुनियादारी की समझ और अपनी शक्ति का सही और निष्पक्ष उपयोग करना नहीं आ जाता, तब तक मैं हिंसा का सहारा नहीं लूँगी। मैंने अपनी नम आँखों से दूर तटरेखा को देखा – वहीं इस क्रूर दुनिया में मेरी सफलता की उम्मीद थी, मेरी दुनिया और मेरे गुरु। मैं और मेरे भाई घने, सदाबहार सह्या वन से होकर गुज़रे। हमने भव्य महल और बंदरगाह देखे; हाथीदांत, चंदन, मोर और बंदर देखे। हमने बहुरंगी पाल वाले जहाज़ देखे जो दूर-दूर के देशों की ओर जा रहे थे, सोने, हीरे, काली मिर्च और मसालों से लदे हुए। हमने ऐसे मंदिर देखे जहाँ देवता निवास करते थे और मनुष्यों की मेहनत से कमाई गई आय का एक हिस्सा माँगते थे। और हमने उन देवताओं के प्रतिनिधियों को भी देखा जो भगवान के नाम पर लूटपाट करते थे। शहर सूर्य के समान चमकीली रोशनी से जगमगा रहे थे और वहाँ की स्त्रियाँ स्वर्ग की स्त्रियों के समान सुंदर थीं। मैंने गर्व, ईर्ष्या और क्रोध की मिली-जुली भावनाओं के साथ उन जहाज़ों को देखा जिन पर मेरे सौतेले भाई के झंडे लहरा रहे थे।
हम जिस भी शहर में जाते, कुबेरा के उद्यमों का एक कार्यालय होता था। वह द्वीप पर स्थित अपने महल से एक सुव्यवस्थित व्यापारिक साम्राज्य चलाते थे। घुड़सवार संदेशवाहक उनके व्यापारिक साझेदारों और व्यापारिक संघों को महत्वपूर्ण पत्र पहुंचाते थे। उनके पास 130 से अधिक जहाज थे, जो ग्रीस, मिस्र और चीन के लिए रवाना होते थे। मुझे पूरा विश्वास था कि अगर हम खुद को कुबेरा के भाई-बहन बताते, तो उनकी कई इकाइयों के किसी भी कनिष्ठ प्रबंधक ने

हमें अपने स्वर्ण-कढ़ाई वाले कार्यालयों में स्वागत किया होता। लेकिन मैं ऐसा बिल्कुल नहीं करना चाहता था।
मैं अपने सौतेले भाई के किसी भी दफ्तर में क्लर्क बनकर आराम से जीवन बिता सकती थी। इससे मेरे परिवार को कम से कम दिन का एक वक्त का खाना तो मिल ही जाता। लेकिन मैं अपने सौतेले भाई की आँखों में उस उबकाई को कैसे भूल सकती हूँ जब उसने हमें कुछ सोने के सिक्के देकर अपने महल से निकाल दिया था? मैं उसके व्यापारिक साम्राज्य में एक मामूली नौकरी के लिए खुद को नीचा दिखाने के बजाय भूख से मरना पसंद करती। शायद यह झूठा घमंड था। कई समझदार लोगों ने ऐसा कहा है, दुनिया में आगे बढ़ने के लिए व्यावहारिक होना और अपने मामूली जीवन में जो कुछ भी मिले, उससे संतुष्ट रहना जरूरी है। लेकिन मैं एक सपने देखने वाली थी। और मैं इस दुनिया में बस गुज़ारा नहीं करना चाहती थी। मैं इस पर राज करना चाहती थी। हमारे लोग इतने दब्बू और विनम्र क्यों थे? यह एक ऐसा सवाल था जिसके बारे में मैं हमेशा सोचती रहती थी। सत्ता और धन पर कुछ ही लोगों का नियंत्रण क्यों था जबकि बाकी लोग उनकी चापलूसी करते थे, और यहाँ तक कि इस छोटे से स्वार्थी गिरोह को खुद पर और अपने बच्चों पर अत्याचार करने में मदद करने के लिए अपनी जान तक दे देते थे? क्या यह डर था? मुझे नहीं पता। लेकिन जहाँ भी मैंने देखा, मुझे सिर्फ अत्याचार ही नजर आया। धन, जाति, रीति-रिवाज, परंपराएं, मान्यताएं और अंधविश्वास - इन सभी ने मिलकर गरीब बहुसंख्यक वर्ग को कुचलने की साजिश रची। क्या जीने का कोई अधिक न्यायसंगत तरीका नहीं हो सकता था?
जैसे ही मैंने 'क्यों' पूछना शुरू किया, मुझे उग्र स्वभाव का करार दिया गया। मेरे पिता के ब्राह्मण मित्रों ने एक बार मुझे गाँव से निकालने की कोशिश की, यह कहते हुए कि मुझ पर बुरी आत्माओं का साया है और मैं एक राक्षस हूँ। शायद मैं बहुत छोटा और उतावला था और दुनिया के प्रति मेरा नजरिया अभी अनुभव से परिपक्व नहीं हुआ था। मेरे सबसे छोटे भाई विभीषण को छोड़कर, जो हमेशा शांत रहता था, बाकी सब में मुझे वही बेचैनी दिखाई देती थी। मुझे लगता था कि विभीषण थोड़ा नासमझ है। लेकिन वह सच में नासमझ था। जब हम बड़े हो रहे थे, तब वह हमारे गाँव का लाडला था। वह किताबों में लिखी हर बात मानता था और कभी कोई सवाल नहीं पूछता था। कई बार मुझे लगता था कि विभीषण इस समाज के लिए सबसे उपयुक्त है और वह जीवन में बहुत कुछ हासिल करेगा। और मुझे वह पसंद भी

था। वह इतना छोटा और नाज़ुक था और मुझे हमेशा लगता था कि उसे इस क्रूर दुनिया से बचाने की ज़रूरत है।
मुझे आत्मविश्वास की सख्त ज़रूरत थी। मैं भी आम तौर पर बुद्धिमान नहीं था। मैं विभीषण की तरह वेदों का उल्टा पाठ नहीं कर सकता था। वैसे भी, मैं वेदों को सरासर बकवास समझता था और उन्हें किसी भी तरह से पढ़ने से कोई फर्क नहीं पड़ता था। मेरे पिता जैसे किसी बेरोज़गार ब्राह्मण ने हज़ारों साल पहले इन्हें बनाया था। ब्राह्मणों ने उपयोगी होने के बजाय, खुद के बनाए देवताओं से बारिश, सूरज, घोड़े, गाय, धन और कई दूसरी चीज़ों के लिए प्रार्थना की। वे जिस भी शापित जगह से आए होंगे, वहाँ बहुत ठंड रही होगी। वरना, सैकड़ों तरह की टहनियाँ आग में डालने के बाद वे मेंढकों की तरह टर्राकर देवताओं से प्रार्थना क्यों करते?
शायद मैं पूर्वाग्रही था। मुझे यह नहीं सोचना चाहिए था कि यज्ञ के रूप में वे जो काम कर रहे थे, वह व्यर्थ था। वास्तव में, यह पैसा कमाने और भौतिक सुख-सुविधाएँ प्राप्त करने का एक उत्तम साधन था। ये ब्राह्मण मूर्ख नहीं थे। वे जानते थे कि टहनियाँ जलाने जैसे साधारण कार्यों को भी कैसे पृथ्वी को हिला देने वाली वैज्ञानिक खोजों के रूप में प्रस्तुत करना है और दावा करते थे कि वे संसार को नियंत्रित करने वाली शक्तियों को वश में कर सकते हैं। और यह हास्यास्पद था कि बढ़ई, राजमिस्त्री और किसान जैसे अधिकांश लोग, जो कुछ सार्थक काम कर रहे थे, इन मसखरों के सामने गिड़गिड़ाने लगे थे, जो चिलचिलाती धूप में, चेहरे से पसीना बहाते हुए, धधकती आग के सामने न जाने क्या-क्या जप रहे थे।
उनके यहाँ हर छोटी-बड़ी बात के लिए यज्ञ या पूजा होती थी। अगर आपको कुष्ठ रोग या सर्दी-जुकाम होता, तो कोई न कोई देवता होता जिसे प्रसन्न करने के लिए विशेष पूजा अर्पित करनी पड़ती थी। अगर आप चाहते कि आपकी झगड़ालू पत्नी आपके परेशान करने वाले पड़ोसी के साथ भाग जाए, तो उसके लिए भी पूजा होती थी। अगर आप चाहते कि आपकी गाय बछड़ा दे या आपकी पत्नी को पुत्र हो, तो ब्राह्मण आपकी मदद करता। वह बस एक पूजा करता और दिव्य बछड़ा या पुत्र जन्म ले लेता। आप ब्राह्मणों की कृपा पा लेते और आपका पुत्र सोलह वर्ष की आयु तक दुनिया का सबसे बड़ा पंडित बन जाता। अगर ऐसा नहीं होता, तो शायद वह मेरी तरह उद्दंड हो जाता, जो ब्राह्मणों या रीति-रिवाजों का सम्मान नहीं करता था। वह राक्षस बन जाता। मुझे लगता है कि अब हमारे बीच कई और राक्षस हैं।

शायद, ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि 'क्यों?' का वायरस फैल गया। क्या ब्राह्मण ऐसी पूजा नहीं कर सकते थे जिससे हमारे दिमाग से पापी विचार दूर हो जाएँ? यह एक ऐसा विषय है जिस पर मुझे समय मिलने पर विचार करना होगा।
मैं जहाँ भी जाता हूँ, मुझे ऐसे धोखेबाज़ मिलते हैं जो ईश्वर से सीधा संपर्क होने का दावा करते हैं और लोगों को ठगते हैं। यह अजीब है कि प्राचीन काल के राजा अचानक भगवान कैसे बन गए। उनका विशेष देवताओं में रूपांतरित होना और भी मज़ेदार है। मैं नास्तिक नहीं हूँ। मैं ईश्वर में दृढ़ विश्वास रखता हूँ और अपनी भौतिक और आध्यात्मिक उन्नति के लिए हमेशा प्रार्थना करने को तैयार रहता हूँ। लेकिन
मेरे लिए, ईश्वर एक बहुत ही व्यक्तिगत चीज है और प्रार्थना को चुपचाप अपने दिल में बोलना पड़ता है।

3 बंदी

रावण
असुर जातिविहीन समाज थे और उनकी व्यवस्था अत्यंत लोकतांत्रिक थी, जहाँ राजा के बजाय निर्वाचित परिषद के पास वास्तविक सत्ता थी। वे घुमंतू जनजाति थे, जो अपने जीवनयापन के लिए शिकार और लूटपाट करते थे, लेकिन लगभग 2000 वर्ष पूर्व, वे नदी के किनारे बसे शहरों और कस्बों में बस गए। कहा जाता है कि असुर साम्राज्य में सड़कें सोने से बनी थीं। उन्होंने कितना विशाल साम्राज्य बनाया था! यह पश्चिम में सिंधु नदी से पूर्व में ब्रह्मपुत्र तक और उत्तर में हिमालय से दक्षिण में नर्मदा तक फैला हुआ था। यह उस समय पृथ्वी का सबसे बड़ा साम्राज्य हो सकता था। जब मिस्र के राजा अपने लिए विशाल मकबरे बनवाने में व्यस्त थे, तब असुर साम्राज्य की

में चित्रित किया जाता था, जिन्होंने छल और जादू-टोने से एक उच्च-संस्कृत और विकसित सभ्यता को पराजित और नष्ट कर दिया।
लेकिन असुरों ने पलटवार किया। उन्होंने अपनी खोई हुई भूमि को पुनः प्राप्त करने के लिए दक्षिण से युद्ध छेड़ा। उन्हें कभी-कभार विजय प्राप्त हुई और कई बार तो उन्होंने पूरे भारत पर अपना प्रभुत्व भी जमा लिया। हालांकि, बौद्धिक युद्ध में वे हार रहे थे। उत्तर-पश्चिम से आने वाली जनजातियाँ अपनी जड़ों से भटकने लगी थीं और असुरों के साथ उनका मेल-मिलाप शुरू हो गया था। उन्होंने महान असुर देवता शिव को चुरा लिया। गुरु ब्रह्मा भी उनके देवता बन गए। हालांकि, सबसे प्रमुख देवता जो अचानक प्रकट हुए, वे थे विष्णु। ब्राह्मण, जो देवताओं के आधिकारिक पुजारी थे, उन्होंने जटिल अनुष्ठानों की रचना शुरू की। उन्होंने पाया कि असुर नगरों की मुख्य शक्ति उनकी बहुसांस्कृतिक संस्कृति थी। असुर स्वतंत्र लोग थे। उनकी उर्वर कल्पना ने शिव को एक ऐसे प्रिय देवता के रूप में प्रस्तुत किया जो कुछ भी नहीं मांगते थे, और उनकी पूजा करने के लिए किसी अनुष्ठान की आवश्यकता नहीं थी। वे असुरों के मित्र, चचेरे भाई, पुत्र, पिता, या जो कुछ भी कल्पना की जा सकती है, सब कुछ थे। कई नगरों में, शिव को पौरुष और उर्वरता का जश्न मनाने के लिए लिंग के रूप में चित्रित किया गया था।
शहरों पर विजय प्राप्त करने और मंदिरों को नष्ट करने के बाद, ब्राह्मणों ने विजित लोगों से एक देवता की पूजा करने की मांग की।
देवों की राजधानी अमरावती, पाताल के सामने फीकी पड़ जाती थी – जो निर्वासन में असुरों की अस्थायी राजधानी थी। सरस्वती नदी के मुहाने पर बसा एक विशाल शहर अमरावती अब एक जर्जर, पुरानी झुग्गी बस्ती बनकर रह गया था। इसका निर्माण माया सभ्यता के असुर वंश ने किया था, जो नगर निर्माण में माहिर थे। कला और वास्तुकला, नगर नियोजन, उद्यान और मनोरंजन केंद्र, मंदिर और रंगमंच से संबंधित लगभग सभी उपलब्ध पुस्तकें उन्हीं के द्वारा लिखी गई थीं। जब देव उत्तरी मैदानों में बस गए, तो उन्होंने कुछ बिखरे हुए शहर बसाना शुरू किया और अपनी कला और वास्तुकला की एक शाखा स्थापित की। लेकिन विश्वकर्मा वंश माया सभ्यता के सामने फीका पड़ गया, हालांकि उन्होंने माया सभ्यता की पुस्तकों से कई विचार लिए थे। जहाँ तक मैंने सुना है, उन्होंने उत्तर की नदियों के किनारे कुछ झुग्गी बस्तियाँ ही बनाई थीं। मिथिला और अयोध्या शायद उनके सबसे अच्छे शहर रहे होंगे। नारद जैसे घुमंतू भिक्षुओं के

वृत्तांतों के अनुसार, जो एक पक्के झूठे थे, ये शहर साफ-सुथरे थे और उत्तरी मैदानों में बहुतायत में पाए जाने वाले अन्य शहरों की तरह झाड़ियों से भरे हुए नहीं थे।
मैंने पहले कभी इतना उत्तर की ओर यात्रा नहीं की थी, लेकिन जहाँ भी गया, अशांति ही अशांति देखी। देव साम्राज्य लगातार गुरिल्ला युद्ध के दबाव में धीरे-धीरे बिखर रहा था। मुझे दूर से ही एक बड़े विद्रोह की आहट सुनाई दे रही थी। वर्षों से पराजित असुर जनजातियाँ भयंकर युद्ध लड़ रही थीं, लेकिन असुर क्षेत्र को पुनः प्राप्त करने में वे केवल आंशिक रूप से ही सफल हो पाई थीं। कुछ वर्षों के लिए, केरलपुत्र जनजाति के महाबली जैसे व्यक्तियों ने असुरों के मृत सपनों में कुछ जान फूंकी, जिन्होंने लगभग 18 वर्षों तक पूरे भारत पर अपना प्रभुत्व जमाया, या दक्षिण-मध्य भारत में कथित रूप से अजेय जुड़वाँ, हिरण्यकसुपु और हिरण्याक्ष ने। लेकिन वे सब जल्द ही पराजित हो गए।
आरंभ में, असुरों के पास श्रेष्ठ युद्ध रणनीतियाँ, युद्ध यंत्र बनाने में कुशल अभियंता और वीरतापूर्वक युद्ध का नेतृत्व करने वाले महान सेनापति और राजा थे। परन्तु देवताओं की धूर्तता और उनके ही लोगों के विश्वासघात ने यह सुनिश्चित कर दिया कि असुर विजय के मुँह से पराजय छीन लें। यह स्पष्ट था कि असुरों में एकता का अभाव था। श्रेष्ठता की होड़, झूठा अभिमान, अपनी शक्तियों पर अतिविश्वास और निश्चित रूप से, यह विश्वास कि देवता निष्पक्ष रूप से युद्ध लड़ेंगे; एक ऐसी बात जिस पर देवता हमेशा विश्वास तो करते थे लेकिन शायद ही कभी अमल करते थे, ने यह सुनिश्चित किया कि असुर जनजाति भारत के निर्जन वनों में 1000 वर्षों तक भटकती रहे।
और फिर विभिन्न जनजातियों का आपस में मेलजोल शुरू हुआ। कोई भी वास्तव में शुद्ध देव या असुर रक्त होने का दावा नहीं कर सकता। गहरे काले असुरों का मेल गोरे देवों से हुआ, जिनका मेल विभिन्न रंगों के लोगों से हुआ, जिनमें गंधर्वों का पीला रंग, किन्नरों का शुद्ध सफेद रंग और यक्षों का घोर काला रंग शामिल था। नीली आँखों वाली घोर काली देव कन्या या पीले रंग की त्वचा और भूरे बालों वाले असुर पुरुष का मिलना असामान्य नहीं था। न ही एक ही परिवार में कोयले जैसे काले रंग के भाई, भूरी आँखों और सीधे बालों वाली बहन, काली आँखों और लहराते बालों वाली गोरी बहन और पीले रंग की त्वचा और घुंघराले काले बालों वाले एक और भाई का होना असामान्य माना जाता था। मैं स्वयं गोरे

थी। गरीबी, बीमारी, अकाल और विपत्ति ने कभी प्रसिद्ध रहे शहरों को तबाह कर दिया था। मुजुरिस और कावेरीपट्टिनम जैसे कुछ बंदरगाहों की वास्तुकला की भव्यता और फलते-फूलते व्यापार को छोड़कर, अधिकांश असुर घोर गरीबी में जी रहे थे, उनमें कोई आशा या आत्मसम्मान नहीं था। धन कुछ ही लोगों के पास केंद्रित था, जैसे मेरे सौतेले भाई कुबेर के पास। सैन्य नेतृत्व बिना किसी योजना या रणनीति के, देवों, आदिवासियों, वानरों के साथ मूर्खतापूर्ण युद्धों में अपना समय बर्बाद कर रहा था, और अक्सर आपस में ही लड़ रहा था। हमने पूर्णा नदी पार की। जंगल घना और स्थिर पड़ा था, लताओं और लताओं के घने कोहरे में लिपटा हुआ। मैं थोड़ा आशंकित था। ये जंगल विभिन्न असुर जनजातियों के गुरिल्लाओं के छिपने के स्थान बन चुके थे। हमने आगे बढ़ने का फैसला किया, लेकिन अचानक ही सशस्त्र पुरुषों के एक समूह ने हमें घेर लिया। जिस कुशलता से उन्होंने हमें घेरा था, उसे देखकर मैं दंग रह गया। बीस तपे हुए धनुष तीर चलाने के लिए तैयार थे। मैंने कुंभकर्ण को एक नज़र से रोक दिया। वह मूर्ख अपनी जंग लगी तलवार को फटी हुई म्यान से निकालने के लिए संघर्ष कर रहा था। मैं कायर नहीं था, लेकिन हम तीनों उन बीस धनुर्धारियों का मुकाबला नहीं कर सकते थे जिन्होंने हमें घेर रखा था। यह वीर बनने का समय नहीं था और मुझे नहीं पता था कि वे कार्तिकेयअर्जुन के पुलिसकर्मी थे या असुर गुरिल्ला लड़ाके। वे इतने काले थे कि देव नहीं हो सकते थे।
सफ़ेद बालों वाला एक हट्टा-कट्टा आदमी हमारे पास आया और अपनी तलवार मेरी गर्दन पर तान दी। एक और, जो काफ़ी छोटा था, हमारी तलाशी लेने लगा। मैं सोच रहा था कि क्या मैं उस आदमी के गुप्तांग पर लात मारकर उसका गला पकड़ सकता हूँ, तभी एक दूसरे आदमी ने अपनी तलवार की नोक विभीषण के गले के गड्ढे पर रख दी। मेरा बहादुर छोटा भाई सिसकने लगा। मैं स्थिति समझ गया और शांत रहा। मैंने खुद से कहा, यह वीरता दिखाने का समय नहीं है। फिर, बंधे हुए और आँखों पर पट्टी बाँधे हुए, हमें आधा घसीटते हुए और आधा आगे ले जाते हुए जंगल की घनी झाड़ियों के बीच से ले जाया गया।

4 गुरु
रावण
हम एक गुफा के अंदर कांपते हुए खड़े थे, किसी के प्रकट होने का इंतज़ार कर रहे थे। गुफा की गहराई से कुछ आवाज़ें आ रही थीं। अचानक सारी आवाज़ें बंद हो गईं और एक भयानक सन्नाटा छा गया। मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था और विभीषण को रोते देखकर मुझे शर्मिंदगी हुई। मुझे अपने छोटे भाई पर बहुत दया आई। वह दुनियादारी से कितना अनजान था!
फिर एक गहरी, गूंजती हुई आवाज़ ने आदेश दिया कि हमारी आँखों पर बंधी पट्टियाँ हटा दी जाएँ। जैसे ही पट्टियाँ हटाई गईं और हमारी आँखें गुफा के अंदर के अंधेरे में अभ्यस्त हुईं, हमने एक बहुत बूढ़े व्यक्ति को एक बड़ी पत्थर की कुर्सी पर बैठे देखा। वह हमें घूर रहा था। मैंने अपना सिर ऊँचा किया और उसे घूरकर देखा। धीरे-धीरे, पहले तो अदृश्य रूप से, लेकिन फिर उसके पूरे चेहरे पर एक मुस्कान छा गई। मानो किसी जादुई छड़ी से स्पर्श हुआ हो, वह कठोर और क्रूर दिखने वाला बूढ़ा व्यक्ति जोश और ऊर्जा से भर उठा। उसके चेहरे से एक ऐसी शांति झलक रही थी जिसे शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। उसकी मुस्कान में युगों का ज्ञान समाहित था। धीरे-धीरे मुझे पहचान हुई, वह महाबली थे!
ये थे महाबली, जो सभी असुर राजाओं में सबसे महान और शक्तिशाली थे। बुद्धिमान, बलवान, विद्वान, दयालु, सामाजिक न्याय के प्रवर्तक, धर्म के आदर्श – महाबली के नाम सुनते ही उनकी प्रशंसा के शब्द कम पड़ जाते हैं। लेकिन क्या मेरे मन में कहीं न कहीं थोड़ी सी अवमानना भी थी? महाबली ने शानदार सैन्य अभियान चलाए, अपने शत्रुओं को परास्त किया और एक महाद्वीप पर न्यायपूर्वक शासन किया, लेकिन उन्होंने अपना साम्राज्य खो दिया क्योंकि वे एक गरीब देव ब्राह्मण, वामन विष्णु को दिए गए वचन से मुकरना नहीं चाहते

उसके बूढ़े, थके-हारे चेहरे पर हल्की सी शिकन आ गई। उसके चौड़े माथे पर गहरी सोच की लकीरें थीं। और उसकी आवाज़ में एक अजीब सी ठंडक थी। “रावन, तुम्हारी बदनामी तुमसे पहले ही फैल चुकी है। मुझे पहले से ही शक था। मेरे मुखबिरों ने पिछले कुछ सालों में तुम्हारे कुकर्मों की खबर दी है। यह वाकई दुर्भाग्यपूर्ण है कि असुर जाति तुम्हारे जैसे निकम्मे और उतावले लोगों को पैदा करती है। तुम खुद को योद्धा कहते हो? लेकिन मेरे लड़के पिछले आठ दिनों से तुम्हारा पीछा कर रहे थे। पिछले एक हफ्ते में वे तुम्हारा गला कई बार काट सकते थे। और तुम खुद को योद्धा कहते हो! मुझे लगता है कि तुम्हारे मिश्रित रक्त का इस पूरी तरह से नाकामी से कुछ लेना-देना है। मसखरापन छोड़ो और अपने दिल में जल रही महत्वाकांक्षा के लायक बनो।”
मेरे भीतर क्रोध उमड़ आया। इस बूढ़े हारी हुई शख्स को मुझे डांटने का क्या हक था? फिर भी, मैं जानती थी कि वह सही कह रहा था। मैं क्रोधित थी क्योंकि यह सच था। मैं एक उदासीन विद्यार्थी थी। मेरी माँ चाहती थी कि मैं विश्व विजेता योद्धा बनूँ, लेकिन मेरे लापरवाह पिता मुझे ब्राह्मणों की ‘शिक्षा’ से भरना चाहते थे। क्या हम एक अच्छे शिक्षक का खर्च उठा सकते थे? क्या हमें अच्छे योद्धा बनने का अवसर मिला था? जीवन में सफल न होने के मेरे कई कारण थे। मैंने अपने गुस्से को फूटने से रोकने के लिए मुट्ठी भींच ली। मैंने उस सांसारिक जीवन को इसलिए छोड़ा क्योंकि मेरे भीतर कुछ बनने की प्रबल महत्वाकांक्षा थी। मैंने कुंभा को रस्सियाँ खोलने की कोशिश करते देखा। क्रोध से उसकी आँखें लाल हो गई थीं।
तब मुझे समझ आया। सम्राट तो बस मेरे धैर्य की परीक्षा ले रहे थे। शायद यही वो गुरु थे जिनकी मुझे तलाश थी। लेकिन मेरे भीतर क्रोध अभी भी सुलग रहा था। मैं इतनी आसानी से हार नहीं मानना चाहता था। मैं इतनी आसानी से वश में नहीं आ सकता था। मैंने उस व्यक्ति और उसके अहंकार को तिरस्कार भरी निगाहों से देखा। लेकिन मानो मेरी ज़बान मेरे पेट में धंस गई हो। मैं कुछ बोल नहीं पाया। महाबली से अपार शक्ति का प्रवाह हो रहा था। मुझे अचानक डर लग गया। और फिर मुझे एहसास हुआ; यही मेरे जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ था। मेरे मन में अनेकों भावनाएँ उमड़ पड़ीं और मैं सम्राट के सामने निर्घ्व खड़ा रह गया, बिल्कुल बेबस और नग्न। मैं महसूस कर सकता था कि उनकी निगाहें मुझे चिढ़ा रही थीं, चुनौती दे रही थीं, शांत कर रही थीं, डरा रही थीं।

“शायद तुम इस दुनिया के किसी काम आ सको। पहले तो मैंने तुम्हें उन निकम्मों में से एक समझा था जो उपेक्षित और वीरान असुर चौकियों में कीड़े- मकोड़ों की तरह फैले रहते हैं; जो यश के सपने देखते हैं और कुछ नहीं करते; जो अपने अतीत में खोए रहते हैं, चाहे वो वास्तविक हो या काल्पनिक, और खुद को और अपनी जाति को बचाने के लिए किसी चमत्कार की कामना करते हैं। लेकिन रावण, मुझे तुम्हारे अंदर एक चिंगारी दिखाई दे रही है, शायद छोटी सी ही सही, पर एक चिंगारी ज़रूर है, जो सही हवा मिलते ही भयंकर आग में बदल सकती है। मुझे नहीं पता, तुम हमारी दुखी प्रजा के लिए आशा हो या अभिशाप। तुम दोनों हो सकते हो और इससे भी कहीं बढ़कर हो सकते हो।”
इस बूढ़े व्यक्ति को यह एहसास हो रहा है कि तुम्हारे मन में एक महान महत्वाकांक्षा है और तुम अपने सपनों को पूरा किए बिना कहीं नहीं रुकोगे। तुम्हें पता नहीं है कि तुमने अपने बेचैन और लक्ष्यहीन मन में कितनी शक्ति दबा रखी है। मेरे मन में आशा की एक छोटी सी किरण जग रही है कि उचित प्रशिक्षण और मार्गदर्शन से तुम लाखों लोगों के उद्धारक बन सकते हो – उन लोगों के, जिन्हें रौंदा गया है, जिन्हें शून्यता के अधोलोक में धकेल दिया गया है। वही लोग जो एक निर्दयी शत्रु के पैरों तले कुचले जा रहे हैं। रावण, महाबली के पवित्र निवास में तुम्हारा स्वागत है। जितनी देर चाहो रहो, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात, सीखो। खुले मन से आओ और याद रखो कि इस स्थान पर तुम्हें बहुत कुछ सीखने को मिलेगा।
उस बूढ़े व्यक्ति का अपना ही अंदाज़ था। फिर अपने हाथों को हिलाते हुए और एक सौम्य मुस्कान के साथ, जिसके होंठों के कोने हल्के से व्यंग्य से हिल रहे थे, सम्राट ने हमें विदा कर दिया।
जब हम एक दुबले-पतले, लहराती सफेद दाढ़ी वाले व्यक्ति के पीछे-पीछे उस विशाल गुफा से गुज़र रहे थे, तो मैं महाबली के बारे में सोचता रहा। महाबली का पतन हास्यास्पद था। उसमें वह गौरव और वीरता नहीं थी जो उनसे पहले के अन्य महान असुर साम्राज्यों के पतन में थी। प्रसिद्ध जुड़वां भाइयों हिरण्य और हिरण्याक्ष के महान असुर साम्राज्य ने लगभग पूरे भारत पर अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया था, जब हिरण्य को एक जंगली सूअर ने सींग मारकर मार डाला। हिरण्याक्ष को उसके पुत्र प्रहलाद ने धोखा दिया था, जिसने देवों के राजा इंद्र के साथ मिलकर षड्यंत्र रचा था।

प्रहलाद एक कमज़ोर राजा था और उसका साम्राज्य जल्द ही बिखर गया। उसने भारी कर लगाकर देश को बर्बाद कर दिया। खेती-बाड़ी और पशुपालन पूरी तरह से ठप हो गए, व्यापारिक संघ पलायन कर गए और कला का अंत हो गया। इसी बीच, एक नया खतरा सामने आया – परशुराम नाम का एक पागल ब्राह्मण, जो बदले की भावना से प्रेरित था, उसने गुंडों का एक गिरोह बनाकर दक्षिण में आतंक मचाना शुरू कर दिया। अराजकता और आगजनी फैल गई और उसके गुंडे पूरे देश में खौफ का कारण बन गए। वे महलों में घुसकर उन्हें लूटते, उनमें रहने वालों का कत्ल करते और शहरों में आग लगा देते थे। परशुराम जब भी किसी राज्य पर विजय प्राप्त करता, वह यह सुनिश्चित करता कि ब्राह्मण सर्वोच्च पदों पर आसीन हों। मलायन या वन्नन जैसे पूर्व पुरोहितों को शहरों से निकालकर गांवों में भेज दिया गया। अक्षम राजा प्रहलाद ने भारी कीमत चुकाकर परशुराम से शांति प्राप्त की और असुर सामाजिक व्यवस्था में ब्राह्मणों का वर्चस्व सुनिश्चित किया। प्रहलाद की मृत्यु के बाद महाबली के सिंहासन पर बैठने से एक बड़ा बदलाव आया। इंद्र ने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि प्रहलाद को ऐसा पोता मिलेगा। एक दशक के भीतर ही महाबली ने इंद्र के साम्राज्य को उखाड़ फेंका और कुछ ही वर्षों में पूरे उपमहाद्वीप पर विजय प्राप्त कर ली। यह तब की बात है जब कार्तिकवीरअर्जुन ने पश्चिमी तट पर आदि द्रविड़ साम्राज्य की पुनः स्थापना भी नहीं की थी और शक्तिशाली वानर राजा बलि का जन्म भी नहीं हुआ था। अगले 20 वर्षों तक महाबली ने वैभवपूर्ण शासन किया और असुर कला एवं संगीत अपने चरम पर पहुँच गए। बड़े-बड़े नगरों का निर्माण हुआ और व्यापार में ज़बरदस्त उछाल आया। दुनिया उनके दरवाज़े पर आ गई। उन दिनों के बारे में मैंने कितनी ही शानदार बातें सुनी हैं! हमारे गाँवों के बुजुर्ग उन दिनों की बातें करना कभी नहीं छोड़ते थे – वे दिन जिन्हें, मेरे विचार से, ज़रूरत से ज़्यादा महिमामंडित कर दिया गया है।
विभीषण बूढ़े आदमी से बातचीत करने की कोशिश कर रहा था। लेकिन वह केवल घुरघुराहट और फुफकार के अलावा कुछ नहीं बोल रहा था। जब हम एक कोने पर पहुँचे, तो बूढ़ा आदमी अचानक रुक गया और हमारी ओर मुड़ा। “ये तुम्हारे सोने के कमरे हैं। कल से हम पढ़ाई शुरू करेंगे।”
इससे पहले कि हम उसे धन्यवाद दे पाते, वह चला गया। हम वहीं लेटे-लेटे अपने भविष्य के बारे में सोचने लगे। मैं अपनी माँ और बहन के बारे में सोचती रही। मुझे उम्मीद थी कि कहीं कोई तूफान हमारी छोटी सी झोपड़ी को खाई में न गिरा

5 Dasamukha, the ten-faced
रावण
लंबी दाढ़ी वाले उस बूढ़े ने हमें भोर में जगाया और पास के एक पहाड़ी झरने पर ले गया ताकि हम सुबह के काम निपटा सकें। उस समय वह बहुत बातूनी था, मानो उसे अचानक पता चल गया हो कि उसे कोई कहानी सुनानी है और हम उसे सुनने के लिए उत्सुक हैं। “लोग मुझे ब्रह्मा कहते हैं। यह मेरे परिवार का उपनाम है। शिक्षा हमारे खून में है, और हम प्राचीन काल से गुरु रहे हैं। ज्ञान परिषद में चार गुरु थे, और वे हर साल असुर साम्राज्य के विभिन्न हिस्सों में फैले सैकड़ों विद्यालयों के पाठ्यक्रम तय करते थे। हमने ही असुर जगत की रचना की, जैसा कि हम आज जानते हैं। मेरे परिवार ने ही कानून बनाए और उन्हें देवताओं के रूप में पूजा जाता था। शिव के परिवार के साथ, जिन्होंने सिंधु नदी के किनारे बसे महान साम्राज्य के समय से ही खेतों, संपत्ति और पशुओं की रक्षा की, और समाज में उनकी भूमिका के कारण उन्हें पशुपति कहा जाता था, हमने एक सभ्यता का विकास किया।”
वह बड़बड़ाते हुए बोले, “फिर देवों का आक्रमण शुरू हुआ। इंद्र का पहला कार्य हमारे शहरों, विद्यालयों, मंदिरों – प्रगति को बढ़ावा देने वाली हर चीज़ को जला देना था। उस समय हमने माया सभ्यता के वास्तुकार और अभियंता संघ के सहयोग से प्रौद्योगिकी में बहुत प्रगति की थी। हमने पुष्पक नामक एक उड़ने वाली मशीन भी विकसित कर ली थी। हालाँकि, उसका केवल एक प्रोटोटाइप ही बना था। आक्रमण ने सब कुछ बदल दिया। परिवार के मुखिया और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के प्रभारी चौथे सदस्य, हमलावर बर्बरों के पहले पीड़ितों में से थे और उनके साथ ही असुर विज्ञान का भी अंत हो गया। माया सभ्यता के प्रमुख अपनी उड़ने वाली मशीन में ऐन मौके पर बच निकले और उनके उत्तराधिकारियों की रक्षा अब आपके सौतेले भाई कर रहे हैं, जिन्होंने

पुष्पक उड़ने वाली मशीन के प्रोटोटाइप पर कब्ज़ा कर लिया है। मुझे नहीं पता कि मनुष्य को आकाश पर पुनः प्रभुत्व प्राप्त करने में कितने सदियाँ लगेंगी।”
मेरे पूर्वज शस्त्र और सैन्य उपकरण निर्माण में विशेषज्ञ थे। कला, शिल्प और संगीत में निपुण ब्रह्मा परिवार गंधर्व साम्राज्य के संरक्षण में है। महान वानर राजा बलि ने वास्तुकला के ब्रह्मा शिक्षकों की रक्षा की और मध्य भारत में महान नगरों का निर्माण करवाया। देवताओं में विलीन हुए चौथे ब्रह्मा की जनजाति दार्शनिक प्रवचनों में निपुण थी। वे अब देवताओं के बौद्धिक गुरु हैं। इसलिए, यद्यपि मैं सभी संभव शाखाओं में ज्ञान प्रदान करूँगा, मैं विशेष रूप से शस्त्र और सैन्य रणनीति पर ध्यान केंद्रित करूँगा। योद्धाओं के रूप में, मेरा मानना है कि यही सबसे महत्वपूर्ण ज्ञान है जो आपके पास होना चाहिए।
उन्होंने हमारा ध्यान अपनी ओर खींच लिया। ब्रह्मा वंश के विकास के बारे में हमें कुछ-कुछ जानकारी थी, लेकिन यह जानकर आश्चर्य हुआ कि हमारे सामने पालथी मारकर बैठे वह बुजुर्ग व्यक्ति वास्तव में इतने प्राचीन ज्ञान के वाहक थे। वे किसी महान गुरु जैसे बिल्कुल नहीं दिखते थे। वे साधारण, कद में छोटे और गंजे थे, और उनका पेट निकला हुआ था। लेकिन उनकी लहराती सफेद दाढ़ी और आंखों की चमक ने उस बूढ़े और थके हुए रूप के नीचे छिपी प्रतिभा को उजागर कर दिया।
उस दिन से, जब सह्या पर्वतमाला पर सूर्योदय हुआ और हरे-भरे पहाड़ों से होकर बहने वाली भव्य पूर्णा नदी बैंगनी रंग की हो उठी, हमारे जीवन में एक नए युग का आरंभ हुआ। ब्रह्मा हमारे बिछड़े हुए पिता, हमारी खोई हुई माता, हमारे गुरु, हमारे ईश्वर, हमारे रक्षक थे। ब्रह्मा परिवार की पीढ़ियों से ज्ञान की खोज करने वालों द्वारा परिष्कृत ज्ञान अपने शुद्धतम रूप में उस वृद्ध पुरुष से प्रवाहित हुआ। इसने मुझे अपने वश में कर लिया और मंत्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने हमें लुप्त हो चुकी कलाएँ, विभ्रमित ग्रंथ सिखाए और सबसे बढ़कर, मेरी उपजाऊ लेकिन बेचैन आत्मा में ज्ञान की खोज का बीज बो दिया। उन्होंने ही मुझे प्रकृति के संगीत को सुनना सिखाया। उन्होंने मुझे पक्षियों के चहचहाने को सुनना सिखाया, उन्होंने मेरे मन को बहती हुई जंगली धाराओं की धुन पर नचाया, उन्होंने मेरे अंतर्मन को आकाश में ऊँची उड़ान भरते चील के साथ उड़ान भरने का अनुभव कराया। मैंने स्वयं को शुद्ध महसूस

है। यह भावना अनादिकाल से अनेक युद्धों, रक्तपात और आंसुओं का कारण रही है।
सुख और दुःख दिन और रात की तरह दो शाश्वत सत्य हैं। उच्च बुद्धि वाला व्यक्ति इन भावनाओं से कभी प्रभावित नहीं होता। ये तुच्छ भावनाएँ नहीं हैं, बल्कि हमारे विचारों का प्रतिबिंब हैं, हमारे देखे, सुने और किए गए कार्यों के प्रति हमारी दृष्टि की प्रतिक्रिया हैं। एक योद्धा के लिए समभाव न केवल वांछनीय है, बल्कि अनिवार्य है। इसके बिना, युद्ध के मैदान में आप मृत के समान हैं।
डर एक भावना नहीं, बल्कि एक बीमारी है। यह नेता से उसके अनुयायियों तक और इसके विपरीत भी फैलता है। युद्ध में डर से ज़्यादा किसी चीज़ ने जान नहीं ली। एक योद्धा को किससे डरना चाहिए? मौत से? लेकिन अंततः तो मौत ही तो सबकी नियति है। क्या तुम्हें ज़ख्मों से डर लगता है? ज़्यादा महत्वपूर्ण क्या है? तुम्हारे खून की एक बूंद या जीत का अमृत? सोचो। सोचने से ऐसे सारे संदेह दूर हो जाएँगे।
स्वार्थ से बढ़कर कोई भी चीज़ निंदनीय नहीं है। जो मनुष्य केवल अपने बारे में सोचता है, वह सबसे दुर्भाग्यशाली होता है। मनुष्य जन्म क्यों लेता है? क्या यह केवल पेट भरने और मोटा होने के लिए है? क्या यह सूअरों की तरह प्रजनन और वंशवृद्धि करने के लिए है? क्या यह इस पवित्र पृथ्वी को शारीरिक अपशिष्ट से दूषित करने और फिर संसार में कोई हलचल पैदा किए बिना मर जाने के लिए है? यदि उसका जीवन हमारे लोगों को कुचल रहे अंधकार में कम से कम एक छोटी सी रोशनी भी नहीं फैलाता, तो उसका जीवन किस अर्थ में है? रावण, स्वार्थ की इस घृणित भावना से घृणा करो।
प्रेम एक ऐसी जंजीर है जो आपको भ्रम के घड़े में जकड़ कर रखती है। एक योद्धा को केवल विजय पर ही ध्यान केंद्रित करना चाहिए। यही उसका एकमात्र धर्म होना चाहिए। अपने लोगों, माता-पिता, पत्नियों, बहनों, भाइयों और देवताओं के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करें, लेकिन उनसे कभी प्रेम न करें। प्रेम आपको कमजोर बनाता है। प्रेम के ऐसे अदृश्य बंधन होते हैं जो आपको उस महत्वपूर्ण क्षण में असफलता के अथाह गड्ढे में धकेल देते हैं जब विजय और असफलता का संतुलन बनता है। प्रेम से सावधान रहें।
अंत में, अपनी महत्वाकांक्षा पर नियंत्रण रखो। रावण, मैं तुम्हारी आँखों में धधकती महत्वाकांक्षा देख सकता हूँ। लेकिन लापरवाह मत बनो। जीवन

जवाब नहीं मिला है। लेकिन अब भी, जब चूहे और सियार मुझे जिंदा खा रहे हैं, मुझे यकीन है कि मैंने उस समय उनसे जो कहा था, वह सच था। मुझे आज भी उनके बूढ़े चेहरे पर हैरानी, फिर गुस्सा, और फिर असीम और अवर्णनीय उदासी के भाव दिखाई देते हैं। इसके बारे में सोचना भी मुझे दुख देता है, लेकिन मेरी जवानी ने ही मुझे आगे बढ़ने की हिम्मत दी थी।
महाराज, ये विचार तो प्रशंसनीय हैं, लेकिन आप जो मांग रहे हैं वह असंभव है। मुझे यह कहते हुए खेद है, लेकिन क्या सफलता के लिए मुझे जिन नौ भावनाओं या नौ चिंतनशील मस्तिष्कों को त्यागना होगा, वे व्यावहारिक हैं? मैं एक अच्छा विद्यार्थी हूँ और मैंने अपने पाठ अच्छे से सीखे हैं, लेकिन हर विषय पर मेरी अपनी राय हमेशा रहेगी। कृपया मुझे अहंकारी न समझें। मेरी बात सुनिए।
महाराज, आप क्रोध की बात कर रहे थे। मैं सहमत हूँ कि गलत दिशा में निर्देशित क्रोध हानिकारक हो सकता है। लेकिन क्या यह जीवन का मूलभूत भाव नहीं है? यदि मैं असुर जाति की दुर्दशा पर क्रोधित न होऊं, उस कभी शक्तिशाली जाति पर जिसने पृथ्वी पर अब तक की सबसे महान सभ्यता का निर्माण किया, तो मैं कैसे कह सकता हूँ कि मैं उसका योग्य पुत्र हूँ? क्या मैं क्रोधित नहीं हो सकता जब हजारों लोग देव राजाओं और उनके अधीन असुर राक्षसों के अत्याचारों के अधीन अमानवीय परिस्थितियों में जी रहे हैं? यदि मैं भूली हुई असुर कलाओं, ध्वस्त असुर धर्म, चूर-चूर असुर मंदिरों, नष्ट हुए असुर राज्यों और देव राजाओं और असुर हितों का प्रतिनिधित्व करने का दावा करने वाले तुच्छ सरदारों के सामने घुटने टेकने वाले कायरों के प्रति निराशा महसूस न कर सकूँ, तो मुझे बताइए, महाराज, मुझे कौन सा भाव महसूस करना चाहिए? क्या क्रोध ही वह शक्ति नहीं है जो मेरे विचारों को प्रज्वलित करके मुझे सकारात्मक कार्यों की ओर प्रेरित करेगी? मुझे क्षमा करें महाराज, लेकिन मैं इस भावनात्मक मस्तिष्क - क्रोध के मस्तिष्क - को कभी नहीं छोड़ पाऊंगा।
अहंकार और घमंड को क्यों तिरस्कार की दृष्टि से देखा जाए? मुझे अपने लोगों, अपनी जाति, अपनी संस्कृति, भाषा, कला और संगीत पर गर्व है। मुझे अपने अंदर अपार ऊर्जा और सफलता की प्रबल इच्छाशक्ति पर गर्व है। मेरा मानना है कि मनुष्य को हमेशा नम्र नहीं रहना चाहिए, भीख नहीं मांगनी चाहिए या शाश्वत गरीबी में नहीं जीना चाहिए, न ही उन सभी बातों पर विश्वास करना

चाहिए जिनका ब्राह्मण उपदेश तो देते हैं लेकिन उनमें से कोई भी उनका पालन नहीं करता।
अगर मैं जीवन में सफलता पाने के लिए कड़ी मेहनत करता हूँ, तो मुझे इस पर गर्व करने का पूरा अधिकार है, मुझे घमंड और विलासिता में डूबने का पूरा अधिकार है। पुराने समय के राजाओं ने बड़े-बड़े मंदिर और शहर क्यों बनवाए? अमीरों ने दान-पुण्य और धर्म के लिए क्यों काम किया? क्या यह सिर्फ अपना घमंड और अहंकार दिखाने के लिए नहीं था? ज्यादातर विनम्र लोग या तो पाखंडी होते हैं या फिर उनमें विनम्रता दिखाने के लिए बहुत कुछ होता है। सफलता से घमंड और अहंकार पैदा होता है। और सफलता का एकमात्र इनाम घमंड ही है। ईर्ष्या ही मानव जाति को प्रेरित करने वाली सबसे बड़ी शक्ति है। साम्राज्य आपस में प्रतिस्पर्धा क्यों करते हैं? राजा एक-दूसरे से आगे निकलने की होड़ क्यों लगाते हैं, अगर यह ईर्ष्या से प्रेरित न हो तो? ईर्ष्या ही प्रगति की प्रेरक शक्ति है, जलन ही जीवन की प्रेरणा शक्ति है। भोजन, आश्रय और यौन इच्छा जैसी मूलभूत शारीरिक आवश्यकताओं के बाद, महत्व की चाहत सबसे महत्वपूर्ण है। इन मूलभूत आवश्यकताओं की जड़ भी ईर्ष्या में ही निहित है। ईर्ष्या को नकारना मनुष्य की मूलभूत प्रवृत्तियों को नकारना है। क्षमा करें महोदय, लेकिन आपका प्रश्न अव्यावहारिक है।
आप सुख-दुख में समभाव की बात करते हैं। क्या यह कभी संभव है? जब मेरे प्रियजन इस दुनिया से चले जाएंगे, तो क्या मुझे शांत रहना चाहिए? क्या मुझे रोने से मिलने वाली सांत्वना से खुद को वंचित रखना चाहिए? अगर मैं खुशी महसूस करने में असमर्थ हो जाऊं, तो मेरा क्या होगा? अगर मुझे उगते सूरज की सुंदरता में खुशी न मिले, अगर मैं एक नन्हे बच्चे की मुस्कान में आनंद न पाऊं, अगर मैं संगीत के आनंद में खो न जाऊं, तो क्या जीवन जीने लायक है? डर मनुष्य और पशु दोनों की सबसे बड़ी प्रवृत्ति है, और आप मुझसे इसे अनदेखा करने को कहते हैं। महोदय, मुझे यह कहने में कोई डर नहीं है कि मैं डरा हुआ हूं। मैं कई चीजों से डरता हूं। मैं कायर नहीं हूं, लेकिन डर कहीं न कहीं मेरे दिल में सोया हुआ है। मैं मृत्यु से डरता हूं और उन लोगों से भी जो दावा करते हैं कि वे मृत्यु से नहीं डरते। वे या तो मूर्ख हैं और दूसरों को भी अपने साथ नीचे खींच लेंगे, या वे दुष्ट लोग हैं जो सभी से नफरत करते हैं।

मुझे कई चीज़ें खोने का डर है, भले ही वे कितनी ही बेकार क्यों न हों, लेकिन मैंने उन्हें अपने पसीने और खून से कमाया है। मुझे डर है कि मेरे प्रियजन बीमारी का शिकार हो सकते हैं। मुझे डर है कि कुछ लड़ाइयाँ मेरे वफादार भाइयों को छीन सकती हैं। तेज़ बारिश मेरी बहन और माँ को समुद्र में बहा ले जा सकती है। मैं हर साँस के साथ जानता हूँ कि मैं अपनी मृत्यु की ओर कदम बढ़ा रहा हूँ। लेकिन मैं डर से इतना नहीं डरता कि उसके अस्तित्व को ही नकार दूँ। यही डर मुझे उन खतरों का सामना करने के लिए तैयार रखता है जिनका मुझे सामना करना ही है। यही डर मुझे यह समझाता है कि कुछ चीज़ें ऐसी हैं जिन पर मेरा कोई नियंत्रण नहीं है और यह मुझे ईश्वर और स्वयं को समझने में मदद करता है।
आप स्वार्थ को नीच भावना कहते हैं। लेकिन यही वह गुण है जिसने दुनिया भर में महान शहरों का निर्माण किया है और महत्वाकांक्षा की नींव रखी है। क्या उच्च अहंकार और इस दुनिया के खजाने हासिल करने की इच्छा के बिना कोई जीवन में सफल हो सकता है? जब मैं किसी सुंदर लड़की, किसी आकर्षक जगह, किसी मनमोहक गाँव, किसी चमकते हीरे, किसी समृद्ध देश को देखता हूँ, तो मेरी आत्मा में महत्वाकांक्षा जागृत हो उठती है। मैं इस दुनिया के सारे आकर्षणों को अपना बनाना चाहता हूँ, और सिर्फ अपना। आप मेरे इन नीच विचारों को दबाने की कोशिश कर सकते हैं, लेकिन हे महाराज, मेरी धृष्टता के लिए मुझे क्षमा करें और ईमानदारी से बताएँ, क्या आपने इसी स्वार्थ से एक साम्राज्य का निर्माण नहीं किया था? आप भिक्षु नहीं बने, बल्कि पूरी दुनिया के सम्राट बनने का प्रयास किया। यदि यह स्वार्थ की नीच प्रवृत्ति न होती, तो आपने युद्ध में हजारों को क्यों मारा? आपने अपनी शक्तिशाली सेनाओं का नेतृत्व देवताओं के विरुद्ध क्यों किया? आपका एक ही लक्ष्य था, आप अपने लिए, अपने कुल के लिए, अपने कबीले के लिए यश चाहते थे - चाहे आप इसे किसी भी तरह से देखें, 'आप' शब्द सर्वोपरि है। मैं वह सब कुछ हासिल करना चाहता हूँ जो आपने हासिल किया और उससे भी कहीं अधिक। मैं दुनिया के सबसे स्वार्थी व्यक्ति के रूप में जाने जाने का जोखिम उठाने को तैयार हूं, बजाय इसके कि एक निस्वार्थ, महत्वहीन व्यक्ति के रूप में गुमनाम होकर मर जाऊं।
वह बूढ़ा आदमी आँखों में आग लिए वहाँ बैठा था। मुझे खुद में सिहरन महसूस हुई। लेकिन, जैसा कि मैंने शुरू किया था, मैं कुछ अनकहा नहीं छोड़ना चाहता था। मैंने अपने विचारों को समेटा और आगे बढ़ा, “यह दुख की बात है कि आप और

ब्रह्मा प्रेम को एक नीच भावना मानते हैं। प्रेम के बिना, भावनाओं के राजा के बिना, कुछ भी अस्तित्व में नहीं है। एक माँ का अपने बच्चे के प्रति प्रेम से बढ़कर पवित्र कुछ भी नहीं है। यदि किसी ने अपने प्रेमी के साथ रहने की तीव्र इच्छा का अनुभव नहीं किया है, यदि आप अपने भाइयों, बहनों, अपने पिता (जिन्होंने आपको जन्म दिया), अपनी माँ (जिन्होंने आपको अपने गर्भ में धारण किया और अपने रक्त और दूध से पाला), मित्रों और साथ बिताए उन अनमोल पलों, अपनी पत्नी (जिसके साथ आपने अपना जीवन साझा किया) और अपने बच्चों (जो आपके जीवन को आगे बढ़ाते हैं) के प्रति प्रेम का अनुभव नहीं करते हैं, तो क्या यह जीवन जीने योग्य है? क्या यह अपने देश, अपने कबीले, अपनी भाषा, अपने धर्म, अपने देवताओं और ऐसी ही कई अन्य चीजों के प्रति प्रेम नहीं है, जो तुच्छ प्रतीत हो सकती हैं लेकिन जिन्हें मनुष्य अपने हृदय में अत्यंत अनमोल मानते हैं, जिसके कारण इतना रक्तपात और युद्ध हुआ है? अतीत में लोग प्रेम के लिए मरे हैं और जब तक संसार अस्तित्व में रहेगा, ऐसा होता रहेगा। मैं उन सभी चीजों से हमेशा प्रेम करूंगा जिनके बारे में मैंने आपको बताया है। लेकिन हाँ, मैं उन सभी से ऊपर स्वयं से प्रेम करूंगा। मुझे, जो कुछ भी प्यारा लगता है, उसका कोई अर्थ नहीं है। मैं प्रेम इसलिए करता हूँ क्योंकि मेरा अस्तित्व है और मेरा अस्तित्व इसलिए है क्योंकि मैं प्रेम करता हूँ - मैं स्वयं से प्रेम करता हूँ।
महत्वाकांक्षा ही प्रगति की कुंजी है। महत्वाकांक्षा के बिना, मिस्र के राजा आज पिरामिड बनाने में इतने व्यस्त नहीं होते। महत्वाकांक्षा के बिना, मनुष्य शिकारी ही बने रहते। पहिए, घोड़ागाड़ियाँ या रथ, भव्य शहर, मंदिर और महल, और शानदार समुद्री जहाज न होते। महत्वाकांक्षा के बिना, हमारे पास महाबली या इंद्र जैसे लोग न होते। महत्वाकांक्षा ही वह घोड़ा है जो हमारे जीवन को आगे बढ़ाता है।
पिछले कुछ वर्षों में मनुष्य ने जो अद्भुत प्रगति हासिल की है, वह कुछ लोगों के मन में जल रही महत्वाकांक्षा की उस छोटी सी लौ के बिना संभव नहीं होती, जिसे आपने जिन अन्य भावनाओं से बचने के लिए कहा है, उन्होंने भड़काकर एक विशाल आग का रूप दे दिया। अपनी क्षमताओं पर गर्व ने मनुष्य को आत्मविश्वास और आगे बढ़ने की महत्वाकांक्षा दी; किसी और की अधिक उपलब्धि की ईर्ष्या ने उसे और अधिक मेहनत करने के लिए प्रेरित किया; सुख की खोज ने उसकी महत्वाकांक्षा को निरंतर बढ़ाया; दुख के भय ने उसे रातों की नींद

हराम कर दी और उसे और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया; असफलता के भय ने उसे अधिक सावधान और ईश्वर से भयभीत बनाया; स्वार्थ ने उसके परिवार, शहर, कुल, जनजाति और देश को एक साथ बांधे रखा और उसे और भी अधिक मेहनत करने के लिए प्रेरित किया। जीवन और उन चीजों के प्रति प्रेम, जिन्होंने जीवन को अनमोल बनाया, ने उसे अपनी उपलब्धियों की रक्षा करने के लिए प्रेरित किया। और मुझे विश्वास है कि और अधिक पाने की अटूट महत्वाकांक्षा ही मानव जाति को प्रगति की ओर ले जाएगी। ऐसी प्रगति जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते, जिसे हम अपने छोटे से जीवनकाल में कभी समझ नहीं सकते।
मेरे प्रिय सम्राट, कृपया मेरे हृदय की बात सुनकर दुखी न हों। आप बुद्धि को ही एकमात्र सार्थक मस्तिष्क बता रहे थे। मैं सहमत हूँ कि यह महत्वपूर्ण है। परन्तु इतिहास हमें सिखाता है कि अन्य भावों के बिना बुद्धि मात्र एक खोखला ढाँचा है। उसमें जीवन नहीं है। महोदय, सभ्यताओं का निर्माण महर्षियों या ऋषियों ने नहीं, बल्कि असाधारण पुरुषों ने किया, जिन्होंने कभी अपने भावों को नियंत्रित नहीं किया, बल्कि उन्हें प्रकृति के निर्धारित मार्ग पर बहने दिया। वन में रहने वाले किसी भिक्षु ने कभी किसी महान नगर की कल्पना नहीं की, किसी ऋषि ने महान मंदिरों का निर्माण करने का निश्चय नहीं किया, किसी ब्राह्मण ने व्यापार के लिए बड़े-बड़े जहाज बनाने की इच्छा नहीं की। इनका निर्माण उन पुरुषों ने किया जिनके रगों में गर्व था, मन में क्रोध था, जो दुखी होने पर रोते थे और प्रसन्न होने पर हँसते थे, जो अपने से बड़ी शक्तियों या घटनाओं का सामना करने पर भयभीत होते थे, परन्तु दृढ़ संकल्प और अपने प्रियतम प्रेम के साथ आगे बढ़ते रहे। वे निरंतर अपनी महत्वाकांक्षाओं को बढ़ाते रहे। बुद्धि तो केवल हमारे भावों को संतुष्ट करने का एक साधन है और मैं ईश्वर द्वारा मनुष्य के लिए निर्धारित जीवन जीना चाहता हूँ।
मेरा लक्ष्य न तो भगवान बनना है और न ही मोक्ष प्राप्त करना। मेरे विचार से ये सब पुरानी कहावतें हैं। मैं स्वर्ग में विश्वास नहीं करता, जहाँ आपको वह सब कुछ मिल जाएगा जिसे आपने इस संसार में जानबूझकर त्याग दिया है। मैं पुनर्जन्म में विश्वास नहीं करता, जहाँ अच्छे कर्म करने पर (ब्राह्मणों के अनुसार) ब्राह्मण के रूप में जन्म होगा। यदि ब्राह्मण के रूप में जन्म लेना ही परम पुरस्कार है, तो मैं पुनर्जन्म के भय से मरने से भी इनकार कर सकता हूँ।

मुझे आपको निराश करने का खेद है, लेकिन मैं एक पुरुष की तरह जिऊंगा और एक पुरुष की तरह ही मरूंगा। मैं कभी भगवान बनने की कोशिश नहीं करूंगा। मैं ठीक वैसे ही जिऊंगा जैसे मेरी भावनाएं मुझे जीने को कहेंगी। मैं आने वाली पीढ़ियों के लिए आदर्श पुरुष नहीं बनना चाहता। मेरा जीवन मुझसे शुरू होता है और मुझ पर ही समाप्त होता है। लेकिन मैं अपना जीवन पूरी तरह से जीऊंगा और एक पुरुष की तरह ही मरूंगा। इसलिए, आपके शब्दों को उधार लेते हुए, मैं दस मुखों वाला पुरुष बनूंगा - मैं दशमुख हूं।
उसके बाद गहरा सन्नाटा छा गया। ब्रह्मा अपने नंगे पैर की उंगलियों को घूरते खड़े रहे और उस सिकुड़े हुए सम्राट की प्रचंड आँखें मुझे भेदती रहीं। अचानक मेरी नसों में ऊर्जा का प्रवाह दौड़ गया। जब तक मैंने अपना लंबा भाषण नहीं दिया था, तब तक मैं स्वयं अपने जीवन दर्शन को लेकर आश्वस्त नहीं था। तब तक मैं सोचता रहा था कि क्या मैं उस महान वृद्ध व्यक्ति के मुझ पर रखे भरोसे को धोखा दे रहा हूँ। लेकिन अचानक मैंने पाया कि मैं उन्हें एक नई दृष्टि से देख रहा हूँ। मेरी नज़र में वे तेज़ी से सिकुड़ते जा रहे थे। वे बस एक सिकुड़ा हुआ, पिटा हुआ, अधमरा बूढ़ा व्यक्ति थे, जो दिखावटीपन लिए हुए था, मानो अभी भी देश पर राज कर रहा हो। वे बस एक पहाड़ी चूहे की तरह थे, जो देव सेनाओं से छिपकर अपने ही पिछवाड़े में अपनी छोटी-मोटी लड़ाई लड़ रहा था।
तब मुझे जो आवाज़ सुनाई दी, वह एक कमज़ोर बड़बड़ाहट थी। उसने उठने की कोशिश की, लेकिन मेरे सामने ही गिर पड़ा। मैं भयभीत होकर देखता रहा। वह पीला सा शरीर धीरे-धीरे घुटनों के बल उठा। उसकी आँखें बेजान थीं, वह मुझे घूरता रहा और फिर बड़े नाटकीय अंदाज़ में अपना सिर उठाकर घूरने लगा। मेरे पास एक बूढ़े आदमी की बकवास सुनने का समय नहीं था। मैंने पीठ फेर ली और जानबूझकर सिर हिलाकर बाहर निकल गया, मेरे भाई मेरे पीछे-पीछे चल रहे थे। विभीषण लड़खड़ाते कदमों से कई बार उस बूढ़े आदमी की ओर मुड़ा, जिसने अब अपने दोनों हाथ आकाश की ओर उठा रखे थे और बड़बड़ा रहा था। लेकिन कुंभकर्ण मुझसे भी ज़्यादा दृढ़ कदमों से और होठों पर मुस्कान लिए मेरे पीछे-पीछे चल रहा था। महाबली के योद्धाओं का एक मिला-जुला समूह मेरे पीछे चल रहा था, उनकी तलवारें और ढालें चलते समय खड़खड़ा रही थीं।
मैं अपने साथियों के साथ चिलचिलाती धूप में बाहर निकला। धरती अभी-अभी हुई बारिश से तरोताज़ा थी, मानो सृष्टिकर्ता ने अपना काम पूरा कर लिया हो और

नहाने गया हो। मैंने जंगल के फूलों और गीली, लाल मिट्टी की खुशबू को महसूस किया। पक्षियों का चहचहाना मेरे कानों को मधुर लग रहा था। दुनिया बाहें फैलाए मुझे जीवन की इस रोमांचक यात्रा में शामिल होने के लिए आमंत्रित कर रही थी। जैसे ही मैंने पहला कदम रखा, मुझे उस गुफा से एक तीखी चीख सुनाई दी जिसे मैं पीछे छोड़ आया था। मेरी रूह कांप उठी, लेकिन मैं चलता रहा, उस बूढ़े आदमी की रूह कंपा देने वाली चीख को अनसुना करने की पूरी कोशिश करता रहा जो उस बदबूदार गुफा की गहराई से उठ रही थी। "मैंने क्या मुसीबत खड़ी कर दी है?!" वह पागल बूढ़ा आदमी लगातार रोता रहा। मैंने जल्द ही उस भयानक आवाज़ और उस बूढ़े आदमी द्वारा दर्शाई गई दुनिया को अपने दिमाग से निकाल दिया। मैं इसे लंबे समय तक भूल गया, जब तक कि यह मेरी नींद में मुझे परेशान करने के लिए वापस नहीं आ गई। लेकिन वह बहुत बाद की बात थी, बहुत बाद की। मैं अब अपनी बात से आगे बढ़ रहा हूँ।

6 □□□□□ □□ □□□□

□□□□

□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□, □□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□ □ □□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□, □ □□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□, □□□□, □□□□ □□□□□ □□□□, □□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□, □□□□□□□□ □□□□, □□□□□□ □□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □ □□ □□□□ □□□□ □□ □□ □ □□ □□□□ □□□ □□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□ □ □□ □□□□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□ □□, □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□,

□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□□□□□□□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□, □□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□, □□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□ - □□□□□□ □□, □□□ □□ □□ □□□□ □□□□□, □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□, □□□□ □□□□□□□□□□□□, □□□□, □□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□, □□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□, □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□, □□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□, □□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□, □□□ □□□□□ □□□ □□□□□□□, □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□, □□□□ □□□□□□, □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□

चुपचाप मर जाएंगे, कुछ लोग शोक मनाएंगे और दुनिया को उनकी कमी ज़रा भी महसूस नहीं होगी।
मेरा जीवन बिना किसी विराम चिह्न के ऐसे ही चलता रहता, और अंत में बस एक पूर्ण विराम लग जाता। लेकिन देवताओं के आगमन ने सब कुछ बदल दिया। जब तक वे आए और हमें हरा नहीं दिया, तब तक हम नहीं जानते थे कि ये कौन हैं। मुझे वे दिन आज भी डर के साथ याद हैं। कभी-कभार हमारे खेतों से काली मिर्च लेने आने वाले व्यापारियों से हमें दूर-दराज के युद्ध की आहट सुनाई देती थी। वे बताते थे कि कैसे देवताओं की सेना मुख्य देवता विष्णु के नेतृत्व में एकत्रित हो रही है और कैसे महाबली युद्ध की तैयारी कर रहे हैं। हमने इन अफवाहों को नज़रअंदाज़ कर दिया। ये सब छोटी-मोटी बातें थीं, जो दूर-दराज के स्थानों में किसी और के साथ घटित होती थीं। राजा युद्ध लड़ते थे और अपने राज्य और अपने प्राणों की बाज़ी लगाते या हारते थे। हम तो नश्वर प्राणी थे और राजनीति की इस गंदी दुनिया से हमारा कोई वास्ता नहीं था। मेरा मानना था कि महाबली अजेय हैं। उन्हें न्यायप्रिय माना जाता था और वे अपनी प्रजा का हित समझते हुए शासन करने का प्रयास करते थे। कम से कम गाँव के बड़े-बुजुर्ग तो यही कहते थे और हमारे पास उन पर अविश्वास करने का कोई कारण नहीं था। दूर राजधानी में चाहे जो भी शासन करे, हम उसी तरह जीवन जीते रहे। जब तक वे हमें परेशान नहीं करते थे, हम हमेशा यही कहते थे कि वे अच्छे शासक थे।
एक धूल भरी शाम को, जब हम अपने खेतों से काम करके लौट रहे थे, तभी घोड़े पर सवार एक दूत प्रकट हुआ। वह लंबा-चौड़ा आदमी था, जिसके चेहरे पर चेचक के निशान थे और उसकी आँखों में एक अजीब सा भाव था। उसने हमसे कहा कि हम अपने शिव मंदिर को तोड़ दें और विष्णु के सामने आत्मसमर्पण कर दें। गाँव वालों ने उसका अच्छा स्वागत किया, लेकिन उसे यह चेतावनी देकर वापस भेज दिया कि वह शिव के प्रकोप को आमंत्रित न करे। दरअसल, दूत शिव मंदिर में गया और जाने से पहले प्रार्थना की। सारा दिन हम देवताओं के बारे में बातें करते रहे। कुछ लोगों का कहना था कि सम्राट पहले ही गिरकर भूमिगत हो चुके हैं और विष्णु हमारे नए सम्राट बन गए हैं। उनका दावा था कि दूत उनके सिद्धांत का प्रमाण है। दूसरों का कहना था कि महाबली देव वंश में शामिल हो गए हैं और तेजी से सभी शिव मंदिरों को विष्णु मंदिरों में परिवर्तित कर रहे हैं। ताड़ी की दुकान में झगड़ा हो गया और मेरे दोस्त को एक क्रोधित शिव भक्त ने नाक पर घूंसा मार दिया। मुझे खुशी थी कि आखिरकार मेरे शांत गाँव में कुछ हलचल

हुई। आमतौर पर यहाँ कुछ भी रोमांचक नहीं होता था और हर दिन एक जैसा नीरस होता था।
यानी, उस रात तक जब मेरी पत्नी ने मुझे जगाया। मैं गुस्से में था। मुझे नींद से बुरी तरह जगाया गया और मैं उसकी गुस्ताखी के लिए उसे पीटना चाहती थी। तभी मैंने देखा कि हमारे बेडरूम में अजनबी लोग थे। मेरा पहला विचार, जो मुझे आज भी स्पष्ट रूप से याद है, यह था: 'हे भगवान! मैं इन लोगों को क्या खिलाऊँगी? ये लोग रात के खाने के बाद आए हैं।' फिर गुस्सा आया। मेरे बेडरूम में घुसने की उनकी हिम्मत कैसे हुई? धीरे-धीरे डर मुझ पर हावी हो गया। ये लोग कौन थे? ये यहाँ क्यों आए थे? मेरा पड़ोसी, वह मूर्ख जो हर दिन मेरे आँगन में लाल पान का रस थूकता था और उसके बाद होने वाले झगड़ों का आनंद लेता था, जिंदा जल रहा था और उसके सामने का आँगन रोशन हो रहा था। उस भयानक रोशनी में मैंने अपने पड़ोसी के आँगन में एक सामूहिक यौन क्रिया भी देखी। वह पति जिसकी पत्नी गाँव के हर पुरुष के साथ इश्कबाजी करती थी, एक ही समय में छह से अधिक लोगों के साथ संबंध बना रहा था। लेकिन वह चीख रही थी। देव योद्धाओं ने हमारे गाँव पर कब्जा कर लिया था। पूरा गाँव जल रहा था। लोग डरे हुए मुर्गों की तरह इधर-उधर भाग रहे थे। मैंने लोगों को काटते हुए देखा। घर जल रहे थे। घोड़े पर सवार योद्धाओं के साथ उनके गोरे, शैतानी चेहरे लोगों का उपहास उड़ा रहे थे, चिल्ला रहे थे और उन्हें मार रहे थे।
अजनबी अब मेरी पत्नी को घूर रहे थे और मैं उसे कांपते हुए महसूस कर सकता था। मैं झट से उठा और अपने परिवार को बचाने के लिए उन्हें बाहों में भर लिया। शैतान ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगे। तभी मुझे आग की चटकने की आवाज़ सुनाई दी, जो मेरी भूसे की छत को जला रही थी। किसी ने मुझे अपनी तलवार के मूठ से मारा। मेरी नाक की हड्डी टूट गई और मेरे पूरे शरीर में तेज़ दर्द की लहर दौड़ गई। एक लड़का, शायद पंद्रह साल का ही होगा, मेरी बेटी को उसके पैरों से उठाकर, उसे कपड़े की तरह घुमाया और मिट्टी की दीवार पर ज़ोर से पटक दिया। मैंने अपनी प्यारी बेटी की खोपड़ी के फटने की आवाज़ सुनी। उसका खून और दिमाग हमारे चेहरों पर बिखर गया। शैतान फिर हंसने लगे। मैं सुन्न पड़ गया और ज़मीन पर गिर पड़ा। मेरी पत्नी बेहोश हो गई। मैंने अपनी पत्नी को पकड़ने की पूरी कोशिश की, क्योंकि वे उसे घसीटकर अंधेरे में ले जा रहे थे। मेरे नाखूनों ने उसकी बांह पर खून की लकीरें बना दीं, लेकिन वह फिसल गई। मैंने उठने की कोशिश की। हर जगह खून ही खून था। मैं खून में फिसल गया और

मेरे हाथ मेरी बेटी के चकनाचूर सिर से छू गए। मैं कांप उठा। मैं देखना नहीं चाहता था। मुझे कोई हथियार ढूंढना ही था। कुछ भी जिससे मैं इन कमीनों की खोपड़ी तोड़ सकूं। किसी भी तरह मुझे अपनी पत्नी को बचाना था।
मेरी पत्नी की चीखें गाँव भर से उठ रही ऐसी ही कई चीखों में दब गईं। मैं लड़खड़ाता हुआ चल रहा था, मानो मेरी सारी ताकत खत्म हो रही हो, और मैंने बरामदे के एक खंभे को पकड़ने की कोशिश की। वह ठोस बांस का बना था, लेकिन मुझे निराशा हुई कि मैं उसे उठा नहीं पा रहा था, लाठी की तरह इस्तेमाल करना तो दूर की बात थी। मैं उन दरिंदों पर टूट पड़ा जो मेरी पत्नी का बलात्कार कर रहे थे। मैंने निहत्थे होकर जी जान से उनका मुकाबला किया, लेकिन मैं उन शक्तिशाली देव योद्धाओं का मुकाबला नहीं कर सका। मैं पल भर में नीचे गिर गया और वे मुझे घसीटने लगे। उनके ठोस लकड़ी के जूतों ने मेरे चेहरे पर लात मारी और मुझे कीचड़ में घसीटा गया। मुझ पर लगातार वार हो रहे थे। सौभाग्य से, एक कमीने ने अपनी तलवार मेरे पेट में गहरी धंसा दी और उसके बाद मुझे सिर्फ अंधेरा छा गया।
जब मैं जागा, तो अभी भी अंधेरा था। हर तरफ आग की लपटें थीं, लेकिन वे धीरे- धीरे बुझ रही थीं। मुझे दूर से सियार की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। एक और दिन निकल आया है, मैंने धुंधले से सोचा, और मुझे गायों का दूध दुहने जाना है। लेकिन मैं बस वहीं लेटा रहा। धरती कितनी आरामदायक, ठंडी और सुकून देने वाली थी। फिर धीरे-धीरे, बहुत धीरे-धीरे, वास्तविकता सामने आई और मैं झटके से उठ बैठा। दर्द की सुइयाँ मेरे शरीर के उन हिस्सों में चुभ रही थीं जिनके बारे में मुझे पता भी नहीं था। मेरी आँखें आपस में चिपकी हुई थीं, खून से सनी हुई थीं। मैंने उन्हें खोलने के लिए संघर्ष किया। फिर मैंने कुछ देव कमीनों को एक पेड़ के नीचे बैठकर शराब पीते देखा।
चारों ओर, मेरा गाँव और मेरा पूरा जीवन चकनाचूर हो गया था। मैंने खड़े होने की कोशिश की और शायद इस कोशिश में एक टहनी टूट गई। शोर मेरे कानों में बिजली की कड़क जैसा लगा। प्रेत जैसी आकृतियाँ मेरी ओर देखने लगीं। मैं बिना हिले-डुले बैठा रहा। 'वे जानते हैं कि मैं जीवित हूँ और वे मुझे मार डालेंगे,' मैंने सोचा। एक पल के लिए मुझे राहत मिली कि देवताओं ने जाँच न करने का फैसला किया। तभी मैंने उसे देखा। एक लंबा, काला सा आदमी मेरी ओर बढ़ रहा था, उसकी तलवार खींची हुई थी। मैं घबरा गया। जैसे ही वह पास आया, मैंने देखा कि यह वही लड़का था जिसने मेरी लड़की के शरीर को दीवार पर बिखेर

दिया था। वह नशे में था और लड़खड़ाते पैरों पर चल रहा था। मैं इंतज़ार करता रहा, अपने हाथों से कुछ ऐसा ढूंढ रहा था जिसे मैं हथियार के रूप में इस्तेमाल कर सकूँ। लड़का मेरे सिर के पास खड़ा था, थोड़ा डगमगा रहा था। किसी ने उसे पुकारा। वह हिचकिचाया। तब तक मेरे हाथों को किसी द्वारा छोड़ा गया एक पुराना चाकू मिल गया था, और एक ही झटके में मैंने उसे लड़के के गुप्तांग में घोंप दिया। मैं हैरान रह गया जब वह बिना आवाज़ किए मेरे ऊपर गिर पड़ा। मैंने चाकू निकाला और उसकी गर्दन के पिछले हिस्से पर फिर से वार किया।
“अरे!” हमारी उलझी हुई काया की ओर दौड़ते हुए उस आदमी की आवाज़ में हैरानी और सदमा था। मैंने देखा कि दूसरे भी उसके पीछे आ रहे थे। मैं उस लड़के से दूर हटने के लिए छटपटा रही थी, पर वह भारी था। जब मैं उसके नीचे से निकली, तब तक मैं पसीने और खून से लथपथ हो चुकी थी। सहज ही मैं अपने गाँव की सीमा से लगे जंगल की ओर भागी। मैं अपने शरीर में बची हुई सारी ताकत से भागी, इन राक्षसों से दूर, अपने अतीत से दूर, उस जीवन से दूर जिसे मैं जानती थी। मैं अपने प्यारे, बेकार, अर्थहीन, खोखले, खोखले जीवन की खातिर भागती रही। मैं हाँफती-हाँफती सुरक्षा की ओर बढ़ी, अपने भाइयों और दोस्तों के सड़ते हुए शवों पर फिसलती हुई। पर तब कोई फर्क नहीं पड़ता था। वे बस शव थे, गिद्धों का इंतज़ार कर रहे थे कि वे उस काम को पूरा करें जो देवताओं ने शुरू किया था। मौत मेरा पीछा कर रही थी और मैं अपने जीवन का पीछा कर रही थी जो तेज़ी से भाग रहा था।
मेरे कंधों में तेज़ दर्द उठा और मैंने खून की ताज़ी बूँदें टपकती देखीं, जो मेरे निशान छोड़ रही थीं। वे कमीने मुझ पर तीर चला रहे थे। तीर मेरे कानों के पास से सनसनाते हुए निकले और चारों ओर पेड़ों के तनों में धड़ाम से जा गिरे। उनमें से एक तीर मेरा गला चीर सकता था और फिर यह भयानक सपना दयापूर्वक समाप्त हो जाता। फिर सब कुछ धुंधला गया। मुझे भारहीनता का अहसास हुआ, मानो मैं तैर रहा हूँ। गहरे हरे रंग के सागर ने मुझे निगल लिया। डालियाँ मेरे चेहरे से टकराईं। मैं गिर रहा था, तेज़ी से एक गहरी खाई में गिर रहा था। तो मौत ऐसी होती है। इतनी अचानक और दयालु। मेरे चेहरे पर स्पर्श, भारहीनता का अहसास, तैरने का सुख, और धड़ाम! एक पल के लिए मैं मर गया।

7 हारने वालों की गाथा

रावण
हम चार महीने से इसी तरह चलते आ रहे थे और अब थक चुके थे और भूखे थे। मैंने महसूस किया कि अधिकांश योद्धा ऊब चुके थे, तभी मैंने अपना रोज़ाना का सुबह का प्रवचन शुरू किया, “आज हम दस राजाओं के युद्ध के बारे में जानेंगे, जिसके कारण असुर साम्राज्य का अंत हुआ और देवताओं का उदय हुआ। आरंभ में, देवता शक्तिशाली असुर राजाओं के लिए केवल एक उपद्रव थे। वे सीमावर्ती शहरों में कभी-कभार उत्पात मचाते थे। हालाँकि, इंद्र के आगमन के साथ ही परिस्थितियाँ तेज़ी से बदलने लगीं। इंद्र के पास खोने के लिए कुछ नहीं था। उनकी क्रूरता की कहानियाँ उनसे पहले ही प्रचलित थीं। उन्होंने हिमालय के उत्तर-पश्चिम में कई छोटे राज्यों को लूटा था और सुंदर शहरों को जला दिया था। उन्होंने एक जीते हुए शहर में सभी जीवित प्राणियों का वध किया और विशाल चिताएँ जलाईं, जिनके चारों ओर देवता नाचते और मंत्रोच्चार करते थे। जब असुर परिषद के दस राजाओं ने इन बर्बरों को सबक सिखाने का निश्चय किया, तब तक इंद्र अपने तीक्ष्ण निशानेबाजों के साथ गांधार के ऊबड़-खाबड़ पहाड़ों की बंजर और बर्फीली चोटियों पर डेरा डाले हुए थे। शक्तिशाली असुर सेना, भले ही सैन्य या सामरिक दृष्टि से श्रेष्ठ न हो, अपनी विशाल संख्या और श्रेष्ठ शस्त्र शक्ति से देव लुटेरों की छोटी टुकड़ी को आसानी से कुचल सकती थी। लेकिन गांधार की संकरी घाटियों में दस राजाओं के हाथी बिल्कुल बेकार थे। असुर राजा गंगा और सिंधु नदियों के बीच फैले विशाल खुले मैदानों में लड़ने के आदी थे। हाथी सेना, भारी गदा और तलवारों से लैस पैदल सेना, और रथ, जो माल ढोने वाले वाहनों की तरह थे और अतिरिक्त हथियार व सैनिक रखते थे, खुले मैदानों के लिए अधिक उपयुक्त थे।

लेकिन इंद्र ने असुर राजाओं से मुकाबला करने के लिए संकरी गांधार घाटियों को चुनकर अपनी बुद्धिमत्ता का परिचय दिया। वे पर्वतों की ऊँचाइयों पर असुर राजाओं के आने और अपनी शर्तों पर युद्ध करने की प्रतीक्षा करते रहे। असुर परिणाम को लेकर पूरी तरह आश्वस्त थे। उन्होंने इससे पहले उत्तर और उत्तर-पश्चिम से आने वाले अन्य कबीलों के अनगिनत हमलों का सामना किया था। यह उनके लिए उन दावतों में से एक थी, जिसमें वे शत्रु को कुचलेंगे, उनके नेता को बंदी बनाएंगे, उदारतापूर्वक उसे क्षमा करेंगे और पराजित दल को अपने महलों में भोज देंगे।
बेचारे, उन्हें पता ही नहीं था कि वे किससे मुकाबला कर रहे हैं। यह एक अलग ही तरह का दुश्मन था – क्रूर, निर्दयी और जीतने की अदम्य इच्छाशक्ति वाला। मैं कभी गांधार नहीं गया, लेकिन ब्रह्मा से जो हमने सीखा, उससे हमें दस राजाओं के युद्ध के समय की स्थिति का काफी अच्छा अंदाजा हो गया।
मैंने रेत पर उत्तर-पश्चिमी भारत का एक मोटा-मोटा नक्शा बनाया था और मेरे चारों ओर मेरे भाई और प्रहस्त थे, जो एक सक्षम अधेड़ उम्र के व्यक्ति थे और हमारे सैनिकों के सेनापति थे। बाकी योद्धा ध्यान से सुन रहे थे। प्रहस्त ने दावा किया कि वह मेरी माता के दूर के रिश्तेदार हैं और इसलिए मेरे मामा हैं, हालांकि मुझे इस पर संदेह था। दूसरी ओर, मेरी माता के कई असुर रिश्तेदार थे, इसलिए यह सच हो सकता था। अगर उन्हें लगता था कि राजा बनने के बाद मैं उन पर विशेष कृपा करूंगा, तो उन्हें निराशा ही हाथ लगेगी। लेकिन प्रहस्त एक सक्षम और बुद्धिमान व्यक्ति थे और मैं उनका सम्मान करता था। कुछ सैनिकों को बेचैन देखकर मैं थम गया। मुझे उन पर दया आई। अधिकतर सैनिक अनपढ़ और गरीब थे। सामान्य समय में वे किसान, कारीगर या व्यापारी होते, लेकिन अपने वतन से बेदखल होकर वे अपने उस महान सम्राट के पीछे-पीछे चले आए थे, जिसने उन्हें उनकी पुरानी, सुरक्षित दुनिया लौटाने का वादा किया था। उनके साथ विश्वासघात हुआ था और अब उन्होंने मुझ जैसे बेघर, साहसी नौजवान पर अपनी उम्मीदें टिका रखी थीं, ताकि मैं उन्हें उनकी खोई हुई दुनिया वापस दिला सकूँ। शायद मैं अहंकारी हो रहा था, लेकिन मैं निश्चित रूप से उनके सपनों को साकार करने की कोशिश करूँगा।
“इंद्र ने प्रारंभ में एक सामरिक त्रुटि की थी। उन्होंने सरस्वती नदी के तट पर स्थित प्राग्य नगर पर आक्रमण किया, जो राजा प्राम्युध का एक प्रमुख बंदरगाह था। वे आधे-अधूरे उपायों के ज्ञाता नहीं थे। उन्होंने अपनी पूरी

सेना को मैदान में उतार दिया। 500 हाथी, भारी तलवारों और गदाओं से लैस 10,000 पैदल सैनिक और बैल रथों में सवार 500 धनुर्धारी नगर की दीवारों से बाहर निकल आए। इंद्र के पास 600 घुड़सवार धनुर्धारियों की एक छोटी सेना थी। उन्होंने उनमें से 200 को नगर के मुख्य द्वार पर आक्रमण करने के लिए लगाया और स्वयं पीछे से नगर में प्रवेश करने का प्रयास किया। प्राम्युध ने चारों द्वार खोल दिए और उनकी विशाल सेना विभाजित होकर अग्रभाग पर एकत्रित हो गई।”
इंद्र इस दुस्साहसी कदम से स्तब्ध रह गए। फँसे हुए चूहे की तरह देव सेना ने भयंकर पलटवार किया। लेकिन असुर सेना बहुत बड़ी थी। इसके अलावा, विशाल खुले मैदानों ने असुर सेना को पैंतरेबाजी के लिए पर्याप्त जगह दी। घोड़ों पर सवार देव सेना आसान निशाना बन गई। हाथियों पर सवार योद्धाओं ने भारी भाले और बरछी बरसाए और भारी बाणों से देवों के कवच प्याज के छिलके जैसे दिखने लगे। इंद्र ने पीछे हटने का आदेश दिया, लेकिन जिस मुसीबत में उन्होंने अपनी सेना को फँसाया था, उससे निकलना असंभव था। उनकी सेना का 80 प्रतिशत से अधिक हिस्सा मारा गया। लेकिन इंद्र ने अपनी तलवार से वीरतापूर्वक लड़ाई लड़ी और प्रम्युध को घायल करने में भी सफल रहे।
प्रम्युध का हाथी से उतरकर इंद्र को चुनौती देना मूर्खता थी। प्रम्युध जब इंद्र से लड़ रहा था, तब मूर्ख असुर सैनिक एक घेरे में खड़े होकर हर वार पर ताली बजाते और जयकार करते रहे। ऐसा लग रहा था मानो असुर योद्धा मनोरंजन कर रहे हों। उन्होंने इंद्र की श्रेष्ठ तलवारबाजी की भी प्रशंसा की! प्रम्युध ने नियमों के अनुसार ही युद्ध किया। उसके पैर एकदम सटीक थे, उसके वार और प्रहार भी उतने ही सटीक थे। लेकिन इंद्र अपनी जान बचाने के लिए लड़ रहे थे और उनका तरीका बिल्कुल अलग था। अचानक ही उन्होंने अपनी ढाल से अपने प्रतिद्वंदी की आँखों में रेत फेंक दी। उसी समय उन्होंने अपनी तलवार से कुशलतापूर्वक वार किया। प्रम्युध, जो एक कुशल तलवारबाज थे, झुक गए, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। उनके कंधे पर गहरा घाव लगा और वे युद्ध के मैदान में बेहोश हो गए। इसके बाद मची अफरा-तफरी में, इंद्र ने स्तब्ध भीड़ को चीरते हुए अपना रास्ता बनाया और अपने रास्ते में खड़े तीन सैनिकों पर अपनी तलवार से वार किया। वे तुरंत अपने घोड़े पर सवार हुए और पलक झपकते ही गायब हो गए, उनके पीछे कुछ बचे हुए सैनिक भी थे।

“मुझे किसी भी पतनशील राजा की कहानी सुनाओ, और मैं तुम्हें एक ऐसा व्यक्ति दिखाऊंगा जिसकी मूर्खता केवल उसके अहंकार से ही कम है,” प्रहस्त ने आगे कहा।
“सच है,” मैंने आगे कहा, “अगर पराजित राजा पुरानी बातों को भुलाकर अपने राज्य पर फिर से शासन करने लौट जाता, तो इंद्र का आक्रमण इतिहास में महज़ एक छोटी सी घटना बनकर रह जाता। लेकिन इसके बजाय, उसके अहंकार को ठेस पहुंची। प्रम्युध को इस बात से कोई तसल्ली नहीं मिली कि उसकी प्रजा उन दूसरे शहरों के नागरिकों की तरह भाग्य से बच गई थी जो इंद्र के हाथों हार गए थे। वह इस बात से संतुष्ट नहीं था कि शत्रु राजा के हाथों अपनी व्यक्तिगत पराजय के अलावा, उसकी सेना देव सेना को कुचलने में सफल रही थी। उसकी छवि को ठेस पहुंची थी। प्राचीन काल के असुर राजाओं को राज्य पर दैवीय अधिकार प्राप्त नहीं था। राजा एक निर्वाचित नेता होता था, शहर का सबसे कुशल व्यक्ति, एक महान योद्धा। बस इतना ही।”
“प्रम्युध को अपने दरबारी जासूसों से पता चला कि प्रजा में उसकी लोकप्रियता कम हो गई है और वह दोबारा निर्वाचित नहीं होगा। उसे अपनी प्रतिष्ठा बहाल करने के लिए कठोर कदम उठाने की आवश्यकता थी। ऐसे विचार किसी राजा के लिए विनाशकारी होते हैं। व्यक्तिगत विफलताएँ या विजय जैसी कोई बात नहीं होनी चाहिए। यदि आपकी सेना जीत गई है, तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आपका प्रतिद्वंद्वी आपसे बेहतर तलवारबाज है। लेकिन असुर हमेशा अपने अहंकार को अपने कवच पर प्रदर्शित करते थे। इस प्रकार उनकी सोच धुंधली हो गई और रणनीतिक गलतियों का सिलसिला शुरू हो गया,” प्रहस्त ने आगे कहा, जबकि मैं घड़े से पानी पी रहा था।
मैंने देखा कि श्रोता अब पूरी एकाग्रता से सुन रहे थे। प्रसन्न होकर मैंने आगे कहा, “राजा ने हर दिशा में जासूस भेजे। उसे किसी भी तरह इंद्र का पता लगाकर बदला लेना था। परमुध ने असुर राजाओं की आम सभा भी बुलाई। यह भारत के सभी भागों से आए समान सदस्यों का एक समूह था। दस राजा साल में एक बार जल बंटवारे, सीमा शुल्क, उत्पाद शुल्क और टोल दरों, बंदरगाह करों को तय करने और संगीतकारों और कारीगरों के आदान-प्रदान के बारे में निर्णय लेने के लिए मिलते थे। आपातकालीन बैठक शायद ही कभी बुलाई जाती थी, जब तक कि किसी राज्य की सुरक्षा को कोई गंभीर खतरा न हो। आम तौर पर, राज्यों के पास स्थायी

सेनाएँ होती थीं, लेकिन तीव्र सांस्कृतिक विकास के कारण उनकी युद्ध क्षमता में काफी गिरावट आ गई थी।”
इस भूमि में कुछ रहस्यमय बात थी। जब महान विजय सेनाएँ अपने मिशन में सफल होकर विशाल सिंधु-गंगा मैदान में बस गईं, तो ऐसा लगा मानो उनका कठोर स्वभाव लुप्त हो गया हो और वे सौम्य और स्त्रीत्वपूर्ण हो गईं हों। इस भूमि ने उन्हें बर्बरों से बदलकर जीवन की उत्तम वस्तुओं का आनंद लेने वाले कोमल प्राणियों में बदल दिया। असुरों से पहले की सभी महान विजय सेनाओं के साथ ऐसा ही हुआ था, और अब उत्तर के वर्तमान देव राज्यों में भी यही हो रहा है। और यही असुरों के साथ भी हुआ। लेकिन, राजा खुद को उन महान योद्धाओं का वंशज मानते थे जिन्होंने पूरे देश में विजय प्राप्त की थी। उन्हें अपनी सैन्य शक्ति पर पूरा भरोसा था। उनकी सेना संगीतकारों, नर्तकियों, जादूगरों, छोटे-मोटे चालबाजों, कलाबाजों, रसोइयों, फूल बेचने वालों, व्यापारियों और पुजारियों से भरी एक विशाल संस्था मात्र थी। कहानियों में बताई गई संख्याएँ असत्य थीं। 10,000 सैनिकों की सेना में, केवल कुछ ही सच्चे योद्धा थे। बाकी लोग सेना के साथ युद्ध के मैदानों में जाते और उपद्रव मचाते थे।
दस राजाओं में से छह राजा आम सभा में इस बात से असहमत थे कि इंद्र का आक्रमण चिंताजनक नहीं था। उनका मानना था कि किसी भी समृद्ध शहर पर हमला हो सकता है। लेकिन प्राम्युध ने अपने ठोस तर्कों से जीत हासिल कर ली। उन्होंने कहा कि सिंधु घाटी के मैदानों के सीमावर्ती शहरों पर आक्रमण करने वाले कबीले कभी भी किसी प्रमुख राज्य की राजधानी पर आक्रमण करने का साहस नहीं करते थे। प्राम्युध के विचार में, यह समूह उन सामान्य हमलावरों जैसा नहीं था जो अन्न भंडारों पर हमला करके जो कुछ भी हाथ लगे, लूट लेते थे। वास्तव में, इन लोगों ने असाधारण साहस और चालाकी दिखाई थी और वे अपने हमलों को अंजाम देने के लिए एक विचित्र जानवर का उपयोग कर रहे थे। असुर सेना उन जानवरों की फुर्ती से चकित थी, जो बैलों के विपरीत, तेज और चुस्त थे। प्राम्युध ने तर्क दिया कि जब तक इस शत्रु को कुचल नहीं दिया जाता, हमारी प्रजा इन बर्बर गिरोहों के निरंतर खतरे में रहेगी। हालांकि, उस रात सभा बिना किसी निर्णय के स्थगित हो गई।
सुबह का सत्र तब बाधित हुआ जब उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र के असुर राजा के शिविर में एक दूत पहुँचा और उसने सूचना दी कि घुड़सवार कबीलों ने मुलतमुख

अहंकार आहत हुआ, जो अनिच्छा से सेना के साथ जा रहे थे। वे स्वयं प्रम्युध की सेवा में गौण नेता बन गए। प्रम्युध स्वयं दिन-प्रतिदिन अभिमानी होता जा रहा था। प्रारंभ में उसने अन्य राजाओं की सलाह को अनसुना कर दिया। बाद में, उसने खुलेआम उनकी आलोचना की और उनकी सैन्य रणनीतियों का उपहास उड़ाया। मैंने लगभग 1000 साल पहले तबाही की ओर खुशी-खुशी बढ़ते हुए प्राम्युध की सेना का मार्ग दिखाया। सैनिकों ने ज़मीन पर मेरे द्वारा बनाए गए मोटे-मोटे नक्शे को बेहतर ढंग से देखने के लिए झुककर देखा।
मुझे प्यास लग रही थी और आराम की ज़रूरत थी, इसलिए प्रहस्त ने बोलना शुरू किया। उन्होंने भारी स्वर में कहा, “हिंदुकुश पर्वतमाला की तलहटी में स्थित ऊबड़-खाबड़ मैदानों तक पहुँचते-पहुँचते सेना एक सुगठित लड़ाकू इकाई नहीं रह गई थी। तीन राजाओं ने विद्रोह कर दिया था और धमकी दी थी कि अगर अभियान रद्द नहीं किया गया तो वे अपनी सेनाओं के साथ चले जाएँगे। इस समय तक, प्रम्युध ने मिस्र सहित पश्चिम को जीतने और खुद को विश्व का सम्राट घोषित करने की बात शुरू कर दी थी। जब तीनों राजाओं ने विद्रोह किया, तो उसने तुरंत उन्हें राजद्रोह के आरोप में गिरफ्तार कर लिया और एक संक्षिप्त मुकदमे के बाद, उन्हें सबके सामने फाँसी दे दी। इससे सेना में दहशत फैल गई। उनका मनोबल पहले से ही बहुत गिरा हुआ था।”
यह अभियान वैसा आसान नहीं रहा जैसा उन्होंने सोचा था। लंबी यात्रा का असर दिखने लगा था। जल्द ही, मारे गए राजाओं की सेनाओं का एक बड़ा हिस्सा विद्रोह कर बैठा और कई अन्य सेना छोड़कर भाग गए। प्राम्युध ने क्रूर बल से जवाबी हमला किया। कवियों ने कहा कि उसने अपने ही 9,000 सैनिकों को मार डाला। उसने सेना छोड़कर भागे हुए सैनिकों का पीछा करने और उन्हें वापस लाकर दिखावटी मुकदमे के बाद फांसी देने के लिए एक विशाल टुकड़ी भी भेजी। इस दौरान कुछ योद्धा तटस्थ रहे। ऐसा लग रहा था कि असुर सेना इस भयंकर आपसी लड़ाई के कारण खुद ही पराजित हो जाएगी। अंततः, प्राम्युध छह राजाओं को अपने साथ रहने के लिए राजी करने में सफल रहा और बड़ी मुश्किल से विद्रोह को दबा दिया गया। लेकिन उसने कीमती समय खो दिया था। जब उसने इंद्र और उसकी सेना की खोज में पर्वतीय क्षेत्र में गहराई तक जाने का फैसला किया, तब तक सर्दियाँ आ चुकी थीं।
वाराणसी के राजा विबोगा ने प्राम्युध से ग्रीष्म ऋतु तक प्रतीक्षा करने का अनुरोध किया, लेकिन प्राम्युध ने इनकार कर दिया। वह इंद्र को जल्द से

जल्द पकड़कर अपनी राजधानी वापस लाना चाहता था। विश्व का सम्राट बनने वाला प्राम्युध ऊंचे पहाड़ों और बर्फ से भयभीत नहीं होने वाला था। बेहतर सलाह के विरुद्ध, प्राम्युध ने अपनी सेना को उत्तर-पश्चिम की ओर बढ़ने का आदेश दिया। संकरी पहाड़ी सड़कें फिसलन भरी थीं। हाथी फिसलकर घाटियों में या सड़क पर गिर जाते थे, जिससे घंटों तक आवागमन बाधित हो जाता था। बैलगाड़ियों और यहां तक कि हाथियों को भी संकरी सड़क पर छोड़ना पड़ा। पैदल सेना की टुकड़ी बिखर गई और सैनिक अपनी मर्जी से चलने लगे। भारी कुल्हाड़ियाँ, गदाएँ और धनुष उठाना कठिन था और मैदानी इलाकों की भीषण गर्मी से आने वाले अधिकांश सैनिक पहाड़ों की जमा देने वाली ठंड के आदी नहीं थे। उनकी मुसीबतों को और बढ़ाने के लिए, प्राम्युध ने अपना सारा सामान बैलगाड़ियों में रखा था और इसे योद्धाओं को ही पहाड़ी पर ऊपर ले जाना पड़ा। नर्तकियों, कवियों और संगीतकारों; जादूगरों और पुजारियों की मिली-जुली भीड़; यह एक उपद्रव बन गया और प्रगति को बुरी तरह से धीमा कर दिया।
मैंने प्रहस्त से कहानी आगे बढ़ाई, “भीड़ एक महीने से अधिक समय तक मायावी इंद्र और उनके अनुयायियों की खोज में भटकती रही। कई लोग सेना छोड़कर भाग गए और अन्य मौसम और थकावट के कारण मर गए। सैनिकों का अधिकांश रसद समाप्त हो चुका था और इक्का-दुक्का पहाड़ी बकरियों और छोटे पक्षियों को छोड़कर कुछ भी खाने योग्य नहीं बचा था। आधे से अधिक हाथी मर चुके थे और भूखी और थकी हुई सेना को खिलाने के लिए बैलों को मार डाला गया था।”
सेना अपने अधिकांश भारी हथियार खो चुकी थी। सबसे पिछड़ी टुकड़ियाँ पहले ही पीछे छूट चुकी थीं और सैनिकों का काफिला सात मील से भी अधिक लंबा था। गंदे, फटेहाल लोगों का यह समूह, भारी और बोझिल हथियारों के साथ, धीरे-धीरे और कष्टपूर्वक खतरनाक पहाड़ों की भूलभुलैया से होकर गुजर रहा था। पिछले एक साल में उन्होंने एक भी देव सैनिक नहीं देखा था। असुर योद्धाओं ने केवल अपने ही खिलाफ और इस महान यात्रा के दौरान लुटेरों से लड़ने के लिए हथियार उठाए थे।
इस समय तक, प्रम्युध को भी अपनी मूर्खता का एहसास हो गया था और वह अपनी खूबसूरत राजधानी के आरामदेह माहौल में वापस लौटना चाहता था। लेकिन सेना बुरी तरह से रास्ता भटक चुकी थी। हिमस्खलन और भूस्खलन के कारण कई पहाड़ी दर्रे बंद हो चुके थे। प्रम्युध ने हर संभव दिशा में दूत भेजे और छोटे-छोटे

असुर सरदारों से मदद और रसद मांगी। लेकिन एक भी दूत वापस नहीं लौटा। ऐसा माना जाता है कि ये संदेश इंद्र की सेना ने रोक लिए थे। फिर, जब असुर सेना का मनोबल बिल्कुल गिरा हुआ था, एक ठंडी, धुंध भरी सुबह, इंद्र के घुड़सवार धनुर्धारियों ने उन पर जलते हुए बाणों की वर्षा शुरू कर दी। प्रम्युध की सेना एक संकरी पहाड़ी घाटी में फंस गई और दस मील से अधिक लंबी एक पंक्ति में फैल गई।
मैंने अपनी बात पर ज़ोर देने के लिए मानचित्र पर एक बिंदु के चारों ओर गोला बनाया। “इंद्र ने शक्तिशाली, संख्या में कहीं अधिक शक्तिशाली, असुर सेना को एक संकरी पहाड़ी घाटी में घेर लिया, जिसके एक तरफ गहरी खाइयाँ थीं और दूसरी तरफ ऊँची, ऊबड़-खाबड़ चट्टानें। फुर्तीले घोड़ों पर सवार देव धनुर्धारियों ने असहाय असुर सेना पर हल्के बाणों की वर्षा कर दी। इंद्र के पास 50,000 सैनिकों की असुर सेना से लड़ने के लिए मुश्किल से 500 योद्धा थे। लेकिन इसके बाद जो हुआ वह सरासर नरसंहार था। असुरों के भारी बाण गुरुत्वाकर्षण को चुनौती नहीं दे सके और उन पर्वतों की चोटियों तक नहीं पहुँच सके जहाँ देव धनुर्धारी तैनात थे। कुल्हाड़ी, गदा और भाले बिल्कुल बेकार साबित हुए। असुर सेना के पास लुढ़कते हुए पत्थरों को रोकने के लिए कुछ भी नहीं था, जो अपने रास्ते में आने वाले सैकड़ों लोगों को कुचलते हुए नीचे गिर रहे थे, सिवाय अपनी बारी का इंतज़ार करने के। थोड़े समय तक लड़ने के प्रयास के बाद, सेना का अधिकांश भाग अव्यवस्थित रूप से पीछे हट गया। प्रम्युध, अपनी तमाम कमियों के बावजूद, साहसी था और उसने भागती हुई सेना का मनोबल बढ़ाने के लिए उन चट्टानों पर चढ़ने का प्रयास किया जहाँ देव धनुर्धारियों का सबसे बड़ा समूह तैनात था। उसने कुशलता से अचूक तीर चलाने शुरू किए और कई देव धनुर्धारियों को मार गिराने में सफल रहा। अपने राजा की वीरता देखकर सैकड़ों असुर धनुर्धारी उसके पीछे चल पड़े। लेकिन उसकी अधिकांश सेना भाग गई और वाराणसी के वीर राजा को छोड़कर, जिसने प्रम्युध को इस विनाशकारी अभियान से रोकने का प्रयास किया, परिषद के अन्य पाँच राजा भी अपनी सेनाओं के साथ भाग गए। भगदड़ मचने से हजारों लोग कुचलकर मर गए और कई लोग खाइयों की तलहटी में दफन हो गए।
प्रम्युध और विबोगा अपने कुछ हज़ार सैनिकों के छोटे दल के साथ पहाड़ी पर चढ़ते हुए आगे बढ़े। उनकी यह छोटी लेकिन दृढ़ टुकड़ी भी देव सेना से संख्या में कहीं अधिक थी। इंद्र खतरे को भांप गए और तुरंत स्वयं युद्ध का

नेतृत्व करने लगे। एक बार फिर प्रम्युध और इंद्र युद्ध के मैदान में आमने- सामने थे। विबोगा भी आगे बढ़ते हुए प्रम्युध को पीछे हटने और उन्हें नेतृत्व करने देने के लिए चिल्लाया। लेकिन यह प्रम्युध के लिए इंद्र के साथ पिछले युद्ध में मिली शर्मनाक हार का बदला लेने का अवसर था। उन्होंने इंद्र को घेर लिया, जो अपने प्रतिद्वंद्वी की तलवार के शक्तिशाली वारों, कटों और प्रहारों से बचाव करते-करते जल्द ही थक गए। लेकिन असुरों के विपरीत, देव अपने नेता के जीवन के खतरे में होने पर घेरा बनाकर खड़े होकर अच्छी तलवारबाजी की सराहना नहीं करते। एक चतुराई से लक्षित बाण प्रम्युध की गर्दन पर लगा और उनकी दाहिनी आंख से निकल गया। इस आघात से विबोगा लकवाग्रस्त हो गए और उन कुछ ही पलों में, सात देव तलवारों ने विबोगा के टुकड़े-टुकड़े कर दिए।
प्रम्युध कुछ और सेकंड तक लड़ता रहा, लेकिन इंद्र ने अपनी तलवार के एक ही वार से अपने प्रतिद्वंदी का सिर धड़ से अलग कर दिया। उसकी विजय की चीख से बचे हुए असुर योद्धाओं में खलबली मच गई। इंद्र ने प्रम्युध का कटा हुआ सिर अपनी तलवार की नोक पर उठाकर अपने सभी विरोधियों को दिखाया। असुर सेना भागने लगी। इंद्र ने कुछ हज़ार को भागने दिया और फिर पीछे छूटे हुए दुर्भाग्यशाली लोगों का संहार करने के लिए आगे बढ़े। उस भयानक दिन हज़ारों लोग मारे गए।
असुरों की अव्यवस्थित सेना को देव योद्धाओं ने, जो उस क्षेत्र से भलीभांति परिचित थे, पहाड़ों से खदेड़ दिया। मैदानों में पहुँचते ही, घुड़सवार सैनिकों द्वारा पीछा की जा रही असुर सेना की संख्या लगभग 200 रह गई। भाग निकले पाँचों राजा वापस लौटकर संगठित जवाबी हमला कर सकते थे। घुड़सवार खुले मैदान में थे जहाँ असुर सेना के भारी साजो-सामान उन्हें नष्ट कर सकते थे। यही कारण था कि इंद्र ने रणनीतिक रूप से अपनी सेना को सुरक्षित दूरी पर रखा था, असुरों के भारी बाणों की मारक क्षमता से परे, लेकिन अपने हल्के बाणों की मारक क्षमता के भीतर। जल्द ही, देव सेना में भाग्य के लालची और असुर सेना से भागे हुए सैनिक शामिल हो गए, ऐसे लोग जो हमेशा विजयी पक्ष में रहना चाहते थे। यह खबर फैल गई कि असुर हार के बाद भाग रहे हैं और देव उनका पीछा कर रहे हैं। लुटेरे और अन्य जंगली जनजातियाँ, जो शक्तिशाली सेना के उत्तर की ओर बढ़ने पर छिप गई थीं, बाहर आकर देव सेना में शामिल हो गईं।

इंद्र ने इसे बखूबी अंजाम दिया। उन्होंने हर संभव चीज़ को ध्वस्त कर दिया। उन्होंने पुस्तकालयों को जला दिया, कवियों और वास्तुकारों की हत्या कर दी, मंदिरों को तोड़ डाला और स्त्रियों एवं बच्चों को मार डाला। जल्द ही, असुरों की हर अनमोल वस्तु नष्ट हो गई। और यहीं से इंद्र को पुरेंद्र या 'नगरों का संहारक' नाम मिला। जल्द ही, असुरों को भूमिगत होना पड़ा और कभी- कभार प्रतिरोध हुआ, लेकिन अधिकतर वह अप्रभावी रहा। इंद्र ने असुर सभ्यता के अवशेषों को आधार बनाकर एक साम्राज्य का निर्माण किया। लगभग 300 वर्षों तक, यह देश इंद्र वंश के पूर्ण नियंत्रण में रहा।
इस काल में, मैदानी इलाकों ने देवों के स्वभाव को शांत किया। कला और संस्कृति ने एक बार फिर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया और देवों का उग्र स्वभाव कम होने लगा। वे सुख-सुविधाओं में लीन हो गए। महान नगरों का निर्माण हुआ, यद्यपि वे असुरों के नगरों से बहुत ही निम्न स्तर के थे। यह समन्वय प्रक्रिया दूसरे इंद्र के शासनकाल के अंत में शुरू हुई। असुरों के सर्वोच्च देवता शिव को देवों ने भी स्वीकार कर लिया। असुर वंश के महान गुरु ब्रह्मा को भी ईश्वर के रूप में स्वीकार किया गया। बाद के इंद्र राजा कमजोर थे और जल्द ही विष्णु के हाथों की कठपुतली बनकर रह गए, जो इंद्र तृतीय की सेना के सेनापति थे। इंद्र ग्यारह के शासनकाल के अंत तक, विष्णु वंश वस्तुतः देश पर शासन कर रहा था और इंद्र राजा केवल नाममात्र के शासक रह गए थे: ठीक वैसे ही जैसे असुर वंश के शिव राजा, जो दस राजाओं के शासन से बहुत पहले कैलाश के निकट, ऊपरी हिमालय में एक छोटी सी शक्ति बनकर रह गए थे। विष्णु देवताओं ने इंद्र नाम और देव संस्कृति को संरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और ब्राह्मणों द्वारा उन्हें सामाजिक व्यवस्था के संरक्षक के रूप में सराहा गया। जल्द ही, विचारों का एक विचित्र मिश्रण उत्पन्न हुआ। पता नहीं यह ब्राह्मणों की धूर्तता थी या महज़ संयोग, लेकिन ज्ञान के मूल दाता ब्रह्मा को सृष्टिकर्ता, विष्णु को व्यवस्था का संरक्षक और विडंबना यह है कि साम्राज्य के निर्माता शिव को संहारक के रूप में सराहा गया, न कि इंद्र को, जिन्होंने साम्राज्य का विनाश किया। ये भारत के तीन देवता - त्रिमूर्ति - कहलाए।
इन परिवारों के प्रथम सदस्यों को देवता माना जाता था और देव आज भी उनका आदर करते हैं। हम शिव को ईश्वर और प्रथम ब्रह्मा को भी ईश्वर मानते हैं। लेकिन ब्राह्मणों का यह आग्रह कि विष्णु, जो देव सेनापति और एक देव राजा के मात्र

सेवक थे, को सर्वोच्च ईश्वर माना जाए, स्वीकार करना कठिन था। अधीन किए गए असुरों ने विष्णु के विरुद्ध बड़े विद्रोह किए। हिरण्य जुड़वा भाइयों और महाबली जैसे कुछ महान पुरुषों ने थोड़े समय के लिए प्राचीन साम्राज्यों के समकक्ष एक विशाल असुर साम्राज्य स्थापित करने में सफलता प्राप्त की। लेकिन बाद के वर्षों में, जिस प्रकार असुर साम्राज्य दस राज्यों में विभाजित हो गया, उसी प्रकार देव साम्राज्य भी अनेक छोटे-छोटे जागीरों में बँट गया।
जब कोई साम्राज्य बिखर जाता है और कई छोटे-छोटे राज्य अस्तित्व में आते हैं, तब हम समझ जाते हैं कि एक नए साम्राज्य की स्थापना का समय आ गया है। जब मध्य भारत में बाली जैसे मिश्रित नस्ल के लोग और सह्या पर्वतमाला में कार्थी वीरारजुन जैसे आदिवासी देव साम्राज्य से विशाल राज्य बना लेते हैं, तब हम समझ जाते हैं कि इतिहास ने अपना चक्र पूरा कर लिया है। इंद्र के पास शक्तिशाली लेकिन विभाजित असुर साम्राज्य से लड़ने के लिए एक छोटी सी सेना थी। मुझे आशा है कि आपने उस महत्वपूर्ण युद्ध से सबक सीखा होगा जिसके परिणामस्वरूप हमारे लोगों का पतन हुआ। अब समय आ गया है कि हम भी वैसा ही करें।
याद रखें कि शक्तिशाली विष्णु परिवार भी आपसी कलह के कारण कमजोर हो चुका है और अब सरयू नदी के किनारे स्थित अयोध्या की छोटी रियासत पर शासन करने वाला एक छोटा समूह ही उल्लेखनीय है। हमारे प्रिय सम्राट महाबली का मानना था कि इस रियासत के युवा राजकुमार दशरथ, जो वर्तमान राजा अनर्न्य के रिश्तेदार थे, देवताओं में एकमात्र ऐसे थे जो साम्राज्य का निर्माण कर सकते थे। इसलिए आइए हम तब तक अपना संघर्ष जारी रखें जब तक हमें घोड़े और शस्त्र न मिल जाएं। तब हम देवताओं को दिखाएंगे कि वे इतिहास के सबक भूल चुके हैं।
हमारे सामने मौजूद भीड़ के लिए भाषण कुछ बोझिल सा था। इतिहास की उबाऊ खुराक देने के बजाय उन्हें संक्षिप्त, सरल निर्देश देना बेहतर होता, जिनका वे पालन कर सकें। मुझे निराशा हुई कि मेरे लंबे भाषण के दौरान किसी ने भी मेरा विरोध नहीं किया या कोई सवाल नहीं उठाया। वे बस मूर्खतापूर्वक घूरते बैठे रहे। अगर मुझे अपनी तीव्र महत्वाकांक्षा को थोड़ा सा भी शांत करना था, तो मुझे नेताओं को तैयार करने में काफी समय लगाना होगा। एक दिन, इस समूह की निष्क्रिय अधीनता मेरे लिए लाभदायक साबित हो सकती है। मेरे

पूर्ववर्तियों ने जो करने की कोशिश की थी, वह एक गणतंत्र चलाना था। वे लोकतंत्र चाहते थे, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति, मेरे सामने बैठे इन मूर्खों की तरह, राष्ट्र के भविष्य का फैसला करे।
ऐसी जाति को एक शक्तिशाली तानाशाह की आवश्यकता थी। महाबली ने तानाशाह बनने का प्रयास किया, लेकिन असफल रहा। वह तानाशाह बनने के लिए बहुत नरम था। हिरण्य और उसके भाई जैसे पूर्व राजा क्रूर और निर्दयी थे, और इतने कठोर थे कि उन्होंने जनता का समर्थन खो दिया। उन्हें एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता थी जो बुद्धिमान, महत्वाकांक्षी, मजबूत और निर्दयी होने के साथ-साथ परोपकारी भी हो - शायद मुझ जैसा कोई।
मैंने भावी योद्धाओं के समूह को दोपहर के भोजन के लिए जाने का आदेश दिया। मैं अपने भाइयों और चचेरे भाइयों के साथ एक बरगद के पेड़ के नीचे बैठ गया, जो उस मैदान से ज़्यादा दूर नहीं था जहाँ योद्धा मौज-मस्ती कर रहे थे और अश्लील चुटकुले सुना रहे थे। हमने पिछले कुछ दिनों की बची हुई बहस से शुरुआत की। हमें अपना अभियान कहाँ से शुरू करना चाहिए? विभीषण कावेरी नदी के पास स्थित छोटे से देव गाँव पर कब्ज़ा करना चाहता था। वहाँ एक छोटा किला, अन्न भंडार, एक छोटा सा विद्यालय था, बस इतना ही। लोग बेहद गरीब थे और कुपोषित पुरुषों का एक छोटा सा दल जर्जर किले की रखवाली कर रहा था। यह महज़ एक प्रतीकात्मक जीत होती। कुंभकर्ण इसके घोर विरोधी थे, उनका कहना था कि यह व्यर्थ का प्रयास होगा और इससे अन्य देव राजाओं को हमारी सेना के बारे में पता चल जाएगा। मुझे इस बेमेल समूह को सेना कहना कुछ हद तक हास्यास्पद लगा, लेकिन मैंने कुंभकर्ण को उसकी गलतफहमी में ही रहने दिया। वह उत्तरी सह्याओं में कार्थी वीरअर्जुन के विरुद्ध एक व्यापक अभियान चलाना चाहता था। मेरे चाचा, माल्यावन और सुमाली, ऐसा बिल्कुल नहीं चाहते थे। वे मध्य भारतीय देव राज्यों के खिलाफ गुरिल्ला युद्ध जारी रखना चाहते थे और अंततः अमरावती पर कब्जा करना चाहते थे।
यह एक लंबा और उबाऊ सपना था, जिसमें कोई रणनीति या योजना नहीं थी। पिछले कुछ दिनों के इस जटिल मज़ाक से मैं कुछ हद तक खुश और कुछ हद तक परेशान था। मैं इसे एक लोकतांत्रिक मंच बनाने की पूरी कोशिश कर रहा था, जहाँ उचित चर्चा के बाद आपसी सहमति से निर्णय लिया जा सके। लेकिन, मुझे यकीन था कि इन लोगों के साथ लोकतंत्र नहीं चल सकता। अगर मेरे करीबी रिश्तेदार भी इस बात पर सहमत नहीं हो सकते कि अभियान किस दिशा में जाना चाहिए, और यह भी नहीं

सोच सकते कि क्या हमारे पास इसे चलाने के लिए हथियार, साधन और लोग हैं, तो मैं आम असुरों से स्पष्टता से सोचने की उम्मीद कैसे कर सकता हूँ?
“बस करो!” मैं व्याकुल हो रहा था और इस नाटक को खत्म करना चाहता था। “मैं श्रीलंका पर हमला करना चाहता हूँ और बात यहीं खत्म होती है। मैं आगे कोई बातचीत बर्दाश्त नहीं करूँगा।”
“लेकिन…” मैंने विभीषण को तीखी निगाहों से रोकते हुए देखा कि वह मेरे सामने डर से कांप रहा था। या तो मैं लोगों को डराने में माहिर हो रहा था या मेरा छोटा भाई मेरी कल्पना से कहीं ज़्यादा डरपोक था। इससे पहले कि मेरे चाचा अपनी बड़ी-बड़ी, बेतुकी योजनाएँ शुरू करते, मैंने दृढ़ता से कहा, “पहले किसी को हमारी माँ और बहन को द्वीप से लाना होगा। वहाँ बहुत खतरा हो सकता है। फिर हम द्वीप पर हमला करने की योजना बनाएंगे। मुझे वह सिंहासन चाहिए जहाँ मेरा वह मूर्ख सौतेला भाई अपनी मोटी कमर टिकाए बैठा है और मुझे वह जल्दी चाहिए।”
मुझे आज भी अपने चाचाओं की आँखों में हैरानी के भाव याद हैं। वे मेरी भाषा, लहजे और हावभाव से स्तब्ध थे। उनके रीति-रिवाजों के अनुसार, नेताओं को विनम्र होना पड़ता था, सभ्य भाषा का प्रयोग करना पड़ता था और सभी से सहयोग मांगने से पहले सबकी बात सुननी पड़ती थी। मैंने कम से कम पाँच असुर नियमों का उल्लंघन किया था। लेकिन मुझे परवाह नहीं थी। अब न तो शुद्ध तमिल में अलंकारिक भाषा का प्रयोग, न ही कोई विस्तृत अनुष्ठान। मैं अपने नियम खुद बनाऊंगा और जो चाहेगा वो मेरे साथ चल सकता है।

8 महाराजा
रावण
सुमाली के साथ आने के दिन से ही मैंने इस आदमी पर नज़र रखी थी, हालाँकि उसमें ध्यान देने लायक कुछ भी नहीं था। वह उन निचले दर्जे के सैनिकों में से एक था जो किसी भी सेना के लिए बेहद ज़रूरी होते हैं, लेकिन जिन्हें अक्सर भुला दिया जाता है। वह हमेशा मेरे पास आने की कोशिश करता रहता था। वह मुझसे कुछ कहना चाहता था। मैंने उसे बुलाया और पूछा कि वह क्या चाहता है। मुझे यह काम हफ़्तों पहले कर देना चाहिए था, लेकिन मैंने सेना के अधिकारियों और निचले रैंक के सैनिकों के बीच दूरी बनाए रखने का फ़ैसला किया था। पहले हम तीनों भाई अपने सभी साथियों के साथ मिलकर खूब शराब पीते थे। लेकिन अब मुझे इस तरह की भाईचारे की भावना से असहज महसूस होने लगा था। सब कुछ तब बदल गया जब मेरे चाचा पचास लोगों के साथ आए।
वह सांवला युवक मेरे पास आया, आदरपूर्वक झुककर प्रणाम किया और जलपान मेरे पास रख दिया। मैं उसका चेहरा नहीं देखना चाहता था। मुझे डर था कि अगर मैंने ध्यान से देखा तो मुझे इस वर्ग के लोगों की व्यर्थ चापलूसी और अत्यधिक विनम्रता के पीछे छिपी घृणा और तिरस्कार दिखाई देगा। वह कुछ देर मेरे पास खड़ा रहा और जब मैंने उसकी उपस्थिति पर ध्यान नहीं दिया तो वह चुपचाप चला गया। मैं इस बात को लेकर इतना चिंतित क्यों था कि वे मेरा सम्मान करते हैं या नहीं? उस बदसूरत दिखने वाले व्यक्ति को अपने दिमाग से निकालकर, मैंने सेना की संगठनात्मक संरचना पर ध्यान केंद्रित करने की कोशिश की।
हमने दस अधिकारियों की एक परिषद बनाने पर सहमति जताई थी, जिसमें मेरे चाचा प्रहस्त, सुमाली, मरीच, पूर्वी लंका के मोती द्वीप समूह के पूर्व राज्यपाल जंबुमाली और हम तीनों भाई शामिल थे। इनमें रुद्रक भी थे, जो महाबली के विशिष्ट सुरक्षा दल के एक कुशल कमांडर थे और वामन विष्णु की सेना द्वारा

दिया था कि हमें अपने सौतेले भाई से लंका छीन लेनी चाहिए। अब मुझे एहसास हुआ कि यह कदम ज्यादा तर्कसंगत नहीं था।
कुबेर का महल त्रिकोटा नामक विशाल चट्टानी पर्वत की चोटी पर स्थित एक सुदृढ़ किले के भीतर था। पहले जो थोड़ी-बहुत वनस्पति बची थी, वह सात वर्ष पहले कुबेर के सुरक्षा बलों द्वारा नष्ट कर दी गई थी: जब मुख्य भूमि के आसपास के समुद्रों पर राज करने वाले समुद्री लुटेरे वरुण ने घने जंगलों की आड़ में दुस्साहसी आक्रमण किया और लगभग लंका पर कब्जा कर लिया था। उसने शहर को जला दिया और महल से भारी मात्रा में सोना, आयातित घोड़े, रेशम और स्त्रियाँ लूट लीं। इसके बाद किले को अभेद्य बना दिया गया, पहाड़ी से सारी वनस्पति काट दी गई और हर सौ गज पर पहरेदारी चौकियाँ स्थापित की गईं। घुड़सवार रक्षक सड़कों और समुद्र तट पर गश्त करते थे। वे निर्मम और कुशल थे और उनकी संख्या एक हजार से अधिक थी। उन्होंने पिछले सात वर्षों में वरुण के तीन हमलों को सफलतापूर्वक विफल किया था और यहाँ तक कि उसके तीन जहाजों को डुबोने में भी सफल रहे थे। यह अफवाह थी कि वरुण पूर्वी समुद्रों की ओर चला गया है। कुबेर ने एक बेड़ा भी प्राप्त किया और एक शक्तिशाली नौसेना का निर्माण किया। ये भारी हथियारों से लैस जहाज समुद्र में गश्त करते थे और द्वीप के बंदरगाह से व्यापारिक जहाजों के आने-जाने में मार्गदर्शन करते थे।
लेकिन कुबेर की सेना की ताकत से भी ज़्यादा, एक और बात थी जिसने मुझे अंदर तक डरा दिया था। मेरी माँ और बहन अब भी उस जर्जर झोपड़ी में रह रही थीं जो चट्टान के किनारे समुद्र की ओर खुलती थी, बशर्ते वे भूख या मौसम की मार से न मरी हों। अगर कुबेर को पता चल जाता कि मैं ऐसी कोई शरारत करने की योजना बना रहा हूँ, तो वह पल भर में मेरे परिवार को मार डालता या इससे भी बुरा, उन्हें बंधक बना लेता। मेरे पास इसके लिए कोई वैकल्पिक योजना नहीं थी। लेकिन परिषद ने तय कर लिया था कि लंका को हर हाल में जीतना है। द्वीप की संपत्ति अपार थी और इससे हमें मुख्य भूमि से लड़ने के लिए एक विशाल सेना और नौसेना खड़ी करने में मदद मिलती। किसी और विजय से हमें भारत की ताकत का मुकाबला करने के लिए पर्याप्त सेना जुटाने में मदद नहीं मिलती।
“महोदय, क्या मैं कुछ बोल सकता हूँ?” मैंने उस हट्टे-कट्टे नौजवान को घूरकर देखा और मुझे थोड़ी झुंझलाहट हुई। यह वही आदमी था जो पिछले कुछ दिनों से मुझे घूर रहा था।

“तुम्हें क्या चाहिए? क्या तुम्हारे पास करने के लिए इससे बेहतर कुछ नहीं है?” मुझे अपनी ही कठोरता पर आश्चर्य हुआ।
वह वहाँ खड़ा था, उसकी आँखें मेरी आँखों से मिल रही थीं। मैं उससे एक सिर लंबा था, फिर भी उसने मुझे सीधे देखा। न कोई धमकी थी, न कोई डर। मैंने इंतज़ार किया कि उसकी नज़रें झुक जाएँ, वह सहम जाए और अपने पैरों के अंगूठों को घूरने लगे। लेकिन मेरे सामने खड़े उस व्यक्ति ने ज़रा भी घबराहट नहीं दिखाई। किसी असुर का अधिकार का सामना करने पर घुटने टेककर गिड़गिड़ाना ही पारंपरिक लक्षण होता है। मेरी जाति, प्रगति की राह पर चलते हुए, यह भूल गई थी कि लोग बराबर हो सकते हैं और मध्य मार्ग जैसी कोई चीज़ भी होती है। इस व्यक्ति में, मुझे एक ऐसा व्यक्ति मिला जो समानता को समझ सकता था। मुझे आश्चर्य और झुंझलाहट हुई कि उस व्यक्ति ने मेरे अधिकार का ज़रा भी भय नहीं दिखाया और न ही विनम्रता का प्रदर्शन किया। यह बेतुका था; यह सोचना ही बेतुका था कि वह मेरे बराबर है। या क्या यह बेतुका था? कुछ महीने पहले, महाबली द्वारा मुझे खोजे जाने से पहले, मैंने भी ठीक वैसा ही व्यवहार किया था।
तब मुझे समझ आया। मैंने देखा कि वह एक ऐसा व्यक्ति था जिसने सब कुछ खो दिया था और केवल एक उद्देश्य के लिए जी रहा था। उसके भीतर कुछ ऐसा था जो तनावग्रस्त था और फटने को तैयार था। यह एक ऐसा व्यक्ति था जो अपनी भावनाओं पर काबू रख सकता था और अपने परिवेश में घुलमिल सकता था। वह घास में कोबरा की तरह स्थिर लेटा रह सकता था और घातक जहर से वार कर सकता था, जुनून से हमला कर सकता था, चुपचाप और निर्दयता से। उसकी आँखें काँच जैसी थीं जब उसने मुझे घूरा। अचानक मैं डर गया। मेरे हाथों ने तलवार की बट को कसकर पकड़ लिया, इस कोबरा के किसी भी हरकत करने पर वार करने के लिए तैयार। बिना किसी चेतावनी के, वह मेरे पैरों पर गिरकर मुझे चौंका दिया।
मुझे गुस्सा भी आया और राहत भी मिली। गुस्सा इसलिए कि उसने भी असुरों जैसा ही व्यवहार दिखाया और सत्ता के आगे झुक गया। राहत इसलिए कि मैं ऐसी आदिम शक्ति से लड़ना नहीं चाहता था। उस आदमी में कुछ अशिष्ट, कच्चा और ताजगी भरा था। वह प्रकृति की मूल शक्ति था, धरती का सार। उसका साधारण होना ही उसे असाधारण बनाता था।
“मुझ पर भरोसा रखिए, महाराज, मेरे राजा; मैं आपकी सेवा किसी भी अन्य व्यक्ति से बेहतर करूंगा। मैं आपके लिए अपना प्राण भी दे दूंगा। मुझे अपना

सेवक बना लीजिए। मैं जानता हूं कि आप हमारे रक्षक हैं। आप हमारे ईश्वर द्वारा भेजे गए राजा हैं, जो असुर जाति को देवताओं के चंगुल से बचाने आए हैं।” वह अचानक फूट-फूटकर रोने लगा और उसका पूरा शरीर कांपने लगा। मैं उसके इस अचानक भाव-भंगिमा से शर्मिंदा होकर वहीं खड़ा रह गया। उसने मेरे पैर पकड़ लिए। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूं या कैसे प्रतिक्रिया दूं। मैंने इसकी उम्मीद नहीं की थी। तभी मैंने देखा कि प्रहस्त अपनी तलवार खींचे हमारी ओर दौड़ रहा है। मैंने अपनी उंगली के एक इशारे से उसे रोक दिया, यह देखकर मैं चकित रह गया कि कैसे मेरे एक छोटे से इशारे से इतना अभिमानी प्रहस्त भी अचानक रुक गया।
कितना अद्भुत! अगर और भी लोग इस तरह मेरे चरणों में गिरते, तो शायद मुझे न सिर्फ इसमें आनंद आने लगता, बल्कि मैं इसकी मांग भी करने लगता। शुरुआती दया गायब हो गई थी और उसकी जगह उस बेचारे इंसान के लिए घृणा से भरा प्यार आ गया था जो मेरे चरणों में पड़ा था। मैं महसूस कर सकता था कि वह पूरी तरह मेरे वश में है। मैं उसे लात मार सकता था, घसीट सकता था और यहाँ तक कि उसका सिर भी काट सकता था, और कोई उंगली भी नहीं उठाता। मैं भयभीत भी था। मेरा क्या होगा? इस तरह की शक्ति के साथ राजा होने की ज़िम्मेदारी भी आती है, अपनी प्रजा के दुख-दर्द सुनना और उनकी समस्याओं का समाधान खोजना। मैं ऐसा करूँगा। मैं दुनिया का सबसे दयालु राजा बनूँगा।
मैंने उसे हाथों से उठाया और उसके चेहरे को निहारने लगा। उसकी आँखें लाल थीं और मुझे लगा कि उसकी भावनाएँ सच्ची हैं। लेकिन मैं उसकी आँखों की गहराई को समझ नहीं पा रहा था। नींद से भरी, बेजान आँखें किसी साँप की आँखों जैसी थीं। उनमें कुछ भयावह छिपा हुआ था और मुझे डर था कि कहीं साँप जाग न जाए। "मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ?" मैंने अपनी सबसे कोमल आवाज़ में पूछा और सोचा कि क्या मेरी आवाज़ किसी राजा के लिए कुछ ज़्यादा ही तीखी है। “महामहिम, हम आपके असुरों के राजा बनने के बारे में चर्चा कर रहे हैं। हम चाहते हैं कि आपका राज्याभिषेक जल्द से जल्द हो। शिविर के सभी सैनिक मानते हैं कि आप महाबली के सच्चे उत्तराधिकारी हैं और हम चाहते हैं कि आप हमारा नेतृत्व करें। मैं उन सैनिकों के प्रतिनिधि के रूप में आया हूँ जो आपकी सफलता के लिए जान देने और जान देने को तैयार हैं।”
“आप जानते हैं कि मैं आपका सेनापति हूँ और आप भी मेरी ही तरह हमारे उद्देश्य के लिए जीते और मरते हैं।” मेरी आवाज़ सख्त थी, फिर भी मैं अपनी

उत्तेजना छिपा नहीं सका। असुर सेना के सभी सिपाही मुझे अपना राजा बनाना चाहते थे। परिषद भले ही सोचे कि मैं इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी के लिए बहुत छोटा और जल्दबाज़ हूँ, लेकिन मेरे सैनिक मुझे अपना नेता बनाना चाहते थे और यही ज़्यादा महत्वपूर्ण था। मुझे इस बात की बेचैनी थी कि मैंने परिषद के मुखिया के रूप में खुद को थोप दिया था। अब यह सुंदर युवक मुझे राजा कहकर संबोधित कर रहा था, न कि केवल ‘सर’ कहकर, जैसा कि असुर सेना में सिपाही अपने वरिष्ठों को संबोधित करते हैं। मैं प्रसन्न था, लेकिन मैंने देखा कि प्रहस्त थोड़ा झिझका और मैंने इसे अपने मन में याद रख लिया।
“महामहिम, हम चाहते हैं कि आप हमारे राजा बनें। हमने परिषद के लिए बहुत संघर्ष किया है। हम हर बार हारे क्योंकि परिषद में कोई न कोई राजद्रोह से परे नहीं था। हम देवताओं के समान राजा चाहते हैं, एक ऐसा राजा जो हम पर और लंका से गांधार तक पूरे भारत पर शासन करने के योग्य हो। हम महाबली के शासन के समान सम्राट चाहते हैं। महाराज, इस महान सपने के अलावा और कुछ भी हमें प्रेरित नहीं करेगा। हम उस महान असुर साम्राज्य के लिए मरने को भी प्रसन्न होंगे जिसका निर्माण आप करने जा रहे हैं।”
हमें इस मामले पर परिषद में चर्चा करनी होगी। आपका नाम क्या है?
“भद्रा, महाराज। पूर्णा नदी के किनारे बसे एक गाँव से भद्रा। महाराज, हम आपके निर्णय की प्रतीक्षा करेंगे। कृपया मेरी इस अनुचितता के लिए क्षमा करें, लेकिन हमारे पास कोई और विकल्प नहीं था।” वह एक राजा के समान सम्मान के साथ पीछे की ओर चलने लगा, मेरी ओर पीठ किए बिना। थोड़ी दूरी पर प्रतीक्षा कर रहे उसके मित्रों ने ज़ोरदार जयकार की।
प्रहस्त आए और उन्होंने मेरे कंधे पर हाथ रखा। “चलो परिषद बुलाते हैं।” उनकी आवाज़ कठोर थी, पर मुझे इसकी ज़रा भी परवाह नहीं थी। मेरे कान सैनिकों के शिविरों से उठ रहे नारों को सुन रहे थे, ‘महाराजा रावण की जय हो!’ “परिषद भंग की जाती है।” मैंने प्रहस्त के हैरान चेहरे को देखकर मुस्कुराते हुए कहा, “आप मेरे प्रधानमंत्री हैं।”
मैं प्रहस्त को सोचने के लिए छोड़कर चला गया। मेरे मन में कहीं न कहीं यह एहसास था कि मुझे बहकाया जा रहा है। मैंने शिविरों की ओर देखा और भद्रा को अकेले खड़े देखा, जो वहाँ से जा रही थी।
अपने साथियों के बीच खुशी का माहौल था। उसके होंठों के कोनों पर जीत की हल्की सी झलक थी। हमारी निगाहें मिलीं और उसकी मुस्कान गायब हो गई। उसने

सिर झुकाया। मैं शाही अंदाज़ में सैनिकों के जयकारे के बीच से होते हुए अपने शिविर की ओर चल पड़ा। अभियान शुरू करने से पहले मुझे अपनी माँ और बहन को वापस लाना था। यही मेरा आखिरी विचार था, इससे पहले कि मैं एक गहरी नींद में सो गया।

9. प्रिय मरीचा

रावण
मैंने उन्हें अपने चाचा मारीचा के साथ देखा। मेरी बहन बड़ी हो गई थी; दिखने में बहुत सुंदर तो नहीं थी, लेकिन उसकी ऊर्जा का संचार स्पष्ट था। मैं अपने मंत्रिपरिषद के साथ बैठक में था। यह अब लोकतांत्रिक मंच नहीं रहा था, लेकिन मैंने सुनिश्चित किया कि उनकी बात सुनी जाए। यह एक दिखावा था और सभी जानते थे कि मेरी इच्छा का अंत तक पालन किया जाएगा। लेकिन असुरों की बहस और तर्क-वितर्क की आवश्यकता पूरी हो गई थी।
सभा रुक गई और सब लोग खड़े हो गए। मेरे बूढ़े चाचा मारीच मुस्कुरा रहे थे और हम सबका अभिवादन कर रहे थे। उनके जुड़वां बच्चे उनके पीछे लड़खड़ाते हुए आ रहे थे, उनके पीछे उनकी अभी भी सुंदर पत्नी थीं। मेरी माँ और बहन उनके पीछे थीं, और वे इंतज़ार कर रही थीं कि हम इस महत्वपूर्ण सभा को रोककर उनके पास आएं। विभीषण एक खोए हुए पिल्ले की तरह खुशी से भौंकते और चिल्लाते हुए उनकी ओर दौड़ा, जैसे कोई पिल्ला अपनी माँ को पा लेता है। मैं भी दौड़कर अपनी माँ और बहन को गले लगाना चाहता था, लेकिन मुझे यकीन नहीं था कि राजा लोग ऐसा व्यवहार करते हैं। कुंभ विभीषण के पीछे दौड़ रहा था और जुड़वां बच्चे उसकी ओर दौड़े, इतनी जोर से चीखते और हंसते हुए कि जंगल में हमारे ऊपर बैठे पक्षी भी डर गए। मैं एक राजसी अंदाज में चल रहा था, मेरे चाचा प्रहस्त और हमेशा गंभीर रहने वाली सुमाली मेरे पीछे-पीछे आ रहे थे। “रास्ते में आपको कोई परेशानी तो नहीं हुई?” चाचा प्रहस्त के पास भावुकतापूर्ण शिष्टाचार के लिए समय नहीं था।
"हमारे पास केवल वरुण की नावें थीं, लेकिन हमने एक छोटे से उपहार से ही काम चला लिया।"

“उसने सुलक्षणा का मोतियों का हार समुद्री लुटेरों को दे दिया। उसने उस हार को कमाने के लिए सात साल तक उस कारीगरी में कड़ी मेहनत की थी।” मेरी माँ की आवाज़ में स्नेह था। मारीचा ने कंधे उचका दिए, मानो यह कहना चाह रहे हों कि मोतियों का हार समुद्री लुटेरों को देना कोई बड़ी बात नहीं थी। मैंने उनके पैर छुए और उन्हें गले लगा लिया।
“तो तुम राजा बन गए हो ना?” मेरे चाचा ने मेरी पीठ पर ज़ोर से थपकी दी। मैं वहाँ ऐसे मुस्कुरा रहा था जैसे कोई बच्चा मौखिक परीक्षा में अच्छे अंक लाकर खुश हो गया हो। “अब हमें तुम्हारे लिए एक राज्य खोजना होगा।”
सिपाही हँसे और मैंने अपने चेहरे पर मुस्कान बनाए रखने के लिए बहुत संघर्ष किया। उनका मज़ाक चुटीला हो सकता था, लेकिन मैं उस बूढ़े बदमाश को कितना पसंद करता था। हमें अच्छी तरह याद है जब हम किशोर थे, मेरे चाचा और चाची कुछ हफ़्तों के दो छोटे बच्चों को लेकर हमारी जर्जर झोपड़ी में आए थे। वह एक भयंकर मानसून का मौसम था और हमने भगवान शिव से प्रार्थना की कि झोपड़ी तूफान का सामना कर सके। वे थके-हारे लग रहे थे, मेरे चाचा फटे-पुराने कपड़ों में थे, सिर पर पट्टी बंधी थी और हाथ में स्लिंग थी, और मेरी चाची मुस्कुरा रही थीं, जबकि वे देखने में ऐसी लग रही थीं जैसे अभी गिरकर मर जाएँगी। उन्होंने एक-एक बच्चे को कसकर पकड़ रखा था, और मेरी माँ, जो बिना शब्दों के ही समझ जाती थीं, खड़ी हुईं और दोनों बच्चों को उनकी थकी हुई बाहों से ले लिया। हमने उनके साथ अपनी थोड़ी-बहुत कांजी भाषा साझा की और वे पूरी रात सोए।
बच्चे इतने कमज़ोर थे कि रो भी नहीं सकते थे, लेकिन मुझे याद है मेरी माँ उनके खाने-पीने को लेकर चिंतित रहती थीं। मेरी चाची बच्चे पैदा करने की उम्र पार कर चुकी थीं और हमें पूरा यकीन था कि बच्चों को गोद लिया गया था। मेरे चाचा और चाची अपने राज्य खोने के बाद से हमेशा गरीब ही रहे थे, फिर भी ऐसे दयालु काम करना उनके स्वभाव में था। गाँव में हम किसी को नहीं जानते थे जो हमें थोड़ा दूध उधार दे सके। हमारे पड़ोसी इतने गरीब थे कि उनके पास गाय रखने की भी जगह नहीं थी और दूध तो उनके लिए विलासिता की वस्तु थी।
हमेशा की तरह, कुम्भा का ही विचार था। हमने उस इकलौते आदमी से दूध चुराने का फैसला किया जिसके पास एक नहीं बल्कि सैकड़ों गायें थीं। यह मुश्किल था, पर मुमकिन था। खतरे ने हमारे साहसिक कार्य में रोमांच भर दिया। विभीषण हिचकिचा रहा था, लेकिन कायर कहलाने के डर से उसने विरोध नहीं किया, जो वह

निश्चित रूप से था। वह पहरा देने और कुबेर के अस्तबल में बाड़ फांदकर घुसते समय हमें चेतावनी देने के लिए तैयार हो गया। चारों ओर घना अंधेरा था और हम दूध दुहने के लिए गाय ढूंढने के लिए अस्तबल में इधर-उधर टटोल रहे थे। हममें से किसी को भी गाय दुहने का अनुभव नहीं था। अस्तबल में गोबर और मूत्र की बदबू आ रही थी और वे बड़े-बड़े भिनभिनाते मच्छर, जो छोटे उड़ते हुए बाघों जैसे दिखते थे, सुबह-सुबह खून का स्वाद चखने के लिए बेताब थे। यह एक बुरा विचार लगने लगा था और हम वहां से निकलना चाहते थे। बाहर किसी ने खांसा और हमारी धड़कनें तेज हो गईं। हमने एक हल्की सी सीटी सुनी और घबरा गए। यह विभीषण था जो हमें चेतावनी दे रहा था कि कोई आ रहा है। हम भागे, लेकिन रास्ता भटक गए। गायें जाग उठीं और रंभाने लगीं। मशालें जलाई गईं। वे सीधे गौशाला की ओर बढ़ रही थीं। किसी तरह हम बाहर निकले, लेकिन खुद को महल के पहरेदारों के बीच फंसा हुआ पाया। हमने लड़ाई की और उनमें से कुछ को गिरा दिया, लेकिन जल्द ही वे हम पर हावी हो गए। उन्होंने हमें बांध दिया और फिर पिटाई शुरू हो गई। उन्होंने हमें लाठियों से पीटा; उन्होंने कुंभा का दांत तोड़ दिया; और मशालों से हमें जलाया। कुछ मिनटों तक यातना सहते हुए गरिमापूर्ण मौन रहने की कोशिश करने के बाद हम चीखे-चिल्लाए। पिटाई सुबह होने तक जारी रही।
जब मैं जागा, तो मेरे चेहरे पर खून जमा हुआ था और मेरी त्वचा के हर रोम में दर्द हो रहा था। कुंभा मुझसे पहले ही जाग गया था और अपनी सूजी हुई, काली आँखों से मुझे घूर रहा था। उसका चेहरा बुरी तरह से क्षतिग्रस्त था, उसकी नाक और दांत टूटे हुए थे और होंठ कटे हुए थे। उसने मुझे आँख मारी और मुस्कुराया और उस पल मुझे उससे दुनिया में सबसे ज़्यादा प्यार हो गया। मैं जानता था कि एक दिन या तो वह या मैं एक-दूसरे के लिए अपनी जान कुर्बान कर देंगे। मैंने भी मुस्कुराकर जवाब दिया। हमें अस्तबल के खंभों से बांधकर अकेला छोड़ दिया गया था। तब मुझे आश्चर्य हुआ कि विभीषण का क्या हुआ होगा और एक-दूसरे से गहरा प्रेम करने वाले लोगों के बीच उस मौन संवाद में, मैंने कुंभा के चेहरे पर भी वही सवाल देखा। हम बहुत डरे हुए थे! हमने अपनी गर्दनें दूर-दूर तक घुमाईं कि कहीं विभीषण को भी हमारी तरह पीट-पीटकर खंभे से तो नहीं बांध दिया गया है। लेकिन उसका कोई निशान नहीं था और हमें यकीन था कि पहरेदारों ने उसे पीट-पीटकर मार डाला होगा और चुपचाप दफना दिया

होगा। या शायद उसने मेरी माँ या गाँव के मुखिया को सूचना दी होगी कि वे आकर कुबेर से हमें रिहा करने की विनती करें।
हम वयस्क नहीं हुए थे और असुरों के विधान के अनुसार, हमें न तो जेल भेजा जा सकता था और न ही हमारी भुजाएँ काटी जा सकती थीं। हमें कुछ महीनों के लिए कुबेर की तेल चक्की या खेत में गुलामों की तरह काम करने के लिए मजबूर किया जाता था। करोड़पति कुबेर को यह सजा आर्थिक रूप से उचित लगती थी और इससे उनके कुछ पैसे बच जाते थे। वे आधे गंधर्व और आधे ब्राह्मण थे, असुर नहीं, लेकिन उन्होंने असुरों के सभी नियमों का पालन सुनिश्चित किया - जिसे वे स्थानीय लोगों के धर्म और विश्वासों में हस्तक्षेप न करना कहते थे। इससे उन्हें व्यापार और वाणिज्य पर ध्यान केंद्रित करने का अवसर मिला। मैंने कुम्भा को खाली निगाहों से घूरते हुए देखा, वे चुपचाप विभीषण के जीवित होने की प्रार्थना कर रहे थे। उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे और जब उन्होंने देखा कि मैंने उन्हें देख लिया है, तो उन्होंने अपना चेहरा मोड़ने की कोई कोशिश नहीं की। मेरी आँखें भी आँसुओं से भरी हुई थीं।
एक बूढ़ा गार्ड आया और उसने हमें खोल दिया, और कुम्भा ज़मीन पर गिर पड़ा। गार्ड ने उसे ज़बरदस्ती उठाया और मदद के लिए पुकारा। मैं मुश्किल से चल पा रहा था। दो गार्ड कुम्भा को एक मोटे बांस के डंडे पर उठाकर ले गए, मानो वह कोई जंगली जानवर हो जिसका अभी-अभी शिकार किया गया हो। लगभग दोपहर हो चुकी थी और मानसून के चरम पर हवा गर्म और उमस भरी थी, जब सूरज कुछ घंटों के लिए लाल मिट्टी को सेंकने के लिए निकलता है।
धन के देवता और न्यायदाता कुबेर अपने सिंहासन पर विराजमान थे, शाही मुहर लगाकर ताड़ के पत्तों पर लिखे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने में व्यस्त थे और व्यापार की विभिन्न पेचीदगियों, जहाजरानी दरों, काली मिर्च की कीमतों, इलायची के वजन के बदले सोने के मूल्य आदि के बारे में निर्देश दे रहे थे। ये निर्देश द्वीप के विभिन्न बंदरगाहों पर संबंधित अधिकारियों तक पहुंचाए जाते थे और फिर तेज रफ्तार अरबी घोड़ों पर सवार दूतों द्वारा व्यापारी राजा के पास वापस लाए जाते थे। अन्य अपराधी भी धन के देवता से ज्ञान और न्याय पाने की प्रतीक्षा कर रहे थे, लेकिन इस उच्च स्तरीय व्यापार और वाणिज्य की दुनिया में बाकी सब कुछ महत्वहीन था।
मैंने देखा कि कुम्भा बेहोश हो गया था और मुझे डर था कि कहीं मैं भी उसके पीछे-पीछे बेहोश न हो जाऊं। मैं यह जानना चाहता था कि धन के देवता की

उन्हें समुद्र में ले जाकर उनकी गर्दन में पत्थर बांधकर डुबो दिया जाता था।
“अगला,” सिंहासन के पास तैनात एक सिपाही ने गरजते हुए कहा। इस बीच कुबेरा कुछ व्यावसायिक कागजात देख रहे थे। वे समय के कुशल प्रबंधक थे। पहरेदारों ने हमें आगे धकेल दिया। “शाही गौशाला में घुसपैठ करने और गायों की चोरी का प्रयास करने का आरोप है,” पुलिस आयुक्त ने गरजते हुए कहा।
“दोषी नहीं,” मैं दहाड़ना चाहता था, लेकिन मेरे मुँह से बस एक तीखी, बचकानी आवाज़ निकली। दरबार में अचानक सन्नाटा छा गया। राजा की उपस्थिति में दरबार में बोलने की हिम्मत किसी ने नहीं की थी। कुबेरा ताड़ के पत्तों में डूबे हुए थे और उन्हें सन्नाटे को समझने में कुछ पल लगे। उन्होंने जानबूझकर पूरा दस्तावेज़ पढ़ा और उसे एक तरफ रख दिया। फिर उन्होंने अपना सिर उठाया। उनके चेहरे पर मुस्कान फैल गई। वे एक सुंदर व्यक्ति थे और मुस्कान ने उन्हें और भी आकर्षक बना दिया। लेकिन उनकी हरकतों में कुछ अजीब और मकड़ी जैसी सी खामोशी थी।
अरे वाह, ये कौन हैं यहाँ? मेरे प्यारे सौतेले भाई। मैं सम्मानित महसूस कर रहा हूँ। अगर तुमने मुझसे पूछा होता, तो मैं तुम्हें कुछ गायें उपहार में दे देता। इसके बजाय, तुमने चोरी करना चाहा। कितना स्वाभाविक है। मैं देखता हूँ कि तुम अपनी माँ पर ही गए हो। तो, तुम क्या पसंद करोगे, तुम्हारी भुजाएँ काट दी जाएँ; तुम्हारी नाक काट दी जाए; या तुम्हारे गालों पर सीधे- सीधे दाग लगा दिया जाए कि तुम चोर हो? भाई-भतीजावाद का दोष मुझ पर नहीं लगाया जा सकता।
“महाराज, मेरी एक विनती है।” मारीच दरबार के बीचोंबीच आ गए और सौ आँखें उन्हें घूरने लगीं। मुझे लगता है उन्होंने देव दरबार के सख्त नियमों का उल्लंघन किया था। ये असभ्य असुर! ये तो बच्चों जैसा व्यवहार करते हैं। शायद हमें सभ्य बनाना देवताओं का दायित्व है। मैं अपने चाचा की हरकतें देखकर भयभीत हो गया। मैं ज़ोर से चिल्लाकर उन्हें रोकना चाहता था, लेकिन सज़ा के डर से नहीं रोका। वह बूढ़ा मूर्ख अपनी हरकतें करता जा रहा था, वही प्यारा सा बदमाश। मुझे थोड़ी सी उम्मीद जगी कि शायद हमें आसानी से छोड़ दिया जाए। “महाराज, ये बच्चे हैं और इन्हें शायद ही पता हो कि ये क्या कर रहे हैं।”

जैसे ही सबकी निगाहें उस नासमझ लड़के पर टिकीं, मेरे गाल गर्म होने लगे।
मैं सोलह साल का था और अब भी मुझे बच्चा ही कहा जाता था। अगर मैं इस मुसीबत से बच भी गया, तो भी मेरे दोस्त ज़िंदगी भर मुझे ताने मारते रहेंगे। किशोरावस्था के गुस्से में डूबे होने के कारण मैं कुछ वाक्य सुन नहीं पाया था, और चाचा की कही बातों की गंभीरता को समझने में मुझे थोड़ा समय लगा। “तो तुम इन बदसूरत बच्चों की आज़ादी के बदले खुद को पेश कर रहे हो? मुझे उम्मीद है कि तुम पिछली रात की मौज-मस्ती के नशे में चूर नहीं हो और अपनी मर्ज़ी से बोल रहे हो। तुम कहते हो कि तुम सिपाही हो, लेकिन तुम्हारे कुछ दांत टूटे हुए हैं और एक हाथ पट्टी में बंधा है, जो इस बात का सबूत है।” दरबार में हंसी की गूंज हमारे चारों ओर सुनाई दी और मेरे गाल लाल हो गए जब मैंने अपने चाचा को वहाँ दाहिनी बांह पट्टी में बांधे, गरिमापूर्ण ढंग से खड़े देखा, उनकी आँखें उस मूर्ख से कुछ इंच ऊपर एक दूर बिंदु पर टकटकी लगाए हुए थीं जो मसखरे राजा की भूमिका निभा रहा था।
“तेल चक्की में छह साल।” यह आदेश बिजली की तरह कौंधा और मैं कांप उठा। कुंभ के जागने के संकेत दिखाई दिए। मैं देख सकता था कि मारीचा भी सदमे में था। एक छोटी सी गलती के लिए यह बहुत कठोर दंड था। मैं बूढ़े आदमी की आँखों से आँसू निकलते देख सकता था। मैं उसकी पत्नी और जुड़वा बच्चों के चेहरे देख सकता था। मैंने ही बूढ़े आदमी पर यह विपत्ति लाई थी। उसकी उम्र कितनी थी? तीस, पैंतीस शायद? सोलह साल की उम्र में बीस साल से ऊपर के सभी लोग बूढ़े लगते थे। छह साल का मतलब था कि जब तक वह बाहर निकलेगा तब तक वह इकतालीस साल का हो जाएगा। यानी, अगर वह बच भी पाया तो। तेल चक्की सभी दंडों में सबसे भयानक थी। बैलों के बजाय, पुरुषों को चक्की से बांध दिया जाता था और वे गोल-गोल घूमते हुए तिल या खोपरा को पीसकर तेल बनाते थे। यह उनकी जान निकाल देता था। बूढ़े आदमी के लिए बीस घंटे की कमरतोड़ मेहनत, 365 दिन को छह से गुणा करने जितना काम। सिर्फ इसलिए कि उसके उग्र स्वभाव वाले भतीजे वीरता दिखाने से खुद को रोक नहीं पाए और अपने सौतेले भाई, व्यापारी-राजा के परिसर में घुसपैठ कर गए।
और एक साल और जोड़ दो ताकि यह बूढ़ा बदमाश राजा को संबोधित करना सीख जाए।
महोदय, बिल्कुल! अगला।
यह सुनकर मैं भयभीत हो गया। यही न्याय था। एकदम त्वरित और त्वरित। अदालत की अवमानना के लिए मेरे बूढ़े चाचा को एक और साल की गुलामी की सजा मिली।

मेरे चाचा अपने पैरों की उंगलियों को घूर रहे थे। पहरेदार आए और उन्हें हथकड़ी पहना दी। फिर उन्हें जंजीरों में जकड़कर पहरेदारों ने जोर से धक्का दिया। लोग हंस रहे थे। मेरे लोग, असुर, तब हंस रहे थे जब उनके किसी रिश्तेदार को बिना किसी गलती के जानवर की तरह सताया जा रहा था। किसी ने सीटी बजाई। हमें अदालत से घसीटकर बाहर फेंक दिया गया। राज्य को अब हमारी कोई जरूरत नहीं थी। हमारी हड्डियां टूट चुकी थीं और हमारे आंतरिक अंग क्षतिग्रस्त हो चुके थे। इसलिए हमें कुतरे हुए मुर्गे की हड्डियों की तरह फेंक दिया गया। राज्य ने हमें चबा डाला। तभी पहला पत्थर मुझे लगा। जल्द ही वह ओलों की बौछार में बदल गया। मेरे लोग मेरे बूढ़े चाचा को कड़ी मेहनत के लिए भेजने पर मुझ पर पत्थर फेंक रहे थे। उनका नपुंसक क्रोध दो किशोरों पर बरस रहा था। तो यही अंत है, मैंने सोचा। अपने प्यारे बूढ़े चाचा को जेल भेजने के बाद, अपने ही लोगों के हाथों एक चोर की तरह अपमानजनक मौत मरना। उस मूर्ख का क्या ही दुखद अंत हुआ जिसने दुनिया को जीतने और अपनी प्रजा को मुक्त करने का सपना देखा था।
पत्थरों की बौछार जितनी अचानक शुरू हुई थी, उतनी ही अचानक रुक भी गई। मेरे चेहरे से खून टपक रहा था, मैंने अपनी माँ को कुम्भा के बेजान शरीर को गले लगाकर फूट-फूटकर रोते देखा। सौभाग्य से, हमारे नागरिक अभी तक सभ्यता के उस स्तर तक नहीं पहुँचे थे जहाँ वे महिलाओं को पत्थर मारकर मार डालते हैं। भगवान का शुक्र है कि वह हमारे जीवन पर इतनी कृपा बरसाते हैं। धीरे-धीरे हमें हमारी झोपड़ी में ले जाया गया। मेरी चाची बेहोश पड़ी थीं और जुड़वाँ बच्चे रो रहे थे। मेरी पड़ोसी, एक मोटी, बदसूरत महिला, जिसका दिल सोने का था, लेकिन ज़बान साँप जैसी थी, रोना रोकने की पूरी कोशिश कर रही थी। तभी मैंने विभीषण को एक कोने में बैठकर संस्कृत की किताब पढ़ते देखा, वह हमारी तरफ देख तक नहीं रहा था। मैं गुस्से से आग बबूला हो गई। तो पहरेदारों ने उसे दफनाया नहीं था। वह पढ़ाकू, अच्छा लड़का घर आकर सो गया था जबकि हमारी पिटाई हो रही थी। फिर, जब बूढ़ा हो चुका चाचा बैलों के साथ काम करने के लिए तेल मिल में घसीटा गया, तो वह कमीना बैठा किसी गूढ़ देव ग्रंथ का जाप कर रहा था, जैसे कोई मेंढक।
मुझे उसे वहीं मार डालने का मन कर रहा था। मैं ऋग्वेद की वह किताब उसके गले में ठूंस देना चाहता था। मैं बहुत कुछ करना चाहता था, तभी मेरी नज़र उस पर पड़ी। वह आया और मेरे पैरों के पास ज़मीन पर बैठ गया। मैंने अपना पैर उठाकर

10. मोतियों का द्वीप बुला रहा है
परिषद बरगद के पेड़ के नीचे एकत्रित हुई थी। मैंने बैठक की अध्यक्षता की, प्रहस्त मध्यस्थ थे, और बहस ज़ोरों से चल रही थी। किसी की भी बात में कोई दम नहीं था। हर कोई किसी न किसी तरह लंका पर कब्ज़ा करना चाहता था, लेकिन किसी के पास भी इसे करने का कोई ठोस तरीका नहीं था। कुम्भा सीधा हमला चाहता था, जिसमें हम कम ज्वार के दौरान बाँस की नावों में समुद्र पार करके कुबेर की सेना को सीधे चुनौती देते। मुझे पता था कि हम एक घंटे भी नहीं टिक पाएँगे। हम 2000 से भी कम लोग थे और आधे से ज़्यादा अनुभवहीन योद्धा थे। उनमें लड़ने का जज़्बा तो था, लेकिन हथियारों के इस्तेमाल के बारे में उन्हें कुछ भी नहीं पता था। जो सबसे अच्छे योद्धा थे, उन्होंने शायद जंगल में सिर्फ़ जंगली कबूतरों का शिकार किया था। कुछ अन्य लोग विभिन्न राजमार्गों पर हुए हमलों में शामिल रहे थे। इसमें कोई शक नहीं था कि असली युद्ध का अनुभव सिर्फ़ प्रहस्त, सुमाली और मरीच को ही था। लेकिन यह बात कई साल पहले की है और सैन्य तकनीक बदल चुकी है।
भद्रा जलपान लेकर सभा स्थल में आता-जाता रहा। उसकी उपस्थिति में मुझे बेचैनी महसूस हो रही थी क्योंकि वह हमेशा कुछ न कुछ कहने को तैयार रहता था। मैं नहीं चाहता था कि कोई सेवक मंत्रिपरिषद में दखल दे और अपनी अनचाही युद्ध रणनीति पेश करे। मैं यह भी नहीं चाहता था कि किसी को पता चले कि मैं उससे कभी-कभार, जब कोई आसपास न हो, बात करता था। उसकी कही कई बातें तर्कसंगत थीं और कुछ विचार जो मैंने अपने बताकर रखे थे, वास्तव में उसके थे। यह आश्चर्य की बात थी कि भद्रा के ध्यान दिलाने तक किसी ने भी, यहाँ तक कि मैंने भी, इस तथ्य पर ध्यान नहीं दिया था कि इस जंगल से निकलने के बाद हमारी सेना ज्यादा समय तक टिक नहीं पाएगी। यह जंगल जंगली जानवरों, जंगली बेरों, आमों और कटहल से भरा हुआ था, इसलिए हमें सैनिकों के भोजन की चिंता

करने की कोई जरूरत नहीं थी। एक बार जब हम बाहर निकल गए, तो हम निश्चित रूप से भूख से मर जाएंगे। उसके बाद, हमने कटहल इकट्ठा करना और उन्हें धूप में सुखाना, आम का पेस्ट बनाना, जंगली चावल और बांस के अंकुर उगाना और इन थोड़े से राशन को जमा करना शुरू कर दिया।
हमने अपने शस्त्र भी तैयार कर लिए और लकड़ी के भाले, तलवारें और तीर बनाने लगे, क्योंकि तांबा या लोहा मिलना मुश्किल था। मारीचा ने विषैले काढ़े बनाने का कारखाना शुरू किया था, जिनका इस्तेमाल भालों और तीरों में प्रभावी ढंग से किया जा सकता था। लेकिन यह सब महत्वहीन था। कुबेर का पतन एक अचानक, अप्रत्याशित हमले से ही संभव था। उसके पास 20,000 सैनिकों की स्थायी सेना, 4,000 घुड़सवार तीरंदाज, 2,000 रथ, 500 हाथी और दो साल तक चलने वाला रसद भंडार था। उसके पास एक शक्तिशाली नौसेना थी जिसमें बीस से अधिक जहाज तटों पर गश्त करते थे और दो विशाल नावें थीं, जिनमें से प्रत्येक को साठ लोग चलाते थे। इन तेज और चिकनी नावों पर साठ तीरंदाज सवार हो सकते थे और वे घातक सटीकता के साथ अग्नि तीर चलाते थे। उसके प्रशिक्षण विद्यालय दूर-दूर तक प्रसिद्ध थे और उसके सैनिकों की तलवारबाजी से अन्य राजा ईर्ष्या करते थे।
बेशक, कुबेरा इन सब चीज़ों का खर्च उठा सकता था। वह दुनिया भर से बेहतरीन प्रतिभाओं को भर्ती कर सकता था, चाहे वे चीन से हों, मिस्र से हों या फिर ठंडे देशों के गोरे बर्बरों से। वह अपनी सेना और नौसेना के लिए नवीनतम तकनीक का इस्तेमाल कर सकता था। यहाँ तक कि यह अफवाह भी थी कि उसने एक उड़ने वाली मशीन विकसित कर ली थी और ऐसी पचास और मशीनें बनाने वाला था, ताकि वह उनका इस्तेमाल दुश्मन के शिविरों पर बड़े-बड़े जलते हुए गोले या पत्थर गिराने के लिए कर सके। यह भी अफवाह थी कि केवल एक प्रोटोटाइप बनाया गया था और उसे डिजाइन करने वाले तकनीशियन को जहर दे दिया गया था। मैंने अपना ध्यान वापस बहस पर केंद्रित किया।
“हमें घोड़ों की ज़रूरत है और उन्हें समुद्र पार से लाना होगा, इसलिए हमें जहाज़ों की भी ज़रूरत है, या कम से कम बड़ी नावों की। सवाल यह है कि हम कितने जहाज़ खरीद सकते हैं?” प्रहस्त ने पूछा। घोड़ों की संख्या, तैनात किए जाने वाले तीरंदाजों की संख्या, आवश्यक जहाज़ों की संख्या और हमले के समय को लेकर बहस छिड़ गई। मेरा ध्यान फिर कहीं और भटक गया और तभी मेरी नज़र भद्रा पर पड़ी। उसने इशारा किया। मैं चिढ़ गया। शायद उसे लगा कि इन अनुभवी

सैनिकों से बेहतर कुछ और है? मुझे उसे उसकी औकात दिखानी ही होगी। लेकिन मैंने सोचा कि पहले उसकी बात सुन लेना बेहतर होगा और मैं टहलते हुए झरने की ओर चल पड़ा। यहाँ झरना बहुत विशाल था और पूर्णा नदी लगभग 500 फीट चौड़ी थी, जहाँ से वह 200 फीट की ऊँचाई से गिरकर नदी में मिलती थी और फिर दूर समुद्र में बह जाती थी। साफ़ मौसम में, नारियल के इस देश की सीमा से लगे समुद्र को देखा जा सकता था। चारों ओर घना, सदाबहार उष्णकटिबंधीय जंगल था, जिसमें सैकड़ों रंग-बिरंगे पक्षी चहचहाते और उड़ते रहते थे। पानी के ऊपर ड्रैगनफ्लाई मंडरा रही थीं। रात में, जब पहरेदारों को छोड़कर सब सो रहे होते थे, मैं जंगल की आवाज़ें सुनता था। कभी-कभार हाथियों का झुंड जंगल में चरता हुआ दिखाई देता था; दूर से तेंदुओं और बाघों की दहाड़ें सुनाई देती थीं; भालू नदी से पानी पीते थे। बाहर की दुनिया बिल्कुल अलग थी। मेरे शिविर के चारों ओर जीवन-मरण का संघर्ष चल रहा था, जीवन बारी-बारी से शिकार करता था या खुद शिकार बनता था। हिंसा प्रकृति का मूल आधार थी। हर पल कोई न कोई किसी दूसरे का शिकार बन जाता था। हत्या का चक्र चलता रहता था। क्या मनुष्य इसे रोक सकता है? युद्ध अपरिहार्य हैं, क्रूरता भी। अधिकांश जानवर कुशल शिकारी होते हैं। दीवार पर बैठी साधारण सी छिपकली भी बाघ से कम शिकारी नहीं है।
“महामहिम, क्या हम व्यापारी बनकर अंदर नहीं जा सकते?” भद्रा की आवाज सुनकर मैं चौंक गया। मैंने उसके आने की आहट नहीं सुनी थी। वह कद में छोटा और मोटा होने के बावजूद चुपचाप चल रहा था।
“और हम बदले में क्या देंगे?” मैंने पूछे बिना नहीं रह सका।
“हम मुज़ुरिस में अरबों से घोड़े मंगवा सकते थे। पहाड़ियों से काली मिर्च, पूर्वी तट से माणिक और मुज़ुरिस में यूनानी शिविर से सोना प्राप्त कर सकते थे। धनी व्यापारियों से कुछ जहाज़ किराए पर ले सकते थे… हम प्रायद्वीप के चारों ओर घूमकर भारत के दक्षिण-पूर्वी छोर से लंका में प्रवेश कर सकते थे, जहाँ समुद्र सबसे संकरा है। दो जहाज़ पर्याप्त होंगे, जिनमें लगभग 400 लोग सवार हो सकते थे…”
“और तुम, मूर्ख, 400 बेवकूफों के साथ लंका पर विजय प्राप्त करने की योजना बना रहे हो?” मैं अपना गुस्सा मुश्किल से ही रोक पाया।
भद्रा ने मेरे गुस्से के शांत होने का इंतज़ार किया और फिर बोली, “जहाज़ हाथीदांत और मोती लेकर वापस आ सकते हैं और प्रत्येक में लगभग बीस आदमी आ

सकते हैं। वे मुख्य भूमि तक जा सकते हैं और फिर से व्यापार शुरू कर सकते हैं। बाकी लोग राजा से मिल सकते हैं और तट पर, अधिमानतः त्रिकोटा किले के पूर्वी द्वार के पास, बुनकरों की गली के नजदीक एक संघ स्थापित करने का अनुरोध कर सकते हैं।”
मुझे उसका विचार अच्छा लगने लगा था। "छह चक्करों में हम सभी आदमियों को चुपके से द्वीप पर पहुंचा देंगे। हम स्थानीय बाजार से हथियार खरीदकर उन्हें जमा कर सकते थे।"
“महामहिम, छह यात्राओं की कोई आवश्यकता नहीं है, इससे बहुत समय बर्बाद होगा। एक बार पहला जत्था तैयार हो जाने पर, हम कुछ सौ लोगों को छोटी डोंगियों में, दस या पंद्रह की संख्या में, मछुआरे के रूप में भेज सकते हैं। जहाजों की दूसरी यात्रा में और अधिक सैनिक उतारे जा सकते हैं और वे उत्तरी द्वार के पास एक दूसरा संघ बना सकते हैं। यदि हम इसी तरह चलते रहे, तो हम एक महीने में अपनी आधी सेना तैनात कर सकेंगे। तीसरी यात्रा में, हम केवल घोड़े और हथियार खरीद सकते हैं और बंदरगाहों के बाहर गहरे समुद्र में, एक घंटे की दूरी पर, यदि हवा अनुकूल रही तो लंगर डाल सकते हैं।”
मुझे योजना पसंद आई। मुझे अपने दो जहाजों को भरने के लिए बस पर्याप्त धन की आवश्यकता थी। मैं वह कर सकता था। लेकिन इसके लिए भी मुझे महाबली से भारी मात्रा में उधार लेना पड़ता। मुझे नहीं पता था कि वह बूढ़ा व्यक्ति सहमत होगा या नहीं। अन्यथा, मेरे पास खुले समुद्र में एक या दो जहाजों को लूटने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचता। यह एक जोखिम भरा काम था और हमारा सामना वरुण के जहाजों से हो सकता था, जो इन क्षेत्रों में रिश्वतखोरी का धंधा चलाते थे, या कुबेर की नौसेना से। मुझे संदेह था कि मेरी सेना के आधे सैनिक तैरना भी जानते होंगे, समुद्र में लड़ना तो दूर की बात है। अधिकांश सैनिक अंतर्देशीय थे और अपने जीवन में पहली बार समुद्र देखने वाले थे। मुझे पता था कि परिषद में प्रहस्त इस योजना को अस्वीकार कर देंगे, और मुझे उनकी बात नहीं माननी पड़ेगी। मैं इस प्रारंभिक चरण में कोई अप्रिय स्थिति नहीं चाहता था।
“मैं जाना चाहता हूँ, महाराज।” मुझे लगा कि वह नौकरों के क्वार्टर में वापस जाने की अनुमति मांग रहा है। मैंने अपना हाथ झटका और अपने विचारों में खो गई।

“महामहिम, मैं पहले लंका जाना चाहता हूँ।” मैं चौंक गया और उसकी ओर घूरने के लिए अपना सिर घुमाया।
आपको ऐसा क्यों लगा?
मैं वहां आपके काम आ सकता हूं।
वह जासूस बनने वाला था। टेढ़े पैर, तोंद, घुंघराले बाल, आधी रात की तरह काला रंग और ज़रा भी इज़्ज़त न होने के कारण वह वहाँ अजीब सा लग रहा था। उसका भेस बदलना नामुमकिन था; वह आम लोगों में घुलमिल जाता था। गिरगिट की तरह। क्या वह शिविर छोड़कर भागने वाला था? क्या वह कुबेरा का जासूस था और हमें किसी जाल में फंसाने वाला था? अचानक, मुझे शक होने लगा। मैंने उससे कहा कि वह कहीं नहीं जा रहा है। मैं उससे रात में बात करना चाहता था और वह सुबह जा सकता था। वह थोड़ा बेचैन था और मैं देख सकता था कि वह परेशान था। 'मैं तुम्हें इतनी आसानी से नहीं छोड़ सकता, दोस्त। तुम्हारे बारे में कुछ गड़बड़ है,' मैं उससे कहना चाहता था। लेकिन इसके बजाय, मैंने उसे देखकर मुस्कुरा दिया। मैं हैरान था कि मैं कितनी आसानी से झूठ बोल सकता था। भद्रा असमंजस में था। मुझे लगा कि मेरे हावभाव ने उसके अवचेतन मन में खतरे की घंटी बजा दी है। मुझे इस व्यक्ति पर कड़ी नज़र रखनी थी। वह खतरनाक हो सकता है, मैंने खुद को चेतावनी दी। मैं तेज़ी से चलने लगा और वह धीरे-धीरे, सधे कदमों से मेरे पीछे-पीछे चलने लगा। मैं उसे अपने भविष्य के कदम के बारे में सोचते हुए देख सकता था। मेरी बांह तलवार की मूठ पर थी, मैं उसे निकालकर एक ही झटके में उसका सिर काटने के लिए तैयार था। मैं परिषद में गया और अपना विचार प्रस्तुत किया, वास्तव में यह भद्रा की योजना थी, लेकिन अब तक मैं इसे अपना ही समझने लगा था। शायद मेरे जन्मजात नेतृत्व गुणों के कारण ही किसी अधीनस्थ के विचार को चुराना और उसका श्रेय लेना मेरे लिए इतना आसान था। ये अभी शुरुआती दौर था और मुझे याद था कि ये किसके विचार थे। बाद में, बहुत बाद में, मैं एक सच्चा नेता बना, और तब मुझे यकीन हो गया कि सभी अच्छे विचार मुझसे ही उत्पन्न होते हैं और बुरे और मूर्खतापूर्ण विचारों का कोई और जनक होता है। परिषद में ज़ोरदार बहस छिड़ गई। मैंने अपना हाथ उठाया और उन्हें ध्यान देने में कुछ मिनट लगे और फिर वे रुक गए। उन शुरुआती दिनों में मुझमें लोगों को एक नजर से या सिर्फ अपनी भौहें उठाकर चुप कराने की कला अभी तक विकसित नहीं हुई थी।

प्रहस्त ने तुरंत आपत्ति जताई। “यह बहुत खतरनाक है। क्या पता हमारे बीच कोई जासूस हो? क्या पता पहले ही दल को गिरफ्तार कर लिया जाए और मार दिया जाए? इसके अलावा, यह एक छलपूर्ण तरीका है। यह असुरों का युद्ध करने का तरीका नहीं है। हम पुरुषों की तरह लड़ते हैं, विवेक कहता है कि हम तब तक प्रतीक्षा करें जब तक हमारे पास लड़ने के लिए पर्याप्त साधन और सैनिक न हो जाएं। लेकिन जब हमारे पास पर्याप्त साधन और सैनिक होंगे, तो हम योद्धाओं की तरह लड़ेंगे। रावण, यह काम करने का मूर्खतापूर्ण तरीका है। मुझे तुम पर आश्चर्य है।”
उनका वह उपदेशात्मक लहजा मुझे बहुत परेशान करता था। साथ ही, वे सम्मानसूचक शब्द का प्रयोग नहीं कर रहे थे और परिषद में मुझे मेरे नाम से पुकार रहे थे, यह भूलकर कि मैं राजा था और वे केवल एक प्रधानमंत्री। बेशक, वे मेरे चाचा थे और निजी तौर पर मुझे कुछ भी कह सकते थे। सार्वजनिक रूप से उन्हें मर्यादा बनाए रखनी चाहिए थी, अन्यथा मेरे द्वारा स्थापित की जा रही पूरी व्यवस्था ताश के पत्तों की तरह ढह जाती।
मरीचा खड़े हुए और बोले, “नहीं, प्रहस्त, कोई दूसरा रास्ता नहीं है। लड़के ने जो योजना बताई है, वह बहुत अच्छी है और हमें उसका समर्थन करना चाहिए। हम असुर हमेशा इसलिए हारे हैं क्योंकि हमने नियमों का पालन किया, जबकि बाकी किसी को कोई परवाह नहीं थी। लेकिन, हमें जासूसों से सावधान रहना होगा। इसका मतलब है कि हमें अजनबियों से हर तरह का संपर्क तोड़ना होगा। फिर भी, मुझे पता है कि कोई अपने किसी परिचित के लिए पेड़ के खोखले तने में ताड़ का छोटा पत्ता छोड़ सकता है। लेकिन हमें जोखिम उठाना ही होगा।”
मैं यह सुनिश्चित करना चाहता था कि मेरे चाचा मुझे लड़का कहकर मेरा अपमान न करें। यह अपमानजनक था। लेकिन ये लोग मेरे लिए इतने महत्वपूर्ण थे कि मैं विरोध नहीं कर सका। अगर मैंने विरोध किया भी होता, तो वे और भी भ्रमित हो जाते।
“इस आदमी को गिरफ्तार करो। मुझे फांसी नहीं चाहिए, सिर्फ नजरबंदी चाहिए। इसे इस शिविर से बाहर मत जाने देना,” मैंने उनसे कहा और ताली बजाई। लंबे भाले लिए दो सिपाही दौड़ते हुए आए। मेरे चाचा और भाई दोनों हैरान दिखे। सिपाही मेरे सामने झुक गए। उनमें से एक ने अपने कुर्ते का फीता गलत तरीके से बांध रखा था। हे भगवान, मैं इन मूर्खों को, इन निकम्मे भिखारियों को, लड़ाई में कैसे ले जाऊँगा? उसने देखा कि मेरी नजर उसके चेहरे से हटकर नीचे

शुरू कर सकें। हमें इस धन का सदुपयोग करना चाहिए और फिर अपने सौतेले भाई की मदद से उत्तर भारत के देव राज्यों के साथ बातचीत शुरू करनी चाहिए…”
इस सुझाव पर कुंभा ठहाका लगाकर हँस पड़ा। “हम कुबेर से भी पूछ सकते हैं कि क्या वह अपनी पत्नियों को हमारे साथ साझा करेगा। उनके साथ हम एक भोग-विलास का धंधा शुरू कर सकते हैं और अधिक धन कमा सकते हैं। फिर हम देवताओं से बातचीत कर सकते हैं और उनसे पूछ सकते हैं कि क्या वे हमारे असुर वेश्यालय संघ में कुछ निवेश कर सकते हैं, जैसे कि अपनी बहनों या माताओं को, और फिर हम बैठकर लाभ प्रतिशत की गणना कर सकते हैं। अंततः सभी देवता और असुर एक ही गड्ढे में जागेंगे और भाई बनकर सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे।” कुंभा ने अपना पेट पकड़ लिया और ज़मीन पर लोटने लगा। मैं भी अपनी हंसी नहीं रोक पाया और ज़ोर से हँस पड़ा। प्रहस्त भी अपनी मुस्कान नहीं रोक पाया और गंभीर सुमाली के होंठों के कोने हल्की सी मुस्कान से फड़क उठे। विभीषण वहाँ भावहीन चेहरे के साथ खड़ा था, मानो उसे कुंभकर्ण जैसे गंवार से ऐसी मूर्खतापूर्ण टिप्पणियों की उम्मीद थी।
“कृपा करके, क्या हम कम से कम सभ्य भाषा का प्रयोग कर सकते हैं?” प्रहस्त ने फिर से मध्यस्थ की भूमिका निभाई और धीरे-धीरे हंसी थम गई। विभीषण अपनी सीट पर बैठ गए और अपने गहन चिंतन में लीन हो गए, या कम से कम उन्होंने हमें यही आभास कराया कि वे गहन चिंतन में लीन हैं। अंततः, बहुत विचार-विमर्श के बाद, यह निर्णय लिया गया कि हम दो जहाजों के मूल नियोजन पर ही कायम रहेंगे। प्रहस्त, धूम्रक्ष और वज्रधम्स्त्र के साथ महाबली के पास जाएंगे और मुजुरिस बंदरगाह के व्यापारियों से दो जहाज पट्टे पर लेने के लिए धन मांगेंगे। यह भी तय किया गया कि गंतव्य को परिषद के बाहर किसी से भी गुप्त रखा जाएगा, और दोनों जहाजों में मिलाकर लगभग 1,000 लोग सवार होंगे। मारीच ने सुझाव दिया कि जहाजों को इस प्रकार से पुन: डिज़ाइन किया जाए कि उनमें गुप्त कक्ष और एक ऐसा डेक हो जहाँ सैनिकों और हथियारों को छिपाया जा सके। जहाजों में बदलाव करने के लिए भारत के पूर्वी तट पर स्थित माया सभ्यता के इंजीनियरों को लाने के लिए दूत भेजे जाएंगे। मारीच उस दल का नेतृत्व करेंगे।
कुंभ और विभीषण को प्रहस्त के प्रतिनिधिमंडल के साथ जाना था और धन का प्रबंध हो जाने पर उन्हें घोड़े खरीदने थे। मारीच को पूर्वी तट से माणिक और हीरे भी लाने थे, असली पत्थर नहीं बल्कि मायाओं द्वारा गढ़े गए नकली

रत्न; पूर्वी तट से कुछ नकली सोने की ईंटें भी लानी थीं। मारीच, कुंभ और विभीषण के साथ महाबली के पास जाकर अपनी खरीद के लिए धन का अपना हिस्सा लेंगे। रुद्रक, जंबुमाली और मैं यहीं रुककर सैनिकों को प्रशिक्षण देंगे। मैं जंबुमाली का बहुत सम्मान करता था। यह व्यक्ति, जिसने एक मसाला डिपो में बिलिंग क्लर्क के रूप में शुरुआत की थी और महाबली के अधीन लंका के राज्यपाल के पद तक पहुंचा था, सम्मान का पात्र था। मुझे प्रभावी युद्ध के लिए नेताओं की दूसरी और तीसरी पंक्ति तैयार करनी थी। बहुत काम था। यह एक बड़ा जोखिम था, लेकिन हमारे पास कोई विकल्प नहीं था।

11 गद्दार
भद्र
मेरी आँखों में आँसू भर आए। अपने शिविर तक पहुँचते-पहुँचते मैं बच्चे की तरह रोया। उन्होंने मेरी बात पर विश्वास नहीं किया। इससे भी बुरा, उन्होंने मुझे जासूस कहा। मेरे शिविर तक मेरे दोनों ओर खड़े दो पहरेदारों ने इस बात को साबित कर दिया। मुझे आश्चर्य हुआ कि मेरे शिविर के साथी वहाँ से चले गए थे। मुझे कैद कर लिया गया था। पहरेदार मेरे प्रति बहुत ही नरम थे
- ज़रूरत से ज़्यादा नरम। मैं बहुत देर तक रोता रहा। मैं अपनी पत्नी और बेटी के लिए, अपने देश और अपनी जाति के लिए रोया। मैं उन लोगों के लिए विलाप करता रहा जिन्होंने मेरे स्वामी का अनुसरण किया था, उन पर अपनी जान का भरोसा किया था। मैं इस बात के लिए रोया कि मैं अब इंसान नहीं, बल्कि देवताओं के खून का प्यासा पिशाच बन गया था। मैं उस अंधकारमय गहराई के लिए विलाप करता रहा जिसमें मेरी आत्मा डूब गई थी।
मुझे इस जगह से निकलना ही था। मेरे राजा को मेरी सेवा की ज़रूरत थी, पर उन्हें यह पता नहीं था। मैं किसी बूढ़े कुत्ते की तरह जंजीरों में बंधा नहीं रह सकता था, जबकि मेरा देश युद्ध की तैयारी कर रहा था। मुझे लंका पहुँचना ही था। मैंने बाहर झाँका। रात अँधेरी और खामोश थी। कहीं जंगल के अंदर, एक उल्लू की आवाज़ आई। क्या यह कोई अपशगुन था, आने वाली विपत्ति का संकेत? मेरी रूह काँप उठी। दो पहरेदार बातें कर रहे थे। शिविर के चारों ओर भी पहरेदार थे। झरने की गर्जना तेज़ थी, पर यह बस एक सामान्य आवाज़ थी जिसकी हमें आदत हो गई थी। मुझे इसका फ़ायदा उठाना था। अगर मैं झरने तक पहुँच जाता, तो मैं उसके किनारों पर चट्टानों पर चढ़कर नीचे जा सकता था। यह फिसलन भरा और खतरनाक होगा, पर मुझे यकीन था कि मैं कर सकता हूँ। मैंने बचपन में शहद इकट्ठा करने के लिए ऐसी चट्टानों पर चढ़ाई की थी। बेशक, तब मैं

ज़्यादा चुस्त था। लेकिन अब, मेरी ज़रूरत ज़्यादा थी। तो यह संतुलन बना रहा, कम से कम मुझे यही उम्मीद थी। नदी तक पहुँचने के बाद, मैं डोंगी या पेड़ के तने का इस्तेमाल करके धारा के साथ बह सकता था। तेज़ बहाव मुझे समुद्र तक ले जाता। भोर होते-होते मुझे नदी छोड़कर उसके ऊपरी मार्ग पर चलना पड़ता। मुज़ुरिस तक लिफ्ट लेकर और फिर बंदरगाह जाने वाली चावल की नावों में से किसी एक पर सवार होकर मैं फिर से नदी तक पहुँच सकता था। लेकिन मुझे जल्दी करना था।
मैंने रसोई के छोटे चाकू से तंबू में एक छेद किया। मैं अपनी तलवार ले जाना चाहता था, लेकिन वह बहुत भारी थी। तीर-कमान का तो सवाल ही नहीं था। मुझे डर था कि कहीं मगरमच्छ मेरे मोटे शरीर को देखकर आकर्षित न हो जाएँ। लेकिन झरने के पास कोई मगरमच्छ नहीं मिला। तेज़ धारा और मछलियों की कमी ने उन्हें दूर रखा था। मैं बाहर निकला और चारों ओर देखा। मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा। वहाँ सिर्फ़ एक ही पहरेदार था। दूसरा कहाँ था? वह लंबा-पतला, गंदा कुर्ता पहने आदमी? मैं उससे लड़ना नहीं चाहता था। इससे बाकी लोग जाग जाते। इसके अलावा, मुझे यकीन नहीं था कि मैं लड़ाई जीत पाऊँगा। तभी मैंने उसे एक पेड़ के नीचे पेशाब करते हुए सीटी बजाते देखा। उसकी पीठ मेरी तरफ थी, लेकिन काम खत्म होने के बाद वह मुड़ गया। मैंने प्रार्थना की कि उसने खूब पानी या ताड़ी पी हो। मैं भागा। सूखे पत्तों की सरसराहट मेरे कानों में बिजली की कड़क जैसी लग रही थी। जंगल में पहुँचकर मैंने पीछे मुड़कर देखा। पहरेदार सीधा खड़ा था, भाला पकड़े हुए, फेंकने के लिए तैयार। उसने कुछ सुना था। दूसरा गार्ड आया और उसने मशाल जला ली। मशाल की धुंधली रोशनी में मुझे दोनों गार्ड दिखाई दे रहे थे। ये गार्ड बहुत सतर्क थे। एक भी गलत कदम उठाया तो मैं उनकी भाले पर लटके सूअर की तरह खत्म हो जाता।
फिर मैंने देखा कि छोटा पहरेदार मेरे बनाए छेद को घूर रहा है। भागो! मेरे शरीर की हर नस तन गई। पहरेदार को समझने में कुछ सेकंड लगे कि क्या हुआ है। फिर वह चिल्लाने लगा। उसकी आवाज़ घबराहट भरी थी और मुझे भी डर लगने लगा। बहुत सारी मशालें जल उठीं। हल्की बूंदा-बांदी शुरू हो गई थी और मैंने पानी की आवाज़ में बदलाव सुना। बहाव तेज़ हो गया था। झरना अब और भी उग्र हो गया था और उसकी आवाज़ सैनिकों की बातों को दबा रही थी। तभी मैंने राजा को अपने शिविर से बाहर आते देखा। उसकी तलवार तनी हुई थी। क्या मुझे उसके पास दौड़कर जाना चाहिए और कहना चाहिए कि मैं उसका सेवक और मित्र हूँ? मुझे ऐसा

करने का मन कर रहा था। तनाव मुझे मार रहा था। मैंने मशालों की टिमटिमाती रोशनी में उसका चेहरा देखा। अब मुझे इतना यकीन नहीं था। वह एक क्रूर चेहरा था, बिल्कुल भी दयालु नहीं, जैसा मैंने सोचा था। वह शैतान के वश में लग रहा था। हवा अब और तेज़ हो गई थी और पेड़ों से होकर गरज रही थी। उसके काले घुंघराले बाल सरपट दौड़ते घोड़े की अयाल की तरह उड़ रहे थे। वह किसी राक्षस राजा जैसा दिखता था। मुझे उससे डर लगता था। मुझे नदी के उफनते पानी से भी डर लगता था। प्रकृति की इन दो बुरी शक्तियों में से मैंने नदी को चुना।
मैं भागा, इस उम्मीद में कि तेज़ हवा में मेरे दौड़ते कदमों की आवाज़ सुनाई न दे। एक तीर मेरे सिर के ठीक ऊपर से कुछ इंच की दूरी से गुज़रा। मैं जानता था कि चट्टानों से नीचे उतरने का समय नहीं है। मेरी जान खतरे में थी। एक तरफ़ तो मौत निश्चित थी। मेरे लोग, जिनकी मैं सेवा करना चाहता था, मुझ पर तीर चला रहे थे। दूसरी तरफ़, मेरी प्यारी पूर्णा नदी लाखों उफनती, झागदार धाराओं के साथ मुझे बुला रही थी। मैंने बिना सोचे समझे नदी में छलांग लगा दी। जब मेरा शरीर पानी से टकराया तो जमा देने वाली ठंड ने मुझे चौंका दिया। मैं अपना सिर ऊपर नहीं रख पा रहा था। बारिश लोहे की कीलों की तरह बरस रही थी। मैं तेज़ धारा में एक सूखे पत्ते की तरह बह गया, पानी में डूबता, ऊपर आता, फिर नीचे चला जाता। फिर, अचानक, इससे पहले कि मैं कुछ समझ पाता, मैं गिरने लगा, नीचे उतरता और अँधेरे गहरे पानी में समा गया। चारों ओर सफेद पानी का एक गर्जना करता, हिलता हुआ स्तंभ था जिसने मुझे दबाए रखा, मुझे जाने नहीं दिया। पूर्णा मुझे निगलने के लिए संघर्ष कर रही थी।
जब मैंने आँखें खोलीं तो मैं एक लकड़ी के लट्ठे पर तैर रहा था। आसमान साफ हो चुका था और झरने की गर्जना दूर से सुनाई दे रही थी। मुझे नहीं पता था कि कब और कैसे मैंने उस लट्ठे को पकड़ लिया था। यह एक चमत्कार ही था कि मैं बच गया। मुझे एक मिशन पूरा करना था और इसीलिए पूर्णा ने मुझे चबाया तो था, लेकिन पूरी तरह निगल नहीं लिया था। मेरे शरीर के हर जोड़ में दर्द हो रहा था। मैंने अपने सिर पर चोट के निशान देखे तो पाया कि वह चिपचिपा और गर्म था। खून बह रहा था। खून! खून मगरमच्छों को आकर्षित करेगा। मैं मगरमच्छों के इलाके में था। क्या वे रात में शिकार करते हैं? मुझे नहीं पता था और न ही मैं जानना चाहता था। मुझे पानी से बाहर निकलना था, लेकिन धारा बहुत तेज़ थी। मैंने लट्ठे को छोड़े बिना किनारे की ओर तैरना शुरू किया। यह बहुत थका

देने वाला था। अचानक, मैंने पानी में कुछ हिलता हुआ देखा। क्या मगरमच्छ रात के खाने के लिए आए थे? किसी बेचारे, काले असुर का रात का नाश्ता करने? मुझे यकीन नहीं था कि वे दौड़कर ज़मीन पर अपने शिकार को पकड़ सकते हैं, लेकिन ज़मीन निश्चित रूप से ज़्यादा सुरक्षित थी। सुरक्षित, जब तक वहाँ तेंदुए न हों। अगर मैं जमीन पर पहुंच गया तो मुझे तेंदुओं, बाघों और सांपों से डर लगेगा।
वह काली सी हिलती हुई चीज़ करीब आती गई। मैंने ज़ोर से लात मारी। बस कुछ ही कदम बचे थे कि किसी चीज़ ने मेरे पैर पर वार किया। बस, यही था। यही अंत था। देव सेनाओं, असुरों के बाणों और एक विशाल झरने से बच निकलने के बाद, अब मैं किसी बदसूरत, लंबी नाक वाले सरीसृप का रात का नाश्ता बनने वाला था। मैंने उसके शक्तिशाली जबड़ों के मेरे पैर पर झपटने का इंतज़ार किया, लेकिन कुछ नहीं हुआ। मैं इतना डरा हुआ था कि पीछे मुड़कर भी नहीं देख सका। किनारे तक तैरने की हिम्मत ही नहीं हुई। मैं अपने लट्ठे को पकड़े रहा और इंतज़ार करता रहा। गीले आसमान में एक धुंधला चाँद दिखाई दिया। एक-दो घंटे या शायद कुछ सेकंड ही बीते होंगे, मुझे नहीं पता। लेकिन जब मैंने पीछे मुड़कर देखा, तो वह गायब हो चुका था। बिना किसी निशान के। मैं खुशी से रोना चाहता था। फिर मैंने उसे दोबारा देखा। वह पेड़ की एक छोटी सी लटकती शाखा में फंसा हुआ था। वह मगरमच्छ नहीं था जो मेरे पैरों के नीचे इंतज़ार कर रहा था, बल्कि एक छोटी सी नाव थी! कोई मेरा पीछा करता हुआ आया होगा और पूर्णा ने उसका काम तमाम कर दिया होगा। इस पूरे समय मुझे मगरमच्छों का डर सता रहा था, जबकि कुछ लोग डोंगी में मेरा पीछा कर रहे थे। डोंगी मेरे पैरों के बिल्कुल पास थी, फिर भी मैं उसे पकड़ सकता था।
मैं सावधानी से डोंगी की ओर तैरने लगा। मैं नहीं चाहता था कि लहरें उसे हिला दें। मैं लगभग उसे पकड़ने ही वाला था कि तभी एक तेज़ हवा ने शाखा को हिला दिया और डोंगी को मुक्त कर दिया। मैंने उसे बहाव में बहने से पहले पकड़ने के लिए अपनी पूरी ताकत से तैरना शुरू किया। लेकिन वह मेरे लिए बहुत तेज़ थी। मैं छटपटाने लगा।
अपने दर्द और तेज़ बारिश को नज़रअंदाज़ करते हुए, जो फिर से मुझ पर बरसने लगी थी, मैंने आखिरकार तब हिम्मत हार दी जब डोंगी एक भंवर में फंस गई। कई बार मुड़ने और घूमने के बाद, चमत्कारिक रूप से वह मेरी ओर तेज़ी से बढ़ी। मेरा सिर लगभग धड़ से अलग हो गया था, लेकिन डोंगी के आगे बढ़ने से पहले ही

[illegible]

12 प्रतीक्षा
रावण
लगभग दो महीने बीत चुके थे, लेकिन जासूस को पकड़ने के लिए भेजे गए खोज दल के अलावा कोई वापस नहीं लौटा था। उस रात उफनते पानी में हमारे तीन आदमी खो गए थे। पहरेदारों के मुखिया, जो पीले, हट्टे-कट्टे और मोटे-ताज़े आदमी थे, ने कहा कि नदी ने भद्रा को निगल लिया होगा। खोज दल को तीन पहरेदारों में से दो के शव नदी में एक मील नीचे मिले, जो मछलियों और सियार द्वारा आधे खाए जा चुके थे। शायद मगरमच्छों ने भद्रा और दूसरे पहरेदार को खा लिया होगा, जिसका नाम किसी को पता नहीं था। मुझे उम्मीद थी कि जासूस मर गया होगा, लेकिन इस बात पर यकीन करना मुश्किल था। वह अमर सा लगता था। उसके अंदर कुछ था, कोई ऐसी अदम्य शक्ति जो मौत को भी मात देती थी। मुझे डर था कि उसने हमारी योजनाओं का खुलासा कर दिया होगा।
अंतहीन प्रतीक्षा निराशाजनक थी। मेरे सैनिकों में ऊब आ गई थी। रुद्राका ने सैनिकों को क्रूरता की हद तक समर्पण भाव से प्रशिक्षण दिया। देर शाम तक वे थक जाते और गहरी नींद सो जाते। इससे शराब के नशे में होने वाली मारपीट और बेतुकी कविताएँ कम हो गईं। मैंने 300 होनहार सैनिकों को अलग किया और तीस कप्तान चुने। मैंने इकाइयों को यथासंभव छोटा रखा ताकि तेज़ी और लचीलापन बना रहे। प्रत्येक टीम में कप्तान सहित दस सदस्य थे। उन्हें तलवार और गदा का वैज्ञानिक तरीके से उपयोग करना, निहत्थे हथियारों से लड़ना, चाकू से आमने-सामने की लड़ाई और दीवार पर चढ़ना सिखाया गया। मैंने उनके लिए गहरे काले रंग की पगड़ी और काली धोती वाली वर्दी भी डिज़ाइन की। उन्हें अपने साथ एक छोटी लोहे की गदा और एक हल्की तलवार, कमर पर बंधी रस्सी और रस्सी के अंदर छिपा हुआ खंजर लेकर चलना था। चयन से पहले भी सैनिक शारीरिक रूप से चुस्त थे और दो महीने के कठोर प्रशिक्षण के बाद उनके काले

13 लंका का स्वागत
भद्र
सूरज की तेज धूप से मेरी आंखें जल उठीं। शरीर में दर्द था और जी मिचला रहा था। मैंने सिर उठाया और धीरे-धीरे बहते पानी को निहारा। यह ताड़ के पेड़ों से घिरे खेतों के बीच धीरे-धीरे बह रहा था। नदी के दोनों किनारों पर चहल-पहल थी। मुझे कई नावें और धान से भरी नावें दोनों दिशाओं में आती-जाती दिखाई दे रही थीं। धान के खेत थे जिनमें किसान जुताई कर रहे थे। एक मनमोहक गांव का गीत हवा में गूंज रहा था। पिछले जन्म में, मैं रुककर इस नज़ारे का आनंद लेता। मैं पानी में कूदकर नदी पार तैरता। यहां की ताड़ी स्वादिष्ट होती। और लड़कियां तो और भी प्यारी होतीं। मुझे पश्चिम की ओर दूर आसमान में सीगल और ब्राह्मणी चीलें उड़ती दिखाई दे रही थीं। मैं नदी के मुहाने के पास पहुँच रहा था। किसी भी क्षण मुझे मुज़ुरिस का प्रकाशस्तंभ दिखाई दे सकता था; एक प्राचीन प्रकाशस्तंभ जिसने हजारों मानसून झेले हैं और दुनिया भर से यात्रियों और जहाजों को अपने खूबसूरत शहर तक रास्ता दिखाया है।
नदी ने धीरे से दाहिनी ओर मोड़ लिया और वह सामने आ गया। मुज़ुरिस का बंदरगाह शहर, एक शाश्वत शहर, जो कभी महाबली की राजधानी था, कला और संस्कृति का केंद्र, दुनिया का सबसे महानगरीय शहर। यूनानियों, रोमनों, सीरियाई लोगों, सुमेरियन, मेसोपोटामियाई, चीनी, अरब, यहूदी, देव, विभिन्न असुर जनजातियाँ और मिस्रवासियों के अपने-अपने मार्ग और पूजा स्थल थे। यहाँ विभिन्न व्यापारिक संघ थे। कैलिको, मोर, बंदर, काली मिर्च, इलायची, दालचीनी, कपास, चावल, कपड़े, सोना, घोड़े, बहुमूल्य पत्थर और रेशम का यहाँ से निर्यात होता था। प्राचीन शहर चहल-पहल से भरा रहता था।
मैंने डोंगी छोड़ी और पानी में कूद गया, जो सुखद रूप से गर्म था। मैं किनारे पर उतरा और पास के सराय की ओर चल पड़ा। लोग मुझे घूर रहे थे। मैं

ज़रूर अजीब दिख रहा था। वह एक पुरानी झोपड़ी थी, छोटी लेकिन साफ़-सुथरी, जिसकी छत ताड़ के पत्तों की थी। वहाँ कुछ लोग इधर-उधर घूम रहे थे, ज़्यादातर नाविक थे। मुझे नहाना था और अपने ज़ख्मों का डॉक्टर से इलाज करवाना था। सराय का मालिक दयालु था और मुझे लगता है कि उसने भारी बारिश में मेरी चावल की नाव के डूबने की कहानी पर विश्वास कर लिया था। ऐसा लग रहा था जैसे इस सराय में प्रकृति के प्रकोप से बचकर आए लोग अक्सर आते हों। उसने मुझे नए कपड़े दिए और एक डॉक्टर के सहायक से मेरे ज़ख्मों पर पट्टी करवाई। मैंने उससे वादा किया कि मैं कुछ दिनों तक उसके लिए काम करके उसका एहसान चुकाऊँगा।
यह बहुत मेहनत का काम था, मुझे गहरे कुएँ से पानी निकालना पड़ता था, ईंधन के लिए लकड़ी काटनी पड़ती थी और फर्श साफ करने पड़ते थे। मैं बस ज़िंदा रहने से खुश था। मैं शिविर छोड़ने का कारण नहीं भूला था, लेकिन मुझे आराम की ज़रूरत थी। मैंने सोचा कि मैं कुछ संपर्क बनाऊँगा और फिर लंका जाने वाले जहाज पर सवार हो जाऊँगा। और सराय में ही मुझे अपनी प्रतिभा का पता चला। बिल्कुल संयोग से मुझे पता चला कि मैं एक अच्छा रसोइया हूँ। यह बस एक दिन यूँ ही हो गया जब सराय का रसोइया बिना कुछ कहे गायब हो गया। वहाँ कई मेहमान थे और मैंने खाना बनाने की ज़िम्मेदारी ले ली। देखते ही देखते, मेरी ख्याति हो गई। 'भद्रा की तली हुई मछली' शाम की दावतों का ज़रूरी व्यंजन बन गई। लोग कहते थे कि मेरी मसालेदार मछली ताड़ी के साथ बहुत अच्छी लगती है। जल्द ही मुझे विभिन्न जहाजों के कप्तानों से निमंत्रण मिलने लगे। लेकिन मैं जानता था कि मुझे धैर्य रखना होगा। मैंने तब तक इंतज़ार किया जब तक मुझे कुबेर के लंका जाने वाले जहाज से एक उपयुक्त प्रस्ताव नहीं मिल गया। यह एक शाही विलासिता का जहाज था, एक विशाल, मजबूत पोत जिसे तूफानी मानसूनी समुद्र में भी सुरक्षित माना जाता था। यह जहाज़ अधिकारियों और उनकी पत्नियों को खरीदारी के लिए दुनिया के प्रमुख बंदरगाहों तक ले जाता था। मैं उनसे तुरंत घुलमिल गया और लंका पहुँचने से पहले ही मुझे एक दर्जन कुलीन परिवारों से नौकरी के प्रस्ताव मिल गए। लेकिन मुझे अपना नियोक्ता सोच-समझकर चुनना था। मैं महल के अंदर रहना चाहता था। आख़िरकार, मैं खुद को जासूस मानता था। मैं ज़्यादा से ज़्यादा जानकारी इकट्ठा करके अपने राजा को भेजना चाहता था। इसलिए मैंने शाही रसोई के एक रसोइए से चालाकी से दोस्ती कर ली। वह दुबला-पतला, सांवला, अनिश्चित उम्र का

आदमी था और उसे सब्ज़ियाँ काटने और मांस-मछली तैयार करने के लिए एक सहायक की ज़रूरत थी। उसे पूरा भरोसा था कि वह मुख्य रसोइए को मुझे नौकरी देने के लिए मना लेगा। मैंने सोचा कि उसके साथ एक मौका आज़माना चाहिए, क्योंकि इससे मुझे महल के अंदरूनी हलकों में जगह मिल जाएगी। मेरे दिमाग में तरह-तरह की योजनाएँ दौड़ने लगी थीं।
छह दिनों की यात्रा के बाद मैं लंका में उतरा। जहाज प्रायद्वीप और लंका के उत्तरी छोर का चक्कर लगाने के बाद राजधानी त्रिकोटा के पास मुख्य बंदरगाह पर लंगर डाला। मुझे त्रिकोटा पहाड़ियों की चोटी पर कुबेर का जगमगाता महल दिखाई दिया। मैंने सशस्त्र पहरेदारों के साथ चौकियाँ देखीं। शाही राजमार्ग बंदरगाह से पूर्वी तरफ मुख्य द्वार तक फैला हुआ था, जिसके दोनों ओर सुंदर उद्यान और वृक्ष थे। किले के पश्चिमी और दक्षिणी किनारों पर कई झुग्गी-झोपड़ियाँ थीं जहाँ शहर के गरीब लोग रहते और काम करते थे, और ये व्यापारिक संघ उत्तर की ओर मीलों तक फैले हुए थे। उत्तरी तट पर सार्वजनिक पार्क और झीलें थीं। पूर्वी तरफ आने वाले नाविकों के लिए सराय थीं। वहाँ ऐसे वेश्यालय थे जहाँ सुंदर लड़कियाँ पैसे देने को तैयार पुरुषों को शराब, ताड़ी और अपने जिस्म की पेशकश करती थीं। शाही रक्षक उत्तम अरबी घोड़ों पर सवार होकर सड़कों पर गश्त करते थे। मैंने त्रिकोटा जैसा शहर पहले कभी नहीं देखा था। मुज़ुरिस बड़ा और अधिक व्यस्त था, लेकिन उसमें त्रिकोटा का आकर्षण नहीं था। मुज़ुरिस एक ऐसा शहर था... जटिल, संकरी और घुमावदार सड़कें, व्यापार से भरी हुई थीं और उसे ठसाठस भर रही थीं। यह जगह भीड़भाड़ वाली और तंग थी, मानो बड़े-बड़े गाँव के बाज़ारों का समूह हो। धन-दौलत का कोई दिखावा नहीं था और ज़ाहिर है, त्रिकोटा की तरह बाहरी इलाकों में कोई झुग्गी-झोपड़ियाँ भी नहीं थीं। मुझे ऐसा लगा कि गरीबों को त्रिकोटा के बाहरी इलाकों में बसाया गया था ताकि शहर के व्यावसायिक क्षेत्रों को स्वच्छ और सुव्यवस्थित दिखाया जा सके। खैर, इसका प्रभाव वाकई अद्भुत था। त्रिकोटा और पहाड़ी की चोटी पर बने महल को देखकर कोई भी पर्यटक प्रभावित हो जाता।
मुझे किले में अपने स्वागत को लेकर चिंता थी। मैं जहाज से उतरकर अपने दोस्त के पीछे कुछ कदम ही चल पाया था कि अचानक डर से कांप उठा। एक महल का रक्षक, एक ऊंचे, काले घोड़े पर सवार, मुझे घूर रहा था। ऐसा लग रहा था मानो वह कुछ याद करने की कोशिश कर रहा हो। मैंने उसका चेहरा याद करने की बहुत

मैंने उसे तब पहचान लिया। वह उस गिरोह के साथ था जिसने मेरे गाँव पर हमला किया था। यह आदमी...
“मैंने तुम्हें कहीं और देखा है।” उसी क्षण दरवाजा धमाके के साथ खुला और एक भारी-भरकम आदमी कमरे में दाखिल हुआ। “तुम हद पार कर रहे हो, कमीने। शाही अंगरक्षकों के निरीक्षक होने का मतलब यह नहीं कि तुम मेरे नौकरों को पीट सकते हो। तुम्हें इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी,” उस आदमी ने चिल्लाते हुए कहा। “आह, मुझे खुशी हुई। विक्रमा आभारी है कि रसोई के राजा, महाराज, ने अपने पवित्र चरण मेरे इस तुच्छ स्थान पर रखे हैं। लेकिन महाराज, आप रसोई के चूल्हे के नीचे किसी कुटिल स्त्री के साथ संभोग क्यों नहीं कर रहे हैं? इस समय आप यहाँ क्यों आए हैं, यह मेरी समझ से परे है।”
“विक्रम, हे नशे में धुत बंदर के पुत्र, तुम्हें इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी। मेरे सेवक को अकेला छोड़ दो। वरना कल राजा को पता चल जाएगा और तुम उसके पालतू बाघों का नाश्ता बन जाओगे।”
“अपने प्रेमी को ले जाओ और मज़े करो। बस आराम से रहना। मैं नहीं चाहता कि वो तुम्हारी बदबूदार गांड में छेद कर दे और चीख-पुकार से आधा शहर जाग जाए।” इंस्पेक्टर ने मुझे एक चिथड़े की तरह उठाया और उस मोटे आदमी पर फेंक दिया। मैं उसके पैरों पर गिर पड़ी और उठने की कोशिश की। इंस्पेक्टर और मोटा आदमी एक-दूसरे को घूरते रहे।
आखिरकार, वह मोटा आदमी मुड़ा और मैं जल्दी से उसके पीछे चल दिया। मुझे महसूस हो रहा था कि इंस्पेक्टर की निगाहें मेरी पीठ पर गड़ी हुई हैं। वह मुझे पकड़ लेगा, एक दिन ज़रूर पकड़ लेगा। यह सोचकर ही मैं कांप उठा और तेज़ी से चलने लगा, अपने रक्षक को पकड़ने की कोशिश कर रहा था, जो अपने कद-काठी के हिसाब से आश्चर्यजनक रूप से तेज़ चल रहा था। जब तक हम एक विशाल परिसर में नहीं पहुँच गए, उसने एक शब्द भी नहीं बोला। “यह केंद्रीय रसोईघर है। पूरी सेना को यहीं से भोजन मिलता है। मैं सुबोगा, मुख्य रसोइया हूँ। मैं शाही परिवार के लिए भोजन की व्यक्तिगत रूप से देखरेख करता हूँ। बाकी लोगों के लिए लगभग बीस पर्यवेक्षक और 300 रसोइये और सहायक हैं। फिर सफाई कर्मचारी, सेवक आदि भी हैं। मैं मछली के जानकार किसी व्यक्ति की तलाश में था और अरसु ने सुझाव दिया कि मैं तुम्हें ले जाऊँ। जब उसने बताया कि उस बदमाश ने तुम्हें बंदी बना लिया है, तो मैं तुरंत भागा-भागा आया। लेकिन यह मत सोचो कि मैं तुम्हारा मित्रवत चाचा हूँ और हमेशा तुम्हारी रक्षा के लिए

तत्पर रहूँगा। मैं तुम्हें लेने इसलिए आया हूँ क्योंकि जहाज पर सवार छह लोगों ने तुम्हारे लिए गवाही दी थी। तुम अरसु की टीम में शामिल हो सकते हो। मैं तुम्हें कुछ हफ्तों के लिए परखूँगा कि क्या तुम मेरी रसोई के लिए उपयुक्त हो। तुम्हारा सोने का कमरा बाईं ओर है।”
विक्रमा से ज़िंदा बच निकलने पर राहत महसूस करते हुए मैंने उसे धन्यवाद दिया। "और तीन तांबे के सिक्के..."
“हफ़्ते भर की तनख्वाह तुम्हारी होगी,” वह चिल्लाते हुए अपने सोने के कमरे की ओर जाने वाले गलियारे की तरफ़ चल पड़ा। मैं अपने जहाज़ वाले दोस्त अरसु को ढूँढ़कर उसका शुक्रिया अदा करना चाहता था। लेकिन काफ़ी रात हो चुकी थी और मैंने सोचा कि सुबह कर लूँगा, इसलिए मैं कमरे में घुस गया। ज़मीन पर कुछ गद्दे बिछे हुए थे। करीब एक दर्जन लोग अलग-अलग मुद्राओं में सो रहे थे। मुझे एक छोटी सी जगह मिली और मैं उनके बीच घुस गया। कल से तो काम शुरू करना था। लेकिन अभी तो बस लेटकर सौ साल तक सोना चाहता था।

14 विश्वासघात
रावण
एक-एक करके मेरे प्रतिनिधि आ गए। जहाजों को लाने का मिशन सफल रहा था। मारीचा माया सभ्यता के स्कूल के प्रमुख को लाने में भी सफल रही थी। कहा जाता था कि उनके पास देश के सर्वश्रेष्ठ इंजीनियरों में से एक थे और वे अपने बीस सर्वश्रेष्ठ तकनीशियनों के साथ आए थे। वे विधवा थे और अपनी बेटी को भी साथ लाए थे। क्या मैं अपने लगभग पूरी तरह से पुरुष प्रधान दल में इस अनावश्यक व्यवधान को चाहती थी? लेकिन मैं इस स्तर पर किसी भी प्रकार का टकराव नहीं चाहती थी। कहा जाता था कि वह एक सुंदर महिला थी।
हमने चैत्र माह की पंद्रह तारीख को अभियान शुरू करने का दिन तय किया था। जंबुमाली ने निचले डेक को कुछ दिनों के लिए राशन से भरने की व्यवस्था की। उन्होंने मुज़ुरिस के दक्षिण में एक सुनसान समुद्र तट पर कई बार जाकर सामान पहुँचाया, जहाँ जहाज़ कुछ मील दूर लंगर डाले खड़े थे। हमने आस-पास के गाँवों और यहाँ तक कि शहर के बाज़ार से भी थोड़ी-थोड़ी मात्रा में सामान लाया ताकि किसी को शक न हो और उस सामान को समुद्र तट के पास जंगल में बने एक अस्थायी शिविर में जमा कर दिया। वहाँ से, रात में उसे जहाज़ों तक पहुँचाया गया। संशोधित कक्षों को काली मिर्च की बोरियों से भर दिया गया और उनमें हथियार छिपा दिए गए। बीच में बने एक गुप्त डेक में लगभग 300 लोगों को छिपाया गया था। अब हम जाने के लिए तैयार थे।
कई समस्याएं थीं और शुरू में सब कुछ अस्त-व्यस्त था। लेकिन धीरे-धीरे सब कुछ ठीक हो गया। हमने जंगल में कुछ सौ सैनिकों को, जिनमें मेरी माँ, चाची, बहन, इंजीनियर, साथ ही माया और उसकी बेटी शामिल थे, वहीं छोड़कर लंका जाने का फैसला किया। जंबुमाली को भी वहीं छोड़ दिया गया क्योंकि उसके लिए द्वीप जाना बहुत खतरनाक था। हो सकता है कि कुछ लोग प्रांत के पूर्व राज्यपाल को

पहचान लेते। यहाँ तक कि यह भी संभव था कि कोई हम तीनों भाइयों में से किसी को पहचान ले। लेकिन लंका में हम कोई खास नहीं थे और हमने जोखिम उठाने का फैसला किया।
पंद्रह तारीख नज़दीक आते-आते शिविर में तनाव और उत्साह असहनीय हो गया। हर तरफ़ आगामी युद्ध, युद्ध रणनीति, लंका की शान, सुंदर युवतियों की ही चर्चा थी… कोई भी हार और विनाश की बात नहीं करना चाहता था। कोई भी वरुण के समुद्री लुटेरों के बेड़े से सामना होने की संभावना के बारे में सोचना नहीं चाहता था। किसी ने भी कुबेर के जासूस भद्रा द्वारा व्यापारी राजा को पूर्व सूचना देने और हमारे घात लगाकर हमला किए जाने की संभावना का ज़िक्र करने की हिम्मत नहीं की। हमने ऐसे विचारों को अपने मन के सबसे गहरे कोनों में धकेल दिया।

भद्र
कुबेरा में काम करते हुए मुझे एक महीना बीत चुका था। हमारे जहाजों का कोई अता-पता नहीं था। मानसून दो हफ्ते पहले ही कमजोर पड़ गया था और मौसम दिन-ब-दिन सुहावना होता जा रहा था, ठीक वैसे ही जैसे मानसून के लौटने से पहले एक महीने के आराम के लिए होना चाहिए। हर मंगलवार को मैं रसोई के लिए मांस और सब्जियां खरीदने बाजार जाता था। फिर चुपके से बंदरगाह के सामने वाले मसाले बाजार में जाता, जहाजों को देखने या भीड़ में किसी परिचित चेहरे को ढूंढने के लिए।
जब भी मैं इन सैरों पर निकलता, मुझे बेचैनी महसूस होती। ऐसा लगता था जैसे कोई मेरा पीछा कर रहा हो। यह एक अस्पष्ट सी अनुभूति थी, पर बनी रहती थी। मैं चारों ओर देखता, बाज़ार की संकरी गलियों में अचानक और अप्रत्याशित मोड़ लेता, छोटी-छोटी खाने की दुकानों में घुस जाता और दुकानों के पिछले दरवाजों से बाहर निकल आता। लेकिन मुझे कोई नहीं मिलता। मैं खुद को नंगा महसूस करता। मुझे अपनी ही परछाई से डर लगता था। दिन भर मैं उदास रहता और सब कुछ छोड़कर अपने वतन के किसी अनजान गाँव में वापस जाना चाहता। रात में चीखते हुए जाग जाता। मुझे अपनी बेटी का बिखरा हुआ दिमाग, अपनी पत्नी की खून

से लथपथ टांगें और उन शैतानों के हिलते हुए नंगे नितंब दिखाई देते। मैं जानता था कि मुझे यहीं रुककर बदला लेने की योजना बनानी होगी। मेरे बुरे सपनों में विक्रमा मेरा उपहास करता। वह पालथी मारकर बैठा रहता और अपनी उंगलियाँ चाटता, मानो किसी दावत में हो। वह मुझे कोई न कोई स्वादिष्ट व्यंजन पेश करता, जो हमेशा मेरी बेटी का बिखरा हुआ दिमाग ही निकलता। उन पलों में, मैं वापस जाने और शांत जीवन जीने के बारे में भूल जाता। मेरी बस यही इच्छा थी कि देवों का विनाश हो जाए। मेरी बस यही इच्छा थी कि मैं बदला लूँ।
अंततः, एक दिन मैंने उन्हें देखा, कुछ घोड़ों पर सामान लादे हुए, मसाले के बाज़ार की गलियों से गुज़रते हुए। वे कई छोटे-छोटे समूहों में बँटे हुए थे, लेकिन मैं रावण को आसानी से पहचान गया। मैं भयभीत हो गया। उसका हावभाव किसी व्यापारी जैसा नहीं था। वह किसी राजा की तरह सवार था। आख़िर बाज़ार में कौन सा राजा मिलेगा? रावण अपने तौर-तरीकों से पूरी योजना का खुलासा कर देता। लेकिन मैं गलत भी हो सकता था। शायद रावण आक्रमण से अनजान लोगों को एक समृद्ध व्यापारी जैसा लग रहा था। नौकरों के वेश में सैनिक भी एक बड़ा संकेत थे। वे बिल्कुल भी नौकरों जैसा व्यवहार नहीं कर रहे थे। वे आपस में बातचीत नहीं कर रहे थे। वे सीपियों के हार और कांच की चूड़ियाँ बेचने वाली छोटी दुकानों के सामने नहीं रुक रहे थे और न ही कीमतों पर मोलभाव कर रहे थे। इसके बजाय, वे चुपचाप चल रहे थे। उनका भेष कभी भी खुल सकता था। तभी मैंने दूर लंगर डाले दो जहाज़ देखे। वे बहुत छोटे और कमज़ोर लग रहे थे। मुझे अपने राजा के पास जाकर उन्हें चेतावनी देनी थी। लेकिन अगर उन्होंने मुझ पर भरोसा नहीं किया तो क्या होगा?
“तो, तुम यही तो चाहते हो, है ना?” विक्रमा की आवाज़ सुनकर मैं चौंक गया। वह मेरे पीछे खड़ा घास का तिनका चबा रहा था, मानो किसी छोटे व्यापारी का भेस बनाकर आसपास के माहौल में पूरी तरह घुलमिल गया हो। एक हाथ में उसने छोटे व्यापारियों जैसी एक छोटी भूरी थैली पकड़ रखी थी और दूसरा हाथ उसकी पीठ के पीछे था। मुझे यकीन था कि उस हाथ में उसका खंजर था। इससे पहले कि वह कुछ कर पाता, मैंने उसके पैर पर पैर रख दिया और उसे ज़ोर से धक्का दिया। वह लड़खड़ाकर पीठ के बल गिर पड़ा। वह झट से उठा, लेकिन तब तक मैं वहाँ से भाग चुका था। मुझे खंजर की धार धूप में चमकती हुई दिखाई दी। भीड़ चीख उठी। मैं भीड़ के बीच से तेज़ी से भागा, फलों की गाड़ियाँ पलटता हुआ, सिंदूर के

ढेरों पर से कदम रखता हुआ, फेरीवालों और विक्रेताओं की चीखें, गालियाँ, खरोंचें और मार खाता हुआ। रावण मेरी तरफ मुड़ा। उसके चेहरे पर हैरानी छा गई। फिर, जैसे ही उसने मुझे पहचाना, मैंने उसके सुंदर चेहरे पर घृणा का भाव देखा। मैंने देखा कि चारों ओर से लोग हमारे चारों ओर मंडरा रहे थे और हमें घेर रहे थे। भेस बदले हुए गार्ड हमारी ओर बढ़ रहे थे। विक्रम पूरी तरह से सतर्क था और उसने हमें अपने हाथ में नींबू की तरह पकड़ रखा था। और वह हमें बुरी तरह निचोड़ रहा था।
“दूर हटो!” मैं ज़ोर से चिल्लाई। मैंने रावण के हाथ में तलवार की चमक देखी। फिर मैंने भीड़ में सैकड़ों तलवारें उठी हुई देखीं। रावण के आदमियों के भागने की कोशिश में बाज़ार के अलग-अलग कोनों में धूल उड़ने लगी। मैं राजा के घोड़े के पास पहुँची और बोली, “हे मेरे स्वामी, मुझे अपने साथ ले चलो।” विक्रमा बहुत करीब था। किसी भी क्षण मुझे मार दिया जा सकता था या बंदी बना लिया जा सकता था।
रावण दहाड़ा, “अरे गद्दार, नीच औलाद! नरक में सड़ जा!” नाक पर पड़ी लात उन शब्दों के सामने कुछ भी नहीं थी। मैं लगभग विक्रम पर गिर ही पड़ा था, लेकिन उसने चतुराई से मुझे चकमा दिया और रावण की ओर दौड़ा। उसने घोड़े की लगाम पकड़ ली और राजा पर वार करने की कोशिश की। रावण की एक और जोरदार लात से विक्रम ज़मीन पर गिर पड़ा। मैंने राहत की सांस ली कि रावण के आदमियों ने पहरेदारों की कतारें तोड़ दी थीं। राजा भीड़ से बाहर निकलने के लिए तलवारें चला रहा था और पीछे हटने के आदेश दे रहा था। जल्द ही वह अपने अनुयायियों के साथ पूरी रफ्तार से बाज़ार से निकल गया, कुछ घोड़े पर सवार थे और कुछ दौड़कर उसका पीछा कर रहे थे। यह छोटा समूह कुछ आधे मन से पहरेदारों के साथ बाज़ार से निकल गया। मेरी टूटी नाक से खून बहकर एक तालाब बन गया था। मैंने उठने की कोशिश की, लेकिन मेरे चेहरे पर एक ज़ोरदार लात पड़ी। विक्रम गुस्से से लाल था। उसने मुझे बार-बार ज़ोर से लात मारी। मैं उठकर भागना चाहता था, लेकिन विक्रमा के लातें बारिश की तरह बरस रही थीं। मैं लगभग बेहोश हो चुका था, तभी किसी ने मुझे आधा उठाकर, आधा घसीटते हुए महल की ओर ले गया। विक्रमा के दफ्तर की छोटी सी कोठरी तक पहुँचते-पहुँचते मेरे पूरे शरीर से खून बह रहा था। वहाँ उसने फिर से वही हरकतें शुरू कर दीं। काश मैं उसकी जेल पहुँचने से पहले ही मर गया होता।

रावण
सब कुछ बर्बाद हो गया। एक कमीने की वजह से सब कुछ बर्बाद हो गया। महीनों की योजना, हथियारों और रसद के लिए संघर्ष, प्रशिक्षण और धूप-बारिश में जीना। सब कुछ बर्बाद हो गया क्योंकि हमारे निकम्मे पहरेदार उस छोटे, मोटे किसान को पकड़ नहीं पाए। मैं उसे नंगे हाथों से कुचल सकता था। लेकिन मुझे पता था कि इस तरह का गुस्सा और हताशा हमारे जीवन को और भी दुखमय बना देगी। प्रहस्त एक पेड़ के नीचे सो रहा था और सुमाली और रुद्रक रेत पर नक्शे बनाने के बाद कुछ चर्चा कर रहे थे। कुंभ और विभीषण जंगल में गायब हो गए थे। दुश्मन से एक भी मुठभेड़ से पहले ही युद्ध हार चुके थे। मैं लंका पर सीधा हमला करके गौरव के साथ मरना चाहता था। मैं अपने सैनिकों को कुबेर के महल तक ले जाकर वीरतापूर्वक मरना चाहता था। लेकिन प्रहस्त को यह आत्महत्या जैसा लगा। उसने सोचा कि मरने का एक बेहतर तरीका यह होगा कि जिस चट्टान पर हम अभी बैठे हैं, उससे कूद जाएं। इस तरह हम आम नागरिकों को कष्ट नहीं पहुंचाएंगे। इसलिए हम इस नरक में फंसे हुए थे। हम सुबेला पहाड़ियों की चोटी पर थे, एक तरफ समुद्र और दूसरी तरफ कुबेर का महल दिखाई दे रहा था। बीच की घाटी में कुबेर की सेना हमारा इंतज़ार कर रही थी। हम घिरे हुए थे। वे कभी भी आकर हमें खत्म कर सकते थे। उन्हें पूरा यकीन था कि हम भूख से मर जाएँगे। सुबेला पहाड़ियाँ बंजर थीं और जंगलों में शिकार के लिए जानवर बहुत कम थे। वहाँ 300 लोगों का गुज़ारा ज़्यादा दिन नहीं चल सकता था। हमने अपने जहाज़ को देखा, जिसे माया सभ्यता के लोगों ने रूपांतरित किया था, वही जहाज़ जो असुर साम्राज्य के गौरव और पुनर्जन्म का प्रतीक था, कुबेर की नौसेना ने उसे पत्तों की नाव की तरह डुबो दिया। हमारे सभी अतिरिक्त हथियार 200 फीट गहरे पानी में सुरक्षित जगह पर रखे गए।
केवल मारीचा ही बातों को सहजता से लेते थे। वह बूढ़े हमेशा हंसमुख रहते थे। वे सैनिकों के मनोरंजन के लिए खेल बनाते और उन्हें पुराने जमाने की कहानियां सुनाते, जब चीजें आधुनिक और जटिल नहीं थीं, जब विचार शुद्ध थे, लोगों के पास जीवन का आनंद लेने का समय था और दुनिया रहने के लिए एक बेहतर जगह थी। आग के चारों ओर बैठकर, हम कल्पना करते थे कि हम उन शांत समय में जी

रहे हैं जब हमारे पूर्वज ताजी हवा में सांस लेते थे। वे हमेशा अपनी कहानियों का अंत इस बात पर अफसोस जताते हुए करते थे कि आज के समय में युवा लोग बड़ों का सम्मान नहीं करते, लोग हर समय धोखा देते हैं, झूठ बोलते हैं और जीवन में जल्दबाजी करते हैं। लेकिन उनका मानना था कि भविष्य में सब कुछ बेहतर होगा। मारीचा, आप कितने आशावादी इंसान हैं, कितने अद्भुत व्यक्ति हैं। आपके बिना हमारा क्या होता?
मानसून ढलने लगा था। हम भीगे हुए, बीमार और ज़िंदा रहने से हताश थे। आधे सैनिक बुखार से पीड़ित थे और हम भूख से बेहाल थे। मैं अंधेरे आसमान के नीचे इंतज़ार कर रहा था, मेरे ऊपर मानसून के बादल मंडरा रहे थे। गरज की आवाज़ गूंज रही थी। मैंने प्रहस्त से बार-बार बहस की थी कि यहीं रुककर मक्खियों की तरह मरना ठीक नहीं है। वह अड़ा हुआ था कि हम यहीं रहें। अगर हम हिले तो कुबेर के जाल में फंस जाएंगे। मुझे सैनिकों के बीच विद्रोह की भावना महसूस हो रही थी और मैंने देखा कि मुझ पर उनका भरोसा काफी कम हो गया था। जब भी मैं इधर-उधर जाता, "राजा अमर रहें!" के नारे नहीं लगते थे। सुबह की परेड और ड्रिल में कम ही लोग आते थे। मुझे यह आशंका सता रही थी कि प्रहस्त सैनिकों के विद्रोह का फायदा उठाकर नेता बन जाएगा। मैंने इस बारे में कुंभ से बात की। उसने सोचा कि यह मेरा वहम है, लेकिन उसने प्रहस्त पर नज़र रखने का वादा किया। मैं मुक्ति की प्रतीक्षा कर रहा था और बहुत कुछ होने की उम्मीद कर रहा था। कि वरुण द्वीप पर आक्रमण करे और हमें पीछे हटने का एक सम्मानजनक रास्ता दिखाए। मैंने आशा की कि समुद्र द्वीप को निगल ले। मुझे उम्मीद थी कि कुबेरा को राजमहल में तख्तापलट करके मार दिया जाएगा और फिर मुझे, उसके सौतेले भाई को, द्वीप पर शासन करने के लिए आमंत्रित किया जाएगा। मैं जानता था कि इनमें से कुछ भी कभी नहीं होगा। जो बात निश्चित थी, वह थी आसमान में मंडराते गिद्ध, जो हमारा एक-एक करके गिरकर मरने का इंतजार कर रहे थे।
फिर एक दिन, अप्रत्याशित रूप से, मेरी इच्छा पूरी हो गई।

15 जहरीले पेय

भद्र
मुझे आश्चर्य हुआ कि मैं अभी भी जीवित हूँ। उन्होंने मेरी सभी उंगलियों और पैरों के नाखून नोच लिए थे। उन्होंने मुझे गर्म पानी से जलाया, नुकीली छड़ों से गोदा, मेरी छिली हुई त्वचा पर काली मिर्च का पाउडर छिड़का, मुझे उल्टा लटकाया और कोड़े मारे। मेरे साथ क्या-क्या किया गया, मैं गिन भी नहीं सकता था। मेरे घावों में संक्रमण हो गया और मक्खियाँ उन पर बैठने के लिए मंडराती रहीं। मैं उल्टी करता रहा और नग्न अवस्था में मिट्टी के फर्श पर सिकुड़ गया। पिस्सू और चींटियाँ मुझे खाने के लिए धरती से निकल आईं। विक्रम बीच-बीच में आता और अपनी तलवार की नोक से मुझे गोदता, कभी-कभी उसे थोड़ा ज़्यादा गहरा घुसा देता, और लगातार मेरा मज़ाक उड़ाता रहता। फिर वह अपनी शैतानी हंसी हंसता। मैं बिना कुछ सोचे-समझे लेटा रहा। मैं सुन्न हो गया। शायद दो हफ्ते या दो साल बीत गए हों। मुझे पता नहीं था और मुझे परवाह भी नहीं थी। मैं बस मरना चाहता था।
फिर एक दिन अचानक मैंने जीने का फैसला किया। विक्रम या तो मुझसे ऊब गया था या बहुत व्यस्त था। मैं उससे अक्सर नहीं मिल पाती थी। पहरेदारों को मुझ पर दया आई और वे मेरी कोठरी में एक डॉक्टर को ले आए। उसने मेरे घावों की जाँच करते हुए मुझे और भी दर्द दिया। लेकिन कुछ समय बाद मेरे घाव भर गए और मेरा शरीर मजबूत हो गया। सुका नाम का एक पहरेदार मुझसे काफी घुलमिल गया। अपनी ड्यूटी के दौरान, जो आमतौर पर आधी रात को होती थी, वह द्वीप के दक्षिणी तट पर स्थित अपने गाँव, अपनी पत्नी और छह छोटे बच्चों के बारे में बातें करता था, जो उसके लौटने का इंतज़ार कर रहे थे, और उन कर्ज़ों के बारे में जो उसे चुकाने थे। मैं सुनती थी क्योंकि मैं भागना चाहती थी। मैं धैर्य से उसकी

कब्ज़े से पकड़ा और म्यान से बाहर निकाल लिया। मैंने मेज और दीवार के बीच की संकरी जगह से निकलने की कोशिश की लेकिन एक पहरेदार से टकरा गया। “सावधान रहना, मूर्ख!” उसने कहा। फिर मैंने उसे जमते हुए देखा और उसकी तलवार के म्यान से बाहर निकलने की आवाज़ सुनी। मुझे यकीन था कि वह इसका इस्तेमाल नहीं करेगा, लेकिन मैंने इंतज़ार नहीं किया। मैंने अपनी तलवार उसके गले में घुसा दी और गर्म खून मेरे चेहरे पर छलक गया। मैंने उसके कमज़ोर शरीर को नीचे धकेल दिया और गली से छनकर आ रही धुंधली रोशनी की ओर भागा। मैं पहरेदारों को एक-दूसरे से टकराते हुए सुन सकता था। किसी भी क्षण वे विशाल घंटी बजा देंगे और पूरा शहर एक विशालकाय जानवर की तरह मेरा पीछा करने लगेगा। घुड़सवार गश्ती दल पहरेदार घर पर इकट्ठा हो जाएंगे और विक्रमा आ जाएगा। मैं बाएँ और दाएँ देखता रहा, यह तय करने के लिए कि किस तरफ भागूँ। घंटी की तेज़ आवाज़ ने मेरी दुविधा को खत्म कर दिया और मैं बाईं ओर, महल की तरफ भागा।
मैं पागलों की तरह भागा। मुझे यह समझने में कुछ मिनट लगे कि मैं शाही राजमार्ग पर दौड़ रहा हूँ। किसी भी क्षण घुड़सवार रक्षकों से सामना हो सकता था और मुझे घोड़ों के खुरों की आवाज़ सुनाई दे रही थी। अचानक मैं दाईं ओर मुड़ा और एक गली में घुस गया। अँधेरा था और स्ट्रीट लैंप बुझ चुके थे। गली के सबसे दूर कोने पर एक आयताकार खिड़की से रोशनी की आकृतियाँ बन रही थीं। जैसे ही मैं उसकी ओर बढ़ा, मुझे बातचीत सुनाई दी। एक महिला एक ऐसे पुरुष से बहस कर रही थी जो स्पष्ट रूप से नशे में था। मैं घबरा गया था और मुझे छिपने की जगह चाहिए थी। अचानक दरवाजा ज़ोर से खुला और मैं जल्दी से अँधेरे में पीछे हट गया। अपने अंडरवियर में एक भारी-भरकम आदमी को बाहर धकेला गया। वह कुछ कदम लड़खड़ाया, एक लैंप पोस्ट से टकराया और नाले में औंधा गिर पड़ा। उसके पीछे गालियों की बौछार हुई। वह आदमी बिल्कुल नहीं हिला। यह निश्चित रूप से उसका घर नहीं था। कोई भी सभ्य महिला इस तरह गाली नहीं देगी। यह कोई नाच-गाना या वेश्यालय हो सकता था। इससे पहले कि वह दरवाजा पटक पाती, मैं अँधेरे से बाहर निकला और अपना पैर दरवाजे में डाल दिया।
वह एक पल के लिए चौंक गई। मैंने देखा कि वह लगभग अठारह या बीस वर्ष की थी, उसकी आँखें हल्के भूरे रंग की थीं और बाल सीधे और काले थे। उसका रंग किसी देव स्त्री या मिश्रित नस्ल की स्त्री जैसा था। उसने रेशमी ब्लाउज पहना था

अगले चार-पाँच घंटों तक नहीं मरेगा और मैं तब तक, या उसके मरने के बाद भी, उस पर काम करती रहूंगी। मैंने उसकी हड्डियाँ तोड़ दीं, उसके गुप्तांग काट दिए और फिर काली मिर्च का पाउडर लेकर उसके घावों पर छिड़क दिया। वह चीखता रहा, लेकिन मरा नहीं। आखिरकार, सूर्योदय से लगभग दो घंटे पहले, उसकी मृत्यु हो गई।
मैं खुश या संतुष्ट नहीं थी, यह काफी नहीं था, लेकिन मैंने कड़वे अनुभव से सीखा था कि जीवन आपको पूरी तरह संतुष्ट नहीं करता। इसलिए मैं रुकी और विक्रम को उठाया। मैंने सारे टुकड़े एक बोरी में डाले और माला को पुकारा। वह कमरे में आई, गंदगी देखी और बोरी पर उल्टी कर दी। 'इसे यही मिलना चाहिए था,' मैंने सोचा। 'एक वेश्या की उल्टी अपने सिर पर ढोते हुए अपनी कब्र तक जाओ, शैतान।' उसे समझाने में आधा घंटा लगा, लेकिन मुझे लगता है कि मुझे खुशी से चमकते देखकर वह खुश हुई थी।
हम बोरी को पीछे के बगीचे में ले गए और उसमें चीनी डालकर जला दिया, जिससे शरीर का कोई निशान न बचे। हमें उम्मीद थी कि मांस के जलने की तीखी गंध किसी को नहीं आएगी। मैं बाहर गया और दो आवारा कुत्तों को मारकर जलते हुए शव के साथ रख दिया। इससे कोई भी जिज्ञासु पड़ोसी दूर रहेगा। इस प्रकार महल के रक्षकों के प्रमुख विक्रम का अंत हुआ।
मैंने उसकी जेब से चाबियाँ निकाल ली थीं और मैं किले में घुसना चाहता था। मुझे यह काम मुखिया के लापता होने से पहले करना था। जैसे ही मैं किले की ओर बढ़ा, मुझे दूर से जगमगाता महल दिखाई दिया। मैं अब भी एक वांछित अपराधी था और इधर-उधर घूमना खतरनाक था, लेकिन मेरे पास कोई विकल्प नहीं था। किले में सुरक्षा अधिकारियों के लिए एक अलग प्रवेश द्वार था और मैंने उसी का इस्तेमाल करने का फैसला किया। मैंने विक्रम के कपड़े पहने थे, जो मुझे थोड़े बड़े थे। मैंने एक दबंग आदमी की तरह चलने की कोशिश की, लेकिन मुझे यकीन नहीं था कि मैं पहरेदारों को चकमा दे पाऊँगा। मैं एक पहरेदार के लिए बहुत सीधा-सादा था। जैसे ही मैं महल के पास पहुँचा, मैंने सुरक्षा द्वार के पास दो पहरेदारों को तैनात देखा, लेकिन मैं अधिकारपूर्ण ढंग से उनके पास से गुजरा और वे तुरंत सावधान हो गए। वे दूर क्षितिज की ओर देख रहे थे, जहाँ आकाश नारंगी रंग का हो रहा था। मैं अपने दिल की धड़कन सुन सकता था और डर रहा था कि पहरेदार इसे सुन लेंगे और मेरा चेहरा देख लेंगे। चाबी घुमाते

समय मेरे हाथ काँप रहे थे। कुछ नहीं हुआ। मेरे माथे से पसीने की बूँदें गिर रही थीं। भोर की किरणें पूर्वी आकाश को हल्के पीले रंग से रंग रही थीं। “मुझे करने दीजिए, महोदय।” लंबे कद के गार्ड ने मेरे हाथों से चाबियाँ लीं, दाहिनी चाबी डाली और घुमा दी। खनखनाहट के साथ दरवाजा खुला और मैं अंदर चला गया, गार्ड को धन्यवाद दिया और जल्दी से दरवाजा बंद कर दिया। मैंने अपने साथ लाए छोटे मिट्टी के बर्तन को देखा। इसे तैयार करने में मुझे दस दिन से अधिक का समय लगा था। मैंने मुखिया की वर्दी उतारी, उसका एक बंडल बनाया और उसे एक झाड़ी के नीचे रख दिया। फिर, अपने कपड़े पहनकर मैं शाही रसोई में चला गया, जहाँ मैंने पहले काम किया था। लगभग बीस रसोइये सेना के लिए खाना बनाने में व्यस्त थे। मुझे उम्मीद थी कि उन्हें मेरी गिरफ्तारी और हिरासत के बारे में पता नहीं चला होगा। शायद सुबोगा को पता चल गया होगा, क्योंकि विक्रमा उस मोटे रसोइये से बदला लेने का मौका नहीं छोड़ता। लेकिन रसोइये के अहंकार ने उसे अपने अधीनस्थों को बताने से रोक दिया होगा।
“अरे भद्रा, तुम कहाँ थे? सुबोगा ने बताया था कि तुम मुख्य भूमि पर अपने पैतृक गाँव गए थे। अभी लौटे हो?” रसोई के दूसरे छोर से कर्कम नाम के एक मुखर मछली काटने वाले ने चिल्लाकर कहा। सबकी निगाहें मेरी तरफ मुड़ गईं और कई लोग मुस्कुराए। मुझे मेरा वह दोस्त नहीं दिख रहा था जिसने मुझे यहाँ नौकरी दिलवाई थी।
“अगर आप अरसु को ढूंढ रहे हैं, तो उसे निकाल दिया गया है। मुझे लगता है किसी कप्तान ने उसके खाना बनाने की शिकायत की और उसे वापस मुख्य भूमि भेज दिया गया। सेना के ये भिखारी खुद को भगवान समझते हैं।” मेरे पेट में एक अजीब सी बेचैनी होने लगी। तो अरसु को मेरी मदद करने के लिए निकाल दिया गया। कमीने! मैं सुबोगा को दोष नहीं दे सकता था। आखिर उसे पहले अपना हिसाब चुकाना था। “तुम्हें पहले जाकर सुबोगा से मिलना होगा, नहीं तो वो गुस्सा हो जाएंगे,” बूढ़े मुप्रा ने कहा। “क्या यही उनका निर्देश है?” मैंने पूछा, यह जानते हुए कि सुबोगा को नहीं लगता था कि मैं कभी वापस आऊंगा।
"नहीं…"
"तो मैं अब आपके साथ आ जाऊंगी और नाश्ता परोसने के बाद उनसे मिलूंगी।"
मैं सब्जी काटने वाले हिस्से में दाखिल हुई और काम शुरू कर दिया। तीसरी बार कटी हुई सब्जियां चूल्हे के पास देने के बाद, मैंने मिट्टी का बर्तन निकाला और उसमें मौजूद सामग्री उबलते हुए चावल में डाल दी। सैनिकों को

अलग-अलग तरह की सब्ज़ियां पसंद थीं, लेकिन सबने चावल खाए। मैं इसी बात पर भरोसा कर रही थी। मैं बेसब्री से इंतज़ार कर रही थी। एक के बाद एक बैलगाड़ियां आती रहीं और चावल और तरह-तरह की सब्ज़ियों से भरी टोकरियां सेना के अलग-अलग हिस्सों में ले जाती रहीं। अगर जहाज़ राजधानी के पास तैनात होते, तो नावें उन्हें समुद्र में लंगर डाले जहाज़ों तक ले जातीं। कई चीज़ें गलत हो सकती थीं। थोड़ा सा चावल ज़मीन पर गिर सकता था, कोई कौआ उसे खाकर मर सकता था और मेरा राज़ खुल सकता था। या फिर, कुछ सैनिक मर सकते थे या बीमार पड़ सकते थे और सेना खाना बंद कर देती और जांच शुरू कर देती। मैं पकड़ी जाती। मैं प्रार्थना भी कर रही थी और साथ ही चिंतित भी। फिर भी, भाप से भरी रसोई में काम करते हुए मेरे चेहरे पर मुस्कान थी।

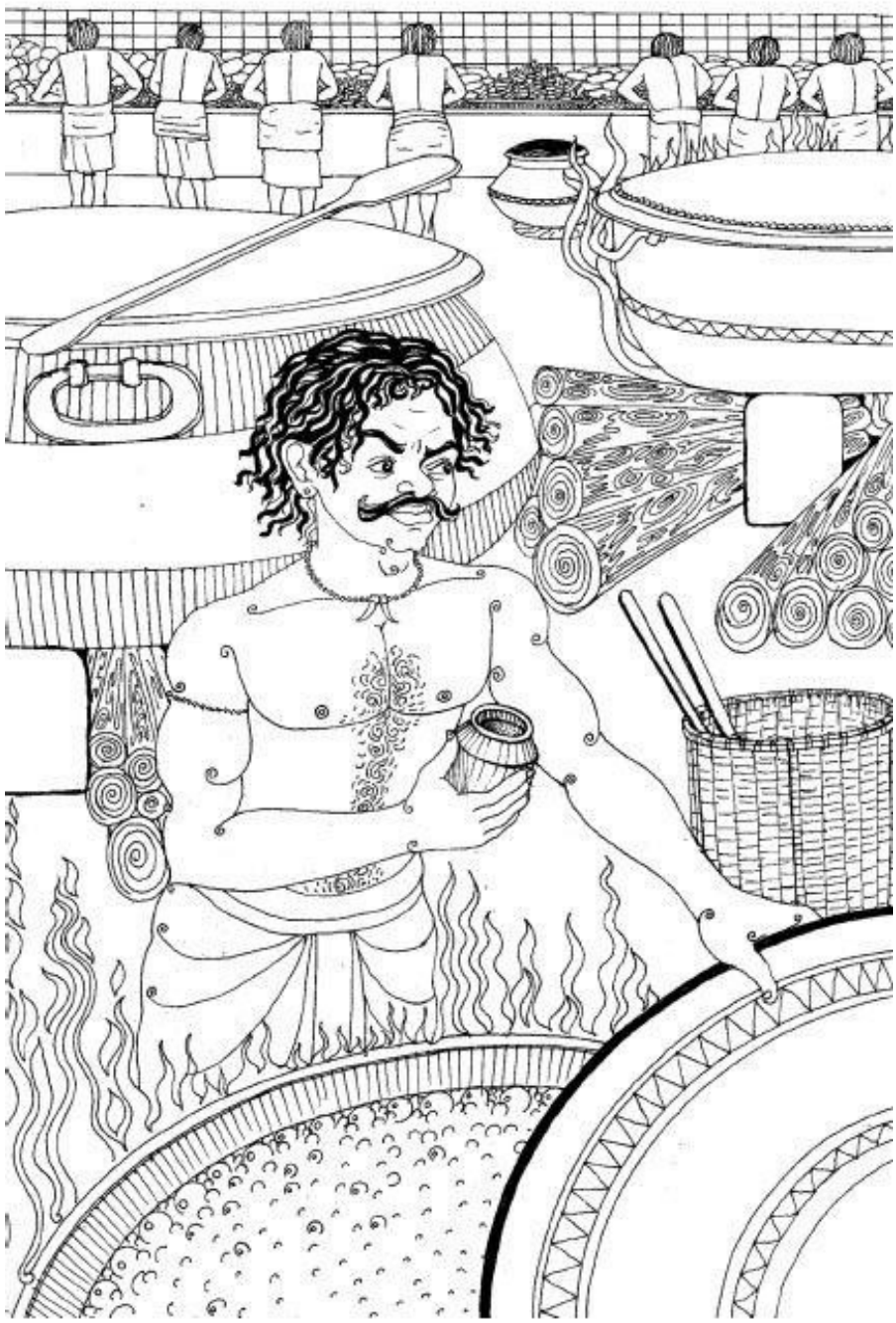

एक घंटे बाद, मुझे बाहर शोर सुनाई दिया। एक के बाद एक सैनिक लाए जा रहे थे, कुछ उल्टी कर रहे थे, कुछ मौत की पीड़ा से तड़प रहे थे, कुछ दर्द से कराह रहे थे। बैलगाड़ियाँ और घोड़े से खींची जाने वाली गाड़ियाँ शहर के कोने- कोने से लोगों को ला रही थीं और उन्हें महल के मैदान में लाद रही थीं ताकि

महल के डॉक्टर उनकी जाँच कर सकें। मैं बाहर भागा। किसी ने ध्यान नहीं दिया। मैं अपने स्वामी के पास पहुँचना चाहता था। मैं चाहता था कि मेरा राजा, रावण, आए और शहर पर कब्ज़ा कर ले। मैं गिरते हुए सैनिकों के बीच भागा जो उल्टी कर रहे थे, जिनके सिर नालियों में धँसे थे, कुछ अपना पेट पकड़े हुए थे, मौत की पीड़ा से तड़प रहे थे। मैंने एक सैनिक से घोड़े की लगाम छीन ली जो एक हाथ से घोड़े को पकड़े हुए था और दूसरे हाथ से उल्टी कर रहा था। मैंने उसे लात मारी, घोड़े पर सवार हुआ और सुबेला पहाड़ियों की ओर सरपट दौड़ पड़ा। आम नागरिक सड़कों पर इकट्ठा होने लगे, मरते हुए सैनिकों को देखने लगे। एक देश एक व्यापारी राजा के अत्याचार से मुक्त हो रहा था।
मैं उमड़ती भीड़ के बीच से सरपट दौड़ता हुआ उनके उत्पीड़कों को मरते देखने के लिए जा रहा था। सुबेला पहाड़ियों पर चढ़ते हुए मुझे याद आया कि मैंने अपने सफेद मुंडू का एक टुकड़ा फाड़कर एक छड़ी से बांध लिया है। मैं अपने ही साथियों की गोलीबारी में मरना नहीं चाहता था। जैसे ही मैं शिविर के पास पहुँचा, मैंने देखा कि तीरंदाज अपने राजा के चारों ओर घेरा बना रहे हैं। वे तीर चलाने के लिए तैयार थे और राजा की भौंहों की हल्की सी हरकत भी मुझे साही की तरह बना देती। मैंने अपनी गति धीमी कर दी और अपना सफेद झंडा लहराया। मेरी आँखों में आँसू भर आए। मेरे शब्द गले में अटक गए, “महाराज, यह नगर आपका है। मैंने कुबेरा की सेना का सफाया कर दिया है…”
“इसे गिरफ्तार करो।” उसकी आवाज़ ने मेरा दिल चकनाचूर कर दिया। मेरे नाखूनों को उखाड़े जाने के दृश्य मेरे दिमाग में घूमने लगे। मेरे शरीर के उन सभी हिस्सों में दर्द हो रहा था जहाँ विक्रमा ने अपनी कला का प्रदर्शन किया था। मैं घुटनों के बल गिर पड़ी और एक घायल भेड़िये की तरह चीखने लगी। जिस पक्ष को मैंने हमेशा अपना माना था, उसी पक्ष के सैनिक मुझे घेर लिया, जान से मारने के लिए तैयार।
“रावण, बस उसकी बात सुन लो।” मैंने देखा कि प्रहस्त की वृद्ध, कुलीन आकृति हमारी ओर आ रही है। मारीच भी सैनिकों को पीछे धकेलते हुए आया और मुझे गोद में उठा लिया। उसने मुझे गले लगाया और मेरी पीठ थपथपाई। मैं एक छोटे बच्चे की तरह सिसक रहा था और मैं मारीच के आँसुओं को अपनी पीठ की नंगी त्वचा पर भीगते हुए महसूस कर सकता था।

16 समुद्री डाकुओं की घेराबंदी
रावण
मुझे यह समझने में कुछ समय लगा कि भद्रा गद्दार नहीं बल्कि एक मित्र था। वही मेरा रक्षक था जिसका मुझे इंतज़ार था। नए जोश के साथ हम पहाड़ियों से नीचे उतरे और उतनी ही गरिमा के साथ आगे बढ़े जितनी कि भूखी-प्यासी सेना भी जुटा सकती है। जैसे ही हम राजगद्दी में पहुँचे, हमने देखा कि हज़ारों लोग दोनों ओर खड़े होकर हमारा उत्साहवर्धन कर रहे थे। मैं बेहद प्रसन्न था। यही वह विजय का क्षण था जिसका मुझे इंतज़ार था। अपार धन-दौलत मेरा इंतज़ार कर रही थी। इस राज्य के विशाल संसाधनों से मैं एक सेना खड़ी कर सकता था और फिर पूरे उपमहाद्वीप पर कब्ज़ा कर सकता था। इसके अलावा, मैं अपने सौतेले भाई को, जो उसका हक था, सड़क पर फेंक सकता था और पलक झपकते ही उसे कुछ सोने के सिक्के दे सकता था। मैं अपने पिता के चेहरे को देखकर उनका उपहास कर सकता था। मैं बहुत कुछ कर सकता था। मैं राजा और सम्राट था। लंका का सम्राट रावण, सुनने में अच्छा लगता था। भारत का सम्राट रावण, और भी बेहतर लगता था। क्या मैं कुछ ज़्यादा ही महत्वाकांक्षी हो रहा था? नहीं, नहीं, मैं हमेशा से आत्मविश्वासी था।
चारों ओर से जयकारे गूंज उठे और मैंने अपनी तलवार उठा ली। भीड़ पागल हो गई। खुशी की चीखें सुनाई दे रही थीं। लोग सड़कों पर नाच रहे थे। ढोल पूरे जोश से बज रहे थे और चिंगारियों और तुरहियों की गूंज आसमान में गूंज रही थी। मैं सपनों की दुनिया में था। तभी अचानक, मुझे कड़वाहट महसूस हुई। यह जीत खोखली थी। यह मुझे एक बदसूरत किसान, एक असभ्य, अनपढ़ ग्रामीण, एक धूर्त सर्प द्वारा थाली में परोसी गई थी। मैंने पीछे मुड़कर देखा तो वह अपने कंधों पर कुछ भारी बोझ उठाए खड़ा था। वह झुका हुआ था और मारीचा उसके भारी बोझ का एक कोना उठाकर उससे बराबरी का व्यवहार कर रहा था। मेरे मुंह में

आती है कि तुमने अपने भाई के धन को पाने के लिए छल का सहारा लिया, मेहनत और ईमानदारी को ठुकरा दिया। तुम एक योद्धा और एक भाई दोनों के रूप में असफल रहे हो। मैं तुम्हें राज्य सौंपता हूँ, लेकिन मुझे आशा है कि यदि मैं तुम्हें यह श्राप दूँ कि तुम्हारा शासन भी तुमसे अधिक चतुर व्यक्ति के विश्वासघात और धूर्तता से समाप्त हो, तो देवता मुझे क्षमा कर देंगे। अलविदा, भाई, और तुम्हारा शासन सुखमय और दीर्घायु हो—”
मैं कमरे में कूद पड़ा और बूढ़े आदमी के हाथों से कागज़ छीन लिया। “वह कहाँ है?” मैंने उस पर चिल्लाया। उसने एक मिनट तक मेरी आँखों में देखा और फिर दूर नीले समुद्र की ओर उंगली उठाई। वहाँ, कुबेर का सुनहरा झंडा आधा झुका हुआ था, और मैंने एक विशाल जहाज़ को बंदरगाह से निकलते देखा। मेरे मन में जीत का भ्रम टूट गया। मैं भद्रा को जान से मार देना चाहता था। भीड़ धीरे- धीरे छंटने लगी थी। मैंने उस जहाज़ को थकी हुई नज़रों से देखा। मैं उस कमीने को पाने से चूक गया था! अगले दिन मेरा लंका का राजा बनने वाला था। मैंने इस अवसर पर सात दिनों का एक सार्वजनिक उत्सव घोषित किया और अपने परिवार और बाकी लोगों को लाने के लिए एक नाव भेजी। हर कोई इसे भव्य बनाने में लगा हुआ था। मैंने भद्रा को ढूँढा, लेकिन वह भीड़ में कहीं छिपा हुआ था, जो मानो व्यवस्थाओं में योगदान दे रहे हों, लेकिन वास्तव में वे केवल प्रगति में बाधा डाल रहे थे।
मैं पहली मंजिल के बरामदे में बैठकर सूर्यास्त देख रहा था। पश्चिम की ओर फैला समुद्र बैंगनी रंग का था और पाल खोले जहाज बेहद खूबसूरत लग रहे थे। हवा ताज़गी भरी थी। नीचे बगीचे में हज़ारों पक्षी मधुर गीत गा रहे थे। लेकिन समुद्र में बहुत सारे जहाज थे। कोई बात मुझे परेशान कर रही थी। कुछ तो था...
“महाराज, वरुण का बेड़ा हमारे तट की ओर आ रहा है।” कुछ ही कदम दूर खड़े एक हांफते हुए दूत ने, जो पागल कुत्ते की तरह हांफ रहा था, मुझे मेरी सुस्ती भरी सोच से झकझोर कर रख दिया। पूरा महल थम सा गया। मेरा राज्याभिषेक तो गया! मैंने सभी उत्सवों को समाप्त करने का आदेश दिया। हमारी परिषद ने इस आपात स्थिति पर चर्चा करने के लिए बैठक की। हमारे पास नाममात्र की सेना थी। कुबेर अधिकांश नौसेना को अपने साथ ले गया था। बाकी को जहर दे दिया गया था, कई मर चुके थे, और कई और बुरी तरह बीमार थे। इसलिए समुद्री लुटेरों के राजा से लड़ने के लिए हमारे पास केवल 300 सैनिक ही बचे थे। मैंने बिना

किसी रक्तपात के राज्य प्राप्त किया था और यह बात मुझे परेशान कर रही थी। मैं वरुण से लड़ना चाहता था; मैं किसी से युद्ध करना चाहता था। मैं यह स्वीकार नहीं कर पा रहा था कि मैं बिना किसी वीरता के राजा बन गया। एक ऐसा राज्य जो धोखे से हारी हुई सेना के खून-पसीने से जीता गया था। घिनौना! जीत खोखली थी और मैं इसे वैध बनाना चाहता था। वरुण को कुचलने से मेरी प्रतिष्ठा बढ़ेगी और मेरा मन शांत होगा, या कम से कम यही मेरी आशा थी। लेकिन लड़ाई विनाशकारी होगी। वरुणा हमें निगल जाएगी और ज्वार की लहर की तरह द्वीप पर टूट पड़ेगी। यह ऐसा होगा मानो हम अपने हाथों से समुद्र को बांधने की कोशिश कर रहे हों।
प्रहस्त हमेशा की तरह अपने चिड़चिड़े स्वभाव में था। उसने तरह-तरह की असहज सच्चाइयाँ बोलीं और सबको बेचैन कर दिया। मुझे इस आदमी से नफ़रत होने लगी थी। वह मेरे विभीषण की तरह कोई आडंबरपूर्ण और रूढ़िवादी नहीं था, जिसकी उपदेशात्मक बातों को मैं नज़रअंदाज़ करना सीख चुका था। प्रहस्त की बातें तर्कसंगत थीं। उसका तर्क हमेशा स्पष्ट होता था। लेकिन वह ऐसे व्यवहार करता था मानो वह कोई सोचने-समझने वाली मशीन हो, जैसा महाबली ने मुझे बनाने की इच्छा जताई थी, एक चलता-फिरता दिमाग जिसमें काम करने के लिए ज़रूरी उपकरण लगे हों। प्रहस्त ने विवेक का तर्क दिया। उसने बताया कि समुद्री लुटेरे से लड़ने के लिए कोई पर्याप्त सेना नहीं थी। अगर वरुण अपने जहाज़ छोड़कर शहर में प्रवेश करता, तो बड़े पैमाने पर लूटपाट और आगज़नी, सामूहिक बलात्कार और नरसंहार होता। इसलिए एकमात्र रास्ता शांति की खरीददारी करना ही बचा था। बेशक शांति की कीमत चुकानी पड़ती, लेकिन युद्ध की कीमत उससे भी ज़्यादा होती। मैं चुप रहा। मैं बहुत कुछ कहना चाहता था, लेकिन कुछ भी सही नहीं लग रहा था। मैं जाकर किसी घटिया समुद्री लुटेरे के चरणों में नहीं गिरना चाहता था। अंततः, अनिच्छापूर्वक सहमति देने के बाद, प्रहस्त को वरुण से बातचीत करने का अधिकार दिया गया। मैं उनके साथ जाना चाहता था, लेकिन उन्होंने स्पष्ट रूप से इनकार कर दिया। मुझे उनका कठोर लहजा पसंद नहीं आया और मैंने उन्हें याद दिलाया कि मैं राजा हूँ।
“इसीलिए मैं नहीं चाहता कि तुम मेरे साथ आओ,” उसने कहा। “अगर वरुण ने तुम्हें बंधक बना लिया, तो लंका उसके हाथों में चली जाएगी।”
“अगर वरुण लंका पर कब्जा करना चाहता, तो अब तक कर चुका होता,” मैंने जवाब दिया। लेकिन वरुण दूरदर्शी था और उसे साल-दर-साल धन-संपत्ति का निरंतर

प्रवाह पसंद था, क्योंकि उसे त्वरित लूटपाट की बजाय फिरौती देना ज्यादा अच्छा लगता था। उसे फिरौती देकर हम उसके जाल में फंस रहे थे।
“तो फिर विकल्प क्या है?” प्रहस्त ने पूछा।
मेरे पास कोई जवाब नहीं था, इसलिए मैंने अनिच्छा से उसे जाने दिया। उसके चेहरे पर एक ऐसे माता-पिता की तरह स्नेह भरी मुस्कान थी, जिन्होंने अपने जिद्दी बच्चे को विदा कर दिया हो। जब प्रहस्त और उसके दो सहायकों को ले जा रही छोटी नाव दूर क्षितिज पर फैले जहाजों के बेड़े की ओर रवाना हुई, तो मैं गुस्से से आग बबूला हो गया।
मैं पूरी शाम बेचैन और चिड़चिड़ा रहा।
मुझे न तो उपलब्धि का एहसास हुआ, न ही इस विचार से खुशी हुई कि मैं
मैं जीवन में यहाँ तक आ चुका था। मैं दुनिया बदलना चाहता था। मैं चाहता था इसे रहने के लिए एक बेहतर जगह बनाने के लिए। मुझे डर था कि मैंने इसे कहीं खो दिया है।
मेरी यात्रा के दौरान कहीं न कहीं वे सभी सुनहरे सपने टूट गए।
चट्टान के किनारे बनी वह झोपड़ी, त्रिकोटा के महल तक। मेरे
हे भगवान! मैं गधे की तरह व्यवहार करने लगा। मैंने अपने नौकरों पर चिल्लाना शुरू कर दिया।
एक गरीब महिला नौकरानी के चेहरे पर गर्म पानी फेंक दिया।
मुझे लगा कि मेरे सूखे गले को इसकी ज़रूरत है और मैंने बिना मेरी अनुमति के इसे ले आया।
आदेशों का उल्लंघन करते हुए, मैंने एक अंगरक्षक को थप्पड़ मार दिया जो अपनी निर्धारित मुद्रा में खड़ा नहीं था। मैं एक जिद्दी दो साल के बच्चे की तरह व्यवहार कर रहा था। नहीं
किसी ने शिकायत करने की हिम्मत की, किसी ने पास आने की हिम्मत नहीं की। मुझे पता था कि मेरा
उनका व्यवहार अजीब था। मुझे उन लोगों को लात मारने का कोई अधिकार नहीं था जो
कुछ घंटे पहले तक वह मेरे लिए मरने को तैयार था। लेकिन अजीब बात यह है कि... बस, मुझे अपनी भूमिका निभाने में आनंद आया। राजा बनना अच्छा था।
भले ही इसका मकसद सिर्फ लोगों को सबक सिखाना ही क्यों न हो। नौकर शायद

यहां तक कि हारने की भी उम्मीद थी। यह स्वाभाविक था और कुबेरा ने यही सोचा था।
करने में अभयस्त।
एक नौकर मेरे कमरे में आया और मेरे सामने झुक गया। मैंने देखा कि उसके घुटने काँप रहे थे और मुझे अचानक उसका सिर ज़मीन पर लुढ़कते देखने की तीव्र इच्छा हुई। मेरे मन में ख्याल आया कि मैं अपनी तलवार के एक ही वार से उसका सिर धड़ से अलग कर दूँ और फिर ज़मीन पर गिरने से पहले ही अपने बाएँ पैर से उसे लात मार दूँ। बड़ी मुश्किल से मैंने खुद को रोका।
“महाराज, मायां आपसे मिलना चाहते हैं।” मैं ऐसे व्यक्ति से मिलना बिल्कुल नहीं चाहता था जो गिनती गिनकर और छड़ी से नाप-जोख करके अपना गुजारा करता हो। लेकिन इससे पहले कि मैं नौकर को जाने का आदेश दे पाता, मायां एक शरारती मुस्कान के साथ अंदर आ गए। वे उल्लू जैसे दिखते थे, मानो उनके पूर्वजों में कहीं दूर भेड़ रही हो, लेकिन मुझे लगा कि वे भेड़ से ज़्यादा उल्लू जैसे दिखते हैं। नौकर चुपचाप चला गया। मायां आकर मेरे सामने वाली कुर्सी पर बैठ गए। उन्होंने हॉल में चारों ओर देखा और संतुष्टि जताई। कभी-कभी, जब उनकी नज़र उस मूर्ख कुबेर द्वारा छत पर की गई भद्दी नक्काशी पर पड़ती, तो उनके माथे पर शिकन आ जाती थी। उन्होंने जीभ से एक आवाज़ निकाली और फिर नापसंदगी से सिर हिलाया। वे बड़बड़ाने लगे, “अरे रावण, उन्हें छत पर चूने का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए था। नमकीन समुद्री हवा से यह पीला पड़ जाता है। अगर उन्हें सावधानी बरतनी होती, तो प्लास्टर मिलाते समय नारियल का दूध और शहद मिलाना चाहिए था। आदर्श रूप से जो स्लेट मिली थी…”
मैं आश्चर्य से देख रहा था कि बूढ़ा, गंजा आदमी वास्तुकला और इंजीनियरिंग की विभिन्न तकनीकी बारीकियों के बारे में बंदर की तरह बड़बड़ा रहा था। और मैंने देखा कि उसने मुझे रावण कहकर पुकारा। मुझे बिल्कुल भी यह नहीं चाहिए था कि कोई बिन बुलाया गुरु मुझे इंजीनियरिंग का क्रैश कोर्स दे। मेरा मन कर रहा था कि उठकर उसकी गर्दन पकड़कर उसका सिर नीचे ज़मीन पर रगड़ दूं। लेकिन इसके बजाय, मैंने पूरी विनम्रता से पूछा, "आप यहाँ किस कारण से आए हैं?" मुझे उम्मीद थी कि मेरे लहजे से मेरी भावनाएं ज़ाहिर नहीं हुईं और मैंने उस आदरणीय बूढ़े प्रोफेसर और वास्तुकार से सही बात कही थी।
“मैं बस ऐसे ही यहाँ से गुज़र रहा था और सोचा आपसे थोड़ी बात कर लूँ।” पाँच मिनट बीत गए और मैं वहीं खड़ा रहा जबकि बूढ़ा आदमी खुद से कुछ बुदबुदा रहा

था, कुछ बातें लिख रहा था, बीच-बीच में विस्मयबोधक स्वर और पीड़ा या खुशी की चीखें निकाल रहा था। मैंने उसके साथ तरह-तरह की बातें होते हुए सोचीं, जैसे कोई विशाल खंभा उसके सिर पर गिर जाए, जैसे विष्णु शेर का मुखौटा पहने खंभे में छिपे अपने स्थान से कूद पड़ें; जैसे माया गिर जाए और उसके बचे हुए दो दाँत टूट जाएँ। तभी मुझे अचानक याद आया। उसे तो मुख्य भूमि पर मेरी माँ, बहन और अपनी उस कठोर बेटी के साथ होना चाहिए था। वह यहाँ कैसे पहुँच गया? इससे भी ज़्यादा ज़रूरी, मेरी माँ और बहन कहाँ थीं? क्या वे वरुण के चंगुल में फँस गई थीं? अगर मेरी माँ को कुछ भी हुआ होता, तो मैं वरुण को ज़िंदा जला देता, चाहे बातचीत हो या शांति समझौते, हमारी सापेक्षिक शक्ति और प्रहस्त की कूटनीति और उसकी पेचीदगियों का कोई भी जाल क्यों न हो।
“शिव, शिव, हव्वा, कूटनीति! तुमने उसे अभी तक नहीं बताया, माया भाई?” माँ की आवाज़ सुनकर मेरे पेट की घबराहट दूर हो गई। उन्हें शाही अंदाज़ में आते देख मुझे राहत मिली। ‘रावन, तुम्हारी माँ कब से कुलीन थीं?’ मैंने खुद से पूछा। पिछली बार जब मैंने उन्हें देखा था, तो वे फटे-पुराने कपड़ों में एक गरीब महिला थीं। अब वे शुद्ध सफेद सूती पोशाक में थीं। मेरी बहन उनके पीछे मुस्कुरा रही थी। मैंने उनके पीछे खड़ी उस सख्त महिला को भी देखा, जिसकी निगाहें स्थिर थीं, मेरी आँखों में देख रही थीं और पलकें नहीं झपका रही थीं। मुझमें अभी तक राजा जैसी कठोर, स्थिर निगाहें नहीं थीं। ‘अभ्यास करते रहो, रावण,’ मेरे भीतर किसी ने मेरा मज़ाक उड़ाया। उन्होंने मेरी आँखों में ऐसे देखा जैसे मेरा आकलन कर रही हों। मंदोदरी – इंजीनियर की बेटी! छड़ी की तरह सख्त, संकीर्ण सोच और नैतिक मूल्यों वाली, या कम से कम सूर्पनखा ने मुझे यही बताया था, फिर भी मूर्ति की तरह सुंदर।
“वरुण तो वाकई एक सज्जन व्यक्ति थे! यात्रा बेहद आनंददायक रही,” माँ ने उदासीनता से कहा।
मायन ने पीछे मुड़कर कहा, "जी हां, वाकई एक अद्भुत जहाज। कारीगरी लाजवाब थी।"
“भाई, चाचा जंबुमाली ने जो जर्जर नाव का इंतजाम किया था, वो यात्रा के बीच में ही लगभग डूब गई थी। वरुण के जहाज ने हमें बचाया। ओहो… वो तो बहुत ही शानदार जहाज था!” उसने मधुरता से कहा।
“तो जंबुमाली कहाँ है? और मेरे किसी को तुम्हें बुलाने के लिए भेजने से पहले ही तुम क्यों चले गए?”

“जम्बुमाली अभी भी वरुण के जहाज पर है। वरुण इस बात से बहुत प्रसन्न थे कि आपने लंका पर अधिकार कर लिया है। लोग कहते हैं कि वह एक समुद्री डाकू है, लेकिन वह एक अत्यंत शिष्ट व्यक्ति है और उसने मुझे आपके लिए एक लंबे और शानदार शासनकाल की शुभकामनाएँ देने के लिए कहा है।”
प्रहस्त उससे बात करने गया है।
“मैं राजनीति आप लोगों पर छोड़ता हूँ। बेटा, अब तुम्हारी शादी की उम्र हो गई है। कुछ लोग तो यह भी कहेंगे कि तुम सबसे योग्य कुंवारे हो। तो क्यों न शादी कर लो?”
“मुझे नहीं लगता कि मैं इसके लिए तैयार हूँ, माँ। मुझे एक देश पर शासन करना है। मैंने अभी शुरुआत ही की है,” मैंने विरोध किया।
“तो… मैंने मायान से पूछा कि क्या वह अपनी बेटी मंदोदरी का विवाह आपसे करने में प्रसन्न होंगे।”
मैं दंग रह गया। मैं किसी कठोर स्वभाव वाली स्त्री से शादी करना बिल्कुल नहीं चाहता था। मैंने उसकी ओर देखा, उसकी आँखों में न तो कोई शर्म थी, न ही कोई संकोच। उसकी निगाहें इतनी तीव्र थीं कि मैं चौंक गया। उसकी आँखें गहरी, तीखी और घनी पलकों वाली थीं। वह एक अजीब तरह से खूबसूरत थी। उसमें एक तरह का घमंड था। ऐसा लग रहा था मानो उसके पिता ने उसे बनाते समय छेनी और नापने वाले टेप का इस्तेमाल किया हो।
“सौभाग्य से वे मान गए, इसलिए मैंने ज्योतिषियों से शुभ अवसर का समय तय करने को कहा है।” माँ, आपने ज्योतिषियों से हर बात पूछने की इस विशुद्ध देववादी प्रथा को कब अपना लिया? “मुझे लगता है कि हमें आपको एक-दूसरे से परिचित होने के लिए थोड़ा समय देना चाहिए, तो क्या हम बड़े लोग बगीचे में चलें?”
इतना कहकर वह मेरी आँखों में देखे बिना बाहर चली गई। मेरी बहन होठों पर एक शरारती मुस्कान लिए वहीं रुकी रही। मेरा मन किया कि मैं भाग जाऊं, खिड़की से कूद जाऊं और गायब हो जाऊं। मंदोदरी, ये कैसा नाम था? माया, तुम इससे बेहतर नाम रख सकती थी। अगर तुम्हें अपनी बेटी को अच्छा नाम देना नहीं आता तो इंजीनियरिंग के चमत्कार करने का कोई फायदा नहीं। वह वहीं खड़ी रही, बिना हिले-डुले, उसकी आँखें मुझे भेद रही थीं। मुझे नग्नता का आभास हुआ। मैं बेचैन हो गई। 'अरे, क्या लड़की को घबराना नहीं चाहिए? खुद को संभालो,

रावण, तुम राजा हो, भले ही बदहजमी की क्रांति से ही सही,' मैंने खुद को याद दिलाया।
“मायन भाई, मुझे तुमसे कुछ ज़रूरी बात करनी है,” मेरी माँ ने बगीचे से आवाज़ लगाई। “और तुम सोर्पनाखा, जाओ और अपना सामान खोल लो। जल्दी करो।” “सुइज़ी, हाँ, बगीचे का लेआउट शानदार है, लेकिन सिंचाई प्रणाली में कुछ सुधार की ज़रूरत है…” मैं भयभीत होकर देखता रहा जब मायां कुछ बुदबुदाते हुए लड़खड़ाते हुए बाहर निकला। मेरी बहन ने मुझे अपनी जानी-पहचानी मुस्कान दी और लहराते कपड़ों में गायब हो गई। ‘जाओ मत। यहीं रहो बूढ़े, मैं तुम्हें पसंद करती हूँ, तुमसे प्यार करती हूँ। रुको और हम गंधर्व वास्तुकला या वानर मंदिर के डिज़ाइन की बारीकियों पर चर्चा करेंगे। यहीं रहो और हमें बात करने दो। तुम छत के पैटर्न के बारे में क्या कह रहे थे? जाओ मत; यहीं रहो और बात करो…’
“इस कमरे से नज़ारा बहुत अच्छा है,” उसने कहा। बाप जैसी बेटी।
“हाँ,” मैंने कहा। उसके बाद वह चुप रही और मैं कुछ कहने के लिए, बस एक शब्द, सोचने लगा। ‘तो रावण, तुम्हारा वैवाहिक जीवन ऐसे ही चलेगा? वह दीवार को घूरती रहेगी और तुम एक बेवकूफ की तरह इधर-उधर देखते रहोगे। क्या मैं उससे उसकी पढ़ाई के बारे में पूछूँ या उससे कोई गाना गाने को कहूँ? क्या वह कोई वाद्य यंत्र बजाती है? अगर वह बात करने से मना कर दे या मेरे सवालों का जवाब न दे तो क्या होगा? अगर मैंने कोई गलत सवाल पूछकर किसी जटिल सामाजिक रीति-रिवाज को तोड़ दिया तो क्या होगा?’ कमरा और भी घुटन भरा और उमस भरा होता जा रहा था। शादी करने का यह गलत तरीका था; अब तक मुझे इस बात का पूरा यकीन हो चुका था।
“अच्छा… मैंने ब्रह्मा से तीरंदाजी सीखी है और मुझे संगीत बहुत पसंद है। मेरा शौक बच्चों की बीमारियों का इलाज ढूंढना है और…” मैं हकलाते-हँसते रुक गया।
वह मुड़ी, अपनी भुजाएँ मोड़ीं और मेरी आँखों में स्थिर दृष्टि से देखने लगी। “मेरे पिता ने मुझे बताया कि तुम मेरे पति बनोगे और एक आज्ञाकारी पुत्री होने के नाते मैंने हाँ कर दी। मैं सभी देव वेदों को जानती हूँ और मैंने देव और असुर इतिहास का अध्ययन किया है। मैंने अपने पिता के मार्गदर्शन में इंजीनियरिंग और वास्तुकला का भी अध्ययन किया है। मैं

कविताएँ लिखती हूँ और चित्रकारी करती हूँ। मुझे शिकार करना पसंद है और मैं एक कुशल निशानेबाज हूँ।”
किसी ने मुझसे नहीं पूछा कि क्या मैं चलती-फिरती ज्ञानकोश से शादी करने के लिए तैयार हूँ। वह रुक गई और मैं यह देखने के लिए इंतज़ार करता रहा कि क्या कुछ और भी है। हो सकता है उसे चीनी आती हो, हो सकता है उसे जहाज़ बनाना भी आता हो, लेकिन वह विनम्रता दिखा रही थी और मुझे सब कुछ नहीं बता रही थी। पहली रात को वह शायद कहे, 'आश्चर्य! मुझे वास्तव में छंदग्यो उपनिषद को उल्टे क्रम में सुनाना आता है, लेकिन जब हम उस खूबसूरत कमरे में मिले थे, तो मैंने इसे गुप्त रखा था। लेकिन अब जब हम इतने करीब आ गए हैं, तो मुझे लगता है कि हमें कोई रहस्य नहीं रखना चाहिए। एक आज्ञाकारी पत्नी होने के नाते, मैं आपको यह भी बताऊँगी कि मुझे लगता है कि अथर्ववेद में कई आदिवासी और असुर तत्व हैं।'
मैं खुद को छोटा, असभ्य और नाकाबिल महसूस कर रहा था। मैं जानता था कि मैं एक अच्छा योद्धा हूँ, लेकिन रुद्रक के अधीन प्रशिक्षित 300 सैनिक भी उतने ही अच्छे थे। मैंने ब्रह्मा के अधीन प्रशिक्षण लिया था, लेकिन मैंने उस औपचारिक शिक्षा को काफी हद तक नकार दिया था। मैं चाहता था कि साक्षात्कार जल्दी समाप्त हो जाए। मैं उस संधि को लेकर चिंतित था जो प्रहस्त उस समुद्री डाकू के साथ करने वाला था और राजमुकुट की रकम चुकाने के बाद हम कैसे गुजारा करेंगे। तभी मुझे एक झटका लगा। मंदोदरी ने गाना शुरू किया। यह एक मधुर गीत था, महाबली के शासन की महिमा का बखान करता हुआ, और उसने इसे बहुत खूबसूरती से गाया। उसकी आवाज दमदार थी और लय एकदम सही थी, सही जगहों पर उतार-चढ़ाव हो रहा था। यह त्रुटिहीन था, लेकिन इसमें आत्मा का अभाव था। आत्मा के लिए यह बहुत ही परिपूर्ण था। इसमें कोई जोश नहीं था। मंदोदरी जो गा रही थी, उसका कोई वास्तविक अर्थ नहीं था, यह सिर्फ एक अभ्यास था, यांत्रिक, भावहीन, जोशहीन, लेकिन पूरी तरह से प्रस्तुत किया गया। कोई भी उस्ताद उसके गायन में कोई कमी नहीं निकाल सकता था, लेकिन कहीं न कहीं यह खटक रहा था।
जितनी अचानक मंदोदरी ने गाना शुरू किया था, उतनी ही अचानक उसने गाना बंद कर दिया। हमारे बीच एक अजीब सी खामोशी छा गई। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूं। क्या उसकी तारीफ करूं? उसके गाने की सराहना करूं? उसकी पीठ थपथपाकर उसकी कोमल त्वचा को महसूस करूं? या बस मुस्कुरा दूं? शायद मुझे भी बदले

में एक गाना गा देना चाहिए? मैं उलझन में थी और उदास खड़ी रही, किसी के आने और मुझे बचाने का इंतज़ार करती रही। पहले तो मैं अपने कमरे के पास से गुजरने वाले और मुझसे बात करने वाले सभी बेवकूफों से चिढ़ गई थी। अब मैं बेसब्री से प्रार्थना कर रही थी कि कोई, यहां तक कि बूढ़ा माया भी, आकर मुझे इस मुसीबत से बाहर निकाल दे।
“तो आपकी जान-पहचान हो गई। अगले रविवार को आपकी शादी है और मैंने अपने उन रिश्तेदारों को बुलाने के लिए दूत भेजे हैं जिनसे संपर्क हो सकता है। बाकी को बाद में बता देंगे।” माँ कमरे में आ चुकी थीं और इंजीनियर दरवाजे पर खड़ा खिड़की के पास लगे सजावटी खंभे को देखकर ताना मार रहा था। मेरी बहन दरवाजे पर खड़ी अपनी होने वाली भाभी को देखकर मुस्कुरा रही थी।
“लेकिन माँ—” अचानक कदमों की आहट से मेरी बात अधूरी रह गई और कमरा एकदम शांत हो गया। प्रहस्त जंबुमाली के साथ अंदर आए और मारीच उनके पीछे-पीछे आए। मुझे अचानक इस निजी मामले में दखल देने पर गुस्सा तो आया, लेकिन साथ ही राहत भी मिली। मेरी माँ को देखकर प्रहस्त ने हाथ जोड़कर प्रणाम किया और उनका हालचाल पूछा। मारीच सीधे मेरी माँ के पास गए और आँखों में शरारत भरी चमक के साथ बोले, “तो बहन, रिश्ता तय हो गया, है ना? और देखो, ये कैसे शरमा रहे हैं।”
मेरा मन कर रहा था कि उसका गला घोंट दूं। प्रहस्त समुद्र की ओर घूर रहा था और जंबुमाली को अचानक मायान से बातचीत शुरू करने का मौका मिल गया। मंदोदरी मुझे इतनी तीव्रता से घूर रही थी कि मैं हकलाने लगा। कुंभ और विभीषण दौड़ते हुए कमरे में आए और कुंभ ने मुझे गले लगा लिया, उसकी दो दिन की दाढ़ी मेरे चेहरे पर चुभ रही थी। उससे ताड़ी की बदबू आ रही थी।
"हम्म... अगर आपको कोई आपत्ति न हो, तो क्या आप महिलाएं कृपया हम बेचारे पुरुषों को राज्य के कुछ महत्वपूर्ण मामलों को निपटाने के लिए छोड़ देंगी?"
मेरी बहन मुंह फुलाकर बाहर चली गई, और मेरी माँ आकर मेरे माथे पर चुंबन देकर कमरे से बाहर चली गईं। मंदोदरी के होंठों के कोनों पर हल्की सी मुस्कान देखकर मैं शर्म से लाल हो गई। मय्यन वहीं रुका रहा, मानो वास्तुकला की प्रशंसा करना चाहता हो, लेकिन मारीचा ने प्रोफेसर को कमरे से बाहर ले जाने में ऐसा स्नेह दिखाया जैसा केवल वही दिखा सकता था। हम वहाँ बैठे रहे, सन्नाटा गहराता गया, और अंत में जब मुझे लगा कि प्रहस्त पागल

होकर अश्लील गाने गाने लगेगा, तभी मारीचा आँखें घुमाते और सिर हिलाते हुए अंदर आया।
“अगर तुम्हारी ये शरारतें खत्म हो गई हैं, मारीच, तो चलो कुछ काम शुरू करते हैं,” प्रहस्त के बदला लेने की कोशिश पर मारीच मुस्कुराया। “ये सौदा बहुत मुश्किल था। ये समुद्री डाकू बहुत चालाक सौदागर है। मुझे पता है तुम्हें ये पसंद नहीं आएगा, लेकिन हमें अपनी ताकत बढ़ाने के लिए समय चाहिए।” प्रहस्त रुका। मेरा चेहरा पीला पड़ गया। मैं शर्तें सुनना नहीं चाहता था। मैं युद्ध के लिए उतावला था। लेकिन मेरी बुद्धि ने मुझे बताया कि बेवजह की वीरता मुझे कहीं नहीं ले जाएगी। कई असुर इसी तरह मारे गए और अब तो वे सिर्फ लोकगीतों में ही जीवित हैं।
मैंने पूछा, "और आपने क्या स्वीकार किया है?"
"आरोपात्मक लहजे को बाद के लिए बचाकर रखें। आप एक परिषद से बात कर रहे हैं और मुझे आपके द्वारा उचित समझे जाने वाले तरीके से बातचीत करने के लिए पूरी तरह से अधिकृत किया गया था।"
“अरे बकवास! क्या तुम भूल गए हो कि अब कोई परिषद नहीं है? मैं राजा हूँ और तुम मेरे प्रधानमंत्री हो। अगर मैं तुमसे सवाल पूछूँ, तो तुम अपनी श्रेष्ठ शिक्षा का प्रदर्शन किए बिना जवाब दो।” मैं क्रोध से काँप रहा था और मैंने अपनी तलवार निकाल ली थी। प्रहस्त वहाँ शांत और अविचलित खड़ा था, एक हाथ तलवार की मूठ पर टिका हुआ था। ऐसा लग रहा था जैसे वह मुझे उकसा रहा हो, मुझे कोई कदम उठाने की चुनौती दे रहा हो।
“कृपया एक-दूसरे के साथ शालीनता से पेश आएं,” जंबुमाली ने कहा। मारीचा मुझे घूर रहा था, उसके मुस्कुराते हुए चेहरे पर एक भयंकर आक्रोश छा गया था। ‘मैं अपने पिता की उम्र के व्यक्ति से ऐसी बातें क्यों कह रहा हूँ?’ मैंने धीरे से तलवार वापस रख दी और अपनी कुर्सी पर बैठ गया। ‘रावन, तुम्हारा सिंहासन, तुम्हारा सिंहासन,’ मैंने खुद को याद दिलाया।
प्रहस्त भी बैठ गए और जब उन्होंने बोलना शुरू किया तो मैंने देखा कि उनमें वह धार्मिकता का भाव गायब हो गया था जो मुझे हमेशा चिढ़ाता था। “दो लाख सोने के सिक्के, हर तीसरे महीने 20,000 सोने के सिक्के, हमारे सात सर्वश्रेष्ठ जहाज, हमारे कुल काली मिर्च उत्पादन का एक तिहाई, इलायची और लौंग का पांचवां हिस्सा, और हमारे बंदरगाहों से सीमा शुल्क के रूप में एकत्र किए जाने वाले राजस्व का एक चौथाई हिस्सा।”

प्रहस्त द्वारा हस्ताक्षरित दस्तावेज़ पढ़ते समय कमरे में पूर्ण सन्नाटा छा गया। मैंने मारीच को मन ही मन कुछ अपशब्द कहते सुना और कुंभा बेचैनी से अपने पैर हिलाने लगा।
“इन छोटे-मोटे एहसानों के बदले हमें क्या मिलता है?” मुझे उम्मीद थी कि मेरे व्यंग्य से उस बूढ़े सनकी की तरफ से कोई और प्रतिक्रिया नहीं निकलेगी। ‘केवल तुम ही प्रतिक्रिया देते हो, रावण, केवल तुम ही पागलों की तरह बड़बड़ाते हो। प्रहस्त, वह तो एक कुलीन व्यक्ति है।’ मैंने अपनी कुर्सी के आर्मरेस्ट को इतनी ज़ोर से पकड़ा कि उनमें दर्द होने लगा। “महामहिम, हम कुछ भी मांगने की स्थिति में नहीं हैं।” प्रहस्त ने शुष्क, सपाट स्वर में कहा, “उन्होंने हमें हर तरह की ताकतों से सुरक्षा प्रदान करने का वादा किया था। उन्होंने समुद्री डाकुओं से समुद्र को सुरक्षित रखने के लिए उसकी निगरानी करने का भी वादा किया था।”
इस टिप्पणी के बाद उपहास भरी हंसी गूंजी और प्रहस्त ने भी मुस्कुराते हुए अपनी बात जारी रखी। “दो लाख सोने के सिक्के मिलते ही वह घेराबंदी हटा लेगा। उसने शहर पर हमला न करने का वादा किया है। सिक्के उसके चुने हुए जहाजों तक पहुंचाने होंगे। उसके प्रतिनिधि हमारे गोदामों और अन्न भंडारों का निरीक्षण करके वर्तमान उत्पादन का आकलन करेंगे और हमारे लेखाकारों को हिस्सेदारी की गणना में सहायता करेंगे।”
एक बार फिर बेचैनी भरी खामोशी छा गई। हर कोई मन ही मन समझौते का हिसाब लगा रहा था। हममें से किसी को भी यकीन नहीं था कि हमें कितना देना होगा। हमें इस बात का कोई अंदाजा नहीं था कि राज्य के खजाने में कितना पैसा है, हमारे गोदामों और अन्न भंडारों में कितना भंडार है, कर वसूली कितनी है, टोल वसूली कितनी है, या और कुछ भी। हम योद्धा ऐसी बातों को तुच्छ समझते थे, इन्हें लेखाकारों जैसे तुच्छ प्राणियों के लिए छोड़ देना ही बेहतर समझते थे। जंबुमाली को छोड़कर कमरे में कोई भी अनुभवी प्रशासक मौजूद नहीं था। मुझे नहीं पता था कि किसी देश पर शासन करना उसे जीतने से भी ज्यादा कठिन होगा। मुझे यह भी नहीं पता था कि प्रहस्त ने हमारी संपत्ति के बारे में बिना कुछ जाने ही सारी शर्तें क्यों मान लीं।
“आप सोच रहे होंगे कि मैंने यह सब बातचीत बिना यह जाने क्यों की कि हमारे पास वास्तव में कितना धन है। यह मुश्किल था। मैंने मान लिया था कि वरुण के सरकार में जासूस थे, जो कुबेर के समय में भी हमारे देश की अर्थव्यवस्था के

बारे में उसे नियमित रूप से जानकारी देते रहते थे। इसलिए मैंने सोचा कि वरुण हमें एक ऐसा प्रस्ताव देगा जो कड़ा तो होगा लेकिन सहने योग्य होगा।
मैंने वहीं से बातचीत शुरू की।” यह कहते हुए प्रहस्त ने ऊपर देखा।
“तो आपने मान लिया था कि समुद्री डाकू इतना उदार होगा कि हमें उचित समझौता दे देगा।” कुंभा, प्रहस्त को उकसा रहा था।
“मुझे लगता है कि इन परिस्थितियों में कोई भी इससे बेहतर कुछ नहीं कर सकता था। अब आइए समुद्री डाकू को मनाने का काम शुरू करें,” प्रहस्त के कुछ कहने से पहले ही जंबुमाली ने बीच में दखल दिया, और मैंने उसे कृतज्ञता भरी नज़र से देखा और फिर उठकर बैठक समाप्त कर दी।
प्रहस्त लंबे-लंबे कदमों से मेरी ओर बढ़ा। उसने फुसफुसाते हुए पूछा, “रावण, क्या मैं तुम्हारे राज्याभिषेक की व्यवस्था करूँ? क्या तुम इसे अपनी शादी के साथ ही करना चाहोगे?”
‘और इस प्रक्रिया में कुछ खर्चे भी बच जाएंगे?’ मैंने सहमति में सिर हिलाया।
“महामहिम, हम बैठकर अपनी स्थिति का अध्ययन करेंगे,” उसने ऊँची आवाज़ में कहा और बातचीत रुक गई। “शायद आप थके हुए महसूस कर रहे हों तो विश्राम करना चाहेंगे, महाराज।”
“नहीं, मैं आपके साथ चलूँगा। खजाने के प्रभारी अधिकारियों को बुलाओ।” मैंने कहा और मारिचा को मुस्कुराते हुए देखा।

17 मीठी जुबान वाला I नोट
भद्र
मैं रसोई के पास बैठी थी, किसी के आने और मुझे मेरे स्वामी के पास ले जाने का इंतज़ार कर रही थी। दिन बीत गया, लोग झुंड में गलियों में घूम रहे थे, आपस में बातें कर रहे थे, राजनीति और अपने भविष्य पर चर्चा कर रहे थे। मैं भी भीड़ में शामिल होकर आम आदमी के मिजाज के बारे में जानना चाहती थी। लेकिन मुझे हिलने से डर लग रहा था, कहीं ऐसा न हो कि मैं उस दूत को न चूक जाऊं जो मुझे मेरे स्वामी के पास ले जाने ज़रूर आएगा। मेरे स्वामी स्वयं मुझसे मिलने आने वाले थे। वे मुझे गले लगाएंगे और मेरे किए गए सभी कामों के लिए धन्यवाद देंगे। मैं कहूंगी कि यह सब शिव की कृपा थी। कि मैं तो बस उनके खेल में एक छोटी सी मोहर थी। मैं सपने देखती रही, पर कोई नहीं आया। मैं वहीं बैठी रही, पसीने से मेरे चेहरे पर दो धारियाँ बह रही थीं और मेरा सीना भीग रहा था। फिर भी मेरी हिम्मत नहीं हुई। मेरे राजा मुझे भूल चुके थे। मुझे विश्वास नहीं हो रहा था। नहीं, वे व्यस्त थे, वे अपने परिवार के सदस्यों के जाने का इंतज़ार कर रहे थे और फिर मुझे बुलाएंगे। लेकिन शाम तक मुझे इतना यकीन नहीं रहा। मुझे जाने और अपना चेहरा दिखाने से डर लग रहा था। मैं कौन थी? एक तुच्छ प्राणी, एक छोटा सा कीड़ा। मुझे खुद पर थूकने का मन कर रहा था।
इंतज़ार करने का कोई फ़ायदा नहीं था। मुझे धोखा महसूस हुआ। मैंने अपनी जान जोखिम में डाली, यातनाएँ सहीं, और अब मैं यहाँ भुला दिया गया, जैसे इस्तेमाल के बाद फेंक दिया गया करी पत्ता। मैंने इस विचार को मन से निकालने की कोशिश की और बिना किसी दिशा के चलने लगा। मैंने सुना था कि वरुण के बेड़े ने द्वीप को घेर लिया है और युद्ध होने वाला है। तो क्या हुआ? मुझे इससे कोई लेना-देना नहीं था। राजकुमारों और योद्धाओं को इसकी चिंता

करने दो। मुझे बस एक घूंट पीना था। अचानक मुझे माला याद आ गई। हो सकता है कि वह अब किसी और के साथ सो रही हो। अगर ऐसा है, तो मैं उसे घसीटकर, लात मारते और चिल्लाते हुए, बाहर फेंक दूँगा।
गलियों के भूलभुलैया में खो जाने के कारण मैं काफी रात हो चुकी थी जब मुझे उसका घर मिला। उस समय तक मैं काफी नशे में था, रास्ते में तीन ताड़ी की दुकानों पर रुक चुका था। दरवाजे की चटाई पर एक बीमार कुत्ता सो रहा था और मैंने उसे अपनी पूरी ताकत और गुस्से से लात मारी। वह दर्द से कराहता हुआ और मुझे कुत्तों की भाषा में कोसता हुआ रात के अंधेरे में गायब हो गया। मैंने दरवाजा पीट-पीट कर बंद कर दिया और गालियों की बौछार कर दी। जब तक उसने दरवाजा खोला, तब तक मैं उसके परदादा-परदादी की आदतों के बारे में सब कुछ बता चुका था। आस-पड़ोस के घरों से कुछ लोग बाहर झाँक रहे थे और मैंने उन्हें भी खूब खरी-खोटी सुनाई।
माला ने दरवाजा खोला और मेरे सिर पर बाल्टी भर पानी डाल दिया। पानी की ठंडक से मैं सुन्न हो गया और उसने मुझे मेरी कमर की पट्टी से खींचकर अंदर ले गई, मैं पूरी तरह भीगा हुआ था। जब तक हम उसके बिस्तर तक पहुँचे, मैं बच्चे की तरह रो रहा था और वह बेमतलब के शब्द बुदबुदा रही थी। मैं अपना सिर उसकी धड़कती हुई छाती में दबाकर सो गया, उसकी उंगलियाँ मेरे बालों में घूम रही थीं और उसकी धड़कन मेरे खर्राटों के साथ ताल मिला रही थी। बाद में, जब सुबह-सुबह महल की घंटियाँ दो बार बजीं, तो मैं जागा और उसकी ओर बढ़ा। मैं फिर से सो गया, संतुष्ट होकर। मैं बहुत देर बाद हैंगओवर के साथ जागा। सड़क पर विक्रेता चिल्ला रहे थे, ठेले पैदल चलने वालों और बैलगाड़ियों के बीच से टेढ़े-मेढ़े तरीके से निकल रहे थे। खुली खिड़की से पास की दुकान से मिठाई की खुशबू अंदर आई और मैंने उल्टी कर दी। मैंने देखा कि मला के बिस्तर की महंगी रेशमी चादरों पर पानी के धब्बे डिज़ाइन बना रहे थे। फिर वह मुझे कोसते हुए, एक बाल्टी, एक लकड़ी का मग और एक नारियल का ब्रश लेकर आई। मेरे सिर में लाखों सुइयाँ चुभ गईं।
मैं पूरे दिन सोता रहा, बस कुछ मिनटों के लिए मुझे जबरदस्ती दलिया खिलाया गया। आधी रात के करीब मैं जागा तो देखा कि माला मेरे बगल में नग्न अवस्था में एक बच्चे की तरह सो रही थी। मैंने उसे सहलाया और धीरे-धीरे उसे जगाने में कामयाब हुआ। फिर, अचानक इतनी ज़ोर से कि वह चीख पड़ी, मैंने उसके साथ संबंध बनाया। मेरे दिमाग में कई दृश्य उमड़ आए। विक्रम द्वारा दी गई

यातनाओं के दृश्य, पूर्णा नदी के झरने की गर्जना, मेरे मुंह में खून का स्वाद, रावण की आंखें, वह कृतघ्न, सब मिलकर एक ऐसा दृश्य बना रहे थे जो एक ही समय में डरावना और आकर्षक था। मुझे शर्म आ रही थी कि मेरा अंग सिकुड़ गया था और एक सड़े हुए पुराने केले की तरह बेजान पड़ा था। माला उठ बैठी। मावांड ने मुझे खुलेआम तिरस्कार, दया और भय से देखा। मैंने फिर से उसके साथ संबंध बनाने की कोशिश की, लेकिन उसने मुझे धक्का देकर दूर कर दिया और खड़ी हो गई। मुझे अपनी नग्नता, अपनी नपुंसकता पर शर्म आई और मैं अपने गुप्तांग को ढँकते हुए कमरे से बाहर भाग गया।
शहर के बाहरी इलाके में कहीं, एक अकेला सियार दर्द भरी चीख मार रहा था और मेरा मन किया कि मैं भी उसके साथ चीखूँ। हे नपुंसक, निकम्मे कमीने! भद्रा, हे मूर्ख! तू राजाओं के साथ भोजन करना चाहता था और इतिहास बदलना चाहता था; तू अपनी जाति के लिए, उस जीवन के लिए जो तू पूर्णा नदी के किनारे हमेशा के लिए खो बैठा, अपना प्राण बलिदान करना चाहता था। अब तेरा यही अवशेष बचा है, भुला दिया गया और त्याग दिया गया।
“अंदर आ जाओ।” उसकी आवाज़ मधुर थी और उंगलियाँ मेरे बालों में फिर रही थीं। मैं धीरे से खड़ी हुई, अपने नग्न शरीर से बेपरवाह, इस बात की परवाह किए बिना कि कोई मुझे देख रहा है या नहीं, और एक आज्ञाकारी पिल्ले की तरह उसके घर में चली गई।
तीन दिन बाद जब मैं खोए हुए कुत्ते की तरह उसके जीवन में फिर से लौटा, तो उसने सुझाव दिया कि हम स्थानीय सब्जी मंडी चलें। हम समुद्र की ओर, मछली, सड़ती सब्जियों, गोबर, तेल में तल रही मिठाइयों और नाश्तों की गंध की ओर चल पड़े। ढलते सूरज की रोशनी से उसके चिकने गाल चमकीले नारंगी रंग के हो गए और बोलते समय उसकी आँखों में चमक आ गई। उसकी नाक की नोक पर पसीने की एक छोटी सी बूँद धीरे से हिल रही थी। मेरा मन किया कि मैं उसे वहीं चाट लूँ। मेरी नज़रें उसकी आँखों, माथे, बालों, छोटी सीधी नाक, भरे हुए चुंबन योग्य होंठों, उसके गोल स्तनों के बीच की दरार और उससे नीचे, उसकी खुली नाभि पर टिक गईं। मैंने उसका हाथ थाम लिया और उसकी मुस्कुराती आँखों में देखा और उसी क्षण मुझे पता चल गया कि मुझे उससे प्यार हो गया है।
मैं टोकरी पकड़े उसके पीछे खड़ा था, जबकि वह फेरीवालों से मोलभाव कर रही थी। अपने ख्यालों में खोया हुआ, मैं बाज़ार में लोगों के तर्कों और विचारों के निहितार्थों को समझ ही नहीं पाया। जैसे ही हम वापस लौटे,

खुशनुमा और सहज रोमांटिक माहौल गायब हो गया क्योंकि वह कीमतों को लेकर बड़बड़ाने लगी। मुझे गुस्सा आया और मैंने उसे चुप रहने को कहा। उसने आश्चर्यजनक क्रोध से प्रतिक्रिया दी और मुझे और दुनिया के हर आदमी को कोसने लगी, “राजनीति, राजनीति, तुम लोग छोटी-मोटी राजनीति और झगड़ों से हमारी जिंदगी बर्बाद करना क्यों नहीं बंद कर देते? एक दर्जन केले बारह सोने के हैं। उसने हमें लूटा है लेकिन कहता है कि कीमतें फिर से बढ़ेंगी। नए राजा ने राजमार्ग पर और कर और टोल लगा दिए हैं जिससे लागत और बढ़ जाती है। धिक्कार है नेताओं पर, धिक्कार है राजा पर।”
“चुप रहो माला, तुम राजा के बारे में इस तरह बात नहीं कर सकती। अगर किसी ने सुन लिया तो हमारी शिकायत हो सकती है।” कुछ लोगों ने सिर घुमाकर हमारी तरफ देखा। मुझे यह देखकर अच्छा नहीं लगा और डर भी लगा। मैं राजद्रोह के आरोप में गिरफ्तार नहीं होना चाहती थी।
“चुप रहो। मुझे किसी राजा की परवाह नहीं। सब एक जैसे हैं। नए राजा में ऐसा क्या खास है? देव, असुर, गंधर्व, मिश्रित जाति के लोग, सब एक ही हैं। उन्हें बस यही चिंता रहती है कि वे गद्दी पर कैसे बैठें और जनता को कैसे धिक्कारें। वे बड़ी-बड़ी बातें करते हैं, जैसे असुरों को मुक्ति दिलाना, देवों से बदला लेना, संस्कृति का संरक्षण करना, और ये सब बकवास। लेकिन अंत में बात एक ही है। जनता को धिक्कारना, महल में ऐशो-आराम की जिंदगी जीना और सत्ता से चिपके रहना।”
“माला, तुम क्या समझती हो? क्या तुम्हें नहीं पता कि घेराबंदी चल रही है?” “कैसी घेराबंदी? तुम्हारा राजा वरुण को उसकी औकात क्यों नहीं दिखा सकता? तुम्हारा रावण तो कायर है। उसे तो राज्य इसलिए मिला क्योंकि किसी ने कुबेर के सैनिकों को ज़हर दे दिया था। रीढ़विहीन कायर – यही तो तुम्हारे लोग हैं। वो एक खूंखार समुद्री डाकू से युद्ध करने को तैयार नहीं है और खुद को असुरों का रक्षक बताता है। हे भगवान, अगर रावण ही असुर जाति के आज के नायकों का उदाहरण है तो असुरों की मदद करो। राजा तो बस एक रीढ़विहीन बदमाश है।”
उसकी हताशा और मोहभंग की तीव्रता विचलित करने वाली थी। विषहरण की उसकी बात सुनकर मैं सहम गया। मुझे नहीं पता था कि इससे रावण की विजय पर इतना बड़ा कलंक लगेगा, लेकिन मुझे यकीन था कि अगर मुझे पता भी होता तो मैं भी वही करता। रावण के कुबेर से बहादुरी से लड़ने और वीरतापूर्वक शहीद होने का

क्या फायदा? गौरवशाली शहादत और धोखे से भरी जीत में से मैं हमेशा दूसरा ही चुनता। बहुत से असुर बहादुर शहीद बन चुके थे और उनकी सेना में एक भद्र के जुड़ने या हटने से कोई फर्क नहीं पड़ता। मुझे विष्णु वंश के लिए थोड़ी सी प्रशंसा थी, उस धूर्त वंश के लिए जिसने कई महान देव सेनापतियों को जन्म दिया था। उन्होंने छल को दिव्य स्तर तक पहुंचा दिया था।
हम एक अजीब सी खामोशी में घर लौटे। मुझे हैरानी हो रही थी कि मैंने उसके घर को अपना घर क्यों समझा था। कुछ समय पहले ही मुझे एहसास हुआ था कि उसके प्रति मेरा आकर्षण सिर्फ शारीरिक नहीं था। और न ही मुझे पता था कि वह क्या सोचती थी। शायद, मैं उन सैकड़ों प्रेमियों में से एक था जो अक्सर उसके घर आते-जाते थे। मुझे जलन हो रही थी। मैं उसे पूरी तरह पाना चाहता था। वह एक वेश्या थी, लेकिन इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता था। मैं ऐसी नैतिक बंदिशों से परे था। मुझे यकीन था कि मैं इतना खुले विचारों वाला था कि ऐसी छोटी-मोटी बातों को नज़रअंदाज़ कर सकता था।
जैसे ही हम मोड़ मुड़े, मैंने देखा कि एक धनी व्यक्ति उसके घर के आंगन में अपने घोड़े के अयाल सहला रहा था। जैसे ही हम पास पहुँचे, वह हमारी ओर मुड़ा और मुस्कुराया। मैंने देखा कि माला का चेहरा खुशी से चमक उठा और पलक झपकते ही उसने मुझे अपनी टोकरी थमा दी और खुशी से चिल्लाते हुए उस आदमी के आलिंगन में दौड़ पड़ी। मैं बढ़ते अंधेरे में वहीं खड़ा रहा, हिलने-डुलने की भी हिम्मत नहीं थी, क्योंकि वह जोड़ा बेशर्मी से एक-दूसरे को चूम रहा था। मैं अभी भी सब्जियों से भरे हाथों के साथ वहीं खड़ा था, जब वे अपने घर में गए और दरवाजा बंद कर लिया। मैंने देखा कि घोड़ा मेरी ओर देखकर चिढ़ा रहा था। मुझे इतना गुस्सा आया जितना मुझे जीवन में कभी नहीं आया था। मैं दरवाजा तोड़कर उस आदमी को घर से बाहर घसीटना चाहता था, उसका सिर सीढ़ियों पर पटकना चाहता था। मैं माला को मेरे सामने इतनी बेशर्मी से पेश आने के लिए बुरी तरह पीटना चाहता था।
जैसे ही मेरे मन में खालीपन छा गया, मैंने सोचा कि मैं कितना मूर्ख दिख रहा हूँगा, सड़क के बीचोंबीच, एक वेश्यालय के सामने, दोनों हाथों में सब्ज़ियाँ लिए खड़ा। मुझे आत्म-दया की लहर महसूस हुई और जीवन की नाइंसाफी पर गुस्सा और निराशा छा गई। मैंने कल्पना की कि घोड़ा मुझे फिर से देख रहा है, उसके जबड़े तिरस्कार भरे भाव से घास चबा रहे हैं। मैं उसकी ओर बढ़ा और उसके सामने सब्ज़ियाँ बिखेर दीं। मैंने संतुष्टि से देखा कि वह उन्हें

बड़े चाव से चबाने लगा। मैं खुद को छोटा, नीच, मूर्ख और हास्यास्पद महसूस कर रहा था, जैसे कोई ठुकराया हुआ प्रेमी अपनी निराशा को व्यक्त कर रहा हो। मैं बाज़ार की ओर चल पड़ा। कर्फ्यू हट चुका था और कुबेर के समय जैसी पाबंदियाँ नहीं थीं। कोई भी आज़ादी से घूम सकता था। जैसे ही मैं बाज़ार के पास पहुँचा, मुझे अचानक शराब की ज़रूरत महसूस हुई। मैं नशे में धुत होना चाहता था, लेकिन इसलिए नहीं कि मैंने अपनी प्रेमिका को खो दिया था। वह तो कभी मेरी प्रेमिका थी ही नहीं, बस एक वेश्या थी। मैंने कई लोगों को नशे की अलग-अलग अवस्थाओं में देखा। यह सोचकर हंसी आती थी कि मेरे पास से गुज़रने वाले हर शराबी ने कभी माला, लंका की मशहूर वेश्या, महान असुर कुटिल, के साथ संबंध बनाए होंगे - मैंने दीवार पर थूका। मैंने कल्पना की कि माला अब अपने प्रेमी के साथ बिस्तर पर, मेरे बिस्तर पर क्या कर रही होगी। मुझे शराब की बहुत ज़रूरत थी, इसलिए मैं गली के कोने पर स्थित सराय में घुस गया और सीधे एक झगड़े के बीच पहुँच गया। एक सख्त दिखने वाला आदमी काउंटर पर बैठा पान चबा रहा था और भावहीन चेहरे से तमाशा देख रहा था। शायद वह नशे में होने वाले झगड़ों का आदी था। मैं शरमाते हुए उसके पास गया और उसने भौंहें चढ़ा लीं। मैंने अपने पर्स में तलाशा और कुछ तांबे के सिक्के मिले। मुझे याद नहीं आ रहा था कि सिक्के कहाँ से आए थे, शायद वे कुबेरा की रसोई से मेरी तनख्वाह थे।
मैंने पूछा, "वे किस बात पर लड़ रहे हैं?" लेकिन मुझे जवाब की उम्मीद नहीं थी।
“राजनीति। इनके पास लड़ने के अलावा और कोई काम नहीं है, आलसी मूर्ख। क्या लोगे, ताड़ का फल या शराब?”
“अह…असल में मुझे नौकरी चाहिए।” मेरा यह सवाल पूछने का इरादा नहीं था और उस पल तक तो मेरा ध्यान सिर्फ एक ड्रिंक लेने पर था। इससे पहले कि वह जवाब दे पाता, मैंने जल्दी से कहा, “मेरा नाम भद्रा है और मैं कुबेरा के रसोईघर में काम करती थी, लोग कहते हैं कि मैं अच्छी रसोइया हूँ।”
आपकी दिखावटी तैयारियाँ यहाँ बेकार होंगी। अगर आप मछली करी या चिकन फ्राई जैसे साधारण व्यंजन बना सकते हैं, तो आपको अस्थायी नौकरी मिल सकती है। वैसे, मेरा नाम इलांगो है, और मेरा परिवार महाबली के समय से इस सराय को चला रहा है, जब यह वीरान द्वीप सम्राट की बस्ती हुआ करता था।

घोड़े पर सवार होकर, भारी हथियारों से लैस अंगरक्षकों से घिरा हुआ, आतंक का राज स्थापित करने लगा।
सराय का कारोबार भी ठप हो गया और मेरे पास बहुत खाली समय था। एक बार मैं माला से मिलने गया, लेकिन उसका घर बंद मिला। मुझे बताया गया कि वह कुछ दिन पहले गायब हो गई थी। मुझे एक ही समय में दुख और राहत दोनों महसूस हुई। और यहीं मेरे जीवन का एक अध्याय समाप्त हो गया, मैंने निराशा से सोचा। मुसीबतों को और बढ़ाने के लिए, लौटता हुआ मानसून विफल रहा। फसल खराब थी और आसपास के गांवों के लोग राजधानी के मंदिरों में उमड़ पड़े, जहां सदियों से मुफ्त भोजन दिया जाता था। लेकिन अब वहां कोई श्रद्धालु नहीं थे और कई मंदिर जीर्ण-शीर्ण अवस्था में पहुंच गए। राजा ने घोषणा की कि मुख्य अभियंता मय्यन की पुत्री से उनका विवाह जनता को असुविधा से बचाने के लिए स्थगित करना पड़ा। कुछ उपहास भरी हंसी के अलावा, जनता से इस पर कोई सकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं मिली। राजा जो करता था वह उसका निजी मामला था, जब तक कि वह कोई सार्वजनिक धन खर्च नहीं करता था, या ऐसा असुरों के अलिखित शासन नियमों में कहा जाता था। कई नियमों और कानूनों की तरह, इसका भी उल्लंघन होना तय था।
सर्दी के अंत तक, एक मामूली घटना ने शहर में बड़े पैमाने पर दंगे भड़का दिए। किसी ने सोचा भी नहीं था कि मायान, जो कभी एक साधारण और अनाड़ी प्रोफेसर हुआ करता था और अब शासन का मुख्य अभियंता था, दंगों का कारण बनेगा। लेकिन प्रोफेसर ने अपनी इंजीनियरिंग प्रतिभा का प्रदर्शन करके अत्यधिक तनावग्रस्त, चिंतित और भूखी जनता की संवेदनशील नस को छू लिया। एक साफ सर्दी की सुबह थी जब सड़क पर शोरगुल सुनकर मेरी नींद खुल गई। शोर असहनीय होने पर मैं पलंग से उठा। बाहर एक अजीब सी भिनभिनाहट की आवाज आ रही थी। नींद से व्याकुल और चिड़चिड़ाते हुए, मेरी लंबी जम्हाई बीच में ही टूट गई जब मैंने मायान को एक विमान (उड़ने वाली मशीन) के अंदर देखा। वह आकाश में उड़ान भर रहा था और चुपचाप इसका आनंद ले रहा था, नीचे मच रहे आक्रोश से बिल्कुल बेखबर। विशाल भीड़ विस्मय और भय से उस पर चिल्ला रही थी।
यह पुष्पक था, प्रसिद्ध उड़ने वाली मशीन जिसे पुराने माया सभ्यता के एक व्यक्ति ने बनाया था, जो वर्तमान व्यक्ति के दादा थे। मैंने केवल कुबेर द्वारा किसी पूर्व माया सभ्यता के व्यक्ति की सहायता से विकसित किए गए एक प्रोटोटाइप के बारे में सुना था, लेकिन घुड़दौड़ में उनकी असमय मृत्यु के

कारण उस करोड़पति व्यापारी-राजा को परियोजना को रोकना पड़ा। कुबेर ने इस तरह की मशीन विकसित करने के प्रयास में बहुत धन खर्च किया था, लेकिन वे इसे उड़ाने में कभी सफल नहीं हो सके। मेरी हैरानी भरी निगाहों के बीच, पुष्पक ने एक सुंदर मोड़ लिया और महल की ओर गायब हो गया। फिर फुसफुसाहट शुरू हो गई। लोग तरह-तरह की बातें करने लगे। तभी मैंने उसे देखा - माला का प्रेमी। वह एक दीवार के ऊपर खड़ा कुछ चिल्ला रहा था। मैं सुनना चाहता था कि वह क्या कह रहा है, इसलिए मैं भीड़ के बीच से रास्ता बनाते हुए उसके पास गया। शोर धीरे-धीरे कम हो गया, सिवाय कभी-कभार फुसफुसाहट, कानाफूसी और कुछ फुसफुसाहट के। एक उम्मीद का माहौल था। तभी मेरा प्रतिद्वंद्वी क्रोध से भड़क उठा।
“ये सरासर बकवास है मेरे प्यारे भाइयों! क्या हम इसके लायक हैं? हम भूख से मर रहे हैं, जबकि तुम्हारा राजा ऐशो-आराम में मजे कर रहा है…” भीड़ ने ज़ोरदार तालियों से सहमति जताई। “रावण तुम्हारा दुश्मन है, क्या हमें ऐसे शासक की ज़रूरत है?”
“नहीं! नहीं! नहीं!” मैंने खुद को उस समूह में शामिल होते हुए पाया।
“जब तुम्हारे बच्चे भूख से मर रहे हैं, महल के अंदर बैठे ये मसखरे उड़ने का चुनाव कर रहे हैं।” वह रुका और चारों ओर देखने लगा, सन्नाटे का इंतज़ार करते हुए। “वह देवताओं को चुनौती दे रहा है। देवता भी नहीं उड़ते और राजा पागल वैज्ञानिकों को उड़ने वाली मशीनें बनाने के लिए पैसे बाँट रहा है।” भीड़ ने हूटिंग की। “जब तुम्हारे बच्चे भूख से मर रहे हैं, जब तुम्हारे खेत तुम्हारे रिश्तेदारों की लाशों से भरे पड़े हैं, जब तुम्हारे मवेशी प्यास से मर रहे हैं, तब तुम्हारा शासक तुम्हारे उस वीरान हाल के ऊपर से उड़कर हवाई नज़ारा लेगा। क्यों?”
“क्यों? क्यों?” हजारों आवाजों ने उनके इस सवाल को दोहराया।
“क्योंकि वह तुमसे डरता है। वह नीचे आकर तुम जैसे आम लोगों के बीच आने से डरता है। रावण पर धिक्कार है!” उसने अपनी छाती पर जोरदार मुक्का मारते हुए दहाड़ा।
“शर्मनाक! शर्मनाक!” भीड़ ने एक साथ यही आवाजें दोहराईं।
वह कहता है कि वरुण के कारण ही तुम्हारा जीवन दुखमय है। यह वरुण कौन है और लंका के लोगों पर उसका क्या अधिकार है? वह तो एक लुटेरा है। तुम्हारा

दुर्भाग्य, बल्कि तुम्हारी कमजोरी ही है कि रावण जैसा कायर तुम्हारा राजा है।
भीड़ के पीछे हलचल हुई और मैं यह देखने के लिए उछल-कूद करने लगा कि क्या हो रहा है। यह एक छोटी-मोटी झड़प थी, लेकिन कुछ खास नहीं था, इसलिए मैं वक्ता की ओर मुड़ गया। “क्या हमने रावण को यहाँ बुलाया था? क्या हमने उसे हम पर शासन करने के लिए कहा था?”
“नहीं! नहीं! नहीं!” भीड़ ने ज़ोर से चिल्लाया।
"पुराना राजा एक बदमाश था, लेकिन वह एक बहादुर बदमाश था।"
"सुन सुन!"
“उसने लुटेरों को दूर रखा। उसने तुम्हें लूटा, लेकिन उसने निर्दयता से लूटा। उसने तुम्हें झुकाया, लेकिन तोड़ा नहीं। अपनी तमाम विलासिताओं के बाद भी उसने तुम्हारे लिए कुछ खाने को छोड़ा। इस कायर रावण ने छल से राज्य अर्जित किया, फिर तुम पर अपना शैतानी शासन थोपा। वह बच्चे के मुंह से दूध छीन लेगा। वह तुम्हारा खून पिएगा। अगर उसे लगता है कि इससे उसकी विलासितापूर्ण जीवनशैली का खर्च चलेगा, तो वह तुम्हारी पत्नियों को बेच देगा। वह कमजोर, क्रूर और सबसे बढ़कर कायर है।”
मैं उनकी वाक्पटुता से मंत्रमुग्ध हो गया था। वे एकदम परिपूर्ण थे, उनकी आवाज का उतार-चढ़ाव एकदम सटीक था, उनके हाव-भाव प्रभावशाली थे, और मैं महसूस कर सकता था कि भीड़ भावनाओं से झूम रही थी।
“मेरे लंका वासियों, उठो! हम असुर क्रूर और कमजोर शासक नहीं चाहते। चलो इस धोखेबाज को हटा दें और इसके साथियों को समुद्र में फेंक दें। फिर हम वरुण से लड़ेंगे और उसे उसकी औकात दिखाएंगे। चलो महल की ओर चलें और इस राक्षस को उसके सिंहासन से घसीटकर नीचे उतारें। चलो—” अचानक सन्नाटा छा गया और मैंने उसे धीरे-धीरे आगे गिरते देखा। उसका सीना खून से लाल हो गया और तभी मैंने उसके हाथ से बाण निकालने के बाद उसके हाथ में फंसा हुआ बाण का कुंद सिरा देखा। भीड़ दहशत में थी, तभी चारों ओर से घुड़सवार आए और भीड़ पर हमला करने लगे। चारों ओर अफरा-तफरी मच गई। मैंने रुद्रक को पूरी रफ्तार से दौड़ते देखा, उसका काला घोड़ा गिरे हुए वक्ता की ओर बढ़ते हुए रास्ते में आने वाले हर किसी को कुचल रहा था। मैं खतरे से भागना चाहता था, लेकिन नाटक के केंद्र की ओर खिंचा चला गया। मैं अपने प्रतिद्वंद्वी का अंत देखना चाहता था और दौड़ पड़ा, दर्द की परवाह किए बिना, जैसे कई लोग दौड़ रहे थे।

विपरीत दिशा से आ रही एक चीज़ मुझसे टकरा गई। जब तक मैं दीवार के पास पहुँचा, मेरे पैरों पर कई बार वार हो चुके थे। मैंने देखा कि रुद्रक क्रोध और हताशा से काँप रहा था। वहाँ कोई घायल व्यक्ति ज़मीन पर पड़ा नहीं था। रुद्रक ने हताशा में अपनी तलवार के मूठ से एक सैनिक को मारा। घायल सैनिक से बहते खून की परवाह न करते हुए, रुद्रक ने अपने अन्य साथियों को विद्रोही को ढूँढ़ने का आदेश दिया। वह ज़्यादा दूर नहीं गया होगा। मैं निराश था। मैंने पूरी श्रद्धा से प्रार्थना की कि तीर ने अपना काम कर दिया हो और वह व्यक्ति कुछ ही घंटों में मर जाए। लेकिन मैं जानता था कि ऐसा नहीं हो सकता। मैं अपने जीवन में कभी भाग्यशाली नहीं रहा। तभी मैंने शहर के अलग-अलग हिस्सों में आग की लपटें उठती देखीं। लंका जल रही थी। और यह पहली बार नहीं था जब यह द्वीप शहर जल रहा था।

18 भाई का भाई
रावण
“शहर के पूर्वी हिस्से में दंगे भड़कने की खबरें हैं और कुछ बदमाशों ने कारीगरों के गांव को जला दिया है और मुख्य कारीगर की बेरहमी से हत्या कर दी है। कई लोगों की जान चली गई है। रुद्रका ने उत्तरी और पश्चिमी हिस्सों में दंगों को रोकने में कामयाबी हासिल कर ली है, लेकिन दंगे दूरदराज के गांवों तक भी फैल गए हैं। मंदिरों को जला दिया गया है, अनाज भंडारों को लूटा गया है, महिलाओं के साथ बलात्कार किया गया है। मध्य जिले में स्थिति गंभीर है। दक्षिणी जंगलों के कबीले भी लूटपाट में शामिल हो गए हैं और उन्होंने शहर के दक्षिणी हिस्सों में बड़े पैमाने पर आगजनी की है।”
दक्षिण में विद्रोहियों का दबदबा है और विद्युतजिह्वा ने खुद को राजा घोषित कर दिया है। उसने कृषि कर का एक बड़ा हिस्सा वसूलना शुरू कर दिया है। सुमाली और माल्यावन विद्रोह को दबाने और संभव हो तो विद्युतजिह्वा को पकड़ने के लिए दक्षिण की ओर रवाना हो गए हैं। हमने लापता वेश्या माला का पता लगाने के लिए खोज दल भी भेजे हैं। हम इस बात की पुष्टि की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि माला से मिलने वाला व्यक्ति वही जासूस भद्रा था जो पहले हमसे बच निकला था। रुद्रक को पूरा विश्वास है कि उसने हंगामे के दौरान भद्रा को देखा था, लेकिन वह गायब हो गया। ऐसा प्रतीत होता है कि विद्युतजिह्वा, माला और भद्रा सरकार को गिराने की एक सुनियोजित साजिश में शामिल हैं। विद्रोह को दबाने के लिए कठोर और निर्मम उपाय लागू करने हेतु राजा से अनुमति मांगी जा रही है। सेना को दक्षिणी जंगलों में जाकर विद्रोहियों से छीने गए क्षेत्र को वापस लेने का आदेश जारी किया जाए।

प्रहस्त ने पढ़ना बंद कर दिया और मेरी ओर ऐसे घूरने लगा मानो किसी तैयार समाधान की उम्मीद कर रहा हो। ऐसा लग रहा था मानो वह घटनाक्रम से लगभग खुश हो।
मरीचा, जंबुमाली और मैं चुपचाप बैठे रहे। कोई फैसला लेना ही था। मैं विद्रोह को दबाने के लिए अत्यधिक बल प्रयोग नहीं करना चाहता था। मुझे यह भी यकीन नहीं था कि यह उतना गंभीर था जितना प्रहस्त ने बताया था। मुझे इस बात का दुख था कि मेरे ही लोगों ने मेरे खिलाफ हथियार उठा लिए थे। ये मूर्ख क्यों नहीं समझते कि शासन करना आसान नहीं होता? कि सरकार को राज्य चलाने के लिए करों की आवश्यकता होती है। क्या मुझे असुरों का रक्षक नहीं बनना था? जब तक वे मुझे ऐसा करने की अनुमति नहीं देंगे, मैं राज्य को कैसे मजबूत कर सकता हूँ और असुरों का खोया हुआ गौरव कैसे वापस ला सकता हूँ? मेरे लोग आम दुश्मन से लड़ने से ज्यादा समय आपस में लड़ने में बिताते हैं। ये नासमझ बदलाव को सहन नहीं कर सकते। मैं एक आदर्श राज्य चलाना चाहता था और एक ऐसा राज्य बनाना चाहता था जहाँ हर कोई समृद्ध हो, एक शक्तिशाली असुर राज्य जो देवताओं का मुकाबला कर सके। मैं देवताओं को भारत से बाहर निकालना चाहता हूँ और अपने लोगों के लिए कई महान कार्य करना चाहता हूँ। और ये कृतघ्न लोग विद्रोह कर बैठते हैं। लोगों की मूर्खता चौंकाने वाली थी। क्या उन्हें यह नहीं पता था कि वे जिन वर्तमान कठिनाइयों का सामना कर रहे थे, वे एक उज्ज्वल भविष्य के लिए थीं? वे यह क्यों नहीं समझ पाए कि मुझे वरुण से लड़ने के लिए पर्याप्त शक्ति जुटाने के लिए समय चाहिए था? वे धैर्य क्यों नहीं रख पाए और मुझे कुछ समय क्यों नहीं दिया?
“विद्रोह को बलपूर्वक कुचल दो। किसी भी गद्दार को बख्शा नहीं जाएगा।” मैंने अपने ही लोगों पर लानत भेजते हुए समुद्र की ओर देखा। ‘अपने लोगों की भलाई के लिए,’ मैंने खुद को दिलासा दिया। तभी मेरे अंदर की खूनी आवाज शुरू हुई। ‘लेकिन इतिहास में हर अत्याचारी ने खुद से यही कहा है। रावण, मैं जानता हूँ कि तुम मूर्ख हो, लेकिन फिर भी तुमने मुझे चौंका दिया। इसलिए, अपनी प्रजा की भलाई के लिए, तुम कुछ छोटे-मोटे काम करोगे, जैसे कुछ सिर काटना, कुछ परिवारों को तोड़ना और बड़े पैमाने पर नरसंहार का समर्थन करना। शाबाश! तुम एक सच्चे शासक बन गए हो।’ मैं अपने अंदर के उस उपहास को निचोड़कर रख देना चाहता हूँ।

“मुझे विद्रोह को दबाने के लिए पूर्ण अधिकार चाहिए, आदेश पर शाही मुहर के साथ आपकी लिखित स्वीकृति चाहिए। और मैं इस अभियान के दौरान परिषद के किसी भी बेतुके सवाल का जवाब नहीं देना चाहता। काम पूरा होने के बाद मैं एक रिपोर्ट प्रस्तुत करूँगा।” प्रहस्त का व्यवहार कम से कम चिड़चिड़ाने वाला था। मैं इस पूरी प्रक्रिया से थक चुका था। ऐसा लग रहा था मानो परिषद को विश्वास ही नहीं था कि मैं अपने निर्णय पर अडिग रहूँगा। यह निराशाजनक था, खासकर इसलिए क्योंकि मुझे डर था कि वे सही थे।
“तुम्हें जो चाहिए वो मिलेगा।” मैंने प्रार्थना की कि यह सभा जल्द समाप्त हो जाए। प्रहस्त ने मुझे झुककर प्रणाम किया। उनके होंठों पर हल्की सी मुस्कान थी। एक-एक करके सब लोग कमरे से चले गए। मुझे अकेलापन महसूस हुआ, बहुत अकेलापन। ‘रावन, तुम अकेले पैदा हुए थे, और अकेले ही जिओगे और मरोगे।’ मुझे दूर, उजाड़, धूसर आकाश की ओर धुआँ उठता दिखाई दिया। वहाँ कई जिंदगियाँ जल रही होंगी। न्याय और धर्म की जो भावनाएँ मुझमें थीं, वे सब मेरे और मेरे महल के चारों ओर धुएँ में उड़ रही थीं। मैं जानता था कि राजा के रूप में मेरे जीवन में अभी इतना समय नहीं आया था कि मैं किसी हानि का बोध करूँ। मुझे अभी बहुत लंबा सफर तय करना था, बहुतों को यातना देनी थी, कई जिंदगियाँ बर्बाद करनी थीं, खुद को और अधिक औचित्य देना था, और बहुत से भयानक काम करने थे। पश्चाताप में डूबे हुए पीड़ित नायक की भूमिका निभाने का अभी समय नहीं आया था। क्या वरुण के किसी जहाज में जहाज क्लर्क का पद अभी भी खाली था?
“रावण, मैं तुमसे किसी महत्वपूर्ण विषय पर बात करना चाहता हूँ।”
“हां मां, क्या बात है?” मैं चिढ़ गई थी और परेशान नहीं होना चाहती थी, लेकिन साथ ही मुझे इस बात की राहत भी थी कि मेरे पास बात करने के लिए कोई है।
मैं मायान से बात करना चाहता हूँ।
"तो बताओ, तुम मेरी अनुमति क्यों मांग रहे हो?"
“मूर्खता करना बंद करो, अब तुम लंका के राजा हो।”
"धन्यवाद माँ, मुझे याद दिलाने के लिए, मैं अक्सर भूल जाता हूँ।"
“आपको मंदोदरी पसंद नहीं है?”
क्या इससे वाकई कोई फर्क पड़ता है?

"हो सकता है कि यह आपके लिए मायने न रखता हो, लेकिन उसके लिए मायने रख सकता है।"
"तो उससे पूछो।"
मैं अगले दो हफ्तों में शादी की समस्या सुलझा रहा हूँ। अगर आप अपने किसी खास दोस्त को बुलाना चाहते हैं, तो उन्हें भी बुला लें।
क्या राजाओं के दोस्त होते हैं?
"आप पहले राजा हैं जिन्हें मैं जानता हूं, इसलिए मुझे इसका जवाब नहीं पता।" मैंने उसे घूरकर देखा और फिर बाहर देखने लगी। मुझे उसकी तेज़ आवाज़ सुनाई दी। मुझे मैच को लेकर खुश होना चाहिए था या शायद थोड़ा सावधान भी। लेकिन कोई भावना नहीं थी। मेरा दिमाग़ सुन्न था। शहर पर अंधेरा छा गया था, मानो सौ आँखों से मुझे घूर रहा हो। धीरे-धीरे, मेरे अंदर हीनता का भाव छा गया। मेरे आस-पास जो कुछ हो रहा था, उस पर मेरा कोई नियंत्रण नहीं था। कुछ समय पहले तक मैंने अपनी किस्मत को अपने हाथों में लेने का सोचा था, यहाँ तक कि दूसरों की किस्मत को भी। अब मैं एक ऐसे कृतघ्न राज्य के चंगुल में फँस गई थी जो मुझे कुचलना चाहता था। समुद्र से एक ठंडी नमकीन हवा आई और कमरे में रखा छोटा सा दीपक टिमटिमाकर बुझ गया। मुझे लहरों के किनारे से टकराने की आवाज़ सुनाई दी। समुद्र पर छाया कोहरा धीरे-धीरे छँट गया। दूर की रोशनी नाचती हुई लग रही थी, शायद वरुण के जहाज़। मेरे दिमाग़ में एक योजना बनी। मुझे कुछ करना था। मैं चुपचाप बैठकर दूसरों को अपनी ज़िंदगी की योजना बनाने नहीं दे सकती थी। मैं खिड़की से मुँह फेरकर...
“ये कौन है?” मैंने अपनी तलवार म्यान से निकाली। दरवाजे के फ्रेम की धुंधली रोशनी में एक छोटी सी आकृति परछाई की तरह खड़ी थी। वो इतनी तेज़ी से अंधेरे में गायब हो गई कि मेरी आँखें रोशनी में एडजस्ट होने के लिए संघर्ष कर रही थीं, मैं चौंक गया। मैं कोने में कूद गया और अपनी तलवार लहराने लगा। दीवार से पीठ टिकाकर, मुझे सिर्फ सामने से बचाव करना था। मुझे पीछे से होने वाले हमले की चिंता नहीं थी।
"महामहिम, मैं हूँ।"
"आप कौन हैं?"
सन्नाटा... अगर वह दुश्मन होता, तो बोलता नहीं और अपनी स्थिति ज़ाहिर नहीं करता। मैं थोड़ा शांत हुआ, पर बस थोड़ा सा। "मैं तुम्हें चोट नहीं पहुँचाऊँगा। रोशनी में आ जाओ।" मैंने उससे कहा, तभी मुझे पैरों की आहट

सुनाई दी। फिर जैसे ही मैंने दरवाज़े के फ्रेम की ओर देखा, जहाँ मुझे उसके आने की उम्मीद थी, एक मज़बूत हाथ ने मेरी कलाई पकड़ ली और मेरे कान में फुसफुसाया, "मुझे माफ़ कर दीजिए महाराज..." आवाज़ जारी रही, जब उसने मेरे लात को रोका जो उसके कमर पर लग रही थी, "मैं आपका दुश्मन नहीं, बल्कि आपका सेवक हूँ, विश्वास कीजिए।"
मैं थोड़ा शांत हुआ। मैं उसे झटक कर उसकी नाक पर एक जोरदार मुक्का मार सकता था जिससे वह बेहोश हो जाता। लेकिन उसकी आवाज़ में कुछ ऐसा था जिसने मुझे उस पर भरोसा करने के लिए मजबूर कर दिया। शायद, अगर प्रहस्त यहाँ होते, तो वे मुझे बताते कि एक राजा को कभी किसी पर भरोसा नहीं करना चाहिए, यहाँ तक कि खुद पर भी नहीं। मेरी तलवार मेरे हाथ से छूटकर दीवार से टकराई और ज़ोर से आवाज़ करते हुए ज़मीन पर गिर गई। अचानक लगी उस लात से मैं चौंक गया जिसने तलवार मेरे हाथ से गिरा दी थी। धिक्कार है प्रहस्त पर – मुझे लगता है कि हमेशा की तरह वे सही थे। लेकिन जिस हाथ ने मेरी कलाई पकड़ रखी थी, वह छूट गया था और मैं तनाव में खड़ा था। मेरा शरीर युद्ध की मुद्रा में आ गया और महाबली के जंगलों में सीखे सबक मेरी नसों में संकेत भेज रहे थे। मैंने अपनी तलवार की आवाज़ सुनी और उस दिशा में एक लात मारी। जैसे ही मेरे पैर की उंगलियां दीवार से टकराईं, दर्द की लहरें दौड़ गईं। लेकिन दर्द को नज़रअंदाज़ करते हुए मैं पलक झपकते ही वापस युद्ध की मुद्रा में आ गया। तभी मैंने उसे गलियारे की टिमटिमाती रोशनी में देखा। चेहरा अजीब तरह से जाना-पहचाना था, जैसे किसी सांप का – फन फैला हुआ कोबरा, वार करने के लिए तैयार।
“भद्रा…”
"महामहिम, हम आपकी सेवा में हैं।"
"तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई?!"
"महामहिम, मुझे क्षमा करें, लेकिन कृपया मेरी बात सुनिए।"
मैं वहीं खड़ा रहा, यह सोचता रहा कि क्या करूं।
अगर मैंने उसे तब मार दिया होता, तो इतिहास कुछ और होता। आह इतिहास... यह हमेशा अलग-अलग लोगों के लिए अलग होता है और अपना रास्ता खुद तय करता है। शायद एक दिन कुछ भी मायने नहीं रखता। इस युद्धक्षेत्र में, जहाँ मैं खून बहते हुए मौत के करीब हूँ, मैं सोचता हूँ कि मैंने इतिहास में एक महान अध्याय रचा है; एक नायक का जीवन जिया है; और एक खलनायक की मौत मरा हूँ; या

शायद इसका उल्टा। लेकिन हो सकता है कि मैं सिर्फ अपनी महानता का भ्रम पाल रहा हूँ।
छोटे राजकुमार राम और उनके वानर-पुरुषों के साथ यह युद्ध, जिसने मेरा जीवन तबाह कर दिया और मेरी सारी उपलब्धियों को नष्ट कर दिया, मानव जाति के इतिहास में इतना महत्वहीन कैसे हो सकता है? मैंने इतिहास की परवाह करना कब शुरू किया? इतिहास मुझसे शुरू होता है और मुझ पर ही समाप्त होता है। शायद मेरे अंगों को खा रहा सियार यह जानकर आश्चर्यचकित हो कि वह इतिहास का एक हिस्सा निगल रहा है। इससे क्या फर्क पड़ता है? मुझ जैसे एक गरीब आदमी ने, जिसने कभी सम्राट तो कभी मसखरा की भूमिका निभाई, कभी-कभी दोनों, इस उदासीन, क्रूर दुनिया में क्या किया या क्या करना भूल गया, जो मेरे धरती में विलीन होने से पहले भी अस्तित्व में थी और मेरे बाद भी अस्तित्व में रहेगी? लेकिन तब मैं इतनी छोटी थी कि समझ नहीं पाई, और अब इतनी बड़ी हो गई हूँ कि परवाह नहीं करती। इसलिए मैंने उसकी बातें सुनीं। मैंने सुना जैसे वह मुझे अपने अतीत की अंधेरी गलियों और वर्तमान की उलझी हुई उप-गलियों में ले गया। जब वह रोया, तो मैं उदासीन हो गई। जब उसने लंका जीतने के बाद मुझे उसे त्यागने का आरोप लगाया, तो मैं सचमुच हैरान रह गई। क्या यह मेरी ही योजना नहीं थी जो सफल हुई थी? इस आदमी का इससे क्या लेना-देना था? लेकिन मुझे उसके लिए थोड़ी सहानुभूति महसूस हुई, जैसे मुझे उस पिल्ले के लिए होती है जिसे मेरे सौतेले भाई के रथ ने कुचल दिया हो और जो रात भर रोता रहता हो। मैं इस आदमी को एक पिल्ले की तरह रख सकती थी, सिर्फ प्रहस्त को चिढ़ाने के लिए। यह विचार सुखद था। मैं मुस्कुराई और उस मूर्ख भद्र ने सोचा कि मैं आखिरकार पिघल गई हूँ। वह मेरे पैरों पर गिर पड़ा और उन्हें चूमने लगा। मैं दंग रह गई। भद्र ऐसा क्यों करेगा? मैंने अपने पैर पीछे खींचने की कोशिश की, लेकिन फिर यह अजीब तरह से सुखद था। मुझे भीतर से खुशी की एक लहर महसूस हुई। लेकिन अचानक, अपराधबोध ने उस थोड़ी सी खुशी को भी मिटा दिया और मैंने उसे झकझोर दिया। मुझे उसके और खुद के प्रति घृणा महसूस हुई।
“तुम मेरे निजी सेवक हो। कोई शाही सहायक या कोई शान-सत्ता नहीं, बस एक साधारण निजी सेवक। मैं जो कहूँ, तुम वही करोगे।”
"महामहिम, मैं कुत्ते की तरह आपकी सेवा करूंगा।"
मेरे अंदर कुछ टूट गया। क्या उसने मेरे मन की बात पढ़ ली? क्या उसे मेरे भीतर उमड़ती घृणा का एहसास हो गया? मेरा प्यारा सा पिल्ला, मेरा खिलौना,

भद्रा। मैं खुद को बहुत छोटा समझने लगी। नहीं, मैं उसे एक दोस्त की तरह, एक बराबर के रूप में मानूंगी, ठीक बराबर तो नहीं, लेकिन लगभग बराबर। एक गुलाम जिसे अपने स्वामी के बराबर अधिकार हों? मैं हंसते-हंसते मर जाऊंगी। ‘लेकिन रावण, उसका चेहरा देखो, उसकी कमजोर भुजाएं और तोंद देखो, क्या वह तुम्हारे बराबर है? भद्रा धरती का मैल है, उन प्राणियों में सबसे नीच है जिन पर तुम्हें राज करना है।’ नहीं, वह मेरी गरीब असुर जाति का प्रतीक है। वह आम आदमी से मेरा संपर्क सूत्र है। वह मुझे मेरी प्रजा के विचार बताएगा और मैं सबके लिए न्याय और समृद्धि के साथ शासन करूंगी।
“अब आप जा सकते हैं।” उन्होंने औपचारिक रूप से झुककर धीरे-धीरे कमरे से बाहर निकल गए।
मुझे बस काम शुरू करने की ज़रूरत थी। मैंने अपनी अधूरी योजनाओं पर फिर से विचार किया। मैंने हर छोटी-बड़ी बात पर गहराई से सोचा और इसी बीच मुझे नींद आ गई। जब मैं उठा तो पहाड़ियों पर सुबह की पहली किरणें दिखाई दे रही थीं। लेकिन मैं बिस्तर से उठकर एक और थका देने वाले दिन की शुरुआत नहीं करना चाहता था। एक और दिन जिसमें आडंबरी क्लर्क मौत और आगजनी की खबरें सुनाएंगे, एक ऐसा नया दिन जिसमें मैं उन लोगों को देखूंगा जिनकी रक्षा करने की मैंने कसम खाई थी, वे एक-दूसरे को मार रहे होंगे और मेरी मौत की दुआ कर रहे होंगे। एक और दिन जिसमें मैं प्रहस्त जैसे लोगों से कुछ और उबाऊ प्रशासनिक सबक सीखूंगा। एक ऐसा दिन जिसमें मेरी माँ मुझे उस लड़की से शादी करने के लिए परेशान करेगी, उसका नाम क्या था – उस सनकी वैज्ञानिक की बेटी – मंदोदरी या कुछ और।
एक अकेला सिपाही महल के द्वार पर चहलकदमी कर रहा था। मुझे उससे कितनी ईर्ष्या हो रही थी! उसे बस दोपहर तक इधर-उधर घूमना था, फिर घर जाकर दोपहर का खाना खाना था, सोना था या शायद अपनी पत्नी या प्रेमिका के साथ समय बिताना था, शाम को शराब पीकर फिर गहरी नींद सो जाना था। जीवन कितना सरल और सुखद था! लेकिन शायद इतना सरल भी नहीं था। उसकी एक बेवफा पत्नी, एक शराबी बेटा, एक झगड़ालू माँ और एक बीमार पिता भी हो सकते थे, जिनकी देखभाल करनी पड़ती। लेकिन मुझे ईर्ष्या का यह एहसास अच्छा लगता था, इसलिए मैंने उसकी कहानी के पहले संस्करण को ही सही माना। मैं चौकीदार को बुलाकर उसे कोई असंभव काम देना चाहता था। बस उसकी जिंदगी बर्बाद कर देना चाहता था। शायद राजशाही की

शक्ति बस यही है, दूसरों की जिंदगी बर्बाद करने की क्षमता। यही उसका एकमात्र आनंद था।
“कल तुम्हारी शादी तय हो गई है।” चौकीदार की जिंदगी बर्बाद करने के मेरे सुखद ख्यालों से मैं एकदम चौंक गई। अपनी माँ को पहचानने में मुझे कुछ सेकंड लगे।
“माँ, आज क्यों नहीं?”
“तुम व्यंग्य से भरे हुए हो। तुमने मुझसे कभी इस तरह बात नहीं की। राजशाही तुम्हारे सिर पर चढ़ गई है। ये तो मैंने किया था…”
“…जिन्होंने हमें पालने-पोसने के लिए संघर्ष किया, जिन्होंने हमें खिलाने के लिए खुद भूखी रहीं, जिन्होंने— नहीं, एक बेटे को ऐसा नहीं कहना चाहिए, लेकिन, हम्म, क्या यह ठीक रहेगा अगर मैं कहूँ कि हमें कपड़े पहनाने के लिए उन्हें अच्छे कपड़ों से वंचित रहना पड़ा…”
बस करो। महाराज, आप एक बेचारी माँ को भूल रहे हैं…”
“…जिसने मुझे नौ महीने गर्भ में धारण किया और पीड़ा सहते हुए मुझे जन्म दिया…” वह वहाँ सिसकियाँ भर रही थी। मुझे यह जानकर झटका लगा कि मैंने बिना किसी उकसावे के उससे इस तरह बात कर दी। मैंने उसका चेहरा अपने हाथों में लिया और उसने मुझे अपनी जलती हुई काली आँखों से चुनौती दी कि मैं उसके प्रेम का विरोध करके देखूँ। “माँ, कृपया विवाह की व्यवस्था कर दीजिए। राज्य का बोझ अब आपके बेचारे बेटे के लिए असहनीय होता जा रहा है और जब मैंने आपसे बात की थी तब मैं होश में नहीं था।”
“बेटा, तुमने अभी शुरुआत ही की है, और मुझे उम्मीद है कि तुम इससे भी बुरे नहीं बनोगे। कल शाम, जैसा मैंने कहा था। शुभ दिन बेटा।” वह अडिग कदमों से चली गई और इससे पहले कि पछतावा और शर्म की लहरें मुझ पर हावी हो पातीं, मैंने मारीचा को बुलाया। वह गली में लड़ने के लिए बहुत बूढ़ा था, इसलिए महल में वही एकमात्र वरिष्ठ अधिकारी उपलब्ध था। इसके अलावा, वही था जिससे मैं प्यार करता था और जिसका सम्मान करता था। वह कभी भी अपनी राय किसी पर थोपता नहीं था, सर्वज्ञानी प्रहस्त के विपरीत।
“आपने मुझे बुलाया, महाराज?” जैसे ही मैंने उन्हें बैठने का इशारा किया, वे सीधे मेरे सामने बैठ गए।
"चाचा जी, कम से कम अकेले में तो मुझे रावण कहिए।"
“ठीक है। कुंभा लौट आया है।”

चलिए उसे फोन करते हैं।
“उससे पहले, मैं रावण से एक महत्वपूर्ण बात कहना चाहता हूँ। तुम्हारा भाई वैसा नहीं है जैसा तुम उसे समझते हो।”
“कुंभ को क्या हुआ है? या आप विभीषण की बात कर रहे हैं, जो एक पवित्र व्यक्ति है?” मैंने अपने सबसे छोटे भाई के प्रति स्नेह महसूस करते हुए पूछा।
“विभीषण के बारे में मैं किसी और दिन बात करूँगा। वह मूर्ख तो अभी सबसे ज़रूरी मामला है।” कुंभकर्ण के बारे में उसकी बात सुनकर मैं हँस पड़ा। “यह हँसी की बात नहीं है, रावण। उसे बुरी आदतें लग गई हैं। लड़कियों के प्रति उसकी कमजोरी तो हम सब जानते ही हैं। जब तक वह समझदारी से काम लेता है, हमें चिंता नहीं करनी चाहिए। वह शराबखानों में जाता है और हाथी की तरह देसी शराब पीता है और कभी पैसे देने की परवाह नहीं करता।”
“लड़का बस मजे कर रहा है। किसी को भेजकर कर्ज चुका दो और उसे मेरे निजी खाते से वसूल लो। मेरा मतलब है, श्रीलंका पर हमला करने से पहले हमने जो पैसा इकट्ठा किया था, उसमें से जो भी बचा है, उससे चुका दो। मैं नहीं चाहता कि मेरे भाई की शराब पीने की आदत का खर्च सरकार उठाए।”
“बात सिर्फ इतनी ही नहीं है, रावण। वो नशे का आदी हो गया है। उसके कुछ दोस्त हैं जो भांग से बनी चीजें बनाते हैं। वे सोमा के पौधे से जेली भी बनाते हैं। मुझे लगता है कुम्भा उनके बहकावे में आ गया है… मैंने अपने दो सबसे अच्छे अधिकारियों को कुम्भा की गतिविधियों का पता लगाने के लिए भेजा था। उन्होंने मेरी पिछले कुछ दिनों से चली आ रही आशंका की पुष्टि कर दी है। रावण, वो बेवकूफ तो ज्यादातर समय बेहोश ही रहता है।”
“वह जल्दी दोस्त बना लेता है।” लेकिन कुम्भा हमेशा से ही मिलनसार स्वभाव का था, बिलकुल एक बड़े कुत्ते की तरह जिसे प्यार से सहलाने की चाहत हो। मुझे नहीं पता कि उन्हें दोस्त कहा जा सकता है या नहीं। वे उस मूर्ख का इस्तेमाल कर रहे हैं। और उस बेवकूफ को इस बात का पता भी नहीं है।
"तो आप मुझसे क्या करवाना चाहते हैं, चाचा?"
"उसे कोई आधिकारिक पद दे दो। उसे कुछ काम करने को दो।"
मैं भाई-भतीजावाद के आरोपों का शिकार नहीं होना चाहता।
“बकवास मत करो, रावण। सरकारी पदों पर आसीन अधिकांश लोग तुम्हारे रिश्तेदार हैं, जैसे कि प्रहस्त और मैं।”

“यह अलग बात है। आपके पास लंबा प्रशासनिक अनुभव है और आप एक बार राज्यों पर शासन कर चुके हैं। कुंभा और विभी तो अभी बच्चे हैं।”
“और तुम चाहते हो कि वे बस वैसे ही रहें? क्या तुम नहीं चाहते कि वे बड़े हों? रावण, क्या तुम अपने बच्चों के लिए पद बचा रहे हो? क्या तुम्हें डर है कि तुम्हारे भाई तुम्हारे वंश के लिए चुनौती बनेंगे?”
“अब तुम बकवास मत करो। तुम जानते हो कि मैं वैसा नहीं हूँ। मुझे हमेशा के लिए शासन करने में कोई दिलचस्पी नहीं है। मेरे कुछ आदर्श और सिद्धांत हैं…”
"मेरे बेटे, जिस सिंहासन पर तुम बैठे हो, वह अपने मालिक के अनुरूप सिद्धांतों को तोड़-मरोड़ कर पेश करने का तरीका जानता है।"
“हर कोई मुझ पर सत्ता के नशे में भ्रष्ट होने का आरोप क्यों लगा रहा है? मेरे पास ऐसी कौन सी सत्ता है? सिर्फ इसलिए कि मुझे एक शहर पर शासन करना है, और उनमें से आधे लोग मुझे मारना चाहते हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि मुझे यह साबित करना होगा कि मैं वह नीच असुर तानाशाह नहीं हूँ जैसा वे मुझे बनाना चाहते हैं।” ‘लेकिन मैं अपने भाइयों जैसे मूर्खों के साथ सत्ता क्यों बाँटूँ?’
“यदि आपको पूरा यकीन है कि आप सत्ता से भ्रष्ट नहीं हुए हैं और न ही होंगे…”
“प्रहस्त की तरह बातें करना बंद करो। मैंने तुम्हें एक योजना पर चर्चा करने के लिए बुलाया है, जिस पर मैं तुम्हारी राय जानना चाहता हूँ, और मैं चाहता हूँ कि कुंभ भी मेरे साथ रहे। भद्रा…” भद्रा के इतनी जल्दी प्रकट होने पर मैं हैरान रह गया। क्या वह बाहर सुन रहा था? मैं उस पर कितना भरोसा कर सकता था? “जाओ और…उह…राजकुमार…कुंभकर्ण को ले आओ।”
"आप ऐसे प्राणियों को अपने निजी कर्मचारियों में क्यों रख रहे हैं?"
जब भद्रा भागकर बाहर निकली तो मारीचा के तिरस्कारपूर्ण लहजे पर मुझे हंसी आ गई। "एक राजा के अपने कारण होते हैं।"
"तुम्हारा निजी जासूस, है ना?"
“क्यों नहीं? वह साधारण है, किसी भी भीड़ में घुलमिल सकता है। और वह इतना निर्दयी है कि क्रूरता की हद तक पहुँच जाता है। ऐसा लगता है कि उसने बहुत कष्ट झेला है और उसके पास खोने के लिए कुछ नहीं है।”

मारीचा ने अचानक पूछा, “अरे, वही तो गद्दार था जिसने ये सब शुरू किया था, है ना?” लेकिन इससे पहले कि मैं जवाब दे पाता, कुंभा अंदर आ गया। वह नशे में लग रहा था।
“कुंभ, तुम कुछ उदास लग रहे हो। क्या हुआ बेटा?”
“तुम ऐसा क्यों पूछ रहे हो? मैं राजा नहीं हूँ और मुझे किसी को खुश करने की ज़रूरत नहीं है।”
“अगर तुम यहाँ बैठकर उपेक्षित, गरीब, अमीर, क्रूर राजा के छोटे भाई का नाटक करना चाहते हो, तो जब तक मन करे तब तक करो। चाचा जी, चलिए बाहर बगीचे में टहलते हैं और इस नाटकबाज़ मूर्ख को यहीं छोड़ देते हैं।”
“नहीं, नहीं, रावण, मैं तो बस मज़ाक कर रहा था। हमारे ये चाचा तो तुम्हें मेरी अय्याशियों के बारे में कई गाने सुनाते। बस थोड़ा मज़ाक था, भाई। तुम्हारी क्या योजना है?”
मैंने उन्हें अपनी योजना बताई। एकदम सन्नाटा छा गया।
“लेकिन कल तुम्हारी शादी है। यह जोखिम भरा होगा।” मैंने मारीचा के बढ़ते हुए गुस्से को देखा और पहली बार मुझे इस योजना की व्यावहारिकता पर संदेह हुआ।
“मुझे यह बहुत पसंद आया। यह शानदार है।” कुम्भा कमरे में इधर-उधर उछल-कूद करने लगी।
आपको कितने लोगों की आवश्यकता होगी?
“हम चारों ही थे, चाचा जी, आप, कुंभा, मैं और भद्रा… और शायद एक दर्जन अच्छे तैराक।”
“यह बहुत जोखिम भरा है,” मारीचा ने सिर हिलाते हुए कहा, “और हम भद्रा पर कितना भरोसा कर सकते हैं?”
हमें जोखिम उठाना ही होगा।
“पर तुम ऐसा क्यों करना चाहते हो? क्या तुम हमें कुछ साबित करना चाहते हो? हम जानते हैं कि तुम बहादुर हो, लेकिन असुर राजा के रूप में एक बहादुर मृत मूर्ख की बजाय मैं एक जीवित कायर को पसंद करूंगा।”
“वह यह साबित करने की कोशिश कर रहा है कि वह एक सच्चा योद्धा है। जब हमने राज्य जीता था, तब मैंने कभी नहीं सोचा था कि जीवन इतना नीरस हो जाएगा। मुझे भी कुछ करने की तीव्र इच्छा हो रही है। समय बर्बाद न करें। कल का दिन अच्छा रहेगा।” कुंभा जाने के लिए बेताब था।

"क्या आप जा रहे हैं?"
"क्यों, क्या तुम्हें डर है कि मैं जाकर शराब पी लूँगा और सबको इसके बारे में बता दूँगा?"
"बस करो तुम दोनों। हमें आज इस बारे में एक रात सोने दो।"
मारीचा कुंभा से पहले ही चला गया और मुझे चिंता और निराशा का मिला-जुला एहसास हुआ। कुंभा मेरा सबसे प्यारा दोस्त था, भाई से भी बढ़कर। अब जब भी मैं उससे बात करता, मुझे सोचना पड़ता कि कहीं मैं उसके पहले से ही नाजुक अहंकार को ठेस तो नहीं पहुँचा रहा। "मुझे माफ़ करना भाई..." लेकिन मेरे कुछ कहने से पहले ही वह चला गया।

19 समुद्री डाकुओं की मुसीबतें

रावण
उसी दोपहर बाद, रुद्रका ने सूचना दी कि उसने 3,000 से अधिक विद्रोहियों को गिरफ्तार कर लिया है और उसे कुछ अन्य सहायता भी प्राप्त हुई है।
“कितने लोग मारे गए?” मैं चाहता था कि वह कहे, “बस कुछ ही।”
"हमारे लगभग 800 सैनिक।"
“और आप इसे कानून-व्यवस्था की समस्या कहते हैं? वहाँ तो खूनी जंग छिड़ी हुई है। क्या जंबुमाली को हटाने से समस्या हल हो जाएगी?”
“शायद, लेकिन मैं कोई राजनेता नहीं हूँ जो इस पर टिप्पणी कर सकूँ, महाराज।” आखिरी बात कहते हुए उन्हें संघर्ष करते देखना मनोरंजक था। मुझे यकीन था कि वे खुद को लंका का राजा बनने के लिए ज़्यादा योग्य समझते थे। और शायद वे सही भी थे। “दरअसल, लगता है आपने मेरा सवाल ठीक से नहीं समझा। जब मैंने पूछा कि कितने लोग मारे गए, तो मैं सिर्फ अपने सैनिकों की गिनती नहीं जानना चाहता था।”
मौन।
मैंने सुना है कि 10,000 से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है।
"शायद।"
मैं भड़क उठा। “तुम्हारा मतलब क्या है? तुम सेना प्रमुख हो और जवाब में मुझे एक दयनीय ‘शायद’ सुनने को मिलता है। तुम्हें महिलाओं और बच्चों का नरसंहार करने का आदेश किसने दिया? और बूढ़े पुरुषों और महिलाओं का भी?” “क्या उस नीच भद्रा ने आपको ये विचार सिखाए हैं? महाराज।”

“मुझसे इस तरह बात करने की हिम्मत मत करो! मैं अपने साथी खुद चुनती हूँ। मैं यह जानना चाहती हूँ कि तुम्हें नागरिकों का कत्लेआम करने का आदेश किसने दिया?”
मौन।
"मुझे जवाब दें।"
वह वहां खड़ा रहा और बोला, "मेरा मानना है कि इसे परिषद द्वारा अधिकृत किया गया था।"
“परिषद? कैसी परिषद? यह कोई असुर पंचायत नहीं है और मैं कोई मामूली सरपंच नहीं हूँ। मैं राजा हूँ और मैं आदेश देता हूँ। किसी भी गड़बड़ी की ज़िम्मेदारी मेरी है। अब तुमने अपनी तलवार से कुछ ज़िलों को तबाह कर दिया है, और अब मैं अपनी प्रजा के क्रोध का शिकार हो रहा हूँ। अब मुझे जवाब दो, इस नरसंहार का आदेश किसने दिया?”
“महामहिम, यदि आप चाहते हैं कि मैं इस्तीफा दे दूं, तो मैं दे दूंगा।” उनके होठों के कोनों पर हल्की सी मुस्कान आ गई।
उस बात ने मुझे झकझोर दिया। मैं नहीं चाहता था कि वह इस्तीफा दे। वह अच्छा काम कर रहा था। लेकिन उसकी बेरहमी मुझे परेशान कर रही थी। मैं बस इतना चाहता था कि वह थोड़ा नरमी बरते और विद्रोह को सभ्य तरीके से दबाए। मैं उसकी तत्काल गिरफ्तारी का आदेश दे सकता था और सैनिकों के बीच विद्रोह का खतरा मोल ले सकता था। मैंने खुद को शांत करने के लिए आंखें बंद कर लीं। “देखो रुद्रा, यह सोचकर मुझे बहुत दुख होता है कि मैं निर्दोष लोगों की हत्या के लिए जिम्मेदार हूं। ऐसा नहीं है कि मैं युद्ध से डरता हूं। लेकिन यह तो सरासर अत्याचार है। क्या हमें इसी तरह आगे बढ़ते रहना चाहिए?”
उसके चेहरे पर हंसी का भाव था। मैं इस लड़ाई में भी हार रही थी। मैंने हिम्मत दिखाने की कोशिश की, लेकिन मुझे यकीन था कि वह मेरी चाल समझ गया था। “महामहिम, मुझे यह विश्वास दिलाया गया था कि आपने प्रधानमंत्री प्रहस्त को विद्रोह को दबाने के लिए हर संभव प्रयास करने का लिखित आदेश दिया था। क्या आपको लगता है कि मुझे शिशुओं को मारना अच्छा लगता है?”
मैंने खिड़की से बाहर देखा और वरुण के बेड़े को समुद्र में ऊपर-नीचे होते हुए देखा। पाल खींचे हुए थे और समुद्री हवा कभी-कभी महल तक आनंद की हल्की- हल्की धुनें ला रही थी। मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं। मैं इतना थका हुआ था कि कुछ सोच भी नहीं पा रहा था। मुझे लगने लगा था कि रुद्रक से यह टकराव

बिल्कुल अनावश्यक था। क्या मैंने खुद को उजागर कर दिया था? मेरे संदेह, मेरी अनिर्णयता, मेरी कमजोरी? मैं किस बात से डर रहा था? क्या मेरे सैनिक मुझे कायर समझते थे जिसने अपने सौतेले भाई से राज्य छीन लिया और फिर अपने सैनिकों का इस्तेमाल अपनी प्रजा पर सामूहिक नरसंहार करने के लिए किया? शायद कल सब कुछ बदल जाएगा। मैंने हाथ के इशारे से रुद्रक को विदा कर दिया। वही घमंडी हाथ का इशारा जो मेरे भाई कुबेर ने उसी सिंहासन पर बैठते समय किया था। 'रावण, तुम बहुत जल्दी सीखते हो।' मुझे पता था कि मैं घमंडी हो रहा हूँ, लेकिन यह एक सुखद एहसास था।
भद्रा मुझे हर चार घंटे में शहर की खबरों से अवगत कराती थी। मैं महल के बगीचों में टहलने निकला और एक विशाल बरगद के पेड़ के नीचे मंदोदरी को देखा। मैं थोड़ा शर्मिंदा हुआ और वह कुछ पल तक मुझे घूरती रही। मैं हकलाया, खांसा और इस रास्ते पर आने के लिए खुद को कोसने लगा। मुझे राहत मिली जब उसने मुझसे बात शुरू नहीं की और मैं जल्दी से आगे बढ़ गया। मैंने अपनी बहन को मेरी तरफ मुस्कुराते हुए देखा लेकिन मुस्कान में छिपे व्यंग्य को नजरअंदाज करते हुए चलता रहा।
मुझे इस बात की राहत मिली कि शाम तक शहर में हालात कुछ हद तक सुधर गए थे और मैं अपनी माँ और बहन के साथ खाना खाने बैठ गई। भद्रा, जो खुद को अपरिहार्य साबित करने की कोशिश कर रहा था, शाही रसोई में इधर-उधर भागता रहा और आदेश चिल्लाता रहा।
मेरी माँ ने पहले बात की। “आप हमें अकेला छोड़ दें। इस भयानक दिखने वाले व्यक्ति का नाम क्या है, रावण?”
“भद्रा, बाहर इंतज़ार करो,” मैंने अपनी माँ की आवाज़ में मौजूद तीखेपन को नज़रअंदाज़ करते हुए कहा। भद्रा अनिच्छा से चला गया, लेकिन मुझे यकीन था कि वह चाबी के छेद से कान लगाकर देखेगा।
“मैंने सुना है कि तुमने सारी ज्यादतियों के लिए प्रहस्त को दोषी ठहराया है।” यह सुनकर मैं काफी हैरान रह गई जब उसने बिना अपना सिर थाली से उठाए यह बात कही।
नहीं, बात बस इतनी सी है…
“रावण, तुम अभी जवान हो। ये लोग शासन करने में अनुभवी हैं।”

उनकी सलाह मानो। यह मत सोचो कि एक छोटे से द्वीप के राजा बनने मात्र से ही तुम असुरों के अकेले रक्षक बन गए हो। तुम्हें बहुत कुछ सीखना है और शुक्रगुजार रहो कि तुम्हारे आस-पास योग्य सलाहकार हैं।
“माँ, आप मुझसे बच्चे जैसा व्यवहार कर रही हैं! मुझे उन मूर्खों से कोई सलाह नहीं चाहिए जिन्होंने अपने राज्य, मान-सम्मान, धन-दौलत और विरासत में मिली हर चीज़ देवताओं के हाथों खो दी। रुमाल जितने छोटे राज्यों पर शासन करने और देवताओं के आक्रमणों के निरंतर भय में जीने का जो भी अनुभव उन्होंने हासिल किया है, वह न तो असुरों के काम आया है और न ही इन घमंडी और खुद को सर्वज्ञानी समझने वाले मूर्खों के। आप यह मुझसे बेहतर जानती हैं।” “तुम मुझसे इस तरह क्यों बात कर रहे हो?”
“अब अपनी दुख-तकलीफों की कहानी मत सुनाओ। मुझे सब याद है। माँ, मैं तुमसे प्यार करता हूँ और तुम्हारा आदर करता हूँ, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि मैं हमेशा तुम्हारा बच्चा ही रहूँगा। फैसला मुझ पर छोड़ दो।”
मेरी बहन इस अचानक हुए गुस्से से स्तब्ध रह गई। उसने खाना बंद कर दिया और मेरी तरफ देखती रही, उसकी आँखों में आँसू भरे हुए थे। मेरी माँ खड़ी हो गईं। “बस करो! बोलने का कोई फायदा नहीं। सत्ता उसके सिर पर चढ़ गई है।” गुस्से ने मुझ पर काबू पा लिया। मैंने झट से मेज से कपड़ा खींच लिया। बर्तन, प्लेटें और मेज पर रखी हर चीज़ ज़मीन पर गिर पड़ी। नौकर चारों ओर से आकर बिखरे हुए खाने को साफ करने लगे। माँ गुस्से में कमरे से बाहर निकल गईं, और मेरी अनिच्छुक बहन को भी अपने साथ खींच ले गईं। मैं बेमन से अपने कमरे में चली गई, गुस्सा धीरे-धीरे शांत हो रहा था। मैंने रेशमी पर्दों पर हाथ पोंछे, दागों की परवाह किए बिना, फिर जूते-चप्पल उतारकर बड़े से पलंग पर लेट गई। मैंने इन लोगों का क्या बिगाड़ा था? मैंने अभी-अभी अपने सपने को जीना शुरू ही किया था और वो पहले ही कड़वा हो गया था। आखिर क्यों हर कोई मुझे घमंडी, अभिमानी और अत्याचारी समझता है? एक नौकर दीपक लेकर आया, लेकिन मैंने उसे मना कर दिया। मुझे अंधेरा आरामदायक और सुकून देने वाला लगा। शायद प्रहस्त के पास अंधेरे के प्रति मेरे इस नए लगाव को समझाने का कोई सिद्धांत हो - शायद किसी काली आत्मा का प्रतिबिंब?
मुझे आज ही इस बकवास का अंत करना था। मैं ऐसे हमेशा नहीं जी सकती थी – मेरे मंत्री मेरी पीठ पीछे बातें करते रहें; मेरी प्रजा डर से कांपती रहे; मेरी माँ हमेशा मुझे ताने मारती रहे और प्रहस्त का घमंड मुझे चिढ़ाता रहे। मुझे

कुछ करना था। रावण कायर नहीं था, इसलिए मैं पलंग से कूदकर भद्रा को पुकारने लगी। वह आश्चर्यजनक रूप से जल्दी प्रकट हुआ। क्या वह बाहर इंतज़ार कर रहा था? उसने मुझे बड़े सम्मान से प्रणाम किया और मुझे लगा जैसे वह मेरा मज़ाक उड़ा रहा हो, लेकिन मैंने इसे नज़रअंदाज़ कर दिया। शायद वह सिर्फ़ चापलूसी दिखा रहा था। हम असुर – हमेशा झुकने को तैयार रहते हैं। लेकिन अगर उसने प्रणाम न किया होता तो मुझे कैसा लगता? क्या मैं इसे अपमान नहीं समझती? “भद्रा… तुम कितने योद्धाओं का इंतजाम कर सकती हो? मेरा मतलब है, एक घंटे के भीतर?”
"महाराज, क्या आपको अच्छे तैराक चाहिए?"
"आपको कैसे पता चला कि मुझे तैराक चाहिए?"
“आपको ऐसे सैनिक चाहिए जो मार्शल आर्ट में माहिर हों, उबड़-खाबड़ समुद्र में तैर सकें और जहाजों के बेड़े पर हमला कर सकें। मुझे लगता है मैं ऐसे लोगों को जानता हूँ और महाराज, मैं उनमें से लगभग बीस का इंतजाम कर सकता हूँ।”
मैं एक पल के लिए चुप हो गया। जिस तरह से उसने मेरे मन की बात पढ़ ली, वह अजीब था। वह किस तरह का प्राणी था? कोई जादूगर? मुझे खुद भी यकीन नहीं था कि मैं यही चाहता था। यह योजना सरासर पागलपन थी। मुट्ठी भर सैनिकों के साथ जहाजों के बेड़े से मुकाबला करना मूर्खता की पराकाष्ठा थी। और मैं अब कोई भाड़े का सिपाही नहीं था। एक राजा इतना लापरवाह नहीं हो सकता था। मैंने कल्पना की कि जब प्रहस्त को पता चलेगा कि राजा आधी रात को आधे-अधूरे प्रशिक्षित सैनिकों के एक बेमेल दल के साथ दुनिया के सबसे खूंखार समुद्री डाकू से लड़ने के लिए निकल पड़ा है, तो उसका चेहरा कैसा होगा। यह सोचकर मेरे चेहरे पर हल्की सी मुस्कान आ गई। सिर्फ प्रहस्त को चिढ़ाने के लिए, यह आत्मघाती मिशन जायज था।
भद्रा ने एक बार फिर झुककर प्रणाम किया और चुपचाप कमरे से निकल गई। मैंने समुद्री लुटेरों के बेड़े की ओर देखा। उल्लास थम चुका था और जहाजों की बत्तियाँ बुझ चुकी थीं। मुझे उम्मीद थी कि समुद्री लुटेरे नशे में धुत होकर गहरी नींद में सो रहे होंगे। मुझे नहीं पता था कि समुद्री लुटेरों का सरदार वरुण किस जहाज में है। सबसे महत्वपूर्ण बात तो अचानक हमला करना था। मेरा राज्य इसी पर निर्भर था। मैं जानता था कि यह एक बहुत बड़ा जोखिम था और अगर मैं समुद्री लुटेरों के हाथों पकड़ा गया, तो लंका के द्वार उनके

लुटेरे गिरोहों के लिए खुल जाएँगे। मैं डरा हुआ भी था। यह एक सुन्न कर देने वाला, लकवा मार देने वाला डर था। समुद्री लुटेरों के सरदार द्वारा अपने हाथों में आने वाले बेबस लोगों को दी जाने वाली यातनाओं की कहानियाँ किंवदंती बन चुकी थीं। उसकी निर्ममता ने उसे देवों के समकक्ष बना दिया था। मैंने अपने देशवासियों और रिश्तेदारों के लिए चिंता जताकर अपने डर को तर्कसंगत बनाने की कोशिश की।
फिर वो भयानक भीतरी आवाज़ आई, ‘रावन, तुम खुद को भी धोखा दे सकते हो। कितने महान, कितने बहादुर! एक छोटे से गाँव के महान सम्राट, अपनी प्रजा के भाग्य के प्रति इतने चिंतित। तुम्हारे जैसे महान हृदय वाले राजा कितने होते हैं?’ मैं उस आवाज़ को कब शांत कर पाऊँगी? मुझे पता है… मुझे अपनी सुरक्षा की ज़्यादा चिंता है। मेरी कल्पना ने उन यातनाओं के चित्र बना दिए जो मुझे सहनी पड़ सकती थीं। मुझे वरुण से डर लगता है। क्या मैं दर्द सह पाऊँगी? उससे भी बढ़कर, क्या मैं लंका की कीचड़ भरी गलियों में नग्न अवस्था में घसीटे जाने की शर्म सहन कर पाऊँगी? मैं एक साधारण किसान के जीवन से संतुष्ट क्यों नहीं हो सकती?
रात के अंधेरे में चुपके से हम डोंगी पानी में उतारते और धीरे-धीरे जहाजों की ओर बढ़ते। जहाजों के डेक पानी से कम से कम बीस फीट ऊपर थे। हम बिना कोई आवाज़ किए उन तक कैसे पहुँचते? हमें सबसे पहले किस जहाज पर हमला करना चाहिए? मुख्य लक्ष्य वरुण को पकड़ना या मारना था। वहाँ छह जहाज लंगर डाले खड़े थे। समुद्री डाकुओं के सरदार का जहाज – एक तैरता हुआ महल – दूर से दिखाई दे रहा था। लेकिन वरुण, जो एक साधारण मछुआरा था, आसानी से अनुमान लगाने योग्य बनकर समुद्री डाकुओं का सरदार नहीं बना था। पूरी संभावना थी कि वह असुर सेना की ऐसी चाल की आशंका में किसी छोटे जहाज में छिपा हो। दुश्मन की स्थिति के बारे में जानकारी के बिना, यह एक मूर्खतापूर्ण युद्ध था जो हम लड़ने जा रहे थे। प्रहस्त को यह सुनकर दिल का दौरा पड़ जाएगा कि हमने पर्याप्त जानकारी और सैन्य सहायता के बिना इतना जोखिम भरा अभियान शुरू कर दिया है। क्या मुझे यह अभियान छोड़ देना चाहिए? मेरे पैर काँप रहे थे और मैं अपने हाथों को काँपते देखकर भयभीत था।
मेरे पीछे से खांसी की आवाज सुनकर मैं चौंक गया और मुड़कर देखा तो भद्रा का घिनौना चेहरा मेरे सामने था। यह आदमी मुझे बिना पता चले ही मार सकता था। क्या उसके पंजे बिल्ली जैसे थे?

“महाराज, आपकी प्रजा आपकी सेवा में तत्पर है।” अनुवाद: इस प्राणी समेत बीस लोग मेरे आदेश पर मरने को तैयार थे। लेकिन मुझे वो एहसास क्यों नहीं हो रहा था जो मुझे सेना का नेतृत्व करते समय होता था? मेरा पहला युद्ध बेहद रोमांचक था। मैं उसकी तुलना उस एहसास से कर सकता हूँ जो मुझे चौदह साल की उम्र में अपनी पहली प्रेमिका को झाड़ियों में ले जाते समय हुआ था। लेकिन मैं सैनिकों में बढ़ती उत्तेजना को महसूस कर सकता था। गर्म, उमस भरी हवा में उनके पसीने की गंध बगीचे से आती चमेली की खुशबू के साथ घुलमिल रही थी। चाँद बादलों के पीछे छिप गया था। मुझे अपने हाथों पर खून और डर की गंध आ रही थी। मैंने किसी अज्ञात देवता से प्रार्थना की, जिस पर मुझे विश्वास भी नहीं था, कि ये सैनिक, जो इतने बहादुर दिख रहे थे, मेरे डर को महसूस न कर सकें।
मैं चुपचाप कमरे से बाहर निकल गया, अपना सिर ऊंचा और कंधे सीधे रखते हुए। मैंने आत्मविश्वास से चलने की कोशिश की और पुराने योद्धाओं की तरह दिखने का प्रयास किया। क्या वे भी मेरी तरह डरे हुए थे? शायद, अगर मैं यहाँ से ज़िंदा बच निकला, तो हज़ारों साल बाद मेरे बारे में भी कहानियाँ सुनाई जाएँगी। मेरे भीतर की आवाज़ ने अपना क्रोध प्रकट किया। ‘आह, रावण, तुम ब्रह्मांड में एक नन्हा सा कण हो और आज तुम मरो या जीतो, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। तुम्हारी मृत्यु एक कीड़े की मृत्यु से भी कम मूल्यवान है। कीड़ा पक्षी का भोजन या मिट्टी की खाद बन जाता है। अगर तुम मरोगे, तो तुम्हारा शरीर जला दिया जाएगा, जिससे वातावरण में केवल व्यर्थ धुआँ ही फैलेगा। प्रकृति के लिए, तुम्हारे संघर्ष और कष्ट, तुम्हारी जीत, तुम्हारा जन्म और मृत्यु, सब महत्वहीन घटनाएँ हैं। वे समय के पहियों के नीचे कुचले जाने वाले छोटे पत्थर हैं। अगर तुम जीवित रहोगे, तो तुम अपरिहार्य अंत के एक दिन और करीब आ जाओगे। अगर तुम मरोगे, तो ब्रह्मांड वैसा ही रहेगा। रावण, तुम कितने मूर्ख हो…’
चट्टानों से टकराती लहरों ने मुझे अपने भीतर की उदासी भरी आवाज़ की सुस्त लोरी से जगा दिया। भद्रा और दुबले-पतले शरीर वाले एक और आदमी ने तीन डोंगी समुद्र में धकेल दीं। एक-एक करके, वे लोग कमर तक गहरे पानी में चलकर डोंगियों में बैठ गए। मैं स्तब्ध खड़ा था, उफनते समुद्र और अपने सामने आने वाली निश्चित मृत्यु को घूर रहा था। वरुण के जहाज किनारे के पास लंगर डाले खड़े थे, लेकिन अब वे क्षितिज के किनारे को छूते हुए प्रतीत हो रहे थे।

मैंने लहरों में कदम रखा और तुरंत डूब गया। लहरें मुझे वापस किनारे पर ले आईं। बड़बड़ाते और कोसते हुए, मैं उठा और फिर से डोंगियों की ओर बढ़ा। मैंने अपने सैनिकों के काले चेहरों पर दिख रही मुस्कान को अनदेखा करते हुए पहली डोंगी में छलांग लगा दी। तुरंत ही, चालक दल ने डोंगी को जहाजों की ओर चलाना शुरू कर दिया, और बाकी दो डोंगियाँ भी उनके पीछे-पीछे चलने लगीं। दूर कहीं गरज सुनाई दी। बिजली की एक तेज़ चमक ने अंधेरे क्षितिज के सामने समुद्री डाकू-राजा के जहाज की आकृति बना दी। समुद्र उफान पर आ गया। बाकी दो डोंगियाँ पीछे रह गईं, लेकिन वे भी पूरी ताकत से डोंगी चलाती रहीं। धीरे- धीरे, लहरों से जूझते हुए, हम जहाजों से कुछ ही गज की दूरी पर पहुँच गए। बिजली की एक और चमक ने आकाश और लहरों वाले पानी को रोशन कर दिया।
मैंने अपने लंगोटी के अलावा सारे कपड़े उतार दिए और तलवार को दांतों से दबाकर बर्फीले पानी में कूद गया और जहाजों की ओर तैरने लगा। मुझे अपने पीछे आ रहे सैनिकों के धीरे-धीरे तैरने की आवाज़ सुनाई दे रही थी। लहरों वाले पानी में जहाज़ हिल रहे थे और उनके पास रहना मेरे लिए नामुमकिन था। मैं उस जहाज़ की ओर तैरने लगा जिस पर मुझे लगा कि वरुण होगा। मानो इशारा मिलते ही, दो सैनिक जहाज़ के सीधे किनारे से डेक की ओर चढ़ने लगे। उन्हें लकड़ी के तख्तों पर पकड़ बनाने के लिए खास पंजों का इस्तेमाल करते देखना अद्भुत था। वे लगभग छिपकलियों की तरह तेज़ी से ऊपर चढ़ रहे थे। लेकिन दो रस्सियाँ नीचे आती हुई दिखाई दीं, मानो अनंत काल बीत गया हो। मैं कूदा और एक रस्सी पकड़कर चढ़ने लगा।
भद्रा दूसरी रस्सी पर उसके पीछे-पीछे आई। जल्दी ही,
बाकी लोग भी पीछे-पीछे आए। मैं सबसे पहले डेक पर पहुँचा और जो नज़ारा मैंने देखा वो अद्भुत था।
मेरा दिल दहल गया। सबसे पहले ऊपर चढ़ने वाले दो बहादुर आदमी,
वे मृत अवस्था में वहीं पड़े थे – उनके शव डेक पर बिखरे हुए थे।
“निकल जाओ! ये जाल है!” मैंने चिल्लाया। फिर अचानक बारिश शुरू हो गई, एक भयंकर तूफान आया और जहाज बुरी तरह डगमगाने लगा। मेरे कुछ सैनिक समुद्र में गिर गए, लेकिन बाकी मेरे साथ डेक पर आ गए। चारों ओर सन्नाटा छा गया, बस तेज़ हवा की आवाज़ गूंज रही थी। हम अपनी तलवारें खींचे खड़े थे। लगभग नग्न और पूरी तरह भीगे हुए वहाँ खड़े रहना, मौत का इंतज़ार करना, हास्यास्पद था।

बारिश ने खून के धब्बे धो दिए। और मेरे अंदर जो झूठी हिम्मत थी, वो भी धुल गई। ‘हे भगवान! मैंने क्या कर दिया?’
फिर अंधेरा शैतानी हंसी से गूंज उठा। बिजली की एक चमक में मैंने देखा कि हम भारी हथियारों से लैस समुद्री लुटेरों से घिरे हुए थे। हमारी संख्या बहुत कम थी और बचने का कोई रास्ता नहीं था। मैंने अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति से छलांग लगाई और अपनी तलवार एक खूंखार समुद्री लुटेरे के पेट में घोंप दी। इससे मेरे सैनिकों में जोश भर गया और हिलते हुए डेक पर युद्ध छिड़ गया। मैं बेपरवाह था और आश्चर्यजनक रूप से मेरा डर मुझे छोड़कर भाग गया। मैंने पूरे दिल से लड़ाई लड़ी और मैंने कितने लोगों को मारा, इसकी गिनती भूल गया। लकड़ी का डेक खून से लथपथ था और लटकती हुई पाल की रस्सियों ने खतरे को और बढ़ा दिया था। मुझे तीन बार चोट लगी और बहुत खून बह रहा था, लेकिन यह मेरी सबसे छोटी चिंता थी। मुझे धीरे-धीरे एहसास हुआ कि हम जहाज पर कब्जा कर सकते हैं। हमारी हैरानी की बात यह थी कि हमने देखा कि दूसरे जहाज करीब आ गए थे। समुद्री लुटेरे उग्र समुद्र में कूद रहे थे और पागलों की तरह हमारे जहाज की ओर तैर रहे थे। अगर वे हम तक पहुँच गए, तो हमारा पूर्ण विनाश निश्चित था।
वह कमीना वरुण कहाँ था? काश, मैं उसे पकड़ पाता! दूसरे जहाजों के पहले समुद्री डाकू हमारे डेक पर चढ़ने लगे। मैंने एक को मुँह पर लात मारी और उसे उफनते समुद्र में गिरते देखा। शायद वरुण निचले कमरे में था। मैंने सीढ़ियों की ओर जाने वाला दरवाजा लात मारकर खोला और निचले कमरे में कूद गया। अलंकृत दरवाजे बंद थे और दरारों से हल्की रोशनी आ रही थी। जहाज की घुमावदार दीवारों पर भयानक परछाइयाँ खेल रही थीं। डेक पर हो रही लड़ाई की आवाजें मुझ तक हल्की-हल्की पहुँच रही थीं। क्या वरुण अंदर था?
मैंने लात मारकर दरवाजा खोला और तलवार को एक झटके में घुमाया। कमरा खाली था। मैंने उड़ते हुए रेशमी पर्दों में तलवार घुसा दी। एक खोजी कुत्ते की तरह, मैं यह देखने के लिए फर्श पर गिर पड़ा कि कहीं वह कायर बिस्तर के नीचे तो नहीं छिपा है। तभी एक ठंडी, लोहे की धार मेरी गर्दन के पिछले हिस्से को छू गई।
“खैर, असुरों के सम्राट इस बेचारे मछुआरे के कक्ष में शाही दर्शन के लिए आए हैं। महाराज, मैं आपका आभारी हूँ।”

मैंने ऊपर देखने की कोशिश की ताकि उस घृणित समुद्री डाकू-राजा का चेहरा देख सकूँ, लेकिन उसने अपने लकड़ी के जूतों से मेरे चेहरे पर लात मारी। मेरी नाक से खून बहने लगा और ज़मीन पर एक बड़ा धब्बा बन गया। मेरा डर फिर लौट आया। फँस गया! यही अंत था।
"महाराज, आपने मुझे आश्चर्यचकित कर दिया। आप अपने अतिथि के कक्ष में धोती पहनकर आते हैं? क्या यह मुख्य भूमि का कोई असुर रिवाज है या आप अपनी प्रजा के लिए एक नया फैशन स्टेटमेंट बना रहे हैं जिसका वे अनुकरण कर सकें?" वरुण और मुझे आश्चर्यचकित करते हुए, मैंने फुर्ती से उसके टखनों पर लात मारी और उसी क्षण के आश्चर्य में मैं अपने पैरों पर खड़ा हो गया। मैं क्रोध से जल रहा था। काश मैं उसे मार पाता या उससे भी बेहतर, उसे पकड़ पाता, तो न केवल मेरा राज्य बचता बल्कि मेरा चकनाचूर स्वाभिमान भी वापस मिल जाता। मैंने अपनी तलवार से उस पर जोरदार प्रहार करने की कोशिश की, लेकिन उसने आसानी से उसे रोक दिया। अपनी कुंठा और दबे हुए क्रोध से प्रेरित होकर, मैंने लड़ना शुरू कर दिया। लेकिन लगभग चालीस वर्ष के वरुण ने मेरे वारों को बड़ी सहजता से झेला, मानो उन्हें कोई परवाह ही न हो। उनकी तलवारबाजी बेजोड़ थी और वे अपने चरम पर महाबली की तरह थे। मेरी बीस साल की युवावस्था और ऊर्जा उस अनुभवी योद्धा के शांत आत्मविश्वास और संयम के आगे कुछ भी नहीं थी।
“ओह अच्छा, अच्छा…लेकिन तुम्हें और अभ्यास की ज़रूरत है…नहीं, उस तरह नहीं, बाईं ओर से वार करने की कोशिश करो – ठीक है, यह बेहतर था – लेकिन तुम्हें और ताकत लगानी होगी…” उसकी नीरस आवाज़ चिढ़ाने वाली थी और मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं किसी बच्चे को मार्शल आर्ट का प्रशिक्षण दे रहा हूँ। उसने कई बार मेरा खून बहाया था और मैं उसे एक बार भी छू नहीं पाया था। मेरे घावों से फिर से खून बहने लगा और मुझे चक्कर आने लगे। सब कुछ खो गया था। मैं हताश था।
“वरुणा, तुम समुद्री लुटेरे, डटे रहो वरना तुम्हारा सिर कट जाएगा!”
मैंने मुड़कर देखा तो आश्चर्य से द्वार पर दो धनुर्धारी खड़े थे। मुझे अपने चाचा मारीच और भाई कुंभकर्ण को पहचानने में कुछ ही क्षण लगे। उन्होंने वरुण की ओर तीर ताने और पहली बार मैंने उन्हें अपना आपा खोते देखा। इससे पहले कि मैं कुछ कर पाता, उन्होंने खुली खिड़की से समुद्र में कूदने की कोशिश की। मैंने उनके पैर पकड़ लिए और वे मुंह के बल ज़मीन पर गिर

पड़े। इससे पहले कि वरुण मुझे छुड़ा पाते, कुंभ उन पर टूट पड़े और हम दोनों ने मिलकर उन्हें नीचे गिरा दिया और मारीच द्वारा फाड़े गए रेशमी पर्दों से उनके हाथ पीछे बांध दिए।
"आखिर आप लोग ठीक समय पर कैसे पहुँच गए?" मैं इन मुक्तिदाता नायकों के परीकथा जैसे आगमन पर आश्चर्यचकित हुए बिना नहीं रह सका।
मारीचा हांफ रहा था, लेकिन इससे उसकी कहानी रुकी नहीं। “आज सुबह जब आपने हमारे साथ योजनाओं पर चर्चा की, तो मैं इसके बारे में सोचता रहा। जितना ज़्यादा मैं सोचता, उतना ही यह मुझे लापरवाह और मूर्खतापूर्ण लगता। मैं आपको इस बेवकूफी भरे मिशन को शुरू न करने की चेतावनी देने आपके कमरे में आया था। लेकिन आप गायब थे। यह अनुमान लगाने के लिए प्रहस्त जैसे बुद्धिमान होने की ज़रूरत नहीं थी कि आप कहाँ गए थे। खासकर देर रात की सैर के लिए तो बिल्कुल नहीं। मैंने इस मूर्ख को जगाया, फिर पागल कुत्ते की तरह भागा और युद्ध का बिगुल बजाया। मैं केवल कुछ सौ सैनिकों को ही इकट्ठा कर सका। उनमें से आधे नशे में धुत थे। ये असुर… फिर हम पागलों की तरह चप्पू चलाते हुए उस मनोरंजक सर्कस को देखने गए जो आपने खुले समुद्र में लगाया था।” "क्या हमने कोई सैनिक खोया?"
“क्या आपको लगता है कि वरुण के जहाज में हमारा स्वागत पान और मिठाई से किया गया था? हमने दर्जनों लोग खो दिए और उनमें से आधे तो युद्ध के घावों से नहीं बल्कि इन अशांत जल में डूबने से मरे। मैंने सुना है कि आपने भी कुछ लोग खोए हैं।”
"जब मैंने महान समुद्री डाकू-राजा के साथ अपनी रोचक बातचीत शुरू की, तब गिनती छह थी।"
मुझे खेद है, लेकिन मुझे लगता है कि आपका पालतू भद्रा डूब गया है। मुख्य सैनिक वायस्थ ने उसे गिरते हुए देखा था और उसके बाद से उसे किसी ने नहीं देखा। इन तूफानी समुद्रों में मुझे लगता है कि वह अब तक चीन पहुँच गया होता।
"भाई, हम इस समुद्री डाकू का क्या करें?"
“उसके हाथ-पैर बांधकर उसे समुद्र में फेंक दो – समुद्र के राजा के लिए यही उचित अंत होगा।” मारीचा ने बिना एक पल भी संकोच किए कहा।

“उसके साथ यही होना चाहिए। नहीं, रुको। चलो उसे लंका ले चलते हैं। चलो उसे उसकी धोती में ही सड़कों पर घसीटते हैं।” मैं जोश में आ रहा था। “मेरे राज्य के लोग उस आदमी को देखें जो उनकी मुसीबतों के लिए जिम्मेदार है।” “और उन्हें रावण के राजा को भी देखने दो, जिसने उन्हें उनके दुखों से मुक्ति दिलाई। रावण, समुद्री डाकुओं का संहारक और सात समुद्रों का राजा,” कुंभा ने मुस्कुराते हुए कहा।
मारीचा ने हम दोनों को घूरकर देखा। फिर अचानक उसने कहा, "अगर तुम समुद्री डाकुओं के राजा को समुद्र माता को भेंट कर दो तो बेहतर होगा।"
मैंने इस सलाह को अनसुना कर दिया। लेकिन, अगर मुझे अपना जीवन दोबारा लिखने का मौका मिले, तो शायद मैं उसी क्षण से शुरुआत करूँ और मरीच और कुंभ से वरुण को उठाकर समुद्र में फेंकने में मदद करने के लिए कहूँ।

20 संध्या प्रार्थना

रावण
मुझे अपने राजकक्ष में जाना था, पर मेरी हिम्मत नहीं हुई। वह वहीं मेरा इंतज़ार कर रही होगी। आज मेरी शादी थी। इतने सारे लोगों में से, मैंने उस कठोर स्वभाव वाली मंदोदरी से शादी की। मुझे पता था कि यह होना ही था, पर मैं इसे जितना हो सके टालना चाहता था। लेकिन जब राजकविता त्रिकोटा की गलियों में पहुंची, तो मैं खुशी से झूम उठा। जीत इंसान को मूर्ख बना देती है। और इस हफ्ते इतनी तेजी से कई घटनाएँ घटीं कि मुझे सोचने का भी समय नहीं मिला।
हमें पहले ही खबर मिल चुकी थी कि लंका के पराक्रमी राजा ने समुद्री लुटेरों के सरदार वरुण को पकड़ लिया है। लुटेरों को सिर्फ़ धोती में छोड़ दिया गया, उन पर कीचड़ और गंदगी मल दी गई, थूका गया, बेरहमी से पीटा गया और फिर उन्हें अपने गिरे हुए राजा के पीछे एक भयानक जुलूस में चलाया गया। हज़ारों लोग सड़कों पर खड़े होकर विजय के नारे लगा रहे थे। मैं जुलूस के आगे चल रहा था, उम्मीद कर रहा था कि मैं वीर दिखूं। बीच-बीच में मैं जयकार करती भीड़ की ओर अपनी तलवार उठाता और ऐसा लगता जैसे उनमें बिजली सी दौड़ रही हो। मैं उनका वीर राजा था जिसने लंका को उस खूंखार समुद्री लुटेरे के चंगुल से बचाया था। मेरा दिल गर्व से भर गया। मैंने वरुण के चेहरे पर वार किया, जिससे उसकी नाक से खून बहने लगा। आह, कितना अच्छा लगा! मैंने उसे फिर से मारा और अपनी तलवार उठाई। भीड़ चिल्लाने लगी, "रावण अमर रहे, हमारे राजा अमर रहें!" कोई बेचारा आकर मेरे पैरों पर गिर पड़ा। मेरे एक सैनिक ने उसे लात मारी और भीड़ हंस पड़ी। मेरे पास खड़े किसी ने हूटिंग की। मैंने भीड़ की ओर देखा और पूरा समूह सहम गया। मैं उनके डर को महसूस कर सकता था। जिन

राजनीतिक तनाव को भांप लिया था? जब तक वह पागल कुत्ते की तरह जंजीरों में जकड़ा था, तब तक इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। जहाँ तक मेरा सवाल था, वह अपनी इस मुस्कान को तब तक छुपाए रख सकता था जब तक मेरी सेना का कोई नीच सिपाही उसे देख न ले और उसे एक जोरदार मुक्के से मिटाने का फैसला न कर ले। मुझे महल के बाहर उत्सवों की आवाज़ सुनाई दे रही थी। असुरों के लिए शराब पीने का एक और बहाना। उन्हें जश्न मनाने दो। मेरा दिल उनके लिए तरस रहा था। आखिरकार, मैं अपनी प्रजा की उम्मीदों पर खरा उतरा था। मैं खुद को यह याद नहीं दिलाना चाहता था कि अगर मारीच सही समय पर न आता, तो शार्क मुझे खा रही होतीं... मेरे वीरता के नाम पर बस इतना ही।
“मेरे हीरो, क्या तुमने आज के अपने वीरतापूर्ण कार्यों का कोटा पूरा कर लिया?” मेरी माँ मेरी तरफ मुस्कुरा रही थी और मैं जाकर उन्हें गले लगा लिया।
“अरे मूर्ख! अगर तुम मारे जाते तो क्या होता?” मुझे महसूस हुआ कि उसके आंसू मेरे नंगे कंधों पर टपक रहे हैं। मैंने उसे और कसकर गले लगा लिया। उसने मुझे थोड़ी दूरी पर रखा और मेरे चेहरे को ध्यान से देखा। “तुम अपने पिता रावण जैसे दिखते हो।”
मैं एकदम सुन्न पड़ गया। मैं बिल्कुल भी उसके जैसा नहीं दिखना चाहता था। इससे बेहतर तो मैं रथ से कुचली हुई बिल्ली जैसा दिखना पसंद करता। मुझे लगता है उसने भी यह महसूस कर लिया था। चारों ओर गहरी खामोशी छा गई। मैंने कुछ कदम आगे बढ़ाए और एकदम रुक गया। वहाँ मंदोदरी एक खंभे से टेक लगाकर खड़ी थी और उसी भावहीन, भावहीन, तीव्र नज़र से मुझे देख रही थी। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ। 'जाओ, जाओ और उसके होठों पर चुंबन करो। वीरता दिखाने के बाद नायकों को यही करना चाहिए। नायिका को चूमो और अगर घोड़ा मिल जाए तो उसे उठाकर सूर्यास्त की ओर चले जाओ।' इसके बजाय, मैं अटक गया।
“ये क्या है, प्रेमियों की मुलाकात? आँखों से मौन संवाद?” मेरी बहन, सूर्पनखा की शैतानी आवाज़ ने सन्नाटा तोड़ दिया। मैं मुड़ी और उसका कान पकड़ लिया, जिससे वह चीख पड़ी।
“अगर तुमने और बकवास की तो मैं आज तुम्हें पहले शराबी असुर से शादी करवा दूँगा,” मैंने बनावटी गुस्से में चिल्लाकर कहा। मंदोदरी से बात करने की मुसीबत से बचकर मुझे राहत मिली। मैंने चुपके से देखा कि कहीं वो शरमा तो नहीं रही या शर्म से लाल तो नहीं हो रही। ऐसा कुछ नहीं था। बस उसकी वो तीखी

निगाह। वो चुभती निगाह जो मेरी आत्मा को भेद गई। क्या वो मेरे गहरे राज़ पढ़ सकती थी? ‘हे भगवान, अगर मैंने इस प्राणी से शादी कर ली तो वो मुझे घूरती ही रहेगी और एक दिन मैं राख हो जाऊँगा।’
अचानक मुझे लगा कि मेरी निजता भंग हो गई है। मैं समुद्री लुटेरों के राजा के बारे में भूल ही गया था। वह अपने होठों पर वही घमंडी मुस्कान लिए वहीं खड़ा था, अपने सामने घट रहे दृश्य को निहार रहा था। जंजीरों में जकड़ा और लगभग नग्न, उसे अपनी दुर्दशा की कोई परवाह नहीं थी। कोई मंत्री या अधिकारी इस कैदी को उसकी अंधेरी कोठरी में क्यों नहीं ले गया? सारे निकम्मे असुर अपने राजा की जीत का जश्न मना रहे थे और अपने राजा और उसके कैदी को भूल गए थे। मैंने ज़ोर से चिल्लाया। पाँच मिनट बाद कोई आया और उसने झुककर अभिवादन किया। मैं उसकी काली पीठ पर लात मारना चाहता था, लेकिन इस कुशल असुर को उसकी तत्परता के लिए दंडित करना अन्याय होता। मैंने उससे कहा कि वह समुद्री लुटेरों के राजा को उन अंधेरी, भूमिगत कोठरियों में से एक में ले जाए जहाँ कुबेर अपने विरोधियों को रखा करता था।
मेरे अंगरक्षक जिस आदरपूर्वक समुद्री डाकू राजा के साथ व्यवहार कर रहे थे, उसे देखकर मुझे उल्टी आने लगी। जंजीरों को छोड़कर वरुण ऐसे लग रहे थे मानो किसी राजकीय यात्रा पर हों। मेरी सबसे बड़ी चुनौती इन असुरों को अनुशासित करना होगा। ये तो बच्चों की तरह व्यवहार कर रहे थे। कुछ घंटे पहले मुझ पर पूर्ण विश्वास करते हुए अपनी जान जोखिम में डालने वाले उन बीस सैनिकों की तस्वीरें मेरे दिमाग में कौंध गईं। कितने मर गए? मैंने कितनी विधवाएँ पैदा कीं? शहर की दीवारों के बाहर बिखरी उन झोपड़ियों में कितने बच्चे आने वाले कई दिनों तक अपने पिताओं के लिए रोते-रोते सो जाएँगे? कल मैं अपने उन सैनिकों की झोपड़ियों में जाऊँगा जो लापता हो गए थे या मारे गए थे। मैं सुनिश्चित करूँगा कि उनके बच्चे भूखे न मरें; न ही विधवाएँ वेश्यावृत्ति के दुष्चक्र में फँसें। मुझ पर भरोसा करने और अपने प्राणों का बलिदान देने के लिए मैं उनका इतना ऋणी था। 'मैं कितना महान व्यक्ति था। लेकिन पत्नियों का क्या? अगर मेरे अंदर का यह मसखरा ऐसे बेतुके विचार मेरे मन में डालता रहेगा तो मैं कभी खुश कैसे रह पाऊँगा? मुझे कम से कम कभी-कभी तो महान और नेक महसूस करने का अधिकार था।'
और भद्रा कहाँ था? वह तो एक रहस्य ही था। क्या उसकी मृत्यु इतनी आसानी से हो सकती थी? मुझे अपने प्रिय सेवक की मृत्यु का दोष अपने ऊपर महसूस हो रहा

था। सूरज उग आया था और कल की बारिश के बाद सब कुछ ताज़ा और धुला हुआ लग रहा था। पेड़ों पर पक्षी चहचहा रहे थे और बगीचे में फूलों के आसपास तितलियाँ भिनभिना रही थीं। मैंने खिड़की से बाहर देखा तो लहराते नारियल के पेड़ों के ऊपर चीलें मंडरा रही थीं। कौवे कांव-कांव कर रहे थे और दूर से आती महिलाओं के कपड़े धोने की आवाज़ें एक लय में मिल रही थीं। सब कुछ ठीक था और यह उन अद्भुत पलों में से एक था जब सारे विचार थम गए और मन में एक सुखद खालीपन छा गया।
“प्रार्थना करो। अपनी आत्मा और उन लोगों के लिए प्रार्थना करो जिन्हें तुमने मार डाला है। और तुम्हें शांति मिलेगी, मेरे राजा।”
“चुप रहो… मुझे मत बताओ कि मुझे क्या करना है…” मुझे पता नहीं था कि मंदोदरी पास ही खड़ी मुझे अपनी तीखी निगाहों से देख रही थी। उसकी आवाज़ सुनकर मैं चौंक गई। मैं प्रकृति में इतनी मग्न थी। अब मेरा मन कर रहा था कि उसका गला पकड़कर उसकी जान ले लूँ। क्या मैंने इस संस्कारी औरत से सलाह माँगी थी? उसकी हिम्मत कैसे हुई मेरी दुनिया में आकर बकवास करने की? उसका चेहरा पीला पड़ गया था और उसके गले में सिसकी अटक गई थी। मुझे अपने इस गुस्से पर शर्म आ रही थी और मेरा सारा गुस्सा शांत हो गया था। मैं कभी ऐसी स्थिति में नहीं थी और मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूँ। क्या मुझे माफ़ी माँगनी चाहिए? पर वह माफ़ी की हकदार थी। मेरा गुस्सा फिर से लौट आया।
“मुझे खेद है…” उसने कहा।
“ठीक है, ठीक है…” मैं यह कहना चाहता था कि उसे यही मिलना चाहिए था, लेकिन मैंने समझदारी से चुप रहना ही बेहतर समझा।
“महामहिम, दरबार लग गया है,” गार्ड ने ज़ोर से चिल्लाकर कहा। मुझे राहत मिली और मैं आगे बढ़ गया, मेरे दिमाग में प्रहस्त और अन्य लोगों द्वारा पूछे जाने वाले संभावित सवालों और उनसे निपटने के सर्वोत्तम तरीकों के बारे में विचार चल रहे थे।
दरबार पूरी तरह से भरा हुआ था और द्वार पर ऊंघता हुआ पहरेदार मेरे गुजरते ही एकदम चौकन्ना हो गया। मुझे थोड़ा बुरा लगा कि मुझे खांसकर उसे अपनी उपस्थिति का आगाह करना पड़ा, तब जाकर उसने सम्मान दिखाया। मेरा मन कर रहा था कि उस पहरेदार को लात मारकर उसके अक्ल ठिकाने लगा दूं। लेकिन फिर तो मेरी पूरी सेना ही लात खा बैठेगी। वैसे भी, मुझे अपने सैनिकों का

प्रशिक्षक बनने से कहीं ज़्यादा ज़रूरी काम थे। अब मेरी प्राथमिकता थी अपनी सत्ता को मज़बूत करना और परिषद को हावी न होने देना। मुझे पता था कि प्रहस्त मेरे पीछे साज़िश रच रहा होगा क्योंकि समुद्री लुटेरों के राजा वरुण पर मेरी शानदार जीत से वह बहुत क्रोधित था। हो सकता है कि वह समुद्री लुटेरे से निपटने के बारे में अपने बेतुके विचार भी थोपे और असुर आचार संहिता पर किसी अनजान किताब से उद्धरण दे। मैंने निश्चय किया कि यदि वह किसी प्राचीन असुर ऋषि का हवाला देते हुए कहे कि मुझे वरुण से एक अतिथि राजा के रूप में पूरे राजकीय सम्मान के साथ विदा होना है, तो मैं सुनिश्चित करूँगा कि समुद्री लुटेरों के सरदारों को यथासंभव अपमानित किया जाए, सड़कों पर घसीटा जाए, सार्वजनिक रूप से कोड़े मारे जाएँ और अंत में उन्हें सार्वजनिक रूप से कष्टदायी, धीमी और दर्दनाक मौत के लिए छोड़ दिया जाए। मैं चिंतित था और अनिश्चित था कि परिषद के बाकी सदस्य कैसी प्रतिक्रिया देंगे। मुझे इस दिखावटी परिषद से छुटकारा पाना ही था। मुझे अपने आचरण के बारे में सलाह देने के लिए उनकी क्या आवश्यकता थी?
जैसे ही मैं दरबार में दाखिल हुई, मैंने चारों ओर देखा। कमरे के कोने में सजी कुर्सी पर एक सजावटी छतरी लगी थी। उसकी झालर से अलग-अलग आकार के मोती और हीरे लटक रहे थे। कुर्सी की पीठ पर एक विशाल हीरा जड़ा था। यह लंका के राजा का राजसिंहासन था। मुझे थोड़ा अजीब लगा कि इसे अपना सिंहासन मानना मेरे लिए स्वाभाविक नहीं था। जी हाँ, यही था वो सिंहासन। वही सिंहासन जिस पर मेरे सौतेले भाई का मोटा शरीर टिका हुआ था। जहाँ वह घमंडी महाराज अपने हिसाब से न्याय करते थे। मैं वहीं स्तब्ध रह गई। मैं उस दिन से बहुत दूर आ चुकी थी, जब मैं अपनी माँ और भाई-बहनों के साथ कुबेर के सामने भीख मांगने गई थी, जो इसी सिंहासन पर बैठे थे, और उन्होंने हमारे पैरों पर कुछ सिक्के फेंके थे और हाथ हिलाकर हमें भिखारियों की तरह विदा कर दिया था।
मैं सिंहासन तक जाने वाली सीढ़ियों पर चढ़ गया।
“रुको!” विशाल दरबार हॉल में यह चीख गूंजी। मैं जल्दी से पीछे मुड़ा और मेरे कदम लड़खड़ा गए। तभी मैंने प्रहस्त को हाथ बांधे खड़े देखा। मेरी नसों में खून दौड़ गया। सहज ही मैंने अपनी तलवार निकाल ली। जो मंत्री बैठे थे, वे अपनी सीटों से उठ खड़े हुए। ‘वे बैठे ही क्यों थे? क्या उन्हें मेरे, राजा के, कमरे में प्रवेश करने पर खड़ा नहीं होना चाहिए था?’ मेरे होंठ कांप रहे थे और मुझे यकीन था कि मेरी आंखें खून की तरह लाल हो गई थीं।

मैंने अपने जीवन में इतना गुस्सा कभी महसूस नहीं किया था। प्रहस्त, मेरे प्रधानमंत्री, ने मुझे मेरे ही सिंहासन को छूने से रोक दिया था। अगर मुझे भविष्य देखने की शक्ति प्राप्त होती, तो मैं उन्हें धन्यवाद देता और महल के बाहर इंतजार कर रही आजादी की ओर चल पड़ता। मुझे तब चले जाना चाहिए था, शासन प्रहस्त जैसे विद्वानों को सौंपकर, और संगीत में अपनी सच्ची रुचि को आगे बढ़ाना चाहिए था। अपनी प्रिय प्रजा पर मृत्यु और अभिशाप लाने के बजाय, मैं अपने द्वारा रचित रागों से दुनिया को घंटों सुखद यादें दे सकता था। लेकिन उस सुनहरे सिंहासन का चुंबकीय आकर्षण दुनिया में किसी और चीज से मेल नहीं खाता।
मैं वहीं जड़वत खड़ा रहा और फिर धीरे से अपनी तलवार उठाई और उसकी नुकीली नोक प्रहस्त की छाती पर रख दी। मैंने एक भौंह ऊपर उठाई और उसे घूरकर देखा। वह बिना हिले-डुले वहीं खड़ा रहा। कमरे में तनाव साफ महसूस हो रहा था। कई लोगों ने तलवारें और खंजर उठा लिए थे।
“महाराज, आपका राज्याभिषेक समारोह अभी संपन्न नहीं हुआ है। तब तक आप सिंहासन को स्पर्श नहीं कर सकते। आप अपने राजमुकुट के बिना सिंहासन पर नहीं बैठ सकते। हमारी परंपरा यही कहती है।” प्रहस्त ने मुझसे शांत स्वर में कहा। कमरे का तनाव कम हो गया और मुझे मूर्खता का एहसास हुआ। मेरा मन किया कि मैं अपना सिर पीट लूँ। मैंने चारों ओर देखा और मेरी नज़र मारीच पर पड़ी। उनके चेहरे पर एक असामान्य सी शिकन थी। रुद्रक के चेहरे पर तिरस्कार का भाव था और जंबुमाली और माल्यवान सुमाली से कुछ चर्चा कर रहे थे। धूम्रक्ष और वज्रधम्स्त्र सबसे दाहिने कोने पर स्थित गोल स्तंभ के पास खड़े थे और घृणा से मुझे घूर रहे थे। मुझे नहीं पता था कि मैंने ऐसा क्या किया था कि वे मुझसे घृणा करते थे। मैंने बैठने के लिए एक उपयुक्त कुर्सी ढूँढी और मेरी निराशा यह थी कि वहाँ केवल एक जर्जर पुरानी लकड़ी की कुर्सी ही बची थी। कुछ अनिच्छा से, मैं उस कुर्सी पर बैठ गया, मुझे आधा डर था कि कोई कीड़ा मुझे काट लेगा। मारीच ने मेरी दुर्दशा देखी और अपनी कुर्सी उठाकर मुझे देने की कोशिश की। मैंने उसे हाथ हिलाकर विदा किया और चरमराती कुर्सी पर बैठ गया।
तुरंत ही, प्रहस्त ने अपनी कठोर और कर्कश आवाज में कहा, "परिषद की बैठक शुरू होती है।"

“अरे रुको, क्या मैंने इस मूर्ख परिषद को भंग नहीं किया था? फिर यह बेवकूफ ऐसे क्यों बर्ताव कर रहा था जैसे हम पुराने जमाने की तरह पूरे दिन यहाँ बैठे रहेंगे, बस बातें करते रहेंगे और कुछ नहीं करेंगे? परिषद, धिक्कार है! अगर मैंने अभी कार्रवाई नहीं की, तो मैं असुर जाति का सरपंच बन जाऊंगा, राजा नहीं।”
“क्या आपको यह बात याद नहीं है कि परिषद को हमारे इस द्वीप पर कदम रखने से बहुत पहले ही भंग कर दिया गया था? अगली बार अगर मैंने आपमें से किसी को परिषद के बारे में बात करते सुना, तो आप मुख्य भूमि के लिए अगली नाव पकड़ सकते हैं और बूढ़े सम्राट के साथ उनके पागलपन भरे कारनामों में शामिल हो सकते हैं। मतलब, अगर मेरा मूड अच्छा रहा तो। भगवान न करे अगर मेरा मूड खराब हुआ। तब तो आप महल के चारों ओर बनी खाई में मगरमच्छों का भोजन बनने की उम्मीद कर सकते हैं। क्या मेरी बात आपको ठीक से समझ आ गई?”
“लेकिन…” प्रहस्त का चेहरा लाल हो गया था और जंबुमाली कुछ कहने की कोशिश कर रही थी।
“और मुझे इस बात की परवाह नहीं कि इससे दर्जनों असुर नियमों और रीति- रिवाजों का उल्लंघन होता है। मैं अपने नियम खुद बनाता हूँ। मैं अपने बनाए नियमों के अनुसार ही कार्य करूँगा। मैं इन हज़ार साल पुरानी परंपराओं से तंग आ चुका हूँ। अपनी बात साबित करने के लिए, मैं कुबेर द्वारा छोड़े गए सिंहासन पर बैठूँगा। मुझे किसी भी रस्म की परवाह नहीं है। मैं किसी भी असुर अंधविश्वास का ऋणी नहीं हूँ। यह एक नई दुनिया है, एक आधुनिक दुनिया है, और पुराने भारत के विश्वास और अंधविश्वास हमारी प्रगति में बाधा न बनें।”
मेरी ऊर्जा क्षीण होने से पहले ही, मैंने जानबूझकर पुरानी लकड़ी की कुर्सी उठाई और उसे पास की दीवार पर फेंक दिया। वह ज़ोरदार आवाज़ के साथ टूट गई और मैंने सोचा कि यह एक प्रतीकात्मक घटना है। मैं तेज़ी से मुड़ा और सिंहासन की ओर बढ़ा। मैं अपने परिषद और मंत्रियों की स्तब्ध साँसें सुन सकता था। मैं शान से बैठ गया। मुझे थोड़ी घबराहट हुई, फिर एक सिहरन और रोमांच मेरे शरीर में दौड़ गया। मैं धीरे-धीरे पीछे की ओर झुक गया जब तक कि मेरा सिर सिरहाने से न छू गया। मेरे हाथ बाजूबंद पर जड़े विशाल हीरों की आकृतियों से खेल रहे थे। समुद्र से ठंडी हवा चल रही थी और महल के बाहर से गलियों की आवाज़ें आ रही थीं। दुनिया में सब ठीक था। और दुनिया चलती रहती है चाहे

रावण किसी समारोह के साथ या बिना किसी समारोह के उस भव्य कुर्सी पर बैठे। कुछ क्षण पहले मुझे जो अजीब सी खुशी महसूस हुई थी, वह गायब हो गई और उसकी जगह खालीपन ने ले ली। मेरे आदमियों के डूबने और उनके घरों के दिल दहला देने वाले दृश्य मेरे मन को विचलित कर रहे थे। 'क्या यह दो फुट मोटा तकिया इसके लायक था? मैं क्या बन गया था? एक शांतिवादी?' मेरी महत्वाकांक्षा दुनिया को जीतना थी। मैं भारत का सम्राट बनना चाहता था, असुर जाति का रक्षक बनना चाहता था, एक ऐसा दयालु शासक बनना चाहता था जो अपनी प्रजा के लिए समृद्धि और सुख लाए।
मुझे आश्चर्य हुआ कि मेरे मंत्री अभी भी क्यों खड़े हैं। ‘अरे वाह, ये तो अच्छा हुआ। ये मुझसे अनुमति का इंतज़ार कर रहे थे।’ मैंने सबको बैठने का इशारा किया। प्रहस्त खड़ा ही रहा। वह कुछ कहने के लिए संघर्ष कर रहा था। मैंने जानबूझकर अपने पैर मोड़े और अपनी बाईं एड़ी को सहलाने लगी। मैंने अपने चमड़े के जूते को संतुलित किया और उसे अपने अंगूठे से हिलाया। मैंने सोचा कि मुझे किसी मोची से अपने जूतों पर कुछ मोती सिलवाने चाहिए। ये अच्छे लगेंगे। मेरे इस प्रभुत्वपूर्ण हावभाव को मेरे किसी भी मंत्री ने नहीं छोड़ा। मुझे खुशी थी कि वे जल्दी ही समझ रहे थे कि बॉस कौन है। लेकिन मैं मारीच की आँखों में नहीं देख सकी। यह हम दोनों के लिए शर्मनाक होता। “महामहिम,” मैंने देखा कि प्रहस्त की आवाज में थोड़ी सी तुतलाहट थी, “पहला मुद्दा जिस पर हम चाहते हैं…अर्थात्…जिस पर आपको निर्णय लेना चाहिए वह समुद्री डाकुओं के राजा वरुण का भाग्य है।”
मुझे उन्हें यह बता देना चाहिए था कि प्रधानमंत्री को ‘आपको ऐसा करना चाहिए’ जैसे शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। मैं नहीं चाहता था कि कोई मुझसे जटिल वाक्यों और सौ बारीकियों में उलझी हुई भाषा में बात करे। मैंने अपनी बात कह दी थी और मैं इसे और आगे नहीं बढ़ाना चाहता था। कुल मिलाकर, अगर इनमें से कोई भी मंत्री इस्तीफा दे देता, तो मुझे उपयुक्त प्रतिस्थापन खोजने में बहुत कठिनाई होती।
“प्रधानमंत्री जी, आपकी क्या सलाह है?” मुझे पूरा यकीन था कि वे यही सुझाव देंगे कि समुद्री डाकू का पूरे सम्मान के साथ स्वागत किया जाए और उसे किसी शाही अतिथि की तरह शाही सत्कार दिया जाए या फिर उसे ढेर सारे उपहारों के साथ रिहा कर दिया जाए। वे शायद कुछ हज़ार साल पहले के किसी असुर राजा की कहानियाँ सुनाकर अपनी बात को और पुख्ता करेंगे, जिसने अपने बंदियों के साथ

बड़ा सम्मान का व्यवहार किया था। मैं जानना चाहता था कि उस उदार राजा का उसकी वीरता के शानदार प्रदर्शन के कुछ वर्षों बाद क्या हुआ होगा। संभवतः रिहा किया गया बंदी और भी अधिक बलवान होकर लौटा होगा, उस राजा को पराजित किया होगा और फिर वीरता का ज़रा भी लिहाज़ किए बिना उसे सबसे अमानवीय दंड दिया होगा। लेकिन इतिहास से कोई सीख नहीं लेता। चाहे देव हों या असुर, इस परस्पर विनाशकारी प्रतिस्पर्धा में नए अध्याय जोड़ने के लिए मूर्खों की कमी नहीं है, हालाँकि मुझे यह स्वीकार करना होगा कि प्रहस्त जैसे विद्वानों की बदौलत असुर ऐसा ज़्यादा करते हैं। जब उस विद्वान ने शिष्टता के बारे में अपनी बेतुकी राय व्यक्त की, तो मैं उसे लताड़ने ही वाला था। इसी बीच, विभीषण खड़े हुए और असुरों की वीरता और युद्धबंदियों के साथ मानवीय व्यवहार के बारे में लंबा भाषण दिया। उन्होंने वहाँ मौजूद सभी लोगों को ऊबा और चिढ़ा दिया। मैंने पहले ही तय कर लिया था कि उस खूंखार समुद्री डाकू को क्या सजा दी जानी चाहिए। मैं इंतजार करता रहा। फुसफुसाहट की बढ़ती लहरों और प्रत्याशा के घने बादल ने एक अवास्तविक सा माहौल बना दिया था।
अंततः, मानो अनंत काल बीतने के बाद, प्रहस्त ने बोलना शुरू किया, “महामहिम, हमारा मानना है कि समुद्री डाकुओं के सरदार को मृत्युदंड दिया जाना चाहिए। उसे छोड़ना बहुत खतरनाक होगा और वह हमारे सबसे कमजोर समय में हमारे विरुद्ध विद्रोह कर सकता है। विवेक यही कहता है कि उसे सबसे कठोर दंड दिया जाना चाहिए ताकि राज्य और परिषद के अन्य शत्रुओं को सबक मिले…अर्थात्, हम मंत्रीगण सुझाव देते हैं कि उसे तुरंत मृत्युदंड दिया जाए।”
मैं दंग रह गया। यह बिलकुल अप्रत्याशित था। मैंने सुमाली, वज्रधमस्त्र और माल्यावान को आपस में गरमागरम बहस करते देखा। कुंभ और विभीषण आपस में वाद-विवाद कर रहे थे, जबकि धूम्रक्ष एक कोने में उदास बैठा था, उपेक्षित महसूस कर रहा था। मुझे यकीन था कि मैं दुविधा में फंस गया हूँ। अगर मैं वरुण को छोड़ देता, तो यह मेरे भाई विभीषण का पक्ष लेने जैसा होता, और अगर मैं उसे मार डालता, तो ऐसा लगता कि मैं प्रहस्त के वश में हूँ। हे भगवान, यह कैसी मुसीबत है!
प्रहस्त की तीखी निगाहें मुझ पर ऐसे गड़ी हुई थीं मानो मुझे चुनौती दे रही हों कि मैं उनका विरोध करूँ। समुद्री डाकुओं का सरदार वहाँ अविचलित खड़ा था। उसके भावहीन चेहरे पर कोई भाव नहीं था। मैं लगभग उसकी इस शांति की

प्रशंसा कर रहा था। वह आदमी बहादुर था, निश्चित रूप से मुझसे कहीं अधिक बहादुर। मैं एक बड़ी मुसीबत में फँस गया था। परिषद की इच्छाओं का पालन करना और वरुण को मार डालना आसान होता। लेकिन फिर, मुझे उन पर अपनी श्रेष्ठता साबित करनी थी। साथ ही, मैं समुद्री डाकुओं के सरदार को सम्मानपूर्वक नहीं छोड़ सकता था; मैं उसे आज़ाद नहीं जाने दे सकता था। “मैं उसे फांसी नहीं देने वाला।” अचानक बड़बड़ाहट रुक गई। कुछ क्षणों की सन्नाटे के बाद, मेरे मंत्री एक-एक करके खड़े हो गए। “मुझे लगता है कि मुझे आपको स्पष्टीकरण देना चाहिए। मेरा इरादा इस समुद्री डाकू को आज़ाद छोड़ने का नहीं है। मैंने आदेश दिया है कि उसके पूरे जहाज़ों के बेड़े को ज़ब्त कर शाही नौसेना में शामिल कर लिया जाए। समुद्री डाकुओं को उचित सैन्य प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए और नौसेना में शामिल किया जाना चाहिए। और जहाँ तक समुद्री डाकू-राजा की बात है…” मैं वरुण की ओर बढ़ा। वह मुझसे कम से कम आधा फुट लंबा था। मैंने उसकी आँखों में घूरते हुए दाँत पीसते हुए कहा, “मैं उसे सड़कों पर घसीटूँगा, उसका सिर आधा मुंडवा दूँगा, और फिर उसे गधे की पीठ पर बिठाकर पूरे शहर में घुमाऊँगा। फिर मैं इस समुद्री डाकू-राजा का विवाह एक सूअर से करवाऊँगा। यह शाही खजाने के खर्चे पर होगा, एक राजकीय प्रायोजित विवाह। यह मेरे विवाह के साथ ही आयोजित किया जाएगा।”
वरुण के होंठों के कोने पर हल्की सी मुस्कान आई। उसने मेरी निगाहों से नज़रें मिलाईं और कहा, "आह, वो दिन कब आएगा जब सारे सूअर शादी करेंगे?" मैंने उसके चेहरे पर एक घूंसा मारा, मेरे मंत्रियों की हंसी मेरे कानों में चुभ रही थी। फिर मुझे भी वरुण की हाजिरजवाबी में हास्य नज़र आया और मैं हंसने लगा। केवल प्रहस्त ही स्थिर रहा, उसके कुलीन चेहरे पर मुस्कान का कोई निशान नहीं था।
"महामहिम, यदि आप इस कैदी को फांसी नहीं देंगे, तो क्या मैं सुझाव दे सकता हूं कि उसे आजीवन एक अंधेरे तहखाने में कैद कर दिया जाए, और सार्वजनिक रूप से उसके साथ और कोई अपमान न किया जाए?"
“मैं अपनी इच्छा के अनुसार ही करूंगा। आपने अपनी राय दे दी है। अपनी बात अपने तक ही रखें।” मैंने प्रहस्त को नज़रअंदाज़ कर दिया और बात वहीं खत्म हो गई। या कम से कम मुझे यही लगा। मैं अपने मंत्रियों के साथ दरबार से बाहर निकल गया, जबकि वरुण को घसीटकर बाहर लाया गया ताकि उसके सिर के कुछ बाल काटे जा सकें और उसे अन्य गालियां और यातनाएं दी जा सकें।

मारीच और कुंभ मेरे दोनों ओर आकर रुक गए। “मुझे लगा था कि तुम रावण को मार डालोगे।” “यह तो दरबार में प्रवेश करने से पहले की बात है।” मारीच की आँखों में हैरानी साफ दिख रही थी, लेकिन मैंने कोई जवाब नहीं दिया।
“मेरे पास एक सुझाव है।” कुंभा मेरी बात समझने के लिए संघर्ष कर रहा था। “वरुण को अपना एडमिरल क्यों न बना लें?”
मैंने उससे पूछा, "और इसकी क्या गारंटी है कि वरुण लंका की समुद्री सीमा से बाहर निकलते ही हमारे जहाजों पर हमला नहीं करेगा?"
“स्वभाव से देखा जाए तो वरुण एक समुद्री डाकू से ज़्यादा एक व्यापारी है। अगर उसे अनुकूल शर्तें पेश की जाती हैं, तो वह उन पर अड़ा रहेगा। बेशक, हमें हमेशा सतर्क रहना चाहिए और उस पर बहुत ज़्यादा भरोसा नहीं करना चाहिए।”
"और एक समुद्री डाकू के साथ समझौता करके हमें क्या लाभ होगा?"
"एक सुरक्षित व्यापार मार्ग, समुद्री डाकुओं के हमलों से मुक्त बंदरगाह, विदेशियों की सुरक्षा से प्राप्त राजस्व और बाहरी दुनिया के साथ भरपूर सद्भावना।"
“यह विचार मुझे उत्साहित नहीं करता।” मैं समुद्री डाकुओं के राजा का अपमान करने पर तुला हुआ था। उसके केबिन के अंदर मेरे साथ द्वंद्वयुद्ध के दौरान उसकी उपहास भरी हंसी अभी भी मुझे खटकती थी।
“इस मामले में मैं प्रहस्त के साथ हूँ,” मारीच ने बीच में कहा। “यह बहुत खतरनाक है। मुझे नहीं पता कि तुमने इतना मूर्खतापूर्ण निर्णय क्यों लिया।” मैं चुप रहा। मैं कैसे कह सकता था कि मैं भी वही चाहता था जो प्रहस्त ने सलाह दी थी, लेकिन अपनी बात मनवाने के लिए मैंने एक बेवकूफी भरा फैसला ले लिया?
माँ गलियारे के अंत में खड़ी थीं। घबराए हुए प्रोफेसर मायान भी वहीं थे, जो ताड़ के पत्ते पर तेज़ी से कुछ लिख रहे थे। “मरिचा, कृपया बच्चों को छोड़कर मेरे साथ आइए। हमें कुछ ज़रूरी बातें करनी हैं।”
मारीचा ने मुझे आँख मारी और मेरी माँ और प्रोफ़ेसर के साथ गायब हो गई। मैं जानता था कि वे किस बारे में बात करने वाले हैं। बस, यही था। मेरे कुंवारे दिन अब खत्म होने वाले थे। लगभग दोपहर हो चुकी थी। महल के बाहर, बाज़ार धीरे-धीरे खाली हो रहा था क्योंकि शहर दोपहर की नींद के लिए तैयार हो रहा था। कुछ पतंगें आसमान में बार-बार चक्कर लगा रही थीं। कहीं बाहर, एक मछली

बेचने वाला अपनी दिनभर की मछलियों की टोकरी बेचने की आखिरी कोशिश में चिल्ला रहा था। समुद्र सूरज की रोशनी में चमक रहा था और दोपहर के सूरज की रोशनी को हजारों छोटे-छोटे दर्पणों में प्रतिबिंबित कर रहा था। दूर पश्चिमी क्षितिज पर बादल बन रहे थे। उमस असहनीय थी और हवा शहर पर एक मोटी, गीली कालीन की तरह छाई हुई थी। अपने महल की बालकनी पर खड़े होकर, मैंने अपने जीवन पर विचार किया।
शादी शुक्रवार को तय थी, चार दिन बाद। मैंने खुद सारी व्यवस्थाओं की देखरेख की, शादी की नहीं, बल्कि समुद्री लुटेरों के सरदार को जितना हो सके उतना अपमानित और प्रताड़ित करने की। मैं उस आदमी के साहस की तारीफ किए बिना नहीं रह सका – उसने बिना कुछ कहे सब कुछ सह लिया। खून से सने होंठों के साथ, वरुण ने मुझे देखकर अपने टूटे दांत दिखाते हुए मुस्कुराया। मैंने उसे मारने के लिए हाथ उठाया, उसकी आँखों में देखा और रुक गया। मुझे घिन आ रही थी। मैं किस तरह का बदमाश था?
शादी की तैयारियां लगातार दांत के दर्द जैसी थीं। असुरों की भीड़ उतर आई। मुख्य भूमि से नावों और रंग-बिरंगे जहाजों में लोग आते थे। मुझे कभी शक भी नहीं था कि हमारे इतने रिश्तेदार हैं। जब हम भूख से मर रहे थे, तब ये भीड़ कहाँ थी? मोटे चाचा-चाची सिर्फ यह देखने के लिए मेरे शयनकक्ष में आ जाते थे कि 'हमारा लड़का रावण' कितना बड़ा हो गया है। एक ने तो मज़ाक में यह भी कह दिया कि पिछली बार जब उसने मुझे देखा था, तो मैं बिल्ली के कुतरने जैसा लग रहा था। मैंने तुरंत अपने पहरेदारों को बुलाया और उस बूढ़े को बाहर निकाल दिया। बच्चे इधर-उधर दौड़ते हुए क्रिस्टल के फूलदान तोड़ रहे थे और महल की दीवारों पर दाग लगा रहे थे, रात में शिशु रोते थे, मोटी काली असुर स्त्रियाँ फर्श, सोफे, बिस्तर और सीढ़ियों पर - जहाँ भी जगह मिलती थी, लेट जाती थीं। वे मुझे सिर्फ यह बताने के लिए जगाती थीं कि मैं कितना भाग्यशाली हूँ कि मैंने इतनी तरक्की की है और मैं कितनी अच्छी स्त्री से शादी कर रहा हूँ। कुछ अपने निकम्मे बेटों के साथ आते थे और उनके लिए सरकारी नौकरी की माँग करते थे। खाना मुफ़्त था और शराब नदी की तरह बह रही थी।

21 खुशहाल परिवार

रावण
मेरी बहन अपने नए गहने दिखाते हुए इतरा रही थी और सबको मंदोदरी के कमरे में ले जा रही थी ताकि अपनी नई भाभी को सबको दिखा सके। पहली बार मुझे प्रोफेसर की बेटी पर तरस आया। मुझे अपना गुस्सा काबू में रखना पड़ा, सबको देखकर मुस्कुराना पड़ा और ऐसा दिखाना पड़ा जैसे मैं दुनिया का सबसे खुश इंसान हूँ। अंदर ही अंदर उबलते हुए चेहरे पर मुस्कुराने का दबाव मेरे नर्वस सिस्टम पर भारी पड़ने लगा था। शुक्रवार की सुबह तक मेरी मुस्कान लगभग एक कड़वी शक्ल बन गई थी। मैंने आईने में देखा और खुद पर तरस आया। ये कैसी शादी थी? न प्यार था, न रोमांटिक प्रेम प्रसंग, न चांदनी रात में फुसफुसाहट, न चोरी-छिपे चुंबन; असल में ये तो बस एक औपचारिकता थी। मेरी कल्पना भी मंदोदरी के साथ किसी रोमांटिक रिश्ते की कल्पना नहीं कर सकती थी। शुक्रवार की सुबह मुझे किसी अजीब समय पर जगाया गया और लगभग घसीटते हुए महल की झील में स्नान के लिए ले जाया गया, चारों ओर हंसी की गूंज सुनाई दे रही थी। हैरान पुरुष और महिलाएं; बड़ों की टिप्पणियां; कोनों में खिलखिलाती लड़कियां; शोरगुल का एक कोलाहल; लंका की सड़कों पर फूलों, मिठाइयों, तले हुए मांस, फलों और सड़े हुए कचरे की गंध; किले के बाहर उमड़ती भीड़ धक्का- मुक्की और चीख-पुकार मचा रही थी और उमस भरी गर्मी में झुलस रही थी; गोबर - ताजा, पुराना, सूखा, जला हुआ; अगरबत्ती; मसाले; मछली; नाले की दुर्गंध, और लाखों अन्य चीजों ने मेरी इंद्रियों को झकझोर दिया। मुझे एक कमरे में ले जाया गया जहाँ, एक लड़की की तरह, मेरे पैरों और हथेलियों पर मेहंदी लगाई गई। बूढ़ी औरतें कामुक गीत गा रही थीं - धूप में सूखे पान के पत्तों की तरह मुरझाई हुई बूढ़ी औरतें, बिस्तर के सुखों के बारे में गा रही थीं। ये गीत

मानव आत्मा की गहराई से निकले थे और एक शाश्वत सत्य का गुणगान कर रहे थे - प्रजनन, मानव जाति के अस्तित्व का एकमात्र साधन। मुझे उन पर हंसने की कोशिश नहीं करनी चाहिए थी।
मुझे महल के उस प्रांगण में ले जाया गया जहाँ एक मंच बनाया गया था। वह भव्य और फिर भी सुंदर था। गेंदे और चमेली के फूलों की मालाएँ चारों ओर लटकी हुई थीं। शिव और पार्वती का एक विशाल चित्र पृष्ठभूमि में लगा था। और सबसे अजीब बात यह थी कि तीन ब्राह्मण पुजारी आग के चारों ओर मेंढकों की तरह टर्रा रहे थे। यह क्या था? यह तो देवों की प्रथा थी, असुरों के विवाह तो हमेशा सादे होते थे। मुझे नहीं पता था कि यह किसका विचार था। तभी मैंने देखा कि मेरे पिता आ गए थे और एक विशाल कुर्सी पर बैठे थे। मेरी माँ ज़मीन पर बैठी उनके पैर सहला रही थीं। मेरा भाई विभीषण भी श्रद्धापूर्वक खड़ा था। प्रहस्त को छोड़कर मेरे सभी मंत्री उपस्थित थे और बड़े ही विनम्रता से खड़े थे, मानो किसी सम्राट को प्रणाम कर रहे हों। सूर्पनखा हमारे पिता को प्रभावित करने की पुरज़ोर कोशिश कर रही थी, लेकिन वे उसकी बात पर बिल्कुल ध्यान नहीं दे रहे थे। उस बूढ़े लंपट की निगाहें बगीचे में पौधों को पानी दे रही दासी के शरीर पर टिकी हुई थीं।
“गर्वित पिता अपने महान उपलब्धि हासिल करने वाले से मिलता है। वाह! कितना नाटकीय दृश्य है!” कुंभा मुस्कुरा रहा था।
“तो आप भव्य पुनर्मिलन में शामिल नहीं हुए?” मैं अपना गुस्सा मुश्किल से छिपा पाया।
“मैंने इसे छोड़ दिया। मुझे लगता है मैं पारिवारिक गीत की पंक्तियाँ भूल गया।” कुम्भा अब हंस रहा था। देसी शराब की गंध मुझे ज़ोर से लगी। मैंने उसे घृणा से देखा। मोटा, बदसूरत, तोंद निकला हुआ, वह बीस का नहीं बल्कि चालीस का लग रहा था। मैं उस पर चिल्लाया, “तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई इस तरह पीने की?” मैंने उसके बाल पकड़े और उसका सिर दीवार पर दे मारा। “निकम्मे, बदमाश…” मैं उसका सिर मारता रहा और वह बेअसर ढंग से मेरे वार रोकने की कोशिश करता रहा।
शोर सुनकर परिवार का मिलन समारोह भंग हो गया और सब दौड़कर कमरे में आ गए। कुम्भा गोबर के ढेर की तरह ज़मीन पर गिर पड़ा था। उसकी नाक से खून बह रहा था और वह दर्द से कराह रहा था। मारीचा ने मुझे पीछे खींच लिया। खून देखकर सूर्पनखा चीख पड़ी। धड़ाम! मेरे कान जलने लगे और मैंने हैरानी से देखा कि

मेरी माँ का हाथ मेरी बाली से कट गया था। उन्होंने मुझे मारा था – मेरे मंत्रियों, मेरे नौकरों के सामने, और अब यह कहानी पूरे देश में आग की तरह फैल जाएगी – एक राजा जो अपनी माँ के पल्लू की छाया में चलता था। एक राजा जिसे उसकी माँ ने बच्चे की तरह प्यार किया था।
मैंने मारीचा को एक तरफ धकेल दिया और अपनी आँखों के कोने से देखा कि वह पीछे की ओर गिर पड़ा और उसका सिर ज़मीन पर जा टकराया। मुझे ज़रा भी परवाह नहीं थी। मैंने अपनी माँ के बाल पकड़े और उन्हें हॉल से बाहर घसीट लिया। प्रहस्त को पीठ पीछे हाथ जोड़े, मुझे घूरते हुए देखकर मैं एकदम स्तब्ध रह गया। मेरी माँ पर मेरी पकड़ ढीली पड़ गई और वह उठ खड़ी हुईं। मैंने जो अपराध किया था, उसका भयानक एहसास मुझे बिजली की तरह लगा। मैं सदमे में था और चकनाचूर हो गया था, लेकिन मन के किसी कोने में मुझे संतुष्टि और खुशी भी महसूस हो रही थी।
“महाराज, कैदी सजा के लिए तैयार है,” प्रहस्त ने थोड़ा झुकते हुए कहा। एक पल के लिए मैं स्तब्ध रह गया। कैदी, कौन सा कैदी? ऐसा लगा जैसे वरुण का मामला मेरी मृत्युशय्या तक मेरा पीछा करेगा।
“पहले मेरा काम तमाम करो। मैं तुम्हारा पहला कैदी हूँ!” मेरी माँ मेरे पीछे से चिल्लाई। “मेरा सिर मुंडवा दो और मुझे गधे पर नंगा बिठाकर पूरे शहर में घुमाओ। तुमने क्यों नहीं रोका? बदमाश बेटे!”
शर्म से मेरा सिर झुक गया। मेरी माँ की चीखें अब सिसकियों में बदल गई थीं। मेरे हाथ काँप रहे थे। मैं किसी का सामना नहीं कर पा रही थी। किसी ने मेरे कंधों पर हाथ रखा। “कैकासी, वह बदला नहीं है। मुझे यह कहते हुए शर्म आ रही है कि मैंने इस राक्षस को जन्म दिया है। मैंने सोचा था कि मैं इस अवसर की शोभा बढ़ाऊँगी और अपने विद्वान मित्रों को इस शैतान का विवाह करवाने के लिए बुलाया था। और इस शैतान ने मेरी सहेलियों के सामने अपनी माँ को पीटा और अपने भाई की लगभग जान से मार डाला!”
मेरी रगों में गुस्सा उमड़ रहा था। मैंने बरामदे की रेलिंग को पूरी ताकत से पकड़ लिया। जब हम भूखे थे, तब यह निकम्मा ब्राह्मण कहाँ था? जब मेरी माँ खाने-पीने और कपड़ों के लिए गिड़गिड़ा रही थी, तब यह कहाँ था? जब मानसून की तेज़ हवाओं में हिलती हुई हमारी छोटी सी झोपड़ी में हमें मजबूरी में रहना पड़ रहा था, तब यह कहाँ था? और इस सब के दौरान, शायद यह लंपट ब्राह्मण मुख्य भूमि के वेश्यालयों में अय्याशी कर रहा था।

“मुझे सिर्फ उसे ही दोष नहीं देना चाहिए। आखिर वह एक असुर है। इससे अधिक भ्रष्ट जाति मैंने अभी तक नहीं देखी। व्यभिचार, समलैंगिकता, लोभ, आप किसी भी बुराई का नाम ले लीजिए, यह शैतानी जाति आसानी से उस पर अपना एकाधिकार जता सकती है। काली चमड़ी वाले, बदसूरत प्राणी…”
“अगर हम इतने बुरे हैं, तो तुमने मेरी बहन से शादी क्यों की?” मेरे चाचा मारिचा की आवाज़ सुनकर मैं चौंक गया। वह शांत तो थे, लेकिन मैं उनके गुस्से को महसूस कर सकता था।
“चुप रहो, मूर्ख असुर! मैं अपनी पत्नी और बेटे से बात कर रहा हूँ और मैं तुम्हारे जैसे किसी की बात नहीं सुनूँगा।” मेरे पिता के मुँह के कोनों से लाल पान के रस की एक बूँद टपक गई।
मारीचा ने उसे तिरस्कार भरी निगाहों से देखा और फिर मेरी ओर मुड़ी। मैं पूरी तरह से खड़ी हो गई और अपने पिता की ओर धमकी भरे अंदाज़ में बढ़ी। वह सहमने लगे। मैं बेचारे से लगभग दो फीट लंबी थी। मैं इतनी क्रोधित थी कि एक ही वार में उन्हें मार डालूँ, लेकिन फिर भी मुझे अपनी माँ के साथ किए गए अपने कृत्य पर शर्म आ रही थी। मेरी माँ समझ गई कि यही निर्णायक क्षण है और हमारे बीच आ गईं। उन्होंने मेरे सीने पर हाथ रखकर मुझे पीछे धकेल दिया। मैंने उनके चेहरे की ओर देखा और उन्हें मारने की शर्म फिर से मुझ पर हावी हो गई।
मेरी माँ बोलीं, “मैं जा रही हूँ। तुम्हारे पिता, भाई, बहन और मैं, अब कभी तुम्हारे घर में कदम नहीं रखेंगे। हम तुम्हें दोबारा नहीं देखना चाहते। और जब हम मर जाएँ, तो हमारी लाशें देखने मत आना। सत्ता ने तुम्हें राक्षस बना दिया है। तुम…तुम…कभी शांति नहीं पाओगे…”
मैं लड़खड़ाकर पीछे हटी और कमरे के कोने में लगे खंभे को पकड़ लिया ताकि मैं ज़मीन पर न गिर जाऊं। मैंने देखा कि मेरी माँ ने सूर्पनखा का हाथ पकड़ लिया। माँ के खींचने पर सूर्पनखा सिसक रही थी। मेरी बहन ने मेरे चेहरे की ओर देखा और मेरे चेहरे से बहते आँसू देखे। धीरे-धीरे, जानबूझकर, उसने माँ की पकड़ से खुद को छुड़ा लिया। मैं माँ के चेहरे पर सदमा देख सकती थी। माँ कुम्भा के पास गईं, जो ज़मीन पर पड़ा हुआ था। वह बेहोश हो गया था। “कुंभकर्ण, कुंभ, जाग जाओ! जाग जाओ!” लेकिन मेरी माँ की चीख-पुकार भी कुंभ को नशे की वजह से आई बेहोशी से नहीं जगा सकी। मैं लगभग मुस्कुरा ही पड़ा। “रावन, तुमने उसका वध कर दिया है। तुमने अपने ही भाई को मार डाला है।”

कीमत चुकानी पड़ेगी। मुझे नहीं पता इस दुनिया में या अगली दुनिया में, लेकिन तुम्हें इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ेगी।”
वह मेरे महल से बाहर निकलीं और मेरे पिता उनके पीछे-पीछे चल रहे थे। महल के तमाशबीन और नौकर, समाज के वे निकम्मे लोग जो महल के इस तमाशे को देखने और चुपके से देखने के लिए इकट्ठा हुए थे, इस भीड़ भरे जुलूस को रास्ता देने के लिए एक तरफ हट गए। दो ब्राह्मण और कुछ नौकर भी उनके साथ शामिल हो गए। कमरे के कोने से एक दबी हुई चीख सुनाई दी और मैंने अपनी प्यारी बहन को देखा, जो अपने हाथों में चेहरा छिपाकर बेकाबू होकर रो रही थी। विभीषण उनके सामने असहज खड़ा था। मैं उनके पास गया और उनके कंधों पर हाथ रखा, और वह मेरी छाती पर गिर पड़ीं और मुझे कसकर गले लगा लिया। क्या मैं उन्हें निराश कर पाया था? क्या मैंने उनके साथ अन्याय किया था? कुछ मुझे कचोट रहा था। 'मेरी प्यारी बहन, मैंने तुमसे क्या छीन लिया है?'
“वहाँ…वहाँ…” ये शब्द मुझे भी अर्थहीन लग रहे थे, फिर भी मैं दोहराता रहा, “वहाँ…वहाँ…” मारीचा आया और उसने मेरे कंधों को धीरे से छुआ। प्रहस्त एक स्तंभ की तरह खड़ा था, उसकी आँखें दूर क्षितिज में किसी अज्ञात बिंदु पर टिकी हुई थीं। मैंने अपनी बहन की ठोड़ी ऊपर उठाई और एक भाई के सारे प्रेम से कहा, “सूरपनाखा, चाहे कुछ भी हो जाए, चाहे कोई भी हमारे जीवन से चला जाए, मैं तुम्हारे साथ एक भाई, एक दोस्त, एक पिता और एक माँ के रूप में रहूँगा। क्या तुम्हें अपने प्यारे भाई पर भरोसा नहीं है?”
आँखों में आँसू भरे हुए, उसने मेरी तरफ मुस्कुराकर सिर हिलाया। मुझे डर लगा। क्या मैं यह वादा निभा पाऊँगा? मैं उसकी मासूमियत को चकनाचूर नहीं करना चाहता था, इसलिए मैं उसके बालों में उंगलियाँ फेरता रहा और उसे कुछ पल और थामे रहा। फिर मेरा स्वाभिमान लौट आया, मेरा गुस्सा फिर से आ गया और मैं फिर से अपने असली रूप में आ गया। धीरे-धीरे लेकिन दृढ़ता से, मैं कमरे से बाहर निकल गया। दरवाजे पर खड़े पहरेदारों ने झुककर अभिवादन किया। मुझे पता था कि वे मन ही मन हँस रहे होंगे, लेकिन मैंने उनकी अनदेखी की और बगीचे में टहलने चला गया। मेरे जीवन का एक युग समाप्त हो गया था। मैं शब्दों से परे दुखी था। मेरी माँ की छवि और हमें खाना-कपड़ा देने के लिए उनका संघर्ष, हमारे जीवित रहने के लिए संघर्ष, मेरे लिए उनकी प्रेरणा, ये सब, अपचित भोजन की तरह, मेरे सामने आ गए और मेरा गला घोंट दिया।

लेकिन खुशी का एक छोटा सा बुलबुला धीरे-धीरे बढ़ता गया और फिर उसने मेरे पूरे मन को भर दिया। आखिरकार आज़ादी! माँ चिड़िया के सुरक्षात्मक पंखों से आज़ादी। अब मुझे रोकने वाला क्या था? बीते युग के कोई नैतिक नियम नहीं, किसी सख्त माँ की कोई आवाज़ नहीं, कोई ऐसा व्यक्ति नहीं जिसका मैं सचमुच सम्मान करता था, जो मुझे परंपरा के बंधनों में जकड़े रखता। रावण अब बच्चा नहीं था। अब से राज करना मेरे लिए बोझ नहीं था। यह स्वाभाविक रूप से मेरे लिए आया। मुझे राजा, सम्राट, संसार का स्वामी होने में आनंद आया। उस सुबह, मेरे विवाह के दिन, रावण का पुनर्जन्म हुआ।
मेरे सभी सपनों की तरह, यह सपना भी प्रहस्त के हाथों चकनाचूर हो गया। उन्होंने कहा कि दुल्हन शादी के लिए और कैदी सजा के लिए इंतजार कर रहा है। थकी हुई सी मैं उठी और अपने काम निपटाने चली गई। आने वाले दिनों में, मैं बार-बार सपने देखती रहूंगी। मुझे यौवन का अमृत मिल गया था। जब तक मैं बड़े- बड़े सपने देखती रहूंगी, यह अमृत कभी खत्म नहीं होगा। और मेरे सपने ही मेरी कहानी बन गए।

22 क्रांतिकारी
भद्र
मैं मौत के मुँह में, गरजते हुए सागर में गिर पड़ा। जब मैं हार मानने ही वाला था, तभी मेरा सिर उफनते पानी के ऊपर आ उठा। एक और विशाल लहर मुझे अपने साथ ले गई, जिससे मैं खाँसने और छटपटाने लगा। मेरे शरीर के सौ-सौ हिस्सों में दर्द हो रहा था। हार मानकर सागर की गहराई में डूब जाना कितना आसान होता। लेकिन देव राक्षसों द्वारा मेरी पत्नी और मेरी बेटी के कत्ल किए जाने के दृश्य मेरी आँखों के सामने नाचने लगे। इससे मेरे हाथों को ताकत और पैरों को बल मिला। मैंने फिर से लात मारना शुरू कर दिया। जब मैं दोबारा सतह पर आया, तो दूर क्षितिज पर उफनते हुए जहाज़ों को बिंदुओं की तरह देख सका। मैं उष्णकटिबंधीय तूफान की चपेट में था। पानी की चादरें मेरे चेहरे पर गिर रही थीं। मैंने अपना सिर लहरों के ऊपर रखने की कोशिश की, लेकिन मुझे नहीं पता था कि कहाँ तैरूँ। मैं घोर अंधेरे, गरजते, उफनते समुद्र में असहाय होकर तैर रहा था, और ऊपर एक डरावना, धूसर आसमान इस उबलते और खौलते हुए क्रोध के बर्तन को ढके हुए था।
कुछ चीज़ें कुछ ही दूरी पर तैर रही थीं। मैं उसकी ओर तैरा और एक मृत सैनिक को लकड़ी के लट्ठे की तरह बहते देखकर भयभीत हो गया। मैं जितनी तेज़ी से हो सकता था, तैरकर दूर चला गया और पीठ के बल पानी पर तैरने की कोशिश करता रहा। थोड़ी देर बाद मैंने कुछ सौ फीट की दूरी पर एक पुराना लट्ठा तैरता हुआ देखा। मुझे डर था कि कहीं वह कोई और मृत सैनिक या समुद्री डाकू न हो, इसलिए मैं उसकी ओर तैरने से हिचकिचा रहा था। आखिरकार, मैंने जोखिम उठाने का फैसला किया और उसकी ओर तैर गया। वह एक पुराना पेड़ का तना था और मैं उस पर चढ़ गया। मैं बहुत थका हुआ था और अपनी पूरी ताकत से उसे पकड़े रहा। दो बार मुझे उफनती लहरों ने गिरा दिया, लेकिन समुद्र शांत हो रहा था। बारिश हल्की

होकर बूंदा-बांदी में बदल गई और आसमान में तारे निकल आए। मैंने अपनी पगड़ी उतारी और खुद को लट्ठे से बांध लिया और सो गया। जब मैं जागा, तो मैंने एक जाने-पहचाने चेहरे को देखा। मैंने उस चेहरे को याद करने की कोशिश की, लेकिन मेरा सिर दर्द कर रहा था।
“क्या वह जीवित रहेगा?” मैंने एक गहरी आवाज को पूछते हुए सुना।
“उम्मीद है,” एक स्त्री की आवाज़ ने जवाब दिया। पलक झपकते ही मेरे दिमाग में आया – माला! माला, मेरी प्रेमिका, मेरी भूली हुई जान। मैंने उठने की कोशिश की, लेकिन उसने मुझे वापस धकेल दिया। मैं उससे पूछना चाहता था कि उसने मुझे उस गद्दार के लिए क्यों छोड़ दिया। मैं उस पर चिल्लाना चाहता था, उसके बाल नोचना चाहता था और उसे लात मारना चाहता था। मैं उसे चूमना चाहता था, और उसकी सुडौल कमर को महसूस करना चाहता था। लेकिन, मैं एक नपुंसक पुरुष था, मैं बस वहीं पड़ा रहा, एक थका हुआ और हारा हुआ असुर।
उसके पीछे एक परछाईं हिली, अकेले जलते हुए तेल के दीपक की ओर और टिमटिमाती रोशनी में उसका आधा चेहरा रोशन हो गया। मैंने शिव का शुक्रिया अदा किया कि उन्होंने मुझे मुंह खोलने नहीं दिया। वह कोई और नहीं बल्कि विद्युतजिह्व थे। अगर उन्होंने मुझे पहचान लिया होता, तो मैं कब का मर चुका होता। क्रोध और ईर्ष्या ने मुझे उस तूफान से भी कहीं ज़्यादा ज़ोर से जकड़ लिया जिससे मैं बच निकला था। वह कुतिया उनके साथ रह रही थी। वह उसके साथ सो रहे थे। लहराते बालों और कुलीन नाक वाला लंबा, गोरा असुर, गहरी काली आंखें और चौड़े कंधे, प्रतिभाशाली वक्ता और कुशल रणनीतिकार, सैकड़ों लोगों का नायक, और मेरे स्वामी रावण का प्रतिद्वंद्वी, वहाँ अपने होठों पर तिरस्कार भरी मुस्कान लिए खड़ा था। मुझे खुद पर तरस आया। अब मैं समझ सकता था कि माला ने मुझे छोड़कर उन्हें क्यों चुना। मैं तो कुछ भी नहीं था, एक काले मोटे पेट वाला असुर, टेढ़े-मेढ़े पीले दांतों और घुंघराले बालों वाला, छोटा और मोटा। क्या मैं माला जैसी सुंदरी से यह उम्मीद कर सकता था कि वह मुझे इस नायक के ऊपर चुनेगी? 'लेकिन मैं तुम्हें पा लूँगा, पुरुष। एक दिन, तुम मेरे चरणों में गिरकर भीख मांगोगे।' फिर मैं तुम्हारी उस अपमानजनक मुस्कान का बदला ज़रूर लूंगा।’ अपने बड़े प्रतिशोध के सपनों में खोया हुआ मैं धीरे- धीरे नींद में डूब गया।
जब मैं दोबारा जागा, तो लगभग दोपहर हो चुकी थी। पलंग के पास खुरदरी, बिना पॉलिश की लकड़ी की मेज पर कुछ ठंडा दलिया रखा था। मैंने सतह पर तैरती एक

मरी हुई मक्खी को हटाया और जल्दी-जल्दी दलिया पी लिया। बाहर सब कुछ शांत था। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि दरवाजा खुला था। मैं फूस की झोपड़ी के बाहर खड़ा हो गया और चिलचिलाती सफेद धूप में आंखें सिकोड़ने लगा।
“तुम कहाँ थी? मुझे लगा तुम वापस मुख्य भूमि पर चली गई थी।” माला घर के पीछे से आई और अपने बाएं हाथ पर कपड़ों का ढेर लिए खड़ी हो गई। कपड़ों से पानी टपक रहा था और रेत पर अजीबोगरीब आकृतियाँ बन रही थीं।
“मैंने इधर-उधर छोटे-मोटे काम करके अपना गुजारा चलाया।” मैं नहीं चाहती थी कि उसे पता चले कि मैं क्या कर रही थी। मैं मुस्कुराई। “और तुम क्या कर रही थी?” उस कमीने के साथ सो रही थी, मैं पूछना चाहती थी, लेकिन नज़रें हटा लीं। मैं उन दोनों को साथ में सोच सकती थी। उसने मेरी भावनाओं को भांप लिया और मेरे पास आकर ठंडे लहजे में बोली, “तुम मुझे छोड़कर चली गई और वहाँ सिर्फ़ वही था।”
मैंने उसे करारा जवाब देने के लिए एक दर्जन बातें सोचने की कोशिश की, लेकिन एक भी बात नहीं सूझी। इसके बजाय, मैं एक मूर्ख की तरह मुस्कुराया।
"इसके अलावा, तुमने हमेशा मेरे साथ एक वेश्या जैसा व्यवहार किया, सिर्फ एक सुख की वस्तु जैसा, जबकि मैंने तुमसे प्यार करने की कोशिश की। वह मेरे साथ एक असली औरत जैसा व्यवहार करता है।"
मैं एक गरीब आदमी हूँ, कोई सुंदर नायक नहीं जो राजा को उखाड़ फेंकने की महत्वाकांक्षा रखता हो। इसलिए…”
“बद्रा, बोलो अपनी सारी कमियों के बारे में। तुम्हें अपने बारे में इस तरह बात करने में एक अजीब सा आनंद आता है। मैंने तुमसे ये सब सौ बार पहले भी सुना है।”
मेरा मन कर रहा था कि उसे पकड़कर इतना मारूँ कि वो बुरी तरह घायल हो जाए। वो मेरे पास से गुज़री, उसकी पीठ पर पसीने की बूँदें चमक रही थीं। मैं उसकी तरफ बढ़ा और उसकी कमर में हाथ डाल दिए। उसके हाथों से कपड़े गिर गए और उसने मुझे गले लगा लिया। एक पल के लिए हमारे बीच एक जंगली जुनून उमड़ आया। मैंने खुद को उसके मज़बूत शरीर से सटा लिया और हमारे होंठ मिल गए। एक तीव्र इच्छा के साथ, मैंने एक ही बार में उसके पूरे शरीर को छूने की कोशिश की। दो हाथ काफी नहीं थे। मैंने लगभग उसके होंठ काट ही लिए थे और उसने भी उतने ही जोश से मुझे चूमा। फिर अचानक, उसने मुझे पीछे धकेल दिया। मैंने उसे फिर से

पकड़ने की कोशिश की, लेकिन उसने मुझे फिर से पीछे धकेल दिया।
"नहीं...नहीं..." वो ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी।
क्रोध, ईर्ष्या और उदासी की लहरें मुझ पर छा गईं।
मुझे उसे टुकड़े-टुकड़े कर देने का मन कर रहा था। अचानक मुझमें एक अजीब सी अनुभूति हुई।
मैं पूरी तरह से बेबस था। मैंने उसे वहीं छोड़ दिया और चट्टानों की ओर चल पड़ा।
मुझे ऐसा लग रहा था कि मैं कूद जाऊं और वहीं सब कुछ खत्म कर दूं।
मुझे बहुत अकेलापन और उपेक्षा महसूस हो रही थी। मैं एक चट्टान पर बैठा था, कूदने से डर रहा था।
जीवन में वापस जाने से डर लगता है। मुझे अपने राजा का सुनहरा झंडा दिखाई देता है।
महल के ऊपर उड़ते हुए, अंधेरे में हवा में फड़फड़ाते हुए,
काले तूफानी बादल। मैं घंटों वहीं बैठा रहा जब तक बारिश की पहली बूंद नहीं गिरी।
मुझे चोट लगी। फिर मैं अपनी जिंदगी में वापस लौट गया। जब तक मैं अपने घर पहुँचा...
मैं पूरी तरह भीग चुका था, लेकिन इतना थका हुआ था कि मुझे परवाह नहीं थी। मैं अपने बिस्तर पर लेट गया और
मैं एक छिपकली को मक्खी पर झपटने का इंतजार करते हुए देख रहा था, तभी मुझे एक हल्की सी आवाज सुनाई दी।
दरवाजे पर दस्तक हुई। इससे पहले कि मैं खड़ा हो पाता, माला कमरे में दाखिल हुई।
मैं बढ़ती हुई चिड़चिड़ाहट के साथ उसे देखता रहा, लेकिन इससे पहले कि मैं कुछ कह पाता
जब उसने अपना गुस्सा निकाला, तो विद्युतजिह्वा की विशाल आकृति प्रकट हुई। “बैठ जाइए, बैठ जाइए,” उन्होंने मुझसे कहा। “माला कहती है कि आप नौकरी ढूंढ रहे हैं। यह एक लड़ाकू संगठन है, कोई व्यापारिक संघ नहीं। यहाँ किसी के लिए कोई विशिष्ट कार्य निर्धारित नहीं है।” वे जोश में आ गए और इधर-उधर चलने लगे, अपने हाथों को अतिशयोक्तिपूर्ण ढंग से हिलाते हुए बोले, “हम यहाँ एक समतावादी और न्यायपूर्ण दुनिया बनाने आए हैं। हम जिस दुनिया का निर्माण

करना चाहते हैं, उसमें रावण जैसे अत्याचारियों के लिए कोई जगह नहीं होगी। सभी लोग समान होंगे। यहाँ कोई राजा या जमींदार नहीं होंगे। यहाँ पुरोहितों, जादूगरों या व्यापारियों जैसे लोगों का शोषण करने वाले नहीं होंगे। मेरे द्वारा बनाई गई इस नई दुनिया में सभी लोग समान होंगे।” वे सांस लेने के लिए रुके और ‘हम’ से ‘मैं’ में हुए सूक्ष्म परिवर्तन को मैंने गौर कर लिया।
जाति व्यवस्था की बुराई का नाश होगा। मैं व्यापारिक संघों को समाप्त कर दूंगा। लोगों की एक परिषद यह तय करेगी कि हममें से प्रत्येक के पास क्या होना चाहिए। मैं किसी भी प्रकार के शोषण को स्वीकार नहीं करूंगा। कुबेर जैसे खून चूसने वाले जोंकों का नाश होगा। संसार के रावणों का नाश होगा। कोई देवता नहीं होंगे। संसार के इंद्र पराजित होंगे। कोई धर्मगुरु नहीं होंगे, धन जैसी कोई चीज नहीं होगी। लोग एक-दूसरे की सेवा करेंगे और सुखी रहेंगे। यह संसार भद्रा जैसे साधारण लोगों का होगा। मैं तुम्हारे जैसे लोगों के लिए स्वर्ग बनाऊंगा, भद्रा। आदर्श संसार के लिए इस अंतिम संघर्ष में हमारे साथ शामिल हो जाओ।
मैं यह नहीं कहता कि मैं प्रभावित नहीं हुआ। दुनिया पर राज करने का विचार आकर्षक था। मेरे पास तो दो अच्छे कपड़े भी नहीं थे, एक नई दुनिया की कल्पना तो दूर की बात थी। लेकिन फिर, अपनी मूर्खता के कारण, मैंने कभी उस पर विश्वास नहीं किया। मैंने ऐसा दिखाया जैसे मैं उसके विचार से उत्साहित हूँ, लेकिन भीतर ही भीतर मैं जानता था कि वह बस एक और तानाशाह बनने की राह पर है। मेरी सीमित बुद्धि उस महान व्यक्ति के दृष्टिकोण को समझ नहीं पाई। मुझे लगा कि वह भी बाकी सभी पाखंडियों की तरह, मेरी तरह, रावण की तरह, और हर उस इंसान की तरह है जिसे मैंने कभी देखा था। दुनिया के प्रति मेरा नजरिया निराशावादी था, जो रावण के असुर सभ्यता के भव्य पुनरुद्धार के सपने या विद्युतजिह्व के एक न्यायसंगत सामाजिक व्यवस्था के सपने से बिलकुल अलग था, जहाँ वह भगवान बन सकता था। विद्युतजिह्व के शब्दों में, आम आदमी के दर्शन को छह शब्दों में सारांशित किया जा सकता है: इसमें मेरा क्या लाभ है? मैं एक न्यायसंगत दुनिया के पक्ष में था। या फिर एक भव्य असुर सभ्यता के भी पक्ष में, अगर मुझे उससे लाभ मिल सकता। मैं अपना बदला लेना चाहता था, दो वक्त का खाना, यौन संबंध और यदि संभव हो तो धन और पद प्राप्त करने का मौका

चाहता था ताकि मैं अन्य आम लोगों के साथ उसी तरह व्यवहार कर सकूं जैसे वे अब मेरे साथ कर रहे थे - तिरस्कार के साथ।
मैंने अपने ही दर्शन पर मुस्कुरा दिया और विद्युतजिह्वा ने इसे मेरी सहमति मान लिया। उन्होंने मेरे कंधों पर थपथपाया और मुझे गले लगा लिया, इस बात का ध्यान रखते हुए कि हमारे शरीर एक-दूसरे से दूर रहें। सभी मनुष्य समान हो सकते हैं, लेकिन इतने समान नहीं। “हमारे प्रशिक्षण कक्ष में आओ। माला, ध्यान रखना कि उसे ठीक से भोजन और वस्त्र मिले। और उसे स्नान करने के लिए कहना।” विद्युतजिह्वा अपने रेशमी वस्त्र लहराते हुए बाहर चले गए। उनके समतुल्य भद्रा अपनी स्वामिनी माला के साथ वहाँ खड़े थे। क्या मेरा उनसे बड़ा है या उनके बराबर है? मैं सोचता रहा।
“क्या आपको उस पर विश्वास नहीं है?” माला ने पूछा।
“क्या तुम?” मेधिसला ने आह भरी और बाहर चली गई। मैं भी उसके पीछे-पीछे गई, यह जानने के लिए उत्सुक थी कि विद्रोही क्या प्रशिक्षण दे रहे हैं। विद्युतजिह्वा के एक समकक्ष, एक छोटे से असुर ने, जिसके नंगे पैर की उंगलियों पर घाव थे और जिसने फटे हुए कपड़े पहने थे, मुझे कुछ स्नान जड़ी- बूटियाँ और एक तौलिया दिया। मैं स्नान करने के लिए छोटे से कुएँ की ओर चल पड़ी। मैंने उन जगहों को रगड़कर साफ किया जहाँ विद्युतजिह्वा ने छुआ था।
लेकिन समानता की दुर्गंध बनी रही। जल्द ही, मुझे उसकी भी आदत हो गई।

23 क्रांति घर लौट आई
भद्र
कुछ ही दिनों में मैं विद्युतजिह्वा का विश्वासपात्र बन गया था। महल से विद्रोही नेता के जासूसों के ज़रिए लगातार खबरें आती रहती थीं। मुझे पता चला कि वरुण को बंदी बना लिया गया है। समुद्री लुटेरों के राजा को दंडित करने के बाद रावण ने उसे लंका के तट और भविष्य में रावण द्वारा कब्जा किए जाने वाले किसी भी क्षेत्र की रक्षा का जिम्मा सौंप दिया था। मुझे समुद्री लुटेरों के राजा को राज नौसेना का एडमिरल बनाने के फैसले पर संदेह था, लेकिन विद्वान लोग बेहतर जानते थे। मुझे यह भी पता चला कि राजा की माता अपने पुत्र से झगड़े के बाद द्वीप छोड़कर चली गई हैं। राजकुमार कुंभकर्ण अब पूरी तरह से नशे, भांग, शराब, जुआ और स्त्रियों का आदी हो चुका था, हालांकि हमेशा इसी क्रम में नहीं। रावण ने लंका के पूरे क्षेत्र पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया था, सिवाय उत्तर-पूर्वी छोर के, जो जंगली इलाका था और जहाँ मेरे नए स्वामी का प्रभाव कमज़ोर था।
मैंने अभी तक यह तय नहीं किया था कि मेरा स्वामी कौन होगा, मुझे रावण या विद्युतजिह्व में से किसके साथ अपना भाग्य जोड़ना चाहिए। फिलहाल, रावण का पलड़ा भारी था और मुझे वापस लौट जाना चाहिए था। लेकिन कुछ मुझे बार-बार कह रहा था कि मेरा भविष्य उस करिश्माई विद्रोही नेता से जुड़ा है। इसके अलावा, वह भोला-भाला लगता था और उसके अहंकार और सामाजिक समानता के बारे में उसके अटपटे सिद्धांतों को छोड़कर, वह साथ रहने के लिए बेहतर इंसान था। भले ही हम सबको अपने बराबर समझने की उसकी कोशिशें सिर्फ दिखावा थीं, फिर भी कार्यकर्ता उसका साथ देते रहे क्योंकि किसी ने भी ऐसा होने का नाटक नहीं किया था। कभी-कभार मैं माला को चुपके से चूम लेता था, हालांकि अभी तक मैंने

उसके साथ बिस्तर साझा नहीं किया था। इस वजह से विद्रोही नेता के साथ रहने का आकर्षण और बढ़ गया था।
एक दिन विद्युतजिह्वा ने मुझे समुद्र तट पर बुलाया। शाम ढल रही थी और पूर्णिमा का चाँद निकला हुआ था। समुद्र चाँदी की तरह चमक रहा था और हवा में चमेली की खुशबू फैली हुई थी। शिविरों से एक मधुर गीत की धुन गूँज रही थी, खोए और फिर पाए गए प्रेम का गीत, और उस मिलन के आनंद का गीत, जिसके लिए मनुष्य तरसते हैं जब उनका पेट भरा होता है और शरीर स्वस्थ होता है। नेता समुद्र के ऊपर उभरी एक चट्टान पर खड़े थे। मैं ऊपर चढ़ गया। मैं डरा हुआ था। क्या उन्हें पता चल गया था कि मैंने उनकी प्रेमिका को चूमा था?
"क्या आप रात्रिकालीन क्रूज के लिए तैयार हैं?" मैं उसका चेहरा नहीं देख पा रहा था, इसलिए मैं यह तय नहीं कर सका कि वह गुस्से में था या नहीं। “हाँ,” मैंने धीरे से कहा। उसने मुझे एक तरफ धकेल दिया और किनारे की ओर जाने वाली कच्ची सीढ़ियों से नीचे उतरने लगा। पानी में एक छोटी सी देसी नाव ऊपर-नीचे हो रही थी। वह उसमें कूद गया और मैं भी लड़खड़ाते हुए उसके पीछे आ गई। उसने चप्पू को बड़े-बड़े झटकों में चलाते हुए लहरों को चीर दिया। कुछ मिनटों बाद, उसने मुझे कमान संभालने का इशारा किया। मैंने चप्पू चलाना शुरू किया और नाव को उसी दिशा में मोड़ा जहाँ उसने इशारा किया था। जैसे-जैसे हम पास पहुँचे, मुझे चट्टान पर बने महल की धुंधली आकृति दिखाई देने लगी। त्रिकोटा पहाड़ी की ऊँची ढलानों पर कोहरा छाया हुआ था। रात में महल डरावना लग रहा था। ऐसा लग रहा था मानो उस पर राक्षसों का साया हो। बुरी आत्माओं और राक्षसों से जुड़ी सारी पुरानी कहानियाँ मेरे दिमाग में घूमने लगीं। धीरे-धीरे नाव किनारे पर पहुँच गई।
“मेरे आने तक यहीं ठहरो।” विद्युतजिह्वा किले के पिछले द्वार की ओर बढ़े। वे ऐसे आत्मविश्वास से चल रहे थे मानो उन्होंने यह काम सौ बार किया हो। मैं अपने पुराने स्वामी के महल में विद्रोही नेता के साथ था। अगर पकड़ा गया तो मौत निश्चित थी। सहज ही मैं चट्टानों की छाया में चला गया। ठंड बढ़ रही थी और मैंने अपने हाथ आपस में रगड़े। पानी अपेक्षाकृत गर्म था। लगभग एक घंटे बाद मेरे स्वामी एक गीत गुनगुनाते हुए, भावपूर्ण और आनंदित मन से लौटे। तट पर पहुँचने और स्वामी के अपनी कुटिया में जाने के बाद भी वह धुन मुझे देर तक खलती रही। उस रात मैं उस गीत को अपने साथ बिस्तर पर ले गया।

मैं एक बार फिर अपने गुरु के साथ उनकी रात्रि यात्राओं पर गया। मुझे यह जानने की उत्सुकता बढ़ती जा रही थी कि आखिर हो क्या रहा है। मैं सोचता था कि वे रावण के किले में बिना किसी को पता चले कैसे घुस गए और बिना किसी नुकसान के वापस आ गए। यह स्पष्ट था कि किसी अंदरूनी व्यक्ति ने उनकी मदद की थी। लेकिन यह बहुत बड़ा जोखिम था। राजा की पूरी सेना उन्हें जिंदा या मुर्दा ढूंढ रही थी, और वे यहाँ राजा के प्रांगण में बेखौफ घूम रहे थे। उनका यह दुस्साहस वाकई विस्मयकारी था।
मुझे एक बार फिर उनका नाविक बनने का बुलावा आया। मैं अपनी तीव्र जिज्ञासा को शांत करना चाहता था और उनके पीछे चलने का फैसला किया। मैंने कुछ पल इंतजार किया और फिर उनके पीछे चलने लगा। वे तेज़ी से चल रहे थे, पीछे मुड़े बिना, यहाँ तक कि छाया में रहने की भी परवाह किए बिना। किले के द्वार पर पहुँचते ही वे बाईं ओर मुड़ गए। मैं अचंभित रह गया। जहाँ तक मुझे पता था, वहाँ कोई द्वार या प्रवेश द्वार नहीं था। जैसे ही मैं पास पहुँचा, मुझे जवाब मिल गया - एक रस्सी दीवार से नीचे लटक रही थी। वे ऊपर चढ़े और पलक झपकते ही ऊँची दीवार के ऊपर से गायब हो गए। मैं पास गया और रस्सी को देखा। वह हिल रही थी और मैंने उसे खींचकर देखा कि क्या वह मेरा वजन सह पाएगी। यह करना मूर्खतापूर्ण था क्योंकि मैंने उसे विद्युतजिह्व जैसे विशालकाय का वजन सहते हुए देखा था।
मैंने बड़ी मुश्किल से चढ़ाई की। जब तक मैं चोटी पर पहुँचा, पसीने से भीग चुका था और हाँफ रहा था। किले के परिसर में धीरे-धीरे उतरते हुए मैंने खुद को कोसा। सन्नाटा घना और डरावना था। कहीं किसी उल्लू की आवाज़ आई। सहज ही मैंने अपनी कटार को खोजने की कोशिश की, लेकिन मैं उसे भूल गया था। खुद को फिर कोसते हुए, मैंने स्थिति का अंदाज़ा लगाने की कोशिश की। बगीचे में झाड़ियों से अजीब सी रोशनी की किरणें छनकर आ रही थीं। आसमान बादलों से घिरा हुआ था। पास ही कहीं कपड़ों की सरसराहट जैसी आवाज़ और धीमी फुसफुसाहट सुनाई दी। मैं धीरे-धीरे आवाज़ों की तरफ बढ़ा। अंधेरे में, दो परछाइयाँ एक-दूसरे को गले लगा रही थीं और जोश से चूम रही थीं। मुझे विद्युतजिह्वा की लंबी आकृति दिखाई दी। वह स्त्री जानी-पहचानी लग रही थी, लेकिन मैं उसे पहचान नहीं पा रहा था। मैंने कुछ मिनट तक देखा और फिर वह स्त्री पीछे हट गई। राजकुमारी सूर्पनखा! राज्य के कट्टर शत्रु के साथ इतनी नज़दीकी! मैं दंग रह गया।

मेरे मन में एक योजना बनी। यही मेरे प्रतिद्वंदी को खत्म करने का मौका था। उसी क्षण मैंने अपने दो स्वामियों में से एक को चुना। जब तक मैं महल के पास पहुँचा, मैं खुशी और उत्साह से फूला नहीं समा रहा था। मैं एक साथ कई काम निपटाना चाहता था। मैं अपने प्रतिद्वंदी विद्युतजिह्वा को खत्म कर दूंगा, रावण की कृपा प्राप्त कर लूंगा, माला पर अपना अधिकार जमा लूंगा और यह सुनिश्चित कर लूंगा कि असुर वंश दो करिश्माई और शक्तिशाली नेताओं के बीच न बँटे। विद्युतजिह्वा ने मूर्खतापूर्वक रावण के किले में अकेले प्रवेश किया था, मानसिक और शारीरिक रूप से असुरक्षित। यही मेरा मौका था वार करने का। मुझे राजा से अकेले में मिलना था और उन्हें यह खबर देनी थी।
मुझे ठीक से पता नहीं था कि उसका कक्ष कहाँ स्थित था। यकीनन वहाँ कड़ी सुरक्षा होगी? मुझे बस इतना ही यकीन था कि मेरी जाति में आलस्य रहता है। रात हो चुकी थी और पहरेदार या तो सो रहे होंगे या नशे में होंगे। दिन के युद्धक्षेत्रों का भयंकर असुर, रात के मौज-मस्ती करने वाले, स्त्री-प्रेमी और झगड़ालू असुर से बिलकुल अलग था। यह असुरों का सबसे बड़ा राज़ हो सकता था। असुरों को हराने के लिए, रात के अंधेरे में हमला करना चाहिए। शायद इसीलिए प्राचीन असुर संहिता में धर्मयुद्ध पर ज़ोर दिया गया था, जहाँ युद्ध नैतिक सिद्धांतों पर आधारित था और सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि रात में कोई युद्ध नहीं लड़ा जाता था।
मैंने महल का एक चक्कर लगाया, झाड़ियों की आड़ में छिपकर, यह देखने के लिए कि अंदर जाने का सबसे अच्छा रास्ता कौन सा है। मैं एक आम के पेड़ पर चढ़ गया और उम्मीद की कि बालकनी की खिड़कियाँ खुली होंगी। गर्मी और उमस बहुत थी। किसी ने खाँसा और मैं जम गया। मुझे अपने दिल की धड़कन सुनाई दे रही थी। मैं कुछ मिनटों तक वहीं खड़ा रहा और फिर आगे बढ़ा। बरामदे की ओर खुलने वाली सभी खिड़कियाँ बंद थीं। मैंने मन ही मन कोसा। समय कम होता जा रहा था। अगर विद्युतजिह्वा नाव पर लौट आए या राजकुमारी मुझे वापस आते समय देख ले, तो मैं अपनी अंतिम प्रार्थना कर सकता हूँ। एक खिड़की खुली थी। मैं उसके पास गया। कमरे के अंदर पलंग पर कोई सो रहा था। मुझे यकीन नहीं था कि वह राजा ही थे, क्योंकि उनके बगल में कोई दुल्हन नहीं थी। लेकिन उनका चेहरा राजा जैसा लग रहा था। मैं झिझका, लेकिन मुझे पता था कि समय कम होता जा रहा है। पलंग के पास एक छोटा सा तेल का दीपक जल रहा था। चेहरा छाया में था।

मैं कमरे में दाखिल हुई और फुसफुसाते हुए बोली, “महाराज…” कोई जवाब नहीं आया और मैं यह सुनिश्चित करने के लिए रावण के करीब गई कि वह रावण ही है। अचानक, जैसे कोई बाघ झपट्टा मारता है, वह मुझ पर टूट पड़ा और मेरा गला पकड़ लिया। मैं इतनी डर गई थी कि कुछ बोल भी नहीं पाई। उसने दूसरे हाथ से दीपक जलाया। मुझे यह देखकर बहुत डर लगा कि मैं गलत कमरे में आ गई हूँ। ऐसा नहीं है कि अगर मैं सही कमरे में होती तो मेरा बर्ताव अलग होता। लेकिन यह बहुत भयानक था। मेरा गला पकड़ने वाला व्यक्ति विभीषण था। महल में इतने सारे लोगों में से, मैं इस पवित्र दुष्ट के कमरे में आ गई थी। मैं और भी डर गई क्योंकि वह अप्रत्याशित था। मैं डर से कांप रही थी। उसने धीरे-धीरे अपनी पकड़ ढीली की और मुझे नीचे रख दिया और मैं ज़मीन पर गिर पड़ी। वह तलवार खींचे मेरे ऊपर खड़ा था।
“हे प्रभु, मुझे मत मारो, कृपया मुझे कोई हानि न पहुँचाओ।” मैंने रोते हुए कहा।
“भद्रा, तू दुष्ट, तू मेरी हत्या करने की कोशिश कर रहा था। या तो तू भूत है या तू मरने से इनकार करता है!” ऐसा लग रहा था कि वह भी उलझन में था। उसकी इस दुर्दशा का फायदा उठाते हुए, मैं उससे विनती करती रही। उसने गुस्से में पैर पटका। मैंने सिसकना बंद कर दिया और दीवार के सहारे रेंगकर सिकुड़ गई। मैं अब भी कांप रही थी। उसका गुस्सा डरावना था। मुझे हमेशा से शक था कि वह एक खतरनाक आदमी है और उसका शांत और संयमित स्वभाव सिर्फ एक मुखौटा है, लेकिन उसे अपनी तलवार मुझ पर चलाने के लिए तनी हुई और उसकी आँखों में पागलपन भरी चमक देखकर, मेरा यकीन हो गया। मुझे यकीन था कि वह अब तक देखे गए सभी पुरुषों में सबसे धूर्त और निर्दयी था। वह अपनी महत्वाकांक्षा को पूरा करने के लिए किसी भी हद तक जा सकता था। वह अपने भाई रावण से बिल्कुल अलग था, जो अहंकारी होने के बावजूद, एक दयालु और न्यायप्रिय व्यक्ति था। यह आदमी साक्षात शैतान था। वह भावहीन था और उसकी पवित्रता और विनम्रता सब दिखावा थी। अगर उसका मकसद पूरा होता, तो वह किसी को भी मारने, घायल करने या उसकी सेवा करने से नहीं हिचकिचाता। उसने अपनी महत्वाकांक्षाओं को अच्छी तरह छिपा रखा था, लेकिन तेल के दीपक की टिमटिमाती रोशनी और सामने वाली दीवार पर पड़ने वाली उसकी भयानक छाया में, मैं उसकी आत्मा को देख सकता था। शायद मैंने भविष्य की बुरी छायाएँ भी देख ली थीं। जो बात बड़े-बड़े विद्वान मंत्रियों या सर्वशक्तिमान रावण को भी नहीं सूझी, वह देहाती

भद्रा को पता थी। एक दिन, अगर मौका मिला, तो यह नीच अपनी आत्मा को जमीन के एक टुकड़े या कुछ सोने के सिक्कों के लिए बेच देगा। मैं फिर से उसके चरणों में गिर पड़ा।
“तुम मेरे कमरे में क्या कर रहे हो?” उसकी आवाज़ में एक भयावहता थी। “महामहिम को बताने में मुझे डर लग रहा था। आप उनके क्रोध को जानते हैं। लेकिन आप शांत मन से निर्णय लेते हैं और केवल वही करते हैं जो सही होता है…”
“अरे बेवकूफ, आधी रात को महल में घुसने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई? किसी ने तुम्हें रोका क्यों नहीं? महल के पहरेदार कहाँ हैं?” उसकी आवाज़ हर पल तेज़ होती जा रही थी।
“महोदया, महाराज…कृपया…यह अत्यंत महत्वपूर्ण और गोपनीय मामला है। कृपया गार्डों को न बुलाएं…”
उसने मुझे लात मारी और मैं दर्द से कराह उठा।
“मैं पहरेदारों को क्यों न बुलाऊं? तुम्हें फांसी दी जानी चाहिए।” “इसमें आपकी बहन शामिल है। वह किसी से मिल रही है… कृपया मुझे लात मत मारो…”
वह रुका और मेरा गला पकड़कर मुझे फर्श से ऊपर उठाया और द्वेषपूर्ण फुफकार के साथ बोला, "मेरी बहन से तुम्हारा क्या लेना-देना है, सूअर के बच्चे?" खांसते-खांसते मेरा दम घुट रहा था, लेकिन मैंने बड़ी संतुष्टि से कहा, “विद्युतजिह्वा, वह बागी राजा और गद्दार जिसकी तुम्हारे लोग पिछले कुछ महीनों से तलाश कर रहे थे, अब तुम्हारी बहन के साथ बगीचे में है।” मैंने मुस्कुराते हुए अपनी बात पूरी की। ‘ले लो, तुम कुलीन असुर कमीने।’
उसने मुझे ज़मीन पर पटक दिया, लेकिन मैं महसूस कर सकता था कि उसकी ताकत कम हो गई थी। वह थका हुआ बिस्तर पर बैठा था, उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे। मेरा समय खत्म हो रहा था और मुझे जल्दी सोचना था। "क्या हम लॉर्ड मारीचा को बुलाएँ, श्रीमान?"
“मैं जाता हूँ। क्या वे अभी भी वहीं हैं?” वह धीरे से उठा और तलवार को वापस म्यान में रखकर कमर पर बाँध लिया।
मैं खुद को रोक नहीं पाई और बोली, “अब तक तो उनका काम खत्म नहीं हुआ होगा।” उसने मुझे घूरकर देखा और मुझे लगा कि वो मुझे एक और थप्पड़ मारेगा, लेकिन वो बस कमरे से बाहर चला गया। मैं भी उसके पीछे-पीछे चली गई। मारीचा अपने

24 एक क्रांतिकारी की मृत्यु
रावण
मैं बिस्तर पर करवटें बदलता रहा। नींद नहीं आ रही थी। आज भी पत्नी के साथ सेक्स नहीं हो पाया। मैंने हमेशा सोचा था कि मेरी सेक्स ड्राइव बहुत ज़बरदस्त है। लेकिन मेरी शादी शुरू से ही बदकिस्मती से चल रही है। पहली रात, मेरी ठंडी पत्नी ने कपड़े उतारने तक से इनकार कर दिया। मेरे आधे-अधूरे स्पर्शों को उसने इस तरह सहन किया जैसे कोई मर गई हो। बाकी मामलों में उसने एक आदर्श पत्नी बनने की कोशिश की। उसने मेरी देखभाल एक छोटे बच्चे की तरह की, जिससे मुझे बहुत गुस्सा आया। वह सबके प्रति दयालु थी और घर को एक गाँव की गृहिणी की तरह चलाने की कोशिश करती थी। लेकिन शादी के चार महीनों में तीन बार जब मैंने उसके करीब आने की कोशिश की, तो वह एकदम बेजान सी थी। कुछ ही सेकंड में मेरी सारी उत्तेजना, चाहे वो शारीरिक हो या मानसिक, खत्म हो गई। उसके बाद, मैंने कुछ भी करने की हिम्मत नहीं की। रात दर रात, मैं घंटों अपने बिस्तर पर खुद से, अपनी पत्नी से और पूरी दुनिया से चिढ़ता रहता था, जबकि मेरी पत्नी मेरे बगल में एक बूढ़ी औरत की तरह पूरी तरह से ढकी हुई, गहरी नींद में सोती रहती थी, इस बात की जरा भी परवाह किए बिना कि उसका पति पूरी तरह से जाग रहा है और उसके प्रति उसकी उदासीन मनोवृत्ति के कारण हर पल उससे नफरत कर रहा है।
बगीचे में कहीं से कुछ आवाज़ें आ रही थीं। थका हुआ सा मैं बिस्तर से उठा और खिड़की के पास गया। वह बंद थी। गर्म, उष्णकटिबंधीय सर्दियों में भी मेरी पत्नी मुझे खिड़कियाँ खोलने नहीं देती थी। यह एक और बात थी जिससे मुझे चिढ़ होती थी। मैंने खिड़की खोली और आवाज़ें और साफ़ सुनाई देने लगीं। कोई झड़प हो रही थी। धिक्कार है उन असुरों पर, लगता है कुछ सैनिक शराब पीने के बाद आपस में लड़ रहे थे। किसी ने दरवाज़े पर दस्तक दी। इससे पहले कि मैं

दरवाज़ा खोलने के लिए पहुँच पाता, दस्तक तेज़ हो गई। मैंने दरवाज़ा खोला और रानी की तरफ़ देखा। वह बच्चे की तरह सो रही थी, आसपास के शोर-शराबे से बेखबर। चाचा मारीचा बाहर पूरी तरह हथियारों से लैस खड़े थे, और इससे पहले कि मैं कुछ पूछ पाता, उन्होंने मुझे चुप रहने का इशारा किया, मेरा बायाँ हाथ पकड़ा और मुझे बाहर खींच लिया।
“हमारे सामने एक समस्या है।” मारीचा ने मेरे कान में फुसफुसाया। मैं किसी देव सेना या वरुण के हमारे विरुद्ध विद्रोह की खबर सुनने के लिए तैयार हो गया। मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि इसमें मेरी बहन भी शामिल होगी। और धरती पर मौजूद सभी दुष्टों और बदमाशों में से, मैंने कभी नहीं सोचा था कि विद्युतजिह्वा मेरी बहन के साथ संबंध रखेगा। बढ़ते आश्चर्य, फिर निराशा और क्रोध के साथ, मैंने अपनी बहन के रात के कारनामों की अय्याशी भरी कहानी सुनी। उसने खुद को अपने कमरे में बंद कर लिया था और बाहर आने से इनकार कर दिया था। उस रात मुझे जो एकमात्र अच्छी खबर मिली, वह यह थी कि सबसे बड़ा विद्रोही और मेरा प्रतिद्वंद्वी, विद्युतजिह्वा, पकड़ा गया था। और आश्चर्य की बात यह थी कि यह मेरे धर्मनिष्ठ भाई, विभीषण थे, जिन्होंने अपने जीवन में पहली बार कोई सराहनीय कार्य किया था।
मैंने चप्पल या शॉल ओढ़ने की भी जहमत नहीं उठाई। मैंने मारीचा से सभी मंत्रियों को दरबार में बुलाने और तुरंत मुकदमा शुरू करने को कहा। मैं दरबार की ओर जितनी तेज़ी से चल सकता था, चला। मुझे पूरा यकीन था कि मेरी पत्नी को दरवाज़ा बंद होने की आवाज़ भी नहीं सुनाई दी होगी। भगवान उसका भला करे।
दरबार में अंधेरा था और पहरेदार फर्श पर गहरी नींद में सो रहे थे। एक खर्राटे ले रहा था। मैंने उसकी पसलियों पर लात मारी और वह गाली देते हुए उठ खड़ा हुआ। फिर मुझे देखकर वह कुछ मिनटों तक उल्लू की तरह पलकें झपकाता रहा। आखिरकार उसे मेरी पहचान समझ आई और वह तुरंत मेरे पैरों पर गिर पड़ा। मुझे उसकी हरकतों पर ध्यान देने का समय नहीं था, इसलिए मैंने उसे फिर से लात मारी। वह भाग निकला और बाकी मूर्ख भी जाग गए और भाग गए। मैं अपने मंत्रियों के आने तक अंधेरे में खड़ा रहा। मेरे नौकरों ने दीपक या मशालें नहीं जलाई थीं और हम दरबार हॉल के बीच में खड़े रहे जबकि वे मूर्ख चूहे की तरह इधर-उधर भाग रहे थे। दो कुर्सियाँ पलटने और एक अच्छा फूलदान तोड़ने के बाद, कमरा आखिरकार तैयार हुआ और सभा पूरी गंभीरता से शुरू हुई।

में इतना डूबा हुआ था कि मैंने उस पर ध्यान ही नहीं दिया। मुझे लगा कि वह पहले से ज्यादा खुश और चंचल हो गई है, लेकिन मैंने इसे उसकी अचानक बढ़ी हुई प्रतिष्ठा का नतीजा मान लिया। अब मुझे समझ आया कि वह इतनी खुश क्यों दिख रही थी। वह प्यार में थी, या उसे लगता था कि वह प्यार में है। क्या उस कमीने का भी उससे प्यार था, यह मुझे नहीं पता था। उसकी कितनी हिम्मत थी, जब उसके सिर पर इनाम रखा गया था तब भी राजा की बहन से प्रेम करने की। क्या वह मेरी बहन को मोहरे के रूप में इस्तेमाल कर रहा था? मैं उसे उसकी इस गुस्ताखी की कीमत जरूर चुकाऊंगा। रुद्रका कल खूब मजे करेगा।
नींद न आने के कारण मैं बिस्तर पर करवटें बदलता रहा। आखिरकार, नींद न आने की सारी कोशिशें नाकाम हो गईं और मैं सुबह के काम निपटाने के लिए उठ गया। मेरी पत्नी बेफिक्र होकर सो रही थी। मुझे थोड़ी देर के लिए उससे ईर्ष्या हुई और फिर बिना उसे परेशान किए मैं अपने कमरे से बाहर निकल गया।
जब मैं दरबार पहुँचा तो मेरे मंत्री मेरा इंतज़ार कर रहे थे। मुझे देर हो गई थी, इसलिए मैं जल्दी से अपने सिंहासन पर बैठा। हवा में तनाव साफ महसूस हो रहा था। तभी मेरी नज़र उस पर पड़ी। मुझे वह बिल्कुल पसंद नहीं आई। ज़रा भी नहीं। सूर्पनखा वहाँ खड़ी थी, बाल बिखरे हुए, आँखें लाल और सूजी हुई, गुस्से में। मैं भावनात्मक ब्लैकमेल बिल्कुल नहीं चाहता था। मुझे यह बिल्कुल पसंद नहीं था जब मेरा शासन निजी मामलों से जुड़ जाता था। मैं यहाँ फँस चुका था। मुझे पूरा यकीन था कि वह अपने प्रेमी को छोड़ने के लिए मुझे मनाने के लिए हर चाल चलेगी। दरबार में कानाफूसी शांत होते-होते मैं पहले ही गुस्से में था। मैंने चारों ओर देखा और मेरी नज़र मारीच पर पड़ी। वह अपना सिर हिला रहा था और मैं सबसे बुरे की आशंका से घबरा गया। प्रहस्त सीने पर हाथ बाँधे, सिर ऊँचा किए, और चेहरे पर घोर अहंकार और चुनौती का भाव लिए बैठा था। कुम्भा अपनी सीट पर लार टपका रहा था और विभीषण ताड़ के पत्तों को पढ़ने में व्यस्त था। मेरे सभी मंत्री विरोध जताने की अलग-अलग मुद्राओं में बैठे थे।
“मैं विद्युतजिह्वा से विवाह करना चाहती हूँ।” कमरे में सन्नाटा छा गया और सूर्पनखा कुछ कदम आगे बढ़कर मेरी आँखों में सीधे देखते हुए बोली, “मैं उससे विवाह करूँगी और उसके बाद आप उसे फाँसी पर लटका सकते हैं। और जब आप उसकी हत्या कर देंगे, तो मैं उसकी चिता पर सती हो जाऊँगी।”

अनजाने में ही मैं सहम गई। एक असुर स्त्री द्वारा देव विधवाओं की प्रथा का पालन करने की बात सुनकर मुझे बहुत हैरानी हुई, भले ही वह मेरी बहन न होती। पूरा कुल हंसी का पात्र बन जाता। "मुझे ब्लैकमेल करने की कोशिश मत करो!" मैंने गरजते हुए कहा।
फिर वह बेकाबू होकर हिंसक व्यवहार करने लगी। वह अपने हाथों से अपना सिर पीटने लगी, अपने बाल नोचने लगी और ज़ोर-ज़ोर से चीखने लगी। यह एक अजीब नज़ारा था। मैंने देखा कि नौकर और पहरेदार अपनी हंसी रोकने की पूरी कोशिश कर रहे थे। मेरा चेहरा पीला पड़ गया और मुझे समझ नहीं आ रहा था कि इस स्थिति को कैसे संभालूं। यह बहुत शर्मनाक था। मैंने मारीचा की तरफ देखा, लेकिन वह सामने वाली दीवार पर एक छोटे से बिंदु पर ध्यान केंद्रित किए हुए थे, उसे गौर से देख रहे थे। सूर्पनखा ने मुझे अपशब्द कहे और मुझे उसे शर्मिंदा करने की चुनौती दी। मेरी बहन की पागलपन भरी चीखों, चिल्लाहटों और गालियों के अलावा पूरा महल शांत था। मैं असहाय, क्रोधित, थका हुआ और भ्रमित महसूस कर रहा था। लेकिन उससे भी ज़्यादा, मुझे इस बात का पछतावा हो रहा था कि मैं एक अच्छा भाई नहीं बन पाया, अपने परिवार की उतनी परवाह नहीं की, अपने भाई-बहनों को माता-पिता से अलग कर दिया और इतना ज़्यादा महत्वाकांक्षी था। मैं जानता था कि मैं अंदर से कमज़ोर पड़ रहा था।
मैंने कुंभ को अपनी सीट से उठते देखा। “भाई, यह पारिवारिक मामला है और हमें इस पर निजी तौर पर चर्चा करनी चाहिए,” उन्होंने गंभीर स्वर में कहा। मैं उनका आभारी था और बैठक समाप्त करने के लिए खड़ा हो गया। तभी मेरा प्रिय मित्र खड़ा हुआ। प्रहस्त ने अपने सबसे आडंबरपूर्ण और कर्कश स्वर में कहा, “महाराज, यह अब पारिवारिक मामला नहीं रहा। यह पूरे असुर राज्य से संबंधित है। यह राज्य के शत्रु और आतंकवाद एवं राजद्रोह से निपटने के हमारे दृढ़ संकल्प के बारे में है। यह एक राष्ट्र के भविष्य का सवाल है। विद्रोही राजा की बहन का प्रेमी है, इससे कुछ भी नहीं बदलता। बल्कि…”
मैंने एक घुरघुराहट के साथ उसकी बात काट दी और फिर गुस्से में बोली, “प्रहस्त, अपना उपदेश बंद करो। मैं जानती हूँ कि यह क्या है और हमारी जाति और सभ्यता के लिए कितना महत्वपूर्ण है। लेकिन उस बेचारी लड़की पर थोड़ी दया और रहम करो…” मेरी आवाज़ धीमी पड़ गई। क्या मैं इतनी कमज़ोर हो गई थी कि मुझे अपने ही मंत्री से दया की भीख माँगनी पड़ रही थी?

“मुझे अकेले में कुछ नहीं कहना। मैं इस निर्दयी राक्षस के हाथों फांसी पर चढ़ना चाहती हूँ।” सूर्पनखा फिर से चीखने लगी।
प्रहस्त खड़े हुए, प्रणाम किया और चले गए। मारीच, विभीषण और कुंभ को छोड़कर मेरे सभी मंत्री एक-एक करके चले गए। मैं अपने सिंहासन पर सिर हाथों में छिपाकर बैठा रहा। मेरे सिर में असहनीय दर्द होने लगा था। मारीच मेरे पास आए, मेरे कंधों पर थपथपाया और मुझसे अपने अंतरात्मा के अनुसार निर्णय लेने को कहा। उसके बाद सब कुछ मेरे नियंत्रण से बाहर हो गया। विभीषण और कुंभकर्ण ने तर्क दिया कि हमारी बहन की खुशी से बढ़कर कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं है। उन्होंने जोर देकर कहा कि अगर हम अपनी बहन को खुश नहीं कर सकते, तो राज्य का कोई महत्व नहीं है। मैं विरोध करना चाहता था कि मैं राजद्रोह के आरोपी को केवल इसलिए बिना सजा के नहीं छोड़ सकता क्योंकि मेरी बहन उसे चाहती है। राजा होने के नाते, मैं कोई बुरा उदाहरण पेश नहीं कर सकता था। मेरे पास विद्युतजिह्वा को फांसी देने के कई तर्क थे, लेकिन मुझे यह कहते हुए शर्म आती है कि मैं चुप रहा। मैंने उन्हें यह समझाने दिया कि सूर्पनखा का विवाह उसके प्रेमी से होना ही चाहिए। इसलिए, अपनी अंतरात्मा की आवाज़ के विरुद्ध, अपने मंत्री की सलाह के विरुद्ध, जो सही, नैतिक, सैद्धांतिक और व्यावहारिक ज्ञान के विरुद्ध भी था, मैंने अपनी बहन को शत्रु से विवाह करने की अनुमति दे दी। मैं टूटकर अपने कमरे में लौट आया और विभीषण को यह खबर अपनी बहन तक पहुँचाने के लिए छोड़ दिया।

25 एक छोटा कीड़ा
भद्र
विद्युतजिह्वा को रावण का साला बने छह महीने बीत चुके थे। हमेशा की तरह मेरा जीवन दुखमय बना हुआ था। मैं महल में किसी को अपना चेहरा नहीं दिखा सकता था, क्योंकि विद्युतजिह्वा मेरी मृत्यु सुनिश्चित कर देता। रावण के बारे में भी मुझे कुछ पता नहीं था। अब जब वे रिश्तेदार बन चुके थे, तो मुझे अपनी स्थिति का पता नहीं था। मैं कुछ दिनों तक जंगल में छिपा रहा और जब भूख ने मुझे बाहर निकलने पर मजबूर किया, तो मैं हिचकिचाते हुए सड़कों पर आ गया। कुछ हफ्तों तक मैं पकड़े जाने के डर में जीता रहा। जब भी मैं किसी सैनिक को देखता या पुलिस रथों की गड़गड़ाहट सुनता, तो मैं छिप जाता। फिर धीरे-धीरे मेरा डर कम हो गया। मैं राजाओं और राजाओं के रिश्तेदारों के लिए बहुत छोटा था, इसलिए उन्हें मेरी कोई परवाह नहीं थी।
कुछ और हफ़्ते सड़कों पर भटकने के बाद, मैं माला के साथ रहने लगा। पहले तो वह उदास थी और मुझसे कोई वास्ता नहीं रखना चाहती थी। क्रांतिकारी दल पूरी तरह बिखर चुका था, निराश आदर्शवादी मुख्य भूमि के गांवों में लौट गए थे और अवसरवादी, जो बहुसंख्यक थे, रावण की सेना में शामिल होकर सत्ता के पदों पर आसीन हो गए थे। माला उपहास का पात्र बन गई थी क्योंकि उसके प्रेमी ने उसे उस काली और बदसूरत राजकुमारी के लिए छोड़ दिया था। पहले दिन उसने मुझे अपने घर में नहीं आने दिया और मुझे बुरा-भला कहा। मैं मुस्कुराया क्योंकि मुझे पता था कि मैं जीत गया हूँ। आखिरकार, आधी रात को मुझे अंदर आने दिया गया और महीनों बाद मुझे भरपेट खाना मिला। फिर हमने प्रेम किया और सो गए, लेकिन सुबह वह फिर से चिड़चिड़ी हो गई। मैंने उसकी मनोदशा को अनदेखा किया और वह पुराना असुर लोकगीत गुनगुनाता रहा, जिसे सुनकर वह चिढ़ जाती थी। वह गीत एक मोटी, सांवली असुर लड़की के बारे में था जो शहर के हर आदमी का पीछा

मैं महल की ओर चल पड़ी। जब तक मैं मुख्य द्वार पर पहुँची, बाहर भारी भीड़ जमा थी। मुझे इस शोर-शराबे के बारे में जिज्ञासा हुई। बहुत सारे मिठाई और मूंगफली बेचने वाले भीड़-भाड़ में इधर-उधर घूम रहे थे और किशोरों का एक गिरोह भीड़ में घुसने की कोशिश कर रहा था। मैंने एक लंबे, काले, दुबले-पतले युवक से पूछा कि क्या बात है।
“तुम्हें नहीं पता?” आश्चर्य से उसकी बड़ी-बड़ी आँखें फटी रह गईं।
“अरे! मुझे कैसे पता चलेगा?”
“कोई बात नहीं, आप बहुत बूढ़े हो चुके हैं इसलिए आपको परेशान होने की जरूरत नहीं है,” उन्होंने कहा।
मुझे गुस्सा आ रहा था। मैं तो सिर्फ पैंतीस साल का था, लेकिन शायद उन्नीस साल के आदमी के लिए बीस साल से ऊपर का कोई भी आदमी बूढ़ा ही होता है। अपनी झुंझलाहट को जितना हो सके छुपाते हुए मैंने उससे पूछा, "ये बेवकूफ किस बात पर लड़ रहे हैं?"
"अरे बूढ़े बदमाश, हम सब अपने सम्राट के सैनिक बनने जा रहे हैं।"
“सम्राट, कौन सा सम्राट?” मैं बीच वाक्य में ही रुक गया। शायद राजा ने खुद को सम्राट घोषित कर लिया था। मुझे सम्राट या महाराजा या जो भी कहलाना ठीक लगता, बस शर्त यह थी कि वह मुझे परेशान न करे।
“सम्राट को एक विशाल स्थायी सेना की आवश्यकता है, इसीलिए उन्हें तुम्हारे जैसे मूर्खों की ज़रूरत है।” मैं अपनी जान की कसम खाकर भी यह कल्पना नहीं कर सकता था कि यह दुबला-पतला लड़का सेना में क्या करेगा।
“हे भगवान, चाचा जी, आप तो बिल्कुल देहाती हैं,” उनके साथियों ने हंसते हुए कहा। “हमारे सम्राट उत्तर भारत पर आक्रमण करने की योजना बना रहे हैं। हम असुर उनसे बदला लेंगे। हम उन देवों को ऐसा सबक सिखाएंगे जिसे वे कभी नहीं भूलेंगे।”
लगभग उसी क्षण भीड़ में एक रोमांचकारी लहर दौड़ गई। और ज़ोरदार जयकारे गूंज उठे। मुझे महल की सबसे ऊपरी बालकनी पर एक लंबा, चमकीला साया दिखाई दिया। "हमारे सम्राट की जय हो! असुरों की विजय हो! देवताओं का नाश हो!" के नारे भीड़ में गूंज उठे। गहनों से सजे और मोहक रावण की लंबी आकृति, तलवार खींचे हुए, "हर हर महादेव! शिव की जय हो!" चिल्लाई और भीड़ ने भी उसका साथ दिया। "हर हर महादेव" के नारे भीड़ में गूंज उठे। भीड़ बढ़ती गई और मैं लगभग बीच में आ गया था। जल्द ही एक और, अधिक आकर्षक आकृति, रावण के साथ आ

गई। शानदार वस्त्र पहने विद्युतजिह्वा, अपने बहनोई के साथ बालकनी पर आ गए। उनके पीछे भारी-भरकम कुंभकर्ण और अपेक्षाकृत छोटे विभीषण आए। फिर एक-एक करके, रावण के सेनापति और मंत्री भी सम्राट के साथ बालकनी पर आ गए। भीड़ उन्माद में थी। ढोल बज रहे थे। चेंडा और तिमिला की आवाज़ों ने ज़ोरदार शोर मचाया और वातावरण बिजली की तरह आवेशित था। युद्ध के बिगुल बजे और शंख बजाए गए।
मैं रोमांचित था। मेरे हृदय में पल रही वो गुप्त इच्छा, मेरी नन्ही बेटी का सिर फोड़ने और मेरी पत्नी का बलात्कार करने वाले देवताओं से बदला लेने की, मुझ पर हावी हो गई। यही वो क्षण था जिसका मैं इंतज़ार कर रहा था। मैंने ज़ोर-ज़ोर से पुकारा, “हर हर महादेव! देवताओं का नाश हो! इंद्र का नाश हो! महेश्वर की जय हो!” कई लोग मेरे साथ जुड़ गए और जल्द ही मैं लगभग पचास लोगों के समूह का उद्घोषक बन गया, जो मेरी कही हर बात को पूरे जोश और उत्साह से दोहरा रहे थे। मेरे सबसे नज़दीक खड़ा मोटा असुर मुझसे ज़्यादा ज़ोर से चिल्लाने की कोशिश कर रहा था, लेकिन उसके पैर पर एक सटीक, गुप्त लात ने उसे उस दिन के लिए चुप करा दिया और कम से कम उस क्षण के लिए मेरा नेतृत्व सुनिश्चित हो गया। विद्युतजिह्वा ने कुछ कहने की कोशिश की, लेकिन बालकनी से बोली गई कोई भी बात भीड़ तक नहीं पहुँची।
विशाल भीड़ में कई छोटे-छोटे घेरे बन गए थे और हर समूह ज़ोरदार शोर मचाने की कोशिश कर रहा था। कुछ लोग आपस में लड़ रहे थे, लेकिन सबका उत्साह बेमिसाल था। यह सिलसिला एक घंटे से ज़्यादा समय तक चलता रहा। सूरज लगभग सिर के ऊपर था और हज़ारों काले शरीर चमक रहे थे। गंध, गर्मी और उमस ने मेरी इंद्रियों को झकझोर दिया। गले में खराश थी, लेकिन मैंने चिल्लाना जारी रखा, कहीं कोई और मेरी जगह न ले ले। फिर अचानक, भीड़ में सन्नाटा छा गया। गणमान्य व्यक्ति बालकनी से जा चुके थे क्योंकि सूरज की किरणें अब बेरहमी से पड़ रही थीं। वे अंदर अपने ठंडे कमरों में चले गए थे। पीछे से किसी ने फिर से शिव का जयजयकार किया। मैंने देखा कि घोड़े पर सवार लोग भीड़ में प्रवेश कर रहे थे। घोड़ों के पास हलचल मच गई और खाने के पैकेट फेंके गए। हज़ारों काले हाथ उन्हें पकड़ने के लिए ऊपर उठे। मैं भी आगे बढ़ा और धक्का- मुक्की करते हुए खाने का पैकेट पाने के लिए रास्ता बनाया। उसमें बासी मांस, कुछ चावल और बहुत मसालेदार मछली करी थी, जो सूखे केले के पत्तों में लिपटी हुई थी। मैंने उसे चट कर लिया। दोपहर ढलने तक भीड़ तितर-बितर हो गई,

जिससे महल का मैदान केले के पत्तों, मछली की हड्डियों और खाने के टुकड़ों से भर गया।
मैं महल में जाने का रास्ता सोचते हुए मुख्य सड़क पर चल रहा था। दुबला-पतला असुर और उसके कुछ किशोर दोस्त शिव मंदिर की सीढ़ियों पर बैठे आने-जाने वाली लड़कियों को घूर रहे थे। कितना सरल जीवन! उस दुबले-पतले किशोर ने मुझे हाथ हिलाकर इशारा किया और चूंकि मेरे पास करने को कुछ और नहीं था, मैं उसकी ओर बढ़ गया। उसने अपने हाथ से पास की सीढ़ी को साफ किया, जिससे धूल का एक गुबार उठा, और मुझे बैठने का इशारा किया। मैं बरगद के पेड़ के नीचे उबले हुए मूंगफली बेचने वाले के पास गया और अपने बचे हुए पैसों से मुट्ठी भर गरमागरम मूंगफली खरीदी, जो बरगद के पत्तों में कलात्मक ढंग से लिपटी हुई थी, और फिर जाकर उस किशोर के पास बैठ गया और अपनी मूंगफली उसके दोस्तों को दे दी। उन्होंने पैकेट को आपस में घुमाया और जब तक वह मेरे पास पहुंचा, तब तक बस कुछ ही मूंगफली बची थीं।
“मुझे लगा था कि आज युद्ध होने वाला है।” मैंने बेपरवाही से कहा, और किशोर ऐसे खिलखिलाकर हंस पड़े जैसे मैंने उन्हें कोई बड़ा मजाक सुनाया हो।
मैंने हल्की सी मुस्कान दी और उस दुबले-पतले किशोर ने मेरी पीठ थपथपा दी।
मेरी मुस्कान और चौड़ी हो गई।
“पिछले कुछ हफ्तों से यही चल रहा है। हम भी अधीर हो गए हैं। हम बस बाहर जाकर देवों को हराना चाहते हैं,” लड़के ने बेफिक्री से कहा।
“कहते हैं कि देव कन्याएँ बहुत सुंदर होती हैं।” दाँत बाहर निकले हुए एक बदसूरत असुर लड़के ने कुछ उम्मीद के साथ कहा।
“ओह, उनका रंग गोरा है और स्तन आम जैसे हैं,” एक अन्य असुर लड़के ने स्वप्निल भाव से कहा।
“लेकिन उनमें से चूहों जैसी गंध आ रही है,” एक और बुद्धिमान दिखने वाले लड़के ने कहा।
"ओह, तो तुमने उन्हें सूंघा है?" मेरे लंबे-पतले बेटे ने पूछा, और सब हंस पड़े।
“लेकिन आप सेना में क्यों शामिल होना चाहते हैं? क्या आपको देवताओं से कोई व्यक्तिगत दुश्मनी है?” मैंने जो सवाल पूछा, वह मुझे भी मूर्खतापूर्ण लगा।

“उन्होंने बहुत सारे असुरों को मार डाला है, है ना? उन्होंने हमारे मंदिरों को नष्ट कर दिया। वे शिव का सम्मान नहीं करते, है ना?” लड़के कुछ उलझन में दिखे।
“मेरी मां कहती हैं कि देवताओं के सींग और पूंछ होती हैं। वे अपनी पूंछ को धोती की तहों में छिपाते हैं।”
“बुजुर्ग महिलाओं की कहानियां,” बुद्धिजीवी ने फुफकारते हुए कहा, “ये तो बस असभ्य बर्बरों की बातें हैं।”
मैंने कहा, "मुझे लगता है कि आप लोग बस दुनिया घूमना चाहते हैं।"
“अरे, लेकिन हम अपनी जाति के लिए मरेंगे।” दुबले-पतले लड़के ने मुट्ठी भींचकर खड़े होकर नाटकीय अंदाज़ में कहा, “हमारे शरीर धरती के लिए, हमारी जान असुर जाति के लिए।” बाकी लड़के खुशी से चिल्लाए और जोश से बातें करने लगे।
मुझे उनकी जवानी और मासूमियत से ईर्ष्या हो रही थी। मुझे डर था कि युद्ध इन बेचारे बच्चों पर क्या कहर ढाएगा। ये भोले-भाले लोग युद्ध के बारे में क्या जानते हैं? उनके सामने मैं खुद को बहुत बूढ़ा महसूस कर रहा था। मुझे लग रहा था कि मैं यहाँ का नहीं हूँ। मैं अपनी उम्र से कहीं ज़्यादा बड़ा हो चुका था। मैं वहाँ काफी देर तक बैठा रहा और जब सूरज ऊँचे नारियल के पेड़ों के पीछे छिप गया और शाम की समुद्री हवा ने मेरे थके हुए शरीर को सहलाया, तो मैं धीरे-धीरे बड़बड़ाते हुए उस समूह से निकलकर अपने घर की ओर चल पड़ा। शाम की प्रार्थनाओं की हल्की-हल्की आवाज़ और मंदिर की घंटियों की झंकार, मंदिर की सीढ़ियों पर चढ़ती सुंदर लड़कियों की चूड़ियों की खनक के साथ घुलमिल रही थी। चारों ओर उल्लास और जीवन का उमंग छाया हुआ था। फिर भी, मुझे एक गहरा डर सता रहा था कि यह खूबसूरत शाम धुंध की तरह गायब हो जाएगी। मुझे इस बात का गहरा भय था कि जब अंधेरा धुंध की परतों से निकलेगा तो उसमें क्या छिपा होगा। मुझे खून की हल्की सी गंध आ रही थी, युद्ध और मृत्यु की गंध। लेकिन सबसे बढ़कर, मुझे एक भयानक विश्वासघात और विनाश की गंध आ रही थी। हमारी बेचारी, क्षत-विक्षत जाति का सपना कड़वा होने लगा था।
मैं घिसटते कदमों से महल तक पहुँचा और सम्राट से मिलने की विनती की। मोटे- ताज़े द्वारपाल को देखकर ऐसा लगा जैसे मैं किसी पागलखाने से भागा हूँ और उसने मुझे झट से बाहर धकेल दिया। मैं महल के चारों ओर बने बगीचे में, अशोक के पेड़ के नीचे, इंतज़ार करता रहा, इस उम्मीद में कि सम्राट मुझे अपनी

बालकनी या खिड़की से देख लेंगे और मुझे मिलने की अनुमति दे देंगे। इससे बस यही साबित हुआ कि मुझे अभी सबक सीखना बाकी था। उस रात मैं उसी घने पेड़ के नीचे सोया और सुबह तड़के जब बारिश होने लगी, तो मैं वापस अपनी कुटिया में चला गया। फिर शाम को, मैं वापस गया और फिर से अशोक के पेड़ के नीचे इंतज़ार करने लगा।

26 अछूत राजा

रावण
दिन धीरे-धीरे ढल रहा था। इतनी गर्मी थी कि...
द्वीप गर्म पानी में धुले हुए गीले कपड़े की तरह था। मैं
तनाव और घबराहट का माहौल था। युद्ध की तैयारियां चल रही थीं।
पिछले कुछ हफ्तों से। यह मेरे लिए एक तरह की तीर्थयात्रा थी।
एक संक्षिप्त यात्रा को छोड़कर, मैंने कभी नर्मदा नदी पार नहीं की।
मैं वन पथों से होते हुए हिमालय की यात्रा करने के लिए उत्सुक था और मैं इसे देखने के लिए बेताब था।
सरस्वती और सिंधु नदियों के तट पर बसे पौराणिक शहर, जो
असुर सभ्यता अपने चरम पर थी। इतना भी नहीं।
अब भी स्थिर रहा। सिंधु नदी की बढ़ती लहरें, धीमी गति से बहती धाराएँ सरस्वती नदी के सूखने, घेराबंदी और हमलों ने उन शहरों को बदल दिया था। हमारी नस्ल और सभ्यता के सबसे बड़े कब्रिस्तान में।
एक पूरी सभ्यता और उसके लोग कुचल दिए गए थे और उनकी आत्मा को नष्ट कर दिया गया था। एक महान जाति को खुद को हीन प्राणी समझना, अपनी त्वचा के रंग से नफरत करना और गोरापन को महानता के बराबर मानना सिखाया गया था। लेकिन अब

शुरू करने से डरता था। वह कुछ ही हफ्तों की थी और असुर किसी भी हद तक जा सकते थे। मुझे उसकी जान का डर था। मंदोदरी को अपनी बेटी को साथ ले जाने के लिए मनाना मुश्किल होगा। लेकिन मैं कोई न कोई रास्ता निकाल लूंगी। एक शिशु को युद्ध शिविरों में ले जाना मूर्खतापूर्ण था, लेकिन मेरे साम्राज्य के निर्माण में व्यस्त रहने के दौरान उसे जहर दिए जाने या चाकू मारे जाने से तो बेहतर था। अगर वह मेरे साथ होती तो मैं उस पर नजर रख सकती थी। शायद मैं भद्र से उस पर नजर रखने के लिए कह सकती थी। लेकिन क्या मैं उस पर भरोसा कर सकती थी?
आदर्श रूप से, समर्पित सैनिकों की एक छोटी सी सेना अधिक प्रभावी और बेहतर विकल्प होती, यदि हमारा छोटा समूह रात में बिजली की तरह बार-बार हमला करके गायब हो जाता। इस तरह हम दुश्मन की शांति और मनोबल को भंग कर सकते थे। केवल पश्चिमी तट पर स्थित कार्तिकवीरअर्जुन और मध्य भारत में स्थित बाली ही एक छोटी सेना के लिए खतरनाक साबित हो सकते थे। उनके राज्य समुद्र से दूर फैले हुए थे और हमें अंतर्देशीय क्षेत्रों में आमने-सामने की लड़ाई लड़नी पड़ती। नर्मदा नदी के दलदल असुर नौसेना के बड़े जहाजों के लिए बहुत उथले थे और घने झाड़ियों वाले जंगलों से होते हुए पैदल मध्य भारत तक पहुँचना मुश्किल होता। लेकिन गंगा के मैदानों की बर्बर देव जनजातियों को कुचलना शायद इतना मुश्किल न होता।
मैं सोने ही वाला था कि ढलते सूरज की रोशनी में मैंने एक अकेले व्यक्ति को महल से धीरे-धीरे लंगड़ाते हुए जाते देखा। उस छोटे, काले शरीर में एक अजीब सी जानी-पहचानी सी झलक थी। अचानक बिजली की एक तेज़ चमक से पूरा इलाका ऐसे जगमगा उठा जैसे दिन का उजाला हो गया हो और मैंने उस आकृति को साफ़ देखा जब वह डर से ऊपर देख रही थी। भद्रा! यह आदमी तो कभी मरता ही नहीं लगता था। मुझे नहीं पता मेरे मन में कौन सी भावनाएँ उमड़ रही थीं, राहत, नफ़रत या दया? लेकिन फिर, मैंने अपने सेवक को क्यों बुलाया और उस भयानक समय में उस आदमी को अपने कमरे में लाने के लिए कहा?
भद्र

अलकापुरी की घेराबंदी मेरे द्वारा लड़ी गई सबसे खूनी लड़ाई थी। जब तक हम कुबेर के राज्य पहुँचे, असुरों की सेना लाखों में पहुँच चुकी थी और विनाशकारी सेना अपने पीछे कई जलते हुए गाँव और तबाह शहर छोड़ गई थी। तब तक, साठ से अधिक छोटे-बड़े राजाओं और कबीले के सरदारों ने रावण की अधीनता स्वीकार कर ली थी और विजयी सेना में शामिल हो गए थे। कई शहरों में ब्राह्मणों को ढूँढ़कर फाँसी दी गई। विष्णु की मूर्तियों को तोड़कर रौंद दिया गया और उनकी जगह शिवलिंग स्थापित कर दिया गया। यह असुरों के गौरव की पुनर्स्थापना थी। इसने पूरे देश में जोश भर दिया और देश देव अत्याचारियों के विरुद्ध एकजुट होकर उठ खड़ा हुआ। रावण ने प्रेरणादायक वीरता के साथ आगे बढ़कर नेतृत्व किया, जो कभी-कभी दुस्साहस या सरासर मूर्खता की सीमा तक पहुँच जाती थी। लेकिन मृत्यु से विमुख नेता से बढ़कर असुरों को और कोई प्रेरणा नहीं दे सकता था।
जल्द ही आत्मघाती दस्तों ने छोटे किलों पर धावा बोल दिया और उन्हें एक-एक करके अपने कब्जे में ले लिया, कभी बड़ी आसानी से तो कभी खूनी और भीषण लड़ाइयों के बाद। प्रहस्त, रुद्रक, वज्रधमस्त्र, मरीच, विद्युतजिह्वा, कुंभकर्ण, धूम्रक्ष - ये सभी असुर वीर थे जिन्होंने रावण की रणनीतियों को बेरहमी से अंजाम देकर अपना नाम रोशन किया। उन्हें कुछ हज़ार देवों या असुरों के मारे जाने की कोई परवाह नहीं थी। वे यश की तलाश में थे और उन्होंने खून-खराबे से यश प्राप्त किया। कुछ मरे हुए असुर बालक उनके लिए आकस्मिक और महत्वहीन थे। वह दुबला-पतला असुर बालक, जो युद्ध में भाग लेने के लिए इतना उत्सुक था, पश्चिमी तट पर स्थित एक छोटे से दक्षिण भारतीय राज्य पर हमले के पहले ही घंटे में मारा गया। मुझे उसके धड़ को छूने की तीव्र इच्छा हुई, लेकिन इससे पहले कि मैं हिल पाता, उसके शरीर का जो भी अवशेष बचा था, वह हाथियों के झुंड के नीचे कुचल गया।
अंततः, सेना कुबेर की राजधानी अलकापुरी के बाहरी इलाके में रुकी। हमारी सेना ने शहर के बाहर खेतों में डेरा डाला और हमने रसद और मांस के लिए ग्रामीण इलाकों को लूटा, और यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि हमने किसी भी महिला को नहीं बख्शा। ग्रामीण इलाका उपजाऊ और समृद्ध था, पुरुष बलवान थे और महिलाएं सुंदर और भोली थीं। इसलिए पुरुषों को मारना और महिलाओं को ले जाना हमें बहुत आनंद देता था। कभी-कभी मुझे लगता था कि हम उस उत्पात मचाने वाली देव सेना से अलग नहीं थे जिसने मेरे गाँव को रौंद डाला था। लेकिन फिर,

विद्युतजिह्वा हमारे सेनापति थे और उन्होंने ताड़ का पत्ता सौंपते हुए राजा अनर्न्य को रावण का आत्मसमर्पण करने का आदेश दोहराया। अयोध्या की सेना के मुखिया प्रतीत होने वाले उस वृद्ध व्यक्ति ने पत्र को काफी देर तक टकटकी लगाकर देखा। मैंने विद्युतजिह्वा को तनावग्रस्त होते देखा। तभी मुझे एहसास हुआ कि शत्रु सेनापति पत्र को उल्टा पकड़े हुए था और बार-बार उसे और फिर हमें घूर रहा था।
मेरे पास खड़े सैनिक ने उपहासपूर्वक कहा, "इस आदमी को पढ़ना नहीं आता।" “यह क्या है?” बूढ़े कप्तान ने कमजोर आवाज में विद्युतजिह्वा से पूछा।
“अपने राजा के पास जाओ और कहो कि असुरों की सेना उसके नगर में आ गई है।
“राजा प्रार्थना कर रहे हैं।” बूढ़े कप्तान ने कुछ बार पलकें झपकाईं।
"उस मूर्ख को अभी यहाँ आने के लिए कहो।" विद्युतजिह्वा लगभग हताश लग रहे थे।
“जी हाँ…महोदय, लेकिन राजा प्रार्थना कर रहे हैं।” बूढ़े कप्तान ने विद्युतजिह्वा को तिरस्कारपूर्ण दृष्टि से देखा और प्रत्येक शब्द को ऐसे उच्चारण किया जैसे किसी मंदबुद्धि बच्चे से बात कर रहे हों, और बात को और पुख्ता करते हुए कहा, “यदि आपकी कोई अपील है, तो आपको कल आना चाहिए। आज मंगलवार है और राजा प्रार्थना कर रहे हैं।”
हालात हास्यास्पद हो गए थे और हम सब हंस रहे थे, तभी रावण ने प्रवेश किया। वह घोड़े से कूदा और बूढ़े सेनापति से अपने राजा के बारे में पूछा। बूढ़े सेनापति का दिन वाकई खराब जा रहा था। उसने अभी-अभी एक मंदबुद्धि व्यक्ति को प्रार्थना के दिन राजा से मिलने की असंभवता के बारे में समझाने की कोशिश की थी, तभी एक और व्यक्ति आकर वही सवाल पूछने लगा। लेकिन रावण शिष्टाचार का आदमी नहीं था। उसने सेनापति को एक तरफ धकेल दिया और तलवार निकालते हुए किले में प्रवेश कर गया। हम सब उसके पीछे-पीछे चले गए।
लंका और अलकापुरी के आलीशान महलों के बाद, इस जर्जर महल को देखकर गहरा सदमा लगा। हमारे जूतों के नीचे फर्श चूर-चूर हो रहा था, खंभे दीमक खा चुके थे, पर्दे धूल से सने थे और छत में छेद थे। एक बूढ़ा व्यक्ति विष्णु की मूर्ति के सामने पालथी मारकर बैठा कुछ बुदबुदा रहा था। रावण कुछ क्षण रुका और फिर बूढ़े व्यक्ति के कंधे पर थपथपाया। कुछ सेकंड तक कुछ नहीं हुआ। फिर धीरे- धीरे बूढ़ा व्यक्ति मुड़ा और लड़खड़ाते हुए खड़ा हो गया। रावण ने बूढ़े राजा को सहारा देने के लिए हाथ बढ़ाया, लेकिन बूढ़े ने रावण का हाथ झटक

दिया और अपनी उम्र से कहीं अधिक भारी आवाज में चिल्लाया, "मुझे अपवित्र मत करो, हे अछूत शूद्र!"
हम दंग रह गए। एक शक्तिशाली राजा, जिसका अब लगभग आधी दुनिया पर प्रभुत्व था, एक कमज़ोर, बूढ़े व्यक्ति के सामने खड़ा था, जो बेशर्मी से खुद को एक जर्जर कस्बे का राजा कहता था। डर से कांपने के बजाय, उस बूढ़े व्यक्ति ने दूसरे को आदेश दिया कि उसे अपवित्र न करे। मैंने अपने राजा को घूर कर देखा। वह एक पल के लिए स्तब्ध रह गया और कुछ बुदबुदाया जो मेरे पिता के शब्दों से मिलता-जुलता था, "वह भी ब्राह्मण हैं।"
“अछूत, अगर तुम्हारी माँ जातिहीन है, तो तुम भी जातिहीन हो।” बूढ़ा आदमी लगभग चिल्ला रहा था।
रावण की आँखों में क्रोध भड़क उठा और उसने बूढ़े व्यक्ति का गला पकड़कर अपनी तलवार की धार उसकी गर्दन पर रख दी। “मैं एक ऐसे बूढ़े को नहीं मारना चाहता जो लड़ नहीं सकता। आत्मसमर्पण कर दो, मैं तुम्हारी जान बख्श दूँगा।” मैं शूद्र के सामने आत्मसमर्पण नहीं करूंगा।
“मैं शूद्र नहीं, असुर हूँ।” रावण ने लगभग गिड़गिड़ाते हुए कहा। बूढ़े राजा ने उपहासपूर्वक हँसते हुए कहा, “तो हमसे लड़ो, बूढ़े बदमाश!” रावण दहाड़ा।
मैं शूद्र से लड़कर खुद को अपमानित नहीं करूंगा।
“तो शूद्र के हाथों मर जाओ।” रावण दहाड़ा।
“शूद्र, मैं विष्णु के नाम पर तुझे श्राप देता हूँ। मेरे वंशज मुझे अपवित्र करने का बदला लेंगे। वे तेरा नगर, तेरा कुल, तेरी पत्नियों का मान-सम्मान, तेरे पुत्र, तुझे… सब कुछ नष्ट कर देंगे।” रावण ने एक ही झटके में अयोध्या के राजा अनर्न्य का सिर काट डाला।
उसने बूढ़े राजा का कटा हुआ सिर विष्णु की मूर्ति के ऊपर रखा हुआ था। सिर से खून टपक रहा था और मूर्ति के सिर पर बह रहा था।
“विष्णु को मारो, अपने भक्त का खून पियो।” उसने सिर को गेंद की तरह लात मारी और वह मूर्ति के चरणों में एक धीमी सी आवाज़ के साथ जा गिरा। खून से सने विष्णु के होंठ सम्राट पर व्यंग्यात्मक मुस्कान लिए हुए थे। रावण ने अपनी तलवार के मूठ से एक जोरदार प्रहार करके विष्णु का सिर फोड़ दिया। मानो किसी संकेत से प्रेरित होकर, सेना मृत राजा के छोटे मंदिर पर टूट पड़ी और उसे सुनियोजित तरीके से ध्वस्त कर दिया। हमें मूर्ति के भीतर छिपे

माणिक मिले और मूर्ति को सजाने वाली मालाएँ शुद्ध सोने की बनी थीं, जिन पर हीरे जड़े थे। मृत राजा का यह अपमान कि हमारा मात्र स्पर्श उनके शरीर को अपवित्र कर देगा, हमें इतना क्रोधित कर गया कि हमने अलंकृत देवताओं और उनकी सुंदर पत्नियों को लूट लिया। लेकिन, मेरे हृदय के किसी कोने में, एक राक्षस अपने भेदी तंतुओं के साथ मजबूती से चिपका हुआ था। यह सम्राट था जो लगभग क्षमा याचना करते हुए देवराज से बुदबुदा रहा था कि रावण, शक्तिशाली सम्राट और असुरों का रक्षक, का भी एक ब्राह्मण पिता था।

27 अंततः प्यार

रावण
मैंने जर्जर महल को अपनी सेना के लिए लूटपाट के लिए छोड़ दिया। महल में पुराने मंदिर के अलावा लूटने लायक कुछ खास नहीं था। जब उसकी प्रजा भूख से मर रही थी, तब उसका राजा अपने देवता को माणिक और हीरों से सजा रहा था। और उस दुष्ट में इतनी हिम्मत थी कि उसने कहा कि मेरे स्पर्श से वह अपवित्र हो जाएगा। लेकिन फिर, मैंने अपने पिता के ब्राह्मण होने की बात कहकर उसकी स्वीकृति पाने की कोशिश क्यों की? मैं इसके लिए खुद को कोसना चाहता था। इसका क्या मतलब था? क्या मेरे अंदर कोई नस्लवादी शैतान छिपा था? या मैं अपनी असुर पहचान से असहज था? प्रहस्त, अपने उन विद्वतापूर्ण भावों में से एक में, शायद कहते कि ऐसा इसलिए था क्योंकि मैं अब भी अपने पिता के प्रेम के लिए तरस रहा था। मैं अपने पिता और उन सभी चीजों से नफरत करता था जिनका वह प्रतिनिधित्व करते थे। मैं ब्राह्मणों, देवताओं और उनकी संस्कृति से, या उसकी कमी से नफरत करता था। मुझे उम्मीद थी कि किसी ने नहीं सुना होगा। मैं उनका नेता था। ये बेचारे लोग अपने घर, अपनी पत्नियों, बच्चों और बूढ़े माता-पिता को छोड़कर यश की मेरी खोज में मेरे पीछे आए थे। और बदले में मैंने उन्हें क्या दिया? मुझे शर्म आनी चाहिए थी। मैं फिर कभी खुद को ब्राह्मण नहीं मानूंगा। मुझे अपनी गोरी त्वचा से नफरत थी। मुझे अपने कद से नफरत थी। मैं एक असुर था, महाबली, हिरण्य, हिरण्याक्ष और उन असंख्य शक्तिशाली सम्राटों का गौरवशाली वंशज जिन्होंने भारतीय सभ्यता को आकार दिया था।
बाज़ार से गुज़रते समय लोग मुझसे दूर हट गए। पहले तो मुझे लगा कि यह किसी विजयी सम्राट को दिए जाने वाले सम्मान के कारण था, लेकिन फिर मुझे एहसास

“उसे छोड़ दो!” मैं गरजा। तीन असुर, जिनमें से एक कीचड़ में लोट रहा था, उठकर भाग गए। बाकी दो ने मुझे तलवार निकालते देख गायब हो गए। तभी मेरी नज़र उस स्त्री पर पड़ी जिसके लिए वे लड़ रहे थे। उसका घूंघट उसके चेहरे से हट गया था। और क्या चेहरा था! उसकी गहरी आँखें आग की तरह चमक रही थीं, घनी घुमावदार पलकें उसे मासूमियत दे रही थीं। उसके होंठ भरे हुए और लाल थे, छोटी सीधी और नुकीली नाक के नीचे। घुंघराले, काले बाल उसके माथे पर गिरे हुए थे। उसकी बेदाग त्वचा और होंठों की हल्की सी मुस्कान उसे शरमाती हुई दिखा रही थी। मैं उसे घूरता रहा। मेरी नज़र उसकी गहरी छाती के दाहिनी ओर एक छोटे से तिल पर टिक गई। उसके स्तन भरे हुए थे और पेट सपाट था। मैंने देखा कि मेरी आँखों में उमड़ते जुनून को पहचानते ही वह शरमा गई। वह अब तक देखी गई सबसे सुंदर स्त्री थी। वह नारी आकर्षण और कोमलता बिखेर रही थी। मैं उसे पाना चाहता था।
उसने अपने कपड़े समेटे और मैंने नज़रें फेर लीं। हालाँकि हमारी सेना द्वारा किसी शहर पर कब्ज़ा करने पर मैंने कभी किसी को बलात्कार करने या किसी महिला को अगवा करने से नहीं रोका था, लेकिन मैंने खुद कभी ऐसा कुछ नहीं किया था। यह मेरी परवरिश के खिलाफ था और मैंने यह सुनिश्चित किया था कि बच्चों और बूढ़ों को दुर्व्यवहार से बचाया जाए। लेकिन मैं उसे चाहता था। यह वैसा आकर्षण नहीं था जैसा मेरी पत्नी मंदोदरी के लिए विकसित हुआ था, जिसे मैं अब लगभग भूल चुका था। क्या यह पहली नज़र का आकर्षण था? इस स्त्री ने मेरे अंदर एक जंगली जुनून जगा दिया। मैं उसकी ओर बढ़ा और उसकी कलाई पकड़ ली। उसने अपना हाथ पीछे खींच लिया और मैंने उसे फिर से पकड़ने की कोशिश की। तभी उसने मुझे ज़ोर से थप्पड़ मारा। सीधे मेरे चेहरे पर। मेरा गाल जल उठा। मैं हैरान रह गया। जब मैंने उसे फिर से पकड़ा, तो उसने तुरंत मुझे फिर से थप्पड़ मारा, इस बार मेरी नाक से खून बहने लगा। वह बहुत ही साहसी महिला थी। मैं मानो हार मानकर मुड़ा, लेकिन फिर तेज़ी से घूमा और उसे ज़मीन से उठा लिया। उसकी खरोंचों और चीखों को नज़रअंदाज़ करते हुए, मैं उसे अपने तम्बू में ले गया। मैं गुस्से में था, लेकिन उससे भी ज़्यादा, मैं उसे चाहता था। मैंने उसे बिस्तर पर पटक दिया और जब उसने भागने की कोशिश की, तो मैंने उसके चेहरे पर एक ज़ोरदार थप्पड़ मारा। उसने मुझ पर थूका। मैंने रेशमी चादर पकड़ी और उसके हाथ-पैर बांध दिए और उसे बिस्तर पर घसीट लिया, जिससे उसे तीन और बार काटा गया और कई खरोंचें आईं।

फिर हांफते-कांपते मैं पास की कुर्सी पर गिर पड़ा। वह मेरी तरफ पीठ करके लेटी थी; उसकी सुडौल कमर ने एक बार फिर मेरे अंदर वासना की लहरें जगा दीं। उसकी कमर खुली थी और मैं उसके उभारों को चूमना चाहता था। उसकी जांघें सुडौल थीं। मैं बस अपनी उंगलियों को उसकी कोमल, गोरी त्वचा पर फेरना चाहता था। मैंने कल्पना की कि वह नग्न अवस्था में मेरी बाहों में है और गुस्से और कुंठा में कुर्सी के आर्मरेस्ट पर हाथ मारा। 'वह मुझे क्यों नहीं चाहती? मैं भारत का सम्राट हूं। शक्तिशाली असुर राजा रावण।'
कुछ क्षणों की खामोशी के बाद, मैंने उसे अपनी ओर मोड़ने की कोशिश की। “तुम्हारा नाम क्या है?” मैंने उससे पूछा और तुरंत ही मूर्खता का एहसास हुआ। उसने धीरे से अपना चेहरा ऊपर उठाया, उसके घुंघराले, काले बाल उसके माथे पर डिज़ाइन बना रहे थे। उसकी आँखें मुझे भेद रही थीं और मैं डर गया। मेरी रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ गई। ‘यह एक ऐतिहासिक और भाग्यपूर्ण क्षण है जिस पर मेरा, मेरी जाति का और मेरे देश का भाग्य टिका हुआ है।’ मैंने इस मूर्खतापूर्ण विचार को झटक दिया और अपने गुस्से को याद किया। “क्या बलात्कार करने से पहले आपको किसी लड़की की जीवनी की आवश्यकता होती है?” उसने पूछा।
मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ। मेरे मन के एक कोने में उस बात में कुछ हास्य का भाव था और मुझे हँसी आ रही थी। लेकिन फिर, मैं मूर्खता से खड़ा हो गया, मेरे पास कहने के लिए शब्द नहीं थे, मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ। मैं खाँसा, हकलाया और उससे दूर चला गया।
“जब तुम मुझसे निपट लो, तो कृपया मुझे कुछ मिनटों के लिए जीवित छोड़ देना। मैं तुम्हारे राजा, महान असुर रावण को देखना चाहती हूँ,” ये कहते हुए उसने ज़मीन पर थूक दिया।
“लेकिन… मैं रावण हूँ।” मेरी आवाज़ धीमी पड़ गई।
उसके मुंह से एक भयानक चीख निकली। मैं चौंक गया। इतनी प्यारी सी जीव ऐसी डरावनी आवाज कैसे निकाल सकती है? वह खुद को छुड़ाने की कोशिश कर रही थी, लेकिन आखिरकार हार मानकर फूट-फूट कर रोने लगी। मैं दूर खड़ा देखता रहा। कुछ देर बाद, मैं उसके पास गया। मैं उसे छूना चाहता था, लेकिन मेरे हाथ कांप रहे थे। मैं हिचकिचाया और धीरे से अपना हाथ उसके कंधे पर रख दिया। वह हिली और नफरत भरी नजरों से मुझे देखने लगी। मैंने अपना हाथ पीछे खींच लिया।

“क्या आप जानते हैं कि एक देव विधवा कैसे रहती है?” उसने सिसकते हुए पूछा। मैं चुप रहा। “क्या आप जानते हैं कि एक देव विधवा के पास क्या विकल्प होते हैं… आपको कैसे पता चलेगा? आप तो विजेता हैं। कुछ जिंदगियों से आपको क्या फर्क पड़ता है…?”
मैं बहुत दुखी हुई। लेकिन मैं एक अलग संस्कृति से थी। मैंने देव महिलाओं की दुर्दशा के बारे में सुना तो था, लेकिन वह इतनी भयानक थी कि मुझे लगा था कि ये असुरों या नागों द्वारा देवों को बदनाम करने के लिए गढ़ी गई कहानियां हैं।
“तुम्हारे लोगों ने मेरे पति की हत्या की। वह एक गरीब आदमी थे… एक ब्राह्मण जिन्होंने किसी का कोई बुरा काम नहीं किया था… तुम्हारे लोगों ने उनकी हत्या क्यों की?”
मुझे गहरा आघात लगा। ‘मैं एक ब्राह्मण विधवा के साथ क्या कर रहा था? क्या उसके ब्राह्मण होने के कारण मैं उसकी ओर आकर्षित हुआ था? क्या उसकी गोरी त्वचा ने मेरे अंदर वासना जगा दी थी?’ मुझे खुद से घृणा होने लगी। लेकिन फिर, मैंने उसे देखते ही जान लिया था कि वह उच्च कुल की ब्राह्मण स्त्री है। फिर जब उसने अपने वंश के बारे में बताया तो मैं इतना हैरान क्यों हुआ? हम अपने ससुराल में गुलामों की तरह जीवन जी सकते हैं… सिर मुंडवाकर… हाथ और गला बिना किसी सजावट के… जानबूझकर बदसूरत बनाकर… एक जीवनयापन
लाश... हमारे लिए न बिंदी... न चूड़ियाँ... न रंगीन साड़ियाँ... केवल खुरदुरा सफेद... कोई जीवन नहीं... एक अवैतनिक सेवक... एक जीवित लाश...
मैं भावुक हो गई। मैं किसी असुर या असुमन के लिए ऐसे जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकती थी। अगर पति की मृत्यु हो जाती, तो वह कुछ समय तक शोक मनाती और फिर दूसरा जीवनसाथी ढूंढकर अपने जीवन में आगे बढ़ जाती।
“आप एक महान राजा हैं… हा… आपको पता है, मैं अपने पति की अंतिम संस्कार की चिता में कूदकर देवी बन सकती हूँ… पुण्यमयी सती। तब वही लोग, जिन्होंने जीवन में मेरे साथ पशु से भी बदतर व्यवहार किया होगा… मेरे लिए मंदिर बनाएंगे और मेरी पूजा करेंगे।”
“तुम्हारा नाम क्या है?” मैंने उससे पूछा। मैं उसके करीब गया और उसकी ठुड्डी ऊपर उठाई। उसकी गहरी आँखों में आँसू भर आए और वे चमक उठीं। मुझे अपनी ही परछाई दिखाई दी, इतनी छोटी कि मुझे अपनी तुच्छता का एहसास हुआ। वह

[illegible] [illegible] [illegible] [

28 एक असुर राजकुमारी
भद्र
जब गार्ड ने मुझे नींद से जगाया, तो मैंने उसे और उसके पूर्वजों को खूब कोसा। उसने अपने भाले के कुंद सिरे से मुझे धक्का दिया और कहा कि प्रधानमंत्री मुझसे मिलना चाहते हैं, तो क्या मैं अपनी धोती ठीक कर लूँ और चलूँ? पिछली रात की शराबखोरी से मेरा शरीर भारी था और मैं मज़ाक करने के मूड में नहीं था। मैंने उसे फिर से कोसा और अपनी धोती कसकर बाँधी और पास की धीमी बहती धारा में अपना चेहरा धोया। मेरे शरीर से देसी शराब की गंध आ रही थी, इसलिए मैंने एक बार फिर गरारे किए और खुद को घसीटते हुए प्रधानमंत्री के शिविर तक पहुँचाया। मुझे क्यों बुलाया जा रहा था? पिछले कुछ महीनों ने तो हमारी जाति पर सिर्फ़ विपत्ति ही लाई थी। शिविर के अधिकांश लोग इस अभियान से पूरी तरह निराश थे। हम नर्मदा नदी के पार जंगल में डेरा डाले हुए थे, जंगली बेर खा रहे थे और कभी-कभार हमारे शिविर के पास भटकने वाले बंदरों का शिकार कर रहे थे, घटिया शराब पी रहे थे और किसी भी हलचल का अंतहीन इंतज़ार कर रहे थे।
प्रहस्त और अन्य जैसे ज्ञानी पुरुष, महान पुरुष, राजसी लोग आपस में दुबके फुसफुसा रहे थे। लेकिन हमारे महान राजा, शक्तिशाली रावण का यही हाल होना तय था। वह एक हठी ब्राह्मण कन्या को रिझाने में मशगूल था, उन सभी मूर्खों की परवाह किए बिना जो उसके साथ इस अभियान पर निकले थे। उसने अपने मंत्रियों से मिलना बंद कर दिया, सेना का निरीक्षण रोक दिया और यहाँ तक कि अपने प्रेरणादायक भाषण भी बंद कर दिए। वह नदी के किनारे पालथी मारकर बैठी ध्यान करती, कभी असुर राजा को अपने लोगों के साथ किए गए अत्याचारों के लिए कोसती। राजा, प्रेम में डूबे किशोर की तरह, उससे मीठी-मीठी बातें करता और उसके सामने गिड़गिड़ाकर उसका प्यार मांगता। वह अपनी छोटी बेटी को भी भूल

गया था, जिसे वह अपने साथ लिए हुए था, और उस नन्ही बच्ची की भूख से रोने की आवाज़ भी रावण को उसके प्रेम के नशे से नहीं जगा सकी। ब्राह्मण कन्या पर उसके सारे आकर्षण का कोई असर नहीं हुआ और इसी बात ने राजा को बेचैन कर दिया। उसने उसे जबरदस्ती क्यों नहीं ले लिया, यह मेरी समझ से परे था। अभियान बिना किसी लक्ष्य के आगे बढ़ता रहा, बड़े राज्यों से बचते हुए, ज्यादातर जंगलों के किनारे-किनारे चलता रहा और कभी-कभार गांवों के खलिहानों पर छापा मारता रहा। आखिरकार, कई महीनों की भटकन के बाद, हम शक्तिशाली नर्मदा नदी के तट पर पहुँचे, जहाँ हमारे राजा ने वेदवती को अपनी तैराकी की कुशलता से प्रभावित करने का फैसला किया। उन्होंने अपने कपड़े उतार दिए और तेज़ी से बहती नदी में उतर गए, और तेज़ धारा में बह गए। कम से कम महिला ने परिषद को यही बताया। हमारे शक्तिशाली सम्राट ने अपने अंगरक्षकों को दूर भेज दिया था, इसलिए वास्तव में क्या हुआ, यह किसी और ने नहीं देखा।
कुछ दिनों बाद, हमें राजा कार्तिवीरअर्जुन का एक दूत मिला, जिसने दावा किया कि उसने असुर राजा को बंदी बना लिया है। पूरी सेना को बंधक बनाकर रखा गया था। तीन दिनों तक महान असुर परिषद प्रधानमंत्री के शिविर में बंद रही और विचार-विमर्श करती रही। इसी दौरान, शिविर दो भागों में बंट गया। विद्युतजिह्वा के अनुयायियों ने अफवाहें फैलाईं कि रावण मर चुका है। उन्होंने तर्क दिया कि लंका लौट जाना ही बेहतर होगा।
रुद्रक के नेतृत्व में दूसरे समूह ने कार्तिवीरअर्जुन के गढ़ पर आक्रमण करने और राजा के जीवन की कीमत पर भी अर्धजातियों को सबक सिखाने का प्रस्ताव रखा। सुमाली और माल्यावन जैसे समर्थकों ने तर्क दिया कि असुरों का गौरव दांव पर लगा है और निर्णायक परिणाम वाला एक व्यापक युद्ध आवश्यक है। बेशक, ये सब केवल परिषद की बैठक के दौरान शिविर के बाहर खड़े पहरेदारों द्वारा लगाए गए अनुमान थे।
जब मैं तम्बू में दाखिल हुआ, तो सभी महान पुरुष अपनी गद्दीदार कुर्सियों पर बैठे थे। मैंने झुककर प्रणाम किया और अपना हाथ मुँह पर रखा, मेरी आँखें ज़मीन पर टिकी थीं, मेरी कमर झुकी हुई थी, मैं किसी से भी नज़रें नहीं मिला रहा था। राजा का सिंहासन खाली था, लेकिन प्रहस्त ठीक उसके बगल में बैठे थे। वहाँ एक अजीब सी खामोशी छाई हुई थी। तभी प्रहस्त बोले, “भद्रा, हम तुम्हें

एक विशेष कार्य सौंप रहे हैं। हमें लगता है कि केवल तुम ही इसे कर सकते हो।”
मेरा दिल खुशी से उछल पड़ा। ‘आखिरकार! वो पल आ ही गया जिसका मैं सपना देख रहा था, हीरो बनने का मौका, किंवदंती बनने का अवसर और इस नीरस जीवन से मुक्ति पाने का मौका।’ ऐसा नहीं था कि मैं हमेशा से साहसी और बहादुरी भरे कारनामे करना चाहता था, लेकिन कभी-कभी मैं चाहता था कि भाग्य मुझे जीवन भर का ऐसा मौका दे कि मैं किसी तरह अपने राजा को बचा सकूं और उनका प्रिय तथा पूरी जाति का हीरो बन सकूं।
“यह घिनौना लग सकता है, लेकिन तुम्हें यह करना ही होगा।” मारीचा मेरे पास आया और मेरे कंधे पर दिलासा भरा हाथ रखा। मेरे कान जल रहे थे। ‘ये लोग क्या बातें कर रहे थे?’ मेरे वीरता के सपने लाखों टुकड़ों में बिखर गए। यह हमारे असुर राजा को बचाने का कोई वीरतापूर्ण कार्य नहीं होने वाला था। वह कार्य तो मेरे चारों ओर खड़े ये कुलीन लोग करेंगे।
काम ये है…” मारीचा को शब्द स्पष्ट करने में कठिनाई हो रही थी। विद्युतजिह्वा धमकी भरे अंदाज़ में मेरी ओर बढ़ा और मैं सहम गया। मैं खड़ा होकर उसके चेहरे को घूरना चाहता था, लेकिन मेरा शरीर झुका ही रहा। “तुम उस देव स्त्री को ले जाओगे और उसका अंत कर दोगे,” उसने ताना मारा। “और उस अभागी छोटी राजकुमारी का भी।”
जो कुछ मैंने सुना, उससे मुझे गहरा सदमा लगा। मुझे वह औरत कभी पसंद नहीं थी, लेकिन हमारे राजा उससे प्यार करते थे। मैं रावण से प्यार नहीं करती थी, लेकिन मैं उसके साथ इसलिए खड़ी रही क्योंकि मुझे विश्वास था कि आखिरकार वह इन सभी मूर्खों से बच निकलेगा। और इससे मेरा मकसद पूरा हो जाएगा। और अब, जब वह खतरे में था, शायद अपनी ही मूर्खता के कारण, उसके तथाकथित अच्छे दोस्त उसकी प्रेमिका और उसकी नन्ही बच्ची को खत्म करने की साजिश रच रहे थे। “क्या हमें उसे मार देना चाहिए? और नन्ही राजकुमारी को भी…“ मारीचा ने बुदबुदाते हुए कहा।
“छी!” विद्युतजिह्वा ने गुस्से से कहा। “राजा के इस स्त्री के साथ बेशर्मी से घूमने से हमें पहले ही बहुत बदकिस्मती झेलनी पड़ी है। और क्या तुम भविष्यवाणियाँ भूल गए हो? रावण की वह छोटी बेटी पूरे असुर वंश के लिए अपशगुन है। वह हमारे लिए मृत्यु और विनाश लाएगी और हमारे राजा को ये सब बातें मूर्खतापूर्ण लगती हैं। मैं कोई जोखिम नहीं लेना चाहता।”

“बस करो!” प्रहस्त की आवाज़ शांत और स्पष्ट थी, जिससे वह और भी डरावनी लग रही थी। वह बेचैन और असमंजस में दिख रहा था। “मुझे यह बताने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन मेरा मानना है कि इस निर्णय का कारण जानने से आपको अपने वंश के प्रति अपने कर्तव्य को निर्मल मन से निभाने में मदद मिलेगी।”
मारीच की आवाज़ मुश्किल से सुनाई दे रही थी, मानो उन्होंने कुछ निगल लिया हो और साथ ही बोलने की कोशिश कर रहे हों। “हमारा युद्ध अभियान एक नाजुक मोड़ पर पहुँच गया है। हम पूरी तरह से हार के कगार पर हैं। हमारे राजा को बंदी बना लिया गया है और हमें डर है कि हमें कार्तिवीरअर्जुन को भारी भरकम फिरौती देनी पड़ेगी। सैनिकों का मनोबल गिरा हुआ है और परिषद ने अपनी सारी बुद्धिमत्ता से एक निर्णय लिया है। हमें लगता है कि वह स्त्री हमारे राजा के लिए एक बड़ी बाधा थी। मैं यह तो नहीं कहूँगा कि वह देवताओं द्वारा भेजी गई जासूस है, लेकिन मैं ऐसे कई लोगों को जानता हूँ जो इस तरह के काल्पनिक सिद्धांतों का समर्थन करेंगे। इन षड्यंत्र सिद्धांतों की सत्यता चाहे जो भी हो, इसमें कोई संदेह नहीं है कि वह पूरे असुर वंश के गले की फांस बन गई है।” मारीच रुके और मेरी ओर ध्यान से देखा। मुझे यकीन था कि वह इन सभी महान पुरुषों के प्रति मेरी तीव्र घृणा को महसूस कर सकते थे। उन्होंने आह भरी और मेरे कंधे पर हाथ रखा, और मेरे ऊपर झुक गए। मुझे ऐसा लगा जैसे कोई पिल्ला अपने स्वामी को देख रहा हो।
प्रहस्त मेरी ओर बढ़ा, फिर अपनी विशाल ऊंचाई से झुककर मेरे कान में दबी हुई आवाज़ में फुसफुसाया, "इसे ले जाओ और इसका निपटारा कर दो।"
विद्युतजिह्वा पास आकर फुफकारते हुए बोला, "और उस नन्हे बच्चे को मत भूलना।"
मैं कुछ देर तक स्थिर खड़ा रहा और फिर, निम्न श्रेणी के असुरों की पूर्ण लाचारी के साथ, मैंने कमर झुकाकर प्रणाम किया। 'आपकी इच्छा ही मेरे लिए आदेश है, गुरुजी।'
प्रहस्त ने हाथ के इशारे से मुझे विदा कर दिया और मैं भारी मन से बाहर निकल गया, विद्युतजिह्वा का उपहास मेरे भीतर गहराई तक गूंज रहा था। मैं अपने शिविर में गया और अपने फटे-पुराने पलंग पर गिर पड़ा। मैं इन लोगों के सामने कुत्ते की तरह व्यवहार करते-करते थक गया था। 'इन दुष्टों को किसने यह अधिकार दिया कि वे मुझ जैसे गरीब लोगों पर अत्याचार करें?' मेरे भीतर क्रोध और आक्रोश उमड़ रहा था, लेकिन तभी, ठीक उसी क्षण जब मेरा क्रोध छलकने

कि मैं अपना कर्तव्य निभा रहा हूँ। मुझे भय, आत्म-दया और घृणा के सिवा कुछ नहीं मिला। उसी मनोदशा में मैं रसोई की ओर चला गया। काउंटर पर मौजूद क्लर्क ने मुझे देखकर मुस्कुराया और खाने का एक बंडल मुझे थमा दिया। इतनी सुबह रसोई में इतनी चहल-पहल देखकर मैं हैरान रह गया। जब मैं वापस आया, तो हल्की-हल्की बारिश शुरू हो गई थी। मैंने बंडल को गाड़ी में डाला और ड्राइवर की सीट पर चढ़कर इंतजार करने लगा।
जब वे उसे लाए तो पूरब में प्रकाश की लकीरें थीं। उसे नशा दिया गया था और दो आदमी उसे उठाकर ले जा रहे थे। उसके कपड़े अस्त-व्यस्त हो गए थे और उसके सफेद स्तनों का एक बड़ा हिस्सा दिख रहा था। उसे ले जा रहे आदमी उस दुर्लभ दृश्य को घूर रहे थे और हंस रहे थे। उन्होंने उसे गाड़ी के पीछे रख दिया, मुझे आँख मारी और चले गए। कुछ देर बाद, मारीचा अपने हाथों में एक छोटा सा बंडल बड़ी कोमलता से लिए हुए आया। उसने बच्ची के माथे को चूमा और धीरे से उसे उस औरत के पास रख दिया। वह मेरी नज़रों से बचने की कोशिश करते हुए पीछे मुड़ गया। मैंने बच्ची की जांघों पर एक आंसू की बूंद देखी। वह थोड़ी हिली, नींद में ही मासूम सी मुस्कुराई और शांत हो गई।

□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□□□□, □□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□ □□□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□

मुंह फेर लिया। गाड़ी डगमगाती और झटके खाती हुई जंगल के संकरे रास्ते से होते हुए देवों के राज्य की ओर बढ़ रही थी। मेरी मंजिल नशे की दुनिया में सो रही थी। जंगल की सुंदरता ने मुझे प्रसन्न किया और कुछ समय के लिए मैं अपने बुरे विचारों को दूर कर सका। मैंने अपने चेहरे पर ठंडी फुहार का आनंद लिया, सुगंधित हवा को अपनी त्वचा को सहलाते हुए महसूस किया और मैं भूल गया कि मुझे क्या करने का जिम्मा सौंपा गया था। मैं भोला-भाला इंसान था, है ना? अंधेरा हो चुका था और दूर पहाड़ियों के पीछे सूरज डूब रहा था, तभी मैं आराम करने के लिए रुका। वह अभी भी सो रही थी। मेरे अंदर कामुक भावनाएँ जाग उठीं। उसके स्तन अभी भी आधे खुले हुए थे। मैं उसके कपड़े पूरी तरह उतारकर देखना चाहता था कि क्या छिपा है। जैसे ही मैंने कांपते हुए हाथ से उसकी ओर हाथ बढ़ाया, उसके पास लेटा बच्चा हिल गया। इससे मैं पीछे हट गया और मुझे शर्म महसूस हुई। फिर गुस्सा लौट आया। वह मेरी थी, मैं उसके साथ जो चाहूँ कर सकता था। मुझे उसके साथ कुछ भी करने का अधिकार दिया गया था। मुझे आश्चर्य हुआ कि मैं उसे इतनी दूर तक ले आया था। मैं कुछ मील दूर जाकर उसे खत्म कर सकता था और कुछ ही घंटों में वापस आ सकता था। जो कहानी फैलानी थी, वह यह थी कि हम उसे और राजकुमारी को शिविर से कुछ मील दूर एक गाँव के डॉक्टर के पास ले जा रहे थे, क्योंकि वे जंगली बुखार से पीड़ित थीं, लेकिन दोनों बीमारी से मर गईं।
अब तक मैं शिविर से मीलों दूर आ चुका था। अगर वो मेरे पास होती तो किसे पता चलता? शायद परिषद मेरे इस काम की सराहना करे। मैं फिर से चला और उसके कपड़ों पर हाथ कसकर पकड़ लिए। मैंने उसके सीने का कपड़ा खोलने की कोशिश की। लेकिन उत्तेजना में मुझे मुश्किल हो रही थी। मैं लगभग खोल ही चुका था कि उसने अपनी आँखें खोलीं और मुझे गाय की तरह घूरने लगी। मैं डर से कांप उठा, अपना प्रयास रोक दिया और खड़ा हो गया। उसकी आँखों में आँसू भर आए और एक छोटी सी बूँद गिरी और गाड़ी के फर्श पर बिछे लाल रेशमी कपड़े को गीला कर दिया। मुझे शर्म महसूस हुई और मैंने अपना चेहरा दूसरी तरफ कर लिया। फिर वह चीखी - पीड़ा, दर्द और अकेलेपन से भरी एक जानवर जैसी चीख। इससे आसपास के पक्षी चौंक गए। मेरे हाथ में जो छोटा सा तेल का दीपक था, वह गिर गया और रेशमी चादर पर तेल के दाग लग गए। मैंने उसे सीधा करने की कोशिश की लेकिन डर से मेरे हाथ कांप रहे थे।

“अशिष्ट असुर!” वह तीखी आवाज में चिल्लाई। “तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मुझे छूने की?” बच्चा जाग गया था और रोने लगा था।
“तुम्हारे मालिक ने तो मुझे छूने की भी कोशिश नहीं की और तुम… बदमाश! तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई?”
मेरा क्रोध फिर भड़क उठा था। वह जंगल में बिल्कुल अकेली थी और मुझे उसे मारने का आदेश दिया गया था। जैसे ही वह दूर हटने की कोशिश करने लगी, मैं उसकी ओर बढ़ा। उसने गाड़ी से उतरने का प्रयास किया, लेकिन टिमटिमाते तेल के दीपक ने, जिससे उसके कपड़ों पर तेल के दाग लग गए थे, हवा से अचानक तेज हो गया और उसके वस्त्र में आग लग गई। सहज ही, मैंने आग बुझाने की कोशिश की, लेकिन उसने मुझे ज़ोर से थप्पड़ मारा और दर्द और गुस्से से चीखती हुई, आग के गोले की तरह नदी की ओर भागी। वह नदी तक नहीं पहुँच पाई। मैं उसके पीछे भागा, उसे पकड़ने की कोशिश में, अगर संभव हो तो उसे बचाने की कोशिश में। वह चीखती रही, लेकिन जलती रही। वह नदी के किनारे से कुछ ही फीट दूर गिर गई थी और उसे बचाना असंभव था। मैंने उसे बचाने की कोशिश छोड़ दी। आखिरकार, मेरा काम तो उसे खत्म करना ही था। फिर भी, वह लंबे समय तक मरने से इनकार करती रही। नदी के किनारे, अधजले मांस के ढेर के रूप में पड़ी हुई, वह भयानक लग रही थी। वह पूरे असुर वंश को कोसती रही। वह चीखी कि रावण ने उसे इस हालत में पहुँचाया है और वह अगले जन्म में उसे सताने के लिए वापस आएगी। मैंने उसे उदासीनता, लगभग ऊब के भाव से मरते देखा। मरने से पहले, वह चिल्लाई कि वह छोटी असुर राजकुमारी के शरीर में आत्मा बनकर प्रवेश करेगी और पूरे असुर वंश का नाश करेगी, और उस ज्योतिषी की भविष्यवाणी उसके क्रोध, उसकी पवित्रता और ऐसी ही बेतुकी बातों से सच हो जाएगी। अंत में, जब पूरब में आकाश हल्का लाल हो रहा था, तब उसकी मृत्यु हो गई।
बच्ची का रोना बंद हो गया था। मैं गाड़ी की तरफ दौड़ी। उसने मेरी तरफ देखा और उसके चेहरे पर एक पल के लिए मासूम सी मुस्कान आई। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूँ और मन किया कि उसका सिर पास के किसी पत्थर पर पटक दूँ। तभी मुझे अपने ही घर में देवताओं द्वारा एक छोटी बच्ची की खोपड़ी के टुकड़े- टुकड़े किए जाने का दृश्य याद आया। क्या मैं इस बच्ची के साथ भी वही करना चाहती थी? मैंने उसे उठाया और उसकी छोटी मुट्ठियाँ मेरी छोटी उंगली पर कस गईं। मैं ऐसा नहीं कर सकी। बिलकुल नहीं कर सकी। मैं बच्ची को गोद में लिए ही गिर पड़ी और रोने लगी।

मैं वहां काफी देर तक बैठी रही और गोद में रोते हुए बच्चे को लिए सो गई, तभी अचानक कुछ आवाज़ों से मेरी नींद खुल गई। एक बड़ा शिकारी दल दिखाई दिया – मैंने सैकड़ों हथियारबंद आदमियों को घोड़ों पर और पैदल देखा। वे नदी के किनारे एक खुले मैदान में डेरा डाल रहे थे। बच्चा बेजान और लगभग नीला पड़ा था, शायद मर चुका था। मुझे यहां से भागना ही था। शिकारी दल का शोर इतना था कि पूरा गांव जाग जाता और मुझे डर था कि बच्चा जागकर रोने लगेगा। दल के लोग देवों जैसे दिख रहे थे, हालांकि उनमें से कई काले रंग के थे। मैं बिल्कुल नहीं चाहती थी कि उन्हें मरी हुई ब्राह्मण स्त्री और मुझे बच्चे के साथ देख लिया जाए… मुझे वहां से भागना ही था।
लेकिन जब मैं जाने के लिए मुड़ी, तो मेरा पैर फिसल गया और मैं झाड़ियों में गिर पड़ी। बच्चा मेरे हाथों से फिसलकर कुछ फीट दूर कीचड़ से भरी खाई में जा गिरा और ज़ोर से रोने लगा। मेरी हैरानी के बीच, एक सैनिक हमारी तरफ मुड़ा और मैंने देखा कि वह बाकी सैनिकों को सचेत कर रहा था और हमारी तरफ इशारा कर रहा था। वे जाँच करने के लिए हमारी ओर आए। मैं एक बड़े बरगद के पेड़ पर चढ़ गई थी, इस उम्मीद में कि उन्होंने मुझे नहीं देखा होगा। सौभाग्य से पहरेदारों ने ऊपर नहीं देखा। मैंने और सैनिकों को आते देखा और फिर खतरे की एक तेज़ चीख सुनी। उन्हें नदी के किनारे जली हुई मृत ब्राह्मण महिला मिली थी। मैंने उनमें से एक को अपने मुख्य शिविर की ओर भागते देखा। वहाँ कुछ अफरा-तफरी मची हुई थी और मैंने उन्हें बच्चे को कीचड़ से बाहर निकालने की कोशिश करते देखा। खाई गहरी नहीं थी, लेकिन बच्चा धीरे-धीरे डूब रहा था। सैनिकों को पता था कि जैसे ही वे उसमें कदम रखेंगे, वे दलदल में डूब जाएंगे।
एक छोटे कद का, गरिमापूर्ण व्यक्ति आया और सभी ने उसे प्रणाम किया और उत्साह से बातें करने लगे। उसने खाई में झाँका और अपने एक सेवक को हल लाने का आदेश दिया, जिसका उपयोग करके उसने सावधानीपूर्वक बच्चे को खाई से बाहर निकाला। उसने बच्चे की धड़कन महसूस की और उसके आदेश पर उसके सेवक अलग-अलग चीजें लाने के लिए इधर-उधर चले गए। कुछ मिनटों बाद, बच्चा फिर से रोने लगा और सभी ने जयकार की। मुझे भी पेड़ की छाँव में खड़े होकर जयकार करने का मन हुआ, लेकिन मैंने खुद को रोक लिया। शाखाओं के बीच छिपकर मैंने उन्हें वेदवती के बचे हुए अवशेषों का अंतिम संस्कार करते देखा और उनकी बातचीत से मुझे पता चला कि वह विद्वान दिखने वाला व्यक्ति मिथिला का राजा जनक था।

जब मैं इतना शांत हो गया कि साफ-साफ सोच सकूँ, तब मुझे यह बात सूझी। मुझे उस बच्ची को मार देना चाहिए था। यह सोचकर ही मैं काँप उठा, लेकिन मुझे यह पूर्वाभास भी था कि वह एक दिन वापस आएगी। वह अपने कुल में लौटेगी और अपने पिता के सारे संघर्षों का विनाश करेगी। मुझे नहीं पता कि मुझे यह कैसे पता चला, लेकिन ये विचार बार-बार मेरे मन में आते रहे। मैंने शिव से मुक्ति के लिए प्रार्थना की, लेकिन भीतर ही भीतर मैं जानता था कि शिव भी असहाय हैं। शायद यही उसका बदला होगा – एक असुर राजकुमारी का उस अभिमानी और निर्दयी जाति से बदला, जो उसे जीवन का ज्ञान होने से पहले ही मार डालना चाहती थी। वह मानव जाति का इतिहास बदल देगी। लेकिन मैं बहुत आगे की सोच रहा हूँ। मुझे संदेह है कि क्या मुझे तब इतना ज्ञान था या मैं इतना दूरदर्शी था। यह सब बाद में आएगा और हम सबको निगल जाएगा, मेरे देश को आने वाले कई सहस्राब्दियों तक अंधकार में धकेल देगा।

29 उसे जीने दो
रावण
मैं किसी का सामना नहीं करना चाहता था। बाज़ार में बैल की तरह, मुझे माल के बदले बेच दिया गया। मेरे लोगों ने अपने अभियान से जो कुछ भी हासिल किया था, उसे देकर मुझे वापस खरीद लिया। अपमान पूर्ण था। एक ही झटके में, कार्तिवीरअर्जुन ने मेरी सेना को निष्फल कर दिया। हमारे पास लंका वापस ले जाने के लिए कुछ भी नहीं बचा था। हमें अपने निजी तलवारों, घोड़ों, हाथियों और सोने को छोड़कर अपने सभी हथियार सौंपने पड़े। और बदले में हमें मेरा निष्फल जीवन मिला। मैं मरना चाहता था, लेकिन फिर भी, सारा बलिदान व्यर्थ हो जाता। इससे भी दुखद बात यह थी कि मैं लड़ नहीं सका।
वेदवती ने मुझे तेज़ बहती नदी पार करने की चुनौती दी और मैं मूर्खता में उफनती नर्मदा में कूद गया। मुझे ऐसा लगा जैसे कोई किशोर अपनी प्रेमिका को प्रभावित करने की कोशिश कर रहा हो। लेकिन मैंने धारा की तेज़ी को कम आँका। और इससे पहले कि मैं अपने गलत समय पर किए गए गोते से उबर पाता, मेरा सिर ज़मीन के नीचे एक चट्टान से टकरा गया। मैं लगभग डूब ही गया था और फिर धारा में बह गया। जब मैंने आँखें खोलीं, तो मैं एक कालकोठरी में था, लोहे के पलंग से जंजीरों से बंधा हुआ, एक पागल आदमी की तरह। शुरू में, मुझे खुद पर, वेदवती पर, असुरों पर और कार्तिकवीरअर्जुन पर गुस्सा आया, जिसे मैंने अपना बंदी बनाने वाला समझा। लेकिन जल्द ही नम कालकोठरी में मेरा गुस्सा शांत हो गया। जब बासी भोजन के लिए दरवाज़ा खुला, जो अंदर फेंका गया था, तो आशा की एक किरण जगी। कुछ दिनों बाद, वह भी बुझ गई। जल्द ही मैं दिनों की गिनती भूल गया, समय भूल गया, और अपनी महत्वाकांक्षा, गरिमा और गौरव को भी भूल गया। मैं बस एक चूहा था, कालकोठरी में जीवित रहने के लिए इधर-उधर भाग रहा था।

कुछ दिनों बाद उन्होंने मेरी जंजीरें खोल दीं। मेरा मनोबल टूट चुका था, लेकिन बाहर पहरेदारों के कदमों की आहट गिनकर मैंने खुद को संभाला। मैंने भागने की कोशिश की, लेकिन बुरी तरह नाकाम रहा। मुझे नीच पहरेदारों ने पीटा। अगर कार्तिकीरार्जुन मेरी यातना देखने आए होते तो मुझे इतना बुरा नहीं लगता। मैंने उन्हें चौंकाने वाले शब्दों का अभ्यास किया था। मैं चाहता था कि वे देखें कि मैं कुछ भी सह सकता हूँ और मेरी आत्मा को कभी पराजित नहीं किया जा सकता। लेकिन वे नहीं आए और मुझे लगता है कि इस बात ने मुझे सबसे ज़्यादा दुख पहुँचाया। उस अंधेरी कालकोठरी में मैं एक बच्चे की तरह रोया; मैं अपने खोए हुए गौरव, अपनी आज़ादी, अपनी महत्वाकांक्षाओं के लिए रोया। कभी-कभी मैं लंका और अपनी लगभग भूली हुई पत्नी मंदोदरी के बारे में सोचता था। मुझे पके आमों की खुशबू की बहुत याद आती थी। मुझे पीले कटहल का स्वाद, मुज़ारिस के पास पूर्णा के विशाल झरनों से गिरते पानी की फुहार, सफेद रेत पर लहरों का टकराना, चांदनी रात में नारियल के पेड़ों का हिलना, चमेली की खुशबू याद आती थी…
फिर एक दिन, जब सारी उम्मीदें मर चुकी थीं, दफ़न हो चुकी थीं और मेरे भीतर गहराई में सड़ चुकी थीं, तभी बाहरी दुनिया का दरवाज़ा खुला। कालकोठरी के बाहर रंग-बिरंगे सैनिकों और कार्तिकवीरअर्जुन के सेवकों की भीड़ मेरा मज़ाक उड़ाते हुए खड़ी थी, मुझे विदा करने के लिए। दिन की तेज़ धूप मेरी आँखों को चुभ रही थी, इसलिए मैंने आँखें बंद ही रखीं। एक अंधे आदमी की तरह मैं लड़खड़ाते हुए आज़ादी की ओर बढ़ा। उस पल मुझे बदला लेने की कसम खानी चाहिए थी, योजना बनानी चाहिए थी, दिमाग में उथल-पुथल मची होती, अपने दुश्मन से हिसाब बराबर करने की, लेकिन अफ़सोस, मेरे दिमाग में बस एक ही बात थी - एक रेज़र ढूँढ़ना। मेरी दाढ़ी बढ़ चुकी थी और मुझे शेव करने की सख्त ज़रूरत थी। आज भी मुझे उस पल कुछ और न सोच पाने पर शर्म आती है।
शिविर में लौटते ही उन्होंने मुझे नज़रअंदाज़ कर दिया। कम से कम उनकी नज़र में तो मैं अब राजा नहीं रहा था। मैंने अपनी प्रेमिका और बच्चे को हर जगह खोजा। मैं अपने किसी भी मंत्री का सामना करने से डरता था। वे सभी खाली हाथ घर वापसी की यात्रा के लिए सामान पैक करने में व्यस्त थे। हताश होकर, मैंने अंततः मारीचा को घेर लिया, पहले उनसे जानकारी माँगी और फिर गिड़गिड़ाकर वेदवती के बारे में पूछा।

“खुद को संभालो, बेटे।” उनके शब्दों ने मेरे उस डर की पुष्टि कर दी जो मुझे अपनी अपमानजनक वापसी के बाद से सता रहा था और मैं जमीन पर गिर पड़ा। मैंने किसी तरह पूछ ही लिया, "कैसे और कब?"
“इन जंगलों में बहुत से लोग बीमार पड़ गए और कई मौतें हुईं। वह भी इस बीमारी की चपेट में आ गई और छोटी राजकुमारी भी। उन्हें कुछ दूरी पर स्थित एक ग्रामीण चिकित्सक के पास ले जाया गया, लेकिन दोनों ही जंगल के बुखार से मर गईं।” उसने नज़रें फेर लीं।
मैं रो पड़ी। मुझे अब दिखावा करने की ज़रूरत नहीं थी। मुझे न तो राज्य चाहिए था, न ही यश, असुर वंश को अपना ख्याल खुद रखने दो। प्रहस्त हो या विद्युतजिह्व, या जो भी राज करना चाहे, वो कर सकता है। मैं लगातार बड़बड़ाती रही। मुझे मारीच के गर्म आँसू अपने कंधे पर गिरते महसूस हुए। तभी मन में एक गहरा संदेह जागा। 'नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। कम से कम मारीच मेरा मित्र तो था और वो ऐसा होने नहीं देता।' मैंने खुद को उससे छुड़ाया और उससे पूछा, "उसे डॉक्टर के पास कौन ले गया?"
मारीचा की आँखें सूनी थीं। वह दीवार पर एक जगह टकटकी लगाए देखता रहा और बुदबुदाया, "कोई न कोई सिपाही होगा... मैं पता करके तुम्हें बता दूंगा, लेकिन बेटे, तुम्हें इसे भूल जाना होगा..."
“नहीं!” मैं चिल्लाई। “बताओ उन्हें डॉक्टर के पास कौन ले गया?” मैंने उसे हिलाया और उसकी आँखों में डर साफ दिखाई दिया। लेकिन उसके होंठ कसकर बंद थे और उसने मेरी नज़रें बचाईं। “क्या वह भद्रा थी?” मैं ज़ोर से रो पड़ी, उस शापित नाम को लेते ही मेरे पेट में डर भर गया।
सन्नाटा छा गया… फिर उसने दोबारा बोलना शुरू किया, “रावण, कृपया… इसे जाने दो…”
मैंने लगभग उसे गिरा ही दिया था कि मैं भाग निकला। मैंने अपनी तलवार म्यान से निकाल ली और भद्रा को पुकारा। एक पेड़ के नीचे शतरंज खेल रहे कुछ सैनिकों ने मेरी ओर देखा। जब उन्होंने मेरे हाथ में तलवार देखी, तो वे तुरंत खड़े हो गए। उनमें से एक भागकर गया और कुछ मिनटों में लौटकर आया, झुककर धीरे से बोला, "महाराज, भद्रा रास्ते में हैं।" उनके इस सम्मानजनक शब्द के प्रयोग से मुझे कुछ राहत मिली। बहुत समय हो गया था जब किसी ने मुझे राजा कहकर संबोधित किया था। शायद मेरे हाथ में नंगी तलवार ने ही यह कमाल कर दिया था। 'मैं क्या सोच रहा हूँ? क्या मैं सत्ता के प्रति इतना आसक्त हो

गया हूँ कि जैसे ही एक साधारण सेवक मुझे सम्मान दिखाता है, मैं अपने प्रेमी और अपने बच्चे की मृत्यु को भूलने की हद तक गिर जाता हूँ?'
जब तक वह धूर्त भद्रा आया, मैं अपना क्रोध काबू में करने के लिए बहुत संघर्ष कर रहा था। उसकी नाग जैसी आँखों से घूरती निगाहों को देखकर मैं बेचैन हो गया। मैंने मुड़कर उसे अपने पीछे आने का आदेश दिया। मैं उसका डर महसूस कर सकता था और मन ही मन खुश था कि लोग अब भी मुझसे डरते हैं। अपने शिविर में प्रवेश करते ही मैंने भद्रा का गला पकड़ लिया और अपनी तलवार की धार इतनी ज़ोर से दबाई कि खून की एक बूँद निकल आई। वह डर गया और बेतरतीब ढंग से बड़बड़ाने लगा। मैंने चिल्लाकर पूछा, “तुमने मेरी वेदवती और उस नन्हे बच्चे के साथ क्या किया है?”
वह रोने लगा और मुझसे माफ़ी मांगने लगा। उसने मुझे बताया कि वेदवती और मेरे बच्चे के साथ क्या हुआ था, जबकि मैं वहाँ एक स्तंभ की तरह खड़ी थी, जो कुछ हुआ था उसकी भयावहता से स्तब्ध थी। मुझे डर था कि वे मर गए होंगे, लेकिन जो मैंने सुना उससे मुझे गहरा दुख और सदमा लगा। मैं अपने पैरों पर लोट रहे उस व्यक्ति को लात मारना चाहती थी, लेकिन उसने मुझे अजगर जैसी पकड़ में जकड़ रखा था। उसके लगातार बड़बड़ाने और समझ से परे आवाज़ों के बावजूद, कुछ बातें मेरे दिमाग में पहुंचीं और मैंने उन्हें समझने की कोशिश की। धीरे-धीरे, बहुत धीरे-धीरे, मुझे समझ आया। 'मेरी बेटी मरी नहीं थी। उसे एक दयालु राजा, एक देव राजा ने गोद लिया था, लेकिन फिर भी एक राजा, और अब वह एक देव राजकुमारी के रूप में पल-बढ़ रही थी।'
एक पल के लिए मैं खुश हो गया। मेरी बेटी जीवित थी। लेकिन अब वह शत्रु राज्य की राजकुमारी थी। मुझमें एक नई ऊर्जा का संचार हुआ। मैं अपनी सेना इकट्ठा करके जनक के राज्य पर चढ़ाई करूँगा। मैं उसकी सेनाओं को नष्ट करूँगा, उसके राज्य को लूटूँगा और अपनी बेटी को वापस लाऊँगा। वह असुर राजकुमारी थी और कोई भी देव राजा उसे मुझसे छीन नहीं सकता था। वह लंका की राजकुमारी थी, उसे असुर राजकुमारी के रूप में ही बड़ा होना था। फिर मुझे डर लगने लगा। मुझे अपनी शक्ति पुनः प्राप्त करनी थी, उसे वापस लाना था। 'क्या मेरी सेना पर्याप्त मजबूत थी? क्या मेरे पास वास्तव में कोई सेना थी भी?' अगर मैं सफल भी हो जाता, तो मैं उसकी सुरक्षा के बारे में कैसे आश्वस्त हो सकता था जब प्रहस्त या विद्युतजिह्वा जैसे सर्प मेरे राज्य में खुलेआम घूम रहे थे? मैं असहाय और निराश महसूस कर रहा था। मैंने भद्र को जोर से लात मारी, जिससे

उसकी नाक से खून बहने लगा। 'घृणित प्राणी।' कभी-कभी मुझे लगता था कि देवों द्वारा अपनाई गई जाति व्यवस्था में कुछ तर्क है। आखिर वह और मैं बराबर कैसे हो सकते हैं?
मेरी नन्ही बेटी के ख्याल मेरे मन में उमड़ पड़े। 'क्या वह मुझ जैसी दिखती थी या मंदोदरी जैसी?' मंदोदरी का ख्याल आते ही मुझे पूर्णा और कावेरी नदियों के किनारे बिताई गई वो सुनहरी शामें याद आ गईं, फूलों से लथपथ पेड़ों की खुशबू, मंदोदरी की गोरी, कोमल त्वचा, चमेली की महक, हमारी नंगी देह पर ठंडी हवा का एहसास, सैकड़ों मधुमक्खियों की भिनभिनाहट और गिलहरियों की चहचहाहट, जब हम एक-दूसरे की बाहों में लेटे होते थे, एक-दूसरे के लिए हमारा कोमल प्यार...
मैंने उस नीच असुर के चंगुल से खुद को छुड़ाया और नदी की ओर घिसटते हुए कदम बढ़ाए। मैं अपनी यादों के साथ अकेला रहना चाहता था। मेरी सारी इच्छाएँ मेरी आत्मा के सिसकियों में घुल गईं।

30 लंका हार गया

भद्र
हम मध्य भारत से खाली हाथ लौटे। हमारे राजा, सेना, मंत्रियों और एक-दूसरे से सभी नाराज़ थे। मेरी हालत और भी बदतर थी। विद्युतजिह्वा, कुछ मंत्रियों के साथ, राजा के कैद से रिहा होने से बहुत पहले ही चले गए थे। मुझे पूरा यकीन था कि विद्युतजिह्वा ने माला के साथ अपना प्रेम प्रसंग फिर से शुरू कर दिया होगा और मुझे ईर्ष्या हो रही थी। मैं एक मूर्ख राजा के साथ फंसा हुआ था जबकि माला एक दुष्ट व्यक्ति का घर में स्वागत कर रही थी। पूरे अभियान के दौरान माला के ख्यालों ने मुझे परेशान किया, लेकिन जब विद्युतजिह्वा अंततः लंका के लिए रवाना हुए, तो मेरी चिंता और भी बढ़ गई। इसके साथ ही, असफलता का एहसास और लंका के लोगों द्वारा इस दयनीय हालत में लौटने पर हमारा इंतज़ार कर रहे ताने भी थे। वेदवती के साथ जो कुछ हुआ था, उसके लिए पूरी तरह से मुझे दोषी ठहराए जाने की निराशा ने मुझे निराश कर दिया।
लंका लौटते समय हमने अपने इतिहास में एक और अपमान जोड़ लिया। विंध्य पर्वतमाला की दक्षिणी तलहटी में, शक्तिशाली अर्धमानव बाली का शासन था। उसे तिरस्कारपूर्वक वानर-राजा और उसकी प्रजा को वानर कहा जाता था। वे असुर और देव दोनों जातियों के मिश्रण थे, लेकिन दोनों ही उन्हें तिरस्कृत और घृणास्पद मानते थे। वे दोनों सभ्यताओं के हाशिये पर जीवन व्यतीत करते थे। यह तब तक चलता रहा जब तक बाली ने उनके अंतरजातीय झगड़ों को समाप्त नहीं कर वानर जाति को एकजुट नहीं कर दिया। किष्किंधा को अपनी राजधानी बनाकर, वानर जाति उत्तर के देव राज्यों और दक्षिण के असुर राज्यों दोनों के लिए खतरा बन गई। चूंकि वे मध्य भारत के जंगलों तक ही सीमित थे, इसलिए तटीय मार्ग से

उत्तर की ओर बढ़ते हुए हमारी यात्रा के दौरान हमारा उनसे कोई संपर्क नहीं हुआ था।
बलि का छोटा भाई सुग्रीव, वानर-राजा रावण का शत्रु था और हनुमान जैसे महान और प्रतिष्ठित योद्धाओं ने बलि का साथ छोड़कर सुग्रीव का साथ दिया था। शायद इसी बात ने रावण को प्रेरित किया होगा, जो अपनी थोड़ी-बहुत प्रतिष्ठा वापस पाने के लिए किसी भी सफलता की तलाश में था। रावण भिखारी तो नहीं बन गया था, लेकिन उसकी स्थिति डावाँडोल थी। उसे हमेशा इस बात का डर सताता रहता था कि प्रहस्त या विद्युतजिह्व सत्ता हथिया लेंगे। उनके उससे पहले लंका चले जाने से रावण में संदेह और घबराहट पैदा हो गई थी, इसलिए उसने अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा को वापस पाने की उम्मीद में किष्किंधा पर आक्रमण करने का फैसला किया।
हताश समूह ने अमावस्या की रात में हमला किया और तुरंत ही हार गए। हमने आसानी से आत्मसमर्पण कर दिया। अगली सुबह, जब वानर-राजा अपने कैदियों को देखने आया, तो उसे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि उस पर असुर सेना ने हमला किया था। उसका यह कहना कि उसने हमें देहाती समझकर रात में हमला करने निकला था, हमारे अनगिनत युद्धों के घावों से भी अधिक आहत किया। उससे भी अधिक अपमानजनक उसका हमारे साथ किया गया उपेक्षापूर्ण व्यवहार था। उसने हम सभी के साथ समान सम्मान का व्यवहार किया और असुविधा के लिए क्षमा भी मांगी। फिर उसने हमें सम्मानित अतिथियों की तरह भोजन कराया। हमने भरपेट भोजन किया और खूब शराब पी। हम जंगली बंदरों के ढोल की थाप पर सुबह तक नाचते रहे। सुबह तक हम अपनी शर्म भूल चुके थे और घनिष्ठ मित्र बन गए थे। हमने वानरों और असुरों के बीच शाश्वत मित्रता की शपथ ली। बाद में, जब हम वानर राज्य से निकले, तो हमने विचित्र दृश्य देखे। हमने रावण को वानर-राजा को गले लगाते देखा, जो असुर राजा को सलाह दे रहा था। हम सब बहुत खुश होकर वहाँ से निकले और मैंने सुना कि बंदरों के राज्य के साथ एक अटूट मित्रता संधि पर हस्ताक्षर हो गए हैं और बाली हमारे राजा का मित्र, दार्शनिक और मार्गदर्शक बन गया है। यह बात कम से कम अजीब तो थी ही, लेकिन मेरे जैसे सीधे-सादे व्यक्ति के लिए ऐसी बातें समझना मुश्किल था। मेरी सबसे बड़ी चिंता तो बस अपने अगले भोजन की थी।
मुख्य भूमि के दक्षिणी तट तक पहुँचने में हमें लगभग एक महीना लग गया। हम सब समुद्र पार करके अपने प्रिय द्वीप पर शीघ्र पहुँचना चाहते थे। लेकिन वरुण

पर ज़ोर देना शुरू कर दिया। मैंने ज़ोर देकर कहा कि असुर परंपरा में तो राजत्व की अवधारणा भी नई है।” यहाँ उन्होंने रावण की ओर देखा, जिसने अपनी नज़रें फेर लीं। प्रहस्त ने आगे कहा, “लेकिन आप सब जानते हैं कि वह वाक्पटु वक्ता है, और उसने परिषद के अन्य सदस्यों को रिश्वत देकर, धमकाकर और फुसलाकर अपने वश में कर लिया। केवल जंबुमाली और मैंने ही असहमति जताई। मैंने विरोध में परिषद से इस्तीफा दे दिया और अगर नए राजा विद्युतजिह्वा ने आतंक का राज न फैलाया होता, तो मैं राजनीति से पूरी तरह संन्यास ले लेता। विद्युतजिह्वा के अधिकांश कार्य बिल्कुल अनावश्यक थे। तीन महीनों में उसने अर्थव्यवस्था को बर्बाद कर दिया, जब चाहे कर और शुल्क बढ़ा दिए। उसने समुद्री लुटेरों के सरदार को लूटपाट की खुली छूट दे दी और लूटी हुई संपत्ति आपस में बाँट ली। लेकिन अब वे बिखर गए हैं। वरुण उस जहाज में रव-मेरा मतलब… महाराज का इंतजार कर रहा है कि वे आकर उसकी नौसेना का कार्यभार संभालें। वह बदला लेने के लिए प्यासा है।”
रावण आगे बढ़ा और प्रहस्त से पूछा, "लेकिन मेरे भाइयों, मेरी पत्नी और मेरी बहन का क्या हुआ?" हम उसकी आवाज़ में तनाव और चिंता महसूस कर सकते थे। “महाराज, आपकी बहन सुरक्षित हैं, हालांकि दुखी हैं। वह अब भी अपने पति से बेइंतहा प्रेम करती हैं। मैंने आपकी पत्नी को पहाड़ियों में एक गुप्त स्थान पर पहुँचा दिया और बाद में उन्हें उनके पिता के पास भेज दिया। हमारी सबसे बड़ी चिंता राजकुमार कुंभकर्ण को लेकर है, जो अपने बहनोई के अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाने वाले एकमात्र व्यक्ति थे। महाराज, वह साहसी हैं, लेकिन मुझे ऐसा कहने के लिए क्षमा करें, वे बहुत जल्दबाज़ भी हैं। और वे हद से ज़्यादा भोले हैं। उनके दोस्तों ने उन्हें तुरंत धोखा दिया, उन्हें पकड़ लिया गया, यातनाएँ दी गईं और यमलोक भेज दिया गया। वे मरे नहीं हैं। उन्हें सह्य पर्वतमाला के पूर्वी ढलानों पर स्थित भयानक मादक पदार्थों के राज्य में, घने जंगल में भेजा गया है, जहाँ यम नाम का एक डाकू ज़हरीले पेय बनाता है, पीता है और जड़ी-बूटियों और मादक पदार्थों का सेवन करता है। विद्युतजिह्वा, मादक पदार्थों के सरगना यम का शिष्य था, और उसने अपने गुरु को उनके प्रयोगों के लिए एक असुर राजकुमार का इनाम दिया है।”
रावण क्रोध से कांप रहा था। मारीच ने राजा के कंधे पर दिलासा देने वाला हाथ रखा, लेकिन रावण ने उसे झटक दिया। “युद्ध के लिए तैयार हो जाओ। हम इस धोखेबाज से लड़ेंगे,” उसने चिल्लाकर कहा।

अचानक हलचल मच गई। अब हमारा एक उद्देश्य था, यह किसी एक व्यक्ति की महिमा के लिए लड़ा गया व्यर्थ युद्ध नहीं था। यह हमारे भाइयों और बहनों, हमारी पत्नियों और बच्चों, हमारे माता-पिता को एक अत्याचारी के चंगुल से मुक्त कराने का युद्ध था। मुझे माला की चिंता होने लगी।
लेकिन प्रहस्त ने अपना हाथ उठाया और कुछ ही क्षणों में सन्नाटा छा गया। “महाराज, सबसे पहले हमें राजकुमार कुंभकर्ण को मुक्त करना होगा। उनके प्रयोगों के बाद उनकी क्या हालत है, यह हमें नहीं पता।”
रावण ने उत्तर देने से पहले कुछ क्षण प्रतीक्षा की। फिर थोड़ा झुककर उसने कहा, “प्रधानमंत्री जी, मैं आपके बुद्धिमान परामर्श का आदर करता हूँ और आपकी बुद्धिमत्ता का सम्मान करता हूँ। मैं आपके मार्गदर्शन का पालन करूँगा।” अब प्रसन्न हो रहे मारीच की ओर मुड़कर उसने कहा, “मामा मारीच, कृपया हमारे मित्र राजा बलि के पास एक दूत भेजें, ताकि मादक पदार्थों के स्वामी यम का नाश करने में सहायता मिल सके। हमें उनकी सहायता की आवश्यकता है।” मारीच ने प्रणाम किया और हमारे मुख्य धावक को बुलाकर चले गए।
फिर, अचानक रावण ने प्रहस्त से पूछा, "और हमारे छोटे भाई विभीषण का क्या होगा?"
प्रहस्त ने अपनी मुस्कान दबाते हुए कहा, “महाराज, उन्होंने अपने हाथों से निर्मित एक छोटे से मंदिर में स्वयं को बंद कर लिया है। वे इस बुराई से मुक्ति के लिए भगवान विष्णु से प्रार्थना करते हैं। प्रार्थना के अलावा वे कुछ नहीं करते।”
“छी!” रावण ने तिरस्कार से थूका और हममें से कई लोग हँस पड़े।

31 मृत्यु का अड्डा

रावण
हमने कुछ दिनों के लिए मदुरै में विश्राम किया, जो मत्स्य-देवी मीनाक्षी का प्राचीन मंदिर नगर है, ताकि हम अपनी आपूर्ति, घोड़े और हथियार प्राप्त कर सकें। वरुण ने इस अभियान का प्रायोजन किया था, क्योंकि मैंने लंका का सिंहासन पुनः प्राप्त करने के बाद भारी ब्याज सहित राशि लौटाने का वादा किया था। मुझे समुद्री लुटेरों पर निर्भर रहना अच्छा नहीं लगता था, लेकिन मेरे पास और क्या विकल्प था? इसके अलावा, इससे मुझे कुछ हद तक विश्वास मिला कि चतुर समुद्री लुटेरे-राजा को विश्वास था कि मैं अपना सिंहासन पुनः प्राप्त कर लूंगा। वह अपने अनुमानों में कभी गलत नहीं होता था। लेकिन मैं अपनी कमियों से भली-भांति परिचित था। हम मत्स्य-आंखों वाली देवी के नगर से निकलकर मृत्यु की घाटी में पहुँच गए।
यम का किला एक पर्वत की चोटी पर स्थित था, जो लगभग आकाश को छूता था और जिसके तीन किनारे लगभग खड़ी चट्टानी पहाड़ियों में गिरते थे। यह त्रिकोटा में मेरे किले जैसा दिखता था, लेकिन उससे कहीं अधिक छोटा और ऊँचाई पर स्थित था। इस बंजर पर्वत के पूर्व में फैली झाड़ियों और छोटे पेड़ों तथा पश्चिम में फैले हरे-भरे जंगलों में यम के सैनिक मादक पदार्थों के नशे में धुत्त होकर अपने क्षेत्र की रक्षा करने के लिए दृढ़ संकल्पित छिपे हुए थे। अफीम मिले पेय के नशे में चूर, वे शारीरिक चोटों से बेखबर और भय से मुक्त प्रतीत होते थे। उस अंधेरे और भयावह किले के भीतर कहीं, एक अंधेरी कालकोठरी में, मेरा प्रिय मूर्ख भाई कुंभकर्ण, नशे में पड़ा था, या शायद मर चुका था।
हमने अमावस्या की रात में आक्रमण करने की योजना बनाई थी। आधी रात को हमारी सेना ने किले पर धावा बोल दिया। यह अब तक का हमारा सबसे भीषण युद्ध था। यमराज के सैनिक न केवल निर्भीक थे, बल्कि लगभग अमानवीय थे। हमें भोर तक किले में सेंध लगाने में समय लग गया। तब तक हमारी तरफ से सैकड़ों सैनिक मारे जा चुके थे। उत्तर भारत का अभियान तो इसके मुकाबले पिकनिक जैसा था। यमराज के सैनिकों ने हमारी भागती हुई सेना पर पिघला हुआ धातु उड़ेल दिया, हम पर बड़े-बड़े पत्थर फेंके और उनके तीरंदाजों ने अचूक निशाने से तीरों की वर्षा कर दी। स्थिति निराशाजनक हो गई। तभी मैंने प्रहस्त की बटालियन की विजयघोषणा सुनी। यह किले के पश्चिमी हिस्से से आई और मुझे चौंका दिया। हमने पश्चिमी हिस्से पर ध्यान ही नहीं दिया था। वह घने वर्षा वनों से घिरा हुआ था और खतरनाक रूप से खड़ी ढलान वाला था। इसके अलावा, यह हमारी प्रगति

में बाधा डालता और हमें रात्रि आक्रमण का लाभ नहीं दिला पाता। इसलिए जब किले के पश्चिमी द्वार से विजयघोषणा आई, तो मैं आश्चर्यचकित रह गया। लगभग एक घंटे तक चले भीषण युद्ध के बाद, बाकी तीन द्वार भी खुल गए और हमारी सेना चारों ओर से यमराज के किले में घुस गई। हमने अपना रास्ता बनाते हुए आगे बढ़ना शुरू किया। हमारे घोड़े सैकड़ों क्षत-विक्षत अंगों और कटे हुए सिरों को रौंदते हुए आगे बढ़े। यह भयावह और घिनौना था। वहाँ मनुष्यों और पशुओं दोनों के रक्त, मांस और मल की दुर्गंध फैली हुई थी। मैं इस जगह से निकलना चाहता था।
यमराजों की भीड़ को चीरते हुए आगे बढ़ते हुए भी मेरा मन भटक रहा था। मुझे इस सब की निरर्थकता से घृणा हो रही थी। ‘मैं अपने भाई को मुक्त कराना चाहता हूँ और उसे वापस लाना चाहता हूँ। लेकिन क्या सच में ऐसा करना चाहता हूँ?’ अजीब बात है कि कई साल पहले कहे गए प्रहस्त के शब्द मेरे मन में आ गए, ठीक उसी समय जब मेरा जीवन चारों ओर से मुझ पर हमला कर रहे यम के असंख्य सैनिकों के खिलाफ मेरी युद्ध क्षमता पर निर्भर था। वे शब्द ठंडे, सटीक और अप्रिय थे। चौबीस साल के उस युवक के लिए, जिसके मन में अपने परिवार के प्रति कर्तव्य और अपनी नियति को पूरा करने के बारे में रोमांटिक विचार थे, और जो आम तौर पर दुनिया के प्रति भावुक रहता था, वे शब्द दिल दहला देने वाले थे, ‘सफलता की आकांक्षा रखते हुए किसी पर भी, विशेषकर अपने भाई-बहनों पर विश्वास मत करो, क्योंकि वे तुम्हारे सबसे बड़े शत्रु बनने वाले हैं।’ हमेशा की तरह, यह अनचाही सलाह थी, और प्रहस्त से नफरत करने का एक और कारण। और अब, अजीब बात यह है कि जब मैं अपने भाई को बचाने के लिए अपनी जान दांव पर लगा रहा था, तब यह सलाह मुझे कचोट रही थी। 'क्या मैं अपने भाई पर भरोसा कर सकता हूँ?' फिर, चौंकाने वाली स्पष्टता के साथ, मुझे समझ आया। यह लड़ाई कुंभा को बचाने की नहीं, बल्कि खुद को, अपने चकनाचूर स्वाभिमान, आत्मविश्वास, महत्वाकांक्षा और अपने भाग्य को बचाने की थी। खुद को संभालते हुए, मैंने सोलह साल के एक लड़के के दिल में अपनी तलवार घुसाने पर ध्यान केंद्रित किया, उसकी बेनाम माँ के बारे में सोचते हुए, लेकिन उसके या उसकी माँ के लिए मेरे मन में कोई भावना नहीं थी।
अंततः, दोपहर ढलते-ढलते हमने गढ़ पर कब्ज़ा कर लिया और अब मेरे भाई कुंभकर्ण की खोज शुरू हुई। मेरे शरीर पर कई घाव थे जिनसे खून बह रहा था और मैं अपने घोड़े पर लड़खड़ाते हुए बैठा था। मरने वाले मनुष्यों और पशुओं की

लोगों पर चिल्लाना चाहता था और जैसे ही मैं उनके बारे में अपने विचार बताने वाला था, प्रहस्त ने मेरी ओर सिर घुमाया और मुस्कुराया। मारीच भी मुस्कुराया।
“हम जीत गए, रावण, हम जीत गए। अगर हमने इतनी ज़ोरदार लड़ाई न लड़ी होती, तो हम कभी जीत नहीं पाते,” उसने ज़रूरत से ज़्यादा ज़ोर से कहा।
और हमारी पूरी सेना ने जयजयकार किया। एक-एक करके हमारे सैनिकों ने अपने हथियार उठाए और पुकारा, “हर हर महादेव।” “शिव की जय हो।” “असुरों के पराक्रमी राजा रावण की जय हो।” “असुरों की जय हो।”
मेरा हृदय गर्व से उछल पड़ा। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूँ और मैंने अपनी तलवार उठा ली। मेरी सेना ने बिजली की तरह तेज़ आवाज़ में जयकार की। अचानक मुझे याद आया, ‘इन दोनों बूढ़ों का मुझ पर बहुत बड़ा एहसान है।’ लेकिन तभी मुझे फिर से गुस्सा आने लगा और मैंने अपना इरादा बदल लिया और पूछा, “चाचा जी, यमराज के शिविर में वह जासूस कहाँ है जिसने हमारी मदद की थी?” मैंने आश्चर्य से चौड़ी होती उसकी आँखों को अनदेखा कर दिया। मैंने अपना हीरे का हार उतार दिया और कहा, “मैं उसे इनाम देना चाहता हूँ।”
“रावण, क्या तुम पागल हो गए हो?”
मेरी झुंझलाहट बढ़ गई। मैंने मांग की, "या तो तुम मुझे बताओ, या मैं उसे खुद ढूंढ लूंगा।"
मारीच ने उदास होकर सिर हिलाया और कहा, "रावण, कभी-कभी तुम मुझे आश्चर्यचकित कर देते हो। किले पर आक्रमण करते ही प्रहस्त ने सबसे पहले उसी पर अपनी तलवार तान दी थी।"
मेरे चेहरे पर हैरानी देखकर उन्होंने कहा, “रावण, यह राजनीति का एक बुनियादी सबक है। गद्दार पर कभी भरोसा मत करो, चाहे उसने तुम्हारे लिए कितना भी गंदा काम क्यों न किया हो। कल वह तुम्हारे खिलाफ हो सकता है।” कुछ देर रुककर उन्होंने आगे कहा, “खैर, इन सब बातों की चिंता मत करो। हमने युद्ध जीत लिया है, हालांकि यम भाग गया है, और तुम्हारा भाई सुरक्षित है।” अब मुझे अपने हीरे के हार को हाथ में थामे मूर्खता का एहसास हो रहा था। मैं चाहती थी कि प्रहस्त के देखने से पहले ही मैं इसे फेंक दूँ। मैं उसकी तिरस्कार भरी मुस्कान सहन नहीं कर पाऊँगी। इसलिए मैंने चारों ओर देखा और एक सैनिक को किले की दीवार से पीठ टिकाकर पैर फैलाए बैठे देखा। वह हाँफ रहा था और नाक का एक हिस्सा कटा होने के कारण भयानक दिख रहा था। उसके कई घावों

चेहरों से हटाकर गौरव, महत्वाकांक्षा और अपने भाग्य के सुनहरे रास्तों के सपनों की ओर मोड़ा।

32 पैट्रियट
भद्र
हम मुख्य भूमि से लौट आए थे। रावण ने विद्युतजिह्वा और उसके साथियों को, जो देश को लूट रहे थे, समाप्त करने की धमकी दी थी। घबराकर विद्युतजिह्वा ने शांति समझौता किया और रावण द्वारा जीते गए पूरे भारत को, लंका के दक्षिणी भाग को छोड़कर, जिसे वह अपने लिए चाहता था, विद्युतजिह्वा को सौंपने की पेशकश की। रावण पूरे राज्य को वापस लेना चाहता था, लेकिन सूर्पनखा की इच्छा ने हमारे राजा को रोक दिया। जब दोनों पक्ष दावतें खा रहे थे, भोजन कर रहे थे और बातचीत कर रहे थे, तब सड़कों पर लोग भोजन, पानी, दवाइयों के लिए संघर्ष कर रहे थे या बस करवटें बदलकर मर रहे थे।
जल्द ही वह डरावना बुलावा आ गया। मैंने उस छोटी सी पेटी में मोतियों का हार ढूँढा जहाँ मुझे लगा था कि मैंने उसे रखा था। ‘वह कहाँ था?’ उस दिन शिविर में बिस्तर पर पहुँचते ही मैंने उसे ज़मीन पर फेंक दिया था। अब, अगर राजा मुझे उसके बिना देख लेते, तो वे सोच सकते थे कि मैंने उनके उपहार की कद्र नहीं की, जो सच में मैंने नहीं की थी। मैंने हर जगह ढूँढा और फिर अचानक मुझे एक विचार आया, मैंने अपने रूममेट की पेटी में ढूँढा। वह एक बदबूदार असुर था, जो दिन में तीन बार एक छोटे से शिवलिंग को श्रद्धापूर्वक प्रणाम करता था और हमेशा नैतिकता, सत्य, जीवन और अन्य बेकार विषयों पर पुराने ग्रंथों के उद्धरण देता रहता था। वह बाहर गया हुआ था और मैंने उसके बिस्तर के नीचे से उसकी पेटी खींचकर निकाली और उसे खोला। मुझे हार उसके कपड़ों के अंदर छिपा हुआ मिला। मैंने गाली दी और पेटी को एक तरफ लात मारकर फेंक दिया, फिर हार निकाला। मैंने उसे पहना और अपने कीमती सामान में से एक, हाथ के दर्पण में देखा कि मैं कैसी दिख रही हूँ। नाक का एक हिस्सा कटा हुआ था, बाएं गाल पर एक गहरा निशान था और डेढ़ कान थे, मैं देखने में भयानक लग रहा

था। मैं मुस्कुराया और सामने के दो दांतों के गायब होने से बने खाली स्थान ने मुझे एक अजीबोगरीब लेकिन डरावना रूप दे दिया।
बड़ी मुश्किल से मैं अपने बिस्तर से उठा, उंगलियों से अपने बाल संवारे और परिषद शिविर की ओर चल पड़ा। अंदर जाकर मैंने जितना हो सके उतना झुककर प्रणाम किया – कुछ इंच और झुकता तो ज़मीन छू जाता। अंदर अँधेरा और दुर्गंधयुक्त था। वहाँ वही जाने-माने गुंडे मौजूद थे – प्रहस्त, अपने कठोर, भावहीन चेहरे के साथ; मारीच, अपनी धूर्त मुस्कान के साथ; रावण, मुझ जैसे नीच से निपटना देखकर घृणा से भरा हुआ; जंबुमाली, अपने धुंधले, पुरोहित जैसे रूप के साथ; कुंभकर्ण, सौम्य जिज्ञासा के साथ; रुद्रक, तिरस्कारपूर्ण घृणा के साथ; और विभीषण, वह धर्मनिष्ठ बदमाश, अपनी अंधविश्वास भरी बातों से दुनिया को बचाने में व्यस्त, ध्यान में आँखें बंद किए हुए।
“भद्रा,” मारीच की मधुर आवाज थी। “एक बार फिर, असुरों की पूरी जाति तुम पर निर्भर है। तुम्हारे देश और तुम्हारे राजा को…” वे बोलते-बोलते थक गए। अच्छा होता अगर वे मुझे सीधे बता देते कि वे मुझसे कौन सा घिनौना काम करवाना चाहते हैं। देशभक्ति और जाति की ये सारी बातें मुझे चिढ़ा रही थीं, लेकिन मैंने अपनी घृणा व्यक्त करने की हिम्मत नहीं की। अपने अधिकांश देशवासियों की तरह, विशेषकर काले चमड़ी वाले, नीच, सीधे-सादे, अनपढ़ और भोले-भाले लाखों लोगों की तरह, मैंने भी शासकों के प्रति विनम्र, शांत और आज्ञाकारी सेवक होने का दिखावा करना सीख लिया था, जबकि वास्तव में मेरे भीतर लाखों विद्रोह सुलग रहे थे।
मुझे यह समझने में कुछ समय लगा कि मुझे विद्युतजिह्वा का अंत करने का कार्य सौंपा गया था। मेरा हृदय खुशी से उछल पड़ा। शायद मैंने परिषद के बारे में बहुत जल्दी और कठोर निर्णय ले लिया था। यह ईश्वर प्रदत्त अवसर था। मैंने सिर झुकाकर प्रणाम किया और बिना पीछे मुड़े बाहर निकल गया। मुझे अंधेरा होने तक इंतजार करना पड़ा। मिशन रोमांचक और खतरनाक था। चुपके से किले में घुसकर विद्युतजिह्वा की हत्या करना आसान काम नहीं था। लेकिन उस व्यक्ति के प्रति मेरी व्यक्तिगत घृणा और कुछ सार्थक करने की मेरी महत्वाकांक्षा ने मुझे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। परिषद से लौटते ही मैंने अपनी कटार म्यान से निकाली और उसकी धार की जाँच की। फिर मैंने विषैला घोल बनाने के लिए अपनी थैली में सामग्री खोजी। मैंने आवश्यक सात जड़ी-बूटियों को एक सीधी रेखा में रखा, फिर उन्हें अलग-अलग अनुपात में

लेकिन मेरे पास खोने के लिए कुछ नहीं था। मैंने कटार उसके चेहरे पर फेंकी और वह एक भयानक मुद्रा में जम गया। मुझे डर था कि कहीं मेरा वार चूक न गया हो। फिर कटार से घायल उसका विकृत चेहरा, जिसकी बाईं आंख में कटार लगी थी, कांप उठा और उसका पूरा शरीर मुझ पर गिर पड़ा। उसकी तलवार मेरे सिर से कुछ फीट ऊपर कीचड़ में धंस गई। छोटा होना मेरे लिए फ़ायदेमंद था। मैं उस विशालकाय के नीचे से रेंगकर निकला और सावधानी से उसकी आंख से कटार निकाल ली।
तभी मुझे कदमों की आहट सुनाई दी। दूसरे गार्ड जाँच करने आ रहे थे। मैं घबराकर भागने का रास्ता ढूंढने लगा और गेट खोलने के लिए चाबियों से जूझने लगा। 'ताला नहीं खुल रहा।' पसीने से तरबतर, मेरे हाथ डर और घबराहट से कांप रहे थे। 'सही चाबी कौन सी है?'
“अरे तुम!” किसी ने चिल्लाया। मैं फिर से लड़खड़ा गया। एक तीर मेरी गर्दन के ठीक दाहिनी ओर दो इंच की दूरी पर लकड़ी के गेट में जा लगा, और उसकी कांपती पूंछ मेरे कान में गूंज रही थी। दूसरा तीर फुफकारता हुआ आया और मेरे कंधे के बाईं ओर कुछ इंच की दूरी पर लगा। उसके पंखों ने मुझे सहलाया। मुझे अपनी ओर दौड़ते कदमों की आहट सुनाई दी, लेकिन आखिरकार ताला खुल गया और मैं चुपके से किले में घुस गया, तभी एक तलवार की धार दरवाजे के तांबे के किनारे से टकराई और ज़ोरदार आवाज़ हुई। मैंने दरवाजा बंद कर दिया और एक बार फिर चाबियों से जूझने लगा। चाबियां दरवाजे को खुला रखने की कोशिश कर रही थीं, लेकिन मैंने अपनी पूरी ताकत लगाकर उन्हें पीछे धकेला और आखिरकार उसे बंद कर दिया। फिर मैं अपनी जान बचाने के लिए भागा।
जैसे ही मैं महल और पहली मंजिल पर स्थित राजा के कक्ष की ओर भागा, किले के विभिन्न हिस्सों में मशालें जलती हुई दिखाई दीं। दीवारों से चिपकी लता की मदद से मैं ऊपर चढ़ गया और बिल्ली की तरह बरामदे पर जा गिरा। मैं अपने तरीके से काफी फुर्तीला था। कक्ष के पहरेदार यह देखने के लिए रेलिंग के ऊपर से झाँक रहे थे कि शोर किस बात का है। मैंने एक सटीक धक्का देकर उन दोनों को रेलिंग के ऊपर से गिरा दिया और फिर कक्ष का दरवाजा लात मारकर खोल दिया। मैंने हाथ में कटार लिए इंतजार किया, लेकिन कुछ नहीं हुआ। कुछ भी नहीं हिला।
एक धुंधली आकृति पलंग पर सो रही थी और एक छोटा सा तेल का दीपक टिमटिमा रहा था। मैंने चुपचाप दरवाजा बंद किया और कुंडी लगा दी। मैं दबे पांव दीपक के

पास गई और कमरे को रोशन करने के लिए दीपक की बाती को खींचा। राजकुमारी सूर्पनखा! ‘वह हरामखोर कहाँ था? क्या वह भाग गया?’ निराशा ने मुझे घेर लिया। हर पल मैं वहाँ रुककर मौत के करीब पहुँच रही थी। मैं गुस्से में चीखना चाहती थी, तभी मुझे घंटी की झंकार जैसी हल्की हंसी सुनाई दी। यह धीमी थी, लेकिन मैं इसे दूर से भी पहचान लेती। ‘माला! वह यहाँ क्या कर रही थी?’ मैं शिकार की तलाश में भटकती जंगली बिल्ली की तरह सुनने लगी। हंसी बगल के कमरे से आ रही थी और अचानक मुझे समझ आया कि माला विद्युतजिह्वा के साथ थी। मैं बेचैनी से बगल के कमरे का दरवाजा ढूंढने लगी। मैं पहरेदारों को मुझे ढूंढते हुए सुन सकती थी और जानती थी कि मेरे भागने की संभावना हर पल कम होती जा रही है। किसी ने दरवाजे पर दस्तक दी और राजकुमारी हिली। मैं दीवार से सट गई। उसने अपनी आँखें खोलीं और दरवाजे की ओर देखा। उसने अपने हाथों से अपने पति को ढूँढा और उसे न पाकर भौंहें सिकोड़ीं। जैसे-जैसे मैं बगल वाले कमरे की कुंडी को अपनी उंगलियों से बेताब होकर टटोलने लगा, दरवाज़े पर दस्तक तेज़ होती गई।
“यह कौन है?” उसने पूछा।
“महाराज, कोई आपके कमरे में घुस आया है,” एक आवाज़ सुनाई दी। मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा। उन्हें बात समझने में कुछ समय लगा। फिर वे धीरे से उठीं और कुछ पल हिचकिचाने के बाद दरवाज़े की ओर बढ़ीं। ‘अब तो सब खत्म!’ मैंने सोचा। सैनिक अंदर घुस आए और राजकुमारी को ज़बरदस्ती एक तरफ धकेल दिया। मेरा हाथ एक गुप्त कुंडी पर पड़ा और मैंने उसे झटके से खोल दिया। एक दरवाज़ा खुला और मैं पीठ के बल गिर पड़ी। सहज ही मैंने दरवाज़े को लात मारकर बंद किया, जल्दी से उठी और दरवाज़ा बंद कर दिया। पलक झपकते ही मैंने मुड़कर देखा। विद्युतजिह्वा वहाँ मेरे प्रेमी के साथ थीं, वह पीठ के बल लेटी थीं और वह उनके ऊपर बैठी थीं। वे डर से जम गए। बाहर, पहरेदार दरवाज़े पर ज़ोर-ज़ोर से दस्तक दे रहे थे। किसी भी क्षण वे अंदर घुस सकते थे। मैंने अपने बाएं हाथ के पिछले हिस्से से माला के चेहरे पर इतनी ज़ोर से प्रहार किया कि वह तीन फुट दूर दीवार से जा टकराई। मैं विद्युतजिह्वा पर कूद पड़ी और उसके पेट पर बैठ गई। मैं मुस्कुराए बिना नहीं रह सकी। मैंने अपने अंदर मौजूद ऐसी क्रूरता से, जिसके बारे में मैंने कभी सोचा भी नहीं था, अपने विषैले खंजर से उसके सुंदर चेहरे पर बार-बार वार किए। जब मैंने उसका लिंग काटने का फैसला किया, तब तक वह मर चुका था। मुझे माला द्वारा

अपने प्रेमी को बचाने के लिए अपनी पीठ पर नाखूनों से किए गए प्रहार या पहरेदारों द्वारा दरवाजा खोलने की आवाज़ का भी एहसास नहीं हुआ। केवल राजकुमारी की चीख ने मुझे होश में लाया। पहरेदार उस भयानक दृश्य को देखकर इतने स्तब्ध थे कि उन्होंने मुझ पर हमला नहीं किया। मुझे यकीन नहीं था कि राजकुमारी अपने मृत पति के लिए चीख रही थी या उसके धोखे के लिए। मुझे उस पर दया आ रही थी। मेरे शरीर से खून टपक रहा था और मैं थक चुकी थी। मैं लगभग हार मान चुकी थी जब राजकुमारी सूर्पनखा ने अपनी पूरी आवाज़ में चीखते हुए कहा, “भद्रा, भद्रा… मेरे भाई ने तुम्हें मेरे पति को मारने के लिए भेजा था। रावण… क्यों, क्यों?” उसने अपने दोनों हाथों से अपने सिर पर थप्पड़ मारा। मैं चौंक गया था, लेकिन जब सभी पहरेदारों का ध्यान चीखती हुई राजकुमारी की ओर गया, तो मैं भाग निकला। खिड़की खुली थी और मैं पलक झपकते ही बाहर कूद गया। मेरे गिरते ही पहरेदारों का सरदार चिल्ला उठा। एक विशाल अशोक वृक्ष ने मुझे गिरने से रोक दिया और मैं उसकी शाखाओं से टकराकर ज़मीन पर लुढ़क गया। तब मुझे पता नहीं था, लेकिन गिरने से मेरी तीन पसलियाँ और एक हाथ टूट गया था। लेकिन उस समय मुझे कुछ भी मायने नहीं रखता था। मैं अपनी जान बचाने के लिए भागा, अपने स्वामी, अपनी जाति, अपने राष्ट्र और स्वयं के लिए महान कार्य करने के विचार से उत्साहित था। चारों ओर से तीर बरस रहे थे, लेकिन चमत्कारिक रूप से मुझे एक भी तीर नहीं लगा। मुझे पश्चिमी दीवार में एक दरार दिखाई दी, जहाँ से मैं समुद्र में कूद सकता था, बशर्ते मैं वहाँ पहुँच सकूँ। मैं अपनी बची हुई सारी ताकत से भागा। बस कुछ और कदम, बस कुछ और कदम, और माँ सागर मुझे सुरक्षित रूप से अपनी गोद में ले लेगा। जैसे ही मैं दीवार की दरार पर पहुँचा, मुझे एक अजीब सी अनुभूति हुई - कोई मेरा पीछा नहीं कर रहा था। ‘क्या यह सपना था?’ मुझे रुककर देखने में डर लग रहा था।
तभी मुझे शंखों की आवाज सुनाई दी। मैं चौंककर रुक गया और पीछे मुड़ा। किले के चौड़े खुले मुख्य द्वार से एक जुलूस अंदर आया। रावण एक सम्राट की तरह हाथी पर सवार था, उसके साथ हाथियों, घुड़सवारों, रथों, पैदल सेना और संगीतकारों की विशाल सेना थी, जो बड़े वैभव के साथ आगे बढ़ रही थी। चेंडा पूरे जोश से बजाए जा रहे थे, तुरही बजाई जा रही थी और झांझ बज रही थी। विद्युतजिह्वा के वफादार रक्षकों ने एक-एक करके अपने हथियार डाल दिए। जय शंकर! हर हर महादेव! रावण की जय! 'विजय! अंत में विजय!' और इसमें मेरी भी

भूमिका थी। गर्व से मेरा सीना फूल गया और शरीर के दर्द को नजरअंदाज करते हुए मैं जुलूस की ओर दौड़ पड़ा।
जैसे ही मैं उसके पास पहुँचा, मुझे अचानक शर्म महसूस हुई। मैं सिर्फ़ धोती पहने था। मैं काला, बदसूरत और शरीर के सौ हिस्सों से खून बह रहा था। ये असुर सरदार पूरी शान से जुलूस निकाल रहे थे। जब मैं जुलूस के ठीक बीच में खड़ा था, डगमगा रहा था, तभी दो सैनिक मेरी ओर दौड़े और मुझे विजय जुलूस के रास्ते से खींचकर ज़बरदस्ती फुटपाथ पर पटक दिया। मैं शर्म से वहीं पड़ा रहा, विश्वासघात का एहसास मेरे दिल को बुरी तरह दबा रहा था। मुझे शाही हाथी की घंटी की झंकार सुनाई दी, जो पास आ रहा था। मैंने अपना सिर उठाया और रावण की नज़र मुझ पर पड़ी। 'क्या मैंने वहाँ घृणा, नफ़रत या कृतज्ञता देखी?' मुझे अब भी यकीन नहीं है। जब मैं दयालु होता था, तो मुझे लगता था कि यह कृतज्ञता थी, लेकिन कभी-कभी मुझे लगता था कि यह नफ़रत थी। शायद रावण ने मुझे पहचाना भी नहीं था।
जुलूस गुजर गया। जब मेरे चेहरे पर एक परछाई पड़ी तो मैंने सिर उठाया और मारीचा को देखा। उनकी आँखों में दया और कुछ कृतज्ञता भी थी। पहली बार मुझे लगा कि कोई मेरी परवाह करता है और मेरी आँखों में आँसू भर आए। मैंने उठने की कोशिश की लेकिन गिर पड़ी। मारीचा ने अपने घोड़े से उतरने की कोशिश की, फिर वह रुक गए। मैंने उनकी नज़र का पीछा किया। आगे चल रहे प्रहस्त ने अपना घोड़ा रोक दिया था और पीछे मुड़कर उस दृश्य को देख रहे थे। मारीचा ने लगाम को मजबूती से पकड़ा और बिना पीछे देखे प्रधानमंत्री की ओर चल पड़े।
मेरे मुंह से एक कड़वी हंसी निकल गई। मैं हंसते-हंसते खाई में गिर पड़ा। जैसे-जैसे सूरज निकला और दिन बढ़ता गया, गर्मी और उमस बढ़ती गई, मुझे थोड़ी ताकत मिली और मैं लड़खड़ाते हुए अपनी झोपड़ी की ओर वापस चला गया। चारों ओर जश्न की आवाजें सुनाई दे रही थीं। कुछ लोगों ने खाई में पड़े हुए मुझ पर कुछ सिक्के फेंके थे और कुछ मिनटों की हिचकिचाहट के बाद मैंने उन्हें इकट्ठा कर लिया। मुझे यकीन नहीं था कि मैं अगले कुछ दिनों तक काम कर पाऊंगा क्योंकि दर्द बहुत बढ़ गया था। हर सिक्का मायने रखता था। हर जगह जश्न का माहौल था। सम्राट, राजकुमार और रईस, सभी खुश थे। उन्होंने जीत हासिल कर ली थी। लेकिन मुझे अपनी झोपड़ी में जाना था, अपने घावों को भरने के लिए एक गड्ढा खोदना था, एक बेवफा औरत से निपटना था और अपनी रोजी-रोटी भी कमानी थी।

जहाँ तक मेरा सवाल था, ये चीजें सम्राटों के राज्याभिषेक से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण थीं। इसलिए मैं चलता रहा।

33 अंधकार का पुत्र
रावण
वह उन्माद में थी। सूर्पनखा मुझ पर झपटी और अपने हाथों से मेरा गाल नोंच डाला। जो भी उसके पास जाने की हिम्मत करता, वह उसे काटने और घायल करने की कोशिश करती। उसके बाल बिखरे हुए थे, चेहरा पीड़ा से काला पड़ गया था, वह मुझे और लंका के सभी मंत्रियों को कोसती रही, बीच-बीच में मुट्ठी बांधकर अपनी छाती पीटती रही। उसने विद्युतजिह्वा के शव की रखवाली कुत्ते की तरह की। उसने पुजारी को दूर रखा और स्वयं शव का अभिषेक किया। उसने शव को नए वस्त्र पहनाए, और लगातार हम सबको, खासकर मुझे, कोसती रही। मैं उसे सांत्वना नहीं देना चाहता था। सच है, मैं उसके पति की मृत्यु चाहता था और इसके लिए मैं ही जिम्मेदार था। लेकिन उसे यही मिलना चाहिए था। उसने मेरे सिंहासन पर कब्जा करके अपनी मृत्यु का फरमान खुद लिख दिया था। उसने खुद मुसीबत मोल ली थी।
भद्रा ने ये सब मेरे लिए किया था। इस घिनौने काम में मुझे सबसे ज़्यादा नफ़रत इस बात से थी कि मैं उस मूर्ख आदमी की एहसानमंद थी। 'या थी? वो तो महज़ एक गुलाम था और उसे वही करना पड़ता था जो मैं उसे कहती थी। बस।' मैंने अपने जीजा की लाश को देखा। उन्होंने उसे साफ़ कर दिया था, लेकिन फिर भी वो भयानक लग रही थी। जब मैंने पहली बार लाश देखी थी, तो मुझे उल्टी आने वाली थी। ऐसा करने के लिए किसी का दिमाग़ सच में बहुत विकृत होना चाहिए। भद्रा किस तरह का प्राणी था? घिनौना! एक तेज़ चीख ने मुझे मेरी सोच से जगा दिया। सूर्पनखा ज़मीन पर अपना सिर पटक रही थी। और उसके पीछे, उससे भी ज़्यादा तेज़ आवाज़ में रो रही थी मेरी माँ। मुझे उम्मीद नहीं थी कि वो इतनी जल्दी आ जाएँगी।

“संतुष्ट हो गए, रक्त चूसने वाले राक्षस?” इस अप्रत्याशित हमले से मेरा चेहरा पीला पड़ गया। “तुमने अपनी ही बहन को विधवा बना दिया। मुझे शर्म आती है कि तुम मेरी कोख से पैदा हुए।”
मैंने खुद को गुस्से से फटने से रोकने के लिए मुट्ठियाँ भींच लीं। उसकी हर टिप्पणी के साथ, सूर्पनखा का रोना और भी तेज़ होता जा रहा था। “अरे ज़ालिम…अरे कुत्ते…तुमने मेरी बच्ची को इस तरह रुलाया है और तुम्हें इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी…तुम्हें इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ेगी।” वह अगले आधे घंटे तक इसी तरह अपने दामाद की तारीफ करती रही। अगर उसने मुझे इस तमाशे में न घसीटा होता तो यह हास्यास्पद होता। “तुम सत्ता के नशे में चूर हो, महत्वाकांक्षा के मदहोश हो। मुझे मार डालो! मुझे भी मार डालो, और मेरे बूढ़े शरीर को अपनी राजनीतिक सफलता की सीढ़ी बना लो,” मेरी माँ ने अपने माथे और छाती पर हाथ मारते हुए कहा। फिर उसने मेरी छाती पर मुक्के बरसाने शुरू कर दिए।
मेरे पिताजी भी आ गए थे और एक कोने में बैठे अपने साथ हमेशा रहने वाले दो ब्राह्मणों से किसी बात पर चर्चा कर रहे थे। मेरा मन कर रहा था कि उनके बाल पकड़कर उनका सिर दीवार पर पटक दूं। वे अपने दामाद के लिए देव रीति-रिवाजों के अनुसार अंतिम संस्कार की योजना बना रहे थे, जिसमें कुछ रहस्यमय रस्में और ब्राह्मणों को भेंट देना शामिल था। मैं बस इस सब से छुटकारा पाना चाहता था।
शूर्पणखा चाहे जितना भी कठोर व्यवहार करे, कुंभकर्ण के सामने वह कुछ भी नहीं था। यमराज की कैद ने उसे बुरी तरह बदल दिया था और वह ज्यादातर समय पत्थर मारकर मार डाला जाता था। वह दिन भर सोता रहता था और जागने पर हंगामा मचाता था। मुझे उसकी चिंता थी। मुझे अपनी भी चिंता थी। हम एक घनिष्ठ परिवार थे और मुझे अपने भाई-बहनों का साथ बहुत अच्छा लगता था। 'हमारे बीच ऐसा क्या बदल गया था कि हमारा रिश्ता टूट गया? शूर्पणखा ने मेरे सबसे बड़े शत्रु से विवाह क्यों किया? और जब मैंने आत्मरक्षा के लिए उसे मार डाला, तो उसने मुझसे क्यों बदला लिया?' ये सब सोचते हुए भी मुझे उस पर दया आई, आखिर उसका पति तो मरा पड़ा था। उसे मेरे बारे में ऐसा महसूस करने का पूरा अधिकार था। 'बेचारी। शायद मुझे इतना कठोर नहीं होना चाहिए था।' मुझे उसके पति को कैद कर लेना चाहिए था। मैं समझौता कर सकता था।

विद्युतजिह्वा का चेहरा बुरी तरह से घायल हो गया था। भद्रा के प्रति मेरे मन में गहरी घृणा उमड़ आई। ‘वह ऐसा कैसे कर सकता है? यह एक असुर कुलीन व्यक्ति था जिसे जंगली जानवर की तरह काट डाला गया, और वह भी सबसे नीच कीड़े के हाथों।’ मुझे शर्म आ रही थी कि मैंने यह कार्य उसे सौंपा था। इस जीत में कोई वीरता नहीं थी। ‘मैं नीच था, भद्रा से बेहतर नहीं। मैंने प्रहस्त की बात क्यों सुनी? अहंकारी मूर्ख। हे शिव, मैंने अपनी बहन के साथ क्या किया?’ मैंने उससे उसकी छोटी सी खुशी भी क्यों छीन ली? क्या साम्राज्य इसके लायक था? क्या लंका या भारत भी मेरी महत्वाकांक्षा को शांत करने के लिए पर्याप्त थे? और मैं अपने लोगों के शवों पर क्या बना रहा था? मैं कितनी मौतों के लिए जिम्मेदार महसूस करूंगा? क्या हम उस चट्टान के किनारे लटकी हुई झोपड़ी में ज्यादा खुश नहीं थे? जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी यही है कि हम बड़े होते हैं और अपने बचपन के सपनों को पूरा करते हैं।
मेरे चेहरे पर पड़े एक ज़ोरदार थप्पड़ ने मुझे मेरी अपरिपक्व दार्शनिक सोच से झकझोर दिया। पूरा कमरा मेरी आँखों के सामने घूमने लगा और मैं लड़खड़ाकर गिर पड़ा। कुछ पलों के लिए मेरी आँखें चौंधिया गईं और मेरा सिर चकरा गया। मैंने उठने की कोशिश की, लेकिन मुझे कमर में ज़ोरदार लात पड़ी। "कमीने!" कुंभकर्ण की चीखें मुझे किसी गहरे कुएँ से आती सुनाई दे रही थीं। मेरा सिर चकरा रहा था, मैंने उठने की कोशिश की, लेकिन मुझे फिर से लात मारनी पड़ी। मेरी आँखें सूजी हुई थीं और होंठ फटे हुए थे। किसी तरह मैं खड़ा हुआ और गिरने से बचने के लिए कमरे के बीच में खड़े एक खंभे को पकड़ लिया। धीरे-धीरे दृश्य स्पष्ट हुआ। मारीच और तीन सैनिक कुंभकर्ण को काबू में करने की कोशिश कर रहे थे। उसकी आँखें कातिलाना लग रही थीं और वह पत्थर की तरह धुत था। उसने खुद को छुड़ाने की कोशिश की और मेरी ओर झपटा और मुझे फिर से लात मारने की कोशिश की, लेकिन वह मुझ तक नहीं पहुँच पाया।
मैंने मुड़कर देखा तो मेरे पिता और दो मोटे ब्राह्मण मुस्कुराते हुए तमाशा देख रहे थे। मेरी माँ ने नाटकीय ढंग से अपने हाथों से अपना सिर पीटा और सूर्पनखा पत्थर जैसी भावहीन निगाहों से सीधे सामने देखती रही। कुछ गार्ड लगभग मुस्कुरा रहे थे लेकिन चेहरे पर गंभीरता बनाए रखने की पूरी कोशिश कर रहे थे। इस तरह का पारिवारिक नाटक हमारे समाज के सबसे निचले तबके के लोगों को बेहद रोमांचक लगता था। शाम तक, पूरे शहर में इस घटना का बढ़ा-

चढ़ाकर वर्णन फैल चुका होगा। इस अप्रत्याशित हमले के दर्द से कहीं ज़्यादा मुझे शर्मिंदगी ने चुभन दी।
मेरे चेहरे पर गहरा अंधकार देखकर मारीचा मेरे भाई को कमरे से बाहर खींच ले गया। मैं उसे वहीं मार डालना चाहता था, पर अपराधबोध ने मुझे वश में कर लिया। मैं शर्म और अपराधबोध से व्याकुल होकर वहीं खड़ा रहा, पर एक उंगली भी नहीं हिलाई। कुंभा मेरी महत्वाकांक्षाओं, मेरे अतिरंजित आत्म-महत्व, मेरे स्वार्थ, लोगों के प्रति मेरे तिरस्कार, मेरे अनुचित अभिमान और मेरे वास्तविक एवं काल्पनिक दुर्गुणों के बारे में चिल्लाया। उसने मुझे शाप दिया और मेरी मृत्यु की कामना की।
मैं अब और बर्दाश्त नहीं कर पा रहा था और अपने कमरे में जाकर शराब पीकर बेहोश हो जाना चाहता था। जैसे ही मैंने मुड़कर देखा, मेरी नज़र बगीचे पर पड़ी। वहाँ मेरा नेक भाई विभीषण पालथी मारकर बैठा था, आँखें बंद थीं और चेहरे पर संतोष की एक बनावटी मुस्कान थी। 'जब पूरा घर इतने कष्ट में था, तो इतना आत्मसंतुष्ट और खुश रहने की क्या ज़रूरत थी?' मैं उसके पास जाकर उसके चेहरे से वह बनावटी मुस्कान मिटाना चाहता था, लेकिन वह शायद हमारे पूरे कुल में सबसे सीधा-सादा व्यक्ति था। वह महत्वाकांक्षाहीन, आत्मसंतुष्ट और जीवन तथा उसकी कठिनाइयों से हमेशा विरक्त था। कुम्भा, सूर्पनखा, माँ और यहाँ तक कि मेरे बाद, उसका आना एक सुखद बदलाव था। मुझे सरल मन का वरदान नहीं मिला था और मैं अपने छोटे भाई के संतोष और सरल जीवन शैली से ईर्ष्या करता था। शायद, महत्वाकांक्षा रहित जीवन ही जीने लायक जीवन था। मैं कभी विभीषण नहीं बन सकता था, चाहे मैं चाहता भी, लेकिन मैं रावण के अलावा कभी कोई और बनना नहीं चाहता था। मैंने आह भरी और अपने दार्शनिक भाई को उसकी आनंदमय मूर्खता में छोड़कर अपने कमरे की ओर चल दिया। मुझे कुछ पीने की इच्छा थी। जैसे ही मैं अंदर गया, मैंने मंदोदरी को पलंग पर बैठे देखा। वह चमकीले रेशमी वस्त्रों और सोने-हीरे के आभूषणों से सजी हुई थी, मानो चलती- फिरती खजाने की खान हो। मुझे देखते ही उसका चेहरा चमक उठा।
मुझे अचानक अपराधबोध और शर्मिंदगी का एहसास हुआ। वेदवती का सुंदर चेहरा मेरे मन में ताजा था और मैं उसकी तुलना अपनी पत्नी से किए बिना नहीं रह सका। मंदोदरी एक गंभीर स्वभाव की खूबसूरत महिला थी, लेकिन उसमें ज़रा भी कामुकता नहीं थी। वह लगभग एक संत जैसी थी और मैं उससे कुछ ज़्यादा ही घबराया हुआ और डरा हुआ था। ऐसा लग रहा था मानो वह मेरी आत्मा का आईना हो और

उसमें मेरे सारे छिपे हुए, बदसूरत घाव और मस्से दिख रहे हों। मैंने अपनी घबराहट को तिरस्कार और चिड़चिड़ाहट के मुखौटे के पीछे छिपा लिया। आश्चर्य से मुझे एहसास हुआ कि मेरे लंबे अभियान के दौरान, यहाँ तक कि जब मैं कार्तिकवीरअर्जुन की अंधेरी कोठरी में कैद था या जीवन-मरण की लड़ाई लड़ रहा था, तब भी वह मेरे मन में नहीं आई थी। मैं बस वेदवती के लिए तड़प रहा था। और मैं अपनी पहली संतान को देखने के लिए व्याकुल था।
मैं असहजता से वहीं खड़ा रह गया, तभी वह उदास मुस्कान के साथ खड़ी हो गई। उसकी मुस्कान से उसका चेहरा खिल उठा और मैं उसकी ओर देख नहीं पाया। मैंने बाहर देखा और अपने भाई को ध्यान करते देख मेरी झुंझलाहट और बढ़ गई। जब मैंने मुड़कर देखा, तो वह इतनी पास थी कि मैं उसकी खुशबू महसूस कर सकता था। उससे ताज़ी चमेली और कपूर की खुशबू आ रही थी। पलकें झपकाते ही उसकी आँखों में आँसू भर आए। वह लगभग शर्मीली और मासूम लग रही थी। मेरा मन किया कि उसे गले लगा लूँ और उसकी प्यारी आँखों से आँसू पोंछ दूँ, लेकिन मेरे हाथ-पैर हिल ही नहीं रहे थे। कोई चीज़ मुझे रोक रही थी।
“हे स्त्री, तुमने शराब कहाँ रखी है?” मेरी आवाज़ मुझे खुद भी कठोर लगी और मैंने नज़रें फेर लीं। मैं उसकी पीड़ा को महसूस कर सकता था और उसकी ओर देखना नहीं चाहता था। मैं कुर्सी की ओर बढ़ा और छत को देखते हुए बैठ गया। ‘वह कैसा महसूस कर रही होगी? विद्युतजिह्वा ने उसके साथ कैसा व्यवहार किया होगा? क्या वह मुझे याद कर रही होगी?’ सैकड़ों सवाल मेरे मन में उमड़ रहे थे, लेकिन मैं चुप रहा। मैं अपने अभियानों के बारे में डींग मारना चाहता था, उसे अपने देखे हुए दृश्यों के बारे में बताना चाहता था, देवों की विचित्र और अनोखी भूमि के बारे में, पराजित जनजातियों की कहानियों के बारे में, कारावास के दर्द के बारे में, वानर-राजा बलि के हाथों हार के बारे में, और यहाँ तक कि एक देव ब्राह्मण लड़की के साथ अपने तूफानी प्रेम प्रसंग के बारे में भी – लेकिन मैं छत को घूरता रहा।
मंदोदरी ने शराब डाली और बड़े पलंग की छाया में चली गई। बिना कुछ कहे, मैंने शराब गटक ली और बेचैनी से अपनी उंगलियाँ स्टूल पर थपथपाने लगा। वह जल्दी से वापस आई और मुझे एक और गिलास दिया। मैं पीता रहा। महल में सन्नाटा छा गया। कभी-कभी मेरी माँ या बहन के दूर से आते विलाप की आवाज़ें उसे तोड़ती थीं। जब मैं उन दर्द भरी आवाज़ों को सुनता, तो मुझे अपराधबोध होता और मैं अपने भावों को और शराब में डुबोने की कोशिश करता। तभी शव पड़ा हुआ

था, उस हॉल से वैदिक मंत्रों की गूंज सुनाई दी। वे ब्राह्मण मेरे जीजाजी की आत्मा को मक्खन, शहद और अन्य पदार्थों से बनी विभिन्न प्रकार की नदियों को पार करके देवलोक की ओर जाने के लिए तैयार कर रहे थे। एक साधारण पहरेदार ने आकर बताया कि वे विद्युतजिह्वा के शरीर को श्मशान घाट ले जा रहे हैं और मेरे आने और अंतिम श्रद्धांजलि देने का इंतज़ार कर रहे हैं।
मैं गुस्से से उठ खड़ी हुई और स्टूल से शराब के गिलास लुढ़क कर मखमली कालीन पर फैल गए। मैंने बेचारे गार्ड पर चिल्लाते हुए उस पर इतनी ज़ोर से गिलास फेंका कि अगर वह उसे लग जाता तो वह मौके पर ही मर जाता। शराब चारों ओर फैल गई और गार्ड जान बचाकर भागा। मैंने उसके पीछे ज़ोर से दरवाज़ा बंद किया और खिड़की भी बंद कर दी, हालाँकि मेरा भाई अपनी हास्यास्पद योग मुद्रा से उठकर गायब हो गया, शायद मोटे ब्राह्मणों को सबक सिखाने के लिए।
फिर मैं अपनी पत्नी की ओर मुड़ा। वह डर से कांप रही थी। मैंने उसकी कमर पकड़ ली, लेकिन उसने मुझे ज़बरदस्त ताकत से धक्का दिया और नशे में होने के कारण मैं लड़खड़ाकर गिर पड़ा। "मुझे मत छुओ," उसने धीमी लेकिन दृढ़ आवाज़ में कहा। वह लगभग सांप की तरह फुफकार रही थी। मूर्ख की तरह मैं वहीं ज़मीन पर बैठा पलकें झपकाता रहा, इतनी शांत स्वभाव की महिला की ताकत देखकर अचंभित और भ्रमित था। "इस नशे की हालत में मुझे छूने की कोशिश मत करो।" वह वहीं खड़ी रही, सिर ऊंचा करके, मुझे चुनौती दे रही थी, मुझे छूने की हिम्मत करने को कह रही थी।
मैं गुस्से से खड़ा हो गया और उसे फिर से पकड़ने की कोशिश की। उसने कटोरे से फल काटने वाला चाकू उठाया और मेरी तरफ इशारा करते हुए कहा, 'आह, मुझे अच्छा लगा। उसमें हिम्मत थी। मुझे इसमें मज़ा आ रहा था।' फिर, मेरे घोर आश्चर्य के बीच, उसने चाकू अपने पेट की तरफ किया और कहा, "तुम एक बनाओ।" मुझे छूने की कोशिश मत करो…” वह फूट-फूटकर रोने लगी, उसका पूरा शरीर कांप रहा था और मुझे यह सब देखकर घिन आ रही थी। मैं आसानी से उसे काबू कर सकता था, लेकिन अब ऐसा नहीं करना चाहता था। इसके बजाय, मैंने गुस्से में आकर तकिए फाड़ दिए, रेशमी चादर बिस्तर से फेंक दी और उस पर पैर पटके। थोड़ी देर बाद, मुझे अपनी मूर्खता का एहसास हुआ और मैं अपनी पत्नी को कोसते हुए और दरवाजा जोर से बंद करते हुए कमरे से बाहर निकल गया।
मैं बेकाबू गुस्से में था। दुर्भाग्य से उस समय एक सुंदर और आकर्षक दासी गलियारे में झाड़ू लगा रही थी। जब उसने मुझे राजकक्ष से बाहर निकलते देखा,

तो वह अचरज से मुंह खोल बैठी और झाड़ू छोड़कर भागने लगी। मैंने उसे देखा तक नहीं था, लेकिन उसकी घबराहट ने मेरा ध्यान खींच लिया। मैं उसके पीछे भागा और लगभग उसे कमर से पकड़ने के लिए कूद पड़ा। मैंने उसकी चीखों को हथेलियों से दबा दिया और उसे पास के एक कमरे में घसीट कर ले गया। फिर मैंने उसके साथ बलात्कार किया। पहले तो वह अनिच्छुक थी; शायद उसने सोचा था कि मैं उसकी हत्या करने वाला हूँ। लेकिन कुछ देर बाद वह मान गई। तो जब मेरी बहन अपने मृत पति पर रो रही थी; मेरी माँ मुझे कोस रही थी; मेरे भाई मेरे बहनोई की चिता को आग लगा रहे थे; और मेरी पत्नी फूट-फूट कर रो रही थी, मैं, राजा, भारत का सम्राट, एक नीची जाति की दासी के साथ व्यस्त था। और उस पाप और अपराधबोध से, मेरा काला, मोटा और बदसूरत बेटा, अथिकया, पैदा हुआ।

34 दंगा

भद्र
मुझे उबरने में लगभग एक साल लग गया। जब असुर लूटपाट और आपस में लड़ाई में व्यस्त थे, तब मेरी झोपड़ी जलकर राख हो गई थी। न केवल मेरा इलाका, बल्कि रावण और विद्युतजिह्व के सत्ता के लिए चल रहे उन अशांत दिनों में अधिकांश घर और दुकानें जलकर राख हो गए थे। मैं कुछ दिनों तक बहुत दुखी रहा। माला उस छोटी सी झोपड़ी में लौट आई थी जो मैंने राजमार्ग के किनारे विशाल बरगद के पेड़ के नीचे बनाई थी। इससे पहले, मैंने उसके बारे में खुद पता लगाया था और पाया था कि वह महल में एक छोटी सी दासी थी। अफवाहें थीं कि वह राजा से गर्भवती थी और रावण ने उसे दूसरी रानी बना दिया था। मैं ईर्ष्यालु और आहत था। मैं उसे जान से मार देना चाहता था, लेकिन अब वह सत्ता में बहुत ऊंचे पद पर थी।

फिर एक दिन वह आई। वह बिल्कुल भी रानी जैसी नहीं लग रही थी। वह सादी और मैली-कुचैली दिख रही थी और अपने कंधों पर चिथड़ों का गट्ठा लिए हुए थी, उसकी लुप्त होती सुंदरता के निशान उसे और भी बदसूरत बना रहे थे। राजा की प्रेमिका होने के बावजूद, माला की हालत दयनीय थी। उसके विश्वासघात पर मुझे जो गुस्सा आया था, वह अब एक मंद पीड़ा में बदल गया था। शायद वह भोजन और छोटी-मोटी खुशियों के लिए खुद को बेच रही थी, या फिर विद्युतजिह्व और रावण जैसे राजाओं के बीच एक गरीब लेकिन सुंदर स्त्री के जीवित रहने का यही एकमात्र तरीका था। अपने वीरतापूर्ण कार्यों से लौटने के बाद कुछ महीनों तक मैं क्रोध, आत्म-दया और ईर्ष्या से जलता रहा। लेकिन जब वह आई, तब तक मेरा गुस्सा शांत हो चुका था। उस दिन जब वह मेरी कुटिया में लौटी, तो मुझे तेज बुखार था, और बिना कुछ कहे, उसने मेरी देखभाल करना शुरू कर दिया। उसने भीख मांगकर चावल लिए थे या चुराए थे, मुझे नहीं पता, लेकिन उसने कुछ दलिया बनाया। उसने मुझे वह खिलाया और अचानक, मैं रोने लगा। उसने कुछ नहीं कहा, बल्कि पत्तों से भरे चम्मच से मुझे दलिया खिलाती रही।
जब तक मैं संभला, तब तक पूछने में बहुत देर हो चुकी थी। मुझे उसकी ज़रूरत थी और मुझे लगता है कि उसे भी मेरी ज़रूरत थी, कम से कम तब तक जब तक कोई अगला महान व्यक्ति उसे अपनी इच्छा पूरी करने के लिए न बुला ले। धीरे-धीरे मैं एक नियमित दिनचर्या में ढल गया। वह अपेक्षाकृत शांत और सुकून भरा समय था और ज़्यादातर दिन हम कम से कम एक बार खाने लायक कमा लेते थे। भिखारी और बेसहारा, जादूगर और सपेरे, कलाबाज़ और खानाबदोश, जो शहर के बाज़ारों, गलियों और संकरी घुमावदार सड़कों, महल, मंदिरों और ग्रामीण इलाकों में आते-जाते रहते थे, अक्सर बरगद के पेड़ के नीचे विश्राम करने आते थे। यह यात्रियों का प्राकृतिक विश्राम स्थल था। ऊब के मारे मैंने तरह-तरह के व्यंजन बनाने शुरू किए और उन्हें राहगीरों के साथ बाँटा। माला ने हमारी पहली फूस की दुकान बनाने में मेरी मदद की जहाँ हम मिठाई और नाश्ता बेचते थे। लेकिन कभी-कभी वह महल में छोटे-मोटे काम भी करती थी और अपने बेटे अथिकाया को भी नियमित रूप से महल ले जाती थी। हालांकि मुझे इस बात के लिए उससे नफरत थी, लेकिन मुझे लंबे समय से पेट भरा होने की शांति और खुशी का अनुभव नहीं हुआ था और मैं इस स्थिति को बिगाड़ना नहीं चाहता था।
माला ने नाश्ता और अन्य भोजन पकाने और परोसने की ज़िम्मेदारी संभाल ली। मुझे अपनी एक और प्रतिभा का पता चला – थोड़े से पैसों के लिए मैं यात्रियों

विश्वास जीत लिया। शायद उन्होंने अपनी स्वाभाविक महत्वाकांक्षा पर अंकुश लगा लिया था या पुत्र के जन्म ने युद्ध और नए क्षेत्रों पर कब्ज़ा करने की उनकी प्यास बुझा दी थी।
धीरे-धीरे भारत के क्षेत्र, जिनमें द्वीप भी शामिल था, अपनी पुरानी समृद्धि को पुनः प्राप्त करने लगे। व्यापार फिर से फलने-फूलने लगा। आश्चर्य की बात यह थी कि जिन लोगों को मैं अत्यंत क्रूर समझता था, वे उत्कृष्ट प्रशासक सिद्ध हुए। रुद्रका द्वारा राजमार्गों और बंदरगाहों पर पुलिसकर्मियों और घुड़सवार रक्षकों की तैनाती का जनता ने आरंभ में विरोध किया, क्योंकि उनका मानना था कि ये रक्षक अत्याचारी और चोर बन जाएँगे। परन्तु रुद्रका ने अपने अधीनस्थों में ऐसा भय उत्पन्न कर दिया और भ्रष्ट रक्षकों को सार्वजनिक रूप से फाँसी देकर उस भय को और भी पुख्ता कर दिया कि कम से कम राजधानी के आसपास के क्षेत्र में जबरन वसूली लगभग ठप हो गई। प्रधानमंत्री के रूप में प्रहस्त ने सभी मंत्रियों पर कड़ा नियंत्रण रखा और उनकी व्यक्तिगत ईमानदारी का जनता सम्मान करती थी, यद्यपि एक व्यक्ति के रूप में वे कभी लोकप्रिय नहीं रहे। जंबुमाली, जो एक अनाड़ी क्लर्क था, एक परिपक्व वित्त मंत्री बन गया। यद्यपि हम उनकी कर नीतियों के बारे में कुछ भी नहीं समझते थे, फिर भी मेरे लॉन्ड्री में आने वाले धनी व्यापारी हमेशा उनकी प्रशंसा करते थे। वह वाकई बहुत अच्छा रहा होगा क्योंकि ये चेट्टी लोग आमतौर पर अपनी प्रशंसा करने में उतने ही कंजूस होते थे जितने कि पैसे देने में।
मारीचा अस्पतालों, शैक्षणिक और धर्मार्थ संस्थानों के प्रभारी मंत्री थे और जनता के चहेते थे। अशांति के समय में भी उनकी दयालुता उल्लेखनीय थी, इसलिए शांति के समय में तो वे और भी आगे बढ़ गए। वे स्वयं अनाथालयों और अस्पतालों का दौरा करते थे और दृढ़ निश्चयी होने के साथ-साथ दयालु भी थे। उन्होंने रावण की महिमा के लिए प्राणों की आहुति देने वाले सैनिकों के बच्चों के लिए एक विद्यालय-सह-अनाथालय शुरू किया। यद्यपि यह एक छोटी सी बात थी, फिर भी यह सोचकर मन को शांति मिलती थी कि एक मंत्री गरीबों और दलितों की परवाह करता है और सरकार शहीदों के प्रति कृतज्ञ है, और इससे राज्य में मानवीय भावना जागृत होती थी।
राजा के ससुर नागरिक योजना एवं प्रशासन मंत्री थे और अक्सर उनका मज़ाक उड़ाया जाता था। वे भव्य शहरों और शानदार सड़कों की ऐसी योजनाएँ बनाते थे

ब्राह्मण को दान करके अपने सभी पापों से मुक्त हो जाएगा। पहले तो कसाई को हंसी आई और उसने ब्राह्मणों से एक नीच, मूर्ख जानवर के प्रति उनके प्रेम पर बहस की। पहले से ही नशे में धुत कसाई ने ब्राह्मणों के नेता को गले लगा लिया। ब्राह्मणों का समूह कसाई पर टूट पड़ा और उसे लात-घूंसे मारने लगा। इसी बीच, कसाई ने अपना चाकू निकाला और अंधाधुंध वार करने लगा। जल्द ही कई लोग लड़ाई में शामिल हो गए और यह तब तक नहीं रुकी जब तक ब्राह्मण भाग नहीं गए। तीन ब्राह्मण और किसान बाजार के बीचोंबीच मृत पड़े थे। कसाई ने अपने नए जोश में आकर चाकू को तलवार की तरह लहराया और चिल्लाया, "सभी ब्राह्मणों का नाश हो।" भीड़ ने ज़ोरदार समर्थन किया। जल्द ही, लोग अपने हाथ में जो कुछ भी आया, उसे लेकर निकल आए - तलवारें, रसोई के चाकू, टिल, कुल्हाड़ी, फर्नीचर के टुकड़े, पत्थर - और जब तक वे मेरी दुकान तक पहुँचे, भीड़ सैकड़ों में पहुँच चुकी थी। मैं भी दौड़कर शामिल हो गया। मुझे खून चाहिए था। मैं उन मोटे ब्राह्मण चेहरों पर थूकना चाहता था। यह मेरा देश है, मेरी जाति है, मेरा राजा है, और उनकी हिम्मत कैसे हुई हमारी संस्कृति को दूषित करने की?
भीड़ उन गलियों की ओर रेंगती हुई बढ़ी जहाँ ब्राह्मण अपने आलीशान घरों में रहते थे। किसी को मशाल मिल गई और देखते ही देखते, एक-एक करके घर आग की लपटों में घिर गए। औरतें और बच्चे बाहर भागे। भीड़ ने बच्चों को बेरहमी से मार डाला और औरतों को अपने साथ ले गई। मोटे-ताज़े ब्राह्मण बच निकले, औरतों और बच्चों को हमारी दया पर छोड़ गए। और दया एक ऐसा शब्द था जिसे देवों के हमलों ने हमें त्यागना सिखाया था। जब हमारा काम पूरा हो गया, तो किसी ने राजकुमार विभीषण का खून बहाने का नारा लगाया। भीड़ महल की ओर मुड़ी। कई ब्राह्मण वहाँ छिपे हुए थे। हम उन्हें उनके अहंकार, घमंड, हमारे अपमान, हमें अछूत समझने और हमारी बची-खुची इज्जत को भी नष्ट करने के लिए सज़ा देना चाहते थे। भीड़ में हज़ारों लोग शामिल हो गए और हमने अंधाधुंध तोड़फोड़ की, छह विष्णु मंदिरों, सार्वजनिक स्नान घाट, असुरों और ब्राह्मणों दोनों की दुकानों को जला दिया और महल की ओर बढ़ते रहे। घुड़सवार पुलिस के एक दल ने हमें रोकने की कोशिश की, लेकिन भीड़ ने उन्हें पल भर में ही खा लिया। एक इंस्पेक्टर को पास के पेड़ से लटका दिया गया। तीन पुलिस चौकियों को जला दिया गया। हम बहुत खुश थे। लेकिन एक बात मुझे परेशान कर रही थी। 'रावण की

सेना इतनी आसानी से क्यों हार मान रही थी? कोई प्रतिरोध क्यों नहीं हुआ? क्या वे इतने कायर थे?'
फिर मेरा पड़ोसी गिर पड़ा। एक तीर उसके गले में लगा और उसके पीछे खड़े लोगों की कतार पर खून की बौछार हो गई। जल्द ही तीरों की बारिश होने लगी और मैं भय से देखता रहा। हजारों घुड़सवार तीरंदाज हमारी ओर दौड़े। महल के द्वार खुल गए और सैनिक मधुमक्खियों की तरह हम पर टूट पड़े। मैंने रुद्रक को आक्रमण का नेतृत्व करते देखा, उसकी तलवार चारों दिशाओं में लहरा रही थी, सिर काट रही थी। भीड़ में दहशत फैल गई। मुझे धक्का-मुक्की का सामना करना पड़ा और मैं लगभग गिर ही गया था, हजारों घोड़ों के खुरों और पैरों के नीचे कुचला जाने वाला था। भाग्य ने ही मुझे बचाया। मैं सड़क के किनारे एक नाले में कूद गया और एक पत्थर के पुल के नीचे रेंगकर चला गया। मैं सात घंटे से अधिक समय तक उस पत्थर के पुल के नीचे रहा। जब अंधेरा हो गया, तो मैं अपने गड्ढे से बाहर निकला। पूरा इलाका अस्त-व्यस्त था। क्रांति के भावी नायक अपने ही कटे अंगों और मांस की गंदगी में चारों ओर बिखरे पड़े थे।
दुर्गंध असहनीय थी। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था। चूहों द्वारा मरे हुए जानवरों को कुतरने की कर्कश आवाज़ ने स्थिति को और भी भयावह बना दिया था। मैं अपने घर की ओर चल पड़ा। रास्ते भर मुझे जले हुए घर, पेड़ों से लटकती लाशें और कटे हुए अंग-सिर ऐसे बिखरे पड़े दिखाई दिए जैसे गर्मी के मौसम में बागों में पके आम बिखरे हों। कई इलाके जहाँ बेचारे असुर रहते थे, हाथियों ने पहले ही तहस-नहस कर दिए थे। सात हफ़्तों में इतनी तबाही होना अविश्वसनीय था। नदी की ओर मुड़ते ही मैंने एक खंभे से लटके हुए मृत कसाई को देखा। उसी ने हमें इस मुसीबत में डाला था। बेबस गुस्से में मैं चाकू हाथ में लिए उसके बेजान शरीर की ओर दौड़ा। मैं उस पेड़ की डाल पर चढ़ गया जहाँ से वह लटका हुआ था ताकि उसके चेहरे तक पहुँच सकूँ। मैंने उसके चेहरे पर बार-बार वार किए जब तक कि मेरा उबलता हुआ गुस्सा कुछ शांत नहीं हो गया। मैं नीचे कूद गया। फिर, चीखते हुए, मैंने अपने हाथों को धोती पर और फिर ज़मीन पर बार-बार पोंछा। थककर मैं उठा और अपने घर की ओर चल पड़ा। जब मैं पहुँचा, तो मैंने माला को पेड़ के नीचे देखा। वह बुरी तरह घायल, नग्न और सामूहिक बलात्कार का शिकार होकर, भारी साँसें ले रही थी। जहां मेरा घर और दुकान हुआ करती थी, वहां जमीन में एक गहरा गड्ढा था। धुएं के पतले-पतले गुच्छे धीरे- धीरे आसमान की ओर उठ रहे थे।

35 द्वंद्वयुद्ध
रावण
मुझे नींद नहीं आ रही थी। भद्रा का काला, बदसूरत चेहरा मेरे मन में विचित्र आकृतियों में बदल रहा था, कभी घूरता हुआ, कभी दयनीय विनती करता हुआ। मैं चादर पर करवटें बदल रही थी। कल मैं मारीच को उसके पास भेज दूंगी। शायद कुछ सोने के सिक्के मेरे अपराधबोध को कम कर दें। लेकिन मैं उस आदमी से क्रोधित और शर्मिंदा भी थी। यह सब कमजोरी के एक पल में शुरू हुआ था। मैं इतनी नीच हरकत कैसे कर सकती थी? मेरा आचरण अक्षम्य था। लेकिन मैं इसे भूलकर अपने जीवन में आगे बढ़ सकती थी, सिवाय शिव के इस उपहार के। यह मेरी समझ से परे था कि कैसे एक बार के जुनून से बच्चा पैदा हो सकता है, जबकि मेरी रानी और मैंने अपने बेटे मेघनाद को भाई-बहन देने के लिए बारह साल तक संघर्ष किया। अक्षय कुमार का जन्म कई वर्षों बाद हुआ, लेकिन मेघनाद का पहले से ही एक सौतेला भाई था - अतिकाय। मंदोदरी उसे जानती थी और उससे इतनी नफरत करती थी कि उसने दासी और उसके बेटे के प्रति अत्यधिक दया दिखाई। कुछ मिनटों के अंधेरे में, अपनी पत्नी, अपनी जाति और अपने जीवन के प्रति क्रोध - बस इतना ही इस अंधकारमय प्राणी - अथिकाया - को बनाने के लिए काफी था।
मैं अपने राजसी आदेश से माता और पुत्र दोनों को गायब कर सकता था। लेकिन किसी चीज़ ने मुझे रोक लिया – शायद मुझमें थोड़ी सी इंसानियत बची थी। या शायद यह एक बिछड़े हुए प्यार की याद थी और एक नन्हा बच्चा तेज़ बहती नदी पर सरकंडे की टोकरी में तैर रहा था – या शायद यह एक बिछड़े हुए प्यार की याद थी और एक नन्ही बच्ची जिसे एक देव राजा ने खाई से निकाला था। आख़िरकार, अथिकया, काला और बदसूरत, आगे निकले दाँतों वाला, मेरा ही पुत्र था, और मैं बड़ा और समझदार हो गया था, या शायद इतना मूर्ख था कि ऐसे जघन्य कृत्य नहीं

दोनों में से कोई कुछ नहीं कर सकता था। इसलिए मैं झुका और उसे उठने में मदद की।
“भद्रा।” मैंने उसकी कोयले जैसी काली आँखों में देखा। नफ़रत की एक झलक पल भर में आई और गायब हो गई, उसकी जगह एक निर्जीव भाव आ गया। मैंने नफ़रत को नज़रअंदाज़ कर दिया। मैंने बदबू को भी नज़रअंदाज़ कर दिया। ऐसी बातों के लिए ज़िंदगी बहुत छोटी थी। मुझे लगभग नेक महसूस हुआ। “क्या तुमने खाना खा लिया?” मैंने विनम्रता से पूछा। उसने सिर हिलाया। “रसोई में जाओ और खा लो। मैं निर्देश भेज दूँगा।”
वह वहीं खड़ा रहा। यह एक अजीब स्थिति थी। वह कुछ नहीं बोला और मेरे पास कहने के लिए शब्द नहीं बचे थे। उसकी दुर्गंध असहनीय थी। मैंने उस प्राणी के प्रति अपने मन में दयनीय भावना और करुणा को बनाए रखने की कोशिश की, लेकिन घृणा धीरे-धीरे हावी होने लगी। मैंने उससे लड़ने की कोशिश की, अपनी नज़रें उसकी काली, फटी त्वचा, बिखरे और उलझे बालों, पैरों के घावों, बाहर निकले पेट और गंदे दांतों से दूर रखीं। लेकिन वह दुर्गंध बार-बार लौट रही थी। मुझे अपने हाथ धोने का मन कर रहा था, इतना अपवित्र महसूस हो रहा था। अनजाने में ही मैंने अपने हाथों को रेशमी रुमाल से पोंछा और जब उसकी नज़र मेरे इस हरकत पर पड़ी तो मुझे शर्मिंदगी महसूस हुई।
तभी तीन साल का मेघनादा खिलखिलाते हुए कमरे में दौड़ता हुआ आया। वह अचानक रुक गया और उसकी बड़ी-बड़ी प्यारी आँखों में अपने पिता, राजा के सामने इतने आदर से खड़े गंदे, काले असुर को देखकर हैरानी के भाव थे। मैं अपने बेटे को गोद में उठाना चाहता था और उसकी ओर बढ़ा, लेकिन फिर मैं उसे उन गंदे हाथों से छूना नहीं चाहता था जिनसे भद्रा को छुआ था। मैंने एक बार फिर अपने हाथ पोंछे और उस गंदे असुर के मुँह से एक हल्की सी हँसी निकली। मेरे अंदर क्रोध की लहर उमड़ पड़ी और मैं गुस्से से उसकी ओर मुड़ गया। तभी मेरा नाजायज बेटा, काला, बदसूरत अथिकय भी दौड़ता हुआ कमरे में आया। उसने सिर्फ एक धोती पहनी थी, बाकी कुछ नहीं। उसकी तीन साल की उंगलियाँ आधे खाए हुए पके आम से गंदी थीं। उसकी नज़रें भद्रा से मिलीं। मुझे नहीं पता उस तीन साल के बच्चे के मन में क्या चल रहा था, लेकिन वह आधे भूखे भद्रा की ओर बढ़ा और उसे आम दिया। इससे पहले कि मैं कुछ प्रतिक्रिया कर पाती, भद्रा ने उसे उठाया और ऐसे चूसने लगा जैसे वह उसकी आखिरी दावत हो। तभी, मेरे डर के मारे, मेघनाद ने अपने छोटे हाथ बढ़ाए और भद्रा ने खाना बंद कर दिया और आधा चूसा हुआ,

गंदा आम उसके हाथों में गिरा दिया। मैंने उसके हाथों पर ज़ोर से लात मारी और आम बालकनी से बाहर जा गिरा। मैंने भद्रा को अपने हाथ के पिछले हिस्से से मारा। मेरी सारी परोपकारिता गायब हो गई। 'इस नीच की हिम्मत कैसे हुई मेरे महल में आकर राजकुमार को अपना बचा हुआ खाना खिलाने की?' भद्रा उदास संतुष्टि के भाव से नीचे गिर पड़ा। मैं अपनी तलवार से उसके बदसूरत चेहरे से वह भाव मिटा देना चाहती थी।
दोनों लड़के चीखने लगे। मैंने अथिकाया को कंधों से पकड़कर ज़ोर से हिलाया। मेघनादा ने अपने सौतेले भाई को मेरी पकड़ से छुड़ाने की कोशिश की। उसने अपने छोटे हाथों से मुझे खूब मारा, तभी मंदोदरी दौड़ती हुई आई और अथिकाया को मेरे हाथों से छीन लिया।
“रावण, क्या तुम पागल हो गए हो? क्या तुम इस बच्चे को मारना चाहते हो?” वह चीखी। उसने रोते हुए अथिकाया को ज़मीन पर छोड़ दिया और मेघनादा को अपनी ओर खींच लिया। मेरा बेटा अपनी माँ की गोद में रोने लगा। अथिकाया ने यह देखा और और भी ज़ोर से रोने लगी।
“तुम मेघा को इस गंदे बच्चे के साथ खेलने की इजाज़त क्यों देते हो?” मेरे ये शब्द मुझे भी खोखले लग रहे थे।
मेरी पत्नी गुस्से से घूर उठी। “यह तुम्हारा गंदा बच्चा है, रावण,” उसने कहा और अपने रोते हुए बेटे को गोद में उठाकर गुस्से से बाहर चली गई। मैं स्तब्ध रह गया। ‘उसकी हिम्मत कैसे हुई मुझसे इस तरह बात करने की?’ वह पहले तो मेरे पास आने से भी डरती थी। लेकिन बेटे के जन्म के बाद, वह ऐसे बर्ताव करने लगी जैसे मैं उसका ही हूँ। उसे अब डर नहीं लगता था। वह मुझे मेरे नाम से पुकारने, मुझ पर चिल्लाने और अपनी बात मनवाने के लिए नखरे दिखाने से नहीं डरती थी। मैं भी शांत हो गया था, बस कभी-कभार गुस्सा फूट पड़ता था। कुछ लोग कह सकते हैं कि मैं जोरू का गुलाम था। हालाँकि मैं अपने आक्रामक व्यवहार और चिल्लाने से इसे छुपाता था, लेकिन ज़्यादातर समय उसकी ही बात मानी जाती थी। वह मेरे और मेरे बेटे के प्रति मेरे प्यार का इस्तेमाल मुझे नियंत्रित करने के लिए करती थी, और सच कहूँ तो, मैं खुश था।
कुछ सेकंड लगे यह समझने में कि कोई आवाज़ नहीं थी। मैंने चारों ओर देखा। अथिकाया और भद्रा गायब हो गए थे, मुझे अकेला छोड़कर। मैं रेलिंग के पास गई और नीचे देखा। मुझे एक लंगड़ाता हुआ, सांवला सा व्यक्ति एक गंदे बच्चे का छोटा सा हाथ पकड़े रसोई की ओर जाता हुआ दिखाई दिया। समुद्र से एक सुहावनी

हवा आई और उनके बातचीत की हल्की-हल्की खुशबू अपने साथ लाई। उनकी हंसी के बीच, एक शब्द तीर की तरह निकला और मेरे दिल के एक संवेदनशील कोने में जा लगा। अथिकाया, वह बेटा जिसे मैं कभी नहीं चाहती थी, अपनी मासूम आवाज़ में भद्रा को अपना 'पिता' कह रहा था। मुझे नहीं पता था कि भद्रा ने बच्चे को ऐसा कहने के लिए कहा था या बच्चे का ऐसा कहने का मन था। लेकिन इससे मुझे बहुत दुख हुआ। मैं तब संभली जब मैंने सोचा कि वह बदसूरत बच्चा अब मेरे सिर से और मेरे प्यारे बेटे मेघनादा से दूर हो जाएगा।
हालाँकि सभी जानते थे कि अथिकाया मेरा बेटा है, फिर भी यह बात मददगार साबित हुई कि भद्रा ने उस दासी से शादी कर ली थी जिसके साथ मैंने बहुत समय पहले बलात्कार किया था। इसलिए अथिकाया और भद्रा के रिश्ते को कुछ हद तक वैधता मिल गई थी। मुझे यह जानकर शर्मिंदगी हुई थी कि मैंने अपने नौकर की पत्नी के साथ बलात्कार किया था और उस परिवार को एक बच्चा दिया था, लेकिन मैं उस शर्मिंदगी का आदी हो गया था। इंसान किसी भी चीज़ का आदी हो सकता है, यहाँ तक कि शर्मिंदगी का भी। एक विशेष रियायत के तौर पर, मैंने शाही प्रशिक्षकों को राजकुमारों को प्रशिक्षण देने के बाद अथिकाया को भी प्रशिक्षण देने की अनुमति दी। और मुझे यह सुनकर आश्चर्य हुआ कि वह शस्त्र चलाने में बहुत तेज़ था। उसने यह हुनर मुझसे ही सीखा होगा। मैंने सोचा कि उसे मेरे बेटे के लिए एक अच्छा युद्ध साथी बनाया जा सकता है।
मुझे अपने बेटे मेघनाद के स्नातक समारोह की घोषणा करते हुए बहुत गर्व हुआ। यह समारोह श्रावण माह की पूर्णिमा के दिन निर्धारित किया गया था। मेरे घनिष्ठ मित्र बाली समारोह में राजकीय अतिथि थे। मेरी युवावस्था की असफलता के बाद, हमारी मित्रता और भी गहरी हो गई थी और मैं बाली का बहुत सम्मान करता था और मानता था कि यह सम्मान पारस्परिक था। उनकी पत्नी तारा और मेरी रानी, दोनों अच्छी मित्र थीं। बाली और मेरे दोनों के ही कुछ भाई थे जो पथभ्रष्ट थे और यह हमारे बीच अक्सर चर्चा का विषय रहता था। बाली मेरी अनैतिक बहन पर कड़ी नज़र रखते थे, जो उनके राज्य के बाहरी इलाके में बस गई थी। वे कहते थे कि वह अपने स्वार्थ के कारण सब पर विपत्ति लाएगी, लेकिन मैं उनकी बात अनसुनी कर देता था, यह सोचकर कि सूर्पनखा का कोई महत्व नहीं है। उसे पुरुषों की आवश्यकता थी और वह बिना सोचे-समझे उन्हें अपने वश में कर लेती थी। वह परिवार पर कलंक थी, लेकिन जब तक वह, मेरी माँ और मेरे धूर्त पिता लंका से दूर रहे, मुझे लोगों की बातों की कोई परवाह नहीं थी।

थी। मैं जानती थी कि यह उसके सुंदर बेटे, उसके शानदार रूप और लहराते काले बालों के कारण नहीं था, जब वह हमारे सामने से घोड़े पर सवार होकर गुजरा, या जिस सुंदर ढंग से उसने धनुष पकड़ा और पक्षियों और मछलियों पर तीर चलाए। उसे इस बात का गर्व था कि उसका बेटा उसकी सहेली तारा के बेटे से बेहतर निकला। उसका बेटा मेरे नाजायज बेटे अथिकया से कहीं बेहतर था। मुझे भी गर्व महसूस हुआ, लेकिन मंदोदरी ऐसी लग रही थी मानो उसने मातृत्व की दौड़ जीत ली हो। माता-पिता इतने प्रतिस्पर्धी कब से हो गए?
तभी मेरे जीवन की सबसे शर्मनाक घटनाओं में से एक घटी। मेरा बेटा घोड़े की काठी से फिसल गया और भीड़ स्तब्ध रह गई। बाली और तारा के बीच बैठे अंगदा ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगे। मेरे बेटे ने संभलकर अपना संतुलन बनाया और शान से अपनी सवारी जारी रखी। हालांकि मैं अंदर ही अंदर गुस्से से उबल रही थी, मैंने उस उपहास भरी हंसी को अनसुना कर दिया। लेकिन इसके बाद जो हुआ वह एक भयानक आपदा थी। इसने लगभग मेरे देश को युद्ध की ओर और मेरे राज्य को विनाश की ओर धकेल दिया। मुझे हाथापाई की आवाज़ सुनाई दी। 'असुर! हमेशा शराब पीते और लड़ते रहते हैं,' मैंने सोचा। मैं शोर की ओर मुड़ी और मुझे अपने जीवन का सबसे बड़ा झटका लगा। अंगदा ज़मीन पर पड़े थे। चारों ओर सन्नाटा छा गया। मेरे बेटे ने अपने घोड़े को कुछ ही दूरी पर रोक दिया था। हमारी पीठ पीछे, अथिकय की भारी-भरकम और काली आकृति उठी। फिर, धीरे-धीरे सोच-विचार करते हुए, वह वहां से भाग गया। 'इस मूर्ख ने क्या कर दिया? एक नीच दासी का बेटा?'
“उस मूर्ख को पकड़ो!” मैंने दहाड़ लगाई, और सैकड़ों पहरेदारों ने अपनी तलवारें निकाल लीं और अंगदा और अथिकाया दोनों को घेर लिया। बाली का चेहरा लाल हो गया था और मुझे डर लगने लगा।
अथिकाय अपने मोटे, काले होंठों को थोड़ा खोलकर खड़ा था, उसके घुंघराले बाल हवा में लहरा रहे थे, वह बिल्कुल हैरान-परेशान लग रहा था। वह किसी मूर्ख बैल की तरह दिख रहा था, लेकिन मैं देख सकता था कि उसके हाथ तनाव में थे। रुद्रक अपनी तलवार खींचे हुए अथिकाय की ओर बढ़ा। “उसने…उसने…मेरे…भाई…मतलब…राजकुमार मेघनादा का अपमान किया।” अथिकाया हकलाते हुए बोली। भीड़ में हल्की फुसफुसाहट फैल गई। मेघनादा के चेहरे पर हंसी और प्यार के भाव थे।
“उसे कालकोठरी में डाल दो। कल हम उसके भाग्य का फैसला करेंगे।” मैंने बाली के गंभीर चेहरे पर एक नजर डालते हुए चिल्लाकर कहा।

“मैं उससे निपट लूंगी।” अंगदा ही थी जो उठ खड़ी हुई थी।
“अंगदा…” बाली की आवाज़ दिल दहला देने वाली थी, लेकिन उसके बेटे ने अपने पिता के गुस्से का सामना नहीं किया। उसकी आँखों में मुझे वही नफ़रत दिखी जो मेरे मन में अपने पिता के लिए थी। मैं अपनी सीट पर वापस बैठ गया, यह जानते हुए कि मामला हाथ से निकल रहा है। मेरी बस यही प्रार्थना थी कि अंगदा इस मूर्ख अथिकाया का जल्द से जल्द सफाया कर दे और सब कुछ ठीक कर दे।
“अरे मूर्ख…” बाली गुस्से से बोला, लेकिन अंगदा तो आग बबूला हो गया था। उसने नाटकीय अंदाज़ में सारे पहरेदारों को भगा दिया और रुद्रक ने मुझसे निर्देश लेने के लिए मेरी तरफ देखा। मैंने बस सिर हिलाकर इशारा किया और उसने अपने पहरेदारों को वापस बुला लिया।
“उसने मुझे लात मारी और मैं अपनी इज्जत वापस पाना चाहता हूँ,” अंगदा ने अपने पिता पर चिल्लाते हुए कहा। फिर, ऊँची आवाज़ में उसने गैलरी में ऐलान किया, “लंका के नागरिकों, देखो हम वानर उस गधे से कैसे निपटते हैं जो खुद को शेर समझता है!”
अथिकाया वहाँ मूर्खता से खड़ा था, उसकी आँखें उल्लू की तरह झपक रही थीं। मेघनाद घोड़े से उतरा और अथिकाया के पास आया। उसने उसके हाथ पकड़े और उसके कान में कुछ फुसफुसाया, फिर उसे सभास्थल के बीचोंबीच ले गया। 'सफाईकर्मी का पुत्र, मेरे अभिमान को मिटाने के लिए जन्मा अभिशाप।' मैं उसे अपने हाथों से मार डालना चाहता था। जैसे ही मेरे पाप का पुत्र मेरे प्रिय मेघनाद के साथ सभास्थल में पहुँचा, भीड़ ने ज़ोरदार तालियों से उसका स्वागत किया। राजकुमार के उस एक इशारे से ही अथिकाया सभा का चहेता बन गया था। मेघनाद ने अपनी तलवार निकाली और अथिकाया की ओर फेंकी, जिसे उसने हवा में इतनी आसानी से पकड़ लिया कि मैं दंग रह गया। लड़के में गजब का हुनर था। अब मैं दुविधा में था। मैं चाहता था कि अथिकाया मारा जाए ताकि मैं अपने देश और बाली के साथ अपनी मित्रता बचा सकूँ। लेकिन कहीं न कहीं मेरे भीतर, मेरे माता-पिता का गौरव भी धड़क रहा था। मैं चाहता था कि अथिकाया जीते। आखिर, वह मेरा खून था।
अंगदा गोल-गोल घूमने लगा। मुझे कुछ लोगों की हूटिंग और ताने सुनाई दिए। फिर भीड़ "वानरों का नाश हो; वानरों का नरक हो; हाय हाय वानर!" के नारे लगाने लगी। मैंने बाली की ओर देखा और पाया कि उसने अपनी कुर्सी को कसकर पकड़ रखा था। उसकी विशाल भुजाओं की नसें तन गई थीं और फड़क रही थीं, लेकिन

उसका चेहरा भावहीन था। भीड़ वानरों को गालियां देने लगी, उन्हें अर्धजातीय और वानर-मानव कहने लगी। कुछ लोगों ने स्वयं वानर राजा को भी अपशब्द कहे। मैंने रुद्रक को ढूंढा। लेकिन मुझे आश्चर्य हुआ कि रुद्रक मेरी ओर पीठ करके युद्ध की शुरुआत को ध्यान से देख रहा था। शोर इतना ज़्यादा था कि कान बहरे हो रहे थे।
तलवारों की पहली खड़खड़ाहट शोरगुल को चीरती हुई सुनाई दी। फिर वे आपस में भिड़ गए – मेरे दोस्त का लड़ाकू बेटा और एक सफाईकर्मी महिला का बेटा। पहले कुछ मिनटों में ही अंगदा ने कई बार खून बहाया। वह फुर्तीला और तेज़ था। अथिकाया कभी अनाड़ी तो कभी सजग लग रहा था, लेकिन वह अंगदा को एक खरोंच तक नहीं लगा सका। मुझे थोड़ी राहत मिली, लेकिन साथ ही दुख भी हुआ। भीड़ एकदम शांत और तनावग्रस्त हो गई थी। मैं हवा में शत्रुता महसूस कर सकता था। मुझे बाली के थोड़े शांत होने का भी आभास हुआ। फिर, अंगदा ने कमर में ज़ोरदार लात मारकर अथिकाया को ज़मीन पर गिरा दिया। अथिकाया ज़मीन पर धड़ाम से गिरा। भीड़ में सन्नाटा छा गया। अंगदा ज़ोर से हँसा और दहाड़ा।
अथिकाया बेहोश, या शायद मृत, ढेर की तरह पड़ा था। अंगद ने भीड़ की ओर तलवार लहराई। वह अथिकाया पर तलवार चलाकर उसे मार सकता था। लेकिन उसने ऐसा कुछ नहीं किया। यह उसके लिए बहुत ही साधारण बात होती। वह एक वानर राजकुमार की असुर पर विजय के क्षण का आनंद ले रहा था और हर पल को जी भर कर जीना चाहता था। मैंने बलि के चेहरे पर हल्की सी मुस्कान और गर्व की झलक देखी। मैं दुखी भी थी और राहत भी महसूस कर रही थी। एक बड़ा संकट टल गया था। तभी मैंने अपने बेटे को अपने गिरे हुए सौतेले भाई की ओर बढ़ते हुए देखा। अंगद ने अपनी हरकतें रोक दीं और मेरे बेटे को घृणा भरी निगाहों से घूरने लगा। मैंने प्रार्थना की कि वह मेघनाद को द्वंद्वयुद्ध के लिए चुनौती न दे। मेरे बेटे को चुनौती स्वीकार करनी ही पड़ती और परिणाम, चाहे जो भी होता, विनाशकारी होता। देखते ही देखते, मुझे एहसास हुआ कि मेरा पूरा शरीर कांप रहा है। 'बलि का मूर्ख पुत्र, मैं उसे मार डालूँ। लोग अपने बच्चों का सही पालन-पोषण क्यों नहीं कर पाते?'
मेघनादा ने अथिकाया का सिर अपनी गोद में लिया और उसके कान में कुछ फुसफुसाया। एक अजीब सी शांति छा गई। मानो समय थम गया हो। वह दिन बहुत गर्म और उमस भरा था और समुद्र की हवा भी थम सी गई थी। दूर कहीं एक बकरी मिमियाई और थोड़ी ही देर में उसका मेमना भी मिमिया उठा। मेरी पीठ पसीने से भीगी हुई

[illegible]

□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□, □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□, □□□□ □□□□ □□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□ □□, □□□□ □□□□□

बायां हाथ उसकी कमर पर मजबूती से टिका था, और उसका काला, बदसूरत चेहरा अंगदा को घूर रहा था। अंगदा के पास कोई विकल्प नहीं था। सम्मान के कारण उसे अपनी तलवार नीचे रखनी पड़ी और गदा से लड़ना पड़ा। जैसे ही उसने गदा उठाई, भीड़ ने एक स्वर में नारा लगाया, “वानरों का नाश हो। बंदर-मानव का नाश हो। हाय, हाय वानर।”
खेल का रुख पूरी तरह बदल गया। अथिकाया तलवार चलाने में अनाड़ी था। उसका भारी शरीर अंगदा की तरह फुर्तीला और तेज़ नहीं हो सकता था। लेकिन भारी गदा चलाने में उसका भारी वज़न फ़ायदेमंद साबित हुआ। अंगदा अभी भी फुर्तीला और सलीकेदार था और अथिकाया पर वार करने में ज़्यादा कामयाब रहा। लेकिन अथिकाया के वार इतने शक्तिशाली और सटीक थे कि जितने वार उसके वार से लगे, उतने ही ज़ख्मी भी हुए। अंगदा की शैली थी वार करना और फिर दूर हट जाना, अपने भारी-भरकम प्रतिद्वंद्वी की पहुँच से दूर। तलवारबाज़ी में तो यह ठीक था। लेकिन गदा से वार करते समय, जब तक वार ज़ोरदार और सटीक न हो, उसका ज़्यादा असर नहीं होता था, खासकर अथिकाया जैसे ताकतवर और ताकतवर प्रतिद्वंद्वी पर, जो दर्शकों की गर्जना के बीच और भी मज़बूत होता जा रहा था।
मुझे अपने बेटों पर गर्व महसूस हुआ। ‘क्या एक आधे बंदर-आदमी को लगा कि वो अपने उस क्रूर बेटे के साथ आकर हमारे योद्धाओं को हरा सकता है?’ तभी मैंने खुद को संभाला। मुझे डर था कि अगर अथिकया जीत गया तो क्या होगा। मैं बाली का मित्र बना रहना चाहता था। वो एक अच्छा मित्र था, लेकिन अच्छे मित्र भी कभी-कभी बदले जा सकते हैं। बाली एक रणनीतिक सहयोगी था, जिसने ऊपरी गंगा के मैदानी इलाकों में रहने वाले बर्बर देवों की सेना को दूर रखा था। ऐसे सहयोगी कभी भी बदले नहीं जा सकते। नाजायज बेटों को तो आसानी से हटाया जा सकता है। लेकिन उस दासी के इस विशाल, मूर्ख बेटे में मेरा खून था, और जिस तरह से वो चल रहा था, वो बाली को मेरा सबसे बड़ा दुश्मन बना सकता था। अंगदा ज़मीन पर गिर पड़ा। उसकी दोनों भुजाएँ बुरी तरह टूटकर मुड़ गई थीं। अथिकय के शरीर से खून बह रहा था और उसके बाएँ पैर के नीचे खून का एक बड़ा धब्बा बन गया था। उसने अपना दायाँ पैर कराहते हुए अंगदा की छाती पर कसकर दबा रखा था। बाली अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ, उसकी मुट्ठी कसकर भींची हुई थी और चेहरा तनावग्रस्त था। उसकी रानी का चेहरा भय से जम गया था। भीड़ उन्माद

में चिल्ला रही थी, “उसे मार डालो! उसे मार डालो! बंदर के बेटे को मार डालो!” यह गर्जना हर जगह सुनाई दे रही थी।
अथिकाय ने अपना गदा सिर के ऊपर उठाकर चाप बनाया, गदा लगभग उसकी पीठ को छू रही थी। वह उसे पूरी ताकत से घुमाकर अंगद के सिर पर प्रहार करता। और बलि का पुत्र पल भर में चूर-चूर हो जाता।
“रुद्रक!” मैंने पूरी ताकत से चिल्लाया। मुझे यकीन नहीं था कि उसने सुना या नहीं। ऐसा लगा जैसे अनंत काल बीत गया हो, लेकिन फिर अथिकाय ने अपना चेहरा मेरी ओर घुमाया। ‘उन आँखों में मैंने क्या देखा – घृणा, आश्चर्य, दया या शुद्ध तिरस्कार?’ वह एक पल के लिए मुझे देखता रहा। फिर सन्नाटा छा गया। वह दृश्य मेरे मन में जम गया है। तभी रुद्रक की नज़र मुझ पर पड़ी और वह समझ गया। उसने बस हाथ का एक इशारा किया और बीस से ज़्यादा पहरेदार केंद्र की ओर दौड़ पड़े। अथिकाय वहाँ खड़ा रहा, मेरी आत्मा में झाँक रहा था, उस बेटे को जिसे मैं कभी नहीं चाहता था, जबकि बीस आदमी उसे चारों ओर से लाठियों और डंडों से पीट रहे थे। लेकिन वह वहाँ एक विशाल बरगद के पेड़ की तरह खड़ा रहा, मार की तेज़ बारिश से बेखबर, मानो मृत्यु नृत्य कर रहा हो। अंगदा उसके विशाल पैर के नीचे दबा पड़ा था। भीड़ से एक काली आकृति निकली और पहरेदारों से पहले लगभग अथिकाय तक पहुँच गई। लेकिन रुद्रक ने अपनी तलवार के मूठ से ज़ोरदार प्रहार किया और वह आकृति गिर पड़ी। बाद में मुझे पता चला कि वह मूर्ख भद्र था। दौड़ते हुए पहरेदारों ने उसे कुचल दिया, वह कुछ पल छटपटाता रहा और फिर शांत हो गया। मैंने मेघनाद और मारीच को रुद्रक को रोकने की कोशिश करते देखा। भीड़ इतनी सदमे में थी कि कोई प्रतिक्रिया नहीं दे पा रही थी। यह घोर अन्याय था और मुझे डर था कि जब भीड़ अपने सदमे से बाहर आएगी तो उसकी क्या प्रतिक्रिया होगी। मैंने प्रहस्त को पहरेदारों को निर्देश देते हुए सुना, उन्हें तुरंत निकासी के लिए तैयार किया जा रहा था। और मेरे लिए यह भयावह था कि मैंने अपने चाचा और अपने प्रिय पुत्र को अपने वफादार सेनापति और उसकी सेना से अपने नाजायज पुत्र को बचाने के लिए लड़ते देखा। यह एक बुरा सपना था। भीड़ पहरेदारों से भिड़ गई और कुछ जगहों पर आग की लपटें उठने लगीं। भगदड़ मच गई।
फिर मैंने बाली को केंद्र की ओर दौड़ते देखा। मारीच रुद्रक से भयंकर युद्ध कर रहा था और मेघनाद लगभग पहरेदारों को भेदकर आगे बढ़ ही गया था कि बाली ने अफरा-तफरी के बीच से अपना रास्ता बनाते हुए आगे बढ़ा। मेघनाद बाली के

विरुद्ध मुड़ा और मेरे हाथ अनायास ही मेरी तलवार की ओर चले गए। लेकिन इससे पहले कि मैं कुछ कर पाता, बाली ने अपने हाथ के एक ही कुशल इशारे से मेघनाद की कलाई पकड़ ली और उसकी तलवार छीन ली। फिर, एक जोरदार लात मारकर उसने रुद्रक को ज़मीन पर गिरा दिया। उसने मेघनाद को धक्का दिया और मेरा बेटा कुछ कदम लड़खड़ाकर अपनी पीठ के बल गिर पड़ा। अब मेरे बहादुर चाचा की बारी थी। बाली ने मारीच को उठाया और उसे लगभग दस फीट दूर फेंक दिया। बाकी पहरेदार हिलने से भी डर रहे थे और रास्ता दे दिया। अथिकया हांफते हुए अंगदा के ऊपर गिर पड़ा था। बाली ने अथिकया के भारी शरीर को आसानी से अपने हाथों में उठा लिया। 'वह उसे ज़मीन पर पटकने वाला है। उसकी हिम्मत कैसे हुई मेरे बेटे को मारने की?' मैंने सोचा।
भीड़ वानरों का खून बहाने के लिए उतावली थी और कई लोग सुरक्षा घेरा तोड़कर केंद्र की ओर दौड़ पड़े। मुझे उम्मीद थी कि बाली अथिकया को नीचे गिराकर उसके बेटे की देखभाल करने से पहले उसे मार डालेगा। लेकिन, सबको चौंकाते हुए, बाली मेरे बेटे को अपनी बाहों में लेकर वापस आया – मेरा खून बहता हुआ, बुरी तरह घायल, कटा-फटा, बदसूरत, काला बेटा। और भीड़ शांत हो गई। जो लोग लड़ने के लिए बीच में दौड़े थे, वे वहीं रुक गए और देखने लगे। तारा सिसक रही थी और मेरी पत्नी भी उसके साथ रोने लगी। लेकिन तभी मेरी आँखों में भी आँसू आ गए। मैं उन्हें छुपाना चाहता था, इसलिए मैं पीछे मुड़ा और अपने सैनिकों को निर्देश देने लगा। लेकिन किसी ने मेरी बात नहीं सुनी। और मेरा मित्र, वह महान योद्धा, मेरे जीवन में देखा गया सबसे सुंदर पुरुष, बाली, जिसे वास्तव में महान कहा जा सकता है, मेरे गिरे हुए बेटे को अपनी बाहों में लेकर मेरे पास आया। उसका बेटा वहाँ मरा पड़ा था या जीवित, यह हम नहीं जानते थे। लेकिन उस पुरुष में इतनी महानता थी कि वह न्यायप्रिय था। मैंने जो किया था वह नीच था और मुझे शर्म आ रही थी। मैं, असुरों का शक्तिशाली राजा, उस दिन अपने हजारों प्रजाजनों के सामने रोया। मैंने दुनिया से अपना चेहरा छुपा लिया और रोने लगी। मैं अपने बेटे अथिकाया के लिए रोई, जो लगभग मर ही गया था; अपने दोस्त के लिए, उसकी ईमानदारी और सर्वोच्च बलिदान के लिए; अपने बेटे मेघनादा के लिए; और अपने चाचा के लिए, जिन्होंने सच्चाई के लिए मेरे और बाली के खिलाफ खड़े होने का साहस दिखाया। और मैं अपने नीच स्वभाव के लिए भी रोई।
वे अथिकाया को दरबारी चिकित्सक के पास ले गए, और उस मूर्ख भद्रा को भी।

मेरे दोस्त के बेटे को उठाकर ले जाया गया, जो अथिकाया के वार से ज़्यादा शर्म और डर से अधमरा हो गया था। उनके घाव तो भर जाएँगे, लेकिन हमारे दिलों के घावों का क्या? क्या वे कभी भर पाएँगे? क्या एक दोस्त द्वारा दूसरे दोस्त के प्रति किए गए ऐसे उदार कार्य के बाद दोस्ती टिक पाएगी? दोस्ती विश्वासघात को तो झेल सकती है, लेकिन क्या वह इतनी असाधारण दयालुता और उदारता को झेल पाएगी?
भीड़ तितर-बितर हो गई, लेकिन शोरगुल के बीच मैंने कुछ ऐसा सुना जो आने वाले खतरे का संकेत था। उस क्रूर अंगद ने अपने पिता के पास से गुजरते हुए फुफकारा, “कमजोर! मैं तुमसे बदला लूँगा…” और इसी तरह की बातें करता रहा, जबकि बाली दूर कहीं घूरता रहा, मानो उसने कुछ सुना ही न हो। मैंने रानी तारा को अपने पति को घृणा भरी निगाहों से देखते देखा और मुझे अपने प्रिय मित्र के लिए डर लगा। उस क्षण, मुझे डर लगा कि जिस दुनिया को मैं जानता था, वह बदल चुकी है। हमारी पीढ़ी और उसके मूल्य अंगदों की एक नई, बेईमान, अहंकारी, युवा दुनिया को रास्ता दे रहे थे। मुझे डर था कि आने वाले दिनों में हम जैसे लोग मिट जाएँगे। हमारे मूल्य खोते जा रहे थे और मेरे जैसे बूढ़े लोगों के लिए जीवन बहुत तेज़ और बेईमान होता जा रहा था। मैं बहुत जल्दी बूढ़ा हो रहा था। धीरे से मैंने अपनी पत्नी का हाथ पकड़ा और अपने रथ की ओर चल पड़ा। उस दिन मेरी पत्नी मुझे मेरी ही दुनिया में अकेला छोड़कर चली गई और मैं अपने ही अंधेरे में एक कीड़े की तरह सिमट गया। अगले दिन सुबह-सुबह बाली और तारा अपने घायल बेटे को लेकर चले गए। और मैंने अपने दोस्त को फिर कभी नहीं देखा।

36. एक देश अपने नायक को धन्यवाद देता है

भद्र
भोर होने ही वाली थी जब वे उसे पट्टियों से लिपटे और चोटों से ग्रस्त हालत में घर लाए। आते ही वह धीरे से कराह उठा। बिना कुछ कहे, उन्होंने अथिकाया को धीरे से नीचे लिटाया और बिना कुछ कहे चले गए।
अथिकाया मेरी गोद में पला-बढ़ा। तीन साल की उम्र से ही वह मुझे पिता कहकर पुकारता था। शुरू में तो मैं बहुत घबरा गया था। वह एक राजकुमार था, भले ही नाजायज संतान, और मैं जो था सो था। मैंने उस पर चिल्लाया, उससे विनती की और यहाँ तक कि रोया भी, ताकि वह मुझे पिता न कहे, लेकिन वह नहीं माना। और मेरे दिल में, मैं चाहता था कि वह मुझे ही अपना पिता कहे। अब वह मेरा बेटा था। कोई राजा उस पर अपना दावा नहीं कर सकता था। उसने मुझे धरती से जोड़े रखा। हमने साथ मिलकर त्रिकोटा शहर और उसके आसपास के जंगलों, बैकवाटर और पहाड़ियों की सैर की। मैंने उसे हथियार चलाना सिखाया। वह मेरी साधारण सी कुटिया में एक राजकुमार था। और वह मेरा गौरव, मेरा भविष्य था।
मुझे बहुत दुख होता था जब उसका उपहास किया जाता था; जब उसे असली राजकुमार, उस घमंडी, सर्वज्ञानी मेघनाद के साथ कुत्ते की तरह घसीटा जाता था। लेकिन उस लड़के के मन में अपने सौतेले भाई के लिए गहरा स्नेह था। मुझे इस बात से ईर्ष्या होती थी और उस प्यार से भी जो वह मेरी पत्नी, माला, अपनी माँ के प्रति दिखाता था। मैंने उसे महल जाने से रोकने की बहुत कोशिश की, लेकिन राजा या उनके बेटे की तरफ से अक्सर बुलावा आता रहता था। उन्हें इधर-उधर भाग-दौड़ करने और छोटे-मोटे काम करने के लिए किसी की ज़रूरत होती थी। राजा और राजकुमार के प्रति उसकी अटूट निष्ठा थी। वह बहुत ही सीधा-सादा और भोला था। शरीर से तो वह बलवान था, लेकिन मन से कमज़ोर। वह लोगों की मदद करने में कोई कसर नहीं छोड़ता था। लेकिन समाज के निचले तबके के अन्य अच्छे स्वभाव वाले लोगों की तरह, उसकी अच्छाई को भोलापन समझ लिया जाता था।
सब लोग उसे मूर्ख समझते थे। लेकिन मुझे पूरा यकीन था कि उस कोमल और दयालु चेहरे के पीछे चरित्र की एक अपार दृढ़ता छिपी हुई थी। कभी-कभी मुझे उस छिपी हुई दृढ़ता की झलक दिखती थी, लेकिन ज्यादातर समय अथिकाया एक भोला-भाला, मासूम लड़का था, जिसका दुनिया के धूर्त लोगों ने फायदा उठाया। दया, साहस, नैतिकता, सिद्धांत, सहानुभूति, ये हमारे जैसे सामाजिक स्तर के लोगों के लिए खतरनाक मूल्य थे। काले रंग के नीचे सुनहरा दिल रखना असुरक्षित था। ये तो अमीरों, कुलीनों, उच्च जाति के लोगों, गोरे लोगों की विलासिताएं थीं,

जिनका वे लाभ होने पर उपयोग करते थे। मेरा हष्ट-पुष्ट, काला और बदसूरत बेटा इन सब चीजों के बिना भी रह सकता था। लेकिन थोड़ी सी चापलूसी, थोड़ी सी क्रूरता, जीवित रहने के लिए किसी भी मालिक की सेवा करने की तत्परता, और उग्र क्रोध को छिपाने और ताकतवर लोगों के सामने झुकने की क्षमता, हमारी दुनिया में जीवित रहने के लिए आवश्यक साधन थे। लेकिन मैं मूर्ख अथिकाया को इनमें से किसी भी बात के लिए कभी मना नहीं पाई।
उस लड़के का जीवन अब तक सुखमय रहा है। क्या आज की पीढ़ी हमारे कष्टों को समझती है? राजकुमार मेघनाद का जीवन भी सुखमय रहा है, जबकि उनके पिता ने मेरे जैसे लोगों के खून-पसीने से अपना राज्य खड़ा किया और आज जिस मुकाम पर हैं, वहाँ तक पहुँचने के लिए उन्होंने बहुत संघर्ष किया। शायद, जब हमने शुरुआत की थी, तब हम सभी के पास समान अवसर थे। कोई भी वह बन सकता था जो वह आज है। वह हम ही से अलग था। रावण में ऐसा क्या था जो मुझमें नहीं था? क्या यह उसका जन्मजात शासक होने का शांत आत्मविश्वास था? क्या यह महज़ भाग्य था, या इसलिए कि वह इतना निर्दयी और चतुर था? यदि निर्दयता ही कुंजी थी, तो रुद्रक में यह सबसे अधिक थी। यदि रणनीतिक और दूरगामी सोच ही उत्तर थी, तो प्रहस्त की बराबरी कोई नहीं कर सकता था। यदि वीरता थी, तो आसपास कई वीर असुर थे जो महान बन सकते थे। यदि करिश्मा सबसे महत्वपूर्ण कारक था, तो विद्युतजिह्व सफल क्यों नहीं हुआ? यदि चतुराई महत्वपूर्ण थी, तो माया सफल क्यों नहीं हुई?
मुझे लगता है कि यह सपने की विशालता और उसे साकार करने की दृढ़ इच्छाशक्ति थी। रावण ने बड़े सपने देखे और उन्हें पूरा करने के लिए निर्दयतापूर्वक प्रयास किया। उसने अपनी महत्वाकांक्षा को पूरा करने के लिए हर तरह के लोगों को अपने साथ काम पर लगाया। उसने कई लोगों को कुचल डाला। उसने मुझ जैसे मूर्खों को अपनी जलती हुई महत्वाकांक्षा के लिए लकड़ी की तरह इस्तेमाल किया। और इसलिए अब वह महल में रहता था और मैं एक झोपड़ी में। मैं रावण से घृणा करता था। रावण मेरे बेटे को बुरी तरह पीट सकता था; मेरे साथ कुत्ते जैसा व्यवहार कर सकता था; हमारी बदसूरत, काली, मैली, पसीने से तर, बदबूदार त्वचा को छूने से परहेज कर सकता था, और साथ ही पुरुषों की समानता के बारे में जोर-शोर से बातें कर सकता था; और खुद को देवों के अत्याचारों से असुरों का रक्षक बता सकता था, लेकिन मेरी बात याद रखना, हम जैसे विनम्र लोग तब भी जीवित रहेंगे जब सभी रंगों के राजा चले जाएंगे। रावण के अहंकार,

संरक्षणवादी रवैये और धन-दौलत के बावजूद, हम उससे अधिक समय तक जीवित रहेंगे। हम भले ही उसके जूते चाटें; उसके सामने धरती पर रेंगते हुए, जब भी उसकी परछाई धरती पर पड़े, उसे प्रणाम करो, लेकिन एक दिन उसका कबीला व्यर्थ ही उसके अहंकार भरे युद्धों में उलझकर लुप्त हो जाएगा। लेकिन हम बचेंगे और अस्तित्व की अंतिम लड़ाई जीतेंगे।
मेरा बेटा हिला और कराह उठा। मेरी कल्पना की उड़ान धराशायी हो गई। कठोर वास्तविकता मेरे सामने आ गई। मैं क्या था? एक मामूली, तुच्छ व्यक्ति जो किसी तरह गुज़ारा कर रहा था, पत्नी द्वारा धोखा दिया गया, उसके नाजायज बेटे का बोझ ढो रहा था, और एक स्वार्थी राजा के शासन में जी रहा था। एक गरीब, भूखा, अस्वस्थ और पिटा हुआ, काला, अछूत बदमाश। यही मेरा सार था। और मैंने राजाओं को चुनौती देने का सपना देखने की हिम्मत की? मैं खुद पर हँस पड़ा। बहुत गर्मी थी और मैं पसीने से तरबतर हो रहा था। धीरे-धीरे उठते हुए मेरे शरीर में दर्द हो रहा था। भूख से मेरा पेट दुख रहा था। मैंने खड़े होने की कोशिश की लेकिन मेरा सिर चकरा रहा था। मैंने दीवार का सहारा लिया और कुछ मिनट तक हांफते हुए वहीं खड़ा रहा। फिर मैं गिर पड़ा और बेसुध हो गया। जैसे ही मैंने अपने आंसू और गुस्से को पीसा, आत्मदया की लहर मुझ पर छा गई। मैं मुड़ा और रसोई की ओर रेंगने लगा। मुझे खुरदुरे फर्श पर छेद दिखाई दिए। हर जगह धूल थी, जो मैंने पहले कभी नहीं देखी थी। मैं फर्श के इतना करीब था कि मुझे उसकी गंध आ रही थी। 'वह औरत घर साफ क्यों नहीं रख सकती?' मैं अपनी पत्नी पर गुस्सा था। 'उसे वापस आने दो, मैं उसे घर की साफ-सफाई सिखा दूंगा।' जैसे ही मैं रसोई में दाखिल हुई, एक बड़ी, काली मकड़ी तेज़ी से भाग गई। मैंने कुछ पल उसे घूरा, लेकिन मुझे एहसास हुआ कि देखने से मकड़ी नहीं मरती। मैं रेंगते हुए चूल्हे तक गई और जैसे-तैसे ज़मीन पर पैर फैलाकर बैठ गई। मैंने एक-एक करके बर्तनों के ढक्कन खोले। खाली। कुछ नहीं। भूख से मेरा पेट गुड़गुड़ा रहा था। एक कोने में रस्सी से एक बर्तन लटका हुआ था। शायद उसमें दही हो। माला ने उसे चूहों से बचाने के लिए ऊँचा रखा होगा। या शायद गुड़ या कोई और स्वादिष्ट नमकीन। मैं उस तक कैसे पहुँचूँ? मैं खड़ी नहीं हो सकती थी। फिर मुझे हंसी आ गई। यहाँ नमकीन? एक अछूत के घर में? रावण का कुछ घमंड मुझ पर भी आ गया था। मैं कुछ ज़्यादा ही सपने देख रही थी।
‘माला कहाँ चली गई?’ मुझे एक रथ के आने और घर के सामने रुकने की आवाज़ सुनाई दी। क्या राजा अब उसे रथ में घर भेज रहे थे? मैं रेंगते हुए सामने के

दरवाजे की ओर बढ़ी। अंदर फुसफुसाहट सुनाई दी और फिर आधे बंद दरवाजे पर हल्की सी दस्तक हुई। मैं चुपचाप इंतज़ार करती रही। एक सजे-धजे हाथ ने चरमराते दरवाजे को धक्का देकर खोला, जिससे दीवारों और फर्श पर सूरज की रोशनी फैल गई। मेरा बेटा फिर से कराह उठा। एक धूल भरी हवा अंदर आई, कोने में रखे पुराने कपड़ों को हिलाया और सामने वाली खिड़की से बाहर चली गई। मैंने तेज धूप में आँखें सिकोड़ीं और राजकुमार मेघनाद को अंदर आते देखा। उनके पीछे मारीचा की लंबी, चुलबुली आकृति थी। एक अछूत की साधारण सी झोपड़ी में दो राजकुमार! मुझे विश्वास नहीं हो रहा था। अनजाने में ही मैंने उठने की कोशिश की, लेकिन फिर गिर पड़ी।
मुस्कुराते हुए, मारीचा आगे बढ़ा और मुझे धीरे से उठाकर उस अकेली, टूटी हुई कुर्सी पर बिठा दिया। मैंने विरोध किया और खड़े होने की कोशिश की, लेकिन उसने मुझे धीरे से और दृढ़ता से वापस कुर्सी पर बिठा दिया। ‘हे भगवान, मैं इन लोगों का आतिथ्य सत्कार कैसे करूँ?’ मेरी झोपड़ी में एक राजकुमार। मुझे गुस्सा आ रहा था कि उन्होंने मेरी गरीबी, मेरी टूटी हुई कुर्सी, मेरे फटे- पुराने कपड़े, मेरी फटी हुई चादरें, मेरी दरार वाली दीवारें और फर्श, और मेरा कमजोर शरीर देख लिया। यह मेरा घर था और मुझे कुछ एकांत चाहिए था ताकि मैं अपनी असफलता को इस क्रूर दुनिया की निगाहों से छिपा सकूँ जिस पर इन दो जैसे धनी राजकुमारों का राज है। फिर मुझे डर लगने लगा। क्या वे मेरे बेटे को ले जाने आए थे? क्या राजा ने आखिरकार फैसला कर लिया था कि अथिकाया में उसे एक बहादुर बेटा मिल गया है? क्या मेरी पत्नी ने आखिरकार मुझे छोड़ दिया था? क्या वह राजा के साथ उसकी रानी बनकर रह रही थी और मुझसे उसका बेटा छीन रही थी? या ये लोग हमारी बदहाली पर मजे लेने आए थे? मैं वहाँ बैठा रहा, मेरे दिमाग में सौ सवाल जंगली बिल्लियों की तरह मंथन कर रहे थे। मैं उल्लू की तरह पलकें झपकाता रहा, अवाक।
“भद्रा, कैसी हो?” मारीचा की आवाज़ में ज़रा भी नरमी नहीं थी। ‘धन्यवाद महोदय, आपके सैनिकों से मिली मार के लिए,’ मैं चीखना चाहती थी। लेकिन मैं चुपचाप वहीं बैठी रही। मेघनादा अथिकाया के पास पलंग पर बैठ गया और उसके ज़ख्मों की जाँच करने लगा। वह धीरे से बोला और अथिकाया ने ऐसे जवाब दिया जैसे कोई खोया हुआ पिल्ला आखिरकार अपने मालिक को पा लेता है। घृणा से मैंने सोचा, ‘अगर अथिकाया की पूंछ होती, तो वो ज़रूर हिल रही होती।’

“मुझे पता है, भद्रा, हमने तुम्हारे साथ अन्याय किया है।” मारीच ने अपना हाथ मेरे कंधे पर रखा हुआ था और इतना करीब था कि मैं उसके इत्र की खुशबू महसूस कर सकती थी। मैंने अपनी नज़रें हटा लीं – इतनी दया मुझे बर्दाश्त नहीं हो रही थी। आखिर मैं तो एक अछूत, धरती की नीची औलाद थी। मैंने गौर से देखा कि क्या रावण की तरह मारीच ने भी मेरी काली त्वचा को छूने के बाद अपने हाथ पोंछे थे। नहीं, उसने नहीं पोंछे थे। मैं निराश हो गई। शायद वह अपने महल पहुँचकर स्नान कर लेगा।
“हमारे राजा के बारे में बुरा मत सोचो, भद्रा।” मैंने उसकी ओर पलटकर देखा। भला मुझे क्या सोचना चाहिए था और इससे क्या फर्क पड़ता था? “यह वही रावण है। उसकी मूंछें सफेद हो गई हैं, लेकिन भद्रा, वह वही जोशीला लड़का है जिसके बड़े-बड़े सपने हैं और उन्हें पूरा करने का दृढ़ संकल्प है। मुझे पता है, तुम जैसे लोगों के साथ बुरा हुआ है। भले ही ब्राह्मणों को निकाल दिया गया हो, ब्राह्मणवाद का अभिशाप धीरे-धीरे हमारे समाज में फैल रहा है। यह मानना कितना आसान है कि कोई दूसरों से श्रेष्ठ है। मुझे पता है कि कुछ लोग गरीबों को काला, मूल असुर, अपवित्र समझते हैं और तुम्हें छूने से भी कतराते हैं। वे सोचते हैं कि इस तरह की गरीब बस्तियां हमारे सुंदर शहरों को अपवित्र कर देंगी। मुझे पता है, कुछ लोग तुम जैसे गरीबों को राजधानी से, या संभव हो तो देश से ही निकाल देना चाहते हैं। लेकिन मेरा विश्वास करो, भद्रा, रावण की करुणा ने ही ऐसा होने से रोका है। वह गरीबों के लिए सहानुभूति रखता है। सच है, सामाजिक समानता प्राप्त करने में हम महाबली के आदर्शों से बहुत दूर हैं। यह अभी भी एक सपना है। लेकिन हम इसके लिए प्रयासरत हैं। और उसने हमें यह संदेश देकर भेजा है कि वह अपने विचारों से सभी जाति-वर्णों को मिटा देगा। राज्य का कोई अस्तित्व नहीं रहेगा।” अब वह अपनी प्रजा के बीच भेदभाव नहीं करेगा। यह हमारा दृढ़ संकल्प है, और एक मंत्री के रूप में, मैं इसे महामहिम की ओर से करता हूँ।
क्या भाषण था! पर मुझ पर कोई असर नहीं हुआ। बूढ़े ने मुझे गले लगाया और उसकी आँखों में आँसू दिखाई दिए। शायद मुझे गले लगाकर, छूकर और मुझसे ऊँची- ऊँची बातें करके उसे अच्छा लग रहा था। उसे अपनी महानता का आनंद लेने दो। शायद समय ने मुझे कठोर बना दिया था। मुझे अथिकाया के ज़ोर-ज़ोर से रोने की आवाज़ सुनाई दी। बेचारा लड़का भावुक हो गया था। वह खुशकिस्मत था कि अब भी ऐसी बड़ी-बड़ी बातों पर विश्वास करता था। उसे अभी तक वह बीमारी नहीं लगी थी

जिससे मेरी पीढ़ी के लोग पीड़ित थे - लाइलाज निराशावाद। लेकिन मेरी बदबूदार झोपड़ी में खड़े लोग शक्तिशाली और महत्वपूर्ण थे। इसलिए मैंने दिखावा जारी रखा। मैंने गहरी कृतज्ञता और आभार व्यक्त किया। उसके चेहरे के भाव से मैं समझ गया कि बूढ़ा मूर्ख बहकावे में आ गया था। बेचारा मूर्ख, उसे आसानी से बेवकूफ बनाया जा सकता था। फिर मेरा दिल उस बूढ़े पर तरस खाने लगा। अगर हमारे मंत्रियों के बीच कोई सचमुच ईमानदार था, तो वह यही कठोर, भूरा, सनकी मारीचा था। वह अपनी कही बातों पर विश्वास करता था और शायद पूरी ईमानदारी से उन्हें लागू करने की कोशिश भी करता था। उसका राजा शायद यश के लिए ऐसा करता। लेकिन प्रहस्त, जंबुमाली और अन्य जैसे रूढ़िवादी पुराने नेता ऐसे बदलावों को स्वीकार करेंगे या नहीं, यह देखना बाकी था। और अगर वे सभी सहमत भी हो जाते, तो असुरों के बीच भेस बदले ब्राह्मण विभीषण यह सुनिश्चित कर देता कि ऐसे प्रयास विफल हो जाएं। विभीषण एक कट्टर और असहिष्णु था। फिर भी, मुझे पूरा विश्वास था कि एक दिन वह संपूर्ण असुर सभ्यता को ब्राह्मणों और देवताओं को बेच देगा।
“सद्भावना के प्रतीक के रूप में, महाराज ने हमें यह छोटा सा उपहार आपको भेंट करने के लिए कहा है। यह आपके द्वारा हमारे देश और जाति के गौरव के लिए किए गए सभी कार्यों और सहन किए गए कष्टों का प्रतिफल नहीं है, लेकिन कृपया एक कृतज्ञ राजा की ओर से यह उपहार स्वीकार करें।” यह कहते हुए, मारीचा ने सिक्कों से भरा एक बड़ा सा कपड़े का बंडल मेरी गोद में रख दिया। उनके चेहरे पर संतोष था। वे मेरी हार्दिक कृतज्ञता की प्रतीक्षा कर रहे थे, लेकिन मैंने कुछ नहीं कहा। मैं बस उस बंडल को देखता रहा।
मेघनादा ने अथिकाया से विदा ली और मैंने अपने बेटे को राजकुमार से कहते सुना, “जब आपने मुझे यह करने को कहा, तो मैं सब कुछ भूल गया। महाराज, मैं आपके लिए खुशी-खुशी मर जाऊंगा, मैं आपके लिए मर जाऊंगा।” और उसने मेघनादा के हाथों को चूमा। मेरे अंदर कुछ टूट गया। ‘क्या यह मूर्ख राजकुमार के लिए मर जाएगा?’ यही हमारा भाग्य था – परिश्रम करना, जीना, संघर्ष करना और फिर ऊंचे और शक्तिशाली लोगों के लिए मरना। मैंने एक बार इसी राजकुमार के पिता के लिए ऐसा किया था, और शायद मुझे फिर से ऐसा करने के लिए मजबूर होना पड़ेगा। हे शिव! क्या कोई रास्ता नहीं था? और अब मेरा बेटा कहता है कि वह अपने माता-पिता और खुद को भूल गया और अपने स्वामी के लिए मर जाता। क्या ये लोग घमंड करते थे कि वे हम जैसे कीड़ों को मरने का आदेश दे सकते हैं? क्या

वे सोचते थे कि वे हम जैसे कुछ काले, महत्वहीन, शापित, तुच्छ लोगों को अपने पैरों तले कुचलकर अपनी महिमा, धन और भाग्य की ओर बढ़ सकते हैं?
मैं खड़ा हो गया। मेरा सिर चकरा रहा था, लेकिन मेरे भीतर दबा हुआ गुस्सा मेरे कमजोर और घायल शरीर को नई ताकत दे रहा था। “निकल जाओ! निकल जाओ कमीनों!” मैं चिल्लाया। मैंने सिक्कों का बंडल फेंका और वह खुले दरवाजे से मिसाइल की तरह बाहर निकल गया। कपड़ा फट गया और उसके सिक्के गंदी सड़क और नाली पर बिखर गए। मैंने देखा कि वे चांदी के सिक्के थे। मैं यह दावा भी नहीं कर सकता था कि मैंने अपने लोगों के सम्मान और प्रतिष्ठा के लिए सोने के सिक्के फेंक दिए। अगर वे तांबे के सिक्के होते, तो यह मेरे इस विश्वास को सही ठहराता कि राजकुमार और रईस कंजूस और मतलबी होते हैं और मुझे उनके उपहारों की कोई परवाह नहीं होती।
लेकिन वे तो साधारण चांदी के सिक्के थे। उनसे न तो मैं अमीर बन सकता था और न ही वे इतने छोटे थे कि मेरे गहरे पूर्वाग्रहों को संतुष्ट कर सकें। बच्चे और भिखारी वहाँ जमा थे, लेकिन चमकते सिक्कों को छूने की हिम्मत नहीं कर रहे थे। राजकुमार और एक मंत्री की उपस्थिति, और शोर मचाते हुए बूढ़े भद्रा का शोर-शराबा इतना आकर्षक था कि चांदी के सिक्कों से भी ध्यान भटकना असंभव था।
मैं हद से ज़्यादा बोल चुका था, इसलिए मैंने अपने मन की बात कहने का फैसला किया। “तुम्हें लगता है कि मेरी कुटिया में आकर तुम मुझ पर कोई बड़ा एहसान कर रहे हो? तुमने मुझे और मेरे बेटे को लगभग मार ही डाला था। तुम्हारे सिक्के किसे चाहिए? अपने पास ही रखो। तुम कहते हो कि राजा दयालु है,” मैंने गुस्से में कहा। “क्या उसे पता है कि किसी संक्रामक बीमारी से पीड़ित व्यक्ति की तरह व्यवहार किए जाने का क्या मतलब होता है? क्या उसे भूख का दर्द पता है? असफलता का दर्द? निराशा की पीड़ा? बेघर होने की वेदना? वह नहीं चाहता कि गरीब, काले असुरों को अछूतों की तरह माना जाए, वह चाहता है कि हम शहरों में रहें। मैं इसका कारण भी जानता हूँ। तुम कुलीन, धनी, पाखंडी ब्राह्मण हमारे अपवित्र होने, हमारी काली चमड़ी, हमारी गंध के खिलाफ़ बड़बड़ाते हो… लेकिन तुम्हें हमारी ज़रूरत हमसे ज़्यादा है। अगर हमें देश निकाला दे दिया गया तो तुम्हारा कूड़ा कौन उठाएगा? तुम्हारी गलियाँ कौन साफ करेगा, तुम्हारी गाड़ियाँ कौन खींचेगा, और तुम्हारे छोटे-मोटे युद्धों में तुम्हारे लिए कौन जान देगा?”

मुझे अपने गले पर ठंडी लोहे की छुपी सी महसूस हुई। मैंने राजकुमार मेघनाद की चमकती आँखों में देखा और डर गई। मेरा क्रोध छंट गया और मैं धड़ाम से ज़मीन पर गिर पड़ी। मैंने जो कहा था, उसका भयानक एहसास मुझ पर ज़बरदस्त प्रहार कर रहा था। मेरे होंठ काँप रहे थे और डर और बेबसी के आँसू मेरे जलते गालों पर बह रहे थे। सब खत्म हो गया था। तलवार और ज़ोर से दबाई गई और मुझे खून की हल्की गर्म बूँदें महसूस हुईं। यकीनन, मैं अपनी गुस्ताखी की सज़ा भुगतूँगी।
“उसे छोड़ दो, मेघनादा। मुझे लगता है वो नशे में है,” मैंने मारीचा को कहते सुना। धीरे-धीरे तलवार का दबाव कम हुआ और मेघनादा ने उसे ले लिया और अपनी उंगलियों से उसकी धार से मेरा खून पोंछकर तलवार को म्यान में वापस रख दिया, उसकी निगाहें मेरे चेहरे से हटी ही नहीं थीं। मैं कांप उठा और कुर्सी पर गिर पड़ा।
“भद्रा, अब हम चलते हैं। अपना ध्यान रखना और ज़्यादा मत पीना। नहीं तो तुम्हारा सिर कट सकता है।” मारीचा ने मुस्कुराते हुए कहा, लेकिन मैंने देखा कि उसकी आँखों में मुस्कान नहीं थी। मुझे उसकी आँखों में तिरस्कार दिखाई दिया। मेघनादा ने जाकर रोती हुई अथिकाया को गले लगा लिया। फिर राजकुमार और मंत्री धूप में बाहर चले गए। मैंने घोड़ों को चाबुक मारने की आवाज़ सुनी और रथ संकरी, ऊबड़-खाबड़ सड़क से गुज़र गया। मैं वहीं लेटा रहा, मेरा दिमाग सुन्न था।
तभी मुझे आदमियों के लड़ने की आवाज़ सुनाई दी। पहले तो समझ में नहीं आया। फिर मुझे एहसास हुआ कि वे उन चांदी के सिक्कों के लिए लड़ रहे थे जो मैंने बाहर फेंके थे। मेरे सिक्के। मैंने उठने की कोशिश की, संतुलन खो बैठा और मुंह के बल गिर पड़ा। फिर मैं रेंगते हुए बाहर निकला और अपने सिक्के लेने के लिए लड़ाई में कूद पड़ा। उनमें से ज़्यादातर गायब हो चुके थे। मैंने लड़ते-झगड़ते हुए आगे बढ़ने का रास्ता बनाया। मैंने दो बच्चों को लात मारी और एक बूढ़े भिखारी को घूंसा मारा, और बदले में मुझे भी वैसा ही मिला, लेकिन अब मुझे दर्द की कोई परवाह नहीं थी। ये मेरा पैसा था, मेरी मेहनत की कमाई। आखिरकार, मैं नाली से मुट्ठी भर गंदे सिक्के उठाने में कामयाब हो गया। हालांकि कई लोगों ने उन्हें छीनने की कोशिश की, लेकिन मैंने लातों और घूंसे के बावजूद अपने सिक्कों को मजबूती से थामे रखा। आखिरकार, भिखारी और मेरे पड़ोसी हार मानकर चले गए, मुझे और एक-दूसरे को कोसते हुए। मैं धीरे-

धीरे नाली से उठा और सिक्के गिने। इक्कीस सिक्के थे। शायद पहले जितने सिक्के थे, उनका सौवां हिस्सा। मैंने सिक्कों को काफी देर तक देखा। मैंने जीवन में मिले मौकों को पहले भी कई बार गंवाया था। शायद मैं इसी लायक था। खैर, कोने वाला शराबखाना अब खुला होगा। वहाँ कद्दू जैसे बड़े स्तनों वाली वेश्याएँ होंगी और खूब सारी देसी शराब होगी। आह, बस यही तो मुझे चाहिए था। सूरज डूबते ही मैं लड़खड़ाते हुए उसकी ओर चल पड़ा, मेरे पास वो सिक्के थे जो मैंने संघर्ष करके कमाए थे। एक अच्छी शराब और थोड़ी वेश्यावृत्ति – आखिर ज़िंदगी का मतलब यही तो होता है।

37 बेटी का विवाह
रावण
मुझे परेशान करने वाली खबरें मिल रही थीं। मैं अपनी पेंटिंग पर ध्यान केंद्रित करना चाहती थी, लेकिन किसी तरह मेरा ध्यान नहीं लग रहा था। रंग और शेड्स वैसे नहीं उभर रहे थे जैसा मैं चाहती थी। खबर परेशान करने वाली थी और मैं सोच रही थी कि मैं इसे किसके साथ साझा करूँ? लेकिन यह एक बहुत बड़ा राज़ था। मारीचा? नहीं, वह भी नहीं। वह उस रिश्ते को लेकर बिल्कुल भी सहानुभूति नहीं रखता था और शायद मेरी बातों और खुद पर तरस खाने को सुनने को तैयार भी नहीं होता।
मैं मन और शरीर दोनों से बूढ़ा महसूस कर रहा था। मैंने उसे कई साल पहले एक बार देखा था। तब वह सोलह या सत्रह साल की रही होगी। यह बात सिर्फ मारीचा को पता थी। वह एक खतरनाक मिशन था और मेरे बेटे के स्नातक समारोह के तुरंत बाद हुआ था। मैंने अथिकाया के साथ जो व्यवहार किया था, उससे मेरा दिल छलनी हो गया था और मैं पश्चाताप में डूबा हुआ था, तभी मारीचा आया और उसने मुझे इस सदमे से बाहर निकाला। वह कठोर और स्पष्टवादी था और उसने कहा कि मुझे दुखी होने का कोई अधिकार नहीं है। आखिर, मैंने ही तो अपने पहले बच्चे को बेरहमी से त्याग दिया था।
मैं क्रोधित हो गया और उसे याद दिलाया कि यह उसके बुद्धिमान मंत्रिपरिषद ने किया था। उसने पलटकर कहा कि मैंने उसके बाद कुछ नहीं किया। यह सुनकर मैं एकदम स्तब्ध रह गया। मैंने उसे घमंड से फटकारा और अपने खोल में सिमट गया। मैंने अपनी पत्नी पर चिल्लाया और मेघनादा को कमरे से बाहर निकाल दिया। आधी रात को मैं पसीने से तरबतर होकर जाग गया। मैंने एक भूत देखा था। अगर किसी ने कहा होता कि असुर सम्राट के महल में भूत है, तो मैं हँस पड़ता। तब तक भूत बचपन की कहानियों में एक मूर्खतापूर्ण मुस्कान के साथ छिपे रहने वाली

चीज़ थे। लेकिन उस रात मैंने एक भूत को स्पष्ट रूप से देखा। वह एक स्त्री थी जिसके चेहरे पर घूंघट था। वह खिड़की पर खड़ी मुझे घूर रही थी, जो जानी- पहचानी लग रही थी। मैं हिल भी नहीं पा रहा था। मुझे अपने ही डर की गंध आ रही थी। चेहरा धीरे-धीरे स्पष्ट होता गया और मैं मंदोदरी को छूकर जगाना चाहता था। लेकिन मेरे हाथ हिल नहीं रहे थे। चेहरा हर मिनट और स्पष्ट होता गया और मैं अंतिम रहस्योद्घाटन के लिए भय और प्रत्याशा के साथ प्रतीक्षा कर रहा था। बगीचे में एक उल्लू की आवाज गूंजी, जिसने घने सन्नाटे को चीर दिया। और हवा के एक झोंके के साथ, पर्दा हट गया। वह वेदवती थी!
मेरा गला सूख गया। मेरे दिल में दबी सारी भावनाएँ उमड़ पड़ीं और मेरे गले में अटक गईं। वेदवती ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगी। फिर धीरे-धीरे वह धुंध में विलीन हो गई। मैं अपने डर में डूबी रही। मेरे अधूरे प्यार और उसके बाद घटी त्रासदी की तस्वीरें मुझे जकड़ रही थीं। धीरे-धीरे, दर्द से, मैंने अपने हाथ-पैर हिलाए और बिस्तर से उठकर अंधेरे में अपनी चप्पलें ढूंढने लगी। मैं कुछ देर बिना किसी विचार या भावना के खड़ी रही, नारियल के पेड़ों की शांत पत्तियों को चाँदी जैसी चाँदनी में नहाते हुए देखती रही। फिर मुझे पता चला कि मुझे क्या करना है। यह एक छोटे से विचार के रूप में शुरू हुआ, लेकिन जल्द ही मुझ पर हावी हो गया। मैं जल्दी से बाहर निकल गई, दरवाजा खुला छोड़कर। मैंने खर्राटे लेते पहरेदारों की अनदेखी की और गलियारों से होते हुए मरीचा के कमरे की ओर भागी। मैंने उसके दरवाजे पर ज़ोर से दस्तक दी, जिससे दरवाजे पर सिर रखकर ऊंघ रहा पहरेदार चौंक गया। कुछ बुदबुदाते उस बदमाश की अनदेखी करते हुए, मैं तब तक दरवाजे पर दस्तक देती रही जब तक कि बूढ़े ने दरवाजा नहीं खोल दिया। मेरा चेहरा देखते ही उसके होठों पर एक अभिशाप रह गया।
“हमें अब जाना होगा…मुझे उससे अभी मिलना है,” मैंने उससे कहा।
"कौन?"
“कपड़े पहनो और जल्दी आओ। मैं उसे अभी देखना चाहता हूँ और तुम मेरे साथ आ रहे हो।”
"कौन?"
मैंने उसे कमरे से बाहर खींच लिया। गार्ड ने तुरंत सिर झुकाया। मैंने मारीचा को बगीचे में धकेल दिया और कहा, "मैंने उसे देखा...वेदवती..." मारीचा

हुई दौड़ता हुआ आया था। मुझे इस भुलक्कड़ प्रोफेसर से लगाव होने लगा था। गोकर्ण में विशाल मंदिर का निर्माण शुरू करने से पहले मैंने उन्हें कभी गंभीरता से नहीं लिया था। तब से उन्होंने हमारी पवित्र नदियों के किनारे इसी तरह की कई इमारतें बनवाई थीं। वे एक कुशल कारीगर और अभियंता थे। फुर्तीले बूढ़े मायान किशोर की तरह दौड़कर उस शेड तक पहुँचे जहाँ पुष्पक रखा था। उन्होंने चाबियों से कुछ टटोला और फिर दरवाज़ा चौड़ा खोल दिया। मैं हमेशा से इस अजीब मशीन की चिकनी बनावट का प्रशंसक रहा था। इसके विशाल पंख फड़फड़ाते नहीं थे, बल्कि चकाचौंध भरी तेज़ी से गोल-गोल घूमते थे। यह एक पक्षी की तरह दिखता था, फिर भी मछली जैसा भी लगता था। इसमें कुछ लीवर थे, जिनका इस्तेमाल मैंने वर्षों में सीख लिया था। मैं अच्छा उड़ने वाला नहीं था, फिर भी मैं मशीन को ठीक-ठाक चला लेता था। मायान विभिन्न लीवरों और मशीन के एक निश्चित ऊँचाई पर पहुँचने के बाद हवा में तैरने के लिए इस्तेमाल होने वाले पाल के बारे में बड़बड़ाते रहे। लेकिन मैं मुश्किल से ही सुन रहा था। 'क्या मुझे मंदोदरी को बताना चाहिए?' यह 2000 मील से अधिक की यात्रा थी और इसमें तीन दिन लग सकते थे। आखिरकार, मैंने उसके लिए एक नोट छोड़ा जिसमें लिखा था कि मैं एक सप्ताह में लौट आऊँगा। फिर मैं एक पल के लिए झिझका और अपराधबोध ने मुझे यह लिखने पर मजबूर कर दिया कि मैं उससे प्यार करता हूँ।
तब तक मारीचा आ चुका था और उसने मेरे कपड़े, कुछ खाना और शराब, साथ ही मेरे हथियार और अपना सामान पैक कर लिया था। उसने सारा सामान उड़ते हुए जहाज के पिछले हिस्से में फेंक दिया और उम्मीद से पूछा, "रावण, क्या तुम सचमुच जाना चाहते हो?"
जैसे ही उसने सिर हिलाया और मेरी नकल की, मैं भी कूद पड़ा। पहले तो मुझे डर लगा, लेकिन फिर शिव से मन ही मन प्रार्थना करते हुए मैंने लीवर दबाया और मशीन धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगी। मैंने दूसरा लीवर दबाया और पंखे तेज़ी से घूमने लगे, फिर अचानक एक झटके से पुष्पक हवा में ऊपर उठ गया। मैंने देखा कि मार्चिहा अपनी सीट के सामने धातु की रेलिंग को कसकर पकड़े हुए था। मुझे भी डर लग रहा था, लेकिन मैंने बीच हवा में मशीन के रुकने के ख्याल को मन से निकाल दिया। यह सोचकर डर लग रहा था कि हम पक्षी की बीट की तरह नीचे गिरेंगे और चट्टानों पर बिखर जाएंगे।

वर्षों बीतने के साथ, मेरी महत्वाकांक्षा खो गई और मेरे सपने सिकुड़ गए। मैं भारत के आधे हिस्से को समृद्ध और धनी बनाने में बहुत खुश था। शायद यह एक बुद्धिमानी भरा निर्णय था।
मारीचा चुप हो गई थी और ऊंघ रही थी। मैंने फिर नीचे देखा और धरती माता के विशाल आकार को देखकर आश्चर्यचकित रह गया। मैं नम्र हो गया। यश के सारे सपने, मेरे द्वारा लड़े गए सारे युद्ध, मेरे द्वारा जीते गए सारे राज्य – ये सब इसके सामने बहुत छोटे लग रहे थे। धरती शाश्वत है, बाकी सब कुछ नश्वर है। कितने लोगों ने मेरी तरह महत्वाकांक्षी सपने देखे होंगे और उन्हें पूरा किया होगा? कितनों ने अपना धन बनाया होगा? इस धरती ने कितने राजाओं को देखा है और कितने आने वाले हैं? अंततः, क्या उनका परिश्रम धरती माता के लिए मायने रखता है? वह मनुष्य के तुच्छ कष्टों से दूर ही रहती है।
मनुष्य धोखा देते हैं, विश्वासघात करते हैं, प्रेम करते हैं, प्रयास करते हैं, संघर्ष करते हैं, असफल होते हैं, गिरते हैं, उठते हैं और इस प्रक्रिया को दोहराते हैं, या तो मरकर हमेशा के लिए लुप्त हो जाते हैं या पुनर्जन्म लेते हैं। लेकिन पृथ्वी स्थिर, दूरस्थ और अपरिवर्तनीय रहती है। मैं विशाल ब्रह्मांड में तैरता हुआ एक कण मात्र था। कल, या शायद अगले ही पल, मैं चला जाऊंगा। क्या इससे किसी को कोई फर्क पड़ेगा? शायद कुछ लोग दुखी होंगे और कुछ खुश, लेकिन यह केवल कुछ समय के लिए ही मायने रखेगा। समय के साथ, मेरी उपलब्धियाँ, मेरा जन्म और मृत्यु, अप्रासंगिक हो जाएँगी। इसलिए मेरे साम्राज्य का आकार अप्रासंगिक था और अब और रक्तपात की कोई आवश्यकता नहीं थी। जीवन युद्ध लड़ने के लिए बहुत छोटा था और महत्वाकांक्षा जैसी मूर्खतापूर्ण चीजों पर बर्बाद करने के लिए बहुत प्यारा था। मैं यह मानना चाहता था कि मुझे मरने से डर नहीं लगता। एक दिन सब मर जाते हैं। यही प्रकृति का नियम है। आपको अगली पीढ़ी के लिए रास्ता देना ही होता है। मानसिक रूप से, मुझे कभी मरने से डर नहीं लगा था। लेकिन फिर, मैं इस खूबसूरत जीवन को कैसे छोड़ सकता था? हवा मेरे कानों से सीटी बजाती हुई गुजरी और मैंने ठंडी सुबह की हवा में गहरी सांस ली। मैंने जीवन की सांस ली। पूर्वी क्षितिज पर बादल लाल रंग से रंगे रुई की तरह तैर रहे थे, मानो लाल रंग से रंगे बादल हों। पश्चिम अभी भी अँधेरा था, जहाँ एक धुंधला, सफ़ेद चाँद डूब रहा था। मारीचा नींद में करवट बदली। मैंने उस आदमी को देखा जो मुझसे सबसे ज़्यादा वफ़ादार रहा था। मैंने उसके सफ़ेद होते बालों और गंजे

सिर को देखा, उसकी अभी भी मज़बूत भुजाओं को देखा और उदास हो गई। जीवन हम सबके सामने से तेज़ी से गुज़र रहा था। एक दिन वह चला जाएगा और मैं अकेली रह जाऊँगी।
‘अब वो क्या कर रही होगी? वो किसके जैसी दिखती होगी? शायद अपनी माँ जैसी?’ अपने बिछड़े प्यार के बारे में सोचते ही मेरे अंदर कुछ टूट गया। क्या साम्राज्य के लिए उसे खोना उचित था? शायद था। मंदोदरी एक आदर्श जीवनसाथी थी। वेदवती पत्नी या रानी बनने के लिए बहुत ही जोशीली थी। मैं अपनी बेटी का चेहरा देखने के लिए सबसे ज़्यादा तरस रही थी। मैंने कुछ समय से युद्धक्षेत्र की खबरें नहीं पढ़ी थीं, लेकिन मुझे धुंधला सा याद था कि मैंने उसके विवाह की तैयारियों के बारे में पढ़ा था। इन उत्तरी लोगों की एक अजीब प्रथा थी। भावी दुल्हन का पिता योग्य दूल्हों के बीच एक प्रतियोगिता की घोषणा करता था। मुझे यह असभ्य लगा। क्या दुल्हन कोई पुरस्कार थी जिसे प्रतियोगिता में जीता जा सकता था? मैंने तो देव पुरुषों के बारे में भी सुना था कि वे अपनी पत्नियों को गुलाम के रूप में बेचते थे, गिरवी रखते थे या दांव पर लगाते थे। यह भयानक था, लेकिन एक अर्ध-सभ्य, खानाबदोश जनजाति से कोई क्या उम्मीद कर सकता था? देव पुरुष महिलाओं को वस्तु मात्र समझते थे। शायद मैं पूर्वाग्रही थी क्योंकि मैं एक बिल्कुल अलग संस्कृति से संबंध रखती थी। लेकिन मेरा हमेशा से यही मानना था कि किसी समाज को सभ्य तभी कहा जा सकता है जब वह अपनी महिलाओं और दलितों के साथ अच्छा व्यवहार करे। जाति व्यवस्था बहुत कठोर थी। समाज के निचले तबके के लोगों की हालत कल्पना से परे थी। ऐसे मानकों के अनुसार, धूल भरे उत्तरी मैदानों के लोग लगभग अमानवीय थे। बेशक, असुरों की अपनी समस्याएं थीं। असुर पुरुष भौतिक चीजों के प्रति आसक्त थे। असुर महिलाएं आक्रामक और लगभग अनैतिक थीं, लेकिन फिर भी, हमारी लड़कियों का पालन-पोषण लगभग हमारे लड़कों की तरह ही होता था। असुरों में भी जाति व्यवस्था जैसी सामाजिक असमानताएं थीं, लेकिन यह जन्म या त्वचा के रंग पर आधारित नहीं थीं। कोई भी कड़ी मेहनत और भाग्य से सत्ता के पद तक पहुंच सकता था। मैं इसका सबसे अच्छा उदाहरण थी। मुझे उम्मीद थी कि मेरी बेटी के विवाह के लिए प्रतियोगिता शुरू होने तक मैं मिथिला पहुँच जाऊँगी। मैं बेचैन थी। ‘कौन सा असभ्य देव उससे विवाह करेगा? उसका जीवन कितना अलग होगा?’ मुझे पूर्वाभास था कि उसका जीवन आसान नहीं होगा। मैं इसे समझा नहीं सकती थी, लेकिन यह भावना मुझे लगातार परेशान

कर रही थी। मुझे वेदवती की उन्मादी हंसी स्पष्ट रूप से याद थी। उसका श्राप मुझे सता रहा था। क्या होगा अगर ज्योतिषीय भविष्यवाणी सच हो जाए कि मेरी बेटी मृत्यु लाएगी?
क्या असुरों का विनाश सच था? क्या होगा अगर वेदवती के अग्नि में जलने के दौरान उसके श्राप को जीवन मिल गया हो? यह सरासर बकवास था। मैं भ्रम में था। शायद अपनी बेटी को त्यागने और उसे वापस लाने के लिए कुछ न करने का अपराधबोध, और पिछली रात की शराब, इन सबने मिलकर यह सब पैदा किया होगा। अगर मैं अपनी बेटी को वापस बुला लेता तो क्या होता? मुझे उसे एक पराई संस्कृति में वापस लाने का क्या अधिकार था? क्या जनक मेरी बात मानेंगे? या मुझे मिथिला पर आक्रमण करके उसे वापस लाना चाहिए था? इसमें आधा दिन लग जाता। मिथिला एक छोटा राज्य था, लेकिन मैं कोई रक्तपात नहीं चाहता था। मैं युद्धों से तंग आ चुका था। मुझे इस बात का भी डर था कि मंदोदरी कैसी प्रतिक्रिया देगी। उसे वेदवती के लिए मेरी तड़प के बारे में पता नहीं था, और मैं इस बारे में बात नहीं करना चाहता था। मेरे भटकने के दिन समाप्त हो चुके थे और मुझे विवाह में शांति और सुख मिल चुका था। अतिकाय एक शर्मिंदगी थी। मैं एक और शर्मिंदगी नहीं जोड़ना चाहता था।
मैं नर्मदा के करीब पहुँच रहा था और मन ही मन सोच रहा था कि अभी हमें एक और दिन का सफर तय करना है। हवाई यात्रा का रोमांच खत्म हो चुका था और नीचे के मैदान सूखे और नीरस लग रहे थे। मुझे कई बार नींद आ गई। मैं बाली से अपनी दोस्ती को फिर से ताज़ा करने के लिए किष्किंधा जाना चाहता था, लेकिन अपने अहंकार के बोझ तले दबे होने के कारण मैंने बाली के राज्य से बचते हुए दूसरा रास्ता चुना। तुंगभद्रा नदी के किनारे हम कुछ घंटों के लिए रुके, आराम किया और खाना खाया, लेकिन मुझे अपनी बेटी के स्वयंवर में समय पर पहुँचने की जल्दी थी।

38 समय आ गया है
रावण
हम सुबह-सुबह मिथिला के पास उतरे। मैंने शहर से कुछ मील दूर एक सुनसान और निर्जन जगह चुनी थी। हमने पुष्पक को पौधों और झाड़ियों से ढक दिया, देवों के वस्त्र पहने और महल की ओर चल पड़े। कई लोग उसी दिशा में जा रहे थे। सैकड़ों विक्रेता तरह-तरह की चीजें बेच रहे थे और पैदल चलने वालों और इधर-उधर घूमती गायों के बीच धक्का-मुक्की कर रहे थे। मैंने देखा कि सड़कें संकरी और घुमावदार थीं और जल निकासी की कोई व्यवस्था नहीं थी। घर देहाती लग रहे थे और महल लंका के किसी मध्यमवर्गीय किसान के बड़े घर जैसा दिख रहा था। मैं प्रभावित नहीं हुआ, लेकिन मुझे ज्यादा उम्मीद भी नहीं थी। सांस्कृतिक और आर्थिक रूप से यह पिछड़ा हुआ इलाका था, फिर भी इसे उत्तर के बेहतर शहरों में से एक माना जाता था। ज्यादातर लोगों के बाल भूरे और रंग पीला था, लेकिन कई लोग सांवले भी थे। मुझे महल में कई सांवले पुरुष और महिलाएं मिलीं। शायद वे किसी दूसरे रास्ते से आए होंगे। मैंने अनुमान लगाया कि ये अछूत थे। अच्छे वस्त्र पहने, सुंदर महिलाएं इन दयनीय आकृतियों से दूर रहती थीं और अर्धमानव अछूत धैर्यपूर्वक महान पुरुषों और महिलाओं के गुजरने का इंतजार करते थे। यह कैसी संस्कृति थी? क्या मेरे शासनकाल में कभी ऐसा कुछ होगा? जनक कुछ प्रबुद्ध राजाओं में से एक थे, फिर भी वे इस द्वेष से मुक्त नहीं थे। मैं उनसे कहीं बेहतर राजा था। केवल रावण ने ही समृद्ध और न्यायपूर्ण समाज सुनिश्चित किया था।
गर्व और तिरस्कार के मिले-जुले भावों के साथ मैं सभा में दाखिल हुआ, जहाँ केंद्र में एक विचित्र आकार का धनुष रखा था। मैंने सोचा, 'यह इतना भारी है कि किसी काम का नहीं।' कई गणमान्य व्यक्ति बैठे थे और एक ऊँचे चबूतरे पर, जो लकड़ी के सिंहासन जैसा प्रतीत होता था, मेरी उम्र का एक व्यक्ति अत्यंत गरिमा के साथ बैठा था। उसके ऊपर एक बालकनी पर, मुझे घूंघट ओढ़े हुए कुछ लोग दिखाई दिए। मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा। उनमें से एक मेरी बेटी हो सकती थी। मैंने बेचैनी से उसकी एक झलक पाने की कोशिश की। 'वह कैसी दिखती होगी?' मैंने देवों की उस घूंघट वाली प्रथा को कोसा जिसमें स्त्री को घूंघट में रखा जाता है। लोग आपस में बातें कर रहे थे। मैं चकित था। 'राजा की उपस्थिति में वे कैसे बात कर सकते हैं?'

राजा जनक खड़े हुए और सभी उनके कथन की प्रतीक्षा करने लगे। उनकी वाणी विशाल हॉल में गूंज उठी। “शक्तिशाली राजाओं और राजकुमारों, आज का दिन शुभ है। आज मेरी प्रिय पुत्री सीता का स्वयंवर है। आप में से जो सबसे बलवान, सबसे वीर और सबसे कुशल होगा, वही आज मेरी सुंदर पुत्री का हाथ जीतेगा।” वे कुछ देर रुके। मैंने चारों ओर देखा। कई तोंददार या दुबले-पतले पुरुष भी उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे थे। “प्रतियोगिता के नियम सरल हैं। यहाँ रखे भारी धनुष को उठाना और उस पर प्रत्यंचा चढ़ाना है। सज्जनों, यह आसान काम नहीं है। इस धनुष को त्र्यंबक कहते हैं और एक समय स्वयं भगवान शिव ने इसका प्रयोग किया था। जो इसे उठाकर प्रत्यंचा चढ़ा सकेगा, वही मेरी पुत्री का हाथ जीतेगा।”
मैं हँसी से लगभग दम घुट गया। ‘इन लोगों को शिव का धनुष कहाँ से मिला?’ शिव का धनुष, बिलकुल नहीं! शायद उन्हें यह सोचकर रोमांच होता होगा कि कोई आदिम असुर राजा और भगवान शिव के धनुष को उठा सकता है।
“राजाओं और राजकुमारों, मेरी पुत्री को देखो।” जनक की वाणी ने मेरे विचारों को झकझोर दिया। मैं कांपते हुए प्रतीक्षा कर रही थी। भीड़ में सन्नाटा छा गया। तभी घंटियों से सजा एक द्वार खनकते हुए खुला और एक लंबी, आभूषणों से सजी महिला दासियों के साथ बाहर निकली। मैंने मारीच के हाथों को कसकर पकड़ लिया। मेरे चेहरे की मांसपेशियां तन गईं और मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा। वह सैकड़ों पुरुषों के बीच कांपती हुई खड़ी थी, जबकि कई कामुक निगाहें उसे एक मूर्खतापूर्ण प्रतियोगिता के पुरस्कार की तरह देख रही थीं। एक दासी आगे आई और धीरे से उसका घूंघट उठाया, जिससे भीड़ दंग रह गई। वह इतनी तेजस्वी और सुंदर लग रही थी कि मेरी आंखों में लगभग आंसू आ गए।
सीता। वह अपनी मां जैसी दिखती थी, लेकिन उसकी त्वचा सांवली, शहद जैसी थी।
उसके लंबे, काले बाल थे। वह मेरी पुत्री थी, एक असुर राजकुमारी।
मैंने देखा कि राजकुमार और राजा उसे ऐसे परख रहे थे जैसे वे किसी पशु बाजार में आए हों और उन्हें अपनी सबसे अच्छी गाय मिल गई हो। मैं क्रोध से जल उठी। यह कैसी प्रथा थी? एक भोली-भाली युवती को, जो अपनी जवानी में थी, उन बूढ़े आदमियों की हवस भरी निगाहों के सामने छोड़ दिया गया था जो उसे किसी प्रतियोगिता में जीत सकते थे? उसकी भावनाओं, उसके प्रेम, उसके सपनों और इच्छाओं का क्या? कोई भी बदमाश, जिसमें उस बेतुके धनुष को उठाने की ताकत हो, उससे शादी कर सकता था। उसे अपने पति को रिझाने का कोई सुख नहीं मिलेगा,

प्रेम के फुसफुसाते शब्द नहीं होंगे, विरह का दर्द नहीं होगा और चांदनी रात में अपने प्रेमी को देखने का मीठा इंतजार नहीं होगा। मारीचा ने मुझे थाम लिया। शुरू में तो मुझे मंदोदरी से अपनी तयशुदा शादी से नफरत थी और मैंने अपनी दखलंदाजी करने वाली माँ को कई बार कोसा था। लेकिन हम एक-दूसरे को जानते थे और कई बार बातें कर चुके थे। यह असभ्य था।
मैं अपनी बेटी सीता से नज़रें नहीं हटा पा रही थी। सीता ने धीरे से अपना सिर उठाया और वहाँ जमा हुई कामुक भीड़ को देखा। वह किसी भी चेहरे पर कुछ पल से ज़्यादा नहीं रुकी। जब उसकी नज़र मुझ पर पड़ी, तो मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा। वह मुझे घूर रही थी और मैं डर गई। मेरे अंदर कुछ हलचल हुई। क्या यह अपराधबोध था या डर? मुझे नहीं पता और मैंने तुरंत नज़रें हटा लीं। जब मैंने दोबारा देखा, तो मैंने उसे लगभग अठारह साल के एक युवक को घूरते हुए देखा। वह कोई राजकुमार नहीं था। उसने साधारण कपड़े पहने थे, लेकिन उसके कंधे पर एक धनुष था और उसके बाल एक जूड़े में बंधे थे। वह लंबा और सुगठित था और उसकी शक्ल में कुछ ऐसा था जो उसे मोह लेता था। वह शांत और आत्मसंतुष्ट लग रहा था। उसकी उम्र के हिसाब से उसका शांत स्वभाव अद्भुत था।
मैंने अपनी बेटी की नज़र उस लड़के से मिलते हुए देखी। वह शरमा गई और उसके सांवले चेहरे पर एक डिंपल पड़ गया। उसने जल्दी से नज़रें नीचे कीं, मुड़ी और चली गई। मैं उस सांवले लड़के को ध्यान से देखती रही। मेरे अंदर एक अजीब सी ईर्ष्या और नफ़रत दौड़ उठी। शायद उसने मेरी भावनाओं को भांप लिया था, क्योंकि वह मेरी तरफ़ मुड़ा और मुस्कुराया। मैं सहम गई। मुझे नहीं पता क्यों और कैसे, लेकिन मुझे पता था कि यह आदमी खतरनाक है। मुझे यकीन था कि वह मेरी बेटी को पा लेगा। मुझे अपनी बेटी और खुद के लिए डर लग रहा था। मैं दौड़कर उसे नुकसान से बचाना चाहती थी। मैं उसे झट से उठाकर लंका ले जाना चाहती थी, इन बर्बरों और उनके असभ्य रीति-रिवाजों से दूर। लेकिन मैं वहीं जम गई, अपने डर और आशंकाओं में अकेली, और अपनी बेटी को बचाने के लिए एक चमत्कार की प्रार्थना की।
एक बूढ़ा ब्राह्मण, जिसकी दाढ़ी लंबी और घनी थी, लड़के के पास खड़ा था। एक और युवक, जिसके चेहरे पर हमेशा गुस्से का भाव रहता था, मेरी ओर देख रहा था। जब मेरी नज़रें उससे मिलीं, तो उसने मुझे घृणा भरी ऐसी नज़रों से देखा कि मैं सहम गया। 'युवाओं में इतनी जल्दी इतना आत्मविश्वास और घमंड कैसे आ

गया?' मैं भी कभी जवान था, लेकिन मुझमें कभी इस तरह का आत्मविश्वास या घमंड नहीं था। मैं हमेशा अपने बड़ों के प्रति विनम्र और आदरपूर्ण रहा था। प्रतियोगिता शुरू हुई। एक-एक करके प्रतियोगी आगे आए, भारी धनुष उठाने की कोशिश की और असफल रहे। उनमें से कुछ को देखने के बाद, मुझे एहसास हुआ कि धनुष के दोनों सिरों पर अलग-अलग वजन थे। इसे पकड़ने का सही तरीका पहले सोचना पड़ता था और फिर प्रयास करना पड़ता था। जल्द ही, सभी आमंत्रितों ने कोशिश की और असफल रहे। कमरे में सन्नाटा छा गया। लेकिन मुझे राहत मिली। अब कोई भी क्रूर मेरी बेटी से शादी नहीं कर सकता था। अब समय आ गया था कि मैं जनक को अपनी पहचान बताऊं और अपनी बेटी को वापस ले लूं। मैं उसे लंका ले जाऊंगा और उसे असुर राजकुमारी के योग्य जीवन दूंगा। वह जिससे प्यार करेगी उससे शादी करेगी या मैं उसके लिए एक अच्छा वर ढूंढूंगा। मैं मंदोदरी से अपने पापों का प्रायश्चित करूंगा और उससे क्षमा मांगूंगा। केवल मैं ही अपनी जवानी की सभी गलतियों का प्रायश्चित कर सकता था। मैं आगे बढ़ा।
राजा की ओर चलते हुए मुझे लगा कि भीड़ मुझे घूर रही है। लेकिन तभी मुझे अपनी गलती का एहसास हुआ। सबने सोचा कि मैं भी दावेदार हूँ और जनक ने मेरी ओर आशा भरी नज़रों से देखा और फिर भौंहें चढ़ा लीं। उन्होंने सोचा होगा कि मैं उनकी बेटी के लिए बहुत बूढ़ी हूँ। मैं केवल छियालीस वर्ष की थी, लेकिन ऐसे समाज में जहाँ लड़कियों की शादी छह साल की उम्र में हो जाती थी, मैं बहुत बूढ़ी थी। धनुष के पास पहुँचकर मैं रुक गई। मैं उत्सुक थी। मैंने उसे छुआ, अपनी उंगलियों से उसकी बनावट को छुआ। मैंने उसे कसकर पकड़ा। उसकी कारीगरी घटिया थी और मुझे यकीन था कि इस धनुष पर कभी तार नहीं चढ़ाया जा सकता। अगर कोई इसे उठाने की कोशिश भी करे तो यह टूट जाएगा। शिव ने निश्चित रूप से इस घटिया चीज़ का इस्तेमाल नहीं किया होगा। जनक ने इसे किसी शस्त्र विद्या विद्यालय से उठाया होगा जहाँ प्रशिक्षु धनुष बनाना सीखते थे। यह एक अपूर्ण नमूना था और ये लोग मेरी बेटी को इससे बेचने की प्रतियोगिता कर रहे थे?
“महाराज, अगर आप कोशिश करना चाहते हैं, तो जल्दी कीजिए,” एक मंत्री ने पुकारा। मैंने उन्हें घूरकर देखा। ‘अगर मैंने इसे उठा लिया तो क्या होगा? क्या मैं अपनी ही बेटी से शादी कर लूँगा?’ तभी वह सांवला और सुंदर युवक आगे आया और राजा को प्रणाम किया। मैंने ऊपर देखा। सीता ने अपना घूंघट हटा दिया था और उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रही थी। मेरे दिल का एक हिस्सा चाहता था कि

यह युवक जीत जाए। मेरी बेटी को एक ऐसा पति मिलेगा जिसे वह पसंद करेगी, भले ही प्यार न करे। मेरे मन का एक और अंधकारमय कोना मुझे बार-बार कह रहा था कि सीता इस युवक के साथ कभी खुश नहीं रहेगी। मुझे यकीन था कि अगर वह युवक धनुष उठाने में सफल भी हो गया, तो उस पर प्रत्यंचा चढ़ाने की कोशिश में वह टूट जाएगा। अगर ऐसा हुआ, तो सीता बच जाएगी, कम से कम अस्थायी रूप से। मैंने उसका इंतजार किया।
“महाराज! मैं अयोध्या का राजकुमार राम, राजा दशरथ का प्रथम पुत्र हूँ।” उस युवक ने राजा जनक को प्रणाम किया। ‘अयोध्या? हम्म… यह नाम मैंने पहले कहाँ सुना था… शायद उन छोटे-छोटे देहाती रियासतों में से एक, जो धूल भरे उत्तरी मैदान में बिखरी हुई थीं।’ तभी मुझे याद आया। राजा अनर्न्य… और मेरा अभियान। ‘हे भगवान! वह भयानक छोटा सा कस्बा, जो मिथिला के आधे आकार का भी नहीं था।’ मुझे याद आया कि वह जगह कितनी पिछड़ी हुई थी। मैंने अंतिम राजा का तो बहुत पहले ही सफाया कर दिया था, है ना? ये मैदान तो मशरूम की तरह राजाओं को उगाते हैं!
मैं पीछे हट गया। राम ने धनुष के चारों ओर दो-तीन बार चक्कर लगाया और उसे ध्यान से देखा।
मैं प्रभावित हुआ। यह युवक बुद्धिमान और चतुर था। उसने अपनी ताकत दिखाने की जल्दी नहीं की। उसने अपनी मध्यमा उंगली और अंगूठे के सिरे से धनुष को एक छोर से दूसरे छोर तक नापा। फिर उसने मध्य भाग से तीन उंगल ऊपर एक जगह ढूंढी और एक ही झटके में धनुष उठा लिया। वह वजन से लगभग लड़खड़ा गया, लेकिन जल्दी ही संभल गया। मुझे पसीना आने लगा। 'क्या वह कर पाएगा?' अगर शस्त्रों के बारे में मेरा ज्ञान सही है, तो धनुष टूट जाना चाहिए। उस पर प्रत्यंचा नहीं चढ़ी जा सकती। मैंने सीता की ओर देखा। वह तनाव में थी, अपनी हथेलियों को मौन प्रार्थना की मुद्रा में जोड़े बैठी थी।
राम ने नीचे से डोरी उठाई और उसे ऊपर बांधने की कोशिश की। उनकी मांसपेशियां तन गई थीं और उनके चेहरे पर मेहनत का तनाव साफ दिख रहा था। मैं मंत्रमुग्ध होकर देख रही थी। ‘यह बालक एक अच्छा योद्धा था। शायद मेघनाद जितना ही अच्छा।’ धनुष झुका और राम ने डोरी का पहला चक्कर चढ़ाया। मैं हवा में तनाव महसूस कर सकती थी। सभी लोग उस युवक को असंभव करतब करते देख रहे थे। चमत्कारिक रूप से, धनुष टिका रहा। मैं समझ नहीं पा रही थी कि यह कैसे हुआ। ‘क्या मेरा ज्ञान इतना पुराना हो गया है?’ मैंने अयोध्या के राजकुमार

अपनी पत्नी, अपने बेटों और अपने लोगों के पास। मैं छिपने की जगह पर पहुँचा और तभी मुझे एहसास हुआ कि मारीच मेरे साथ नहीं है। मारीच थोड़ी देर बाद आया। मैं अब भी अपनी बेटी को लेकर चिंतित था। 'कम से कम उसका पति तो एक सक्षम योद्धा लगता है। देखते हैं आगे क्या होता है।' पुष्पक में चढ़ते हुए और मारीच को पीछे आने का इशारा करते हुए, मुझे जो बुरी आशंकाएँ महसूस हो रही थीं, वे मेरे मन से निकल नहीं रही थीं।
“मारीचा, हमारे पूरे नेटवर्क को कह दो कि उन पर नज़र रखें। उस लड़के पर नज़र रखो। उस पर कड़ी नज़र रखो,” मैंने मारीचा से कहा और उसने गंभीरता से सिर हिलाया।
“हमें उसे घर लाने में इतना लंबा इंतजार नहीं करना चाहिए था,” मारिचा ने कहा। मुझे भी यही महसूस हुआ। लेकिन अब इस बारे में सोचने का कोई फायदा नहीं था।
हम दो दिन में लंका पहुँच गए। मैंने मंदोदरी को देव ब्राह्मण स्त्री के साथ अपने प्रेम प्रसंग के बारे में बताया। यह कठिन था, लेकिन मैंने उसे सब कुछ बता दिया। मैंने उसे अपनी बेटी के बारे में और उसके लिए अपने मन में उठ रहे डर के बारे में बताया। मेरे विश्वासघात पर वह रोई, लेकिन उसने मुझे माफ कर दिया। मुझे ऐसा लगा कि मंदोदरी को इसके बारे में पहले से ही पता था, लेकिन उसने कभी इस विषय को नहीं उठाया था। मेरा कबूलनामा हम दोनों के लिए अच्छा रहा। मुझे ऐसा महसूस हुआ कि उस दिन से वह मेरा और भी अधिक सम्मान करने लगी। मंदोदरी ने मुझसे कहा कि वह हमारी बेटी को वापस पाना चाहती है, लेकिन चूंकि उसकी शादी हो चुकी है, इसलिए उसे उसके पति के साथ छोड़ देना ही बेहतर होगा। आखिरकार मैं चैन से सो गया।
वादे के मुताबिक, मैंने सीता को ध्यान से देखा। मुझे यह जानकर बहुत दुख हुआ कि राम ने अपनी विरासत त्याग दी थी क्योंकि उनकी सौतेली माँ चाहती थी कि उनका अपना बेटा राजा बने। उन्होंने दशरथ से यह वादा लिया था कि वे अपने सबसे बड़े बेटे को दूर भेज देंगे।
चौदह वर्षों तक वनवास में रहने और अपने पुत्र भरत को राजा बनाने के लिए, मेरा दामाद, जो मूर्ख था, उसने स्वेच्छा से अपना दावा त्याग दिया और वनवास में गायब हो गया। यद्यपि अयोध्या के लोग राम को अपना राजा बनाना चाहते थे, उसने अपने जोरू के दबाव में रहने वाले पिता को खुश करने के लिए जनता की इच्छाओं की अवहेलना कर दी। मैं राम से उसके झूठे अहंकार और दुनिया के

39 असुर राजकुमारी की वापसी
भद्र
अब मेरी उम्र लगभग पचास हो चुकी है और मेरे बाल झड़ चुके हैं, मेरे हाथ-पैर और दिमाग दोनों ही कमजोर हो चुके हैं। हर दिन एक जैसा ही होता था। सुबह होती, मैं उठता, अपने काम करता, खाना खाता, अपनी जिंदगी में कभी देखी खूबसूरत लड़कियों के बारे में सोचता, जिंदगी के उतार-चढ़ाव पर विचार करता, शराब पीता, दुनिया की बातों पर शिकायत करता, अपनी जवानी के असली और काल्पनिक कारनामों से सुनने वालों को ऊबाता और दिन के अंत में बिस्तर पर गिर पड़ता, अगले दिन फिर उठने के लिए। और यह चक्र चलता रहता था। रावण की क्रांति ने हमें कुछ नहीं दिया। शायद हमारी हालत थोड़ी बेहतर हुई थी। शायद थोड़ी ज्यादा सभ्य भी। लेकिन हमें अपनी औकात दिखा दी गई थी और हमने जल्दी ही व्यवहार करना सीख लिया था। एक तरफ कुलीन लोग थे, और दूसरी तरफ बाकी सब। एक तरफ विशेषाधिकार प्राप्त लोग थे, और दूसरी तरफ हम। जब तक हम अपनी औकात में रहते, तब तक जी सकते थे। लेकिन हममें से कई लोगों ने उद्यम, भाग्य और चापलूसी के बल पर तरक्की कर ली थी। सेना में मेरे ज्यादातर साथी आज भी मेरी तरह ही बेहद गरीब हैं। लेकिन उनमें से कुछ वाकई बहुत महत्वपूर्ण हो गए थे। सबसे परेशान करने वाली बात यह थी कि हाल के वर्षों में ब्राह्मणों की संख्या में कितनी वृद्धि हुई थी। असफल तख्तापलट और नरसंहार की घटना के बाद, ब्राह्मणों का दक्षिण की ओर आना कुछ समय के लिए रुक गया था। उनके धर्म के अनुयायी भी कम हो गए थे। लेकिन कुछ ही समय बाद, वे फिर से आने लगे। इस समय तक रावण ने एक महान राजा के व्यवहार के बारे में अपने विचार विकसित कर लिए थे। अगस्त्य नाम के एक संत के नेतृत्व में ब्राह्मणों के एक समूह ने असुर राज्य में शरण मांगी। प्रहस्त ने उन्हें शरण देने का विरोध किया और

जनता में भी काफी आक्रोश था। लेकिन रावण ने अपनी राजसी बुद्धिमत्ता से उन्हें शरण देने का निर्णय लिया।
कुछ वर्षों तक अगस्त्य और उनके ब्राह्मणों का समूह शहरों से दूर रहकर शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत करता रहा। वे अपने आप में ही रहते थे और उन्होंने हमें कोई परेशानी नहीं दी। अगस्त्य लगभग प्रतिदिन रावण से विनती करने जाते थे कि उन्हें हमारे राज्य में गाँव बसाने की अनुमति दी जाए। विभीषण ने भी उनके अनुरोध का समर्थन किया। अंततः, उन्होंने दक्षिण भारत के पश्चिमी और पूर्वी तटों पर, लंका द्वीप सहित, गाँव बसा लिए। शुरुआत धीमी गति से हुई। गोरे रंग के, हट्टे-कट्टे ब्राह्मणों ने धीरे-धीरे साम्राज्य के सभी प्रमुख कस्बों और शहरों में अपने छोटे-छोटे द्वीप बना लिए। और देखते ही देखते, उन्होंने सरकारी सेवाओं के सभी महत्वपूर्ण पदों पर कब्जा कर लिया, मंदिरों पर अधिकार कर लिया और प्रभावी रूप से अन्य सभी को आकर्षक और महत्वपूर्ण पदों से हटा दिया।
रावण का मानना था कि संसार में सम्मान पाने के लिए उसे धर्मनिरपेक्ष राजा बनना होगा और सभी धर्मों के प्रति आदर और सहिष्णुता का भाव रखना होगा। जिन आदर्शों के लिए मेरे जैसे अनेक असुरों ने संघर्ष किया था, वे सब भुला दिए गए थे। उसने यहाँ तक कह दिया कि अल्पसंख्यकों को देश के संसाधनों पर समान अधिकार है और राजा होने के नाते उनका कर्तव्य है कि वे उनकी रक्षा करें। जनता क्रोधित हो उठी। असुरों की महिमा के लिए लड़ने और आदर्श असुर साम्राज्य की खोज में सब कुछ बलिदान करने के बाद, क्या यही हमारा भाग्य था? ऐसा प्रतीत होता था कि केवल अल्पसंख्यकों के अधिकार और उनकी धार्मिक भावनाएँ ही मायने रखती थीं, हमारी नहीं। ब्राह्मणों की वजह से असुरों का मुख्य भोजन, गोमांस, प्रतिबंधित कर दिया गया था। ब्राह्मण हमारे मंदिरों में प्रवेश कर हमारे साधारण देवताओं का अपमान कर सकते थे, या इससे भी बुरा, अगर धन संग्रह अच्छा होता तो मंदिर पर कब्ज़ा कर सकते थे। अंततः उन्होंने हमें अपने ही मंदिरों में प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी। आख़िरकार, हम अपवित्र थे। अल्पसंख्यकों के अधिकार शासक वर्ग के लिए एक जुनून बन गए थे। असुर धर्म से देव धर्म में कई लोगों का धर्मांतरण हुआ, यहाँ तक कि मुझ जैसे हठी सूअरों ने भी धर्मांतरण से इनकार कर दिया।
उस घटना के बाद जब अथिकाया और मैं द्वंद्वयुद्ध में लगभग मौत के मुंह में चले गए थे, तब से मेरा महल जाने का मन ही नहीं करता था। मैं हमेशा एक पायदान

बनकर रहने से तंग आ चुका था। मैं अपना खुद का व्यवसाय फिर से शुरू करना चाहता था, लेकिन वह जगह अब अस्तित्व में नहीं थी। उन्होंने सड़क चौड़ी कर दी थी और जहाँ मेरा पुराना बरगद का पेड़ खड़ा था, वहाँ बाग-बगीचे उग आए थे। त्रिकोटा चारों ओर फैल गया था और हम उससे और दूर धकेल दिए गए। यात्रा करने वाले लोग कहते थे कि यह शहर मुज़ारिस के मुख्य बंदरगाह शहर से भी ज़्यादा सुंदर था। लेकिन मेरे जैसे लोगों के लिए हालात नहीं बदले थे। हम अब भी आँखों का कांटा थे और महत्वपूर्ण लोगों से छिपना पड़ता था। लेकिन उन्हें हमारी ज़रूरत भी थी। आख़िरकार, उनके बाग-बगीचों की देखभाल कौन करता; उनकी नौकरानियाँ और दाइयाँ कौन बनतीं; उनके लिए पानी कौन भरता और लकड़ी कौन काटता; उनकी गलियाँ कौन साफ़ करता; और उनका मल-मूत्र कौन साफ़ करता? इसलिए, भले ही वे हमें पसंद नहीं करते थे, फिर भी वे हमें बर्दाश्त करते थे। हमने अदृश्य होना सीख लिया था। हममें से ज़्यादातर लोग अपने काम निपटाते और शहर के जागने से पहले गायब हो जाते। और ज़िंदगी चलती रही। लगभग चौदह साल हो गए थे जब उन्होंने मेरे बेटे और मुझे पीटा था।
जब त्रिकोटा का विस्तार और विकास हुआ, तो मैं अपनी पत्नी के साथ शहर से कई मील दक्षिण में एक छोटी सी झोपड़ी में रहने चला गया और खेती-बाड़ी में हाथ आजमाया। मैंने कुछ जंगल साफ किया और काली मिर्च और इलायची उगाने का फैसला किया। मेरे पास बीज नहीं थे, इसलिए मैंने स्थानीय साहूकार से कुछ बीज उधार लिए। और फिर हमने अमीर बनने के सपने बुनने शुरू किए। कुछ समय बाद, वे सपने फीके पड़ गए और आरामदायक जीवन जीने के सपने रह गए। बाद में, हम सिर्फ किसी तरह गुजारा करने का सपना देखने लगे, फिर दिन में कम से कम एक बार खाना खाने का। हम किसी तरह कर्ज के जाल से निकलने का सपना देखने लगे। आखिरकार, हमने सपने देखना ही छोड़ दिया।
लेकिन कुलीन वर्ग की समृद्धि जारी रही। उन्होंने अपनी दौलत से दुनिया को चकित कर दिया, जिसे वे शान-शौकत और गर्व से दिखाते थे। और कहा जाता था कि रावण के शासनकाल में असुर साम्राज्य ने बहुत तरक्की की। यह सच था। कुलीन वर्ग समृद्ध हुआ, इसलिए देश समृद्ध हुआ। क्या इससे कोई फर्क पड़ता था कि आम जनता संघर्ष कर रही थी या किसान सूदखोरों से बचने के लिए आत्महत्या कर रहे थे? हम अदृश्य लोग थे और हमारी कोई गिनती नहीं थी। मुझे इस बात से तसल्ली मिलती थी कि मेरा देश दुनिया के सबसे तेजी से विकासशील देशों में से एक था। इससे मेरा पेट तो नहीं भरता था, लेकिन इससे मुझे शेखी बघारने का मौका मिलता

था और मेरा अहंकार बढ़ जाता था। मेरे जैसे कई दोस्त थे। हम हर दिन स्थानीय, खस्ताहाल अड्डों पर शराब पीते थे और अपने राजा और असुर साम्राज्य की समृद्धि के लिए जश्न मनाते थे।
वह दिन बाकी दिनों जैसा ही था। गर्म, उमस भरा, नीरस और उबाऊ। शाम बिल्कुल शांत थी और स्थानीय ताड़ी की दुकान पर अनगिनत घड़े ताड़ी पीने से मैं लगभग बेहोश हो गया था। मुझे घर जाने का मन नहीं था।
यहां आरामदेह माहौल था। साहूकार और फसलों को भूल जाओ। राजा, रईस और सभी ब्राह्मणों को भी भूल जाओ। अगर मैं थोड़ी देर यहां बैठ पाता, तो कोई मूर्ख आकर मुझे एक ड्रिंक पिला देता। तो मैं वहां बैठा रहा, राजकुमारी सूर्पनखा और उसके यौन कारनामों की मसालेदार कहानियाँ सुनता रहा, और उस अपमान के बारे में भी जो उसे कुछ बागी वनवासियों ने सहा था, जिनके बारे में अफवाह थी कि वे नाग, वानर या देव थे, जिन्होंने बलात्कार के बाद उसके स्तन और नाक काट दिए थे। लोग यह भी कह रहे थे कि रावण अपनी बहन के अपमान का बदला लेने के लिए एक बड़ा युद्ध छेड़ने वाला है। तभी हमें उड़ने वाली मशीन की कान फाड़ देने वाली आवाज़ सुनाई दी। हम सब बाहर भागे। आसमान की ओर देखती हुई भारी भीड़ थी। लोगों के धक्का-मुक्की के बीच मैं एक अच्छी जगह पाने के लिए इधर-उधर भटकता रहा। सड़कों पर यातायात रुक गया था। क्या पागल प्रोफेसर माया फिर से अपने हवाई करतब दिखा रहे थे?
फिर भीड़ में एक ज़ोरदार सिसकी गूंजी। मुझे गंभीर चेहरे वाले रावण का चेहरा दिखाई दिया, जो जटिल मशीनरी को नियंत्रित करने में पूरी तरह से मग्न था, जब वह विशाल लोहे का पक्षी हमारे ऊपर से गुज़रा। लेकिन जिस चीज़ ने मेरा नशा उतार दिया, वह थी एक महिला की झुकी हुई आकृति, जिसका सिर झुका हुआ था और जो स्पष्ट रूप से रो रही थी, जब वह लोहे का पक्षी चीखती हुई भीड़ के ऊपर से गुज़रा। डूबते सूरज की लालिमा में उस महिला का सुंदर चेहरा साफ़ दिखाई दिया। मेरे शरीर में एक सिहरन दौड़ गई। यह मेरे भूले हुए अतीत का एक चेहरा था। क्या यह मंदोदरी थी? वह बिल्कुल रानी जैसी दिखती थी जब वह जवान थी, लेकिन उसकी त्वचा का रंग कहीं ज़्यादा गहरा था। इतने सालों बाद भी वह बिल्कुल वैसी ही दिख रही थी। 'राजा इस बार क्या करने वाले हैं?' मुझे नहीं पता था। मुझे बस इतना पता था कि मेरे पैरों की उंगलियों से लेकर पैरों तक डर मुझ पर छा गया था। सहज रूप से मुझे पता था कि कोई मुसीबत आने वाली है - बड़ी मुसीबत।

40 अलविदा मारिचा!
रावण
मरीचा मर चुका था। दरअसल, उसकी बेरहमी से हत्या कर दी गई थी और इसके लिए मैं ज़िम्मेदार था। मैं उसे बचाने में नाकाम रहा। यह एक खतरनाक और मूर्खतापूर्ण योजना थी। एक साहसी किशोर की तरह, मैंने बिना सोचे-समझे इसमें कदम रख दिया और उसे खो दिया। उसने मुझे ऐसा न करने की सलाह दी थी। मैंने राम से अपनी बेटी को छीन लिया, लेकिन अपने प्यारे मामा की बलि दे दी। अब सोचता हूँ तो लगता है कि पूरा मिशन ही मूर्खतापूर्ण था। पिछली शाम अपने दरबार में बिना स्तनों और नाक वाली चीखती हुई सूर्पनखा को देखकर मैंने तुरंत प्रतिक्रिया दी थी।
पूरी सभा स्तब्ध रह गई थी। कुछ मिनटों तक हम समझ ही नहीं पाए कि वह क्या बड़बड़ा रही है। वह हिस्टीरिया और सदमे में थी, और उसे कुछ समझ आने में लगभग आधा घंटा लग गया। जब मुझे उसकी बात समझ आई, तो मैं गुस्से से आग बबूला हो गया। 'उस तुच्छ आदमी की हिम्मत कैसे हुई मेरी बहन पर हाथ उठाने की?' और वह बहुत दयनीय लग रही थी। वह जवानी में भी कभी सुंदर नहीं थी, लेकिन अब, तीस के दशक के अंत में, कटी हुई नाक के साथ, वह बदसूरत दिख रही थी। वह बड़बड़ा रही थी कि कैसे उसने जंगल में दो पुरुषों के साथ घूमती हुई एक सुंदर स्त्री को देखा और उससे बस इतना पूछा कि क्या वह स्त्री उसके भाई, असुर सम्राट की पत्नी बनने को तैयार होगी। इस पर, उस युवक ने उस पर हमला कर दिया और जो हुआ वह अब सबके सामने था। वह तब तक चीखती रही जब तक कि मेरा आपा नहीं टूट गया और मैंने उसके चेहरे पर एक जोरदार थप्पड़ मार दिया। तब वह एकदम शांत हो गई। मैंने उसके कंधों पर हाथ रखकर सुलह करने की कोशिश की, लेकिन वह मुझे कोसते हुए और अपने ऐसे कायर भाई पर विलाप करते हुए गुस्से में बाहर चली गई।

पहले जब मैंने उन्हें आखिरी बार देखा था, तब से दोनों भाई और भी सांवले और बूढ़े हो गए थे। मेरी नज़र में वे काले और बदसूरत लग रहे थे, हालाँकि राम के चेहरे पर अभी भी कुछ चमक थी। 'देव राजकुमार इतने सांवले कैसे हो सकते हैं? मैं तो उनसे ज़्यादा गोरा था।'
“मैं राम का ध्यान राजकुमारी से हटा दूँगा। मुझे लगता है तुम छोटे वाले को संभाल लोगे,” मारीचा ने मेरे कान में फुसफुसाया और पलक झपकते ही जंगल में गायब हो गया। मैं उसे बताना चाहता था कि मैं दोनों को संभाल सकता हूँ, लेकिन वह जा चुका था। उसके बाद मैंने उसे कभी नहीं देखा। जैसा कि मैंने कहा, यह एक मूर्खतापूर्ण और जल्दबाजी वाली योजना थी, जो मारीचा जैसे अनुभवी व्यक्ति के स्वभाव के बिल्कुल विपरीत थी। और ऐसा भी नहीं था कि मुझमें अनुभव की कमी थी। लेकिन उस दिन, चाहे इसे नियति कहो या भाग्य, गलतियाँ बढ़ती ही जा रही थीं। मैं लगभग दो घंटे से इंतज़ार कर रहा था और अधीर हो रहा था। ‘क्या मुझे अंदर जाकर उन्हें मार गिराना चाहिए और अपनी बेटी को ले जाना चाहिए?’ मैंने लगभग ऐसा करने का फैसला कर ही लिया था कि तभी नदी के दूसरे किनारे पर मुझे अचानक एक चमक दिखाई दी। मैं मंत्रमुग्ध होकर देखता रहा। यह एक सुनहरा हिरण था। केवल उसका अगला भाग और घुमावदार सींग ही दिखाई दे रहे थे, लेकिन वह स्वर्ग के किसी प्राणी जैसा लग रहा था। उसने मधुर स्वर में भौंका और झाड़ियों में गायब हो गया।
दोनों पुरुष और सीता तुरंत मुड़े और शोर के स्रोत की ओर देखा। जंगल में सन्नाटा पसरा हुआ था, बस हवा में पत्तों की सरसराहट और पक्षियों की चहचहाहट सुनाई दे रही थी। तभी सुनहरा हिरण उछला और झाड़ियों में गायब हो गया। सीता खुशी से चिल्लाईं। मैंने देखा कि लक्ष्मण ने अपना धनुष उठाया हुआ था और बाण झाड़ी की ओर था। कुछ क्षणों तक राम और सीता मंत्रमुग्ध होकर देखते रहे। बहुत देर बाद हिरण फिर से दिखाई दिया। लक्ष्मण के धनुष से एक बाण निकला और उस पेड़ को भेद गया जिसके नीचे हिरण कुछ सेकंड पहले था। धंसा हुआ बाण कंपन करने लगा। मैंने उन्हें नए सम्मान से देखा। 'भले ही वे असभ्य हों, लेकिन वे अच्छे धनुर्धर हैं और उन्हें अच्छा प्रशिक्षण मिला है,' मैंने सोचा। मैं लगभग जोर से हंस पड़ा। मैं जानता था कि मारीच ही वह हिरण था और वह इतना कुशल था कि उसे तीर से नहीं मारा जा सकता था। मारीच ने जरूर किसी हिरण को मारकर उसकी खाल उतारी होगी और उसके पीछे छिपा होगा। यह एक शानदार और सरल छलावा था। मैंने सीता को लक्ष्मण को डांटते और फिर राम से

सार्थक था?' तुमने जो रक्त बहाया है, वह तुम्हें और इस देश को वर्षों तक सताता रहेगा, हम सबके चले जाने के बाद भी। तुम वह देवत्व अपने पास रखो जो तुमने कुटिल साधनों से प्राप्त किया है और मैं अपना पुरुषत्व बनाए रखूँगा और एक योद्धा की मृत्यु मरूँगा।
मैं वहीं बैठकर मन ही मन सोच रही थी कि लक्ष्मण को मार डालूँ या नहीं, तभी मुझे एक दिल दहला देने वाली चीख सुनाई दी। लक्ष्मण और सीता ने भी उसे सुना और हम सब चौंक गए। मैंने उस आवाज़ को पहचान लिया। लेकिन तब मुझे नहीं पता था कि यह मेरे प्यारे मामा की मृत्यु की चीख थी। मैं जम गई, समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूँ। मैंने सोचा कि शायद यह योजना का हिस्सा ही होगा। मैंने सीता की चीख सुनी और फिर लक्ष्मण की ऊँची आवाज़। मैंने देखा कि वह उसी दिशा में चल पड़ा है जिधर उसका भाई गया था। फिर भी मैं हिचकिचा रही थी। 'क्या मुझे उसका पीछा करके मारीच को बचाना चाहिए अगर वह सचमुच खतरे में है?' लेकिन मारीच तो अनुभवी था। वह अपना ख्याल रख सकता था। तब मैं तेज़ी से आगे बढ़ी। मैंने अपने हथियार छिपा लिए क्योंकि मैं सीता को डराना नहीं चाहती थी। मैंने अपने गहने उतारकर कमर पर बाँध लिए। माथे पर पहले से ही शिव के किसी भक्त की तरह राख के निशान थे, लेकिन राजसी आभूषणों के बिना, मैं जानती थी कि मैं भिक्षा माँगने वाले साधु जैसी दिख रही हूँ।
मैं उसके पास ही था जब उसने मुड़कर मेरी ओर देखा। उसकी उन सुंदर, गहरी आँखों ने मुझे देखा और मेरा गला भर आया। मैं उसे छूना चाहता था और उसे अपनी बाहों में लेना चाहता था। 'सीता, मेरी बेटी! सीता, मेरी नन्ही बेटी!' मैं मुँह फेरकर आँखें बंद करके खड़ा रहा। मैं खुद को मार डालना चाहता था। 'मैंने उसे क्यों त्याग दिया? मैं उसे क्यों भूल गया? मैंने उसका पूरा बचपन खो दिया। मैंने मिथिला पर आक्रमण करके उसे वापस क्यों नहीं लाया?' शायद अगर मैंने जनक को सच बता दिया होता, तो यह रक्तपात टाला जा सकता था। जनक देव राजाओं में सबसे श्रेष्ठ, विद्वान और बुद्धिमान थे, वे शायद मेरी बेटी को मुझे लौटा देते। लेकिन मुझे उसके पति पर भरोसा नहीं था। मैं उन दोनों भाइयों ने मेरी बहन के साथ जो किया था, उसे माफ नहीं कर सकता था। सीता उनके साथ सुरक्षित नहीं थी और एक असुर राजकुमारी और रावण की बेटी, अपना जीवन जंगलों में भटकते हुए, भिखारी का जीवन जीते हुए बर्बाद नहीं कर सकती थी। मैंने जो कुछ भी हासिल किया था, स्वर्ण लंका, पूरा असुर साम्राज्य, सब उसका था। लेकिन अगर वह मेरे धन, मेरे राज्य, मेरे प्रेम को

पकड़ ली। मेरी तलवार छूट गई थी। एक और मोड़ होता तो वह नीचे आते हुए हम दोनों में से किसी को भी काट सकती थी। सीता पुष्पक से बाहर लटकी हुई थी और हवा चीखती हुई गुजर रही थी। मैंने उसे एक जोरदार झटके से अंदर खींच लिया और मशीन और भी ज्यादा डगमगा गई। यह सब कुछ पल भर में हो गया। फिर मैंने अपनी बेटी की पतली कमर को कसकर पकड़ लिया और एक पैर से अपने चंद्रहास को ऊपर खींच लिया। एक हाथ में तलवार लिए, मैंने पूरी ताकत से पक्षी पर वार किया और उसके टुकड़े नीचे गिरते देखे। धरती तेजी से करीब आ रही थी और मुझे पेड़ों के पत्ते साफ दिखाई दे रहे थे। मैं पूरी ताकत से पक्षी पर वार करता रहा, जबकि मशीन बेकाबू होकर हिल रही थी। अगर पाल खुल गए, तो हमें इस दुनिया से जाना पड़ेगा।
आखिरकार, चिड़िया, या उसका जो भी बचा-खुचा हिस्सा था, नीचे गिर गया। हम पर उसके खून के छींटे पड़े। मैंने हाथ फैलाकर मशीन को सीधा करने के लिए लीवर को ज़ोर से खींचा। पंखे नहीं घूम रहे थे। मैंने धक्का दिया और खींचा, लेकिन वह रुक गई थी। ऊँचे पेड़ इतने पास थे कि मैं देख सकती थी कि चिड़ियाएँ पास आती उस विशाल, लोहे की चिड़िया को देखकर डर के मारे फड़फड़ा रही थीं। 'बस, यही था,' मैंने सोचा, 'कहीं दूर सुनसान जगह पर एक अपमानजनक मौत, वो भी तब जब मुझे मेरी बेटी वापस मिल गई है!' मेरी पूरी ज़िंदगी मेरी आँखों के सामने से गुज़र गई। मैं बेबस होकर देखती रही। सीता की अचानक सिसकी ने मुझे चौंका दिया। 'नहीं, मैं उसे मरने नहीं दे सकती। वह जवान है, अपनी जवानी के चरम पर है। क्या मैंने उसे उसके पति से बचाया, सिर्फ़ उसे मरवाने के लिए?' मैंने अपनी पूरी ताकत से लीवर को ऊपर-नीचे किया और आखिरकार पंखा थोड़ा सा चला। मैंने एक बार फिर खींचा और धक्का दिया, और एक झटके के साथ पंखा घूमने लगा। मैंने राहत की साँस ली, लेकिन फिर अचानक डर से आँखें खोल दीं। 'नहीं, बहुत देर हो चुकी थी! ब्लेड पेड़ों की चोटियों को काट रहे थे।' क्या हम पहुँच पाएँगे? हे शिव!’ धीरे-धीरे, बहुत धीरे-धीरे, मशीन ऊँचाई पर चढ़ने लगी। हम सबसे ऊँचे पेड़ से कुछ ही फ़ीट ऊपर थे। मैं उसे ऊपर धकेलती रही। दस फ़ीट… बीस… और जब मुझे लगा कि हम पहुँच गए हैं, तभी मुझे सामने एक विशाल चट्टान दिखाई दी। हम सीधे उसी की ओर बढ़ रहे थे। ‘क्या हम उसे पार कर पाएँगे?’ मुझे बहुत पसीना आ रहा था और मेरी उंगलियाँ दुख रही थीं। चट्टान अब सिर्फ़ बीस फ़ीट दूर थी, लेकिन मुझे अभी भी ऊपर पहुँचने के लिए तीस फ़ीट की ऊँचाई

चढ़नी थी। पंखा लगभग चट्टान को छू ही गया था। और जैसे ही मुझे लगा कि हम उससे टकरा जाएँगे, पुष्पक ने कुछ इंच के अंतर से चट्टान को पार कर लिया। मैं लगातार ऊंचाई पर चढ़ता रहा और जब आखिरकार मैं अपनी निर्धारित उड़ान की ऊंचाई पर पहुंचा, तो मैंने पंखा समेट लिया और पाल खोल दिए। मैं थका हुआ और राहत महसूस करते हुए वापस लौटा। मेरी बेटी पत्थर की तरह बैठी रही और मुझे उस पर तरस आया। तभी मुझे मारीचा की याद आई। मैंने उसे खो दिया था। यह बात मुझे बिजली के झटके की तरह लगी। अपने-अपने शोक और हानि के मौन संसार में, पिता और पुत्री, इतने करीब होते हुए भी इतने दूर, लंका की ओर उड़ान भर रहे थे।
जब सीता की नज़र पहली बार लंका पर पड़ी, तो उसके चेहरे पर विस्मय का भाव स्पष्ट दिखाई दिया। एक पल के लिए वह अपना दुःख भूल गई। मेरा हृदय गर्व से भर गया। मैं उसे अपने सारे वैभव दिखाना चाहता था। 'सीता, मेरी पुत्री, देखो तुम्हारी लंका!' वहाँ वह स्वर्ण महल था जहाँ वह निवास करेगी। मैं चाहता था कि वह बागों को देखे और ताज़े समुद्र की सुगंध को महसूस करे; जगमगाते बाज़ारों और हरे-भरे धान के खेतों को देखे; लहराते नारियल के पेड़ों और मसालों के बागानों को देखे; मेरे चौड़े राजसी रास्तों और ऊँचे-ऊँचे महलों को देखे। वह यह सब देखे और अपने पति के उस तुच्छ घर से तुलना करे जिसे वह महल कहता था। लेकिन मैं चुप रहा। मैं बस उसकी विस्मय से भरी आँखों को देखता रहा, जैसे ढलते सूरज की किरणें मेरे महल के स्वर्ण गुंबद पर पड़ रही हों और मैंने लोहे के पक्षी को बिना किसी घटना के उतारा। पंखा पूरी तरह रुकने से पहले ही, मैं सीता के बारे में सब कुछ भूलकर कूद गया। मंदोदरी दौड़ती हुई आई, उसके पीछे त्रिजटा और मेघनाद भी थीं। वे हमारे मेहमान को देखने के लिए उत्सुक थीं।
मेरी चाची अपने पति को ढूंढ रही थीं, लेकिन मैंने नज़रें फेर लीं। वह भयानक पल आ चुका था और मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ। मैं सुन्न पड़ गई थी। मारीच मर चुका था। यही मेरे दुर्भाग्यपूर्ण सफर की कड़वी सच्चाई थी। जंगल के भीतर कहीं गहरे में, वह बूढ़ा मृत पड़ा था। मैंने उसे उन दो बर्बरों के भरोसे छोड़ दिया था। उस समय, मैंने उसके बारे में, या उस निस्वार्थ प्रेम और बलिदानों के बारे में नहीं सोचा था जो उसने मुझे वह बनाने के लिए किए थे जो मैं आज हूँ। मैंने उसकी चीख सुनी थी, फिर भी मैं हिली नहीं। मैंने राम के बाण को उसकी थकी हुई बूढ़ी चमड़ी को भेदते हुए सुना और जान लिया कि अपने

जीवन के अंतिम क्षणों में भी वह मेरे बारे में सोच रहा था। फिर भी मैं हिली नहीं। लक्ष्मण के लिए उसकी पुकार राम की आवाज़ जैसी थी, इसलिए सीता ने उसे अपने भाई की खोज में जाने के लिए विवश किया था। और मैंने सीता को पकड़ा और मारीच के बारे में सोचे बिना जल्दी से वापस आ गई। वापसी की उस रोमांचक यात्रा और अपनी बेटी को लंका वापस लाने की खुशी ने मारीच की मृत्यु के काले विचारों को दूर रखा था। लेकिन जैसे ही मैंने अपनी चाची का चेहरा देखा, असफलता, अपराधबोध और खुद को बेकार समझने की भावनाएँ मुझ पर हावी हो गईं। मैंने उन्हें गले लगाया और अपने आँसू रोकने के लिए अपने होंठ कसकर बंद कर लिए। उन्होंने मेरी आँखों में देखा, जो साफ़ दिख रहा था उसे समझ लिया और मेरी बाहों में गिर पड़ीं।
सीता ने मेरे महल में प्रवेश करने से इनकार कर दिया। उसने अशोक वृक्ष के नीचे एक छायादार कोने में अपना घर बना लिया, जहाँ मेघनाद बचपन में खेला करती थी। यह तब हुआ जब मैं उसे अपने महल में लाने के अपने सभी प्रयासों में असफल रहा और थके-हारे त्रिजटा को उस पर नज़र रखने के लिए कहा। यह तब हुआ जब मैं अपने कमरे में बंद होकर अपने नुकसान पर रोया था।
मेरे प्रिय मित्र और सलाहकार, मारीचा; मैंने उनकी शोक संतप्त विधवा और अपनी संशयवादी पत्नी को यह समझा दिया था कि मैंने मारीचा को बर्बरों के भरोसे क्यों छोड़ दिया था; और उनके जाने के बाद, मैं अपने चाचा को निराश करने के अपराधबोध को दबा नहीं पा रहा था।
रात बीतती गई और मैं बिस्तर पर करवटें बदलता रहा। रात चाँदनी रात नहीं थी और उमस भरी थी। मुझे महसूस हुआ कि मंदोदरी भी सोई नहीं थी। मैं उसके करीब गया और उसे छुआ, लेकिन वह हिली नहीं। मैं उसकी प्रतिक्रिया का इंतजार करता रहा। मैं चाहता था कि वह मुझे गले लगाए और कहे कि मैंने जो किया वह सही था। लेकिन वह हिली नहीं। धीरे-धीरे मैंने अपना हाथ पीछे खींच लिया और उससे मुंह फेर लिया।
मैं अचानक चौंककर जाग गया। मुझे लगा जैसे मैंने रोने की आवाज़ सुनी हो। वो मंदोदरी की आवाज़ नहीं थी। 'क्या मैंने ऐसा सोचा था?' मैं खिड़की के पास गया और बाहर झाँका। बाहर घना अंधेरा था। बगीचे में कुछ बुझती हुई मशालें रात के अंधेरे को और भी गहरा कर रही थीं। फिर, बिना किसी चेतावनी के, बारिश शुरू हो गई। मशालें फुफकारते हुए बुझ गईं और कहीं, एक खिड़की आगे-पीछे

[illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

41 पुलिस स्टेशन
भद्र
आज मैंने एक अजीब नज़ारा देखा और सोचने लगा कि क्या मुझे इसकी सूचना सरकार के किसी बड़े अधिकारी को देनी चाहिए। काफी रात हो चुकी थी। मैं दिन भर इधर-उधर भटकता रहा और मोटे व्यापारी के रथ की सफाई करके जो थोड़े-बहुत पैसे कमाए थे, वो ताड़ी पीने में खर्च कर दिए। मुझे भूख लगी थी, पर घर में खाने को कुछ नहीं था। दरअसल, लगभग छह महीने हो गए थे जब मैंने अच्छा खाना खाया था।
मुझे मारीचा का भव्य अंतिम संस्कार याद आया। शुरुआत में हममें से किसी को नहीं पता था कि राजकुमार मारीचा की मृत्यु कैसे हुई। वे वृद्ध थे, लेकिन बीमार नहीं थे, और आखिरी बार जब मैंने उन्हें उनके काले घोड़े पर सवार देखा था, तो वे चुस्त-दुरुस्त लग रहे थे। उनकी मृत्यु हमारे लिए एक गहरा सदमा थी। आधिकारिक सूचना में कहा गया था कि मारीचा की मृत्यु वृद्धावस्था के कारण हुई है, और उनका निधन असुर साम्राज्य की उत्तरी सीमा के पास, मुख्य भूमि पर हुआ था। कहा जाता है कि मारीचा का अंतिम संस्कार वहीं किया गया था। अपनी मृत्यु से पहले वे इतनी दूर कैसे और क्यों पहुँचे, यह एक और रहस्य था। लोगों ने उन्हें ठीक एक दिन पहले ही देखा था और किसी भी व्यक्ति के लिए इतनी विशाल दूरी इतनी जल्दी तय करना असंभव था। माया सभ्यता के जादुई पक्षी की उड़ान के बारे में तरह-तरह की बातें हो रही थीं। कुछ लोगों का दावा था कि उन्होंने सम्राट को मारीचा को इस लोहे के पक्षी में उत्तर की ओर उड़ते हुए देखा था। लेकिन वास्तव में इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। हमारे पास खड़े होकर गपशप करने का समय नहीं था क्योंकि मेरी पत्नी और मैं महल की ओर जल्दी से बढ़ रहे थे जहाँ हमने सुना था कि उस दिन गरीबों को भरपेट भोजन कराया जाएगा और नए कपड़े भी दिए जाएंगे।

आधी रात तक, हम सभी, चाहे पुरुष हों या महिला, नशे में धुत थे। विभिन्न स्थानों पर हुए झगड़ों में चार लोग मारे गए, लेकिन हमें अगले दिन तक इसकी जानकारी नहीं मिली। वैसे भी मुझे इसकी परवाह नहीं थी। मेरी हालत दिन-ब-दिन बदतर होती जा रही थी। मैंने जो पैसा कमाया था, वह एक हफ्ते में खत्म हो गया। इसका अधिकांश हिस्सा शराबखाने में चला गया, लेकिन माला ने मेरी जानकारी के बिना कुछ बचा लिया। जब मुझे पता चला, तो उसे इसका भारी खामियाजा भुगतना पड़ा। मैंने चीखती-चिल्लाती माला से उसे छीन लिया और ताड़ी की दुकान की ओर भागा। वह आखिरी दिन था जब मैंने जश्न मनाया।
अगली सुबह से ही भूख हमारा पीछा करती रही, मानो एक दृढ़ परछाई हो। कभी-कभार मुझे कुछ छोटे-मोटे काम मिल जाते और हम खाना खा लेते। लेकिन, भूख ही सबसे बड़ी समस्या थी। हम निर्धन थे। धीरे-धीरे सच्चाई समझ में आने लगी। शायद ब्राह्मणों द्वारा पिछले जन्म और कर्मों के बारे में कही गई बातों में भी कुछ सच्चाई थी। हम अपने पिछले जन्मों के बुरे कर्मों का फल भोग रहे होंगे। अधिकतर लोग गरीब थे, इसलिए पिछले जन्मों में कई पापी रहे होंगे। लेकिन सभी नहीं। व्यापारी वर्ग, नौकरशाह और सरकारी कर्मचारी, अभिनेता और संगीतकार, सभी दिन-प्रतिदिन अमीर होते जा रहे थे। हमने आलीशान घर बनते देखे और चमकदार कपड़ों और फैशनेबल जूतों की दुकानों में सुंदर लोग चमचमाती गाड़ियों में आते-जाते देखे; उनके घरों में असली छतें और बैठने के लिए फर्नीचर थे; पश्चिम के दूर देशों से लाए गए कालीन, जिनकी कीमत से पूरे गांव का कई सालों तक पेट भर सकता था; होशियार बच्चे ऐसे गुरुओं के पास जाते थे जो केवल अमीरों की संतानों को ही शिक्षा देते थे, और इसी तरह। थिएटर भी थे, लेकिन अगर हम उनके पास जाने की हिम्मत करते तो पुलिस हमें भगा देती थी। एक समय था जब मैं पढ़ना-लिखना जानता था। मैं एक प्रशिक्षित योद्धा भी था। या ये सब एक बूढ़े आदमी का भ्रम था जो व्यर्थ ही बीते समय की शान और वीरता के कारनामों की कल्पना कर रहा था? मुझे यकीन नहीं था। अब मेरी हालत देखकर, मेरा दुबला-पतला शरीर, फटी त्वचा, झड़ते बाल और पिचके गाल देखकर कोई भी यकीन नहीं करता कि मैं कभी योद्धा था। अब मैं मुश्किल से ही पढ़ पाता था। वैसे भी अब इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। मेरी उम्र पचास साल से ज़्यादा हो चुकी थी और करने को कुछ बचा ही नहीं था। एक दिन मुझे भी चार लोग उठाकर ले जाएंगे और जला देंगे। ऐसा नहीं था कि मैं ऐसी यात्रा की प्रतीक्षा कर रहा था, हालांकि मैं अक्सर यह इच्छा व्यक्त करता था। मैं चाहता था कि मेरी

पत्नी मुझे यह कहकर दिलासा दे कि मैं मरने के लिए बहुत छोटा हूँ। लेकिन हाल ही में मैंने पाया कि मेरी मृत्यु के बारे में किसी भी टिप्पणी पर उसकी कोई प्रतिक्रिया नहीं होती थी। शायद वह चाहती थी कि मैं मर जाऊँ। यह कोई बुरा विचार नहीं था। लेकिन मैं डरा हुआ था। मैं मरना नहीं चाहता था। मैं हमेशा जीवित रहना चाहता था।
घर लौटते समय, मैं सड़कों पर जगमगाती रोशनी को देखकर दंग रह गया, जिनसे रंग-बिरंगी परछाइयाँ और प्रतिबिंब बन रहे थे। एक खूबसूरत महिला के गुजरने पर मुझे इत्र की खुशबू आई। हल्का-हल्का संगीत गूंज रहा था। कुछ परिवार फुटपाथ पर बिस्तर लगा रहे थे। बेचारे! शायद वे ग्रामीण इलाकों या भारत की मुख्य भूमि से आए थे। उन्हें जल्द ही यहाँ से भगा दिया जाएगा। ऐसे गंदे लोगों के लिए फुटपाथ सोने के लिए बहुत ही सुंदर जगह थी। मैं बाज़ारों से होते हुए नदी किनारे बसे अपने घर की ओर चल पड़ा। हज़ारों मसालों की तीखी और तेज़ गंध मेरी नाक में घुस गई। दुकानदार अपनी दुकानें बंद कर रहे थे। कुछ मोटे दुकानदार पैसे गिन रहे थे। दुकानों के बाहर तैनात गुंडे मुझे घूर रहे थे, जब मैं बिना आँखें मिलाए जल्दी से उनके पास से गुजर गया। बाज़ार के अंत में मैं बाईं ओर मुड़ गया। सड़ी हुई सब्ज़ियों और फलों की बदबू से उस कोने में एक खास गंध आ रही थी। कुछ कुत्ते कूड़े में खाना ढूंढ रहे थे। एक कुत्ता हिचकिचाते हुए मुझ पर भौंका। मैं एक पत्थर उठाने के लिए झुका और कुत्ता दुम दबाकर मेरे पास से तेज़ी से निकल गया। इन दिनों वही एक प्राणी था जो मुझसे डरता था।
दूर से रावण का किला भव्य और अभेद्य प्रतीत हो रहा था। मेरा पुत्र अथिकय शायद अपने स्वामी, राजकुमार मेघनाद के साथ रहा होगा। धिक्कार है! उसे देखे हुए लगभग छह महीने हो गए थे। यह याद करके बहुत पीड़ा हो रही थी कि वह वास्तव में महल का था और मैं केवल उसका रखवाला था। काश मैं पूर्णा नदी के किनारे बसे अपने गाँव में ही रहता और मेरा परिवार, मेरी पत्नी और बेटी जीवित रहते; काश उन दुष्ट देवताओं ने हमारे गरीब गाँव पर हमला न किया होता? मेरा जीवन निश्चित रूप से बेहतर और अलग होता। इसके बजाय, मैंने एक राजा के सपने के लिए लड़ाई लड़ी, और अपने जीवन का अधिकांश भाग रावण जैसे दुष्टों को धन, यश और शक्ति में मग्न रहने के लिए दे दिया। अफसोस, मेरे जीवन में बहुत से पछतावे थे और ऐसा लग रहा था जैसे मेरा जीवन अपनी मर्जी से चल रहा हो। कम से कम मेरा पुत्र भरपेट खाता था। वह एक राजकुमार की तरह रहता था। लेकिन इस

विचार से मुझे कोई सांत्वना नहीं मिली। 'केवल वही क्यों? मैं क्यों नहीं?' मैं कड़वाहट से भर गया और एक बार फिर उस जगमगाते महल की ओर देखा। तभी मैंने वह अजीब दृश्य देखा। मैं रुक गया और देखता रहा। पहले तो मुझे समझ नहीं आया कि क्या है। कोई चीज़ किले पर चढ़ रही थी। कोई चोर? भला कौन मूर्ख चोर इतने शक्तिशाली असुर सम्राट के महल में घुसने की हिम्मत करेगा? पकड़े जाने पर उसकी खाल उतार दी जाएगी। मैंने कुछ मिनट इंतज़ार किया कि कहीं कोई हलचल तो नहीं होती, लेकिन सन्नाटा छाया रहा। शायद ताड़ी मेरी सोच से ज़्यादा तेज़ थी। मैं अपनी नज़रें हटाकर अपनी बेकार ज़िंदगी में लौटने ही वाला था कि तभी मैंने उसे देखा।
वह चमकते महल की पृष्ठभूमि में बस एक परछाईं जैसा दिख रहा था और मैं उसका चेहरा नहीं देख पा रहा था। लेकिन वह एक हट्टा-कट्टा आदमी था और किले की चोटी पर खड़ा होकर महल का जायजा ले रहा था, उसके कंधे पर एक विशाल गदा थी। 'यह कौन है?' अचानक मुझे महान वानर राजा बलि याद आ गए। यह आदमी उनसे मिलता- जुलता था। लेकिन वानर राजा असुर सम्राट के महल में चुपके से क्यों प्रवेश करेंगे? मुझे वे अफवाहें याद आईं कि महान वानर राजा की मृत्यु हो गई थी, किसी देव शिकारी ने पेड़ के पीछे छिपकर चुपके से उन्हें मार डाला था। जब इस आदमी ने अपना सिर घुमाया, तो उसके कान में पहनी हुई कीमती बाली से रोशनी चमक उठी। 'नहीं, यह बलि नहीं है!' फिर, वानरों जैसी फुर्ती से वह आदमी नीचे कूद गया और मैंने पेड़ों की छतरी को उसके प्रभाव से हिलते हुए देखा। सन्नाटा छा गया और मैं जम गया। कोई रावण के महल में घुस गया था। मैं वहीं असमंजस में खड़ा रहा। 'क्या मुझे किसी को सूचित करना चाहिए?' या फिर मुझे घर जाकर सो जाना चाहिए?’ अगर कोई राजा के महल में घुस गया, तो यह राजा की समस्या थी। मुझे इससे क्या लेना-देना? तभी बहुत समय पहले देवताओं द्वारा मेरे घर में इसी तरह घुसने की घटना मेरे दिमाग में कौंध गई और मैं उसी रास्ते वापस भागा जिससे आया था। मुझे किसी ऐसे व्यक्ति को ढूंढना था जो इस बारे में कुछ कर सके। खतरा मंडरा रहा था।
जब तक मैं रॉयल एवेन्यू पर पुलिस चौकी पहुँचा, तब तक मेरी साँसें कुत्ते की तरह फूल रही थीं। लेकिन थाने के पास पहुँचते ही मैं झिझक गया। अंदर एक मशाल तेज़ी से जल रही थी और चार गार्ड एक साथ huddled होकर पासे का खेल खेल रहे थे। एक मोटा पुलिस सार्जेंट दोनों पैर मेज पर रखकर सो रहा था। एक कोने में तेज़ जल रही मशाल के चारों ओर मक्खियाँ भिनभिना रही थीं।

“सर,” मैंने पुकारा। कोई जवाब नहीं आया। “सर,” मैंने फिर पुकारा। एक गार्ड ने अपना सिर उठाया और आश्चर्य से उसकी आँखें बड़ी हो गईं। मैं डर के मारे काँपने लगा। ‘मैं अपराधी नहीं हूँ।’ लेकिन मैं गरीब था और यह उससे भी बड़ा अपराध था।
“तुम्हें क्या चाहिए?” गार्ड ने आरडी बार्केमे पर चिल्लाते हुए कहा। वह मेरे दखल से स्पष्ट रूप से चिढ़ गया था।
“सर, मैंने एक आदमी को देखा…”
“मैंने भी,” और वह अपने ही दयनीय हास्यबोध पर हँस पड़ा, बाकी लोग भी उसके साथ हँसने लगे। सार्जेंट ने अपनी आँखें खोलीं, कुछ बार पलकें झपकाईं और फिर नींद में डूब गया। मैं वापस जाना चाहता था। राजा को अपनी जान बचाने दो। इसलिए मैं बाहर जाने लगा। “अरे! तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई यहाँ एक बेवकूफी भरी कहानी लेकर आने की और फिर चले जाने की,” गार्ड मुझ पर चिल्लाया। “मैंने आपको गाली नहीं दी, महोदय।” मैंने अपनी गरिमा बनाए रखने की कोशिश की।
“क्या तुम मुझसे पलटकर जवाब दे रहे हो?” और इसके बाद जो हुआ वह बिल्कुल अप्रत्याशित था।
पलक झपकते ही वह मुझ पर टूट पड़ा और मेरे पैरों के बीचोंबीच एक लात मार दी। मैं गिर पड़ा, क्रोध, शर्म और दर्द के आँसुओं से मेरी आँखें धुंधली हो गईं। बाकी पहरेदार अपना खेल छोड़कर चले गए थे। उन्हें मुझसे बेहतर मनोरंजन मिल गया था। "अरे भिखारी, अरे बदमाश, इस समय शाही सड़क पर क्या कर रहे हो?" मैंने अगले वार को रोकने की कोशिश की, लेकिन मैं बहुत कमजोर था। “महाराज, महाराज, कृपया मेरी बात सुनिए। कोई महल में घुस आया है।” मेरे चेहरे पर एक जोरदार प्रहार हुआ और मैं ज़मीन पर गिर पड़ा।
ज़मीन पर। पुलिसवाले मुझे लात-घूंसे मार रहे थे और मैं ज़मीन पर हाथ-पैर मार रही थी। फिर अचानक सब रुक गया। जब मैंने सिर उठाया, तो सार्जेंट मेरे ऊपर खड़ा था। उसने मेरे कम बालों से मुझे ऊपर खींचा और मैं पीली पड़ गई। फिर उसने मुझे अपनी मेज़ की तरफ धकेला और मैं ज़मीन पर गिर पड़ी। मैंने ऊपर देखा तो उसका भारी शरीर मेज़ पर टिका हुआ था। उसके भारी वज़न से मेज़ चरमरा रही थी, लेकिन मुझे वो आवाज़ सुकून देने वाली लगी। शायद मेज़ टूट जाएगी। “बताओ।” उसने आदेश दिया। मैं चुप रहा तो उसने मुझे लात मारी। फिर मैंने गाना गाया। मैंने उसे बताया कि मैंने क्या देखा था। उसके चेहरे पर शिकन आ

गई। वह कुछ चबाता रहा और सोचता रहा। फिर उसने पहरेदार से कहा, “जाओ और महल के मुख्य रक्षक को बताओ।” फिर, बाद में सोचते हुए उसने कहा, “इस आदमी को जेल में डाल दो। यह बुरी तरह नशे में है।”
बाकी दो गार्ड मुझे घसीटते हुए कोने में बनी उस गंदी कोठरी तक ले गए और मुझे एक कोने में फेंक दिया। उन्होंने कोठरी को ताला लगाने की ज़हमत भी नहीं उठाई और अपने खेल में वापस लग गए। वह दूसरा गार्ड, जिसे इस काम पर भेजा गया था, मुझे कोसते हुए महल के गार्डों की तलाश में बाहर चला गया। मैंने खुद को कोसना शुरू कर दिया कि मैं कितना ज़्यादा सावधान था। 'राजा अपने महल के साथ क्या करता है, इससे मुझे कोई लेना-देना नहीं है।' मैं कितना मूर्ख था! कोठरी के दूसरे कोने में कोई मामूली बदमाश लेटा हुआ था। मोटा सार्जेंट अपनी कुर्सी पर आराम से बैठ गया था और फिर से खर्राटे ले रहा था। मुझे ऐसी जगहों पर दर्द हो रहा था जिनके बारे में मुझे पता भी नहीं था। मैं कितना मूर्ख था! मैं वहीं बैठा अपनी किस्मत और अपने मूर्खतापूर्ण, जल्दबाज़ी वाले कामों को कोसता रहा और धीरे-धीरे नींद में डूब गया।
जब मैं जागा, तब लंका जल रही थी।

42 मृत्यु का दूत
रावण
मेरे बगीचे में चीख-पुकार और शोरगुल से मेरी नींद खुली। लोग इधर-उधर बेतरतीब ढंग से भाग रहे थे। पहरेदार एक-दूसरे पर चिल्ला रहे थे और गालियां दे रहे थे। महल सैकड़ों जलती हुई मशालों से जगमगा रहा था। मंदोदरी जाग रही थी और असमंजस में दिख रही थी। मैंने दरवाजा खोला तो देखा कि पहरेदार बाहर बरामदे पर झुके हुए कुछ चिल्ला रहे थे। जैसे ही मैं उनके पास पहुंचा, वे एकदम चौकन्ने हो गए।
यह सब शोर किस बात का है?
एक वरिष्ठ रक्षक ने धीरे से झुककर प्रणाम किया। “महाराज, एक वानर-मानव राजमहल में घुस आया था और उस देव स्त्री से बातें कर रहा था। जब कुछ रक्षकों ने उसे पकड़ने की कोशिश की, तो उसने उनसे लड़ाई की और दो-तीन को मार डाला या गंभीर रूप से घायल कर दिया। अब वह पेड़ों के बीच गायब हो गया है।”
मैं स्तब्ध रह गया। मेरे महल के बगीचों में वानर-पुरुषों का घुसपैठ करना मेरी कल्पना से परे था। मुझे अपनी पुत्री सीता की चिंता सताने लगी। अशोक वृक्ष के नीचे वह असुरक्षित थी, हालांकि मेरे रक्षक पहरा दे रहे थे। फिर भी, मैं बेचैन था। बाली की हत्या के बारे में सुने हुए अभी मुश्किल से चार महीने ही बीते थे। वानर-पुरुषों के राजा को उस देव राजकुमार राम ने छल से मार डाला था। अब वानरों पर बाली के भ्रष्ट और व्यभिचारी भाई सुग्रीव का शासन था। मेरे दामाद द्वारा बाली की सत्ता हथियाने का तरीका घृणित था। उस कायर ने एक पेड़ के पीछे छिपकर बाली के हृदय में गोली मार दी थी। राम ने यह तब किया जब सुग्रीव अपने भाई के साथ एक हारी हुई लड़ाई में उलझा हुआ था, इस बात ने मुझे और क्रोधित कर दिया। 'मेरा दामाद किस प्रकार की नैतिकता और

सिद्धांतों का पालन करता है?' मुझे वानर राजा को उखाड़ फेंकने और अपने मित्र की मृत्यु का बदला लेने का मन कर रहा था। मैंने तो अपनी सेना और नौसेना को वानरों पर आक्रमण करने का आदेश भी दे दिया था। लेकिन मेरे पुत्र की पूरे भारतीय उपमहाद्वीप पर, समुद्रों से लेकर विशाल हिमालय तक, विजय प्राप्त करने के बाद, युद्ध की मेरी इच्छा कम हो गई। इसके अलावा, सुग्रीव मेघनाद को कर देने के लिए सहमत हो गया था, और मानसून भी शुरू हो चुका था। हमने योजना को स्थगित कर दिया।
लेकिन मानसून शुरू होते ही, सुग्रीव, जो अपनी दुष्ट प्रवृत्ति के लिए जाना जाता था, फिर से अपनी अय्याशी भरी जिंदगी में लौट आया। मुझे पूरा यकीन था कि अनुशासनहीन वानर-पुरुषों की सेना के साथ राम कोई मूर्खतापूर्ण दुस्साहस नहीं करेंगे। जाहिर है, मैं बहुत ही लापरवाह था। मेरे महल के बगीचे में मौजूद वानर-पुरुष इसका पर्याप्त प्रमाण था और मैंने अपनी दूरदर्शिता की कमी पर खुद को कोसा।
यह एक आपातकालीन स्थिति थी। परिषद की बैठक आवश्यक थी। मैंने अपनी पत्नी से दरवाजे और खिड़कियाँ बंद करने को कहा। मेरी इस असामान्य सावधानी से वह थोड़ी चिंतित लग रही थी, लेकिन मैंने उसकी बात अनसुनी कर दी और दरवाजा जोर से बंद करते हुए बाहर निकल गया। मैं मेघनादा के कक्ष की ओर बढ़ा, लेकिन वह खुला हुआ था। दरबार में अच्छी रोशनी थी और पहरेदार अपनी-अपनी जगह पर सावधान मुद्रा में खड़े थे। मेरे मंत्री आपस में उत्साहपूर्वक बातें कर रहे थे।
मैंने अपने बेटे का सुंदर चेहरा ढूंढते हुए पूछा, "राजकुमार मेघनादा कहाँ हैं?"
“महामहिम, वह पश्चिमी छोर पर खोज दल का नेतृत्व कर रहे हैं,” प्रहस्त ने उत्तर दिया।
“आखिर ऐसी सुरक्षा चूक कैसे हुई?” मेरे बोलते ही मेरा गुस्सा फिर से भड़क उठा। एकदम सन्नाटा छा गया और मैंने मुट्ठी से हथेली पर वार किया। “मुझे अभी जवाब चाहिए!” मैं चिल्लाई। जैसे ही चिंता गुस्से में तब्दील हुई, मुझे थोड़ी राहत मिली।
“जब पहरेदार सो रहे थे, तब वह पश्चिम की दीवार से चुपके से अंदर घुस आया। उसने उनकी हत्या कर दी और फिर अशोक-वन पहुँच गया। पहरेदारों के शव नाले में मिले, उनके गले कटे हुए थे,” प्रहस्त ने धीरे-धीरे कहा।

“बहुत खूब! वाह! एक भी असुर ने इस आदमी को रावण के किले में घुसते नहीं देखा? मेरे पहरेदार सोते-सोते मारे गए। मेरे पास 50,000 से ज़्यादा सैनिक हैं और एक अकेला वानर-पुरुष न सिर्फ़ नज़र से बच निकला बल्कि अभी तक पकड़ा भी नहीं गया है। आपकी सतर्कता और खुफिया तंत्र का यही हाल है।” मेरी इस तीखी आलोचना के बाद मैंने प्रहस्त और जंबुमाली को एक-दूसरे को घूरते देखा। “महामहिम, दरअसल, एक शराबी ने शाही रास्ते पर स्थित पुलिस चौकी में सूचना दी थी कि उसने एक आदमी को किले में चुपके से घुसते देखा था। लेकिन…” “लेकिन, प्रभारी अधिकारी अपनी सीट से हिलना नहीं चाहता था। कोई कार्रवाई नहीं हुई और मामले को नज़रअंदाज़ कर दिया गया। क्या आप मुझे यही बताना चाहते हैं?” मेघनादा कहाँ थी? मैं चिंतित हो रही थी। बंदर-आदमी कहीं भी छिपा हो सकता था। अंधेरे में पेड़ की चोटी से चलाया गया एक चालाक तीर मेरे बेटे के गले को भेद सकता था। यह एक खतरनाक खेल था। यह युद्ध नहीं था। यहाँ कोई नियम लागू नहीं होते थे और सबसे बुरी बात यह थी कि मेरे दुश्मन नैतिकता से रहित थे।
दरबार में एक अजीब सी खामोशी छाई हुई थी। बाहर से आवाज़ें आ रही थीं, लोग एक-दूसरे पर चिल्लाते और भागते हुए, तलवारों की खनक सुनाई दे रही थी। अचानक मुझे एक ज़ोरदार जयकार सुनाई दी। सबने ऊपर देखा। आवाज़ें पुकार रही थीं, “रावण की जय हो… इंद्रजीत की जय हो।” मैं उत्साह से खड़ा हो गया और पूरा दरबार मेरे साथ खड़ा हो गया। मैं बाहर जाकर अपने बेटे द्वारा लाए गए इनाम को देखना चाहता था, लेकिन मैं वहीं खड़ा रहा, अपनी उत्तेजना को छिपाने की पूरी कोशिश कर रहा था और खुशी और उम्मीद से अपने हाथों को मल रहा था। जुलूस के आगे, मेरा लंबा, गर्वित बेटा, अपने धनुष को मजबूती से हाथ में पकड़े हुए, मेरे दरबार में दाखिल हुआ। पूरी सभा खड़ी हो गई और जयकार करने लगी। असुर रक्षक चारों ओर नाचने लगे। चेंडा ढोल की थाप अपने चरम पर पहुँच गई। मैं नीचे झुका और अपने बेटे को गले लगा लिया।
फिर मैंने उसके पीछे खड़े लंबे, बलवान, सांवले वानर को देखा। उसके हाथ-पैर रस्सियों से बंधे थे। उसकी मांसपेशियां उभरी हुई थीं। 'जवानी में मेरा शरीर भी ऐसा ही था, किसी तराशी हुई मूर्ति जैसा।' मैंने अपना पेट अंदर खींच लिया। वह लगभग मेघनाद जितना लंबा था। उसके पूरे शरीर पर घुंघराले, काले बाल थे और चेहरे के दोनों ओर लहराते हुए काले बाल थे। वह एक दुर्जेय योद्धा

“इसे काल कोठरी में डाल दो। देखते हैं कि रुद्रक द्वारा इस बंदर के काले शरीर पर अपना प्रहार शुरू करने के बाद यह बोलता है या नहीं,” मैंने हनुमान की आँखों में सीधे देखते हुए, भय के कोई निशान ढूँढ़ते हुए कहा। मुझे कुछ नहीं मिला। वह व्यक्ति शांत और संयमित रहा। मेरे अंगरक्षक उसके पास पहुँचे और उसकी कोहनियों को पकड़ लिया।
फिर मेरे भाई विभीषण बोलने के लिए उठे। मैंने उनकी ओर देखा और अपनी बढ़ती झुंझलाहट को छिपाने की कोशिश की। “महामहिम! जब कोई व्यक्ति यह घोषणा कर दे कि वह दूत है, जासूस नहीं, और उसने कोई जानबूझकर अपराध नहीं किया है, तो हमारी नैतिक संहिता कहती है कि उसके साथ दूत की तरह ही व्यवहार किया जाना चाहिए।”
“चाचा!” मेघनादा चिल्लाई, एक पल के लिए यह भूलकर कि वह दरबार में है, “उसने हमारे दो गार्डों की हत्या कर दी और हमारे बगीचे में तोड़फोड़ की। वह एक जासूस और अपराधी है। उसके साथ उसी के अनुसार व्यवहार किया जाना चाहिए।” “क्या कोई गवाह है कि हनुमान ने उन रक्षकों को मारा था? जब तक उनका दोष सिद्ध नहीं हो जाता, वे निर्दोष हैं। मैं उन्हें रिहा करने की मांग नहीं कर रहा हूँ। मेरा उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि कोई भी असुर सम्राट पर असभ्य वानर से व्यवहार करते समय मर्यादा और राजधर्म का पालन न करने का आरोप न लगाए।” विभीषण ने अंतिम वाक्य पूरा करते हुए मेरी ओर देखा।
“मेरा सुझाव है कि उस जासूस से सम्राट को जो उचित लगे, उसी तरह निपटा जाए।” प्रहस्त अपनी सीट से उठ खड़े हुए।
‘असुर! दुनिया में ऐसी कोई बात नहीं है जिस पर दो असुर कभी सहमत हों। हमेशा झगड़ते रहते हैं और हर काम अपनी मर्जी से करवाना चाहते हैं।’ मैंने एक बुद्धिमान मूर्ख की तरह उन दोनों को संतुष्ट करने का फैसला किया। “इसे खोल दो। सिर्फ इसके हाथ-पैर बंधे रहने दो। अगर यह कुछ कहना चाहता है, तो खड़े होकर कहे। फिर मैं तय करूंगा कि इसके साथ क्या करना है।”
“लेकिन पिताजी…” मैंने मेघनादा को घूरकर चुप करा दिया और एक गार्ड ने धीरे-धीरे हनुमान के बंधन खोल दिए।
रस्सियाँ खुलते ही हनुमान बोले, “मैं हनुमान, मारुति का पुत्र, किष्किंधा का वंशज, वानर राजा सुग्रीव का सेवक और अयोध्या के राजकुमार श्री रामचंद्र का सेवक, परम पूज्य राजा लंकेश्वर को अपने स्वामी की ओर से कुछ सौहार्दपूर्ण सलाह देना चाहता हूँ। आपने उनकी विवाहित पत्नी और अयोध्या

की रानी का अवैध अपहरण कर लिया है और उन्हें अपने कब्जे में रखा है। मेरे स्वामी आपसे निवेदन करते हैं कि आप उनकी रानी को पूरे सम्मान के साथ उन्हें लौटा दें और उनसे क्षमा मांग लें। यदि मेरी सलाह अनसुनी की गई, तो मुझे अपने स्वामी की ओर से लंका और असुरों पर युद्ध छेड़ने का अधिकार है। हम प्रतिज्ञा करते हैं कि ऐसी स्थिति में हम तुम असुरों को कुचल देंगे, तुम्हारे पापी नगरों को चूर-चूर कर देंगे और अपनी रानी को वापस ले आएंगे।” वहाँ शोर मच गया। सौ तलवारें म्यान से ज़ोरदार फुफकार के साथ निकल आईं। मेघनाद ने अपनी तलवार उस धृष्ट वानर-पुरुष के गले पर रख दी। ये अनेक अपमान थे। इस वानर की हिम्मत कैसे हुई मुझे, असुर सम्राट को चुनौती देने की? इसकी हिम्मत कैसे हुई एक शराबी अर्ध-सभ्य वानर-पुरुषों के राजा के नाम पर ऐसा करने की? इसकी हिम्मत कैसे हुई दुनिया के सबसे शक्तिशाली राजा को, अपनी पत्नी के साथ दुर्व्यवहार करने वाले एक घुमंतू शिकारी की ओर से चुनौती देने की? और इसकी हिम्मत कैसे हुई मेरे दरबार में सबके सामने खुलेआम मुझे चुनौती देने की?
“पत्थर मारकर मौत!” मैंने दहाड़ लगाई, और पूरा दरबार मेरे साथ दहाड़ उठा। जब मैंने उसे सज़ा सुनाई, तो वह वहाँ बेपरवाह खड़ा रहा।
विभीषण धीरे से उठे और शोरगुल शांत हो गया। फिर, अत्यंत कोमल स्वर में उन्होंने कहा, “महाराज, इस व्यक्ति ने अपनी मृत्यु को स्वयं अर्जित किया है और आपने अपने विवेक से उचित निर्णय दिया है। जब वह मात्र दूत नहीं रहा, तभी उसने जीने का अधिकार खो दिया। उसकी भाषा भारत और लंका के सर्वोत्कृष्ट असुर सम्राट की भाषा से कहीं अधिक युद्धक्षेत्र के लिए उपयुक्त थी। परन्तु…” वे विरामित हुए।
“सीधी बात पर आओ, विभीषण।” मैं अधीर हो रहा था।
“लेकिन भाई, क्या उसे हमारा संदेश देकर वापस भेजना समझदारी नहीं होगी? उसके स्वामी को भी पता चल जाए कि अगर उसने कोई दुस्साहस भरा कदम उठाया तो लंका उसे मुंहतोड़ जवाब देगी। अगर हम उसे मार ही देते हैं, तो हम उन्हें उचित जवाब देने का मौका खो देंगे। शायद हम एक अनावश्यक युद्ध से भी बच सकें। हम कह सकते हैं कि हम उसकी पत्नी को तब तक बंधक बनाकर रखेंगे जब तक वह अपने क्रूर भाई लक्ष्मण को हमारे हवाले नहीं कर देता, ताकि हम उस पर मुकदमा चला सकें और हमारी बहन के खिलाफ किए गए अत्याचारों के लिए उसे दंडित कर सकें।”

‘उसकी बात में दम है।’ मैंने विभीषण की ओर देखते हुए सोचा। लेकिन बंदर द्वारा किए गए अपमान से मैं अब भी बहुत गुस्से में था।
प्रहस्त खड़े हुए और मेरी ओर मुड़कर बोले, “महामहिम, इससे पहले कि हम जल्दबाजी में उन्हें मार डालें या वापस भेज दें, आइए इस सज्जन से कुछ जानकारी प्राप्त कर लें। मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि मुझे श्री रामचंद्र के हमारे आदरणीय दूत से व्यक्तिगत रूप से पूछताछ करने का सम्मान प्रदान करें।”
मैं अपने निर्णय को लेकर दुविधा में था। उस क्षण मेरी सबसे बड़ी इच्छा हनुमान से बदला लेना थी। वह मेरे दरबार में आकर मेरा अपमान करके बच नहीं सकता था। एक बार फिर विभीषण ने ही रास्ता निकाला।
“चलो इसे दाग देते हैं,” विभीषण ने सरल शब्दों में कहा। गर्म लोहे या आग से दागना असुरों की एक प्राचीन प्रथा थी। यह एक पीड़ादायक और अपमानजनक दंड था। दाग स्थायी होते थे और पीड़ित उस अपमानजनक चिन्ह और दर्द को अपने साथ कब्र तक ले जाता था। वह चिन्ह दुनिया को बताता था कि वह एक बड़े अपराध का दोषी है, और उसकी असफलता और अपराध का निशान उसके शरीर पर जबरदस्ती उकेरा गया है, जिसे देखकर पूरी दुनिया हंसेगी। जितना मैं इसके बारे में सोचता, उतना ही मुझे यह अच्छा लगता। यह बंदर रावण के दाग के साथ अपने स्वामी के पास लौटेगा… मैं उसे कहाँ दागूँ… उसकी चौड़ी छाती पर… उसके तपे हुए पेट पर… या उसकी चौड़ी पीठ पर?
"उसके कपड़े उतार दो और उसकी पूंछ पर दाग लगा दो।"
“महामहिम, मेरा सुझाव है कि हम इस घिनौने और बर्बर कृत्य से बाज आएं। हमें उसे जासूस समझकर उसके साथ उचित व्यवहार करना चाहिए। हमें ऐसी नीच हरकत नहीं करनी चाहिए।” एक बार फिर वही चिड़चिड़ाने वाला प्रहस्त बोल रहा था। “उसकी पूंछ जला दो। उसे बैठने, खड़े होने, लेटने या चलने पर दर्द का एहसास होने दो। उसे असुर सम्राट का अपमान करने का दर्द महसूस होने दो।” मैं अपने दरबार में उमड़ी जयकार में मग्न था और निराशा में सिर हिला रहे प्रहस्त की ओर ध्यान नहीं दे रहा था।
मेरे अंगरक्षक रुद्रक को बुलाने दौड़े। पुलिस प्रमुख अपने सहायकों के साथ आए और दरबार को प्रणाम किया। हनुमान अविचलित रहे। यह एक कठोर वानर था। मेरा क्रोध पल-पल बढ़ता जा रहा था। रुद्रक के आदमियों ने दागने के लिए पिघला हुआ सीसा तैयार किया और आग भयंकर रूप से भड़क उठी। तभी अकल्पनीय

को लगभग जलाकर राख कर दिया था और तेजी से आसपास की इमारतों की ओर बढ़ रही थी। और मेरे सामने, मेरा शहर जल रहा था। नारंगी लपटें छप्पर की छतों को चाट रही थीं। हजारों चीखें दहशत और मौत की आवाजों से गूंज उठीं। लोग अपने घरों से भाग रहे थे। कुछ बहादुरों ने आग से लड़ने की कोशिश की, लेकिन वे तेजी से हार रहे थे। जलते हुए मांस, लकड़ी और कपड़ों की तीखी गंध हवा में फैल गई थी। घोड़े अस्तबलों से निकलकर बेतहाशा गलियों में दौड़ने लगे, रास्ते में आने वाले लोगों को लात मारते और कुचलते हुए। मैं अपने हरम की ओर भागा। मेरी पत्नी वहाँ थी, मेरे बेटे वहाँ थे। मुझे उन्हें बचाना था। लेकिन आग की लपटें मुझसे आगे निकल गईं। महल की पूरी छत आग की चपेट में आ गई। निर्देश और आदेश चिल्लाते-चिल्लाते मेरा गला बैठ गया था। लेकिन सुनने वाला कोई नहीं था। 'मेरे रक्षक कहाँ थे? मेरी शक्तिशाली सेना कहाँ थी? मेरे मंत्री कहाँ थे?' मैं असहाय होकर खड़ा देखता रहा जैसे मेरा महल जल रहा हो।
तभी मैंने एक विशाल काली आकृति को जलते हुए हरम की ओर बेतहाशा दौड़ते देखा। मैंने उस पागल आदमी को रुकने के लिए पुकारा, लेकिन वह भयंकर आग में कूद गया और गायब हो गया। मैं साहस के इस प्रदर्शन को देखकर स्तब्ध रह गया। 'शायद वह पागल हो गया था।' इस समय तक, प्रहस्त समेत मेरे कुछ मंत्री मेरे पास आ चुके थे, लेकिन मैंने उनसे एक शब्द भी कहने की हिम्मत नहीं की। रुद्रक ने किसी तरह व्यवस्था कायम की और उसके आदमियों ने आग बुझाने की जी- तोड़ कोशिश की। महल का कुछ हिस्सा पूरी तरह जल चुका था, और ऐसा लग रहा था कि कम से कम पूर्वी तरफ आग पर काबू पाया जा रहा है। लेकिन आग ने हरम को तबाह कर दिया था और मैंने अपने परिवार की दुर्दशा के बारे में न सोचने की कोशिश की। आग बुझाने के लिए लगभग साठ हाथी लाए गए। तभी जलते हुए हरम के अंदर गायब हो चुकी वह विशाल काली आकृति पहली मंजिल की बालकनी से कूदी, आग बुझाई और मैदान पर लुढ़क गई। तभी मैंने देखा कि वह मेरी रानी मंदोदरी को अपनी पीठ पर उठाए हुए था। हम उस आदमी की ओर दौड़े। जैसे ही हम पास पहुँचे, मैं उसे देखते ही चौंक गई। वह कोई और नहीं बल्कि मेरा नाजायज बेटा अथिकाया था। वह रानी की देखभाल कर रहा था, उन्हें होश में लाने की कोशिश कर रहा था। मैंने देखा कि उसके हाथ बुरी तरह जल गए थे। लेकिन इससे पहले कि मैं कुछ कह पाती, अथिकाया जलते हुए महल में वापस भाग गया। इस बार, पहरेदारों का पूरा दल उसके पीछे गया। आग की तीव्रता कम हो गई थी, लेकिन फिर भी खतरा बना हुआ था।

महल के अंदर आग धीरे-धीरे काबू में आ गई, लेकिन बाहर आग भयंकर रूप से भड़क रही थी। मेरे मन में कहीं यह बात आई कि मेघनाद और जंबुमाली आग बुझाने के काम का नेतृत्व करने के लिए महल से निकलकर शहर की ओर दौड़ पड़े थे। रुद्रक ने उस वानर-पुरुष की तलाश फिर से शुरू कर दी थी जिसने इतना विनाश किया था। लेकिन मैं बदला लेने या सज़ा देने के बारे में सोच भी नहीं पा रही थी। मैं अचानक और भयानक घटनाक्रम से इतनी स्तब्ध और स्तब्ध थी कि मुझे कुछ समझ ही नहीं आ रहा था। मैं अपनी रानी के लिए बहुत चिंतित थी। पहरेदार हरम से शव बाहर लाए। कुछ जीवित थे लेकिन बुरी तरह जल गए थे, या बेहोश थे, जबकि अन्य बुरी तरह जलकर मर चुके थे और उनकी पहचान करना असंभव था।
धीरे-धीरे मेरी रानी ने अपनी आँखें खोलीं। मैंने उन्हें गले लगा लिया। मैं अपने आँसू नहीं रोक पा रहा था। लेकिन उन्होंने मुझे दूर धकेल दिया और खड़े होने की कोशिश की, अपने सीने को भी नहीं ढका, “अक्षय, मेरा अक्षय कहाँ है?” वे बुदबुदाईं। मैंने चारों ओर देखा। मेरा छोटा बेटा, मेरा आठ वर्षीय अक्षय कुमार कहाँ था? मैं खड़ा तो हुआ, लेकिन सबसे बुरे की आशंका थी। मुझमें अपनी पत्नी का सामना करने का साहस नहीं था। प्रहस्त ने प्रणाम किया और पहरेदारों को बुलाया और कुछ फुसफुसाया। वे महल की ओर दौड़े। लेकिन मैंने देखा कि सब मेरी ओर देखने से बच रहे थे। मैंने खुद को हिम्मत न हारने के लिए कहा। शिव मेरे बेटे की रक्षा करेंगे। मैंने उम्मीद की एक किरण भी नहीं छोड़ी। मैंने आदेश दिए, यहाँ खोजो, वहाँ देखो… बहुत कुछ बेतुका। मुझे पता था कि यह व्यर्थ है। लेकिन मैं कुछ करना चाहता था।
मेरे पीछे से एक चीख सुनाई दी, लेकिन मैं मुड़ने से डर रही थी। किसी ने मेरे कंधे पर दिलासा भरा हाथ रखा, पर उससे मुझे कोई तसल्ली नहीं मिली। मैं गुस्से में थी। मैं उस चीख का मतलब और उसे करने वाले को जानती थी। लेकिन फिर मेरा गुस्सा शांत हो गया और मैं एक पुराने चिथड़े की तरह गिर पड़ी। राख से सनी गर्म ज़मीन मेरे चेहरे पर लगी। मैं वहीं पड़ी रही, मेरा चेहरा खून से लथपथ था, मेरे आँसू मेरे खून में मिल रहे थे। मुझे कदमों की आहट और फुसफुसाहट सुनाई दे रही थी। मेरे आदमी मेरे पास आने से डर रहे थे। शायद वे मेरे दुख का सम्मान कर रहे थे। या फिर यह सिर्फ़ ताक-झाँक थी? कौन जानता था और किसे परवाह थी? रावण का दुख उसका अपना था। मैं अपना दुख इस उदासीन और क्रूर दुनिया के साथ क्यों बाँटूँ? मेरा बेटा, मेरा छोटा राजकुमार, मुर्गे की तरह ज़िंदा जल गया था। नहीं, मैं उसे अब नहीं देखना चाहती थी। उसकी

आखिरी याद बस उसका वह सुंदर मुस्कुराता हुआ चेहरा हो। उस नन्हे बच्चे की मासूमियत, दुनिया के प्रति जिज्ञासा, उसका आकर्षण, जिसने इस गंभीर और क्रूर दुनिया में एक ऐसी महत्ता भर दी थी, जिसने मुझ जैसे अहंकारी दरिंदे के लिए इसे सहने लायक बना दिया था, सब छिन गया था। मैं लड़खड़ाते हुए उठा। धुंधली रोशनी में मैंने अपनी पत्नी को किसी को बेरहमी से पीटते देखा। कुछ लोग उसे अथिकाया की विशाल, काली, झुकी हुई आकृति से अलग करने की कोशिश कर रहे थे। “तुमने मुझे अकेले क्यों बचाया… मेरे उस नन्हे बेटे को कैसे छोड़ दिया जो मेरे ऊपर हाथ रखकर सो रहा था… हे दरिंदे…”
उसने अपनी पूरी ताकत से उस विशालकाय आदमी को घसीटा। वह वहीं खड़ा रहा, शर्म और अपराधबोध से उसका सिर झुका हुआ था। या फिर उस क्रूर और अनुचित व्यवहार पर गुस्सा, जिसकी जान उसने अपनी जान जोखिम में डालकर बचाई थी? मुझे नहीं पता था और न ही मुझे परवाह थी। अथिकाया और उनका गुस्सा या अपराधबोध मेरे लिए मायने नहीं रखता था। मैंने अभी-अभी अपने नन्हे बच्चे को खोया था। मैं अपने कभी हरे-भरे लॉन पर करीने से रखे शवों की कतार की ओर चली। भयानक आकृतियाँ मेरा इंतज़ार कर रही थीं। मैं चलती रही और फिर मुझे वह नन्हा सा बच्चा मिला। पहरेदारों ने सम्मानपूर्वक सिर झुकाया, लेकिन अगर वे मेरे चेहरे पर थूक भी देते तो मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। मैंने जले हुए नन्हे शरीर को अपनी बाहों में उठा लिया। जले हुए कालेपन से उसका नन्हा चेहरा मुझे घूर रहा था। मेरा बेटा मेरे बारे में हर चीज़ का मज़ाक उड़ा रहा था... मेरा घमंड, मेरा जीवन, मेरी उपलब्धियाँ, मेरा अहंकार। मैं जानती थी और भाग्य पर और उन देवताओं पर क्रोधित थी जिन्होंने मेरे साथ ऐसा किया था। मेरे नौकर मेरा बोझ उठाने के लिए दौड़े आए, लेकिन मैंने मना कर दिया। यह मेरा बोझ था और मैं इसे अकेले उठाऊँगी। क्या कुछ भी इसके लायक था? क्या मेरा राज्य इसके लायक था? एक बच्चे को बचाने के लिए, मैंने दूसरे की बलि दे दी। मैंने उन लोगों पर विपत्ति ला दी जिनकी रक्षा करना मेरा कर्तव्य था। फिर, रात के सन्नाटे को चीरते हुए, मैंने अपनी बेटी सीता की क्रूर हंसी सुनी। “रावण, हे दुष्ट असुर! तुम अपने अंजाम के ही हकदार हो। तुम और तुम्हारे सभी रिश्तेदार मेरे पति, अयोध्या के राम के हाथों भयानक मौत मरोगे।”
‘क्या मैं इसके लायक थी, मेरी बेटी? क्या मैं इसके लायक थी? मैंने तुम्हारे छोटे भाई को तुम्हारे लिए कुर्बान कर दिया। मैं सब कुछ खो सकती हूँ, लेकिन

फिर भी तुम्हारे लिए खड़ी रहूँगी। एक बार मैंने तुम्हें त्याग दिया था, लेकिन फिर कभी नहीं। तुम्हें पता चलेगा कि तुम्हारा पति कैसा है, जब तुम्हारे बूढ़े पिता का संरक्षण खत्म हो जाएगा। तब, हाय, मेरी प्यारी बेटी, बहुत देर हो चुकी होगी।’ मैं सीता पर ये सब बातें चिल्लाकर कहना चाहती थी, लेकिन मुझमें कोई ताकत नहीं बची थी। मैं अपने नन्हे राजकुमार के मृत शरीर का बोझ उठाए, रात के अंधेरे में अकेली चली गई। शायद वहाँ मुझे कुछ सुकून मिले, कोई मेरे आँसू पोंछने वाला मिले, और जहाँ मैं अंधेरे की गोद में लेट सकूँ। मैं चलती रही, मेरा नन्हा मृत बच्चा मेरी बाहों में शांति से सो रहा था।

43 मेरे नगर को जलने दो
भद्र
शहर जल रहा था। पुलिसकर्मी गायब हो चुके थे और पुलिस स्टेशन का अगला हिस्सा आग की चपेट में था। मेरा भागने का रास्ता बंद हो चुका था और किसी भी क्षण आग मेरी कोठरी तक पहुँच सकती थी। धुएँ के घने गुबार अंदर आ रहे थे और मैं खाँसते-खाँसते दम घुटने लगा था। मैं फँस गया था। मैंने भयंकर आग से निकलने की कोशिश की, लेकिन भीषण गर्मी के कारण मेरा हौसला पस्त हो गया। साँस लेना मुश्किल हो गया था। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूँ, लेकिन मैं एक सर्वाइवर हूँ। पर इस बार मुझे इतना यकीन नहीं था। आग की नारंगी लपटें अपने रास्ते में आने वाली हर चीज़ को भस्म कर रही थीं। छत का एक हिस्सा गिर गया और अंधेरा आसमान कमरे में घुस आया। धुआँ छँट गया और हवा थोड़ी साफ़ हुई।
मैंने दीवार पर चढ़ने की कोशिश की, लेकिन पकड़ने के लिए कुछ नहीं मिला और मैं वापस गिर गया। मैंने खड़े होने के लिए कुछ ढूँढा। इंस्पेक्टर की मेज जल रही थी क्योंकि छत से एक बड़ा सा बीम उस पर गिर गया था। मैंने उसे खींचने की कोशिश की और आखिरकार, कई चिंताजनक और तनावपूर्ण पलों के बाद, वह निकल गया। मैंने उसे ज़ोर से दीवार की ओर धकेला। मेरे हाथ जल रहे थे, लेकिन मुझे दर्द का एहसास नहीं हो रहा था। दर्द का एहसास बाद में होगा। मैं मेज पर चढ़ा और फिर दीवार फांदकर अपनी जान बचाने के लिए भागा।
बाहर पूरी तरह अफरा-तफरी मची हुई थी। घर, दुकानें और सड़कों पर सब कुछ जल रहा था। दूर से महल जलता हुआ दिखाई दे रहा था। मैं अपने घर की ओर भागा। आग ने लोगों को अंधाधुंध मार डाला था। ब्राह्मण, अछूत, गुलाम, नाई, व्यापारी, शराबी, साधु, पहरेदार, जुआरी, वेश्याएं, बूढ़ी औरतें, बच्चे, संत, गुंडे - सब मर चुके थे। जलते हुए मांस की तीखी गंध आसमान में फैल गई थी। कई लोग कुचले

गए थे। कुछ लोग मुश्किल से जीवित थे। कुछ लोग आग बुझाने की कोशिश कर रहे थे। अन्य लोग अपनों और संपत्ति के नुकसान पर विलाप कर रहे थे। मैं उन गलियों से भागा जहाँ मौत ने अपना आग का तांडव मचा रखा था। मैं डरा हुआ और भूखा था, लेकिन मैं भागता रहा। मुझे नहीं पता कैसे और क्यों, लेकिन जैसे ही मैंने मुख्य सड़कों को छोड़कर छोटे-छोटे घरों की ओर रुख किया, मैंने देखा कि वहाँ आग ने ज्यादा नुकसान नहीं पहुँचाया था। लोग बाहर आ गए थे और हमारे शहर को चाटती हुई भयंकर आग को घूर रहे थे। कई लोगों ने मुझे रोकने और यह पूछने की कोशिश की कि क्या हो रहा है। मैं भागता रहा। मैं बस घर पहुंचना चाहती थी और राजाओं, महलों, जासूसों और उनके जानलेवा खेलों से दूर जाना चाहती थी। चाहे शहर जल जाए और मर्द-औरतें मर जाएं, मैं अपने घर में सुरक्षित रहना चाहती थी। जब मैं अपनी गली पहुंची, तो सब कुछ एक बुरे सपने जैसा लग रहा था। सन्नाटा बस कुछ आवारा कुत्तों की आवाज़ से टूट रहा था जो हमारी नालियों में भरे बड़े-बड़े चूहों का पीछा कर रहे थे।
घर पहुँचते ही मैं चौंक गया जब मैंने देखा कि दरवाज़ा थोड़ा खुला हुआ है। मैंने धीरे से अंदर प्रवेश किया, पुराने लकड़ी के दरवाज़े की चरमराहट की आवाज़ को नज़रअंदाज़ करते हुए मैंने उसे खोला। हल्की रोशनी में मुझे अपनी खर्राटे लेती पत्नी की परछाई दिखाई दी, जो अपने शहर को तबाह कर रही भयंकर आग से बेखबर थी। मैंने उसे कोसते हुए अपने बिस्तर पर लेट गया। तभी मैंने देखा कि कोई मेरे बिस्तर पर लेटा हुआ है। मैं चौंक गया। जलते शहर से आती टिमटिमाती रोशनी उस आकृति को रोशन नहीं कर पा रही थी। मैंने अपनी कटार ढूंढी, लेकिन वह मेरी कमर पर नहीं मिली। मैं हिलने से बहुत डर रहा था। “पिताजी…” आवाज कांप रही थी।
“कौन…?” मैं कांप उठा।
“यह अथिकाया है…”
“क्यों… तुम मूर्ख… तुम… तुम…” मैं उस आकृति की ओर बढ़ा जो अब बिस्तर पर बैठा था और अपना सिर अपने हाथों में छिपाए हुए था।
मैंने राजकुमार को मार डाला… मैंने उसे मार डाला…”
“क्या…?!” इस मूर्ख ने क्या कर दिया? क्या इसने राजकुमार मेघनाद को मार डाला? अब क्या होगा? मैं घबरा गया। ‘क्या पूरी सेना हमारा पीछा करेगी?’ मेरी पत्नी जाग उठी और बड़बड़ाने लगी। मैंने उस पर चिल्लाया और वह सहम गई।

मैंने अथिकाया को झकझोरा और उसके चेहरे पर ज़ोर से थप्पड़ मारा। “बेवकूफ! उठो और बकवास करना बंद करो… मूर्ख।”
फिर धीरे-धीरे मुझे पता चला कि क्या हुआ था। यह जानकर मुझे राहत मिली कि मेरे इस मूर्ख बेटे का छोटे राजकुमार की मृत्यु में कोई हाथ नहीं था। बल्कि, वही तो नायक था जिसने रानी को बचाया था। फिर मुझे कड़वाहट महसूस हुई। 'न तो राजा और न ही उसके आस-पास मंडराने वाले वे सारे गोरे लोग, हम जैसे लोगों के वीरतापूर्ण कार्यों को कभी स्वीकार करेंगे। कोई कवि हम जैसे आम लोगों के निस्वार्थ कार्यों की प्रशंसा में गीत नहीं गाएगा। कवियों को भूल जाओ। उनकी ज़रूरत ही किसे है?'
मैंने अपनी पत्नी को अपने सुलझे हुए बेटे की देखभाल में लगा छोड़ दिया। बाहर, पूरब में उगते सूरज की लालिमा और पश्चिम में जलते शहर की आग से आसमान लाल रंग का हो गया था। थका हुआ सा मैं अपने हाथ-पैर फैलाकर नदी की ओर चल पड़ा, यह सोचते हुए कि उस बंदर जैसे दिखने वाले आदमी को मासूम बच्चों, पुरुषों और महिलाओं को मारकर और एक खूबसूरत महल में आग लगाकर क्या हासिल हुआ। मृतकों का जुलूस नदी के दूसरी ओर स्थित श्मशान घाट की ओर चल पड़ा था। मैं अर्थी के साथ चल रहे पुरुषों और महिलाओं के चेहरे नहीं देख पा रहा था, लेकिन मैं उनकी नम आँखों की कल्पना कर सकता था। मैंने उदासीनता से देखा कि पहली चिता जलाई गई और घना धुआँ आसमान में उठ उठा। मैं घर गया और अपने मिट्टी के बरामदे में बैठकर अपने जलते शहर के ऊपर उठते धुएँ को देखने लगा।

44 शांति का दूत
रावण
प्रहस्त ने ही ज़िद की थी कि मैं बाहर आकर शहर का जायज़ा लूँ। उस समय मैं उससे नाराज़ था, पर उसने ज़िद की। उसने कहा कि राजा का कर्तव्य है कि वह देखे कि उसकी प्रजा कितनी कष्ट झेल रही है और उस कष्ट को कम करने के लिए कदम उठाए। मैंने उस पर चिल्लाया और उसे पद से हटाने, यहाँ तक कि उसका सिर कलम करने की धमकी भी दी। लेकिन वह अपनी बात पर अड़ा रहा और बिना कुछ कहे, बस शांत भाव से यही कहता रहा कि मैं अपना कर्तव्य निभाऊँ। आखिरकार उसने मुझे मना लिया और गालियाँ देते हुए मैं मान गया।
मैंने अपने नागरिकों पर हुए भयानक अत्याचार देखे। मैं साधारण वस्त्र पहने प्रहस्त के साथ चला और राजा होने का भाव त्याग दिया। मैं भी एक पीड़ित था। घर जलकर राख हो गए थे, सड़कें चिथड़ों और जले हुए फर्नीचर से भरी पड़ी थीं। जगह-जगह कूड़े के ढेर सुलग रहे थे, मानो मांस के टुकड़े हों। कई इमारतें ढह गई थीं और कालिख से काली टूटी दीवारें बेतरतीब खड़ी थीं। कुछ इमारतों में छत के अलावा केवल खिड़कियाँ या दरवाज़े के फ्रेम ही बचे थे। कुछ इमारतों में सुलगती राख के ढेरों में केवल कुछ खंभे ही खड़े थे। वे शोक में डूबे रिश्तेदारों की तरह लग रहे थे, जो किसी प्रियजन की चिता के चारों ओर खड़े हों। पुरुष और महिलाएं कोनों में खड़े थे, अपने नुकसान से स्तब्ध और इस अचानक हुई घटना से स्तब्ध। मैंने ढहने की कगार पर खड़े घरों की मोटी दीवारों से आती घुटन भरी सिसकियाँ और कभी-कभार आती चीखें सुनीं। अधजले जानवरों के शव इधर-उधर बिखरे पड़े थे। यह बहुत ही भयावह था। मैं महल वापस जाना चाहता था और इस दयनीय दृश्य से दूर जाना चाहता था।
मानवीय पीड़ा। मेरे जवान बेटे की मौत इसके मुकाबले बहुत छोटी लगती है। लेकिन अचानक मेरे मृत बेटे का ख्याल आते ही सब कुछ खुल गया

दुःख के द्वार खुल गए। मैंने प्रहस्त की ओर विनती भरी निगाहों से देखा, लेकिन उसने
हालात बेहद गंभीर थे। मैं अपने आँसू नहीं रोक पा रही थी और गुस्से में भी थी।
उस बंदर-मानव पर, प्रहस्त पर, संपूर्ण संसार पर, क्योंकि
इसी वजह से मैं इस स्थिति में आ गया। लेकिन मैं इतना स्तब्ध था कि हिल भी नहीं पा रहा था।
सड़क कालिख और पानी से लथपथ थी और कीचड़ मेरे कपड़ों से चिपकी हुई थी।
कपड़े और चप्पलें। एक असहनीय हवा इनके बीच से बह रही थी।
मौत की गलियाँ। मैं बुरी तरह से घबरा गया और उल्टी करने लगा, अपने हाथों को कसकर पकड़े हुए।
मैंने सड़क पर ही उल्टी कर दी। तभी एक बूढ़ी औरत ने मुझे पहचान लिया। वह अपने घर से दौड़ती हुई आई।
एक तीखी चीख निकली। मैं चौंक गया और रुक गया।
उल्टी आना।
“अरे दुष्ट! देखो तेरी वासना ने हमारा क्या हाल कर दिया!” वह चीखी। प्रहस्त ने उसे रोकने की कोशिश की, लेकिन उसने उसे ज़ोर से धक्का देकर दूर कर दिया।
फिर उसने अपने सीने पीटते हुए विलाप किया, “मैंने इतने यज्ञ करके दो उत्तम पुत्रों का पालन-पोषण किया। उनकी पत्नियाँ, मेरे पोते-पोतियाँ, सब चले गए। सब तेरी वासना की आग में जल गए… तेरी पत्नी देवदूत जैसी है और फिर भी तुझे देव स्त्रियों पर ललचाना है? और देखो उसने हम असुरों का क्या हाल कर दिया।”
उसके चारों ओर भीड़ जमा हो गई। गुस्से में फुसफुसाहटें हो रही थीं और कुछ मुट्ठियाँ भींची हुई थीं। मैं ज़मीन पर पड़ा हुआ था। मुझे डर था कि वे मुझे पीट-पीटकर मार डालेंगे। मैं कैसा शासक था? मुझे घृणा हो रही थी। लंका चारों ओर से जल रही थी। मैंने जो कुछ भी बनाया था, मेरी प्रजा ने अपने सपनों, महत्वाकांक्षाओं, जुनून और कड़ी मेहनत से जो कुछ भी बनाया था, वह सब मेरे चारों ओर खंडहर में तब्दील हो गया था। मैं एक राजा के रूप में असफल हो गया था। मैं अपनी प्रजा को एक तुच्छ बंदर से भी नहीं बचा सका। मैं एक पिता के रूप में असफल था। मैं अपने छोटे बेटे को जिंदा जलने से नहीं बचा सका। मैं एक हारा हुआ था। प्रहस्त ने ही मुझे बाहर आकर अपने साथी पीड़ितों को

देखने और उनके प्रति सहानुभूति दिखाने के लिए प्रेरित किया। मेरे घुटने जवाब दे गए और मैं ज़मीन पर गिर पड़ा। कांपते हाथों से मैंने उस क्रोधित बूढ़ी औरत के पैर छूने की कोशिश की।
“माँ…मुझे माफ़ कर दो…मैं…मैं…” भीड़ में सन्नाटा छा गया।
प्रहस्त ने मुझे उठाया, लेकिन वह बूढ़ी औरत मेरे पैरों पर गिर पड़ी। “मुझे क्षमा कीजिए महाराज…आप हमारे सम्राट हैं…आपको मेरे पैरों पर नहीं गिरना चाहिए।” वह फूट-फूट कर रोने लगी। जो भीड़ मुझे जान से मारने के लिए उग्र थी, वह अचानक उदासीन हो गई और हट गई, जब मैं अपने प्रधानमंत्री की बूढ़ी लेकिन मजबूत बांह का सहारा लेकर अपने जले हुए महल की ओर लड़खड़ाता हुआ बढ़ा।

“□□ □□□□!” □□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□, “□□ □□ □□□□□□!”

“□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□!” □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□

“देवों का नाश हो…” एक और आवाज सुनाई दी।
“असुरों को विजय की ओर ले चलो…हम इस क्रूर हमले का बदला लेंगे, महाराज। हम अपने हाथों से, ईंट-ईंट जोड़कर शहर का पुनर्निर्माण करेंगे।”
“हर हर महादेव!” सौ आवाजों ने एक साथ पुकारा। “राम का नाश हो और वानर-मानवों का भी नाश हो।”
जैसे ही मैं अपने किले की ओर चढ़ा, मुझे अपनी रगों में ऊर्जा का संचार महसूस हुआ। अब मुझे प्रहस्त से डर नहीं लग रहा था। सड़कें मेरे लोगों से भरी हुई थीं। भीड़ में ज़बरदस्त जोश था। हज़ारों तलवारें सूरज की रोशनी में चमक रही थीं। मैंने हाथ हिलाए और भीड़ में एक ज़बरदस्त उत्साह भर गया। “चलो लंका का पुनर्निर्माण करें!” मैंने पुकार लगाई और मुझे फिर से “हर हर महादेव!” के नारे सुनाई दिए। “शिव की कसम, हम वानर-मानवों और देवताओं के इस क्रूर हमले का बदला लेंगे।”
“हाँ, हम ज़रूर करेंगे!” भीड़ ने जवाब दिया।
प्रहस्त मेरे बगल में मुस्कुराते हुए खड़े थे। मैंने उनसे धीरे से कहा, "चलिए शहर का पुनर्निर्माण शुरू करते हैं।" उन्होंने प्रणाम किया और हमेशा की तरह कुशलता से व्यवस्था करने के लिए मेरे पास से चले गए। नगर प्रशासन और अभियांत्रिकी मंत्री, प्रोफेसर मयान, जो थोड़े अनाड़ी लेकिन प्रतिभाशाली थे, को बुलाया गया और वे किसी उपहार पाकर प्रसन्न बच्चे की तरह दौड़ते हुए आए। शहरों के विकास और विस्तार के साथ, उन्हें इन शहरों का कुशलतापूर्वक प्रशासन करने का नीरस काम सौंपा गया था। अब उन्हें जले हुए शहर का पुनर्निर्माण करने और उसे उसकी पुरानी शान लौटाने का एक और मौका दिया जा रहा था। मैंने अपने दोनों मंत्रियों को परामर्श में व्यस्त छोड़ दिया।
महल में अंधेरा छाया हुआ था और मैं अपने मृत पुत्र और अपने व्यक्तिगत दुख की वास्तविकता में लौट आया। हजारों नागरिकों की चीखों और उनके कभी हार न मानने वाले जज़्बे से जो ऊर्जा मैंने जुटाई थी, वह महल के द्वार पर ही मुझे छोड़कर चली गई। मृतकों के शहर की गूंज मेरे महल के अंधेरे और उदास पर्दों से छनकर आ रही थी, लेकिन अकेले बैठे, अपनी व्यक्तिगत त्रासदी में डूबे हुए, मैं बस एक शोकग्रस्त पिता बनकर रह गया था जिसने अपने नन्हे बच्चे को खो दिया था। यहाँ तक कि मेरी प्रजा का प्यार भी मुझे तुच्छ लगने लगा। सब कुछ दिखावा लग रहा था, यहाँ तक कि सड़क पर उस महिला के सामने मेरा शोक भी। 'क्या

मैंने सचमुच उस शोकग्रस्त महिला के प्रति सहानुभूति दिखाई थी? या यह मुझे जान से मारने के लिए उतड़प रही क्रोधित भीड़ से खुद को बचाने की एक सहज प्रतिक्रिया थी? क्या मैंने अपनी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिए कई लोगों को दुख और मृत्यु की ओर धकेल दिया?' ये संदेह मन में घूमते रहे। मेरा मन सुन्न हो गया। 'मैंने अपनी प्रजा से प्रेम किया। क्या मैंने शून्य से एक साम्राज्य नहीं खड़ा किया था?' क्या मैंने एक शोषित और पीड़ित जनता को आत्मसम्मान और गौरव वापस नहीं दिलाया था? लेकिन, क्या होगा अगर यह सब स्वार्थ से प्रेरित था, आदर्शों से नहीं? मैं इस तरह क्यों सोच रहा हूँ? क्या मैंने स्वार्थ और लोभ को मानव प्रगति के दो महान स्तंभों के रूप में महिमामंडित नहीं किया था? लेकिन फिर, मैं खुद को नीच क्यों महसूस कर रहा हूँ? मैं खुद को एक धोखेबाज क्यों महसूस कर रहा हूँ जिसने अपनी जनता को अंधकार और नरक की ओर धकेल दिया है?
दरवाजा चरमराया और कुछ क्षणों के सन्नाटे के बाद, तिरछी धूप में मेरी रानी की लंबी आकृति दरवाजे पर दिखाई दी। धीरे-धीरे वह मेरे पास आईं और बैठ गईं। मैंने हिलने-डुलने और उनकी ओर देखने की हिम्मत नहीं की। मैं जानती थी कि मेरी आँखें नम थीं और मेरी कोई भी हरकत आँखों से बहने वाले आँसुओं को उजागर कर देती। उन्होंने अपने हाथ मेरे कंधों पर रखे और मेरे गालों पर आँसू बहने लगे।
“मैं सदा तुम्हारे साथ रहूँगा। सीता को उसके पति के भरोसे मत छोड़ो। हमें नहीं पता कि वह उसके साथ कैसा व्यवहार करेगा। चाहे कुछ भी हो जाए, हम मिलकर उसका सामना करेंगे। वह हमारी पुत्री है। रावण, मैं तुम्हारी बात समझता हूँ।”
मैंने अपना सिर हिलाया। ‘अगर मेरी बेटी को मेरी सुरक्षा नहीं चाहिए, तो मैं उसके लिए सब कुछ क्यों कुर्बान करूँ?’ तब तक मैंने उसे उसके बर्बर पति के पास वापस भेजने के बारे में नहीं सोचा था, लेकिन जब मंदोदरी ने यह मुद्दा उठाया, तो मैंने उसे उसके भाग्य पर वापस भेजने और अपने जीवन को आगे बढ़ाने के बारे में सोचना शुरू कर दिया। ‘मैं कौन होता हूँ जो अपनी बेटी को बचाने के स्वार्थी कारण से अपने ही लोगों का विनाश करूँ?’ मैं शायद एक आदर्श इंसान या आदर्श राजा नहीं था, लेकिन मैं नहीं चाहता था कि जिन माताओं ने अपने बच्चों और अपनी गरिमा को खोया है, उनका श्राप मुझे हमेशा के लिए सताता

रहे। बस बहुत हो गया! मैं विभीषण को बुलाकर सीता को राम को लौटाने के लिए कहूँगा।
मानो मेरे मन की बात जान ली हो, मंदोदरी ने कहा, “नहीं, रावण, नहीं। हम जानते हैं कि देवता स्त्रियों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं। अब जब वह हमारे बीच रह चुकी है, तो वे उसे अपवित्र समझेंगे। हम पहले ही एक संतान खो चुके हैं।” उसने मेरे कंधों को कसकर दबाया। “हमें दूसरी संतान नहीं खोनी चाहिए।” “प्रहस्त दरबार में दर्शन चाहते हैं,” एक रक्षक ने घोषणा की। मैं अपनी पत्नी की ओर देखे बिना खड़ा हो गया, बाथरूम गया और अपना चेहरा धोया। ठंडे पानी में मैंने अपने आँसू बहने दिए। जब मैंने दर्पण में देखा, तो मुझे एक बूढ़ा व्यक्ति घूरता हुआ दिखाई दिया। उसके बाल सफ़ेद थे और दाढ़ी बढ़ी हुई थी। उसकी सूजी हुई आँखों के नीचे काले घेरे और झुर्रियाँ उसे एक टूटे हुए इंसान जैसा बना रही थीं। जवानी कहाँ चली गई? वह रावण कहाँ गया जिसने देवताओं को चुनौती दी थी? वह राजा कहाँ गया जिसने जीवन में इतना कुछ हासिल करने की चाहत रखी थी कि उसे दूसरों की भावनाओं की परवाह ही नहीं थी? वह जोशीला युवक कहाँ गया जिसने एक के बाद एक युद्ध लड़े, शहरों को तबाह किया, पुरुषों और महिलाओं का वध किया और एक ऐसा साम्राज्य खड़ा किया जो इस मोती द्वीप से लेकर मुख्य भूमि पर नर्मदा के दक्षिणी तट तक फैला हुआ था, वह व्यक्ति जिसने असुरों को आत्मसम्मान और महान राजा महाबली से भी अधिक गौरव दिलाया था? और प्रकृति, संगीत, कला और जीवन के प्रति प्रेम कहाँ गायब हो गया? रावण कहाँ गया?
उत्तर द्वार पर खड़ा था, सिर ऊंचा किए, गर्व और मर्दाना अंदाज़ में। रावण, विजय की अग्नि और जीने की भूख लिए, अपनी युवावस्था की शान और लाखों सपनों में डूबा रावण, जीवन की सभी सुख-सुविधाओं के लिए अदम्य उत्साह से भरा रावण। दर्पण में दिखाई न देने वाला रावण द्वार पर खड़ा था, मुझे जीवन में वापस बुला रहा था। वह मेघनाद था। “पिताजी, मंत्रिपरिषद आपका इंतज़ार कर रही है।”
मैंने मुड़कर अपने अंगवस्त्र को ठीक किया और मेघनाद के कंधे पर हाथ रखा। मैं आत्मदया में डूबने का जोखिम नहीं उठा सकता था, मुझे अपने देश पर शासन करना था। अपने पुत्र के युवा जोश से ऊर्जा लेकर, मैं थोड़ा सहारा लेकर अपने दरबार की ओर बढ़ा, ताकि जीवन को फिर से जी सकूँ। मैंने अपनी रोती हुई पत्नी को पीछे छोड़ दिया और हवा के साथ आती आवाज़ों को सुना - असुरों की आवाज़,

सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षित टुकड़ियाँ मिलें। थकी हुई अवस्था में मैंने दरबार भंग किया और अपने कमरे में लौट आई। मैं बहुत थकी हुई थी और अपने छोटे बेटे का अंतिम संस्कार कुछ घंटे पहले ही किया था, इसलिए मुझे सोने की ज़रूरत थी।

45 आसन्न युद्ध
भद्र
घेराबंदी शुरू हो गई। बाज़ार से ज़रूरी चीज़ें गायब हो गईं। कीमतें आसमान छू गईं। बुरे दिन आ गए थे। लेकिन हम जैसे लोग, जिनके हाथ खुरदुरे और कपड़े फटे-पुराने थे – अनदेखे, महत्वहीन और चुप, अच्छे समय में भी कष्ट सहते थे। बुरे समय में हम भूख से मरते और मरते थे। हम दबी आवाज़ में आने वाले युद्ध पर चर्चा करते थे। युवा पीढ़ी के कई लोगों ने छोटी-मोटी झड़पें भी नहीं देखी थीं, युद्ध तो दूर की बात है। सच है, कुछ लोग मेघनाद के साथ उत्तरी अभियानों में गए थे, लेकिन वे युद्ध दूसरे देशों में लड़े गए थे। जिन पुरुषों और महिलाओं को मारा गया, बलात्कार किया गया और लूटा गया, वे हमारे जैसे ही थे, दूसरे देशों के गरीब और भूखे लोग, दूसरी नस्ल और दूसरे रंग के। लेकिन अब लड़ाई हमारे घर तक आ गई थी। डर हवा में एक भयानक सर्दी की धुंध की तरह छाया हुआ था जो कभी छंटती नहीं।
हमारा राजा एक मूर्ख था। वरना ऐसी मूर्खता का क्या औचित्य? सड़क पर किसी भी आम आदमी से पूछिए, वह कहेगा कि राजकुमार विभीषण कितना पाखंडी और दुष्ट था। रावण जैसा भोला-भाला राजा ही विभीषण और वरुण को ऐसा मिशन सौंप सकता था। कुछ दिन पहले ही जनता ने एक भव्य समारोह के बाद राजकुमार विभीषण को विदा किया था। हजारों लोग असुरों के झंडे लेकर समुद्र तट पर जमा हुए थे। 42 युद्धपोत, जिनमें पूरी राज नौसेना और लगभग तीन चौथाई असुर सेना सवार थी, राम को पकड़ने और उनके वानरों को कुचलने के लिए मुख्य भूमि की ओर रवाना हुए। सब जानते थे कि शांति की बातें सिर्फ एक छल थीं। हम दो सप्ताह तक जहाजों के वापस आने का इंतजार करते रहे, जिनमें क्रूर देव राजकुमार राम जंजीरों में जकड़े हुए थे।

लेकिन बीस दिन बीत जाने के बाद भी असुरों की नौसेना और सेना के बारे में कोई खबर नहीं मिली। अफवाहें तेजी से फैल रही थीं। वानर-पुरुषों ने महाबलीपुरम के पास तट पर स्थित शिव मंदिर के नजदीक असुरों की सेना को परास्त कर दिया था। हालांकि, मेरे जैसे संशयवादियों को पूरा यकीन था कि विभीषण ने पाला बदल लिया है। और फिर राजगद्दी की घोषणा हुई। हम सही थे। द्वीप के हर कोने से यह घोषणा की गई कि राजकुमार विभीषण और सेनापति वरुण ने पाला बदल लिया है। सम्राट के भाई ने रावण को संदेश भेजकर उससे सिंहासन छोड़ने और सीता को राम को सौंपने का अनुरोध करने का दुस्साहस किया। वरुण ने यह भी लिखा कि रावण अब असुरों का अधिपति नहीं रहा क्योंकि राम ने महाबलीपुरम में एक समारोह में विभीषण को लंका और असुरों का राजा घोषित कर दिया था। दोनों खलनायकों द्वारा हस्ताक्षरित एक संयुक्त पत्र भी था जिसमें लिखा था कि असुर सेना का अधिकांश भाग और पूरी नौसेना ने देवताओं के प्रति अपनी निष्ठा बदल ली है।
रावण के पास कोई मौका नहीं था। लंका को दूसरे विनाश और अनावश्यक रक्तपात से बचाने के लिए, यदि रावण को अपने जीवन की परवाह थी, तो उसे शांतिपूर्वक विभीषण को सिंहासन सौंपकर अपने परिवार के साथ हिमालय में शरण लेनी पड़ती। लेकिन रावण ने हर नागरिक से आह्वान किया कि वे उठें, अपनी मातृभूमि और संस्कृति की रक्षा करें, बर्बर देवों और कपटी असुरों से जो ब्राह्मणवाद और जाति व्यवस्था थोपना चाहते हैं। ऐसा नहीं था कि लंका या मुख्य भूमि का हर नागरिक समृद्ध जीवन जीता था और बिना किसी जातिगत भेदभाव के समानता का जीवन व्यतीत करता था। यद्यपि हम जाति और रंगभेद के धीरे-धीरे फैलने से व्याकुल थे और रावण के शासन पर पछताते थे, फिर भी हम जानते थे कि असुर समाज में व्याप्त इस बुराई के लिए राजा रावण प्रत्यक्ष रूप से जिम्मेदार नहीं था। वास्तव में, उसने और प्रहस्त ने उत्तर से फैल रहे जातिवाद को रोका था, हालांकि विभीषण और उसके ब्राह्मण अनुयायियों ने छलपूर्वक इस भेदभावपूर्ण धर्म को गुप्त रूप से फैलाने का प्रयास किया था। अब, वही विभीषण देव राजा के साथ मिल गया था और रावण को सत्ता से हटाने की धमकी दे रहा था। लोग यह सोचकर कांप उठते थे कि अगर विभीषण और ब्राह्मणों को सर्वोच्च सत्ता दे दी जाए तो जीवन कैसा होगा। हम भयभीत थे।
देवों और असुरों के बीच अंतिम युद्ध की तैयारियाँ शुरू हो चुकी थीं – यह दो सभ्यताओं का अंतिम टकराव होगा। इस निर्णायक युद्ध में असुरों को एक हाथ

और महिलाएं, सभी तलवारें, धनुष-बाण, भाले और तरह-तरह के हथियार लिए हुए थे। रावण ने अपनी प्रजा को हथियार उठाने और आक्रमणकारियों से लड़ने के लिए प्रेरित किया। जो मंदिर पहले हम जैसे साधारण असुरों के लिए बंद थे, वे खुल गए और मानो सैन्य शिविर बन गए। साम्राज्य के ब्राह्मणवादी अभिजात वर्ग द्वारा समाज पर थोपा गया अलगाव और भेदभाव रातोंरात समाप्त हो गया, क्योंकि उनमें से अधिकांश लंका छोड़कर राम की सेना में शामिल हो गए। असुरों के बीच समानता की पुरानी भावना फिर से जागृत हो गई। हम अपनी संस्कृति, अपनी जाति, अपने जीवन शैली और अपनी परंपराओं के लिए लड़ रहे थे। यह वह अंतिम युद्ध था जो यह तय करेगा कि भारत के गरीब और दलितों को समानता प्राप्त करने का अवसर मिलेगा या नहीं; यह निर्मम जातिवाद और अस्पृश्यता के विरुद्ध युद्ध था; पतित ब्राह्मणवाद के विरुद्ध युद्ध था। मुझे इस विडंबना पर मुस्कान आ गई। ब्राह्मणवाद के विरुद्ध युद्ध एक ऐसे राजा के नेतृत्व में लड़ा जाने वाला था जो गुप्त रूप से अपने ब्राह्मण वंश पर गर्व करता था। लेकिन हम जैसे गरीब, बदनसीब, काले लोगों के पास क्या विकल्प था? इस देश के हम काले लोगों ने जितने भी नेता और राजा देखे थे, उनमें रावण सबसे श्रेष्ठ था। अपनी कमियों के बावजूद वह मानवीय था और दूसरा विकल्प – राम का राज्य, या उससे भी बदतर, विभीषण का राज्य – कल्पना से भी परे था।
सहज रूप से, प्रत्येक आम असुर जानता था कि यह युद्ध भारत और उसके लाखों गरीब और अश्वेत लोगों का भविष्य तय करेगा। यदि यह युद्ध हार गए और राम विजयी हुए, तो हमें हमेशा के लिए खाई में फेंक दिया जाएगा। हम जानते थे कि तब हमारा जीवन गली के कुत्ते से भी बदतर होगा। हम रावण के लिए लड़ेंगे। हम अपना खून, अपनी जान और अपनी हर संपत्ति कुर्बान कर देंगे, क्योंकि यदि हम यह युद्ध हार गए, तो हम जीवन से भी अधिक शक्तिशाली चीज खो देंगे। हमारे बच्चों का भविष्य अंधकारमय और अंधकारमय होगा। हम भयभीत, भूखे-प्यासे थे, फिर भी हम राम और उनके वानर-पुरुषों से लड़ने के लिए उत्सुक थे। हमारी जीत की संभावना बहुत कम थी। हम यह अच्छी तरह जानते थे। लेकिन हम अंत तक लड़ने के लिए दृढ़ थे। यह निर्णायक युद्ध था - अच्छाई और बुराई के बीच का युद्ध। हमें पूरा विश्वास था कि महादेव शिव बुराई को विजयी नहीं होने देंगे। लेकिन, मेरे मन के किसी कोने में मुझे यह एहसास था कि हम देवताओं की छोटी संतान हैं, और शिव जैसे दयालु और सर्वशक्तिमान भगवान भी हमारी त्वचा का रंग देखकर विचलित हो जाते। शायद हम गलत रंग की त्वचा के साथ पैदा हुए थे।

46 मेरे लोगों के लिए
रावण
महल में अंधेरा छाया हुआ था। नम हवा में अजीब सी आवाज़ें गूंज रही थीं। एक पत्ता भी नहीं हिल रहा था। मैं समुद्र की ओर देखने वाले इस बरामदे में बैठा था। हार और मौत मेरे सामने खड़ी थी। मैं खुद को कोस रहा था कि मैंने बहुत पहले, उस रात वरुण को उग्र लहरों में क्यों नहीं फेंक दिया। मैं सुन्न पड़ गया था। आँसुओं, परिश्रम और मृत्यु से बनाया हुआ मेरा जीवन बिखर रहा था। महल के सेवकों द्वारा कुछ घंटे पहले जलाई गई मशालें और दीपक धीरे-धीरे बुझ रहे थे। महल के बगीचों में कहीं-कहीं एक-आध दीपक अभी भी चमक रहा था, मानो जीने के लिए आखिरी संघर्ष कर रहा हो।
घंटों तक मेरा दिमाग बिल्कुल खाली था। फिर, जैसे सिरदर्द की शुरुआत कनपटी पर हल्के दर्द से होती है, वैसे ही ये भावनाएँ फिर लौट आईं: मैं अपनी बेटी को देखना चाहता था। मैंने इस विचार को मन से निकालने की कोशिश की और कुछ देर के लिए यह शांत हो गया। लेकिन जल्द ही, इसने मुझे फिर जकड़ लिया। मैं उठा और उस विशाल अशोक वृक्ष की ओर चल पड़ा जहाँ मेरी बेटी रहती थी। अँधेरा था। महल की खिड़कियों से छनकर आती रोशनी झाड़ियों पर बड़ी-बड़ी परछाइयाँ बना रही थी, जिससे वे भद्दी लग रही थीं। जैसे ही मैं वृक्ष के पास पहुँचा, एक पक्षी पंख फड़फड़ाते हुए ज़ोर से उड़ गया और चूहे इधर-उधर भागने लगे। एक चमगादड़ मेरे सिर के बहुत करीब से गुजरा, फिर रास्ता बदलकर अँधेरे में गायब हो गया।
वह सो रही थी। ऊंघती हुई दो असुर महिला सैनिकों को मेरी मौजूदगी का पता भी नहीं था। ‘उसकी सुरक्षा का तो बस नाम ही रह गया’, मैंने सोचा। मेरे हाथों में हो रही कंपकंपी से मुझे खुद से नफरत हो रही थी। मैं उसे छूना चाहती थी और उसके बचपन में वापस जाना चाहती थी, जिसे मैंने कभी नहीं देखा था। मैं

अपनी नन्ही बेटी की छोटी-छोटी उंगलियों को महसूस करना चाहती थी, उसे गोद में लेना चाहती थी और उसे बड़ा होते देखना चाहती थी। चांद ने काले बादलों को चीरते हुए रोशनी बिखेरी और अशोक के पत्तों से छनकर उसकी मासूम सूरत को रोशन कर दिया। धुंधली चांदनी बगीचे की गहरी छायाओं के साथ लुका-छिपी खेल रही थी। एक हल्की हवा ने पत्तों को सरसरा दिया। वह हिली। उसकी आंखों के किनारे से आंसू की एक छोटी बूंद उसकी प्यारी नाक पर गिरी, नाक की नोक पर टिकी और नीचे गिर गई। मेरा दिल अपनी प्यारी नन्ही बेटी के लिए तड़प उठा। वह अपने पति के प्यार के लिए तड़प रही थी। क्या मैंने उसे उस इंसान से दूर ले जाकर गलती की जिससे वह प्यार करती थी? अचानक मुझे गुस्सा आ गया। वह अपने पिता का प्यार क्यों नहीं देख सकती? राम में ऐसा क्या था जो उसे मेरी कमाई हुई सारी दौलत भुला दे? फिर मेरा क्रोध शांत हो गया और उसकी जगह बेबसी का भाव आ गया। मैंने उसके साथ अन्याय किया था। जब उसे मेरी सबसे ज़्यादा ज़रूरत थी, तब मैंने उसे त्याग दिया था। मैं एक साम्राज्य बनाने में व्यस्त था। सफलता की इस पागलपन भरी दौड़ में मैंने अपनी बेटी का बचपन खो दिया। अब, जब वह अपने पति से बेइंतहा प्यार करती थी, तब मैंने उसे फिर से उससे छीन लिया था। मुझे ऐसा करने पर खुद से घृणा हो रही थी। लेकिन वह क्यों नहीं समझ पा रही? उसका पति उसे कभी वापस नहीं लेगा। वह मेरे शहर के द्वार पर खड़ा था, एक बूढ़े आदमी को मौत और विनाश की धमकी दे रहा था, इसलिए नहीं कि वह अपनी पत्नी से बहुत प्यार करता था। या करता था? मैं अपनी बच्ची को फिर से खोना नहीं चाहता। मैं नहीं चाहता कि वह उसे मुझसे छीन ले। वह एक असुर राजकुमारी है और मेरी बेटी है। मैंने उसे एक बार खो दिया है, मैं इसे दोबारा नहीं होने दूंगा।
सहज ही वह जाग उठी और मुझे वहाँ निराशा और उलझन भरे चेहरे के साथ खड़ा पाया। मैं उसे अपने माता-पिता के साथ रहने के लिए मनाना चाहता था। लेकिन जैसे ही मैं उसकी ओर बढ़ा, वह चीख पड़ी। जादू टूट गया और मैं खुद से घृणा करते हुए पीछे हट गया। वह अपशब्द बोल रही थी, सिसकते हुए राम से उसे बचाने की गुहार लगा रही थी। असुर महिला रक्षक चौंककर जाग उठीं, वे उलझन में दिख रही थीं। लेकिन इससे पहले कि वे मुझे देख पातीं, मैं अंधेरे में छिप गया और जल्दी से अपने महल की ओर भागा। अपने शयनकक्ष में प्रवेश करते ही मेरा हृदय पीड़ा से भर गया जब मैंने मंदोदरी को पलंग पर बैठे देखा। मैं उसका सामना नहीं कर सका।

“तुम कहाँ थे?” क्या उसकी आवाज़ में कोई कड़वाहट थी? मैंने कंधे उचकाए और उसकी तरफ पीठ करके लेट गया। मुझे हर बात पर गुस्सा और कड़वाहट महसूस हो रही थी। ‘वह मेरी ज़िंदगी में क्यों आई?’ मैं बिस्तर पर करवटें बदलता रहा, लेकिन ये विचार पीछा नहीं छोड़ रहे थे। तभी मुझे अपने कंधे पर एक गर्म हाथ महसूस हुआ और मैंने अपनी पत्नी को गले लगा लिया। धीरे-धीरे मैंने उसके कपड़े उतारने शुरू किए। मुझे याद नहीं था कि मैंने आखिरी बार उससे कब प्यार किया था और मैं चाहत के उमड़ने का इंतज़ार कर रहा था। लेकिन कुछ नहीं हुआ। मैं उसके कपड़ों से ऐसे उलझता रहा जैसे कोई किशोर हो, बस उसमें जोश न हो। मैंने महसूस किया कि वह एकदम सख्त और अकड़ी हुई है। मैंने एक बार फिर उन भूली हुई भावनाओं को जगाने की कोशिश की, लेकिन फिर हार मान ली। मैं उससे मुँह मोड़कर पीठ के बल लेट गया। उसने अपना सिर मेरे कंधे पर रखा और अपने हाथों से मुझमें जोश जगाने की कोशिश की। लेकिन कुछ नहीं हुआ। मैं थक चुका था और चाहता था कि वह हार मान ले और मुझे शांति से रहने दे। उस पल मुझे उससे नफरत हो रही थी और खुद से भी नफरत हो रही थी कि मैं नपुंसक था। मुझे नहीं पता कि हम कितने घंटे ऐसे ही लेटे रहे, लेकिन धीरे-धीरे नींद ने उसे अपनी गिरफ्त में ले लिया और वह बिस्तर के अपने हिस्से में वापस सरक गई। लेकिन मुझे चैन भरी नींद भी नहीं आई। लाखों विचार मन में उमड़ रहे थे, जिनमें से अधिकतर अर्थहीन थे। कहीं न कहीं, थकावट और हार का एहसास हावी हो गया। मैं सब कुछ खत्म कर देना चाहता था। जीवन का कोई अर्थ नहीं था। सब कुछ व्यर्थ था। मैं करवटें बदलता रहा और अंत में गहरी नींद में डूब गया।
फिर, जब पूर्वी आकाश पीला पड़ गया, तो मैं पसीने से भीगी हुई, अचानक जाग उठी। मैं माया से ज्योतिष और खगोल विज्ञान सीख रही थी। जैसे-जैसे मैं बड़ी होती गई, मेरी अपनी संवेदनशीलता ने मुझे इन अमूर्त विज्ञानों के प्रति अधिक ग्रहणशील बना दिया। जिस भी विषय में मेरी रुचि होती, मैं घंटों उसका अध्ययन करती। जीवन बहुत छोटा था और सीखने को बहुत कुछ था। मैं ज्योतिष और शकुनों पर एक पुस्तक, एक संहिता लिख रही थी। शायद इसी वजह से मुझे वह बुरा सपना आया जिसमें मेरी बेटी सीता को लंबे और गोरे आदमी घसीटकर ले जा रहे थे और उसे भयंकर आग में फेंक रहे थे। राम एक ऊंचे आसन पर बैठे थे, स्पष्ट रूप से व्यथित। कहीं पास ही, एक और आग भयंकर रूप से जल रही थी। मेरी बेटी के भयानक भाग्य से कहीं अधिक, उस विकृत चेहरे ने मुझे जगाया जो लपटों में भूख से जल रहा था, मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था। यह असुर सम्राट का चेहरा था।

क्या यह कोई अपशगुन था, आने वाली घटनाओं का संकेत? ज्योतिष शास्त्र इतना रहस्यमय था कि मैं शकुन-शुभकामनाओं पर विश्वास नहीं करती थी। मेरी इच्छा थी कि नींद मुझे अपनी गोद में वापस ले ले, लेकिन परेशान करने वाली तस्वीरें मुझे जगाए रखती थीं और थका देती थीं। दो बार मेरे नौकर मुझे जगाने आए, लेकिन मैंने उन्हें अनसुना कर दिया, क्योंकि मैं चादर के नीचे एक डरे हुए बच्चे की तरह दुबकी हुई थी और उनके डर को महसूस कर रही थी। अंत में, मंदोदरी आई और मुझे जगाया। वह एक उदास सुबह थी। आसमान बादलों से घिरा था और उथल-पुथल भरे सागर पर अंधेरा छाया हुआ था।
“महाराज, परिषद प्रतीक्षा कर रही है।” प्रहस्त की आवाज़ सुनकर मैं चौंक गया और धुंधली आँखों से उसकी ओर देखा। परिषद…कौन सी परिषद… अब वे क्या चर्चा करना चाहते हैं?’ मैं हर चीज़ से थक चुका था – छोटी-मोटी राजनीति और अहंकार; झगड़े और कलह; अंतहीन बैठकें और चापलूस जो अपनी अटूट देशभक्ति से मुझे प्रभावित करने की कोशिश करते थे; मेरा शान-शौकत वाला महल; मेरा पूरा साम्राज्य; और वह युद्ध जो मुझे राम के विरुद्ध अवश्य ही लड़ना था। मैं जीवन से ऊब चुका था। मैं चाहता था कि प्रहस्त और उसके जैसे लोग मेरे संसार से चले जाएँ और गायब हो जाएँ। ‘मैंने राजा बनना क्यों चुना?’ मुझे पूर्णा नदी के सुंदर किनारों पर एक सरल जीवन चुनना चाहिए था, छोटे-छोटे सपने देखने चाहिए थे, और दुनिया के लाखों तुच्छ लोगों की तरह जीना और मरना चाहिए था। एक छोटी सी कुटिया, एक वफादार पत्नी, प्यारे बच्चे, खेती करने के लिए कुछ खेत और जीवन का आनंद लेने के लिए दुनिया का सारा समय – लेकिन मैं जानता था कि ऐसे सपने बस सपने ही होते हैं।
प्रहस्त के जाने के बाद मैं काफी देर तक वहीं बैठा रहा। मुझे शिव की पूजा करने का मन नहीं था। ‘आज तो उन्हें पूजा न ही करनी पड़े।’ मैंने काफी प्रार्थना कर ली थी, भले ही मुझे यकीन नहीं था कि भगवान ने मेरी प्रार्थना सुनी या नहीं। जब मैं आखिरकार दरबार पहुँचा, तो परिषद के सदस्य गोल घेरे में बैठे स्कूली बच्चों की तरह बेपरवाही से बातें कर रहे थे। मेरे प्रवेश करते ही अचानक सन्नाटा छा गया और वे सब अपनी-अपनी सीटों पर बैठ गए। मैं बढ़ती झुंझलाहट के साथ देखता रहा, क्योंकि उनमें से कई अपने वस्त्र और पगड़ी ठीक करने में लगे थे।
प्रहस्त खड़ा हुआ, लेकिन मैंने हाथ के इशारे से उसे रोक दिया। उसके चेहरे पर शर्मिंदगी और दुख साफ दिख रहा था, पर मुझे उसकी कोमल भावनाओं की कोई

परवाह नहीं थी। मैंने एक बार फिर फुसफुसाहट के शांत होने का इंतजार किया और फिर कहा, “शत्रु हमारी गर्दन पर सांस ले रहा है। हमें एक के बाद एक विश्वासघात का सामना करना पड़ रहा है। विभीषण, जिसे मैंने अपनी बाहों में पाला और बेटे जैसा माना, शत्रुओं के शिविरों में चला गया। वरुण, नाग, जिस पर मैंने अपनी नौसेना का भरोसा किया था और जिसे मैं अपना सबसे अच्छा मित्र मानता था, उस देव के हाथों गुलाम बन गया है। हमारी आधी सेना और पूरी नौसेना पाला बदल चुकी है। असुर साम्राज्य और हमारे वंश की शान, जिसके लिए मैंने अपना खून, अपने परिवार, अपने सपने, अपना जीवन कुर्बान कर दिया, सब कुछ खत्म हो गया।”
“हमें सुबेला पहाड़ियों की ओर चलना चाहिए। वहाँ का किला दुश्मन के किसी भी हमले का डटकर सामना कर सकता है। हमारे पास वहाँ कई महीनों तक चलने लायक रसद है। हम वहाँ इंतज़ार करेंगे और दुश्मन को थका देंगे।” प्रहस्त ने बीच में दखल दिया।
प्रहस्त की बात समझने में मुझे कुछ समय लगा और फिर अचानक मुझे गुस्सा आ गया। “नहीं, मैं दो देव पुरुषों और उनकी वानर-मानवों की सेना से भागकर नहीं जाऊंगा। मैं असुरों का सम्राट हूं, और मैं पहाड़ियों में नहीं छिपूंगा। मैं उन्हें कुचल दूंगा।”
मेरे मंत्रियों में हलचल मच गई। तभी जंबुमाली दर्द से कराहते हुए खड़ा हुआ और बोला, “महाराज! यदि हम अगली मानसून तक पहाड़ियों में डटे रह सकें, तो हम राम की सेना को उफनते समुद्र और शहर के बीच फंसा सकते हैं। तब तक हम गुरिल्ला युद्ध की रणनीति अपनाकर शत्रु को कमजोर कर सकते हैं।”
“क्या तुम चाहते हो कि मैं इस शहर को उन बर्बरों के भरोसे छोड़ दूं? मुझे लगता है कि तुम मूर्खों ने इतिहास के सबक भुला दिए हैं। अतीत में कितने ही भव्य असुर नगरों को लूटा और जलाकर राख कर दिया गया; कितनी ही महिलाओं का देवताओं ने बलात्कार और शोषण किया? क्या तुम्हें लगता है कि इंद्र के पुत्र हमारे इस भव्य शहर को बख्श देंगे?”
“पर, महाराज! हम अब कमज़ोर हैं। हमें रणनीति बनानी होगी, योजना बनानी होगी और अपने तरीके से युद्ध लड़ना होगा। सुबेला पहाड़ियाँ लगभग अभेद्य हैं। लौटता मानसून किसी भी समय शुरू हो सकता है और सुबेला किले की खड़ी दीवारें वानर-मानवों के लिए भी एक दुर्जेय बाधा बनेंगी। इसके अलावा, हम वरुण के

जहाजों के अग्नि प्रज्वलन की सीमा से बाहर होंगे।” प्रहस्त ने धैर्यपूर्वक मेरे उत्तर की प्रतीक्षा की।
मुझे कमरे में तनाव का एहसास हो रहा था, लेकिन मैंने कुछ नहीं कहा। मेरे प्रधानमंत्री सही थे। सुबेला की पहाड़ियों में हम राम को हमेशा के लिए रोक सकते थे। फिर हम वरुण के आदमियों को रिश्वत देकर अपने पक्ष में कर सकते थे और ग्रीष्म ऋतु में राम पर आक्रमण कर सकते थे। मुझे पता था कि मेरे राज्यपाल खारा, जो अब भारत के मध्य में, मेरे राज्य की सबसे उत्तरी सीमा पर थे, राम को पीछे से घेरने के लिए तेजी से आगे बढ़ रहे थे। एक बार राम कमजोर हो गए, तो मुझे यकीन था कि वरुण फिर से अपनी वफादारी बदल देगा। लेकिन अपनी विशाल सेना के साथ दूरी तय करने में उसे कुछ महीने लग जाएंगे। क्या हम तब तक टिक पाएंगे? अगर हम टिक भी गए, तो मेरे शहर और मेरी प्रजा का क्या होगा? क्या पता प्रहस्त मुझे खत्म करने की साजिश रच रहा हो? नहीं, रावण कायरों की तरह नहीं भागेगा। रणनीति हो या न हो, मैं यहीं रुकूंगा और अपनी प्रजा की रक्षा करूंगा।
अचानक हमें गलियों से शोरगुल सुनाई दिया। शुरू में यह धीमा था, लेकिन धीरे- धीरे बढ़ता गया। परिषद के सदस्य घबराकर अपनी सीटों से उठ खड़े हुए और मेरी जिज्ञासा बढ़ गई। क्या राम की सेना हमला कर रही थी? मैं दौड़कर खुले बरामदे में गया जहाँ मैं आमतौर पर सुबह अपनी प्रजा को दर्शन देता था और उनकी शिकायतें सुनीं। एक टेढ़ी-मेढ़ी कतार महल की ओर बढ़ रही थी। जहाँ तक नज़र जाती थी, लोग, पुरुष और महिलाएं, बूढ़े और जवान, महल की ओर बढ़ते जा रहे थे। किले के द्वार पर तैनात पहरेदारों ने उन्हें रोकने की कोशिश की, लेकिन भीड़ लगातार धक्का-मुक्की करती हुई आगे बढ़ती जा रही थी।
“देवों का नाश हो!” “हर हर महादेव!” “रावण विजय!” भीड़ ने दस फुट लंबे भाले और तलवारों से लेकर बागवानी के औजारों और यहां तक कि रसोई के चाकुओं तक, हर तरह के हथियार लहराते हुए गुस्से भरी चीखें आसमान में गूंजीं। ढोल वादक चिन्दों पर सदियों पुराने असुरों के रागों की धुनें उन्मादपूर्वक बजा रहे थे।
‘मैं अपने लोगों को छोड़कर पहाड़ियों में छिपने के बारे में सोच भी कैसे सकता था?’ मैंने हाथ हिलाए और भीड़ ने ज़ोरदार तालियों से मेरा समर्थन किया। मैंने पहरेदारों को इशारा किया कि भीड़ को अंदर जाने दें। ‘मैं भला उन्हें रोकने वाला कौन होता?’ भीड़ अंदर घुस गई। उन्होंने सजे-धजे बगीचों

शक्तिशाली भुजाओं से पराजित हुई, फिर भी धीरे-धीरे हमारे मन में समा गई और उसे विषैला बना दिया। उनकी ही तरह, हम भी कुछ मनुष्यों को दैवीय मानने लगे; कि कुछ शुद्ध हैं और कुछ नहीं – उनके कर्मों या मन के कारण नहीं, बल्कि उनके जन्म के कारण। आपके नेता के रूप में, मुझे हमारे समाज में जातिवाद के बुरे विचारों को फैलते हुए देखना चाहिए था। अफसोस, मैं स्वयं की महिमा करने में व्यस्त था।” भीड़ ने आह भरी।
“मैं खुद अपने मूल्यों को भूल गया, तो समाज को क्यों दोष दूं? ब्राह्मणों ने, और मेरा उनसे व्यक्तिगत रूप से कोई दुर्भावना नहीं है, सारी मूल्यवान चीज़ों पर कब्ज़ा कर लिया, और आपमें से अधिकांश लोग उपेक्षित रह गए। मैं, आपका नेता होने के नाते, आपको निराश कर बैठा, क्योंकि मैंने अपने भाई, गद्दार विभीषण को ब्राह्मणवाद और विष्णु के साथ संबंध बनाने की अनुमति दी। मुझे यह कहते हुए शर्म आती है कि मैंने खुद को आप लोगों से श्रेष्ठ समझा क्योंकि मैं आधा ब्राह्मण हूं। मैं अपने गोरे रंग पर गुप्त रूप से गर्व करता था और काली त्वचा को गंदा और बुरा मानता था।”
भीड़ मंत्रमुग्ध होकर ध्यान से सुन रही थी, क्योंकि शब्द स्वतःस्फूर्त रूप से निकल रहे थे। “आज हमारी सभ्यता चौराहे पर खड़ी है। मैं आपके सामने एक सम्राट के रूप में नहीं, उस अहंकारी, सर्वविजयी राक्षस के रूप में नहीं, जैसा कि मेरे आलोचक मुझे कहते हैं, बल्कि एक साधारण मनुष्य के रूप में, एक साथी असुर के रूप में, अपने हृदय को खोलकर खड़ा हूँ। मैंने पाप किया है, क्योंकि मैं ईश्वर नहीं, बल्कि आप ही की तरह एक मनुष्य हूँ। मैंने जो गलतियाँ की हैं, उनके लिए मैं दंड भुगत रहा हूँ। आपने मेरे नेतृत्व पर जो सरल विश्वास जताया है, उससे मैं विनम्र हो गया हूँ। मैं शिव से प्रार्थना करता हूँ कि वे मुझे इस भारी बोझ को उठाने की शक्ति दें।”
बहुत से लोगों की सोच के विपरीत, यह युद्ध न तो देवराज राम की सुंदर पत्नी सीता के बारे में है और न ही आपके बूढ़े राजा की किसी दूसरे पुरुष की पत्नी के प्रति वासनापूर्ण लालसा के बारे में। न ही यह युद्ध राम के भाई लक्ष्मण के हाथों मेरी बहन सूर्पनखा के अपमान का बदला लेने के बारे में है। यह..." मैं रुक गया। अचानक शब्द रुक गए। भीड़ उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रही थी। “मेरे प्यारे असुर मित्रों…सीता…मेरी पुत्री है।” भीड़ में ज़ोरदार गर्जना हुई और मैंने उसके शांत होने का इंतज़ार किया। दोपहर की तेज़ धूप मेरी ऊर्जा को निचोड़ रही थी और मेरे दिमाग को सुस्त कर रही थी। मेरे चेहरे

से पसीने की नदियाँ बह रही थीं। नीचे हज़ारों काले, पसीने से तर चेहरे चमक रहे थे। क्रोधित, भ्रमित और उत्तेजित भीड़ झूम रही थी। मैं पीछे मुड़कर अपने मंत्रियों का सामना नहीं करना चाहता था, हालाँकि मुझे शक था कि वे सीता के बारे में जानते हैं। अब उनमें हिम्मत नहीं थी। कुछ मिनट पहले मैंने असुर सभ्यता के भविष्य पर अपने भाषण से भीड़ को प्रभावित करने की योजना बनाई थी, अब वे शब्द गायब हो गए थे। मैंने रेलिंग का सहारा लिया और इंतज़ार किया। मुझे पता था कि इस समय भीड़ खतरनाक हो सकती है। मैं थका हुआ और हारा हुआ महसूस कर रहा था।
‘सीता माता की जय हो! असुरों की राजकुमारी की जय हो!’ एक कोने से एक उदास पुकार उठी। सन्नाटा छा गया। सबने हैरानी से उस आवाज़ की तरफ देखा। मैंने सूरज की रोशनी में आंखें गड़ाकर देखने की कोशिश की कि यह आवाज़ किसने निकाली है। क्या यह वही बूढ़ा बदमाश भद्र था? मुझे एक बूढ़ा, झुर्रियों वाला आदमी लाठी के सहारे खड़ा दिखाई दिया, उसके पास एक फुर्तीला, काला, हट्टा-कट्टा युवक था, लेकिन मैं उसका चेहरा ठीक से नहीं पहचान पाया। बूढ़े ने एक बार फिर पुकारा, ‘माता सीता की जय हो!’ और भीड़ एक साथ सीता और रावण की जय-जयकार करने लगी। जो चेंडा (एक प्रकार का वाद्य यंत्र) शांत हो गया था, वह असुरों के जोशीले नारों में बदल गया और भीड़ ऐसे झूम उठी जैसे कोई विशालकाय सांप मेरे महल से रेंगता हुआ निकल रहा हो, अपने पीछे धूल का ढेर उड़ाता हुआ।
जैसे ही युद्धघोष शांत हुआ, मैंने अपने मंत्रियों की ओर मुड़कर कहा, “निस्तेसाई और थ।” तो यह तय हो गया है। हम यहीं रुकेंगे और लड़ेंगे।” प्रहस्त को छोड़कर सभी ने प्रणाम किया। जब मैं शान से अपने कक्षों की ओर बढ़ा, तो मैंने देखा कि प्रहस्त की आँखों में एक अजीब सी उदासी छाई हुई थी। मैंने उसकी ओर देखा और उसने अनजाने में अपना सिर हिलाया। बाद में, अंधेरे, ठंडे कक्षों में, मेरे प्रजाजनों द्वारा मेरे शरीर में प्रज्वलित आग के शांत होने के बहुत बाद, मैंने खुद को शिव से प्रार्थना करते हुए पाया कि वे बढ़ते हुए भय को शांत करें। लंका के ऊपर घनी, नम हवा में विनाश का पूर्वाभास छाया हुआ था। मैं उसे सूंघ सकता था; मैं उसे अपने बालों में महसूस कर सकता था। शायद प्रहस्त हमेशा की तरह सही था। हालाँकि, मैं राम की भयानक वानर सेना के सामने अपने लोगों को छोड़ने के बजाय मरना और सब कुछ खो देना पसंद करता। मैं जानता था कि अब पीछे हटना तर्कसंगत था, लेकिन मैं बहुत

47 नैतिकता के बिना युद्ध
भद्र
मैंने असुर राजकुमारी के लिए पूरी ताकत से आवाज़ लगाई। मुझे खुशी थी कि कम से कम एक शासक ने तो सच स्वीकार कर लिया। उसके बाद भीड़ का मिजाज बदल गया। कौन जाने? शायद मैंने रावण को बचा लिया हो। मैं भीड़ के पीछे-पीछे वापस चला गया, लेकिन इतना थक गया था कि अपनी कुटिया तक वापस नहीं जा सका। इसलिए मैं एक रेशम की दुकान के सामने फुटपाथ पर सो गया। कई और लोग भी फुटपाथ पर सोए। युद्ध का बुखार चढ़ते ही पुलिस व्यवस्था ढीली पड़ गई थी।
अचानक, आधी रात के सन्नाटे में, बाज़ार की ओर ज्वाला-युक्त तीर चलाए गए। युद्ध की शुरुआत ज़ोरदार धमाके के साथ हुई। बाज़ार आग की लपटों में घिर गया। वरुण के अग्नि-प्रवर्तकों ने तट से कुछ सौ फीट दूर लंगर डाले जहाजों से आग के तीर चलाए थे। तीर हवा में सरसराहट और गड़गड़ाहट की आवाज़ करते हुए उड़ रहे थे; वे चीज़ों को भेद रहे थे; लोगों को भेद रहे थे; घास की छतों पर गिरकर उन्हें चीर रहे थे। स्याही जैसे काले आकाश में लाल ज्वाला की हज़ारों लपटें जगमगा रही थीं, मानो वे किसी भयानक आनंद में नाच रही हों, मानो लंका पर मानसून की बारिश की तरह मौत बरस रही हो। अगर मैं अपनी जान बचाने के लिए भाग न रहा होता, तो मैं रुककर वरुण द्वारा अपने पुराने मित्रों को दिखाए जा रहे इस तमाशे का आनंद ज़रूर लेता।
लोग बाहर भागे। चीखें आसमान में गूंज उठीं। शरीर जलकर राख हो गए। घर जलकर राख हो गए और घना, काला धुआं ऊपर की ओर उठने लगा। ऐसा लग रहा था जैसे नरक में हों। पहली बार मैंने एक आम आदमी की तरह युद्ध का सामना किया, न कि एक योद्धा की तरह। मैंने पाया कि यहाँ जीवित रहने के लिए मुझे युद्ध के मैदान से भी अधिक साहस की आवश्यकता थी। वहाँ कम से कम हमें दुश्मन का पता तो होता था। यहाँ, मृत्यु अनेक रूपों में आई: गिरती हुई लकड़ियों के रूप में,

हमलावर सैनिकों के रूप में, दम घोंटने वाले घने काले धुएं के रूप में, उछलती हुई लपटों के रूप में, तीरों के रूप में। यहाँ हम मृत्यु का इंतज़ार करते हैं कि वह हमें ढूंढ ले।
देवताओं में न्याय की कोई भावना नहीं थी। वे पहले आम नागरिकों पर गोलीबारी कर रहे थे। उनका इरादा दहशत फैलाना, हमें कमजोर करना और हमारा मनोबल गिराना था। उजाला होते ही वे पुल पार करके अपनी पैदल सेना और घुड़सवार सेना के साथ हमला कर देते। 'हमारे राजा क्या कर रहे थे?' अपनी बड़ी-बड़ी बातों के बावजूद, वे सुबेला पहाड़ी किले में छिप सकते थे। इन राजाओं पर भरोसा नहीं किया जा सकता था। अथिकाया कहाँ चले गए थे? मेरे पेट में एक अजीब सी घबराहट दौड़ रही थी। मैं भागती हुई भीड़ के बीच दौड़ा, लड़खड़ाता, उठता, पैर पटकता और चूहों की तरह भागते डरे हुए पुरुषों और महिलाओं की भीड़ को रौंदता हुआ। 'अथिकाया कहाँ थे?' मैं रोने ही वाला था। मैंने खुद को एक लैंपपोस्ट से सटा लिया और वहीं खड़ा रहा। आसमान काले धुएं से भरा हुआ था। जलते हुए मांस की गंध से मुझे उल्टी आने लगी। 'असुर सेना कहाँ चली गई? वे हमें बंदर जैसे आदमियों से बचाने के लिए कुछ क्यों नहीं कर रहे थे?' घबराई हुई भीड़ में बेबसी और अपने शासकों के प्रति घोर घृणा का भाव व्याप्त था। मुझे उनका डर महसूस हो रहा था।
मेरे सवालों का जवाब देते हुए, घने धुएं के बीच से अचानक घुड़सवार सेना प्रकट हुई। भाग रहे कुछ लोग रुककर पीछे देखने लगे, लेकिन घुड़सवार सेना भीड़ में से आगे बढ़ती रही, कुछ को कुचलती हुई, कई को धक्का देकर गिराती हुई और तलवारों व चाबुकों से रास्ता बनाते हुए आगे बढ़ती रही। ‘हे भगवान! राम की घुड़सवार सेना!’ मैंने सोचा, लेकिन तभी मेरी नज़र वज्रधमस्त्र पर पड़ी। ये असुरों की घुड़सवार सेना थी जो वानर-मानवों से लड़ने जा रही थी। सड़क पर लोग मृत या घायल पड़े थे। मैं महल की ओर चल पड़ा, राम और रावण दोनों के बाणों से समान रूप से भयभीत था। चारों ओर मनुष्यों और जानवरों के जले हुए शव बिखरे पड़े थे। कुछ सौ गज चलने के बाद, आसमान थोड़ा सा साफ हुआ और मैंने ताजी हवा में सांस लेने के लिए रुक गया। महल में सन्नाटा पसरा हुआ था। वरुण के ज्वालाशील बाणों की पहुंच महल तक नहीं थी, इसलिए फिलहाल राजा सुरक्षित थे, अपने निर्धन प्रजाजनों के विपरीत। मैंने समुद्र की ओर देखा। वरुण के जहाज लहरों पर धीरे-धीरे चल रहे थे। मैं हजारों सशस्त्र पुरुषों को मुख्य बाजार और आवासीय क्षेत्रों की ओर ज्वालाशील बाण चलाते हुए देख

सकता था। मैं मुख्य सड़क से कुछ गज की दूरी पर समुद्र की ओर निकली एक छोटी पहाड़ी पर चढ़ गया और वहां से मुझे बेहतर दृश्य दिखाई दिया।
राम सेतु लगभग बनकर तैयार था। मनुष्य, हाथी और घोड़े जहाजों से उतारे जा चुके थे और पैदल सेना की एक लंबी, टेढ़ी-मेढ़ी टुकड़ी लंका की ओर बढ़ रही थी। मैं विष्णु के शंख चिन्ह वाले देव ध्वजों को फहराते हुए देख सकता था और बर्बर सेना के बढ़ते उत्साह को महसूस कर सकता था, क्योंकि वे पहली बार समृद्ध असुर राजधानी को देख रहे थे।
मैंने हमारे समुद्र तटों की खूबसूरत सफेद रेत पर वज्रधामस्त्र की घुड़सवार सेना और तेजी से आते वानर-पुरुषों के बीच संघर्ष देखा। कुछ दिन पहले तक, प्रेमी जोड़े इन सफेद रेत पर हाथ में हाथ डालकर टहलते थे और माताएं अपने नन्हे-मुन्नों के कदमों को देखकर प्रसन्न होती थीं। उन्हीं रेत पर, जहाँ जीवन इतना सुंदर था, अब काली के कदमों पर मृत्यु नाच रही थी। असुर सेना द्वारा पास की एक पहाड़ी से फेंका गया एक विशाल पत्थर निशाने पर लगा। दूसरा पत्थर भी निशाने पर लगा, फिर तीसरा, और अंत में एक जहाज हिलकर डूब गया। असुरों की सेना में जोरदार जयकार हुई।
किले का द्वार खुला और शेष असुर घुड़सवार और पैदल सेना, हजारों-हजारों सशस्त्र पुरुष, अपने होठों पर 'हर हर महादेव!' का नारा लगाते हुए, आगे बढ़े। मैंने चारों ओर देखा। वह एक शानदार दिन था। समुद्र कांच की चादर की तरह फैला हुआ था, जिसमें गहरा नीला आकाश प्रतिबिंबित हो रहा था। मेरे चारों ओर ड्रैगनफ्लाई भिनभिना रही थीं और फूल खिले हुए थे। अगर मैं किसी तरह खून और मौत की गंध को दूर कर पाता, तो मैं धरती की ताजगी और ओस की महक महसूस कर पाता। फिर, एक आश्चर्यजनक क्षण में, मुझे सब कुछ स्पष्ट दिखाई दिया। दुनिया मनुष्यों की तुच्छ इच्छाओं के प्रति उदासीन थी। यह इस बात से उदासीन थी कि राम जीते या रावण। यह असुरों की दुर्दशा के प्रति उतनी ही उदासीन थी जितनी कि एक तेंदुआ के चंगुल में फंसे हिरण की दुर्दशा के प्रति। धरती मनुष्यों, जानवरों, सांस लेने वाले हर प्राणी के खून से लथपथ थी। हर पल, कोई न कोई, कुछ न कुछ, कहीं न कहीं मारा जा रहा था - शायद युद्ध के मैदान में दुश्मन द्वारा, या शिकार की तलाश में घर में घुस आए किसी हत्यारे द्वारा, या किसी भूखे बाघ द्वारा; सड़क दुर्घटना में; या देवताओं की रक्तपिपासा को शांत करने के लिए बलिदान के रूप में। हिंसा ही दुनिया पर राज करती थी। बाकी सब कुछ क्षणिक विराम था, हिंसा के और अधिक क्रूरता से

आक्रमण करने से पहले का एक ठहराव। अजीब बात यह थी कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। सम्मान और गौरव, जाति और त्वचा के रंग, नैतिकता और परंपराओं, विजय और विफलताओं के बारे में सारी बातें, वृहद व्यवस्था में अप्रासंगिक थीं।
फिर भी मेरे भीतर कुछ हलचल थी। डर? आशा? बदला लेने की प्यास? थकान और इन विचारों की निरर्थकता मेरे दिमाग में गूंज रही थी। और कहीं, अनियंत्रित भावनाओं के इस भंवर में, मैं जीवन नामक इस पागलपन भरी घटना का अर्थ खोजने की बेताब कोशिश कर रहा था। बाद में, बहुत बाद में, मुझे एहसास हुआ कि जीवन का एकमात्र अर्थ यही था कि इसका कोई अर्थ नहीं था। लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। थका हुआ मैं महल की ओर चल पड़ा। मैंने समुद्र तट से चीखें और चिल्लाहटें सुनीं, जहाँ भयंकर युद्ध चल रहा था। आसमान में धूल उड़ रही थी। मैं अथिकाया को ढूंढने के लिए अपने पंजों पर खड़ा हो गया। 'मेरा बेटा कहाँ है? मैं उसे खुद को मारने से पहले ढूंढना चाहता हूँ।' मैं अपनी पत्नी माला के पास घर जाना चाहता था, और किसी तरह अथिकाया को, अगर मैं उसे ढूंढ पाता, तो इस पागलपन को छोड़कर रामों और रावणों से भरी इस पागल दुनिया से भागने के लिए मनाना चाहता था। 'वह कहाँ है? या वह पहले ही समुद्र तट पर मृत पड़ा है?' भारी कदमों से, मैं खुद को घसीटते हुए महल की ओर बढ़ा।
महल धूल के उठते बादल के पीछे छिपा हुआ था। द्वार बंद थे और पहरेदार सजग और सतर्क थे। मैं हांफते हुए रुक गई और अपने मूर्ख पुत्र और उन बेवकूफों को कोसने लगी जिन्होंने यह युद्ध शुरू किया था। मैंने प्रार्थना की कि यह युद्ध जल्द से जल्द समाप्त हो जाए। चाहे जैसे भी हो। मैं चाहती थी कि घुसपैठिए राम को पकड़कर फांसी दे दी जाए - ऐसा नहीं था कि मैं रावण से प्रेम करती थी। लेकिन कम से कम उसका शासन सहनीय तो था। पर क्या वह धूर्त देव राजकुमार का मुकाबला कर सकता था? सूरज मेरी पीठ झुलसा रहा था। अपनी उंगलियों को आंखों पर रखकर, उन्हें तेज धूप से बचाते हुए, मैंने महल की बालकनियों पर अथिकाया की एक झलक पाने के लिए नज़र दौड़ाई। महल वीरान लग रहा था। फिर धीरे-धीरे, जैसे ही मेरी आंखें तेज धूप से अपेक्षाकृत अंधेरे महल में अभ्यस्त हुईं, मैंने लंबे और गोरे असुर सम्राट को एक बालकनी पर अकेले खड़े देखा। वह भावहीन होकर समुद्र तट की ओर देख रहे थे। यह वह व्यक्ति था जो अपने और अपनी प्रजा के लिए बनाए गए अपने गौरवशाली जीवन को अपने चारों ओर ढहते हुए देख रहा था। फिर भी, उनका चेहरा गंभीर और भावहीन

बना रहा, उनका शरीर सीधा और गर्व से भरा हुआ था। हवा में लहराते उनके सुनहरे बालों के साथ, वे दिव्य प्रतीत हो रहे थे। मैंने अनिच्छा से ही उन्हें प्रणाम किया। वे मेरी ओर मुड़े और हमारी निगाहें मिलीं। उन्होंने सिर हिलाया और मेरा हृदय खुशी से उछल पड़ा। उन्हें वह बेचारा सेवक, वह अभागा भद्रा याद था, जो उनके साथ तब था जब वे देवों के गढ़ों को तबाह करने वाले तूफान की तरह उनके साथ थे, बहुत पहले, हमारी जवानी में।
मैंने एक रक्षक को अपनी ओर आते देखा। सम्राट अपनी बालकनी से गायब हो चुके थे। रक्षक ने मुझे महल में प्रवेश करने का आदेश दिया। जैसे ही मैं रावण के महल के सुनहरे द्वार से अंदर दाखिल हुआ और उस स्थान की सुंदरता में मग्न खड़ा था, मुझे अचानक धक्का देकर एक तरफ कर दिया गया। इससे पहले कि मैं कुछ कह पाता, एक रथ तेज़ी से मेरे पास से गुज़रा। मेरे मन में चल रहे श्राप तब थम गए जब मैंने एक बेजान शरीर को देखा जिसका सिर बुरी तरह से कुचला हुआ था। रथ के मुड़ते ही मैंने उसका चेहरा देखा। वह वज्रधमस्त्र था। "बंदरों ने उसे पीछे से मारा!" मैंने एक सैनिक को अपने मंत्रमुग्ध श्रोताओं को बड़े जोश से समझाते हुए सुना। यह एक घिनौना युद्ध था, जिसमें कोई नैतिकता नहीं थी। मैं इस जगह से निकलना चाहता था और अथिकाय की तलाश में महल के अंदर भागा।

48 पुत्र, पुत्र ही होते हैं

रावण
दिन का अंत विजयपूर्ण रहा। वज्र की मृत्यु के बाद सेना की कमान संभाले रुद्रक और सुमाली एवं प्रहस्त की नौकाओं में चतुराई भरी चालों ने राम की सेना को घेर लिया और विजय दिलाई। राम के वानर-पुरुषों का सूअरों की तरह वध कर दिया गया। प्रहस्त वरुण के बेड़े के तीन जहाजों पर पुनः कब्जा करने में भी सफल रहे। आने वाले दिनों में यह हमारे पक्ष में निर्णायक मोड़ ला सकता है।
महल के द्वार पर रखे वज्र के निर्जीव शरीर को देखने के लिए अनेक लोग उमड़ पड़े। जो लोग जीवन में उससे भयभीत रहते थे, वे अब मृत असुर सेनापति के दर्शन करने के लिए उमड़ पड़े। मुझे उसकी मनमानी, उसकी निर्भीकता और उसकी बेपरवाही से घृणा थी। ब्राह्मण विद्रोह को उसने जिस प्रकार कुचला था, वह घृणित था। उन अस्थिर समयों में उसने जो अत्याचार किया था, उसने असुरों के धर्म और करुणा के दावे को हमेशा के लिए धूमिल कर दिया था। परन्तु मैंने अपना साम्राज्य वज्रधामस्त्र जैसे पुरुषों के कंधों पर खड़ा किया था। उसके जैसे पुरुषों के बिना, जो किसी दूसरे का जीवन लेने में जरा भी संकोच नहीं करते थे; जो क्रूरता में आनंदित होते थे; साम्राज्य एक गरीब, आधे असुर बालक की आँखों में चमकता ही रह जाता।
जब मैं अपने मंत्रियों और रिश्तेदारों के साथ बाहर निकला, तो मृत सेनापति को देखने के लिए उमड़ी भीड़ छंट गई। मैं अपने मुख्य सैनिक के निर्जीव शरीर के सामने सिर झुकाए खड़ा था। सन्नाटे में उसकी पत्नी और बेटी की दबी हुई चीखें सुनाई दे रही थीं। शव के ठंडे पैरों को छूते ही मेरे हाथ कांपने लगे। मैंने सर्वशक्तिमान शिव से प्रार्थना की। मैंने उस व्यक्ति की आत्मा की

शांति के लिए प्रार्थना की जिसने अपने लोगों को खोया हुआ सम्मान वापस दिलाने के लिए सबसे जघन्य अपराध किया था।
शवों का जुलूस गलियों से गुज़रा। सेनापति के साथ मारे गए छोटे सैनिकों को लाया गया। जैसे ही धधकते लाल सूरज ने समुद्र में डुबकी लगाई, मेरे सैनिकों की चिताओं से घना काला धुआँ उठने लगा, जिन्होंने राम की सेना से असुर मातृभूमि की रक्षा करते हुए अपने प्राणों की आहुति दी थी। समुद्र के उस पार, आधे टूटे घाट के दूसरे छोर पर, मैं शत्रु की चिताओं की टिमटिमाती आग देख सकता था। लेकिन मारे गए लोगों के परिजनों का सामूहिक दुःख हमारे शिविर में व्याप्त उल्लास को कम नहीं कर सका। हमने श्रेष्ठ देवों का सामना किया था और उन्हें ऐसी करारी हार दी थी जिसे वे कभी नहीं भूलेंगे। मुझे आशा थी कि बर्बर लोग मेरी बेटी को मेरे साथ छोड़कर चले जाएँगे। मैं एक अर्थहीन युद्ध में अच्छे सैनिकों का बलिदान देने के लिए बहुत बूढ़ा हो चुका था। देवों के प्रति मेरे मन में जो घृणा थी, वह बहुत पहले ही फीकी पड़ चुकी थी। मैं किशोरावस्था के सम्मान, प्रतिशोध, युद्ध, अभियानों और जातीय श्रेष्ठता की चाहत से परे परिपक्व हो चुका था। यह दुनिया देवों और असुरों दोनों के लिए काफी विशाल थी। यह राम और रावण को समाहित करने के लिए भी काफी बड़ी थी। बस उसे मेरी बेटी को अकेला छोड़ देने दो। उसने कभी उसके साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया और न ही कभी करेगा। यह उसके खून में था। उसे स्त्रियों को कीड़े-मकोड़ों की तरह समझना सिखाया गया था। राम और लक्ष्मण की यह जोड़ी अजीब थी - एक तरफ जहां एक ओर वह अपनी उस पत्नी के लिए हजारों पुरुषों और महिलाओं से लड़ने और उन्हें मारने को तैयार था जिसे वह कभी चाहता ही नहीं था, वहीं दूसरी ओर उसने अपनी पत्नी को चौदह लंबे वर्षों तक अपने महल में कष्ट भोगने के लिए छोड़ दिया।
जैसे-जैसे अंतिम संस्कार की चिताएँ धीरे-धीरे बुझती गईं और आम लोगों की भीड़ कम होती गई, मैं अपने कक्ष की ओर चल पड़ा। चाँद आधा-चौथाई था और लंका पर जादुई, चाँदी जैसी रोशनी बिखेर रहा था। समुद्र शांत था और हल्की हवा नारियल के पेड़ों को हिला रही थी। ताड़ के पत्तों की पतली, चाँदी जैसी पत्तियों के किनारों पर चाँदनी पड़ रही थी और रेत पर सुंदर आकृतियाँ बन रही थीं। हाल ही में विधवा हुई महिलाओं और अनाथ बच्चों को छोड़कर, वह एक खूबसूरत रात थी। मैं युद्ध की भयावहता पर ध्यान नहीं देना चाहता था। मेरे मन में रागों का संगीत उमड़ रहा था। जैसे ही मैं अपने कक्ष में पहुँचा,

“महाराज, मेरा पुत्र कहाँ है?” जादू टूट गया और मैं युद्धों और मृत्यु की भयावह दुनिया में लौट आया। मेरी आँखों में क्रोध की ज्वाला भड़क उठी। पर्दों की छाया से भद्रा की कुरूप और झुकी हुई आकृति प्रकट हुई। ‘इस भिखारी की हिम्मत कैसे हुई मेरे निजी कक्ष में घुसने की? इसे किसने अंदर आने दिया?’ इससे पहले कि मैं कुछ प्रतिक्रिया कर पाता, वह मेरे पैरों पर गिर पड़ा और दोनों हाथों से मेरी टांगें पकड़ लीं। मैं वहीं खड़ा रह गया, समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूँ। फिर मैंने धीरे से उसे उठाया। पसीने और बासी शराब की दुर्गंध मेरी नाक में घुस गई। मैं अनजाने में हांफने लगा। तुरंत ही, भद्रा दूर हट गया और डरे हुए चूहे की तरह सिकुड़ गया।
मैंने कहा, "कोई बात नहीं," हालांकि मेरी आवाज में कोई दृढ़ विश्वास नहीं था।
“आपको छूने और अपवित्र करने के लिए मुझे खेद है।” उसकी आवाज भर्रा गई और उसकी नज़रें नीचे झुक गईं।
मंदोदरी तेजी से बूढ़े आदमी की ओर बढ़ी और उसके हाथ पकड़ लिए। उसने खुद को छुड़ाने की कोशिश की। मुझसे कहीं अधिक करुणा से भरी हुई उसने पूछा, "भद्रा, क्या हुआ?"
जवाब में वह फूट-फूटकर रोने लगा। मुझ पर अनेक भावनाएँ उमड़ पड़ीं – गुस्सा कि इस व्यक्ति ने मेरे जीवन के सबसे जादुई पलों में से एक को भंग कर दिया; शर्मिंदगी कि उसने मेरे मन की अंधेरी गलियों में छिपे अपवित्र विचारों को जगा दिया; अफसोस कि मैंने भिखारी के साथ दयालुता से व्यवहार नहीं किया; खुशी कि मेरी रानी कम से कम इतनी दयालु तो थी कि इस बेचारे की पीड़ा को समझ सकी। मेरा मन व्याकुल था, तभी मुझे धुंधला सा याद आया कि भद्रा अपने दत्तक पुत्र अथिकय को खोज रहा था। मेरे मन के किसी कोने में, मुझे पता था कि अथिकय मेरे खून का था, और मैंने जानबूझकर इसे भुला दिया था। मैंने ऐसी चिड़चिड़ी यादों को अपने मन के अंधेरे कोनों में धकेल दिया था। मुझे लगा कि यह बूढ़ा भिखारी मेरे निजी और गंदे तहखाने में घुसपैठ कर रहा है, जहाँ मैंने अपने काले रहस्यों को दुनिया से छिपा रखा था।
मेरा बेटा कमरे में घुस आया। मैं उसकी नशे की हालत को भांप गई। उससे शराब, औरतों और घमंड की गंध आ रही थी। उसकी परछाई की तरह एक काली आकृति कमरे में दाखिल हुई। उसे देखकर भद्रा उसकी ओर दौड़ा। अथिकया ने बूढ़े को बेरहमी से धक्का देकर दूर कर दिया। भद्रा लड़खड़ाकर गिर पड़ा। मेरा चेहरा क्रोध और

शर्म से लाल हो गया। वह नीच, काला और बदसूरत अथिकया मेरे बेटे मेघनाद पर बराबरी का भाव लिए बैठा था। और वे सम्राट के निजी कक्ष में हंगामा मचा रहे थे।
“पिताजी, हमने उन बदमाशों की खूब पिटाई की! आपको देखना चाहिए था कि मैंने कैसे धोती में आग लगा दी। हू हू... और अथिकय का तीर लक्ष्मण की पीठ में जा लगा... हा हा... पता नहीं वो कैसे बैठेगा...” और अथिकय भी हंसते हुए राजकुमार की पीठ पर ज़ोर से थप्पड़ मारा।
“मेघनादा…” मैंने पूरी ताकत से चिल्लाकर कहा। “माता-पिता के सामने इस तरह की भाषा का प्रयोग करना ठीक नहीं है।”
“अथिकाया… पापा से माफी मांगो।” मैं आगे बढ़ा और उसके चेहरे पर ज़ोरदार थप्पड़ मारा। वह एक पल के लिए स्तब्ध रह गया, फिर बिना कुछ कहे शर्म से सिर झुकाए बाहर चला गया। अथिकाया भी उसके पीछे-पीछे चला गया।
भद्रा ने आगे बढ़कर उनका रास्ता रोकने की कोशिश की। “अथिकाया, मत जाओ। मेरे साथ आओ। हम यहाँ से चले जाएँगे। हम मुख्य भूमि पर जाएँगे। कृपया हमारे साथ आओ।”
“मेरे रास्ते से हट जा, बूढ़े बदमाश!” अथिकाया ने भद्रा को इतनी ज़ोर से धक्का दिया कि बूढ़ा आदमी लड़खड़ाकर गिर पड़ा। “तुम नरक में सड़ो!” गाली देते हुए अथिकाया मेघनादा के पीछे अंधेरे में चला गया।
मंदोदरी ने मुझसे कुछ कहा, लेकिन मैंने हाथ उठाकर उसे जाने का इशारा किया। मैं अकेला रहना चाहता था। मैं चांदनी रात की उस अद्भुत सुंदरता को निहारता रहा। बेटे तो बेटे ही होते हैं, चाहे महल में पैदा हों या झोपड़ी में। लेकिन इस तरह का अहंकार विनाश का संकेत था। पर भला इस युवक में क्या दोष था? मैंने तो अपने पिता के साथ इससे भी बुरा बर्ताव किया था। अचानक, महल के बगीचे में, जहाँ उत्सव चल रहा था, एक चीख सुनाई दी और उसके बाद ज़ोरदार हंगामा मच गया। कुछ बहुत बुरा हो गया था। मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था, मैं बगीचे की ओर भागा, अपने कमरे के फर्श पर पड़े भद्रा के टूटे हुए दिल को कुचलते हुए।

49 मृत्यु फिर से आती है
भद्र
कुछ देर बाद मैं उठा। मेरा दिल भारी था। अब किसी चीज़ का क्या फ़ायदा? अब आगे देखने के लिए कुछ नहीं बचा था। मेरा बेटा हमेशा के लिए खो गया था। मैं जानता था कि मैं उसे फिर कभी नहीं देख पाऊँगा, या शायद सिर्फ़ एक बेजान शरीर के रूप में। अजीब बात है, मुझे असुर राजा के लिए सहानुभूति महसूस हुई, हमारे सम्राट के रूप में नहीं, उस महान नेता के रूप में नहीं जिसने असुर जाति के लिए अपना प्राण और वीरता अर्पित की थी, बल्कि एक दुखी पिता के रूप में। अपने राजसी वस्त्रों और चमकते मुकुट से वंचित, वह बिल्कुल मेरे जैसा था। या मैं खुद को धोखा दे रहा था? क्या शक्तिशाली और बलवान लोग अलग तरह से दुखी होते हैं?
महल में सन्नाटा पसरा हुआ था। दरबार से आती हल्की रोशनी में मैंने बगीचे की झाड़ियों और पेड़ों के बीच परछाइयाँ देखीं। कुछ गुप्त चल रहा था। मैंने बहुत पहले ही तय कर लिया था कि महत्वपूर्ण लोगों के मामलों से मेरा कोई लेना-देना नहीं है। लेकिन जिज्ञासा मुझ पर हावी हो गई। मैंने खुली खिड़कियों से झाँका और देखा कि सम्राट अपने सिंहासन पर बैठे हैं, उनका चेहरा पीला पड़ गया है और उनके मंत्री ज़मीन पर पड़े कुछ बेजान शरीरों के आसपास दुबके हुए हैं। मैं चिंतित हो गया। क्या अथिकाया को कुछ हो गया था? मैं साँस रोककर इंतज़ार करने लगा कि कोई हिले ताकि मैं बेहतर ढंग से देख सकूँ।
“यह अक्षम्य है।” सम्राट हाहे ने कठोर स्वर में कहा। मंत्री बेचैनी से इधर-उधर हिलने लगे।
“मैं तीन घंटे पहले जागा। जब मैं वहाँ पहुँचा, तो दृश्य भयावह था। हमारे लोगों का कत्लेआम हो रहा था। चारों ओर घना अंधेरा था। यह स्पष्ट नहीं था कि

कौन किसे मार रहा है। पहले तो मुझे लगा कि विजयोत्सव में गड़बड़ी हो गई है और हमारे लोग आपस में ही एक-दूसरे को मार रहे हैं। मैं वहाँ से हट गया और पहरेदारों को बुलाया। जैसे ही हम पास पहुँचे, मैंने दो काली आकृतियाँ देखीं। मुझे पक्का यकीन नहीं है, लेकिन लगभग निश्चित है कि वे हनुमान और अंगद ही थे। मैंने उन्हें पकड़ने की कोशिश की और अंगद पर अपना खंजर फेंका, जिससे वे घायल हो गए, लेकिन अफरा-तफरी में वे भाग निकले। तभी महाराज वहाँ पहुँचे। शायद अंगद की चीख ने महाराज को सचेत कर दिया होगा,” प्रहस्त ने अपनी बात समाप्त की और उसके बाद तनावपूर्ण सन्नाटा छा गया।
“यह अंदरूनी साजिश है। मुझे लगता है कि हम हमेशा की तरह असुरों की तरह हार रहे हैं। आज हम लगभग जीत ही गए थे, लेकिन जीत के मुँह से हार छीन ली। मुझे लगता है कि हम गुलाम बनने के लायक हैं। मेरे दो वरिष्ठ मंत्रियों की मेरे ही बागों में बेरहमी से हत्या कर दी गई। हम एक ऐसे दुश्मन से निपट रहे हैं जिसमें कोई नैतिकता नहीं है, न ही न्याय और धर्म का कोई बोध है। वे निर्दयी बर्बर हैं जो अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए किसी भी हद तक गिर सकते हैं। और हम जासूसों और गद्दारों से भरे पड़े हैं। मेरा भाई गद्दार बन गया, मेरा दोस्त गद्दार बन गया। मुझे आश्चर्य है कि देवों की मदद कौन करेगा? सुमाली और माल्यवान अच्छे लोग थे। वे योद्धा नहीं थे, लेकिन वे इस अंत के लायक भी नहीं थे। रुद्रक, यह अब बिना किसी नैतिकता के एक पूर्ण युद्ध बन गया है। हमारा उद्देश्य दुश्मन की सेना में अधिकतम क्षति पहुँचाना होना चाहिए। मैं नहीं चाहता कि हम उनके जैसे घिनौने आतंकवादी हमलों और सोते हुए लोगों की हत्या करने के स्तर तक गिरें। लेकिन मुझे लगता है कि उन्हें पकड़ने के लिए छल का उपयोग करना हमारे लिए उचित है। मेरे बेटे को ढूंढो, अगर वह... वह होश में आ गया है, उसे यहाँ लाओ। प्रहस्त, शांति बहाल होने तक सुमाली और माल्यावन ने जो किया है, उसका हिसाब तुम संभालो। चलो रणनीति बनाते हैं और उन्हें उन्हीं के तरीके से सबक सिखाते हैं।” सम्राट दृढ़ और गंभीर स्वर में बोले।
मैंने गहरी सांस ली। ये पुराने मंत्री थे। वे सार्वजनिक जीवन में ईमानदार और नेक इंसान थे, लेकिन उनकी मृत्यु से मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता था। दुनिया में उनके जैसे बहुत से लोग हैं जिन्हें पलक झपकाए बिना बदला जा सकता है और किसी को पता भी नहीं चलेगा। लेकिन अंदर जो हो रहा था वह बेहद दिलचस्प था और मैं अपनी जगह पर जम गया। थोड़ी देर बाद, मैंने मेघनाद और

अथिकाय को दरबार में प्रवेश करते देखा। मंत्री अपनी कुर्सियों पर बैठे थे, लेकिन मारे गए दोनों मंत्रियों के शव जमीन पर पड़े थे, उनके सिर दक्षिण की ओर मुड़े हुए थे। उनके सिर के पास नारियल के खोल से बने तेल के दीपक टिमटिमा रहे थे। अथिकाय और मेघनाद शवों को देखकर स्तब्ध रह गए। कुछ देर तक कोई नहीं बोला। दोनों युवकों ने मृतकों को प्रणाम करने के लिए जमीन पर सिर झुकाया। फिर मेघनाद अपनी जगह पर बैठ गए और अथिकाय उनके पास ही जमीन पर बैठ गए। रावण ने अथिकाय को देखकर अपनी भौंहें उठाईं, लेकिन युवकों ने बड़ों की नापसंदगी को नजरअंदाज कर दिया।
“कल जब रुद्रक पूर्वी दिशा से आक्रमण करेगा, तो प्रहस्त पकड़े गए जहाजों के साथ समुद्र से आक्रमण करेगा और समुद्री डाकुओं के जहाजों को डुबोने या उन पर कब्ज़ा करने की कोशिश करेगा। मुझे पूरा विश्वास है कि भाई आक्रमण का नेतृत्व करेंगे। कल उनका पुल ढह जाने के कारण, वे आज डोंगियों का उपयोग कर सकते हैं और शहर के उत्तरी भाग से हमारे बाएं हिस्से पर आक्रमण करने का प्रयास कर सकते हैं। हम पहाड़ियों का लाभ उठाएंगे और सुनिश्चित करेंगे कि पत्थरों का अधिकतम उपयोग हो। दुश्मन के हमारे शहर के द्वार तक पहुँचने का इंतज़ार करें और फिर उन पर पत्थर और खौलता तेल बरसाएँ। गुलेल और ज्वाला- प्रवेश यंत्रों का प्रभावी ढंग से उपयोग करें। प्रहस्त उन्हें समुद्र से घेर लेगा और उनके पीछे हटने का रास्ता काट देगा, या कम से कम वरुण को उलझा लेगा, ताकि उन्हें कोई भी रास्ता न मिले।
समुद्र से सहायता प्राप्त करो। सेनापति के सहायक धूम्रक्ष को यह कार्य सौंपो। उसे अधिकतम प्रभाव उत्पन्न करना होगा और वानरों में दहशत फैलानी होगी। जब उन पर चारों ओर से आक्रमण हो, तो अस्तबल के प्रमुख सुरंतक किले का द्वार खोलकर शाही हाथियों को खुला छोड़ देंगे। उन्हें हमसे किले का द्वार खोलने की उम्मीद नहीं होगी। उन्हें अंदर खींच लो और उन्हें यह सोचने दो कि उन्होंने असुरों के गढ़ में प्रवेश कर लिया है। जब वे पहाड़ियों और शहर की दीवारों के बीच की संकरी जगह में फंस जाएं, तो हाथियों को खुला छोड़ दो। हम वानरों को दिखाएंगे कि हम क्या कर सकते हैं।
और मेघनाद, मैं तुमसे अकेले में बात करना चाहता हूँ। मैं तुम्हें एक ऐसा कार्य सौंपूँगा जिससे देव सेना की कमर टूट जाएगी। हमारे शहीद वीरों के अंतिम संस्कार की व्यवस्था करो। आज के युद्ध में शहीद हुए लोगों के घर जाओ और उनके परिजनों को सांत्वना दो। हमें उन्हें आश्वस्त करना होगा कि

संपूर्ण असुर समुदाय उनके शोक में उनके साथ है और राष्ट्र अपने शहीदों को नहीं त्यागता। इतना कहकर सम्राट अपने सिंहासन से उठे और पूरा दरबार भी उठ खड़ा हुआ।
पूर्वी आकाश केसरिया रंग में रंगा हुआ था और वृक्षों पर पक्षी चहचहा रहे थे। असुर सम्राट जो कर रहा था, उससे मैं रोमांचित भी था और भयभीत भी। मुझे खुशी थी कि अंततः वह आगे बढ़कर नेतृत्व कर रहा था। उसने अपना जोश पुनः प्राप्त कर लिया था, जो अब अनुभव से परिपूर्ण था। साथ ही, उसका सामना एक धूर्त और निर्दयी शत्रु से था, जिसे नागरिकों की हत्या और छल-कपट से शत्रु शहरों को जलाए जाने की भी परवाह नहीं थी। यह एक रक्तरंजित और क्रूर युद्ध था और मेरा पुत्र किसी गुप्त षड्यंत्र का हिस्सा था। मैं नहीं चाहता था कि वह इस युद्ध में भाग ले। लेकिन पुत्र तो पुत्र होते हैं। मैं थक गया था। मैं षड्यंत्रकारी राजाओं और आक्रमणकारी राजकुमारों को बहुत पीछे छोड़कर घर चला गया। मैं शराब पीकर गहरी नींद सोना चाहता था।

50 किसके लिए?
रावण
मेरे दो मंत्रियों का देहांत मेरे लिए बहुत बड़ा आघात था। यह युद्ध मेरे द्वारा लड़े गए किसी भी अन्य युद्ध से भिन्न था। मेरा महल जासूसों से भरा हुआ था। हत्यारे बेखौफ होकर हमले कर रहे थे। मुझे आशा थी कि आज हम उस उद्दंड देव राजकुमार का खात्मा कर देंगे। मैंने सुना था कि वानर उसे स्वयं विष्णु का अवतार मानते थे। 'यह प्रचार का एक बढ़िया तरीका है, मैं मानता हूँ। दावा करो कि ईश्वर तुम्हारे साथ है, या इससे भी बेहतर, तुम स्वयं ईश्वर हो, तो तुम जो भी करोगे, जो भी अधर्म करोगे, वह ईश्वरीय लीला बन जाएगा।' मुझे यह जानकर स्तब्धता हुई कि कई सामान्य असुर भी राम के देवत्व में विश्वास करने लगे थे। अपनी पत्नी को वनवास भेजना, धोखे से एक मित्र राजा की हत्या करना, शहरों में आतंकवादियों को भेजना और निर्दोष पुरुषों, महिलाओं और बच्चों का संहार करना... क्या ये देवत्व के लक्षण थे? लोगों का भोलापन चकित कर देने वाला था।
आज, उम्मीद है, अगर शिव की इच्छा हुई, तो मैं अपने दैवीय मुखौटे को उतार फेंकूँगा। मैं बेचैन था और युद्ध में उतरकर देव राजकुमार से आमने-सामने मिलना चाहता था। वह मुझसे बहुत छोटा था, लेकिन मेरी भुजाओं में अभी भी बल था। प्रहस्त ने मुझे युद्ध के मैदान में न जाने की सलाह दी थी क्योंकि यह बहुत जोखिम भरा होगा। हमारे बीच बहुत से गद्दार थे और मेरी ही सेना का एक तीर भटककर असुर साम्राज्य को हमेशा के लिए खत्म कर सकता था। लेकिन मैं युद्ध के लिए बेताब था। जब मेरी प्रजा गंभीर खतरे में थी, तो मैं अपने कमरे में कैसे बंद रह सकता था? मैंने एक रक्षक को बुलाया और पहरेदारों को बरामदे में पंक्तिबद्ध होने का आदेश दिया। मैंने अपने कद-काठी वाले सही पहरेदार को चुना और बाकी को हटा दिया। मैंने उपयुक्त पहरेदार को कपड़े

उतारने को कहा और उसे एक छोटे कमरे में बंद कर दिया। फिर मैं उसकी वर्दी पहनकर युद्ध के लिए निकल पड़ा। मुझे पता था कि यह मूर्खतापूर्ण और बचकाना था, लेकिन मैं खुद को रोक नहीं पाया। मैं युद्ध में शामिल होना चाहता था और देखना चाहता था कि मेरी प्रजा का क्या हाल है।
मैं अस्तबल गया, जो पहला घोड़ा मिला उसे लेकर पूर्वी द्वार की ओर चल पड़ा। वहाँ से धूल का बादल उठता दिखाई दिया। जैसे ही मैं युद्धक्षेत्र में पहुँचा, वहाँ का अफरा-तफरी और हिंसा अकल्पनीय थी। योजना के अनुसार, सुरंतक ने शाही हाथियों को वानर-पुरुषों पर छोड़ दिया था। वे किले की दीवार और 300 फीट से अधिक ऊँची चट्टान के बीच के संकरे गलियारे में फँस गए थे। किले के द्वार खुलते ही अंदर घुस आए वानर सैनिक खुद को हमलावर हाथियों और रुद्रक की शक्तिशाली घुड़सवार सेना के बीच फंसा हुआ पाया। बेहतर दृश्य देखने के लिए मैं किले के अंदर एक पास की पहाड़ी पर गया।
वानरों का नरसंहार हो रहा था। चट्टान की चोटी से विशालकाय पत्थर भयानक धमाकों के साथ उन पर गिर रहे थे। रुद्रक के सैनिकों की ओर से बाणों की वर्षा हो रही थी। उबलते तेल के बड़े-बड़े घड़े बेचारे वानरों पर गिराए जा रहे थे और कुछ तेल गलती से उत्पात मचा रहे हाथियों पर छलक गया, जिससे वे दर्द से पागल हो गए। सुग्रीव शत्रु के आक्रमण का नेतृत्व कर रहे थे और मैं उन्हें अपने सैनिकों को एकजुट करने का बेताब प्रयास करते हुए देख सकता था। बाण उनके सिर के बेहद करीब से गुजरे और कुछ बाण उनके कंधे और जांघों में लगे, लेकिन वानर राजा डटे रहे। लेकिन उनका भागने का रास्ता बंद हो चुका था। वे इस जाल से जीवित नहीं बच पाएंगे। रुद्रक यह सुनिश्चित करेंगे। हमारी योजना का यह हिस्सा सफल रहा। मैं उत्तरी छोर की ओर बढ़ा, जहाँ राम और लक्ष्मण आक्रमण का नेतृत्व कर रहे थे।
मेघनाद ने तब तक प्रतीक्षा की जब तक हमलावर उत्तरी द्वार तक नहीं पहुँच गए, और फिर असुरों के रथ किले के बाहर से अंदर आ गए। घोड़ों को आधी रात को पास के जंगल में ले जाकर छिपा दिया गया था। उत्तरी द्वार के पास केवल एक सांकेतिक सेना ही बची थी। रथों को अलग-अलग करके जंगल में ले जाया गया। फिर, भोर से पहले, रथों को फिर से जोड़ा गया और सुबह होते-होते, मेघनाद के सारथी अंदर घुस आए और राम पर पीछे से हमला कर दिया।
इस बीच, प्रहस्त वरुण के बेड़े को बहुत दूर खदेड़ने में कामयाब हो गया था, इसलिए राम की सेनाओं को नौसैनिक सहायता नहीं मिल पा रही थी। मेघनाद के

सारथी अत्यंत तेज़ी से वानर सेना को घेरकर उनका संहार करने लगे। असुर, जो सुबह के आक्रमण के दौरान वृक्षों और किले में छिपे हुए थे और ढँक कर बैठे थे, योजना के अनुसार उठ खड़े हुए और राम के सैनिकों पर बाणों की वर्षा करने लगे। दोनों भाई फँस गए थे। एक तरफ मेघनाद ने मोर्चा संभाला हुआ था। 'दूसरी तरफ कौन था?' मैंने बेहतर देखने के लिए गर्दन ऊपर उठाई। जो भी था, वह मेघनाद से कहीं बेहतर काम कर रहा था। फिर जब धूल थोड़ी छँटी, तो मैंने उसे देखा। वह मेरा पुत्र अतिकाय था। वानर सेना चारों ओर से घिरी हुई थी और असुर वानरों का सफाया कर रहे थे। केवल हनुमान की पैदल सेना ही डटी रही और साहस और दृढ़ संकल्प के साथ लड़ी। राम के अधिकांश सैनिक अब मुख्य भूमि की ओर जाने वाले आधे टूटे पुल के दूसरी तरफ फँसे हुए थे। गश्त लगाती हुई नौकाओं और प्रहस्त के कब्जे वाले बेड़े ने प्रभावी रूप से राम के लापरवाह अग्रिम सैनिकों को उन सतर्क सैनिकों से अलग कर दिया, जो मुख्य भूमि पर चालाक बूढ़े बदमाश, बाली के अस्सी वर्षीय सेनापति जाम्बवान के नेतृत्व में रुके हुए थे, जो अभी भी सुग्रीव के अधीन सेवा कर रहा था।
मैं अपने किशोरावस्था के वीरतापूर्ण उत्साह से थोड़ा विचलित होकर महल की ओर लौटा। मेरे लोग योजना बनाने में जुटे थे। अगर सब ठीक रहा, तो आज रात हम विजयोत्सव मनाएंगे। महल के द्वार तक पहुँचते-पहुँचते मैंने अपना वेश बदल लिया था। लेकिन जाम्बवान की चुप्पी मुझे खटक रही थी। ‘वह धूर्त बूढ़ा शत्रु सेनापति अपने सैनिकों को क्यों रोके हुए था? क्या यह कोई और चाल थी? और वरुण कहाँ था?’ मुझे मिली रिपोर्टों से पता चला कि वह अपने बेड़े को द्वीप से दूर, मुख्य भूमि की ओर, गहरे समुद्र में ले गया था। लेकिन समुद्री लुटेरों के राजा के लिए यह असामान्य था। ‘मैं क्या चूक रहा था?’ मैं प्रहस्त को याद कर रहा था।
मैं अपनी बेटी को देखने के लिए बगीचे की ओर चल पड़ा। यहाँ बगीचे में एक अलग ही दुनिया थी। युद्ध की हल्की-हल्की आवाज़ें संवेदनशील कानों से सुनाई दे रही थीं, लेकिन इसके अलावा सब कुछ सामान्य था। मैंने युद्ध और राम के बारे में अपने विचारों और चिंताओं को दबाकर एक विशाल इमली के पेड़ की छाँव में खड़ा होकर अपने भीतर जागृत हुई दुनिया की सुंदरता में डूब गया। मैं समुद्र की हल्की फुसफुसाहट सुन सकता था और हवा को पत्तों को सरसराते हुए देख सकता था। मुझे अपने पिछवाड़े में झींगुरों द्वारा रचे गए संगीत में लय मिल रही थी। मेरा मन इस द्वीप के जंगलों और मुख्य भूमि के सह्या पर्वतों में बिताए

अपने गौरवशाली बचपन की यादों में खो गया। यह आश्चर्यजनक था कि मन कितनी आसानी से दर्दनाक अतीत, घोर गरीबी, रोज़ाना के अपमान और भूख की पीड़ा को भूल जाता है और केवल खुशी के छोटे-छोटे पलों को याद रखता है। पुरानी यादों में एक सुखद दर्द था; उन चीजों के लिए तड़प जो हमेशा के लिए खो गई थीं; उन चीजों पर बुना हुआ एक जादू जो हो सकती थीं लेकिन नहीं हुईं; गुप्त आशाओं और मीठी अधूरी इच्छाओं की एक हल्की सी परत। और रोजमर्रा की दुनिया में कुछ छोटी-छोटी चीजें थीं, अगर कोई अपने दिल से सुने, जैसे कोयल की गुटरगू या गिलहरियों की चहचहाहट, जहां दर्दनाक चीजें अंधेरे में छिपी रहती हैं और लंबे समय से भूली हुई खुशी एक बार फिर चमक उठती है।
अशोक वृक्ष के नीचे बैठी वह किसी देवदूत जैसी लग रही थी। उसके बगल में, आत्मसंतुष्ट भाव से, मेरी भतीजी त्रिजता बैठी थी। सीता के साथ उसे देखकर मुझे प्रसन्नता नहीं हुई। मैं अपनी बेटी से अकेले में बात करना चाहता था। त्रिजता कई मायनों में अपने आवारा पिता जैसी थी। कुंभ ने भी व्यभिचार का जीवन जिया। उसकी कभी की बड़ी-बड़ी महत्वाकांक्षाएँ दृढ़ संकल्प और चरित्र की कमी के कारण अधूरी रह गईं। वह अक्सर अपने कक्ष में नशे में धुत रहता था। उसने अमर यश और अपना साम्राज्य बनाने की लालसा रखी थी, लेकिन जीवन में बड़ी उपलब्धियाँ प्राप्त करने की इच्छाशक्ति उसमें कभी नहीं थी। शायद मैंने उसे पीछे छोड़ दिया था। मैं हमेशा बड़ा भाई रहा। और भाई-बहनों से ज़्यादा आपकी सफलता से कोई ईर्ष्या नहीं करता। शायद यह महज़ दुर्भाग्य था कि मैं ऐसा बन गया था। मैं उस उम्र में था जब मैं यह नहीं मानता था कि कड़ी मेहनत, दृढ़ संकल्प और महत्वाकांक्षा ही किसी के भाग्य का निर्धारण करती हैं। मेरे भीतर का नास्तिक बहुत पहले ही मर चुका था। मैंने इतनी चीज़ें देखी थीं कि अब मैं भोलेपन से यह विश्वास नहीं कर सकता था कि मनुष्य अपना भाग्य स्वयं बनाता है और इसके अलावा कुछ भी मायने नहीं रखता। बीते दिनों की यादों में खो जाने पर मुझे शर्म आती है जब मैं उस अंधेरी गुफा में असली असुर सम्राट महाबली से हुई बचकानी बातचीत को याद करता हूँ। अपनी धृष्टता, मूर्खता और उस बूढ़े को प्रभावित करने के लिए इस्तेमाल किए गए दिखावटी दर्शन को याद करके मुझे हंसी आ जाती है। कुछ ऐसा था जो मनुष्य की समझ से परे था, जो सामान्य ज्ञान के विपरीत था। दृढ़ संकल्प, मेहनत और गुरुओं द्वारा बताई गई सारी बातें केवल आकस्मिक घटनाओं पर प्रतिक्रिया देने के लिए ही उपयोगी थीं। लेकिन मैंने चीजों में एक व्यवस्था देखी, जैसे दिन और

रात का चक्र, या जीव-जंतुओं का जन्म, जीवन और मृत्यु। फिर भी, कई चीजों को केवल भाग्य नामक एक यादृच्छिकता से ही समझाया जा सकता था।
सीता की हंसी से मेरी सोच टूट गई। मैंने उसे देखा। वह अत्यंत दिव्य सुंदर लग रही थी। उसने अपना जोश और उत्साह मुझसे और अपना परिपूर्ण चेहरा और शरीर मंदोदरी से विरासत में पाया था। अब मैं उसे कैसे खो सकता था?
“ओह! राजाओं के राजा, असुरों के सम्राट… क्या आप मुझसे मिलने आए हैं? रावण, अपने दिन गिन लो। मेरे राम तुम्हें और तुम्हारे दुष्ट साम्राज्य को नष्ट करने आए हैं। हे राक्षसों, तुमने जो कुछ भी बनाया है, जिस पर तुम्हें गर्व है, वह सब जल्द ही राख हो जाएगा। मेरे पति मुझे बचाने आए हैं और मैं तुम्हारा दुष्ट साम्राज्य ढहता हुआ देख सकती हूँ। यदि तुम्हें अपने कुल का जीवन प्रिय है, तो जाकर उनके चरणों में गिर जाओ। लेकिन मैं जानती हूँ कि तुम ऐसा नहीं करोगे, तुम इतने घमंडी हो कि ऐसी बुद्धि को समझ ही नहीं सकते। मेरी बात याद रखना, राक्षस, तुम्हारा समय आ गया है।” वह ज़ोर से हंस पड़ी और घृणा से उसका चेहरा बेहद घृणित लग रहा था। त्रिजटा ने शर्मिंदा और भयभीत होकर मेरी ओर देखा।
मैं निराश और शर्मिंदा होकर पीछे मुड़ा। ‘मैं उसे यह सच क्यों नहीं बता पा रहा कि मैं उसका पिता हूँ?’ मैं उसे उसके पति से बचाने की कोशिश कर रहा था। लेकिन मैं उसके चेहरे को देखकर कुछ अंधविश्वासों के कारण उसे छोड़ने के अपने कृत्य को कैसे सही ठहरा सकता था? और मैं उसके पति, देवराज राम के प्रति उसके गहरे प्रेम को कैसे अनदेखा कर सकता था? उसके चेहरे को देखकर वह क्यों नहीं समझ पा रही थी कि उसके पिता उससे उसके पति से भी अधिक प्रेम करते हैं? वह क्यों नहीं समझ पा रही थी कि मैं उसकी खुशी के लिए अपना सब कुछ दांव पर लगा रहा था? लेकिन फिर, वह यह क्यों नहीं जानती थी कि वह अपने पति के साथ कभी खुश नहीं रह पाएगी और जिस क्षण मेरा संरक्षण हटेगा, उसका दुख शुरू हो जाएगा? शायद मैंने खुद को धोखा दिया। शायद वे सबसे आदर्श जोड़े के रूप में जीवन व्यतीत करेंगे, सांवले देवराज और उनकी प्यारी पत्नी, और मैं वह दुष्ट राक्षस बन जाऊंगा जिसने उनकी खुशी को नष्ट करने की कोशिश की। सभी अपशकुन और ज्योतिषीय भविष्यवाणियाँ उसके लिए आने वाले दुख और मेरे और मेरे लोगों के लिए एक भयावह भविष्य की ओर इशारा कर रही थीं। क्या रावण भविष्य बदल सकता था? शायद जवानी में मैं सही था और ज्योतिष-शास्त्र महज़ एक धोखा था। मैंने अपना भविष्य खुद तय किया था, न कि किसी उदासीन आकाश के

घने अंधेरे में डूबे तारों ने। लेकिन मेरी बेटी मुझसे इतनी नफरत क्यों करती थी? किसी भी पिता को इस तरह तड़पाया नहीं जाना चाहिए। शायद मेरा समय आ गया था। मैं इस औरत के लिए अपनी पूरी जिंदगी दांव पर क्यों लगा रहा था? मैं न सिर्फ अपनी जिंदगी, बल्कि एक पूरी जाति का भविष्य भी अपनी हवस के लिए दांव पर लगा रहा था। इस समय हजारों लोग मारे जा रहे थे - पिता, भाई, बेटे - वे परिवार जिन्होंने मुझ पर भरोसा किया था और मेरे लिए लड़ रहे थे। शायद, यही सही था कि मेरा समय आ गया था। मैं एक निकम्मा राजा था जिसने अपनी प्रजा को एक अनावश्यक युद्ध में घसीट लिया था, मौत और विनाश की ओर। लेकिन मैं अपनी बेटी को राम के हवाले कैसे कर सकता था, यह जानते हुए कि वह उसके साथ कैसा व्यवहार करेगा? भाग्य को भविष्य का ख्याल रखने दो। मैं आखिरी दम तक लड़ूंगा और शायद जीत भी जाऊं।
महल के बाहर युद्ध जारी था। अंधेरा छाने लगा और शहर पर एक दिव्य लालिमा छा गई, जिससे हर चीज़ एक अलौकिक चमक में नहा गई। मेरी बेटी के शब्द मेरे कानों में गूंजते रहे, 'जो कुछ तुमने बनाया है और तुम्हारी प्रजा राख हो जाएगी।' मैं शराब पीकर सब कुछ भूल जाना चाहता था। जैसे ही मैं अपने महल में दाखिल हुआ, मेरे सेनापति रुद्रक का बेजान शरीर अंदर लाया गया। शायद मेरी बेटी मुझसे ज़्यादा समझदार थी।

51 एक नायक की वापसी
भद्र
मैं अपनी फूस की झोपड़ी के बरामदे में बैठा था। मेरी पत्नी ने मेरे पास जो गरमागरम दलिया और आम का अचार रखा था, वह ठंडा और चिपचिपा हो गया था। मक्खियाँ और भी बेखौफ हो गई थीं और कटोरे के किनारों पर देर तक मंडरा रही थीं। उन्हें भगाने की मेरी हिम्मत नहीं हो रही थी। रसोई से बर्तनों की जानी-पहचानी, लेकिन समझ से परे, खड़खड़ाहट और बर्तनों के हिलने की आवाज आ रही थी, जहाँ मेरी पत्नी अपने कामों में व्यस्त थी। मुझे हल्का सिरदर्द था
- कल के हैंगओवर की वजह से। कारोबार मंदा था। भला आज कपड़े धुलवाने की क्या ज़रूरत, जब कल शायद मौत ही हो जाए?
हालांकि मैंने अपने बेटे के भाग्य को स्वीकार कर लिया था, फिर भी मैं उस लंबे, मजबूत शरीर वाले व्यक्ति के आने का बेसब्री से इंतज़ार करती रहती थी। कभी-कभी मैं उम्मीद करती थी कि वह घायल होकर घर आए, ताकि हम उसकी देखभाल कर सकें और उसे स्वस्थ कर सकें। लेकिन मैं जानती थी कि वह कभी भी युद्ध के मैदान या अपने दोस्त और भाई मेघनाद को नहीं छोड़ेगा। युद्ध शुरू होने के बाद से मौत कई बार हमारी गली में दस्तक दे चुकी थी। कई पड़ोसी पहले ही अपने प्रियजनों को खो चुके थे। अब चारों ओर एक सन्नाटा पसरा हुआ था। शुरुआत में लोगों में भावनाओं का सैलाब उमड़ा था। सड़कों पर शहीद असुर योद्धाओं के अंतिम संस्कार जुलूस निकले और भावनाएं उफान पर थीं। लेकिन जब मृतकों की संख्या बढ़ती गई, तो मौत का आकर्षण फीका पड़ गया और वीरता सस्ती और आम बात हो गई। परिवार के करीबी सदस्यों के थोड़े से दुख को छोड़कर, शहीद योद्धाओं की वीरता के प्रति केवल एक उदासीनता ही थी। ऐसा लग रहा था मानो पूरा देश अपरिहार्य के लिए खुद को तैयार करने के लिए एक खोल में सिमट गया हो। पिता अपने बेटों के बेजान और क्षत-विक्षत अवशेषों को चिताओं पर

निर्दयता से रख रहे थे। माताएँ आपस में सटकर चुपचाप आँसू बहा रही थीं, जबकि विधवाएँ अकेलेपन और कड़वाहट के अपने-अपने गड्ढों में सिमट रही थीं। इन कुंद भावनाओं पर भय का साया मंडरा रहा था – देवों की विजय का और राम के शासन में, या उससे भी बदतर, विभीषण के शासन में, बेचारे काले असुरों के लिए आने वाले भयानक भविष्य का।
सड़कें बहुत पहले ही सुनसान हो चुकी थीं। कई आम असुर जंगलों में चले गए थे और कुछ कच्चे, देसी नावों में बैठकर मुख्य भूमि की ओर भाग गए थे। हालांकि, अधिकांश ने अपने घरों में खुद को बंद कर लिया था, उनके जर्जर दरवाजे बंद और जकड़े हुए थे। इससे पहले कि कुलीन लोग इसे भांप पाते, बेचारे असुरों को हार और विनाश की आहट सुनाई देने लगी थी, हालांकि किसी ने भी इस बारे में खुलकर बात नहीं की। रातें डरावनी थीं। यह युद्ध अलग था और हर असुर को अपने दिल से पता था कि वह एक निर्दयी और बेईमान दुश्मन से लड़ रहा है, जिसका नेतृत्व ऐसे सेनापति कर रहे हैं जो रात के अंधेरे में शहरों को आग लगा देते हैं। एक ऐसा दुश्मन जिसका नेतृत्व एक ऐसे राजकुमार ने किया जो पेड़ के पीछे छिपकर अपने भाई से द्वंद्वयुद्ध कर रहे एक महान राजा को तीर मारकर मार डालता था। एक ऐसा दुश्मन जिसका नेतृत्व एक ऐसे राजकुमार ने किया जिसने एक महिला के कान और नाक काटने जैसी नीच हरकत की थी। परछाइयाँ लंबी होती गईं और हम पहले कभी न देखे गए डर से कांप रहे थे।
युद्ध शुरू हुए दस दिन हो चुके थे और दोनों तरफ भारी नुकसान हुआ था। दुश्मन के बारे में कोई खबर नहीं मिल रही थी, लेकिन रुद्रक, वज्रधमस्त्र, सुमाली और माल्यावन जैसे हमारे मंत्री और सेनापति सब मारे जा चुके थे। असुर सेना के पास नेतृत्व करने वाले कम होते जा रहे थे। केवल साहसी प्रहस्त, जिन्होंने वरुण को रोके रखा था और समुद्र के रास्ते राम के पीछे हटने का रास्ता रोका था, और युवराज मेघनाद ही अनुभवी योद्धा बचे थे। बूढ़े और अनाड़ी मयान को कमान सौंपी गई थी, लेकिन हमने सुना था कि उन्होंने इसे ठुकरा दिया था। वृद्ध वित्त मंत्री जंबुमाली इतने बूढ़े हो चुके थे कि चल भी नहीं सकते थे। स्थिति वाकई गंभीर रही होगी जब अस्सी साल के वैज्ञानिकों को असुर सेनाओं की कमान सौंपी जा रही थी। रावण को खुद कमान संभालनी चाहिए थी, लेकिन शायद सम्राट इतने बूढ़े हो चुके थे कि यह काम उनके बस का नहीं था। मुझे महल की ओर चलने की इच्छा हुई। शायद अथिकय कहीं वहीं घायल पड़े हों, लेकिन जीवित। मैं उन्हें वापस ला सकता था। अपनी गंदी धोती से हाथ

पोंछते हुए, और अपनी पत्नी को बिना बताए, मैं महल की ओर चल पड़ा। कुछ देर तक मैं सड़क पर अकेला रहा। फिर मैंने देखा कि कुछ आदमी छोटी-छोटी खाने की दुकानों के पास इकट्ठा होकर गपशप कर रहे थे। ज़्यादातर घर बंद थे और वीरान लग रहे थे, लेकिन कुछ लोगों ने जानबूझकर अपने दरवाज़े खोल रखे थे और सामान्य जीवन का दिखावा कर रहे थे। कुछ बंद दरवाज़ों के पीछे से दबी हुई चीखें सुनाई दे रही थीं। शायद किसी बेटे या पति की मौत हो गई थी।
मेरे सिर पर सूरज की तेज गर्मी पड़ रही थी। पसीना बह रहा था और मैं बीमार महसूस कर रहा था। मुझे नहा लेना चाहिए था। जैसे ही मैं महल के पास पहुँचा, यह सोचना कितना बेतुका था कि अथिकाया की देखभाल महल के अंदर की जाएगी। अथिकाया कोई राजकुमार नहीं था। वह तो बस एक गरीब, अनपढ़, काले असुर का बेटा था। अगर उसे चोट लगी होती, तो उसे युद्ध के मैदान में मरने के लिए छोड़ दिया जाता। ऐसे मूर्खों की जान सरकार के लिए कब से कीमती हो गई थी? लेकिन वह रातें कहाँ बिताता था? वह बहुत पहले ही घर आना बंद कर चुका था। 'क्या वह राजकुमार मेघनाद के कमरे के बाहर सोता था, या किले के अंदर पहरेदारों के क्वार्टर में रातें गुजारता था?' मैंने ठान लिया था कि आज उससे मिलूंगा और उसे इस बड़े लोगों के मूर्खतापूर्ण युद्ध को छोड़कर घर वापस आने के लिए मनाऊंगा, हालाँकि मुझे पता था कि यह व्यर्थ होगा।
दूर से ही महल अभेद्य और भयावह दिखाई दे रहा था। उसके सुनहरे गुंबद और मीनारें सूर्य की रोशनी में चमक रही थीं। 'सोना - सम्राट अपनी छत को सोने से सजाते हैं, जबकि हम जैसे लोग दिन में एक वक्त का खाना भी नहीं खाते।' शायद उनका पतन उचित ही था। लेकिन कम से कम वे क्रूर तो नहीं थे और उन्होंने अपनी प्रजा के उत्थान का प्रयास किया था। यह सोचकर ही मुझे कंपकंपी छूट गई कि विभीषण के शासन में लंका का क्या हाल होगा। रावण के राज्य में, भले ही कुलीन और आम लोग थे, सैद्धांतिक रूप से कोई भी कड़ी मेहनत और भाग्य के बल पर उत्थान कर सकता था। रुद्रक जैसे लोगों के उदाहरण दिए जाते थे, जो एक साधारण कसाई थे और बाद में निर्दयी योद्धा बन गए, और सुमाली, जो कुबेर के मसाला निर्यात विभाग में सिर्फ एक क्लर्क थीं, लेकिन मंत्री और सेनापति के पद तक पहुंचीं। लेकिन मैं तो एक महत्वहीन व्यक्ति था, उस देश में लाखों गरीब असुरों में से एक, जिसका तेजी से ब्राह्मणीकरण हो रहा था। युद्ध के अंत में, मैं एक अछूत, धरती का सबसे नीच व्यक्ति बन जाऊँगा। मुझे पीने की बहुत ज़रूरत थी, लेकिन आस-पास कुछ भी नहीं था। मैं बैठ गया और इंतज़ार करने

लगा कि कोई महत्वपूर्ण अधिकारी मुझे पहचान ले और महल के अंदर ले जाए। मुझे यह देखना था कि मेरा बेटा वहाँ है या नहीं।
शाम ढल रही थी जब दिन भर की लड़ाई के बाद किले में लौट रही सेना के शोरगुल से मेरी नींद टूट गई। गंभीर रूप से घायल या मृत सैनिकों को, जो काफी महत्वपूर्ण थे, वापस लाया जा रहा था। साधारण सैनिकों को युद्ध के मैदान में गिद्धों के लिए छोड़ दिया गया था। मैं अपने सीने में धड़कता हुआ दिल सुन सकती थी, जब मैं मार्च करती हुई सेना में अपने बेटे को ढूंढ रही थी। सैनिक जोश से भरे हुए थे। देखो, वह रहा! 'नहीं, वह नहीं है। क्या वह मर गया और मैदान में ही छोड़ दिया गया क्योंकि वह तो सिर्फ एक काला असुर था?' मैं बेचैनी से थके हुए सैनिकों की ओर दौड़ी, उनमें अथिकाया को ढूंढ रही थी। मैंने मार्च रोकने की कोशिश की और अपने बेटे को पुकारा। समूह से कुछ ताने और गुस्से में बड़बड़ाहट हुई, लेकिन मैंने परवाह नहीं की। मैं मार्च करते हुए सैनिकों के बीच दौड़ती रही, अपनी गर्दन उठाकर मृतकों और घायलों के चेहरे देखने की कोशिश करती रही। मुझे धक्का-मुक्की भी हुई, लेकिन मैंने उसे नजरअंदाज कर दिया। बढ़ती बेचैनी के साथ मैं अपने बेटे को ढूंढ रही थी। वहाँ, वह था – रथ में, राजकुमार मेघनाद के साथ। लंबा, सांवला और गठीला, अथिकाया सीधा खड़ा था। राजकुमार के हाथ-पैर और कंधों पर घाव थे जिनसे खून बह रहा था। अथिकाया की छाती पर एक भयानक घाव था जिसे उसने खून से लथपथ कपड़े से बेतरतीब ढंग से बांध रखा था। मैं रथ की ओर दौड़ा लेकिन राजकुमार के अंगरक्षकों ने मुझे बेरहमी से धक्का देकर दूर कर दिया।
“अथिकाया, मेरे बेटे…” सैनिकों के शोर में मेरी कर्कश आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी। लंबे-लंबे और हट्टे-कट्टे असुर योद्धाओं के बीच मैं खुद को बहुत छोटा महसूस कर रहा था। ‘आजकल लड़के कितने लंबे हो जाते हैं!’ मैंने बेतहाशा हाथ हिलाए, उछल-कूद की और चिल्लाया, मानो उसका ध्यान अपनी ओर खींचना चाहता हो। अचानक उसकी नज़र मुझ पर पड़ी। मैंने हाथ हिलाया और शाही रथ की ओर बढ़ने की पूरी कोशिश की। मैंने देखा कि उसकी आँखें आश्चर्य से चौड़ी हो गईं और फिर वह आश्चर्य शर्मिंदगी में बदल गया। मेरा बेटा असुर युवराज के साथ सवारी करते हुए बहुत खुश था और मैं, एक बेचारा धोबी, एक मामूली इंसान, उसकी शान में दखल देने की कोशिश कर रहा था। उस एक नज़र से उसने मेरे अंदर पल रही थोड़ी सी उम्मीद को भी खत्म कर दिया। लेकिन मैं तो बस उसका पालक पिता था। वह किसी गरीब, काले असुर की झोपड़ी में रहने वाला

नहीं था। वह सम्राट के वंश का था, भले ही नाजायज संतान था, लेकिन आधा राजकुमार तो था ही। वह एक ऐसी दुनिया का था जहाँ मुझ जैसे कीड़े-मकोड़े नहीं रहते थे। वह पराक्रमी पुरुषों और महान नायकों की दुनिया से संबंध रखता था, जिनकी मृत्यु के हजारों वर्षों बाद भी चर्चा होती रहेगी। भद्रा जैसे लोगों का कोई महत्व नहीं था।
अचानक राजकुमार ने मुझे देखा। उन्होंने इशारा किया और अंगरक्षकों की कतार हट गई। एक पल के लिए मैं वहीं अचंभित खड़ा रहा, फिर डरते-डरते रथ की ओर बढ़ा। ‘क्या पूरा काफिला मेरे लिए रुक गया था? क्या पास पहुँचने पर मुझे ठुकरा दिया जाएगा?’ राजकुमार ने थकी हुई मुस्कान के साथ मुझे गौर से देखा। मैं कुछ कदम दूर सम्मानपूर्वक खड़ा रहा। मेरा बेटा मुझसे नज़रें फेरकर खड़ा रहा, मानो मेरे बूढ़े और थके-हारे रूप से उसे शर्म आ रही हो। मुझे खुद पर और भी शर्म आ रही थी। मुझे नहा लेना चाहिए था। मुझसे शराब और सड़न की बदबू आ रही थी। राजकुमार ने इशारा किया, लेकिन मैं वहीं जड़वत खड़ा रहा। मेरे पास खड़े एक सिपाही ने चिल्लाकर कहा, “अरे मूर्ख! क्या तुम्हें दिखाई नहीं दे रहा कि महाराज तुम्हें बुला रहे हैं?”
घबराते हुए मैं रथ की ओर बढ़ा। जैसे ही मैं पास पहुँचा, राजकुमार ने मेरी ओर हाथ बढ़ाया। मैं शाही उंगलियों को छूने से कतरा रहा था, लेकिन एक झटके में उन्होंने मुझे रथ में खींच लिया। भीड़ में सन्नाटा छा गया। "अरे, एक नीच, बदबूदार भिखारी असुर राजकुमार के साथ सवारी कर रहा है?" मुझे गर्व महसूस हुआ। उसके पिता, जिन्हें मैं कभी मित्र समझता था, ने कभी ऐसा कोई भाव नहीं दिखाया था। फिर मैंने मुड़कर अपने दत्तक पुत्र की आँखों में घृणा देखी। मैं उसकी शर्मिंदगी में शामिल हो गया। राजकुमार एक तुच्छ व्यक्ति के साथ अपने गौरव के क्षण को साझा करके राजनीतिक लाभ उठा रहा था। शायद यह एक सच्चे हृदय से किया गया नेक कार्य था, लेकिन मैं जीवन के अपने अनुभवों से इतना बोझिल था कि मैं परोपकारी भाव से सोच भी नहीं सकता था। धनी और शक्तिशाली लोग जो कुछ भी करते थे, चाहे वह दान, दया या उदारता हो, सब स्वार्थ से भरा होता था। यह मेरे व्यर्थ जीवन के कठोर पाठों में से एक था। मैंने धनियों की आँखों में दया देखी थी; मैंने अपने जैसे लोगों के प्रति दयालु होने में गर्व देखा था; लेकिन सबसे बढ़कर, मैंने शक्तिशाली राजा रावण की आँखों में भी भय देखा था। वे हम जैसे सीधे-सादे, पशुवत, अज्ञानी, काले, गरीब पुरुषों और महिलाओं से डरते थे। दया, संरक्षण, दान, अहंकार,

घमंड और उदासीनता, ये सब अमीरों की अपने भय से बचने की रक्षा प्रणाली का हिस्सा थे।
अचानक मुझे लगा कि असुर राजकुमार पर मेरा अधिकार है – सांसारिक शक्ति का वैभवशाली शक्ति पर प्रभुत्व। सब कुछ स्पष्ट था। वह युद्ध में अधपके फूल की तरह मुरझा जाएगा, अपनी जवानी में ही, लेकिन मैं जीवित रहूँगी। वह किंवदंतियों और इतिहास के पन्नों में गुम हो जाएगा, लेकिन मैं हमेशा वहीं रहूँगी, गलियों से जीवन निचोड़ती हुई, अपनी छोटी-छोटी रोज़मर्रा की लड़ाइयाँ लड़ती हुई। कोई कवि मेरे बारे में गीत नहीं गाएगा, लेकिन कवियों की परवाह कौन करता है? कोई मुझे भगवान की तरह पूजेगा नहीं, लेकिन भगवान तो बेकार होते हैं और कौन बनना चाहता है? यह युद्ध जल्द ही समाप्त हो जाएगा और नायकों और खलनायकों का जीवन भी। लेकिन मेरी लड़ाई जारी रहेगी, और मेरे जैसे लाखों लोग धरती के अलग-अलग कोनों में भोजन, पानी, हवा, आश्रय और थोड़ी सी इज्जत के लिए अपनी छोटी-छोटी लड़ाइयाँ लड़ते रहेंगे।
मैं अब भी अपने विचारों में डूबी हुई थी कि राजकुमार ने कहा, “आज आपके पुत्र ने मेरी जान बचाई। आप एक वीर पिता हैं। मैं आपको प्रणाम करता हूँ, महाराज।” मुझे घिन आ गई। मैं इसमें बिल्कुल भी शामिल नहीं होना चाहती थी। राजकुमार द्वारा मुझे एक राजनीतिक हथकंडे के रूप में इस्तेमाल किए जाने पर मुझे गुस्सा आ रहा था। क्या जीवन ने मुझे इतना संशयवादी बना दिया था कि मैं एक सच्चे नेक राजकुमार पर शक कर बैठी, जिसने अपने शाही रथ में मुझ जैसे बदबूदार आवारा को जगह दी थी? मैं चुप रही, अपनी आँखों में उमड़ते आँसुओं को रोकने की कोशिश करती रही। मैंने अपने होंठों के काँपने को रोकने की पूरी कोशिश की, लेकिन मैं फूट-फूट कर रो पड़ी। राजकुमार ने मुझे प्यार से गले लगाया और मेरे गालों को चूमा। मेरा बेटा दूसरी तरफ देखने लगा। मैं सिसकती रही। रथ चलने लगा और दोनों ओर खड़े सैनिकों ने जयकारे लगाए।
जैसे ही किले का द्वार खुला, मैंने राजा और रानी को महल की ओर जाने वाली सीढ़ियों के शीर्ष पर खड़े देखा। बालकनियाँ दरबारी महिलाओं, नौकरानियों और दरबार के सभी लोगों से भरी हुई थीं। वे सभी राजकुमार का जयजयकार कर रहे थे। ढलते सूरज की रोशनी में सम्राट लाल रंग से रंगे हुए थे और रावण अपने शक्तिशाली असुर सम्राट के रूप में पूरी तरह से दिखाई दे रहा था। उसकी चांदी जैसी अयाल हवा में लहरा रही थी और वह अपने पुत्र का घर में स्वागत करते हुए लंबा, सीधा और गर्व से खड़ा था।

[illegible]

52 प्रधानमंत्री का मिशन
रावण
अंततः, युद्ध समाप्त हो गया। मेरे पुत्र ने हमारे सबसे बड़े शत्रुओं को परास्त कर दिया था। मुझे उस पर बहुत गर्व था। लेकिन मैं चिंतित भी थी। कुछ गड़बड़ थी। उसने और उसके मित्र अतिकाय ने राम और लक्ष्मण को उनके सेनापतियों से अलग कर दिया था और देव राजकुमारों को भयंकर युद्ध में उलझा दिया था। प्रहस्त ने पिछले दिन ही अपनी आधी सेना को द्वीप के पूर्वी भाग में उतारा था और उन्हें पूरी रात पैदल चलकर देव सेना पर पीछे से हमला करने के लिए भेजा था। उसने हनुमान और सुग्रीव को उनके स्वामियों से अलग कर दिया था और उन्हें यह आभास कराया था कि असुर सेना पीछे हट रही है। इससे उत्साहित होकर वानर-पुरुषों ने असुरों का पीछा किया और जब वे राम से काफी दूर हो गए, तो असुरों ने भयंकर युद्ध के लिए वापस पलटवार किया। मैंने अपने किले से युद्ध देखा और प्रहस्त की सेनापति क्षमता से बहुत प्रभावित हुई।
राम के पास केवल कुछ ही रक्षक बचे थे और मेघनाद और अथिकय ने जल्द ही उन्हें घेर लिया। उन्होंने राम की दृढ़ और हताश सेना को चीरते हुए अपना रास्ता बनाया। उनके पास ज्यादा समय नहीं था और मेघनाद ने अंतिम प्रहार किया। देव राजकुमारों ने अपने तीरों से तेजी और सटीकता से वार किए और मेरे पुत्र और उसके सेवक को कई बार घायल कर दिया। अथिकय ने सुझाव दिया कि वे राजकुमारों के जितना जल्दी हो सके करीब पहुँचें ताकि वे तीरों का लाभ खो दें।
मेघनाद और अथिकाय ने अपना रथ छोड़कर तलवारें खींचकर आगे घात लगाई। वे युद्धरत सैनिकों के बीच से टेढ़े-मेढ़े रास्ते से होते हुए अचानक देव राजकुमारों पर टूट पड़े। यह राम के बाणों की फुर्ती का प्रमाण था; यानी पलक झपकते ही उन्होंने आधा धनुष खींचकर मेघनाद के कंधे पर बाण मार दिया। मेघनाद ने तलवार के एक ही वार से राम को मार गिराया, जबकि अथिकाय छोटे देव

राजकुमार के साथ घातक संघर्ष में उलझे रहे। लक्ष्मण ने अपना धनुष-बाण छोड़कर तलवार निकाल ली। देव तलवार एक घातक हथियार है। असुरों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली घुमावदार, भारी लोहे की तलवार के विपरीत, देव तलवार एक लंबी, पतली धार वाली तलवार थी जिसे खंजर की तरह इस्तेमाल किया जाता था। मेघनाद अथिकाय की सहायता के लिए दौड़े, लेकिन जैसे ही वे मुड़े, राम, जिन्हें वे मृत समझ रहे थे, ने उनका पैर पकड़कर उन्हें गिरा दिया। जिस क्षण अथिकाय ने अपने स्वामी की ओर देखा, लक्ष्मण ने अपनी तलवार अथिकाय के शरीर में घुसा दी।
लक्ष्मण ने तेज़ी से मुड़कर दोनों हाथों से तलवार ऊपर उठाकर ज़मीन पर औंधे मुंह पड़े मेरे पुत्र के हृदय पर प्रहार किया। तभी घुटनों के बल बैठे अथिकय ने हरकत की और मेघनाद को खींचकर दूर ले गए। लक्ष्मण की तलवार असुर राजकुमार को बाल-बाल बचाते हुए मिट्टी में धंस गई। मेघनाद ने अपनी तलवार लक्ष्मण के पेट में घोंप दी और देखा कि छोटा देव राजकुमार दर्द से कराहते हुए लुढ़का और फिर शांत हो गया।
इस समय तक, वानरों का बूढ़ा सेनापति, जिस पहाड़ी पर छिपा हुआ था, वहाँ से असुर सेना के छोटे से दल पर आ गिरा था। पहाड़ी की ऊँचाई से, चतुर बूढ़े सेनापति ने युद्ध की प्रगति पर नज़र रखी थी और प्रहस्त की चाल को भाँपते ही उसने युद्ध की दिशा तय कर दी थी। वह अपने सैनिकों के साथ राम की सहायता के लिए दौड़ पड़ा। खतरे को भाँपते हुए, अथिकाय ने मेघनाद को पीछे हटने के लिए कहा, लेकिन तब तक मेघनाद बेहोश हो चुका था। अथिकाय ने राजकुमार को अपने कंधों पर उठाया, हालाँकि वह स्वयं बुरी तरह से लहूलुहान था। उसने रथ तक पहुँचने के लिए रास्ता बनाया और असुर राजकुमार को होश में लाने की कोशिश की। उसने देखा कि जाम्बवान के सैनिक उसकी ओर बढ़ रहे हैं।
जाम्बवान ने सुग्रीव और हनुमान को अपने नेता की सहायता के लिए लौटने का संदेश भेजा था। पूरी वानर सेना एक साथ मुड़ी और मेघनाद के पीछे हटने का रास्ता बंद करने के लिए वापस दौड़ी। पीछे से प्रहस्त की सेना उनका पीछा कर रही थी। मैं देख सकता था कि मेरा बेटा फंसा हुआ है, हालांकि मुझे यह पता नहीं था कि वह बेहोश हो गया है। अपने किले से मैं केवल उसके रथ पर लहराता झंडा देख सकता था। जब मैंने रथ को युद्ध के मैदान के बीच में देखा तो मैं चिंतित हो गया। 'यह लड़का इतना लापरवाह कैसे हो सकता है कि अपना रथ छोड़कर दुश्मन से आमने-सामने की लड़ाई करे?' अनुभवी योद्धा इस तरह से नहीं लड़ते।

दृश्य पर टिकी रहीं। नाव तेज़ी से मुख्य भूमि की ओर उत्तर-पश्चिमी समुद्र में बिखरे छोटे-छोटे निर्जन द्वीपों में से एक की ओर बढ़ गई। जैसे ही नाव सुरक्षित दूरी पर पहुँची, हनुमान की टुकड़ी राम सेतु के ऊपर से समुद्र की ओर भाग गई। प्रहस्त उनका पीछा कर रहा था, तभी अचानक वरुण की सेना उसके पीछे प्रकट हो गई। यह वानर-पुरुषों को भागने का मौका देने की एक चाल थी। हनुमान के सैनिकों ने सेतु पार किया और द्वीप से उनका संपर्क टूट गया।
मेघनाद द्वारा शत्रु सरदार को मार गिराए जाने की खबर फैलते ही असुर सेना एकत्रित हो गई और जश्न शुरू हो गया। राम की सेना के बचे हुए सैनिकों को पूरी तरह से नष्ट करना या उन पर विजय प्राप्त करना बाकी था, लेकिन वह कल तक के लिए टाल दिया गया। प्रहस्त ने अपने अनुशासनहीन असुर सैनिकों को नियंत्रित करने का प्रयास किया, जो विजय का जश्न मनाने के लिए किले में वापस दौड़ पड़े थे। लेकिन कुछ बात मुझे परेशान कर रही थी और मैं बेचैनी से प्रहस्त के जवाब का इंतजार कर रहा था। मैं अपनी जीत से खुश था, लेकिन जाम्बवान जिस तरह से राजकुमारों को ले जा रहा था, उससे भी चिंतित था। 'क्या वे सचमुच मर गए थे?' वे गंभीर रूप से घायल थे, यह मुझे पक्का पता था। मुझे इस बात पर गुस्सा आ रहा था कि मेघनाद ने राम और लक्ष्मण के सिर क्यों नहीं काटे। वह लड़का भारी दबाव में था और उसने बहादुरी से लड़ाई लड़ी थी, लेकिन ऐसी छोटी-छोटी बातें ही युद्ध का रुख बदल देती हैं। मेघनाद को कभी भी यह नहीं मान लेना चाहिए था कि कुछ तलवार के वार या कुछ बाणों से शत्रु मर गया है। लेकिन एक बार सिर कट जाने के बाद पराजित को वापस जीवित करना केवल एक चमत्कार ही हो सकता है। यह सबक मैंने बहुत समय पहले घने जंगलों में महाबली और ब्रह्मा के मार्गदर्शन में सीखा था।
अगर मुझे जवानी में ऐसा मौका मिला होता, तो मैं राम और लक्ष्मण के सिर काटकर उनके सैनिकों को दिखाने के लिए खंभों पर टांग देता। सरदार को मार गिराते ही युद्ध समाप्त हो जाता है। इससे योद्धाओं का मनोबल टूट जाता है। मैंने जवानी के कई युद्ध अभियानों में यह देखा है। कई बार मैं जान से मारे जाने के गंभीर खतरे में था, जब मैंने अपने चंद्रहास से शत्रु सरदारों पर बेपरवाही से हमला किया और किसी तरह उन्हें मार गिराया। चाहे कितने ही शत्रु मुझे घेर लें और मैं मौत के कितना भी करीब आ जाऊं, जैसे ही मैं उनके सरदार का सिर काट देता और यह सुनिश्चित कर लेता कि सभी इसे देख लें, युद्ध समाप्त हो जाता था। मेघनाद कितना मूर्ख था, उसने राम और लक्ष्मण के सिर

कटवाने का ध्यान नहीं रखा। यह उसकी सामरिक गलती थी। मेघनाद में अभी भी कुछ कमी थी जो महान योद्धाओं में होती है। क्या वह निर्दयता थी? वह लड़का दिल से इतना नरम था कि एक सच्चा योद्धा नहीं बन सकता था। मैं तो बिना पलक झपकाए यह काम कर देता। तो बाली, राम, हनुमान, प्रहस्त, रुद्रक या महाबली होंगे। इसका मतलब था कि दुश्मन अभी मरा नहीं था। राम और लक्ष्मण में ज़रूर जान बची होगी, वरना जाम्बवान उन्हें द्वीप पर क्यों ले जाता? दुश्मन अभी भी हमला कर सकता था। 'मूर्ख मेघनाद!' उस लड़के ने जीवन की कठोरता नहीं देखी थी, उसने उन चीज़ों को हल्के में लिया था जो मैंने अपने पसीने और खून से बनाई थीं। उसने अभी तक यह बेबसी महसूस नहीं की थी कि अगला भोजन कब मिलेगा या मिलेगा भी या नहीं। उसने उस माँ की आँखों में दुख नहीं देखा था जो अपने बच्चों को खाना नहीं खिला सकती। मैंने मंदोदरी को दोषी ठहराया। वह अपने बेटे को दुनिया की इकलौती अनमोल चीज़ मानती थी। वह इतना सुंदर, प्यारा और दयालु था कि कोई भी उस बदमाश को पसंद किए बिना नहीं रह सकता था। लेकिन, मुझे उसकी परवरिश बेहतर करनी चाहिए थी। युद्ध में एक सुनहरा मौका बर्बाद हो गया। मूर्ख!
मैं अंदर गया, उसकी मूर्खता के लिए उससे सवाल-जवाब करने के इरादे से। उसने गर्व से मुस्कुराते हुए मेरी तरफ देखा। मैं कुछ देर इंतजार करता रहा क्योंकि मैं उसे अकेले में पाना चाहता था। दूसरा मूर्ख, अथिकया, एक खुश आवारा कुत्ते की तरह ज़मीन पर बैठा था। मैं उन दोनों के सिर आपस में टकरा देना चाहता था, जो उन्होंने किया था। वे वहाँ ऐसे बैठे थे जैसे हीरो हों, जबकि उन्होंने असुरों के लिए सबसे अच्छा मौका गंवा दिया था।
“रावण, देखो उसके शरीर पर कितने गहरे घाव हैं, मेरा बेटा तो मर ही सकता था।” मंदोदरी सिसकते हुए मुझे शरीर पर लगे घाव और चोटें दिखाने लगी। मेघनाद को तो ये सब ध्यान आकर्षित करने में मज़ा आ रहा था। ‘उसे क्या उम्मीद थी? वो तो युद्ध में गया था। ये तो युद्ध था। ये स्त्री उसके लिए इतनी चिंता क्यों कर रही थी?’ तभी मुझे समझ आया। मंदोदरी पहली बार युद्ध देख रही थी। मेरे बाकी सारे अभियान दूर-दराज के देशों में लड़े गए थे। जब मैंने उसे अकेले युद्ध में भेजा था, तब मैं चिंतित थी, क्योंकि मैं जानती थी कि युद्ध के मैदान में पल भर में क्या भयानक हो सकता है। मुझे उस भटके हुए तीर का डर सताता था जो उसकी आँख में लगकर उसका सिर फोड़ सकता था। अगर स्त्रियाँ उन युद्ध के मैदानों को देखतीं जहाँ मूर्ख पुरुष एक-दूसरे का वध करते हैं, तो इस दुनिया

में युद्ध ही न होते। मेरा इस दृश्य को देखने का मन नहीं हुआ, इसलिए मैं कमरे से बाहर चली गई। प्रहस्त मेरे पास आया और प्रणाम किया। मैंने उसके हाथ पकड़े और उसे बालकनी की ओर ले गई।
“तुम्हें क्या लगता है? क्या राम की मृत्यु हो गई?” मैंने पूछा, जबकि मुझे जवाब अच्छी तरह पता था।
उसने उसके सिर को हिलाकर रख दिया।
मैंने कहा, "मुझे लगता है लड़कों ने गड़बड़ कर दी।" यह सुनकर वह उदास होकर मुस्कुराया।
“हम उन्हें दोष नहीं दे सकते। मेघनाद बहुत अनुभवहीन और नासमझ है, लेकिन यह हमारे लिए बहुत भारी पड़ सकता है।” प्रहस्त ने मेरी आँखों में देखने से बचते हुए कहा। मैं उसकी हताशा को महसूस कर सकता था। “उसे रोकना होगा।” प्रहस्त ने दूर स्थित उस द्वीप पर ध्यान केंद्रित करते हुए कहा, जहाँ जाम्बवान अपने घायल नेता के साथ पीछे हट गया था। मैंने उसे उलझन भरी निगाहों से देखा।
"महामहिम, मुझे जो जानकारी मिली है, उसके अनुसार दोनों राजकुमार मृत्यु के कगार पर हैं, लेकिन वानरों का चिकित्सा ज्ञान बेमिसाल है। वे असंभावित पौधों से भी जीवनरक्षक रस निकालना जानते हैं। वे हमारी तरह रासायनिक पाउडर का प्रयोग नहीं करते। इसके बजाय, वे आयुर्वेद नामक चिकित्सा पद्धति का पालन करते हैं, जिसमें पौधों पर विशेष बल दिया जाता है।"
"आपका क्या सुझाव है?"
“हमें पक्का पता नहीं है कि राम जीवित हैं या नहीं। वे बुरी तरह घायल हो गए थे और शायद अब तक उनकी मृत्यु भी हो गई हो। लेकिन अगर वे जीवित हैं, या अगर वानरों ने किसी चमत्कार से उन्हें बचा लिया है, तो उन्हें अपनी औषधियाँ बनानी होंगी। वे जिस प्रकार के पौधों का उपयोग करते हैं, वे आमतौर पर भारत के केवल तीन क्षेत्रों में पाए जाते हैं – लंका में, मुख्य भूमि के उष्णकटिबंधीय दक्षिण-पश्चिमी तटों पर और हिमालय में। हिमालय बहुत दूर है। वे लंका में प्रवेश नहीं कर सकते क्योंकि यह बहुत खतरनाक होगा, लेकिन वे कोशिश कर सकते हैं और हमें ऐसी संभावना के प्रति सतर्क रहना होगा। उनके पास एकमात्र विकल्प मुख्य भूमि के पश्चिमी तट पर जाना है। वानर दोनों विकल्पों की तुरंत जांच करेंगे।”

“[illegible] I do do not see [illegible] [illegible] [illegible] do [illegible] do [illegible]?” [illegible] do [illegible] do [illegible] [illegible] [illegible] do, [illegible] [illegible] [illegible] do do [illegible] [illegible] [illegible]
“[illegible] [illegible] do [illegible] [illegible] do [illegible] [illegible] do [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] do [illegible] do [illegible] [illegible] [illegible] do [illegible] do [illegible] [illegible] [illegible] do [illegible] do [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] do [illegible] [illegible] [illegible] do, [illegible] [illegible] [illegible] do [illegible] [illegible] [illegible] do [illegible] [illegible] [illegible] do [illegible] do do [illegible] [illegible] [illegible] do [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

“महाराज, मैं स्वयं यह मिशन पूरा करूँगा। मुझे वरुण के बेड़े से बचकर भोर तक मुख्य भूमि पर पहुँचना है। यह खतरनाक है और अगर मुझे विकल्प मिलता, तो मैं इससे बचता। लेकिन मुझसे बेहतर जलमार्गों को कोई नहीं जानता। मुझे पूरा विश्वास है कि वानर अपने राजकुमारों के ठीक होने तक हमला नहीं करेंगे। मैं अभी शुरू करता हूँ। और कुंभकर्ण को कमान सौंपना अच्छा रहेगा।”
झुककर वह मेरे रोकने से पहले ही चला गया। 'क्या मैं अपने भाई को कमान सौंप दूँ?' कहना आसान था, करना मुश्किल। मेरा छोटा भाई कई दिनों से नशे में धुत पड़ा था। उसे नशे और शराब की लत लग गई थी और मैं उसे अपनी आँखों के सामने कमजोर और बिखरते हुए देख रही थी। क्या यह इसलिए था कि मुझे उसमें एक प्रतिद्वंद्वी की झलक दिखाई देती थी, इसलिए मैंने उसे उसकी बुरी आदतों से छुड़ाने के लिए पर्याप्त प्रयास नहीं किया? मुझे नहीं पता। मैंने कई दिनों से उसके बारे में सोचा तक नहीं था। मैंने एक पल के लिए भी मारीच के बारे में नहीं सोचा था। मैंने अक्षय कुमार के बारे में भी नहीं सोचा था, मेरे उस छोटे बेटे के बारे में जिसे हनुमान ने मार डाला था। और अब, जब मेरे पास कमान संभालने के लिए अच्छे लोगों की कमी थी, तो प्रहस्त ने मुझे मेरे भाई की याद दिला दी। मुझे उसे महल के किसी अंधेरे कोने में ढूंढना था और उसे उसकी खुशियों की अंधेरी दुनिया से बाहर निकालकर अपने युद्ध में शामिल करना था। यह आसान नहीं होने वाला था।

53 उल्लंघन

भद्र

मैं दबे पांव सीढ़ियों पर चढ़ी, ज़रा सी भी आवाज़ से बचते हुए। मुझे एक दबी हुई चीख सुनाई दी, फिर एक ज़ोरदार धमाका और किसी चीज़ के घसीटे जाने की आवाज़। मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था, मैंने सीढ़ियों से झाँका और कुछ वानरों को भागते हुए देखा। मैंने उनके दुष्ट राजकुमार, अंगद को पहचान लिया। वह एक बेजान शरीर को अपने कंधे पर उठाए कमरे से भाग रहा था। कुछ पहरेदार जो अभी भी होश में थे, आखिरकार जाग गए और अंगद को रोकने की कोशिश की। उसने ज़रा भी कदम नहीं रोके, बस अपनी तलवार से स्तब्ध पहरेदारों को चीरता हुआ आगे बढ़ गया। मैं शाही कक्ष के प्रवेश द्वार पर दौड़ी और पहरेदारों को खून के तालाबों में पड़ा पाया। जिन पहरेदारों ने वानर राजकुमार का सामना करने का साहस किया था, वे या तो मर चुके थे या दर्द से तड़प रहे थे, उनकी आंतें बाहर निकली हुई थीं और खून सुंदर कालीनों पर फैला हुआ था।
मैंने महल के झूलते दरवाज़ों को देखा और कुछ पल के लिए झिझक गई। फिर सम्राट को दिल में खंजर गड़ाए देखने की आशंका से खुद को तैयार करते हुए, मैंने दरवाज़ा खोल दिया। महल खाली था। कहीं भी कोई लाश नहीं थी। केवल पलंग ही ऐसा लग रहा था मानो वहाँ कोई संघर्ष हुआ हो। तभी मुझे समझ आया, ‘अंगद असुर रानी मंदोदरी को ले गया है। वह हत्या के इरादे से आया था, लेकिन सम्राट को उनके महल में न पाकर, उनकी पत्नी का अपहरण कर लिया। रावण को सूचना देनी होगी। वह कहाँ है?’ मैं महल के गलियारों में दौड़ती हुई दरवाज़ों पर दस्तक देती और ज़ोर-ज़ोर से रोती हुई अथिकाया को पुकारने लगी। कई लोग जाग गए और मैंने ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर कहा कि रानी का अपहरण अंगद ने कर लिया है। शुरू में कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। शायद कई लोगों ने सोचा होगा कि मैंने ज़्यादा शराब पी ली है और मैं बड़बड़ा रही हूँ। फिर अफरा-तफरी मच गई। पहरेदार जाग गए और इधर-उधर ऐसे भागने लगे जैसे सिर कटे मुर्गे हों। कई लोग जोर-जोर से विलाप कर रहे थे, कुछ आदेश चिल्ला रहे थे, लेकिन उनकी बात मानने वाला कोई नहीं था, और अन्य लोग आंखें झपकाते हुए बैठे थे और उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि यह सारा हंगामा किस बारे में है।
मेघनाद और अथिकया को ढूंढने में मुझे लगभग आधा घंटा लग गया। मैंने अपने बेटे को लात मारकर जगाया और वह नशे की हालत से उछल पड़ा। कोई भी अंदर आकर असुर राजकुमार और उसके सेवक की हत्या कर सकता था। असुरों की सुरक्षा का यही हाल था। अगर कोई शक्तिशाली असुरों के पतन का एक कारण जानना चाहे, तो

huddled

कपड़े इकट्ठा किए, और कुछ ने रानी को वापस ले जाने के लिए एक अस्थायी स्ट्रेचर बनाया। मैं पास ही खड़ा भाग्य के इस मोड़ पर आश्चर्यचकित था। उसने बार-बार कहा कि वह इस कलंक के साथ जीना नहीं चाहती। अंगद और उसके अज्ञानी लोगों ने उसके साथ दुष्कर्म किया था जब उन्हें पता चला कि वह सीता नहीं है, जैसा कि उन्होंने पहले सोचा था। वह अब रावण की पत्नी बनकर नहीं रहना चाहती थी; वह मरना चाहती थी।
रावण ने कुछ नहीं कहा, सिवाय इसके कि वह उसकी विधिवत विवाहित पत्नी है और हमेशा रहेगी। उसके इस गहरे निजी दर्द को देखना शर्मनाक था। लेकिन उस व्यक्ति के प्रति मेरे मन में प्रशंसा बढ़ती जा रही थी, जिसने इस कठिन समय में अपनी पत्नी का साथ दिया। एक शासक के रूप में, उसके साथ इससे बुरा कुछ नहीं हो सकता था, यहाँ तक कि उसकी अपनी मृत्यु भी नहीं। रानी हमेशा के लिए कलंकित हो चुकी थी और उसके लिए सबसे आसान होता कि वह उसे किसी पुराने कपड़े की तरह फेंक दे। लेकिन उसने कठोर मार्ग चुना, उन दबे-कुचले अधीनस्थों के साथ जीना, जो उसकी पीठ मुड़ते ही उसकी पत्नी के बारे में अश्लील टिप्पणियाँ करते थे। शायद, ऐसे ही विकल्पों में उसकी महानता और उसकी कमजोरी दोनों निहित थीं। उस समय, मुझे संदेह है कि क्या मैंने अपनी अपमानित रानी के प्रति उसके इस भाव को पूरी तरह समझा था। बहुत बाद में, जब मैंने एक अन्य व्यक्ति का अपनी चुनी हुई पत्नी के प्रति व्यवहार देखा, ऐसी परिस्थितियों में जो कहीं कम गंभीर थीं, तब मुझे समझ आया कि रावण को कभी देवता क्यों नहीं माना जा सकता। वह इतना मानवीय था कि उसे देवता नहीं कहा जा सकता था।
मैं चुपचाप निकल जाना चाहता था, लेकिन रावण ने मुझे जाते हुए देख लिया। “भद्रा,” उसने पुकारा और मैं रुककर पीछे मुड़ा। मैं समझ गया कि वह शर्मिंदा और क्रोधित दोनों था क्योंकि मैंने उसके निजी पल को देख लिया था। उसने मेरी ओर देखे बिना पूछा, “मेघनादा कहाँ है?” मुझे नहीं पता था, लेकिन किसी ने बताया कि राजकुमार और अथिकाय अंगदा और उसके आदमियों का पीछा कर रहे हैं।
“उम्मीद है वो कमीना जिंदा पकड़ा जाए।” मुझे अपने राजा पर तरस आया। वो अपनी चकनाचूर हुई प्रतिष्ठा को समेटने की कोशिश कर रहे थे। जल्द ही, एक अस्थायी पालकी तैयार की गई और राजा-रानी को उसमें बिठाकर महल की ओर खतरनाक रास्ते पर ले जाया गया।

“ज़रा सोचो, अब राजा को एक गंदे बंदर का बचा हुआ मांस चखना पड़ेगा,” एक युवा सैनिक ने टिप्पणी की। उसके आसपास के कई लोग हँस पड़े।
“उसे तो उसे तभी खत्म कर देना चाहिए था। अब सोचो, एक रानी को उसके बालों से घसीटकर और एक बंदर द्वारा नंगा किए जाने की शर्मिंदगी। कौन जाने वह उसके साथ और क्या-क्या करता,” एक और व्यक्ति ने कहा। और भी हंसी और सीटियां बजने लगीं।
“अरे, तुम कमीनों! ज़रा रहम करो!” एक बूढ़े सैनिक ने चिल्लाकर जवाब दिया। “उसने जो किया वो सचमुच नेक और सही था। कितने मर्द ऐसी पत्नी को स्वीकार करेंगे जिसे इस तरह अपमानित किया गया हो?” खूब हंसी गूंजी, तभी समूह का कप्तान पीछे मुड़ा और चिल्लाया, “तुम लड़के नहीं समझोगे। अगर तुम उस समय पैदा हुए होते जब देव आक्रमण कर रहे थे और
अगर आप एक के बाद एक शहर तबाह कर रहे होते, तो आप इस तरह से बात नहीं करते। आपकी गरिमा उस व्यक्ति के कारण है जिसका आप मजाक उड़ा रहे हैं, क्योंकि उसने अपनी पत्नी के मुश्किल समय में उसका साथ दिया।
बूढ़े सिपाही की बातों पर खूब हंसी-मजाक और ठहाके लगे। उन्हें खूब कोसते हुए वह चुप हो गया। मैंने उसकी बातों पर विचार किया। ‘क्या राजा ने जो किया वह कोई बड़ी बात थी? मैंने भी तो वही किया था। उस राजा ने मेरी पत्नी का बलात्कार किया और मेरे पुत्र अथिकय को जन्म दिया। क्या मैंने उसे अपने बेटे की तरह नहीं पाला? क्या मैंने अपनी पत्नी को त्याग दिया?’ जितना मैं इस बारे में सोचता गया, उतना ही मुझे यकीन होता गया कि रानी के साथ जो हुआ वह न्याय ही था। मुझे उसके लिए दुख हुआ, लेकिन वह अपने कर्मों का फल भोग रहा था। बलात्कार के बाद भी पत्नी को स्वीकार करने में कोई महानता नहीं थी, और यहाँ संदेह था। अगर कोई पुरुष है, तो वह अपनी पत्नी का साथ देता है। वरना वह नीच कहलाता है। इसमें कोई महानता नहीं थी। लेकिन शायद एक आम असुर और कुलीन वर्ग से जो अपेक्षाएँ रखी जाती थीं, वे अलग-अलग थीं। कुलीन वर्ग से नाजायज संतान होने की उम्मीद की जाती थी। इसलिए रावण ने जो किया, उससे साबित होता है कि वह भी दूसरे असुरों की तरह ही असभ्य और नीच था। अजीब बात है, यह सोचकर सुकून मिला कि वह भी हमारी तरह ही था। शायद अगर वह राम के साथ युद्ध जीत जाता तो कुछ उम्मीद जगती।
जैसे ही हम महल के पास पहुँचे, मैंने देखा कि जिस शॉल से मैंने रानी को ढका था, वह रास्ते में पड़ी हुई थी। मैं उसे मुश्किल से पहचान पाया। इतने सारे

कदमों से कुचले जाने के कारण वह और भी ज्यादा फटी-पुरानी हो गई थी, मानो कोई गंदा चिथड़ा हो। पहले तो मैंने उसे खुले नाले में फेंकने का सोचा, लेकिन फिर मैंने झुककर उसे उठा लिया। शायद इस साधारण चिथड़े ने रानियों और राजाओं के लिए अपना काम कर दिया हो, लेकिन मुझ जैसे गरीब के लिए यह अभी भी उपयोगी हो सकती है। शायद मैं इसे ठीक करके दोबारा इस्तेमाल कर सकूँ। मेरे पास कोई अतिरिक्त शॉल नहीं थी, इसलिए मुझे इसी से काम चलाना पड़ा। शायद, अगर मैं इसे ध्यान से धोऊँ, तो अंगदों और रावणों की गंध धुल जाए।

54 एक आदर्शवादी का अंत
रावण
सूर्यास्त के समय प्रहस्त का निर्जीव शरीर महल में लाया गया। जब मैं अपनी पत्नी के साथ अपने निजी नरक से बाहर आया, जहाँ मैं छिपा हुआ था, तो मैंने उसे दरबार हॉल के ठंडे फर्श पर पड़ा पाया। उसका शरीर नीला पड़ गया था और वह अपनी उम्र से कहीं अधिक बूढ़ा लग रहा था। वह साम्राज्य की चिंताओं, षड्यंत्रों और योजनाओं, अधूरी महत्वाकांक्षाओं, कठोर आत्म-धार्मिकता, धर्म का कड़ाई से पालन करने की असंभव इच्छा और एक नीरस जीवन से थका हुआ प्रतीत हो रहा था। मैंने अपने सबसे अच्छे दोस्त और सबसे बड़े दुश्मन के लिए एक आँसू रोक लिया। मैं उसके निर्जीव शरीर की ओर झुका। कुछ आँसू मेरे बड़े संघर्ष से किए गए आत्मसंयम को तोड़कर निकल गए और फर्श पर एक अजीब आकृति बना दी। 'यह आदमी कौन था?' एक समय, बहुत पहले, मैं उससे डरता था। मुझे यकीन था कि वह मेरे सिंहासन पर कब्जा करना चाहता है। वह वह सब कुछ था जो मैं हमेशा बनना चाहता था, लेकिन कभी नहीं बन सका। वह वह सब कुछ था जो मैं कभी नहीं बनना चाहता था, लेकिन बन सकता था। वह वह बंधन था जिसने मेरे भीतर के जंगली जानवर को काबू में रखा था। वह मेरा अंतरात्मा था। वही थे जिन्होंने मुझे राक्षस बनने से रोका था। मैं उनसे सबसे ज्यादा डरता था। और मेरे मन में यह दृढ़ विश्वास था कि वे मुझसे बेहतर असुर नेता साबित होते। वह आदर्श असुर नेता थे, महाबली के सच्चे उत्तराधिकारी। बहादुर, नैतिक, ईमानदार, नेक, बेदाग। मेरी तरह उन्होंने राम रूपी विपत्ति को हम पर नहीं बुलाया होता। वे सही रास्ते से नहीं भटके होते। उन्होंने शायद इतना विशाल साम्राज्य नहीं बनाया होता, लेकिन वे वेदवती के प्रेम में बुरी तरह नहीं पड़े होते। असुरों के लिए अपनी पुत्री का बलिदान देने में उन्होंने दो बार नहीं सोचा होता, और अगर उन्हें भविष्यवाणी बकवास लगती, तो भी उन्होंने

वह रहता था, वह न तो आलीशान था और न ही समृद्ध, बल्कि उसमें ग्रामीण आकर्षण था और लोग सीधे-सादे थे।
जुलूस एक किसान के घर जैसी दिखने वाली झोपड़ी के सामने रुक गया। यह प्रहस्त का घर था, एक साफ-सुथरी झोपड़ी, जिसकी छप्पर की छत उसे आरामदायक एहसास दे रही थी। आंगन साफ-सुथरा था। पास में एक गौशाला और एक कुआँ था, कुछ फलदार पेड़ और फूलों की लताएँ थीं, और एक बत्तखों का तालाब था। अब मैं समझ गई कि मेरे प्रधानमंत्री मेरे आलीशान महल से भागकर इस देहाती आश्रय में क्यों आना चाहते थे। उन्होंने गरीबी नहीं, बल्कि सादगी को चुना था। जिस व्यक्ति से मैं कभी नफरत और डरती थी, उसके इस पहलू को मैं नहीं जानती थी। वहाँ कई लोग थे, अमीर और सामाजिक वर्ग के लोग नहीं, बल्कि गरीब ग्रामीण और छोटे अधिकारी, जो समूहों में खड़े थे। जैसे ही मैं अंदर गई, अचानक सन्नाटा छा गया और मुझे लगा जैसे मैं उनके निजी दुख में दखल दे रही हूँ। प्रहस्त से मिलता-जुलता एक व्यक्ति बाहर आया और उसने सिर झुकाया। किसी ने फुसफुसाकर कहा कि वह प्रधानमंत्री का पुत्र है। मैंने उसके कंधे पर हाथ रखा और अंदर चली गई। झोपड़ी के अंधेरे में, मैं दुख से झुकी हुई महिलाओं के कोमल शरीर देख सकती थी। एक महिला धीरे से उठी और मेरी ओर चलने लगी। जैसे ही प्रकाश उनके चेहरे पर पड़ा, मैंने अपने दिवंगत प्रधानमंत्री की पत्नी को पहचान लिया।
“मुझे बहुत खेद है,” मैंने कहा, लेकिन मेरे शब्द मुझे भी खोखले लगे। वह हिली नहीं, बस वहीं खड़ी रही। मैं बेचैन हो गया। मुझे मृत्यु की रस्मों से कभी सहजता नहीं मिली थी। वे मुझे अपनी नश्वरता की याद दिलाती थीं। मैं परिवार के पुरुषों को चिता तैयार करने के लिए एक विशाल आम का पेड़ काटते हुए सुन सकता था। हमारे असुर समुदाय में बच्चे के जन्म पर आम का पेड़ लगाना एक रिवाज था। पेड़ बच्चे के साथ बढ़ता था और अपने फल सभी जीवों को देता था, जिससे दुनिया बेहतर बनती थी। बच्चे से भी यही अपेक्षा की जाती थी कि वह बड़ा होकर ऐसा ही करे। और जब अंतिम यात्रा का समय आता था, तो पेड़ अपने नाम के अनुरूप अंतिम बलिदान देता था, और अपने साथी के साथ चिता के धुएं में विलीन हो जाता था।
अंततः सब समाप्त हो गया। प्रहस्त और उनके आदर्श, सब निराकार धुएँ में परिवर्तित होकर धीरे-धीरे हवा में विलीन हो गए। लोगों के भीतर उमड़ता शोक मुझे ईर्ष्या से भर रहा था। लेकिन वे धीरे-धीरे अपने-अपने जीवन, अपने-अपने

सबसे परे किसी चीज़ के लिए जीना और मरना चुना था। सबसे बढ़कर, इस देश ने मुझे उसके ऊपर चुना था, यही कड़वा सच था, और वह इसे जानता था। मैं शासक बन गया था। यह देश और इसकी मूर्ख जनता प्रहस्त के योग्य नहीं थे। वे मेरे या उससे भी बदतर, मेरे भाई विभीषण जैसे स्वार्थी और दुष्टों के योग्य थे, जो मुट्ठी भर सोने के लिए देश और अपने परिवार को समुद्र पार से आए गोरे आक्रमणकारियों को बेच देते।
मैं प्रहस्त की साधारण सी कुटिया से निकल पड़ा। मुझे उनकी बहसें, उनका हठ, उनकी सलाह सब याद आ रही थी। मुझे अपनी जवानी और हमारे बीच के तनावपूर्ण रिश्ते की याद सताने लगी। अगर मैं इस युद्ध से ज़िंदा बच निकला, तो मैं अपना साम्राज्य फिर से खड़ा करूँगा, लेकिन ज़्यादा करुणा के साथ, सरकारी कर्मचारियों के प्रति ज़्यादा ईमानदारी के साथ, शासन में ज़्यादा पारदर्शिता के साथ, और इसे कम नौकरशाही और ज़्यादा जनहितैषी बनाकर। शायद जीवित रहने की तुलना में मृत होने पर प्रहस्त का मुझ पर ज़्यादा प्रभाव होता। मुझे उम्मीद थी कि उनका बलिदान व्यर्थ नहीं जाएगा, लेकिन भला कौन सा बलिदान व्यर्थ नहीं गया?
लंकिनी। उसने हमें धोखा दिया। लेकिन मुझे इसका कुछ-कुछ अंदाजा तो था ही। असुर धोखे के बिना असुर नहीं होते। इसीलिए तो मैंने प्रहस्त से कन्याकुमारी के धूर्त राज्यपाल की मदद से हनुमान को रोकने के लिए कहा था। ‘यह सब एक दिन में कैसे हो गया? कल हम एक शानदार जीत के कगार पर थे। अब पासा पलट गया।’
मुझे जो रिपोर्टें मिलीं, वे अधूरी थीं, लेकिन जो तस्वीर सामने आई, वह आम थी। प्रहस्त खराब मौसम के कारण देर से पहुंचे और जब तक वे मुख्य भूमि पर पहुंचे, लंकिनी ने हनुमान के साथ सौदा कर लिया था। राम का पक्ष लेने में लंकिनी को बहुत लाभ था, इसलिए उसने प्रहस्त को यह विश्वास दिलाया कि हनुमान अभी तक मुख्य भूमि पर नहीं पहुंचे हैं और उन्हें आराम करने के लिए कहा। प्रहस्त के भोजन में औषधि मिला दी गई थी और फिर लंकिनी ने औषधि के प्रभाव में नींद में ही उनकी हत्या कर दी। तब तक हनुमान राजकुमारों के लिए आवश्यक औषधीय पौधे लेकर लौट चुके थे। मुझे नहीं पता था कि वे राम और लक्ष्मण को पुनर्जीवित करने में सफल हुए या नहीं, लेकिन लंकिनी ने मेरे प्रधानमंत्री के मृत शरीर को मेरे पास भेजने की पुरजोर कोशिश की थी। मैंने

फैसला किया कि राम का काम तमाम करने के बाद मैं लंकिनी से कुछ जरूरी सवाल पूछूंगा।
मैं युद्ध से बहुत थक चुका था। लेकिन इसे रोकने की शक्ति मुझमें नहीं थी। यह विनाशकारी चक्र चलता ही रहा। यह तभी रुकेगा जब सही समय आएगा, न कि तब जब इसमें शामिल लोग चाहेंगे। और यह अपने रास्ते में आने वाली हर चीज को नष्ट कर देगा - अभिमान, शक्ति, जीवन, सम्मान, सब कुछ।
जब मैं महल पहुँचा, तब तक अंधेरा हो चुका था। समुद्र से आने वाली ठंडी, नमकीन हवा में मशालें टिमटिमा रही थीं और दुनिया प्रकाश और छाया के निरंतर बदलते खेल में नाच रही थी। आकाश स्याही की चादर जैसा था, जिसमें छेद थे जहाँ तारे टिमटिमाते, फीके पड़ते और फिर से चमक उठते थे। मैं थका हुआ था, लेकिन अपने शयनकक्ष में जाकर अपनी पत्नी का सामना करने में हिचकिचा रहा था। इसके बजाय मैं अपनी बेटी को देखने चला गया। रात ठंडी थी और वह उस अशोक वृक्ष के नीचे बिल्कुल अकेली थी, जहाँ वह अब भी रहती थी। मैंने अपने बेटों, मेघनाद, अक्षय और यहाँ तक कि अथिकय के बारे में सोचा। मैंने आशा की कि राम मर चुके होंगे और वानर-मानव अपने वन राज्य में लौट गए होंगे। कुछ क्षणों के लिए एक ऐसा आनंद आया, जब सारे विचार थम गए।
दूर से, जहाँ समुद्र एक गतिशील धूसर सजीव वस्तु की तरह लग रहा था, अँधेरे में छिपे उस द्वीप से जयजयकार की हल्की-हल्की आवाज़ें उठ रही थीं। मुझे मेरा जवाब मिल गया था। राम जीवित थे और अगले दिन वे मुझसे बदला लेने के लिए हमला करेंगे। किसी तरह मुझे यह विचार सुकून देने वाला लगा। आख़िरकार, युद्ध मेरी सुन्न आत्मा के लिए एक तरह का शुद्धिकरण था। किसी न किसी तरह इसका फैसला जल्द ही हो जाएगा।
एक सिपाही मेरे सामने खड़ा हुआ और झुककर बोला, “महाराज, राजकुमार कुंभकर्ण जाग गए हैं और आपसे मिलना चाहते हैं।” मैंने सिर हिलाकर अनुमति दे दी और कुंभ अंदर आ गए। उनका चेहरा देखते ही मैं समझ गया कि कुछ गड़बड़ होने वाली है।

55 कुंभकर्ण का आक्रमण
भद्र
राम और लक्ष्मण किसी चमत्कारिक वानर औषधि से बच गए। हमारे दिलों में आशा की जो क्षणिक किरण जगी थी, वह भी बुझ गई। मैं चुपचाप देखता रहा, इतना थका हुआ था कि खड़ा भी नहीं हो पा रहा था, जब किले के द्वार खुले और असुरों की सेना राम और उनके वानर-पुरुषों से फिर से मिलने के लिए आगे बढ़ी। सेना के सबसे आगे, एक ऊंचे हाथी पर सवार, राजकुमार कुंभकर्ण थे। यह मार्च अलग था। अधिकांश सैनिकों के पास धनुष-बाण या तलवारें नहीं थीं। आगे की टुकड़ियों में नुकीले किनारों वाले लंबे बांस के डंडे थे। उनके पीछे कुंभकर्ण थे, जो युद्ध हाथियों की एक टुकड़ी का नेतृत्व कर रहे थे। इस बार रथ नहीं थे। लंका के नरम, सफेद, रेतीले समुद्र तटों पर रथ एक बाधा थे। कुंभकर्ण ने एक ही दिन में असुर रक्षा की कमजोरी खोज ली थी। असुर इस युद्ध को उसी तरह लड़ रहे थे जैसे वे मुख्य भूमि के मैदानों में लड़ते। यह एक अच्छी रक्षात्मक रणनीति थी और अचानक मुझमें जोश भर गया और मैं खतरे की परवाह किए बिना मार्च करते सैनिकों के साथ-साथ चलने लगा। कुंभकर्ण शत्रु शिविर पर आक्रमण कर रहे थे। मैंने देखा कि कई आम लोग भी सेना में शामिल हो गए थे। उनमें से कुछ मेरे परिचित थे और उन्होंने मुझे भी शामिल होने का न्योता दिया। यह पागलपन था, लेकिन फिर भी मैं उनके साथ शामिल हो गया। सेना का काफिला हमारे पीछे मीलों तक फैला हुआ था। तभी मैंने घोड़े पर सवार दो चमकते हुए लोगों को देखा। सूरज उनके पीछे था इसलिए मैं उनके चेहरे नहीं देख सका।
"वहाँ राजकुमार मेघनाद और उनका सेवक हैं," मेरे घर के पास स्थित गली के मंदिर के पुजारी के सहायक के रूप में भी काम करने वाले अंशकालिक नाई ने कहा।

उसके हाथ में एक पत्थर का गदा था जो उसके कद से कहीं बड़ा था। तभी मुझे यह देखकर बहुत भय हुआ कि राजकुमार मेघनाद सफेद घोड़े पर सवार थे और अथिकय काले घोड़े पर उनके पीछे-पीछे चल रहे थे। गदा लहराते और काले, चमकते असुरों के विशाल समूह में वे दोनों अलग ही दिख रहे थे और उनके आभूषण सूर्य की रोशनी में जगमगा रहे थे। ‘वानरों के निशानेबाजों के लिए वे आसान लक्ष्य थे। युवा कितने मूर्ख हो सकते हैं!’ मैंने अपने बेटे और राजकुमार की ओर बढ़ने की कोशिश की, लेकिन योद्धाओं की भीड़ में बह गया।
मुझे वानरों का लंबा स्तंभ समुद्र तक फैला हुआ दिखाई दे रहा था। पुनर्निर्मित पुल पर भी कई और वानर थे। वरुण के जहाज क्षितिज तक फैले हुए थे। समुद्र तट पर हर जगह वानर थे, चीखते-चिल्लाते शोर मचा रहे थे, साथ ही जहाजों से रवाना की जा रही नावों पर भी वानर मौजूद थे। वरुण के जहाज पर लगे अग्नि-प्रवेश यंत्रों में से एक से निकला पहला तीर सिर के ऊपर से सरसराता हुआ गुजरा। लोग चीखने लगे। चट्टान पर पेड़ों पर बैठे असुर धनुर्धारियों ने समुद्र तट पर उतर रहे वानरों पर तीरों की बौछार कर दी। कई वानर गिर पड़े, लेकिन टिड्डियों की तरह वे आते ही रहे।
कुंभकर्ण ने हमारी सेना के समुद्र तट पर खुले मैदान तक पहुँचने से पहले ही रुकने का आदेश दे दिया। तुरंत आदेश दिए गए और चारों ओर अफरा-तफरी मच गई। सेनापति चिल्ला-चिल्लाकर आदेश दे रहे थे और धक्का-मुक्की भी खूब हो रही थी, लेकिन अंत में सेना खुले मैदान में कदम रखने के बजाय पेड़ों की आड़ में एक चाप बनाकर फैल गई। असुर प्रतीक्षा कर रहे थे। हाथियों की सूंडों में बड़े-बड़े लट्ठे और पेड़ थे और वे खुले मैदान के किनारे पर प्रतीक्षा कर रहे थे। मैंने देखा कि राजकुमार मेघनाद अपने घोड़े पर बेचैन हो रहे थे और सेनापति की ओर बढ़ने की कोशिश कर रहे थे। अंततः वे सफल हो गए।
अचानक असुरों की सेना में चल रही हलचल शांत हो गई। दोनों राजकुमार आपस में बहस कर रहे थे। कुंभकर्ण और भी ज़्यादा उत्तेजित हो गया, लेकिन मेघनाद अपने मामा पर चिल्लाता रहा। अथिकय भी कुंभकर्ण को अपशब्द कहने में उसका साथ देने लगा। मेघनाद तुरंत हमला करना चाहता था, लेकिन कुंभकर्ण के पास एक योजना थी जो मेघनाद को अच्छी नहीं लगी। उसने कुंभकर्ण को कायर और बुढ़िया कहा और सेनापति ने अपने सैनिकों को मेघनाद और अथिकय को गिरफ्तार करने का आदेश दिया। स्थिति बिगड़ गई। कुंभकर्ण के सैनिकों ने तलवारें खींचकर मेघनाद और अथिकय को घेर लिया। मेघनाद के सैनिक अपने नेता की ओर बढ़ते हुए

ढोल बजाकर इतना शोर मचाया कि हाथी भ्रमित हो गए, और साथ ही जानवरों पर सवार लोगों पर सटीक निशाने से तीर चलाते रहे।
मैं सोच रहा था कि मेघनाद कहाँ चला गया, तभी अचानक एक अजीब सी भनभनाहट की आवाज़ हवा में गूंज उठी। शोर बढ़ता गया और कई लोग एक-दूसरे को मारना बंद करके ऊपर देखने लगे। भीड़ के ऊपर से नीची उड़ान भरता हुआ मेघनाद माया के उड़ने वाले यंत्र में था। यंत्र के विशाल पंखे तेज़ी से घूम रहे थे, जिससे रेत और पानी उड़ रहा था। मैंने यंत्र में अथिकय को भी देखा और वे वानरों पर ज्वाला-युक्त बाण चला रहे थे। कुछ असुर अपने नायक का उत्साह बढ़ा रहे थे, लेकिन मैंने कुंभकर्ण का चेहरा गुस्से से बिगड़ा हुआ देखा। उसने कुछ ऐसा चिल्लाया जो किसी को सुनाई नहीं दिया और पुष्पक की ओर बेतहाशा इशारा किया, लेकिन जवाब में उड़ने वाले यंत्र ने एक ऐसा साहसी करतब दिखाया जो लगभग सेनापति के मुकुट को छू गया। कुंभकर्ण ने अपने आप को काबू में रखने की बहुत कोशिश की।
हाथी बेचैन थे और अपने महावतों के आदेशों का पालन नहीं कर रहे थे।
कई ज्वाला-युक्त तीर निशाने पर लगे और कई वानर मारे गए। लेकिन असुर आकाश में हो रहे इस तमाशे को देखने में व्यस्त थे, इसलिए हमले की गति काफी धीमी हो गई। तभी विपत्ति आ पड़ी। एक अजीब सी आवाज के साथ, उड़ने वाला यंत्र लड़खड़ाया, उसके पंखे धीमे हो गए और फिर वह पुल के पास पानी में पत्थर की तरह गिर पड़ा। वह डूबा और फिर सतह पर तैरने लगा। मेरा दिल बैठ गया। 'मेरे पुत्र, अथिकाय!' मैं आगे बढ़ा लेकिन तमाशा देखने के लिए जल्दी में आए कुछ बलवान पुरुषों ने मुझे रोक दिया।
जब तक मुझे साफ दिखाई दिया, मैंने देखा कि मेघनाद पुल पर चढ़ने में कामयाब हो गया था और उस यंत्र को ऊपर खींचने की कोशिश कर रहा था। हनुमान ने मौका देखकर अपने सैनिकों को आगे बढ़कर राजकुमार को पकड़ने का आदेश दिया। अथिकया पुल पर चढ़ गया और राजकुमार की यंत्र को ऊपर खींचने में मदद करने लगा। कुंभकर्ण राजकुमार को बचाने के लिए तेजी से आगे बढ़ा। उत्साह में कुंभकर्ण अपनी सेना से कुछ दूरी पर था, वह हनुमान के पहुँचने से पहले अपने भतीजे तक पहुँचने की कोशिश कर रहा था। कुंभकर्ण का विशाल हाथी मेघनाद से मुश्किल से दस फीट ही दूर था कि लोहे की नोक वाला एक तीर हाथी के सिर को भेदकर लगभग दो फीट अंदर मस्तिष्क में जा लगा। विशाल शरीर जोर से काँपा और जोर से चिंघाड़ते हुए नीचे गिर पड़ा। कुंभकर्ण अपने हाथी से गिर पड़ा।

हुए कुछ तीरों को रोकते हुए आगे बढ़ता रहा और हनुमान के सैनिकों के सिर कुचलने के लिए तेज़ी से बढ़ा।
कुम्भकर्ण वु अम्बकास बहुत करीब। राम और लक्ष्मण, और अन्य धनुर्धर कुंभकर्ण लगभग उनमें विलीन हो गया था, इसलिए उस पर प्रहार करने का उचित निशाना नहीं मिल पा रहा था। उसने अपने विशाल गदा से वानरों पर प्रहार किया, तलवारें चलाने या बाण चलाने से पहले ही उनके सिर और हाथ-पैर चकनाचूर कर दिए। इस प्रकार एक अकेले व्यक्ति ने उस संकरे पुल पर शक्तिशाली वानर सेना को रोके रखा। जाम्बवान ने नावों पर सवार अपने सैनिकों को कुंभकर्ण को घेरकर उसके पीछे से हमला करने का आदेश दिया। लेकिन कुछ असुरों ने होश में आकर जाम्बवान की नावों को कुंभकर्ण के पास तक पहुँचने से रोक दिया। युद्ध फिर से समुद्र में शुरू हो गया। मैंने वरुण के जहाजों को वापस मुड़ते देखा। दूर से डोंगियाँ पानी में उतारी गईं और तेज़ी से किनारे की ओर बढ़ने लगीं। 'हम कब तक टिके रह सकते थे? भाग्य कितनी तेज़ी से बदल गया और यह सब उस मूर्ख मेघनाद के दिखावे की वजह से हुआ।'
इस समय तक वानर राजा सुग्रीव और हनुमान, अपने विशाल लोहे के गदाओं को लहराते हुए, शत्रु सेना को चीरते हुए आगे बढ़ चुके थे। मैंने शत्रु सेना के सरदार पर अपनी नज़रें टिकाने की कोशिश की। ‘राम और लक्ष्मण कहाँ चले गए?’ वे मानो गायब हो गए थे। उड़ने वाली मशीन के पंखे धीरे-धीरे घूमने लगे, लड़खड़ाए और रुक गए, फिर कुछ क्षणों बाद फिर से घूमने लगे और रुक गए। इस पूरे समय कुंभकर्ण हनुमान और सुग्रीव से द्वंद्वयुद्ध कर रहा था। वह अकेला ही दोनों महान योद्धाओं को रोके हुए था, जबकि उसका भतीजा उड़ने वाली मशीन को ठीक करने में लगा हुआ था। असुर सेना अब नेतृत्वहीन थी, और उन्होंने अपने दोनों राजकुमारों को शत्रु सेना के बीच फंसा हुआ, अपनी जान बचाने के लिए संघर्ष करते देखा।
कुंभकर्ण ने एक जोरदार प्रहार से सुग्रीव को पानी में गिरा दिया, लेकिन हनुमान ने उसकी रक्षा पंक्ति को भेदते हुए मेघनाद की ओर कूच किया। कुंभकर्ण मुड़ा और लगभग उड़ते हुए हनुमान को पैरों से पकड़ लिया। दोनों योद्धा लड़ते-लड़ते गिर पड़े। कुछ बाण कुंभकर्ण को लगे और हनुमान भी घायल हो गए। जब मैंने कुंभकर्ण को हनुमान को उठाकर ज़मीन पर ज़ोर से पटकते देखा, तब तक पश्चिमी आकाश लाल हो चुका था। हनुमान वहाँ बिना हिले-डुले पड़े रहे और मैंने खुशी से जयकार की। उसी क्षण, एक बाण कुंभकर्ण की गर्दन पर पीछे से

लगा और उसकी नोक, जो उसके गले को भेदती हुई गई, डूबते सूरज की लाल किरणों में चमक उठी। धीरे-धीरे, वीर असुर राजकुमार का विशाल शरीर पुल पर बेजान होकर गिर पड़ा और फिर समुद्र में जा गिरा, साथ ही पुल का एक बड़ा टुकड़ा भी अपने साथ ले गया। अंततः, जाम्भवान एक रणनीतिक स्थिति प्राप्त करने में सफल हो गया था और राम, जो पीछे से बाण चलाने में माहिर थे, इस बार भी चूक नहींे। असुरों ने अपने सेनापति को मरते हुए भय से देखा और वानर सेना फंसे हुए राजकुमार और उसके सेवक को उनके यंत्र में समाप्त करने के लिए दौड़ पड़ी। मुझे चक्कर आने लगा। क्या मैं अपने पुत्र को टुकड़े-टुकड़े होते हुए देखने वाली थी? तभी हनुमान ने हरकत की और वानर सेना, जो अपने सेनापति को मरा हुआ समझ रही थी, चौंक गई। हनुमान के धीरे-धीरे जीवित होते ही वे रुक गए। वह लड़खड़ाए, डगमगाए और उड़ने वाले यंत्र पर खुद को संभाला, तभी अचानक उसके पंखे चलने लगे। वह घबराकर पीछे कूद गए, और इससे पहले कि वानर समझ पाते कि क्या हुआ है, पंखा तेज़ी से घूमने लगा। जाम्बवान ने यंत्र को ऊपर उठते हुए रोकने का आदेश दिया। बंदर बाण चलाते हुए, गदा फेंकते हुए और तेज़ी से ऊपर उठ रही यंत्र पर कूदते हुए आगे बढ़े। कुछ बहादुरों ने पकड़ने की कोशिश की और घूमते हुए ब्लेडों से टुकड़े-टुकड़े हो गए।
जैसे ही सूरज डूबा, राजकुमार और मेरा बेटा अपनी मशीन में बैठकर रावण के महल की सुरक्षा में भाग गए, और गरीब लोगों को वानरों के भरोसे छोड़ दिया। और वे लोग जिन्होंने अपने वंश की महान महिमा के लिए अपने परिवारों को छोड़ा था, लड़े, मारे और मारे गए। ऐसा ही उन बेचारे वानरों के साथ भी हुआ जो उस व्यक्ति की महिमा के लिए लड़े जिसका नाम उन्होंने कुछ महीने पहले तक सुना भी नहीं था। बाद में, जब जाम्बवान ने अपने आदमियों को वापस बुला लिया और वानर अपने द्वीप पर लौट गए, तो मैं अपनी जगह से नीचे उतर गया। वापस आते समय, मैंने दावत कर रहे कुछ सियार और बकरियां डरा दीं, और बिना सोचे समझे, आगे बढ़ गया।
उस अंशकालिक रसोइए और पुजारी के शव के ऊपर से, जिसने मुझे उस सुबह राजकुमार मेघनाद का भव्य दृश्य दिखाया था। एक और राजकुमार, कुंभकर्ण, अब उन धूर्तों का भोजन बन चुका था, जो सौभाग्य से वीरता को महत्व नहीं देते थे और नायकों और खलनायकों दोनों का समान आनंद लेते थे। मैं एक घूंट के लिए कुछ भी दे सकता था। वह एक खूबसूरत रात थी, अंधेरी और रहस्यमयी, ऐसी रात जिसमें खूब शराब पीकर गहरी नींद सोई जा सकती थी।

56 जब वे प्रार्थना करते हैं
रावण
मैं मंदोदरी पर बहुत क्रोधित था। मैं अपने बेटे को जान से मार देना चाहता था। मूर्ख! मुझे समझ नहीं आ रहा था कि उसके बारे में क्या सोचूँ। कभी-कभी वह महान वीरता दिखाता था; वह समझदारी से सोचता और व्यवहार करता था और सच्चा नेतृत्व दिखाता था; तो कभी-कभी वह मूर्खता कर बैठता था। मुझे जो रिपोर्टें मिलीं, वे स्पष्ट थीं। इसी मूर्ख के दिखावे के कारण हमने युद्ध में सर्वश्रेष्ठ सेनापति को खो दिया था। कुम्भा की मृत्यु ने मुझे प्रहस्त और मरीच की मृत्यु से कहीं अधिक पीड़ा दी।
पिछले दो दिनों में दो बार मेरे बेटे ने जीतने का मौका गँवा दिया। और वह मूर्ख हमेशा अपनी माँ की शरण में भाग जाता था। और वह काला बदमाश राजा के कक्ष में क्या कर रहा था? वह चुपचाप खड़ा था, अपने विशाल शरीर को छुपाने की कोशिश कर रहा था। मैं मेघनादा की ओर दौड़ी, लेकिन एक बार फिर मंदोदरी ने हस्तक्षेप करते हुए कहा, "लड़कों को अकेला छोड़ दो, रावण।"
“लड़कों को छोड़ दो, लड़कों को छोड़ दो, सच में! यह बेवकूफ कब समझदार होगा? इसकी संगत ने ही इसे इतना मूर्ख बना दिया है।” मैंने अथिकाया को घूरकर देखा, जो अजीब तरह से दुखी लग रही थी।
“रावण, मुझसे ऐसी बातें मत कहलवाओ जिनका मुझे बाद में पछतावा हो। क्या तुम सचमुच चाहते हो कि मैं तुम्हें याद दिलाऊं कि यह युद्ध क्यों शुरू हुआ? क्या तुम चाहते हो कि मैं कहूँ कि तुम्हारी हठधर्मिता और अहंकार के कारण संपूर्ण असुर जाति का विनाश हो रहा है? कृपया मेरी ज़बान को बोलने मत दो।” मैं अपने गुस्से में बेबस महसूस कर रहा था। मुझे बहुत दुख हो रहा था क्योंकि यह सच था। "मन्दोदरी, अपने शब्दों पर ध्यान दो। तुम असुरों के सम्राट से बात कर रहे हो।" ये शब्द मुझे भी हास्यास्पद लग रहे थे।

उसने मुझे घूरते हुए कहा, "रावण, बेहतर होगा कि तुम जाकर आराम करो।"
मैं कुछ देर तक वहीं खड़ी रही, समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूँ। फिर मैं वहाँ से चली गई। मुझे अकेलापन और निराशा महसूस हो रही थी, मन में कड़वाहट और गुस्सा भरा हुआ था। मेरे साथ ही इतनी बुरी बातें क्यों हुईं? मैं जीवन में इतनी दुखी और बदकिस्मत क्यों थी? मुझे हर चीज़ के लिए इतना संघर्ष क्यों करना पड़ा? मैं कभी वो मूर्खतापूर्ण गलतियाँ नहीं करती जो मेरे लाड़ले बेटे ने की थीं। एक दिन वो दुनिया के सबसे बड़े साम्राज्य का वारिस बनेगा।
कुम्भा, मेरे भाई, मैंने तुम्हें बहुत पहले ही त्याग दिया था। मैंने कभी तुम्हारी गिरावट को रोकने की कोशिश नहीं की। शायद मैंने तो उसे बढ़ावा ही दिया, क्योंकि यही मेरे लिए फ़ायदेमंद था। मैं तुमसे डरता था। मैं तुम्हारे मन में महत्वाकांक्षा की लहरें देख सकता था और तुम्हारी ईर्ष्या को महसूस कर सकता था। तुम राजा बनना चाहते थे। तुम्हें राजत्व के खतरों का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था, न ही इस बात का कि सत्ता आत्मा को कैसे भ्रष्ट और नष्ट कर देती है। तुमने अपनी महत्वाकांक्षाओं को अफ़ीम और शराब में डुबो दिया, लेकिन सत्ता की जो अफ़ीम मैंने ली, वह तुम्हारी किसी भी चीज़ से कहीं ज़्यादा शक्तिशाली थी। तुम्हारा नशा ज़हर के निरंतर सेवन से पनपता था, मेरा नशा अत्याचार के अनेक कृत्यों से। तुम अपनी अज्ञानता में सोए हुए एक विशालकाय थे, मैं अपनी शक्ति में पूरी तरह जागा हुआ एक छोटा सा आदमी था। तुम्हारी महत्वाकांक्षा कच्ची थी और तुम्हारी भावनाएँ हमेशा पारदर्शी थीं। तुमने मुझे डरा दिया क्योंकि मैं अपने सिंहासन से तुम्हें ज़्यादा प्यार करता था। मैं सत्ता से खुद से भी ज़्यादा प्यार करता था। मुझे डर था कि एक दिन तुम जाग जाओगे और मेरी पीठ पीछे मेरे सिंहासन के लिए साज़िश रचोगे। जब शराब ने तुम्हें अपने वश में कर लिया, तो मुझे राहत मिली। फिर भी मैं नज़र रखता रहा, मैंने यह सुनिश्चित किया कि तुम नशे में चूर और सोए रहो।
कुम्भा, तुमने ही मेरी नींद खराब की थी। लेकिन जब छल आया, तो वह तुम्हारी तरफ से नहीं आया। वह हमारे प्यारे छोटे भाई की तरफ से आया। हम कैसे उसकी टांग खींचते थे, उसकी पीठ पीछे हंसते थे और उस असुर बालक के बारे में मज़ेदार कहानियां बनाते थे जो ब्राह्मण बनने की हर संभव कोशिश करता था। अब मज़ाक हम पर ही भारी पड़ गया है। दुश्मन हमारे दरवाज़े पर है और हमारा छोटा

भाई मशाल लेकर उन्हें अंदर ले जा रहा है। वह हमारे सपनों को चुराकर उन्हें भयानक सपनों में बदलने वाला है। मेरी गलती भाई, मेरी गलती। मुझे माफ़ कर दो, क्योंकि मैंने तुम्हें ही खतरनाक समझा और सांप पर नज़र रखना भूल गया। कुंभ, तुम हमेशा सही थे। मुझे याद है कि तुमने बहुत पहले विभीषण की ईमानदारी पर संदेह व्यक्त किया था। लेकिन मैं भोला था और सोचता था कि तुम मेरी पीठ पीछे साजिश रच रहे हो, मुझे छोटे वाले से लड़वाकर सत्ता तक अपना रास्ता आसान बनाना चाहते हो। लेकिन जब मुझे तुम्हारी ज़रूरत थी, जब इस ईश्वरविहीन असुर जाति को दिशा की ज़रूरत थी, तब मैंने तुम्हारी मदद मांगी। तुमने मेरी मूर्खता को बताने का साहस दिखाया, लेकिन मुझे बहुत ज़्यादा सलाह देने से परहेज़ किया। अब मुझे समझ आ गया है कि तुम कौन थे, लेकिन बहुत देर हो चुकी है। युद्ध हमारे विरुद्ध हो रहा है। जल्द ही, जिस सभ्यता को हमने पुनः प्राप्त किया था, सभी मनुष्यों के लिए समानता के आदर्श, सुंदर शहर और महल, भव्य मंदिर और राजसी राजमार्ग, वे बंदरगाह जहाँ व्यापारी जहाज़ उत्तम मसालों और वस्त्रों की प्रतीक्षा करते थे, कला और रंगमंच, सब कुछ एक देव अत्याचारी के पैरों तले कुचल जाएगा। तुम भाग्यशाली हो। जब महान असुरों का सपना बिना किसी निशान के गायब हो जाएगा, तब तुम वहाँ नहीं रहोगे। जब ब्राह्मण बुद्धिजीवी होंगे, तब तुम वहाँ नहीं रहोगे; देव योद्धा हमारे महान समाज के अंग हैं; और कुबेर जैसे कुटिल पुरुष, हमारे समाज का धड़ हैं। एक ऐसा समाज जिसे हमारा छोटा भाई हमारे शवों पर खड़ा करना चाहता है। भाई, तुम साधारण मनुष्यों के दुर्भाग्य से परे चले गए हो। मैं भी जल्द ही तुम्हारा अनुसरण कर सकता हूँ। मेरा एकमात्र डर यह है कि जब मैं तुमसे दोबारा मिलूंगा, तो क्या मैं तुम्हारी आँखों में आँखें डालकर देख पाऊंगा? मंदोदरी आकर मेरे पास खड़ी हो गई। उसके स्पर्श से मेरे विचार टूट गए। “रावण, लड़का अपने मामा के साथ जो हुआ उससे बहुत दुखी है और सोचता है कि यह सब उसी की गलती है।”
“यह उसकी गलती है। युद्ध में अपनी बहादुरी दिखाकर लोगों को प्रभावित करने की कोई जगह नहीं है। कुंभा का खोना हमारे लिए सबसे बड़ा झटका है और मुझे शर्म आती है कि मेरे बेटे की वजह से ऐसा हुआ। मैं उसे अब युद्ध के मैदान में नहीं देखना चाहता। असुर ऐसी गलती बर्दाश्त नहीं कर सकते।”
“रावण, लड़का पहले से ही बहुत दुखी है… क्या तुम उसे माफ नहीं कर सकते?”

मेरा गुस्सा फिर भड़क उठा। “ये तो उसकी संगत है। उसे उस काले नौकर को अपने साथ क्यों ढोना चाहिए…” मंदोदरी की आँखों में दिख रहे भाव के सामने मैं कांप उठा।
“बस करो रावण, बस करो। इस युद्ध को क्यों जारी रखें? हम समझौता क्यों नहीं कर लेते? राम को उनकी पत्नी वापस क्यों नहीं दे देते?” वह लगभग रो रही थी। “क्या तुम्हें लगता है कि मुझमें कोई सम्मान या गौरव नहीं है? अपने सबसे अच्छे साथियों, अपने भाई, अपने दोस्तों को खोने के बाद, तुम चाहते हो कि मैं राम के चरणों में गिर जाऊं? क्या तुम चाहते हो कि असुरों का सम्राट एक छोटे से बर्बर राज्य के मामूली साहसी और राजकुमार से दया की भीख मांगे?” “एक छोटे से जागीरदार राज्य के बर्बर राजकुमार ने असुर साम्राज्य के आधे से अधिक हिस्से को हड़प लिया है। इस मूर्खतापूर्ण युद्ध को रोकने से पहले आप कितने सैनिकों को खोना चाहते हैं? आप किसके लिए यह युद्ध लड़ रहे हैं…” “यह युद्ध असुरों के सम्मान के लिए है। जातिवाद और ब्राह्मणवादी ऊँच-नीच को रोकने के लिए युद्ध…”
“जनता को मूर्ख बनाने के लिए अपने राजनीतिक भाषण बचाकर रखें। आप यह युद्ध अपने स्वार्थ के लिए लड़ रहे हैं।”
“मंडोदरी, तुम यह भूल रहे हो कि यह वही राजकुमार है जिसने मेरी बहन का अपमान किया और उसे कुरूप बना दिया। क्या तुम कह रहे हो कि मुझे यह सब चुपचाप सह लेना चाहिए?”
“वही बहन जिसे तुमने विधवा बना दिया…”
बस करो! औरतें क्या समझती हैं…
“मैं अच्छी तरह समझती हूँ, रावण। अपने मूर्ख प्रजाजनों के सामने वह महान चेहरा मत दिखाओ जो तुम प्रदर्शित करना चाहते हो। तुम वासना के प्राणी हो। अभद्र, अभिमानी और कामुक। तुम खुद को एक तर्कसंगत व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करना चाहते हो जो आम असुरों में व्याप्त अंधविश्वासों और अतार्किक मान्यताओं से प्रभावित नहीं होता। लेकिन अपने दिल में, तुम उतने ही अंधविश्वासी और भयभीत हो जितने कि गली का कोई भी व्यक्ति। जब तुमने अपनी शक्ति पुनः प्राप्त की, तो जनक से हमारी पुत्री को वापस लाने से तुम्हें किसने रोका? यदि तुमने आक्रमण किया होता, तो मिथिला कितने समय तक टिक पाती? लेकिन तुम डर गए थे। तुम डर गए थे कि यदि हमारी नन्ही पुत्री वापस आ गई, तो वह अपने साथ विनाश लाएगी, असुरों के सपने का अंत कर देगी।

इसलिए तुमने उसे माँ का प्यार नहीं दिया। तुमने उसे पिता का स्नेह नहीं दिया। तुम सत्ता के नशे में चूर थे और अपने परिवार से अधिक अपने मुकुट से प्रेम करते थे। तुम भविष्यवाणी से डर गए थे। लेकिन जब सूर्पनखा का चेहरा विकृत हो गया, तो यह तुम्हारे अभिमान पर एक बड़ा आघात था और तुमने अपनी पुत्री को उससे चुराने का विकल्प चुना। पति। कितनी शर्म की बात है! तुम्हें राम की पत्नी को चुराने की बजाय उनसे लड़ना चाहिए था, भले ही वह हमारी बेटी ही क्यों न हो। अब जब शत्रु हमारे द्वार पर खड़ा है और भविष्यवाणियां सच होने वाली हैं, तब तुम अपने मूर्खतापूर्ण घमंड और अहंकार को थामे बैठे हो और यह भूल गए हो कि तुम पहले एक राजा हो और बाद में एक पिता।
“मैं चुपचाप तुम्हारी अकड़ और अहंकार सहती रही। जब तुमने मेरी दासी का बलात्कार किया और उसे गर्भवती किया, तब भी मैं चुप रही। जब मैंने सुना कि तुम उस ब्राह्मण स्त्री के साथ व्यभिचार कर रहे थे, तब भी मैं चुप रही। जब तुमने उसकी मृत्यु पर शोक मनाया, तब भी मैं चुपचाप सहती रही। जब मैंने तुम्हें नींद में वेदवती का नाम बुदबुदाते सुना, तब भी मैं चुप रही। जब तुमने मुझे वर्षों तक अकेला छोड़ दिया, अपने साम्राज्य के निर्माण में व्यस्त रहे, हिंसक युद्ध लड़ते रहे, वही क्रूरतापूर्ण कार्य करते रहे जिनका आरोप तुम लोग देवताओं पर लगाते हो, दूर-दराज के देशों में लंबे अभियान चलाते रहे, तब भी मैं चुपचाप जीती रही। मैं, अन्य स्त्रियों की तरह, चुप रही जबकि तुम मूर्ख पुरुषों ने धरती को खून से लाल कर दिया। और देखो तुमने हमें किस हालत में ला दिया है। बस एक बार मेरी बात सुन लो मेरे प्रिय... सीता को उसके पति को लौटा दो।”
“चुप रहो, औरत!” मैं गुस्से से चिल्लाई, “तुम बहुत ज्यादा बोल रही हो।” मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ। ऐसा लग रहा था जैसे मैं सड़क पर नंगा खड़ा हूँ। मेरे अंतर्मन के सारे विचार सबके सामने आ गए थे और वे अच्छे नहीं थे।
“क्या तुम्हें लगता है कि सीता को राम के पास भेजने का ख्याल मुझे अच्छा लगता है? लेकिन रावण, मैं अपनी बेटी से भी ज़्यादा तुमसे प्यार करती हूँ। मैं तुम्हें खोना नहीं चाहती। रावण, हम यह युद्ध हार जाएँगे, हम हार जाएँगे। जिस पल तुम सीता को लंका लाए, मैं डर गई थी - सीता के लिए, अपने लिए और तुम्हारे लिए भी। मैं चाहती थी कि तुम सीता को उसके पति के पास वापस भेज

दो। लेकिन इससे पहले कि मैं कुछ कर पाती, तुमने युद्ध शुरू कर दिया। हज़ारों लोग मारे गए। क्या तुमने कभी सोचा है कि हम औरतें कितना दुख सहती हैं? मैंने अपना बेटा खो दिया है। लेकिन मैं उन अनगिनत औरतों में से एक हूँ जिन्होंने अपने बेटे, पति, पिता, भाई खो दिए हैं; अपने घर, अपनी इज़्ज़त और अपना स्वाभिमान। क्या सिर्फ़ तुममें ही स्वाभिमान है? तुम्हें पता है तुम्हारे दुश्मनों ने मेरे साथ क्या किया। और तुमने क्या किया? क्या तुम युद्ध के मैदान में गए भी? नहीं! तुमने अपने बेटे, अपने भाई, अपने दोस्तों, अपने मंत्रियों को भेजा। लेकिन तुम यहाँ कायरों की तरह छिपे रहे…”
“चुप रहो…” मैंने उसका गला पकड़ लिया।
“चलो, मुझे मार डालो!”
मैंने घृणा से उसे नीचे पटक दिया और कमरे से बाहर निकल गई। मैं बेबस गुस्से से आग बबूला थी। मैं खुद को बेकार और बीमार महसूस कर रही थी। अनायास ही मैं अशोक वृक्ष की ओर मुड़ी जहाँ सीता बैठी थीं। अँधेरे में मुझे उनकी झुकी हुई आकृति दिखाई दी। एक छोटे से दीपक से हल्की रोशनी आ रही थी। जैसे ही मैं पास गई, उन्होंने ऊपर देखा और मेरी ओर पीठ कर ली। मैं उन्हें छूना चाहती थी, गले लगाना चाहती थी और कहना चाहती थी, 'देखो, मैं तुम्हारे लिए कितना त्याग कर रही हूँ।' लेकिन किसी चीज़ ने मुझे रोक लिया। मैं वहाँ काफी देर तक खड़ी रही, अपनी बेटी से बात करने की हिम्मत जुटाने की कोशिश करती रही। फिर, बहुत धीमी आवाज़ में मैंने कहा, "बेटी..."
कुछ देर तक कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई और मुझे दोबारा उसे बुलाने की हिम्मत नहीं हुई। तभी मैंने देखा कि उसका छोटा सा शरीर कांप रहा था और मुझे उसकी सिसकियाँ सुनाई दे रही थीं।
“सीता, तुम मेरी बेटी हो… मैंने तुम्हारे माता को अपने जीवन में सबसे अधिक प्रेम किया। लेकिन अब मैं तुम्हें स्वयं से भी अधिक प्रेम करता हूँ।” उसके सिसकने के अलावा और कुछ सुनाई नहीं दिया। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि आगे क्या कहूँ, लेकिन मैंने कहा, “क्या तुम लंका की राजकुमारी बनकर अपने पिता के साथ यहीं रहोगी? यदि तुम ऐसा कहती हो… तो मैं संधि कर लूँगा… राम तुम्हारे पति बनने के योग्य नहीं हैं। हमेशा अपने पिता के साथ रहो।”
उसकी ओर से कोई जवाब नहीं आया। उसने मुड़कर भी नहीं देखा।
"कृपया...कृपया अपने पति के साथ मत जाइए... वह एक बर्बर व्यक्ति है।"

गुस्से से भरी एक लहर के साथ, वह मुड़ी और बोली, "मैं उससे प्यार करती हूँ... मैं उसकी विवाहित पत्नी हूँ।"
मैं क्रोध के इस अचानक प्रदर्शन से स्तब्ध रह गया। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ, लेकिन मैंने आखिरी कोशिश की। "सीता, मैं तुम्हारा पिता हूँ और-"
“मेरे पिता राजा जनक हैं और मेरे पति भगवान राम हैं।”
मैं वहां बिल्कुल असहाय खड़ा था। पीछे मुड़ते ही मेरी आत्मा में दर्द की लहर दौड़ गई।
“चाचा जी…” तभी मेरी नज़र त्रिजटा पर पड़ी। मैं अब उसका सामना नहीं करना चाहता था। उसे अपने पिता के बारे में पता चल जाता। “चाचा जी, क्या आज मेरे पिता ने एक वीर असुर योद्धा की तरह लड़ाई लड़ी?”
“मुझे माफ करना, त्रिजता…” मेरे पास उसके लिए कहने को कोई शब्द नहीं बचे थे।
“मैंने अपनी माँ से सुना है कि मेरे पिता हमेशा से एक महान योद्धा थे, यहाँ तक कि तुमसे भी बेहतर, शराब के चंगुल में आने से पहले। लेकिन, जब मैं बड़ी हो रही थी, तब तक वे काफी कमजोर हो चुके थे। एक शराबी की बेटी होने का ठप्पा मेरे लिए सहना आसान नहीं था। काश वे मेरे दोस्तों के पिताओं की तरह संयमी और सामान्य होते। मैं उनसे नफरत करती थी। लेकिन अब, जब…”
“त्रिजता, तुम्हारे पिता एक बहादुर इंसान थे, कई लोगों से कहीं बेहतर…” मेरी भतीजी मेरे कंधे पर सिर रखकर रो रही थी, मैंने उसे गले लगा लिया। अंधेरा था और देखने वाला कोई नहीं था, इसलिए मैं भी रोने लगी। मान-सम्मान और अहंकार कितना दुखदायी हो सकता है। यह भयानक युद्ध, यह दयनीय जीवन, और वीरता और हिंसा का गुणगान – मैं इन सबसे तंग आ चुकी थी।
एक दूत हांफते हुए मेरे पास आया और मेरी आत्म-दया की भावना को झकझोर कर रख दिया। उसके बाद जो कुछ भी हुआ, सब अर्थहीन हो गया। कुछ भी मायने नहीं रखता था। मैं समय के पहिये का एक छोटा सा हिस्सा बन गया था। मैं किसी के महानता और देवत्व की ओर बढ़ने का एक ज़रिया बन गया था। उसके बाद मैं राम की वीर गाथा में एक मामूली किरदार बनकर रह गया। उस पल सब कुछ बदल गया।
“महाराज!” बेचारा आदमी बुरी तरह पसीने से तरबतर था और उसका चेहरा देखते ही मैं स्तब्ध रह गया। मेरा खून सूख गया।

“महामहिम, राजकुमार मेघनाद को कुछ हो गया है…” वह ज़मीन की ओर देखते हुए खड़ा रहा। मैंने त्रिजटा को धक्का देकर दूर किया और दूत के पास से दौड़ कर निकल गई, जो मेरे पीछे-पीछे आया।
“वह कहाँ है? क्या हुआ?!” मैंने उसके जवाब का इंतज़ार नहीं किया। मुझे सबसे बुरे की आशंका थी, लेकिन मन ही मन मैं इसे नकारता रहा। मैं पहरेदार चौकी को पार करके एक घोड़ा लेकर भागा। किले के दरवाज़े खुले और मैं पागलों की तरह पहाड़ी किले की ओर दौड़ पड़ा। शहर की सीमा पार करते ही मुझे आग की गर्जना सुनाई दी। मैंने पीछे मुड़कर देखा तो मेरा शहर आग की लपटों में घिरा था, लेकिन मैं रुका नहीं। ‘शहर जल जाए, पूरी मानव जाति नष्ट हो जाए। मेरा बेटा कहाँ है? मेघनाद। हे शिव, बालक को कुछ न हो।’ मुझे घोड़े के पसीने की बदबू आ रही थी, फिर भी मैं बहुत धीरे-धीरे चल रहा था। किले के पास पहुँचते ही मैंने देखा कि उसके द्वार खुले हुए थे। मैं खून में लथपथ पड़े मृत सैनिकों के पास से गुजरा। किला सन्नाटे में डूबा हुआ था। मैं घोड़े से उतरा और घिसटते कदमों से महल की ओर चल पड़ा। मैं वहाँ नहीं जाना चाहता था। मुझे पता था कि मेरा क्या हाल होने वाला है। फिर भी मैं बिना सिर वाले शवों, बिना अंगों वाले धड़ों और खून से सनी दीवारों के पास से गुजरा। “महामहिम!” यह आवाज सुनकर मैं चौंक गया। मेरे वित्त मंत्री और किले के रक्षक, जंबुमाली, एक खंभे के सहारे जमीन पर बैठे थे। वे खून से लथपथ थे और बूढ़े व्यक्ति उठने की कोशिश कर रहे थे।
“मेघनादा कहाँ है?” मैंने पूछा, हालांकि मुझे पता था कि जवाब क्या होगा।
होगा। उन्होंने प्रार्थना कक्ष की ओर इशारा किया जहाँ मेरा बेटा नटराज शिव की नृत्य करती हुई विशाल मूर्ति के सामने प्रार्थना करता था।
मेरे मन में आशा की एक किरण जगी। “मेघंदा! मेघंदा!”
"बेटा!" मैंने पुकारा, मुझे आधी उम्मीद थी कि वह अपने साथ बाहर आएगा।
शर्मिंदगी भरी मुस्कान। कांपते हाथों से मैंने दरवाजा खोला।
वहाँ मेरा बेटा मृत पड़ा था। मैं ज़मीन पर गिर पड़ी, अपना चेहरा दूसरी तरफ़ कर लिया।
भयानक दृश्य से आंखें हटाते हुए भी, अजीब तरह से उसकी ओर आकर्षित होते हुए।
मेघंदा का सिर शिव के चरणों पर टिका हुआ था, जो उनके शरीर से अलग हो गया था।
उसका शव कुछ ही फीट दूर पड़ा था। चार तीरों ने उसे भेद दिया था।
वापस। यह स्पष्ट था कि मेरा बेटा कुछ जानने से पहले ही मर चुका था।

ऐसा हो रहा है। उसे पीछे से गोली मारी गई है। उसके बाद
वह गिर पड़ा, उन्होंने उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए थे।
“लक्ष्मण ही किले में घुसे थे। उनके साथ लगभग चालीस लोग थे। किसी को नहीं पता कि वे कैसे आए और किले में दाखिल हुए या उन्हें कैसे पता चला कि राजकुमार यहाँ प्रार्थना कर रहे हैं।” बूढ़ा आदमी फूट-फूटकर रोने लगा। “राजकुमार जब यहाँ आए तो बहुत उदास थे। उन्होंने मुझे बताया कि वे युद्ध हार गए हैं और अपने चाचा की मृत्यु के लिए ज़िम्मेदार हैं। वे प्रार्थना करना चाहते थे… लेकिन… देखिए… कैसे…”
“दूसरा लड़का कहाँ है?” मैं लगभग सुन्न हो गया था।
“मारे गए, शायद कहीं बाहर पड़े होंगे। सबको मार डाला गया। मुझे छोड़ दिया, शायद इसलिए कि मैं बूढ़ा हूँ।”
विशाल नटराज प्रतिमा के पीछे एक हल्की सी हलचल ने मेरा ध्यान खींचा। लेकिन वहाँ जाने की हिम्मत मुझमें नहीं हुई क्योंकि मुझे मेघनाद के क्षत-विक्षत शरीर के चारों ओर से होकर जाना पड़ता। एक विशाल काले हाथ ने प्रतिमा को जकड़ लिया और धीरे-धीरे अथिकाया का काला शरीर खड़ा हो गया। वह खून से लथपथ था, लेकिन उसने हमारी ओर चलने की कोशिश की। उसने मेघनाद को देखा और उसके होठों से एक दयनीय पशुवत चीख निकली। उसने मुझे खाली निगाहों से देखा और फिर जंबुमाली को। अथिकाया का चेहरा भयंकर क्रोध से भर गया। मैंने अपने बूढ़े मंत्री की ओर देखा। वह पीला पड़ गया था। जंबुमाली के भागते ही अथिकाया पूरी ताकत से उसकी ओर दौड़ा। इससे पहले कि वह आगे बढ़ पाता, मैंने उसे बांहों से पकड़ लिया और रोक दिया। लेकिन इससे पहले कि अथिकाया हम तक पहुँच पाता, वह ज़मीन पर गिर पड़ा, उसका चेहरा गीली सतह से टकराया। उसने एक बार फिर उठने की कोशिश की लेकिन वापस गिर गया। मैंने जंबुमाली को दूसरे कोने की ओर धकेल दिया, जहाँ से वह मेरे पास से गुजरे बिना भाग नहीं सकता था। वह डर से कांपते शरीर के साथ कोने में बैठा था। मैं अथिकाया की ओर बढ़ा और उसका चेहरा अपनी ओर घुमाया।
“वही था…उसने दरवाज़े खोले…मैंने राजकुमार को बचाने की कोशिश की…मुझे माफ़ कर दीजिए…मैं नहीं बचा सका…मैंने कोशिश की…मैंने सचमुच कोशिश की… लक्ष्मण आए थे और…जम्बुमाली उन्हें यहाँ ले आया…मैं बाहर था और मैंने यह सब देखा…राजकुमार…अकेले रहना चाहता था…इसलिए मैंने उसे वहीं छोड़ दिया और…बाहर…द्वार के पास था…जब मैं वापस आया…मैंने उसे…शरीर के ऊपर खड़ा

[illegible]

57 शहीदों का अंतिम संस्कार
भद्र
जिस खबर से मुझे सबसे ज्यादा डर था, उसे सुनकर मैं महल की ओर दौड़ा। सुबह के बहुत ही सवेरे थे। आखिरकार सब खत्म हो गया। मेरा बेटा, वह मूर्ख, राजकुमार के साथ मारा गया। मुझे पता था कि एक दिन ऐसा होना ही था। और मैं कुछ नहीं कर सकता था। पिता का अपने बेटे के लिए प्यार हमेशा एकतरफा होता है। वहाँ पहुँचकर मैं जोर-जोर से रोया, अपनी छाती पीटी और सड़क पर लोटने लगा। मैं खुद को रोक नहीं पाया। मैंने हर किसी को बताया कि मेरे बेटे की जान राजकुमार के लिए चली गई। लेकिन किसी ने परवाह नहीं की। सब राजकुमार की मौत का शोक मनाने और भव्य अंतिम संस्कार में शामिल होने के लिए दौड़ रहे थे। सड़क के दोनों ओर भारी भीड़ थी। मुझे आश्चर्य हुआ कि आज कोई युद्ध क्यों नहीं हुआ। यह अब एक आम बात हो गई थी, इसलिए यह अजीब लग रहा था कि एक दिन बिना लड़ाई के शुरू हो सकता है। उन्होंने महल में जाने का मेरा रास्ता रोक दिया। मैंने उनसे विनती की और रिश्वत देकर अंदर जाने की कोशिश की, लेकिन पहरेदार हमेशा से ज्यादा सख्त थे और उन्होंने मुझे धक्का देकर दूर कर दिया।
“मेरे बेटे की हत्या कर दी गई है। मेरे बेटे को राजकुमार के लिए मार डाला गया है। मेरा बेटा…”
“अरे भिखारी, हट जा।” एक गार्ड ने मुझे इतनी ज़ोर से धक्का दिया कि मेरा संतुलन बिगड़ गया और मैं मुँह के बल गिर पड़ा। लेकिन मैं गुस्से से उठ खड़ा हुआ। मेरा बेटा देश के लिए शहीद हो गया था, और एक शहीद के पिता के सम्मान के बजाय, वे मेरे साथ एक भिखारी जैसा बर्ताव कर रहे थे।
कृपया मुझे अंदर आने दीजिए…

“अरे मूर्ख, राजकुमार का शव ले जाने वाली अर्थी सुबेला से आ रही है।” एक बदमाश पहरेदार ने मुझे धक्का देकर एक तरफ कर दिया। मैं बेबस होकर हांफता रहा। किसी ने मेरी बात नहीं सुनी। मेरा बेटा मर गया था और किसी ने भी मुझ पर ज़रा भी दया या सहानुभूति नहीं दिखाई। मेरा गुस्सा बढ़ता जा रहा था और मैंने रावण और जिसे भी याद आया, सबको गालियां दीं। कुछ मिनटों तक लोगों ने मेरी बात अनसुनी की, लेकिन थोड़ी देर बाद एक पहरेदार मेरी तरफ आया और मेरे चेहरे पर ज़ोरदार थप्पड़ मारा। मेरा सिर चकरा गया और मैं नाले में गिर गया। मैं वहीं कराहता रहा, उठने की हिम्मत या ताकत नहीं बची थी। जब मुझे दूर से रथ के पहियों की गड़गड़ाहट सुनाई दी, तो मैं नाले से रेंगकर बाहर आया। जैसे ही मैंने आगे बढ़ने की कोशिश की, लोग हट गए।
रथ पास आते ही एक विशाल भीड़ धक्का-मुक्की करने लगी, नारे लगाने लगी और अपने दुख का भरपूर आनंद लेने लगी। जैसे ही मारे गए लोगों के शवों को ले जा रही अर्थियाँ धीरे-धीरे महल की ओर बढ़ने लगीं, भीड़ में विलाप की आवाजें उठने लगीं। लोग एक-दूसरे से होड़ कर सबसे ज़ोर से विलाप करने लगे। शवों पर फूल फेंके गए। हर कोई राजकुमार मेघनाद के लिए रो रहा था। 'मेरा बेटा मर गया और ये लोग इसे तमाशा बना रहे हैं।'
जुलूस के सबसे आगे रावण सिर झुकाए बैठा था। उसकी गोद में मेघनाद लेटा हुआ था। राजा के चेहरे से चुपचाप आँसू और पसीना टपक रहा था, जो उसके प्रिय पुत्र के चेहरे पर गिर रहा था। राजकुमार का चेहरा खून से लथपथ और विकृत था। मृत्यु ने उसकी सारी जवानी और सुंदरता छीन ली थी। जैसे ही वे मेरे पास पहुँचे, मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा। 'मेरा पुत्र, मेरा अथिकाय कहाँ है?' जुलूस के पास आते ही भीड़ में बेचैनी बढ़ गई। मैं आगे बढ़ा, लेकिन भीड़ ने मुझे फिर पीछे धकेल दिया। मैंने देखा कि राज रथ के पीछे कई बैलगाड़ियाँ थीं और उन पर कई और आम लोगों के शव लादे गए थे। शायद अथिकाय उनमें से किसी एक में लेटा हो।
कई लोग रथों के पीछे दौड़े, कुछ लोग दिल दहला देने वाली चीखें मार रहे थे, और मैं भी उनके साथ हो लिया। आखिरी रथ तक पहुँचते-पहुँचते मेरी साँस फूल रही थी। मारे गए आदमियों के बेजान शरीर सब्जी की बोरियों की तरह रथों में फेंके जा रहे थे। खून टपक रहा था और सड़क पर निशान बना रहा था। कौवे चुपके से रथों पर उतरकर इंसानी मांस का एक टुकड़ा चुगने लगे। मौत सस्ती थी। लेकिन मेरा बेटा मर चुका था। 'उसका शरीर कहाँ था? क्या वे उसे लाना भूल गए

थे?' मैंने चेहरों की एक झलक पाने की बेताब कोशिश की, लेकिन सभी मरे हुए आदमी एक जैसे दिख रहे थे। मेरी आँखें धुंधली हो गईं। 'लड़के ने मेरी बात क्यों नहीं मानी?' वह बुरी संगत में था। मुझे बहुत पहले लंका छोड़ देनी चाहिए थी। मुझे पूर्णा नदी के किनारे बसे अपने छोटे से गाँव के लिए निकल जाना चाहिए था। मैं क्यों रुका रहा? इस दुनिया के रावणों और रामों से मेरा क्या लेना-देना था? वे और उनके युद्ध। रावण ने मेरी पत्नी का बलात्कार किया और मुझे एक बेटा दिया। फिर जब मैंने उससे प्यार करना सीख लिया, तो वह उसे मुझसे छीन ले गया।
अपने बेटे और जीवन में जो कुछ भी अनमोल था, उसे खोने के गम में मैं बेबस होकर रो पड़ी। वे अब बहुत तेज़ी से आगे बढ़ रहे थे। मेरे बूढ़े पैर उनका साथ कैसे दे पाते? वे मेरे बेटे को मुझसे छीन रहे थे। जब तक मैं महल के द्वार तक पहुँची, तब तक उन्होंने शवों को ज़मीन पर एक सीधी रेखा में सजाना शुरू कर दिया था। बड़े-बड़े डंडे लिए पहरेदारों ने धक्का-मुक्की करती भीड़ को रोकने के लिए उस इलाके को घेर लिया था, जो मारे गए नायकों की एक झलक पाने की कोशिश कर रही थी। मृत राजकुमार को ले जा रहा रथ महल के बगीचे में द्वार के पार जा चुका था। किसी तरह मैं आगे बढ़ने के लिए धक्का-मुक्की करती हुई पहुँची। मृतकों को एक पंक्ति में रखा गया था। दाह संस्कार के लिए लकड़ी एक गाड़ी से नीचे डाली गई और कुछ लोग चिता सजाने में जुट गए। मैंने पहरेदारों से विनती की कि मेरा बेटा कहीं यहीं है और मैं उसे देखना चाहती हूँ। आखिरकार एक पहरेदार को मुझ पर दया आ गई और वह मेरा हाथ पकड़कर मुझे शवों की पंक्ति तक ले गया। मैंने इस अर्थहीन युद्ध में मारे गए उन सभी दुर्भाग्यशाली पुरुषों के चेहरों को गौर से देखा। लेकिन वह वहाँ नहीं था। 'मेरा अथिकाया कहाँ है?' क्या वह अभी भी जीवित है?’ मेरे मन में आशा की एक किरण जगी। ‘शायद लड़के का साहस टूट गया हो और वह छिप गया हो। शायद कुछ दिनों बाद वह सुधर कर वापस आ जाए।’
तभी मैंने देखा कि महल के विशाल द्वार धीरे-धीरे बंद हो रहे हैं, और अंदर घुसने की कोशिश कर रही भीड़ को पीछे धकेल रहे हैं। अंदर दो चिताएं तैयार की जा रही थीं। एक पर राजकुमार मेघनाद का शव पड़ा था। दूसरी पर मेरे बेटे का भारी-भरकम शरीर था। मैं बंद होते द्वारों की ओर दौड़ा। मैंने लात मारी, चीखा-चिल्लाया और भीड़ को चीरते हुए किसी तरह द्वार तक पहुँचने का रास्ता बनाया। पहरेदार पसीने से तरबतर थे और बेकाबू भीड़ से निपटने के बाद चिढ़े

मैं फूट-फूटकर रोने लगी। उसने मेरे कंधे पर हाथ रखा, लेकिन मैंने उसे झटक दिया और चीख पड़ी, "मेरे बेटे को वापस दे दो!"
शोक के सागर से उबरती हुई रानी हमारे पास आई। “रावण,” उसने धीरे-धीरे कहा, मानो बोलने मात्र से ही उसे पीड़ा हो रही हो, “उसे उसका बेटा दे दो। उसे उसे ले जाने दो।”
राजा का चेहरा क्रोध से विकृत हो गया। "वह मेरा पुत्र है," उसने रानी से फुसफुसाते हुए कहा।
“बिल्कुल नहीं। आपको उसे जीते जी अपना बेटा मान लेना चाहिए था। आपका बेटा मेघनादा है, कोई और नहीं। अगर आपने अपनी गलती मानकर उसे बचपन में ही महल में ले लिया होता, तो मैं उसे मेघनादा की तरह पालती। लेकिन आपने उसे त्याग दिया। अब हमारा कोई हक नहीं है। असल में, हमारा कभी कोई हक था ही नहीं।” रावण ने क्रोध से भरी आँखों से मेरी और अपनी पत्नी की ओर देखा। लेकिन रानी ने बिना पलक झपकाए उसकी आँखों में आँखें मिलाईं। मुझमें उसका सामना करने का साहस नहीं था, इसलिए मैं दयनीय सिसकियों में सिमट गई और उससे मुँह फेर लिया।
“उसे ले जाओ। उसे ले जाओ। अगर वह मेरी मेघनादा का दोस्त न होता, तो उसकी मौत की परवाह तो एक कुत्ता भी नहीं करता।” शक्तिशाली राजा ने मेरे कान में फुसफुसाते हुए कहा।
“हाँ, मुझे पता है, महाराज, मेरे बेटे जैसे नौजवानों की मौत की परवाह तो एक कुत्ते को भी नहीं होती, जिसने आपके लिए अपनी जान दे दी। आप जो गोल पदक बाँटते हैं, आपके लिए जान देने वालों के परिजनों को जो छोटी-मोटी नौकरियाँ देते हैं, अपने भरे हुए खजाने से जो मामूली मुआवज़ा देते हैं, वो सब महज़ हड्डियाँ हैं, ताकि और कुत्ते आपके लिए मरने को ललचाएँ। मुझे अपने प्यारे कुत्ते को आपसे ले जाने दीजिए। उसने अपना काम कर दिया है। आपने नौजवानों को दिखाया कि मातृभूमि और जातीय गौरव जैसे अमूर्त उद्देश्यों के लिए मरना कितना गौरवशाली होता है। आपने उसे सम्मानित किया और जनता को मूर्ख बनाया, मृतकों के लिए इतना बड़ा जुलूस निकालकर। हर कोई खुश है कि हमारा देश उन नौजवानों को नहीं भूला जिन्होंने अपनी मातृभूमि के लिए अपनी जान कुर्बान कर दी। हर शहीद को याद किया जाएगा – अगले भोजन तक। बड़ा तमाशा, महाराज। अब और नौजवान मरने आएँगे, आपकी छोटी-मोटी हड्डियों, दो मिनट के यश और गली के कोने पर बने एक पत्थर के स्मारक के लालच में, जिस पर असली कुत्ते पेशाब

करेंगे। मेरे बेटे ने आपका उद्देश्य पूरा कर दिया है, अब मुझे उसे उसकी माँ के पास ले जाने दीजिए।”
मैंने इनमें से कुछ भी नहीं कहा। अगर मुझमें हिम्मत होती, तो मेरे जैसे कई और लोग भी हिम्मत करके ये बात दोहराते, और फिर कोई रावण या राम नहीं बचता। मैं अपने प्यारे बेटे के बेजान शरीर के पास गया और उसे गले लगा लिया। मैंने उसे उठाने की कोशिश की, लेकिन वह मुझसे बहुत बड़ा हो चुका था। दो सैनिकों ने मेरे बेटे को उठाने में मेरी मदद की। उसका शरीर अकड़ गया था और उसका वज़न उसके बेचारे पिता के कंधों से कहीं ज़्यादा था। एक हाथगाड़ी मेरे पास लाई गई और मैंने बड़ी सावधानी से अपने बेटे को उस पर बिठा दिया। बांहों की नसें तनकर, मैं उस भारी बोझ को अपनी छोटी सी झोपड़ी की ओर खींचता चला गया। उसकी माँ उससे मिलने का इंतज़ार कर रही थी।
जब तक मैं महल के द्वार पार कर पाया, तब तक मुझे महिलाओं के ज़ोर-ज़ोर से रोने की आवाज़ सुनाई दी, क्योंकि मेघनाद के शोकग्रस्त पिता ने उसकी चिता को अग्नि दी थी। जैसे ही मैं राजसी राजमार्ग से मुड़कर अपने घर की ओर जाने वाली गंदी गलियों में पहुँचा, असुरों का राजकुमार घने, घुमावदार धुएँ में गायब हो चुका था। उसका मित्र, साथी, सेवक और सौतेला भाई उस पल भुला दिया गया जब इस बेचारे असुर ने उस पर अपना अधिकार जमा लिया। मैं अकेला चल पड़ा, अपने मृत पुत्र की गाड़ी को घसीटते हुए। सूरज हज़ार मुट्ठियों की तरह लगातार तप रहा था और मेरे शरीर के रोम-रोम से पसीना बह रहा था। मुझे अपने पड़ोसियों या दोस्तों में से कोई भी नज़र नहीं आया। वे सब एक राजकुमार के अंतिम संस्कार का तमाशा देखने गए थे।
जैसे ही मैं घर के पास पहुँचा, मैंने द्वार पर अपनी कभी खूबसूरत रही पत्नी का झुका हुआ शरीर देखा। वह अपने बेटे के लौटने का बेसब्री से इंतज़ार कर रही थी और हमारी ओर दौड़ती हुई आई, लेकिन गाड़ी के पास रुक गई। पल भर में उसकी खुशी सदमे में बदल गई, फिर इनकार में, और फिर भाग्य के क्रूर प्रहार को स्वीकार करने में। वह अथिकाया के शरीर पर गिर पड़ी और उसे पीट-पीट कर हिलाने लगी। वह शोक में अपने बाल नोचने लगी।
मैंने विलाप करती माँ और मृत पुत्र को उनकी दुनिया में छोड़ दिया। मुझे कुछ ज़रूरी काम निपटाने थे। मैं अपने बेटे का सम्मानजनक अंतिम संस्कार करना चाहती थी। सूरज डूब रहा था और मैं कोई रस्में नहीं चाहती थी। मैं बस चाहती थी कि सूरज डूबने से पहले सब कुछ खत्म हो जाए। मैं इस दुख से तंग आ

58 क्या मैं राजा के रूप में असफल रहा?

रावण
शत्रु बहुत करीब था। मुझे अंत दिखाई दे रहा था, हालांकि मैं इसे स्वीकार नहीं करना चाहती थी। कल मैंने अपने पुत्र की चिता को अग्नि दी। अब मेरे पास राम से अंत तक लड़ने के अलावा कोई चारा नहीं था – चाहे अंत राम से हो या मेरा। ‘पर मैं किसलिए लड़ रही थी? मेरा साम्राज्य ढह गया था, मेरा पुत्र मर गया था, मेरी रानी का सम्मान मिट्टी में मिल गया था। अब क्या बचा था?’ सच है, मेरे पास यह सुंदर नगर था जिसे मैंने बड़ी सावधानी से योजनाबद्ध करके बनाया था; वह धन-संपत्ति जो मैंने बहुत पहले देवताओं से लूटी थी; और मेरी पुत्री, जो संयोगवश मेरे शत्रु की पत्नी थी।
लेकिन जैसे-जैसे मुझसे चीजें छिनती गईं, मैं बची हुई चीजों से और भी ज्यादा मजबूती से लिपटता गया। फिर भी, समुद्र तट पर ठोस चट्टान से टकराती ज्वार की लहर की तरह, मैं भी अंदर से टूट रहा था। मैं भीतर से मुरझा रहा था। जीने की इच्छा धीरे-धीरे खत्म हो रही थी। जिन चीजों को मैंने संजोकर रखा था और जिन्हें मैंने स्वाभाविक मान लिया था, वे अब अर्थहीन हो गई थीं। राम उत्तर के एक महत्वहीन राज्य का एक अपरिपक्व राजकुमार मात्र था। वह लड़का मेरे मेघनाद से कुछ ही साल बड़ा था। मैं एक सम्राट था, भारत का अब तक का सबसे शक्तिशाली सम्राट। अयोध्या एक जागीरदार राज्य, एक पिछड़ा हुआ गाँव जैसा राज्य मात्र था। फिर भी, मेरा साम्राज्य इस तरह कैसे बिखर गया? क्या बाली की मृत्यु ने सब कुछ बदल दिया? या विभीषण के विश्वासघात ने? मैंने अपना दृष्टिकोण कब खो दिया? हमारी आर्थिक, सांस्कृतिक और तकनीकी श्रेष्ठता के बावजूद, असुर साम्राज्य हमारे बीच लगातार होने वाले आपसी झगड़ों के कारण ही देवताओं के हाथों नष्ट हो गए थे। मैं अपने इतिहास को जानता था और मैं

अपनी प्रजा को जानता था। मैंने अपने साम्राज्य पर कठोर शासन किया और यह सुनिश्चित किया कि शक्तिशाली पदों पर केवल भरोसेमंद लोग ही हों। मैंने उन लोगों पर कड़ी नज़र रखी जिन पर मुझे संदेह था कि वे मेरे विरुद्ध विद्रोह कर सकते हैं – ऐसे पुरुष और महिलाएं जिन्हें मैं बेईमान समझता था और जो मेरी गद्दी हथियाना चाहते थे। मैं कितना मूर्ख था!
मैंने प्रहस्त जैसे पुरुषों को देखा; मैंने यह सुनिश्चित किया कि कुंभकर्ण हमेशा शराब और भांग की दुनिया में डूबा रहे; मैंने यह सुनिश्चित किया कि रुद्रक जैसे स्वभाव से क्रूर पुरुष अत्यधिक शक्ति अर्जित न कर सकें। मैंने मूर्खतापूर्वक यह मान लिया था कि मैं वरुण जैसे समुद्री डाकू को 'सात सागरों का सेनापति' और 'असुर नौसेनाओं का महाप्रधानमंत्री' जैसी प्रभावशाली उपाधियों से खरीद सकता हूँ। मैंने अपने बहनोई विद्युतजिह्वा की हत्या कर दी थी। लेकिन मुझे विभीषण जैसे पुरुषों और महिलाओं ने धोखा दिया, जो देखने में पवित्र लगते थे; जंबुमाली जैसे, जो हिसाब-किताब की दुनिया में डूबे एक नौकरशाह की तरह लगते थे; लंकिनी जैसी महिलाओं ने, जो राजा और देश के प्रति अपने प्रेम और स्नेह का सार्वजनिक रूप से बखान करने से कभी नहीं थकती थीं। मेरे शक्तिशाली मित्र थे, लेकिन जब जरूरत पड़ी, तो मैं बिल्कुल अकेला था। मैंने सोचा था कि मेरा साम्राज्य लोहे की नींव पर बना है, लेकिन जब धक्के लगे, तो मुझे पता चला कि यह केवल भूसे पर बना था। जिस पर भी मैंने भरोसा किया, उसने मुझे धोखा दिया। मुझे अपनी बुद्धिमत्ता पर बहुत गर्व था, तो लोगों को परखने में मैंने इतनी बड़ी गलतियाँ कैसे कर दीं?
मैं फिर से शुरुआत करना चाहता हूँ, लेकिन जीवन इतना छोटा है कि दोबारा मौका नहीं मिलता। मुझे एक ही मौका मिला था और मैंने उसे दोनों हाथों से थाम लिया था। मैंने बहुत कुछ महान खड़ा किया था, लेकिन अब समय बदल गया था और मेरे चारों ओर सब कुछ बिखर रहा था। मुझे कोई पछतावा नहीं था। मैंने एक भरपूर जीवन जिया था। अब बहुत हो गया आत्म-दया का। अब अपना सर्वश्रेष्ठ देने का समय आ गया था। मुझे पता था कि मैं असफल हो सकता हूँ, लेकिन मुझे अपनी प्रजा को एक आखिरी, भव्य असफलता देनी थी। वे ही एकमात्र ऐसे लोग थे जिन्होंने मुझे धोखा नहीं दिया था। मैंने उनके लिए, उनके दिए प्यार के लिए क्या किया? मुझे गर्व था कि मैंने अपने असुरों के लिए एक महान साम्राज्य बनाया था, मुझे लगा था कि मैंने उन्हें सम्मान और स्वतंत्रता दी है, लेकिन शायद मैं

आकस्मिक होती हैं और हम बेचारे इंसान हवा में उड़ते तिनकों की तरह फँस जाते हैं। मध्यम वर्ग कह रहा था कि मैं एक बड़ा पापी हूँ, कि मुझे किसी दूसरे पुरुष की पत्नी को अपने महल में रखने का कोई अधिकार नहीं है। अफवाह थी कि मैंने अतीत में कई महिलाओं का बलात्कार किया था और मेरे हरम में अभी भी कई महिलाएँ थीं। उन्होंने मेरी सरकार को भ्रष्ट बताया और दावा किया कि अधिकारियों ने आम जनता की कीमत पर धन इकट्ठा किया है।
मैं दुनिया का सबसे बड़ा मूर्ख हूँ। मैंने इन लोगों को बड़ी-बड़ी सड़कें बनवाकर खुश किया ताकि उनके सोने से मढ़े रथ उन टूटी-फूटी झोपड़ियों के खंडहरों के पास से तेज़ी से गुज़र सकें जहाँ गरीब लोग किसी तरह गुज़ारा करते थे। मैंने किसानों को उनकी उपजाऊ ज़मीनों से बेदखल कर दिया ताकि ये चुगलखोर मूर्ख अपने बंगले और आलीशान बगीचे बना सकें। मैंने फुटपाथ पर रहने वालों पर पुलिस लगा दी क्योंकि वे मध्यम वर्ग के लिए आँखों का कांटा थे। मैंने उन गरीबों को भगा दिया जो अपनी आजीविका के लिए मेरे शहरों में आए थे और अपने पूरे परिवार के लिए ज़मीन के ऐसे टुकड़े हथिया लिए थे जो किसी अमीर के रथ से भी छोटे थे। मैंने खेतों से पानी शहरों की ओर मोड़ दिया ताकि इन लालची लोगों को फव्वारे मिल सकें। मैंने उन नदियों पर बांध बना दिए जिनसे ग्रामीण इलाकों की सिंचाई होती थी और पानी शहरों की ओर मोड़ दिया ताकि ये लोग नहा-धो सकें। गरीबों को प्यासा रहना पड़ा, मरना पड़ा या फिर शहरों में जाकर अमीरों के नौकर, माली, रसोइया और लकड़ी काटने वाले बनकर गुज़ारा करना पड़ा।
मेरे हाथियों ने छोटी-छोटी झोपड़ियों को गिराकर विशाल-बड़े खरीदारी के स्थान बना दिए थे, जहाँ रेशम, सोने और कीमती पत्थरों के गहने इस निम्न वर्ग को बेचे जाते थे। इस सारे व्यापार पर कर वसूलने से मेरा खजाना भरा रहता था। और क्योंकि मैंने उन पर कर लगाया, इसलिए उन्होंने मुझसे और सड़कें बनवाने की मांग की। उन्होंने शिकायत की कि बंदरगाहों पर उनकी विलासितापूर्ण नौकाओं के लिए पर्याप्त घाट नहीं हैं; वे मनोरंजन के पर्याप्त विकल्पों की कमी से निराश थे। वे चिल्लाते थे कि इस देश में कुछ भी ठीक से नहीं चलता; शिकायत करते थे कि पूरा तंत्र भ्रष्ट है और मुझसे आग्रह करते थे कि मैं उनके लिए कुछ ऐसा करूँ जिससे मेरा शासन जायज साबित हो सके। इसलिए मैंने और झोपड़ियाँ गिरा दीं, और बांध बनवाए, और गरीब किसानों को विस्थापित किया, और इस प्रक्रिया में अपने शहरों को भीड़भाड़ वाला बना दिया। मैंने बड़े-बड़े

मंदिर बनवाए जहाँ बाबा जनता को लूटते थे, और चौड़ी सड़कें बनवाईं; मैंने फूल लगाए ताकि जिन लोगों के पास भोजन नहीं है वे फूलों की सुंदरता का आनंद ले सकें; मैंने अय्याशी के मंदिरों को अनुमति दी जहाँ शराब और औरतें भद्दी और मसालेदार थीं, और मैं मध्यम वर्ग का चहेता बन गया। मैं उनकी प्रशंसा से मदहोश हो गया। उन्होंने विकास के लिए मेरी प्रशंसा की और मैं, अपनी मूर्खता के कारण, यह सोचता रहा कि मैं अपने देश को आगे ले जा रहा हूँ। मैंने अपने शहरों की चकाचौंध देखी और उन अंधकारमय अंधकार से आँखें मूंद लीं जहाँ दुख, दुर्गंध और सड़न छाई हुई थी। मुझे विश्वास था कि चकाचौंध ही सब कुछ है।
फिर राम हमारे द्वार पर खड़े हुए और सब कुछ बदल गया। जब शत्रु आक्रमण करने आया, तो मध्यम वर्ग बिना किसी निशान के गायब हो गया। वे अपने ड्राइंग रूम में दुबक गए और अपने तंदुरुस्त बेटों को देश से छुपा लिया। देश ने उनके बच्चों की शिक्षा पर पैसा खर्च किया था, इस उम्मीद में कि जब देश को उनकी ज़रूरत होगी, तो वे अपना तन-मन देश के लिए समर्पित कर देंगे। लेकिन अफ़सोस, कोई भी देश की सहायता के लिए आगे नहीं आया। किसानों और फुटपाथ पर रहने वालों ने ही देशभक्ति की वेदी पर अपने बेटों का बलिदान दिया। विदेश में पढ़े-लिखे, संस्कृत जानने वाले, पान खाने वाले धनी लोगों ने मुझे अपने छिपने के स्थानों से सलाह तो दी, लेकिन और कुछ नहीं। गरीबों ने मेरे द्वारा फेंके गए टुकड़ों को अपने खून से चुकाया। जब मेरी राजधानी जल उठी, तो आसपास के ग्रामीण इलाकों से किसान इसे फिर से बनाने के लिए उमड़ पड़े। उनमें से कुछ लुटेरे थे जिन्होंने जो कुछ भी हाथ लगा, लूट लिया, लेकिन एक बार मैंने अपने पुलिसकर्मियों को दूसरी तरफ देखने का आदेश दिया।
अगर मुझे दूसरा मौका मिलता, तो मैं अमीरों को सबक सिखाता। मैं सैन्य सेवा अनिवार्य कर देता, चाहे वह अमीर व्यापारी का बेटा हो, बदसूरत पुजारी का बेटा हो या गरीब भिखारी का बेटा हो। मैं तकनीकी और मेडिकल स्कूलों से पास होने वाले हर छात्र के लिए कम से कम पांच साल ग्रामीण इलाकों में सेवा करना अनिवार्य कर देता। मैं... इससे क्या फर्क पड़ता है?
ये विचार मेरे मन में आ रहे थे, जिससे साफ था कि मुझे दूसरा मौका कभी नहीं मिलेगा। ये सब काल्पनिक सपने थे – मेरे निम्न मध्यमवर्गीय सपनों के अवशेष, मेरी जवानी की चकनाचूर कल्पनाओं के भूले-बिसरे टुकड़े। सत्ता मुझे फिर से भ्रष्ट कर देगी, जैसे पहले कर चुकी थी। आदर्श मर जाएंगे और हमेशा की तरह

दफन हो जाएंगे। सच्ची समझ इसी में है कि आदर्शवाद सिर्फ सत्ता का एक हथियार है। मैं कल मर सकता हूँ या राम, लेकिन दुनिया चलती रहेगी। दुखी दुखी ही रहेंगे, गरीब गरीब ही रहेंगे। नई क्रांतियाँ हो सकती हैं; नई विचारधाराएँ पनप सकती हैं; नैतिकता और सदाचार के नए नियम पुराने नियमों की जगह ले सकते हैं; नए पैगंबर पैदा हो सकते हैं; नए राजा धरती पर राज कर सकते हैं; नए धर्म पनप सकते हैं और आपस में लड़ सकते हैं और नई खोजें हो सकती हैं, लेकिन सब कुछ वैसा ही रहेगा। अपराधबोध महसूस करने का क्या फायदा? मैंने जो कर सकता था, किया। मैं और बेहतर कर सकता था, लेकिन फिर, कौन नहीं कर सकता था?
युद्ध जीतने वाला सब कुछ ले जाएगा – यश, धन, सत्ता। वही सत्य होगा, क्योंकि जो भी जीतता है, उसे सत्य कहा जाता है। कवि विजेता की प्रशंसा में गीत गाएंगे। समय बीतने के साथ-साथ किंवदंतियाँ पनपती जाएंगी। विजेता सद्गुणों का प्रतीक, मनुष्यों में सर्वश्रेष्ठ बन जाएगा। हर मनुष्य की तरह, वह भी जीवन में अच्छे या बुरे कर्म करेगा। लेकिन संसार का स्वभाव है कि विजेता के अच्छे कर्मों को बढ़ा-चढ़ाकर बताया जाएगा और बुरे कर्मों को स्मृति से मिटा दिया जाएगा। और यदि विजेता के कर्म समाज के प्रचलित नैतिक मानदंडों द्वारा उचित नहीं ठहराए जा सकते, तो उसे देवत्व का दर्जा दिया जाएगा, क्योंकि भला ईश्वर पर कौन प्रश्न उठा सकता है? इस प्रकार, मेरे देश ने अनेक ईश्वर उत्पन्न किए। हर वह व्यक्ति जिसने किसी भी तरह से जीत हासिल की, वह ईश्वर या अवतार बन गया। पराजितों के लिए, हमेशा स्थिति इसके विपरीत होती थी।
फिर भी, अजीब बात है, मुझे ऐसा लगा कि इनमें से किसी भी बात से मेरा कोई लेना-देना नहीं है। मैं सृष्टि के विशाल क्रम में अपनी तुच्छता को महसूस कर सकता था और इसी वजह से मैं अजीब तरह से स्वार्थी हो गया था। अगर जीवन के विशाल क्रम में मेरा कोई महत्व नहीं था और मैं महज़ एक छोटा सा बिंदु था, तो मेरे लिए सिर्फ़ मैं ही मायने रखता था। मेरी मृत्यु के साथ ही सब कुछ समाप्त हो जाता। मेरी मृत्यु के बाद मेरे लोगों का क्या होगा, यह मेरी चिंता नहीं थी। मैं जानता था कि मृत्यु ही अंतिम पड़ाव होगी और उसके आगे कुछ भी नहीं है। न आत्मा, न स्वर्ग, न मोक्ष, न नरक, न ईश्वर, न परलोक। मैं मिट्टी में मिल जाऊँगा, मिट्टी में, जल में जल में, वायु में वायु में,

अग्नि में, और सब कुछ रुक जाएगा। फिर भी, अगर मुझे मौका मिलता, तो मैं वापस आना चाहता। भला कौन नहीं चाहेगा?
मैं अपने बगीचे की ओर चल पड़ा जहाँ मेरी हठी बेटी सीता अभी भी रूठी हुई थी। मैं अपनी बेटी को देखना चाहता था। फिर अगर समय मिला तो शायद मैं मंदोदरी के साथ कुछ पल बिता सकूँ। उसके बाद मैं युद्ध के मैदान में राम से आमने-सामने मिलूँगा।

59 मैं तुम्हारी मृत्यु की कामना करता हूँ
भद्र
कल रात जब तक मैं महल के द्वार पर पहुँचा, तब तक अनाज वितरण समाप्त हो चुका था। सभी जानते थे कि निर्धारित मात्रा से आधे से भी कम अनाज गरीबों तक पहुँचा। किसानों से अनाज खरीदने से लेकर अंतिम वितरण तक, धोखाधड़ी और कालाबाजारी का एक लंबा सिलसिला था। किसान ने बदले में सार्वजनिक खरीद अधिकारी को मात्रा और गुणवत्ता दोनों में धोखा दिया। उसने लेखा-जोखा लिखने वाले छोटे क्लर्कों को रिश्वत दी ताकि राज्य को वास्तव में प्राप्त अनाज की मात्रा से अधिक अनाज दिखाया जा सके। फिर अधिकारी ने कुछ अनाज चुरा लिया और उसे कालाबाजारी में बेच दिया। जब तक अनाज महल के गोदामों तक पहुँचा, तब तक बहीखाते और वास्तविक भंडार में इतना बड़ा अंतर आ चुका था कि पर्यवेक्षकों को मजबूरन कालाबाजारी से दुगनी कीमत पर अनाज खरीदना पड़ा। फिर पर्यवेक्षकों ने खातों में हेराफेरी करके कुछ नुकसान महामारी के कारण दिखाया और राज्य के खजाने का इस्तेमाल कालाबाजारी से अनाज वापस खरीदने के लिए किया। चूंकि पर्यवेक्षकों से कमी की भरपाई करने की उम्मीद नहीं की जा सकती थी, इसलिए उन्होंने गरीबों की संख्या में हेराफेरी की, लाभार्थियों की संख्या बढ़ा-चढ़ाकर बताई और इस प्रक्रिया में और अधिक अनाज की हेराफेरी की। हर स्तर पर रिश्वत का बोलबाला रहा। अनाज से जुड़े हर व्यक्ति को लाभ हुआ।
प्रहस्त जैसे आदर्शवादी मंत्री इन धूर्तों के झांसे में आ गए थे। वे अपनी शुरू की गई कल्याणकारी योजनाओं से खुश थे। जंबुमाली जैसे कुछ अन्य लोगों ने व्यवस्था का लाभ उठाकर अपार धनवान बन गए। और वरुण जैसे दलाल साम्राज्य के अधिकारियों से अवैध सोने और नकदी का बड़ा जखीरा उत्तरी देशों में भेजते थे। यह एक दुष्चक्र था, लेकिन निरर्थक था, जिसमें केवल ईमानदार और सीधे-

सादे लोग ही नुकसान में थे। हर कोई अपनी क्षमता के अनुसार धोखाधड़ी करता था। और हर कोई जानता था कि क्या हो रहा है। लेकिन, चूंकि गरीब किसान से लेकर, जो अपनी उपज कम बताकर सरकार को धोखा देता था; उसके खेत मजदूर तक, जो जब भी संभव होता किसान को धोखा देता था; क्लर्कों, व्यापारियों, सरकारी अधिकारियों और मंत्रियों तक, सभी अलग-अलग स्तर के धूर्त थे, इसलिए जनता में कोई आक्रोश नहीं था। वे व्यवस्था में फैले भ्रष्टाचार का मजाक उड़ाते थे और राजनेताओं के खिलाफ जमकर भड़ास निकालते थे। राजनेताओं को चिढ़ाना असुरों के लिए मनोरंजन का एक बड़ा जरिया बन गया था।
तो, हालांकि मुझे कुछ खाने को न मिलने से निराशा हुई, पर मुझे आश्चर्य नहीं हुआ। वास्तव में, मुझे राहत मिली कि वितरण क्लर्क ने मेरे साथ खुलकर बदतमीजी नहीं की। उसने बस मुझे वहां से चले जाने को कहा और शटर बंद कर दिए। हर बार जब मुझे उनकी उदारता के लिए गिड़गिड़ाना पड़ता था तो मेरे स्वाभिमान को ठेस पहुँचती थी, लेकिन मैंने बहुत पहले ही सीख लिया था कि मैं अपने स्वाभिमान को खा नहीं सकता। मैंने अपने पसंदीदा बरगद के पेड़ के नीचे इंतजार करने का फैसला किया। शायद कल मैं कतार में सबसे पहले खड़ा हो सकूँ और कुछ खाना पा सकूँ।
युद्ध समाप्त होने से दूर नहीं था, लेकिन किसी न किसी तरह उसे समाप्त होना ही था। मैंने युद्ध में अपने कई परिचितों और मित्रों को खो दिया था। मैंने अपने पक्ष का समर्थन किया था। जानमाल का नुकसान दुखद था, लेकिन आवश्यक भी था। क्या हम किसी उद्देश्य के लिए नहीं लड़ रहे थे? जब दूसरों के बेटे मर रहे थे, मैं शहीदों का हौसला बढ़ाने के लिए भीड़ में मौजूद था। जब मेरे पड़ोसियों के घरों में मृत्यु दस्तक दे रही थी, तो मैं मन ही मन खुश था कि मेरा परिवार सुरक्षित है और मेरा बेटा स्वस्थ है। यह डर बना रहा कि एक दिन मैं भी अपने प्यारे बेटे को खो दूँगा। फिर भी, मैंने मूर्खतापूर्वक आशा की कि ईश्वर मुझे मेरे बच्चे की भयानक मृत्यु से बचा लेंगे। क्या मैंने पर्याप्त कष्ट नहीं सहे थे? क्या मैंने अपनी थोड़ी-बहुत कमाई देवताओं और उनके सेवकों के साथ साझा नहीं की थी? मैंने अपने विनम्र चढ़ावों से मंदिरों के खजाने भरने में मदद की थी। संक्षेप में, मैंने देवताओं को रिश्वत दी थी। लेकिन वे हमारे देवता थे और वे हमारे जैसे ही थे। वे हमारी रिश्वत और चढ़ावे स्वीकार करते थे, लेकिन इस बात की कोई गारंटी नहीं थी कि वे हमारा भला करेंगे। जीवन रिश्वत की एक श्रृंखला थी - देवताओं को दी जाने

वाली रिश्वत; धर्मगुरुओं को दी जाने वाली रिश्वत; छोटे अधिकारियों से लेकर सरकारी कर्मचारियों तक, राजा से लेकर परिवार तक, दोस्तों तक। जन्म से लेकर मृत्यु तक, हमारी संस्कृति ने हमें रिश्वत देना, रिश्वत लेना और रिश्वत का समर्थन करना सिखाया है।
अथिकाया का चेहरा मुझे सता रहा था। लाख कोशिश करने पर भी मुझे उसका बचपन याद नहीं आ रहा था। लेकिन मुझे वो छोटी-छोटी घटनाएँ याद थीं जिनसे ज़िंदगी जीना मुमकिन हुआ था। मुझे याद था कैसे हम वो गीत गाते थे जो मानव जाति जितने पुराने थे; कैसे मैं उसे घने जंगलों में ले जाती थी; कैसे मैं उसे ऐसी कहानियाँ सुनाती थी जिनमें देवता, जानवर और सफेद राक्षस आते-जाते रहते थे। कैसे वो मेरे फटे-पुराने मुंडू से लिपट जाता था, राक्षसों से डरकर; कैसे वो उन जानवरों की शरारतों पर हँसता था जो देवताओं और मनुष्यों से बातें करते थे। मुझे वो खुशी और संतोष याद था जो किसी बड़े पर्स या आलीशान घर पर निर्भर नहीं था, बल्कि उन छोटी-छोटी चीज़ों पर निर्भर था जो अपना जादू बिखेरती थीं। फिर भी मुझे उसका नन्हा सा चेहरा याद नहीं आ रहा था। जो चेहरा मैंने देखा, वही चेहरा मैंने उसकी चिता पर देखा था, भाग्य के पंजों से कुचला हुआ, नस्लीय नफरत की कठोर चट्टान पर चूर-चूर और पूर्वाग्रह के बोझ तले दबा हुआ। मुझे एक घूंट पीने की इच्छा हो रही थी। दर्द असहनीय था। बारिश रुक जाने के बावजूद मैं पेड़ के नीचे लेटा रहा, बूँदें अभी भी टपक रही थीं। मच्छर भिनभिना रहे थे और मेरी नसों में बचा-खुचा खून चूसने की कोशिश कर रहे थे। मैंने उन्हें मारने की ज़हमत भी नहीं उठाई। गली में कुछ बत्तियाँ जल रही थीं और महल उदास और कम रोशनी वाला लग रहा था। कहीं एक उल्लू की आवाज़ आई और कुछ पल बाद दूसरे ने जवाब दिया। बारिश के बाद मेंढक जाग गए थे और जी भर के टर्रा रहे थे। झाड़ियों में झींगुर भिनभिना रहे थे, अपनी विचित्र आवाज़ों से मेरे चारों ओर बज रहे अजीब संगीत में और भी धुनें जोड़ रहे थे। मैं वहाँ लेटा हुआ कल्पना कर रहा था कि आकाश मेरा कंबल है और गीली धरती मेरा बिस्तर। लाखों तारे थे। क्या वे देवता थे? वे बहुत दूर, ठंडे, उदासीन और महत्वहीन लग रहे थे - धरती नाम के एक छोटे से पत्थर पर घट रहे नाटक के मूक गवाह।
मृत्यु के अंतिम क्षणों में एक मेंढक की चीख गूंज रही थी। कुछ क्षण पहले, वह अपने साथी के लिए तड़प रहा था, कामुक आवेश में था, जीवन के अपने एकमात्र धर्म - प्रजनन - को पूरा करने का प्रयास कर रहा था। तभी भाग्य ने दखल दिया,

एक रेंगते हुए, काले और शांत सांप ने अपने जहर से वार किया। लेकिन जन्म, प्रजनन और मृत्यु का यह विचित्र नाटक पृथ्वी पर लाखों बार दोहराया गया। मेरे बेटे या किसी राजा की मृत्यु उस अज्ञात मेंढक की मृत्यु से किस प्रकार अधिक महत्वपूर्ण थी? पृथ्वी का प्रत्येक जीवित प्राणी पर अधिकार था। हमारा जीवन पृथ्वी से उधार लिया गया था। एक उधार का जीवन। और किसी भी समय, पृथ्वी अपना उधार वापस मांग सकती थी।
अपने खोए हुए बेटे का दुख बार-बार मेरे मन में उमड़ रहा था, जीवन के दर्शन पर मेरे सारे विचार चकनाचूर कर रहे थे। मैं अपने टेढ़े-मेढ़े नाखूनों से गीली, लाल मिट्टी को खरोंच रही थी। शायद मैं ज़ोर से कराह उठी थी, क्योंकि कोई मेरे पास आया। मेरी गठिया से ग्रस्त आँखों से वह काली आकृति मुश्किल से दिखाई दे रही थी। मैं भयभीत थी। 'क्या यह मृत्यु के देवता यम थे?' मृत्यु के बारे में सोचना भी अशुभ था। यह कभी भी आ सकती है। कुछ ही क्षण पहले मैं मृत्यु के महत्वहीन होने के बारे में सोच रही थी, अपने बेटे के जीवन और एक मेंढक के जीवन में कोई अंतर नहीं देख पा रही थी। इसलिए जब वह काली आकृति मेरे ऊपर मंडराने लगी, तो मैं अंदर तक डर गई। वह आकृति झुकी और अपनी काली, टेढ़ी उंगलियाँ मेरी नाक के नीचे रख दीं। मैंने अपनी साँस रोक ली। एक गीली हथेली ने मेरे माथे की त्वचा को छुआ। फिर वह आकृति खड़ी हुई और पुकारा। दो सैनिक हमारी ओर दौड़े। 'क्या मुझे गिरफ्तार किया जा रहा है?' मेरा बुखार से ग्रस्त दिमाग बेचैनी से उस अपराध को खोजने लगा जो मैंने किया हो सकता था। “वह मर रहा है। उसे बहुत तेज़ बुखार है।” एक खुरदुरा चेहरा, लंबी लहराती सफेद दाढ़ी के साथ, मेरे चेहरे के पास आ गया। मुझे राहत मिली। वह वही पागल वैज्ञानिक, मायान था। वह सनकी था, लेकिन बिल्कुल हानिरहित था। “उसे किले के अंदर ले जाओ।” मैंने उसे कहते सुना।
“लेकिन महोदय, वह तो शराबी है। क्या हमें…” सैनिक के स्वर में झुंझलाहट और उपहास था।
“वह मर रहा है और उसे चिकित्सा सहायता की आवश्यकता है। उसे अंदर ले जाओ। बेचारा भूख से मर रहा होगा। यह खूनी युद्ध… लोग एक दूसरे को क्यों मारते हैं? शनि ग्रह बलि का बकरा है। मंगल ग्रह इस समय बहुत शक्तिशाली है। अगर मैं एक ऐसी मशीनी आँख विकसित कर पाता जिससे मैं ग्रहों को और अधिक स्पष्ट रूप से देख पाता… क्या लाखों ग्रहों और मानव भाग्य के बीच कोई संबंध है?

लाखों ग्रह और तारे हैं… हम ग्रहों के इस विशाल सागर में बैठे हुए मात्र कण हैं…”
जैसे-जैसे वह पागल वैज्ञानिक अपनी ही दुनिया में खोता चला गया, उसकी आवाज़ धीमी होती जा रही थी। मुझे उसकी बड़बड़ाहट बिल्कुल समझ नहीं आ रही थी। सैनिक वहाँ झिझकते खड़े थे। वे साफ़ तौर पर मुझे छूना नहीं चाहते थे। मुझसे सूअर जैसी बदबू आ रही थी। लेकिन वे एक वरिष्ठ मंत्री के आदेशों का उल्लंघन नहीं कर सकते थे। शायद तब तक मायान मुझे पूरी तरह भूल चुका था, लेकिन बेचारे सैनिकों के लिए यह जोखिम उठाना ज़रूरी था। मैं बेहोशी की हालत में था और मुझे वे धुंधले-धुंधले दिखाई दे रहे थे। मैंने खुद को सैनिकों द्वारा आधा घसीटते और आधा उठाते हुए किले की ओर जाते हुए पाया। उन्होंने मुझे द्वार के पास फेंक दिया और चौकीदार से गुस्से में सलाह-मशविरा किया, जो मुझसे कोई वास्ता नहीं रखना चाहता था और उसने हमें अंदर जाने से मना कर दिया। इसलिए मुझे खाई के पास एक कोने में फेंक दिया गया और मैं वहाँ सिर उठाने की भी ताकत के बिना पड़ा रहा। बहुत बाद में, जब मच्छर मेरा खून पीकर मोटे हो चुके थे और कीड़े-मकोड़े मेरी त्वचा में घुस चुके थे, तब मायान अपनी यात्राओं से लौटा।
“अरे वाह, वाह! तुम उसे ले आए, है ना? उसे मेरे कमरे के बरामदे में ले चलो। मैं उसे बचाने की कोशिश करूंगी।” माया ने बेचारे कप्तान को आदेश दिया और चली गई।
वैज्ञानिक के जाने के बाद कप्तान ने पूरे दस मिनट तक मुझे, अपनी नौकरी को, मंत्री को और अपनी जान को कोसता रहा। फिर उसने मुझे मायां के बरामदे में ले जाने का आदेश दिया। मैं इतना कमज़ोर था कि उन्हें मुझे उठाकर पूरे रास्ते ले जाना पड़ा। नारियल के बोरे की तरह, उन्होंने मुझे ठंडे, चिकने और साफ़ बरामदे पर पटक दिया। थोड़ी देर बाद वैज्ञानिक एक सहायक और किसी दुर्गंधयुक्त तरल पदार्थ के साथ बाहर आया। सहायक ने अपनी उंगलियों से मेरी नाक बंद कर दी और जब मैंने साँस लेने के लिए संघर्ष किया, तो वह कड़वा तरल पदार्थ मेरे खुले मुँह में डाल दिया गया। मायां ने मुझे उल्टी आने से पहले ही मेरा मुँह बंद कर दिया और वह तीखा तरल पदार्थ मेरे पेट में आग की तरह जल उठा। मैं दर्द से तड़पने लगा और काँपने लगा, मुझे डर था कि मैं मर रहा हूँ। दोनों आदमियों ने मेरे छटपटाते शरीर को तब तक पकड़े रखा जब तक मेरी सारी ताकत खत्म नहीं हो गई और मैं बेहोश हो गया।

जीवन क्यों जीना चाहती हो? देव पुरुष अपनी स्त्रियों को बोझ ढोने वाले पशुओं की तरह मानते हैं।”
“देव संस्कृति के बारे में तुम क्या जानते हो? यहाँ स्त्रियों को देवियों के रूप में पूजा जाता है। हमारी दुनिया तुम्हारी दुनिया से बिलकुल अलग है। यहाँ स्त्रियों में नैतिकता का कोई नामोनिशान नहीं है। वे बिना नकाब के घूमती हैं। मर्द और स्त्रियाँ बेधड़क मिलते-जुलते हैं और तुम्हारे राज्य में विवाह का कोई सम्मान नहीं है। तुम्हारी स्त्रियाँ शोर मचाती हैं। वे पुरुषों के साथ शराब पीती हैं और नाचती हैं। तुम्हारी दुनिया असभ्य है, जहाँ स्त्रियाँ अपने पिता की आज्ञाकारी पुत्रियाँ बनने के बजाय अपनी पसंद के पुरुषों से विवाह करती हैं। तुम्हारी स्त्रियाँ दिखावा करती हैं और खुद को दुनिया की सबसे बुद्धिमान प्राणी समझती हैं। तुम तो बस सुख के प्राणी हो। तुम्हारे पुरुष स्त्रियों जैसे हैं। एक वानर-पुरुष ने इस घृणित पाप नगर को जलाकर राख कर दिया। और तुम्हारी शक्तिशाली सेना ने क्या किया? देखो, तुमने किस तरह की स्त्रियाँ पैदा की हैं। अपनी बहन को देखो, वह कितनी व्यभिचारी है। अपनी भतीजी त्रिजटा को देखो, जो गंदी, काली, मोटी और बदसूरत है… और तुम चाहते हो कि मैं यहाँ रहूँ, अपने राम को छोड़कर…”
मैं क्रोध से उबल रहा था। कुछ ही दूरी पर खड़ी त्रिजटा फूट-फूट कर रोने लगी। लंका लाए जाने के दिन से ही वह सीता की सहेली और साथी थी। रावण अपने साम्राज्य और सपनों को उसी के कारण खो रहा था। सीता के कारण ही इतने सारे असुर मारे गए थे। उस क्षण मेरा मन किया कि मैं उसका गला घोंटकर मार डालूँ। रावण ने पैर पटका और क्रोध से अपनी तलवार म्यान से निकाली। “तुम… तुम… मैंने तुम्हारे लिए सब कुछ दांव पर लगा दिया था। मैंने अपने पुत्र, अपना सम्मान, अपना नगर… सब कुछ खो दिया, ताकि मेरी पुत्री खुश रह सके। और तुम यही कहती हो? मैंने तुम्हारे लिए हजारों पुरुषों का बलिदान दिया।” उसने तलवार उठाई और मुझे लगा जैसे तलवार की तेज आवाज से उस घृणित देव स्त्री का सिर धड़ से अलग हो जाएगा। सीता ने अपने पिता की ओर देखा, निर्भीक, उसकी आँखें उसे चुनौती दे रही थीं और महान असुर सम्राट को उसका सिर कलम करने के लिए उकसा रही थीं। रावण की तलवार उसके गले से बस एक इंच दूर आकर रुक गई। फिर धीरे-धीरे रावण का वह बलवान हाथ, जिसने पिछले चार दशकों में कई शत्रुओं के सिर काटे थे, ढीला पड़ गया। “सीता… तुम मेरी पुत्री हो…” राजा ने

बुदबुदाते हुए कहा, जैसे ही प्रसिद्ध चंद्रहास लंका की लाल मिट्टी पर गिरा।
जवाब में एक उपहास भरी हंसी सुनाई दी। “बेटी! एक ऐसी बेटी जिसे असुविधा होने पर त्याग दिया जाए? एक ऐसी बेटी जिसे तुम्हारे लोग कभी नहीं चाहते थे? और कैसा बाप है!”
मैं अपने छिपने की जगह से निकलकर उस घिनौनी औरत को उसके बालों से पकड़ लेना चाहता था, लेकिन मुझे आश्चर्य और हैरानी हुई जब मैंने रावण को सिर झुकाए खड़ा देखा। उसकी लाल आँखों से चुपचाप आँसू बह रहे थे। फिर धीरे-धीरे वह मुड़ा और अपने महल की ओर चल पड़ा।
"मैं तुम्हारी मृत्यु की कामना करती हूँ! एक दर्दनाक और लंबी मृत्यु!" सीता चिल्लाई, जब असुरों का राजा भारी कदमों से दूर चला गया।
रावण मेरी आँखों के सामने दस साल बूढ़ा हो गया। बूढ़े राजा की मृत्यु निकट थी, और जैसा कि उनकी पुत्री ने कामना और प्रार्थना की थी - एक लंबी, कष्टदायक मृत्यु। मैं पिता, पुत्री और दामाद के बीच इस खूनी पारिवारिक झगड़े में शामिल नहीं होना चाहता था। लेकिन मुझ जैसे लोगों के पास क्या विकल्प था, या कभी रहा भी था?

60 एक सपने का अंत

रावण
मैं उदास मन से युद्धक्षेत्र के लिए रवाना हुआ। मंदोदरी भावुक थी। वह नहीं चाहती थी कि मैं जाऊं। उसने मुझसे सीता को राम को सौंपने और शांति की अपील करने को कहा। शांति... कायरों का शब्द। 'औरतें! वे कभी तर्क नहीं समझेंगी।' मुझे उसे जबरदस्ती अपने शरीर से अलग करना पड़ा क्योंकि वह चिल्ला रही थी, रो रही थी, अपने बाल नोच रही थी और अपने सीने पीट रही थी। वह भी मेरे सभी सैनिकों के सामने। यह शर्मनाक था। उसने मुझ पर अपने अहंकार के लिए सबको कुर्बान करने का आरोप लगाया। उसने सीता को शाप दिया और मैं क्रोधित हो गया। मैंने पलटकर जवाब दिया और इतना उग्र व्यवहार किया कि बेचारी डर गई। वह अभी अपने बेटे को खोने के सदमे से उबर ही रही थी और मुझे उसके साथ इतना कठोर व्यवहार नहीं करना चाहिए था। 'लेकिन मैंने तो हमेशा उसके साथ बुरा बर्ताव किया है। सिर्फ उसके साथ ही क्यों, मेरे जीवन की सभी महिलाओं के साथ।'
गुस्से में आकर मैंने अपनी वीणा तोड़ दी। मुझे संगीत से बहुत प्रेम था और मैं नहीं चाहता था कि मेरे जाने के बाद कोई बंदर-जैसे आदमी मेरे वाद्य यंत्र से खेले। मैंने अपने रचे रागों और गीतों को संकलित करने का प्रयास किया था। आशा है, वे मेरे और मेरे साम्राज्य के बाद भी बचे रहेंगे। मैंने बाल चिकित्सा और खगोल विज्ञान पर प्रयोग किए थे और ताड़ के पत्तों पर अपने नोट्स सावधानीपूर्वक लिखे थे। मैंने उन्हें माया को भेज दिया था। शायद उस पागल आदमी को उनका कुछ उपयोग हो जाए। जब तक मैंने युद्ध के वस्त्र पहने, वह अपने कमरे में बंद हो चुकी थी। मैंने उसे कई बार पुकारा, लेकिन उसने दरवाजा नहीं खोला। अंत में, उसे कोसते हुए, मैं मुड़ा और अपने रथ की ओर चल पड़ा।

मैंने सुना कि उसने दरवाजा खोला और दौड़कर मेरे पास आई, मेरा नाम पुकारते हुए। मैं पीछे नहीं मुड़ा। मुझे उसका चेहरा फिर से देखने से डर लग रहा था। मेरा सारा अहंकार और झूठा आत्मविश्वास पिघल जाता, और मैं असुरों के राजा के बजाय एक साधारण, अधेड़ उम्र का, तोंद निकला हुआ, गंजा पति बन जाता, जो एक अच्छी और दयालु स्त्री का पति होता। मुझे पता था कि अगर मैंने उसका चेहरा देखने के लिए मुड़ा तो मेरा सारा संकल्प टूट जाएगा और मैं उसके आदेश का पालन करने के लिए उसके आगे झुक जाऊंगा। मैं रथ में कूद गया और अपने सारथी को आगे बढ़ने का आदेश दिया।
जैसे ही किले के द्वार खुले और मेरी सेना देवताओं का सामना करने के लिए आगे बढ़ी, मैंने व्यर्थ जीवन और जो हो सकता था, उस उदासी भरे एहसास को दबाने की पूरी कोशिश की। मैं एक अकेली स्त्री को पीछे छोड़ आया था जिसने साढ़े तीन दशकों से अधिक समय तक चुपचाप मुझे और मेरी हरकतों को सहन किया था; एक ऐसी स्त्री जिसने अपने बच्चों को अपने मूर्ख पति द्वारा बेलगाम वासना के कारण शुरू किए गए एक व्यर्थ युद्ध में बलिदान कर दिया था; एक ऐसी स्त्री जिसमें उस व्यक्ति से सवाल करने का साहस था जिससे दुनिया डरती थी। मेरी आँखों में आँसू भर आए। मैं अपनी पत्नी को दुनिया में किसी भी चीज़ से ज़्यादा प्यार करता था। मुझे उसे अलविदा कह देना चाहिए था। अब बहुत देर हो चुकी थी। राम प्रतीक्षा कर रहे थे।
मैंने चारों ओर देखा और मेरे चारों ओर चमकते, पसीने से तर, नंगे, काले शरीर तैरते हुए दिखाई दिए। आज इनमें से कितने जीवित लौटेंगे? शाम तक कितनी पत्नियाँ विधवा हो जाएँगी? इनमें से कितने अभागे लंका की लाल मिट्टी को अपने खून से भिगो देंगे? कितने बच्चे अनाथ हो जाएँगे? ये मूर्ख किसके लिए लड़ रहे थे? इन बेचारे लोगों को बेवकूफ बनाना कितना आसान था। दूर समुद्र तट पर, राम की सेना प्रतीक्षा कर रही थी। ये वानर-मानव किसलिए लड़ रहे थे? किसी उत्तरी राजकुमार और उसकी पत्नी के लिए? उन बेचारे लोगों में से किसी ने भी राम की पत्नी को नहीं देखा था और असुरों से उनकी कोई दुश्मनी नहीं थी। फिर भी वे मरने के लिए तैयार होकर आए थे। उनमें से कई अपने छोटे बच्चों को अनाथ या अपने माता-पिता को बेघर छोड़ जाएँगे।
जैसे ही हम मोड़ मुड़े और राम की सेना की ओर दौड़े, राम की सेना ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगी। मैंने अपने हाथियों को सबसे आगे रखा था। यह एक जोखिम भरा कदम था। हाथी अपनी अविश्वसनीयता के लिए कुख्यात थे। वे पलटकर मेरे

सैनिकों में भगदड़ मचा सकते थे। लेकिन मेरे पास कोई और चारा नहीं था। मेरी सेना कमज़ोर पड़ चुकी थी और वरुण की नौसेना समुद्र से बड़े-बड़े पत्थरों से मेरे किलों पर हमला कर रही थी। मैंने अपने अग्नि-प्रवचन यंत्रों को समुद्र तट के ऊपर स्थित छोटी पहाड़ियों की चोटी पर रणनीतिक रूप से तैनात किया था। ऊँचाई के कारण, वे राम के धनुर्धारियों या वरुण के गुलेलों की पहुँच से बाहर थे और अपने लक्ष्यों को अधिक सटीकता से भेद सकते थे। उन्होंने वानर सेना को रोके रखा और अपने अग्नि-प्रवचन यंत्रों से कई नौकाओं और नावों को डुबो दिया। जैसे ही मेरे हाथी वानरों की ओर बढ़े, मैंने शत्रु सेना में भय की लहर महसूस की। उन्होंने कमज़ोर वानरों की सेना को चीर डाला, कई को कुचलते और रौंदते हुए आगे बढ़े। असुर सेना ने आक्रमण किया और घुड़सवार सेना ने वानरों को तीन तरफ से घेर लिया।
मुझे मोर्चे से युद्ध का नेतृत्व किए हुए काफी समय हो गया था और मुझे लगा कि शायद मेरी कुशलता क्षीण हो गई है। लेकिन राम की सेना को घबराया हुआ देखकर मेरे रगों में जोश भर गया। अचानक मैं साठ वर्ष की आयु के करीब पहुँच चुके एक बूढ़े और थके हुए राजा की जगह फिर से वही सोलह वर्षीय युवक बन गया, जिसकी रगों में जुनून और महत्वाकांक्षा की आग जल रही थी। आखिर राम थे क्या, बस एक उग्र स्वभाव के युवक, जिन्होंने किसी तरह अर्ध-सभ्य जनजातियों के एक समूह को पृथ्वी के सबसे शक्तिशाली सम्राट को चुनौती देने के लिए संगठित किया था। आज मैं यह सुनिश्चित करूँगा कि वे उन सभी अभिमानी और उग्र स्वभाव के लोगों के लिए एक उदाहरण बनें, जो सोचते हैं कि वे असुर सम्राट पर विजय प्राप्त कर सुरक्षित अपने घर लौट सकते हैं।
मैंने आदेश दिए और दूतों को चारों ओर भेज दिया गया। मुझे यह देखकर संतोष हुआ कि राम सचमुच संकट में थे। उनके सेनापतियों ने बहादुरी से, लेकिन व्यर्थ ही लड़ाई लड़ी। अगर मैं उन तक पहुँचकर एक सटीक तीर से उनका गला भेद सकूँ, तो यह मूर्खतापूर्ण युद्ध समाप्त हो जाएगा। मैंने अपने सारथी को बाएँ किनारे से आगे बढ़ने का आदेश दिया। तीरों की बौछार होने लगी। यह खतरनाक था, लेकिन मैं जोश से भरा हुआ था। क्रोध और उत्साह मेरी रगों में दौड़ रहे थे और उन्हें पाने से मुझे कोई नहीं रोक सकता था। यह आखिरी बार होगा जब कोई देव राजकुमार किसी असुर राजा को चुनौती देने का साहस करेगा। अचानक पीछे से घबराकर भागते हुए सैनिकों ने मुझे घेर लिया। मैं जोर-जोर से चिल्लाया और उन्हें फिर से संगठित होने को कहा। राम ने जाल बिछाया था। हम

थी। लेकिन मैंने समझाया कि स्थिति अत्यंत गंभीर है और उनकी सहमति की प्रतीक्षा किए बिना, मैं अपने पसंदीदा तलवार को हाथ में लेकर अपने रथ से कूद गया। मैंने अपने प्रिय घोड़े की जंजीरें खोल दीं। मेरा सारथी रो रहा था और मैंने उसे गले लगा लिया। वह एक बूढ़ी औरत की तरह मेरे चरणों में गिर पड़ा और रोने लगा। उसे अनदेखा करते हुए, मैं अपने घोड़े पर सवार हो गया और अंधेरे होते आकाश की ओर अपना चंद्रहास उठाकर गरजा, "हर हर महादेव"।
मेरे चारों ओर सौ ज़ुबानों से युद्धघोष गूंज रहा था। जगह-जगह बिजली कड़क रही थी और विशाल लहरें समुद्र तट पर पड़े पत्थरों को चूर-चूर कर रही थीं। लगभग अंधेरा हो चुका था और भारी-भार बारिश हो रही थी। मैं आग की दीवार की ओर सरपट दौड़ा, गीली ज़मीन पर पड़े मृत सैनिकों को पार करते हुए, फटे अंगों से तड़पते हुए पुरुषों को पार करते हुए, मरते हुए पुरुषों के ऊपर से, खून के तालाबों और कुचले हुए मांस के ऊपर से, मैं राम की ओर बढ़ा। मेरे सैनिक मेरे पीछे गरज रहे थे। मेरे कानों में खून की धड़कन गूंज रही थी। मैं लगाम को कांपते हुए महसूस कर सकता था। मेरे घोड़े की नाक से झाग निकल रहा था, लेकिन मैंने उसे और तेज़ दौड़ाया। मैं और तेज़ दौड़ता गया, अपनी जांघों या बाइसेप्स पर लगने वाले तीरों की परवाह किए बिना। मैं गर्मी महसूस कर सकता था और मेरा घोड़ा हिचकिचाया, लेकिन मैंने उसे और तेज़ दौड़ाने के लिए लात मारी। एक ज़ोरदार छलांग में वह आग की दीवार को पार करके राम की ओर कूद गया। मेरे सैनिक मेरे पीछे आए और हम भयभीत वानरों के सामने उतरे। मेरे बाल और मेरे घोड़े की अयाल में आग लग गई थी और मैं देख सकता था कि मेरी आकृति ने कितना आतंक फैलाया था।
मैं उसकी आँखें देख सकता था। उस पल भी, मेरे मन में हैरानी थी। ‘वह कितना काला था!’ वह घोर भयभीत होकर पीछे हट गया। जैसे ही मैंने अपनी तलवार उठाकर उसके हृदय में घोंपने की कोशिश की, हनुमान उछलकर मेरे पैर पकड़ लिए। मेरा संतुलन बिगड़ गया और मैं घोड़े से गिर गया। मैंने उस वानर-पुरुष के चेहरे पर लात मारी। एक कराह के साथ वह समुद्र में गिर गया। मैं तुरंत उठा और राम और लक्ष्मण की ओर बढ़ने लगा। वे अंधाधुंध तीर चला रहे थे और अपने ही कुछ सैनिकों को मार चुके थे, हालांकि कुछ तीर मेरे सैनिकों को भी लग गए। हम देव राजकुमारों की ओर तेज़ी से बढ़े, तभी अचानक ज़ोरदार बारिश शुरू हो गई। हम सब पर मूसलाधार बारिश हो रही थी, जिससे चलना-फिरना मुश्किल हो रहा था। विशाल लहरें पुल से टकराईं और दोनों तरफ से कई सैनिकों को बहा ले गईं। पुल

था। मैं बेहोश होने ही वाला था। मुझे बहुत कमजोर होने से पहले राम के पास पहुंचना था। मैंने विभीषण को लात मारी और वह समुद्र में गिर गया। जैसे ही मैं अपनी तलवार ऊंची करके राम की ओर दौड़ा, विभीषण किसी तरह पुल पर वापस चढ़ गया। मुझे इसका पता नहीं चला। मेरा पूरा ध्यान राम पर केंद्रित था। जैसे ही मैं आगे कूदा, विभीषण की तलवार एक बार फिर मेरी पीठ पर लगी। तलवार मेरे शरीर से एक इंच दूर से गुजरी, लेकिन मेरे कवच को कसकर बांधे रखने वाली गांठों को काट दिया। सहज ही मैंने पीछे मुड़कर विभीषण को लात मारी। वह उफनते, घूमते हुए समुद्री जल में विलीन हो गया। जैसे ही मैंने राम की ओर मुड़ने के लिए दोबारा देखा, मेरा कवच गिर गया और मैं अपने शत्रु के तीरों के सामने खुला खड़ा हो गया।
राम ने मौके का फायदा उठाते हुए मेरे पेट पर निशाना साधा। मैं हार नहीं मानना चाहता था, लेकिन शरीर से बहते खून से मेरा सिर चकरा गया। मेरे कदम लड़खड़ा गए और मेरी चाल बेहद धीमी हो गई। जब एक के बाद एक तीर मेरे पेट में चुभते गए, तो मेरे मन में बस एक ही विचार था - खुलकर विरोध करना। हर दर्द भरे कदम के साथ, तीरों की एक और बौछार मेरे नंगे शरीर को चीरती चली गई। धीरे-धीरे मैं गिर पड़ा और आखिरी चीज जो मुझे याद है, वह यह थी कि मैं एक गहरे हरे रंग की लहर में समा गया। फिर मेरी दुनिया मंद पड़ गई।
जब मैंने आँखें खोलीं, तो चारों ओर सन्नाटा पसरा हुआ था। धरती अँधेरी और ठंडी थी। कुछ लोग मेरे आस-पास खड़े थे, लेकिन मैं उनके चेहरे नहीं देख पा रही थी। तभी एक लंबा, सांवला सा आदमी आया और मेरे सिर के पास खड़ा हो गया। ‘राम…’ मैं उसे गले से पकड़ना चाहती थी, लेकिन धरती ने मुझे थामे रखा। मानो वह मेरे शरीर को वापस अपने वश में करने वाली थी। राम ने संस्कृत में कुछ बुदबुदाया, स्वर्ग में स्थान पाने के बारे में कुछ। मैं ज़ोर से हँसना चाहती थी। दिखावटी प्रणाम करते हुए मैंने अपनी हथेलियाँ जोड़ लीं। बेहोश होने से पहले मेरे मन में यही आख़िरी विचार आया कि उस मूर्ख ने मान लिया था कि मैं उसे प्रणाम कर रही हूँ। मेरा घिनौना मज़ाक उस पर बेअसर रहा। ये आदमी और उनका अहंकार!

61 विजेता और उनके मार्ग

भद्र
आज उनका अंतिम संस्कार है। दोपहर ढल रही थी और मैं उमस भरी गर्मी में ऊंघते हुए भीड़ के बीच खड़ा था। हवा में उदासी और दहशत छाई हुई थी। विजयी सेनाएं कल रात शहर में घुस आई थीं। वानरों ने शहर में लूटपाट, बलात्कार और तोड़फोड़ की। अधिकांश लोग जंगलों में भाग गए थे, जबकि कुछ ने बहादुरी से अपनी थोड़ी-बहुत संपत्ति की रक्षा करने की कोशिश की। कुछ ने हमलावर वानर सेना के सामने आत्मसमर्पण कर दिया, लेकिन वे किसी को बंदी बनाने के मूड में नहीं थे। दया की उम्मीद करने वाले मूर्खों को बेरहमी से मार डाला गया। अन्न भंडार जला दिए गए और मंदिरों को लूट लिया गया। रावण का भव्य महल लगभग गिरा दिया गया था, लेकिन विभीषण ने हस्तक्षेप किया और सुनिश्चित किया कि किले के अंदर सभी लोग सुरक्षित रहें। इस प्रकार एक बार फिर कुलीनों ने अपनी जान और संपत्ति बचा ली। लंका के असहाय आम लोगों पर वानर लुटेरे टूट पड़े थे।
सुबह होते-होते स्थिति कुछ हद तक नियंत्रण में आ गई थी और कई बेचारे असुरों को आसपास के जंगलों से वानरों की सेना ने पकड़कर जबरदस्ती शहर वापस ला दिया था। पिछली रात मैं चुपके से समुद्र तट पर गया था ताकि मारे गए सैनिकों द्वारा छोड़ी गई कोई भी कीमती चीज़ ढूंढ सकूँ। यह जोखिम भरा था, लेकिन इससे आसानी से पैसे मिल जाते। इसके अलावा, यह एक सुरक्षित जगह थी। वे किसी असुर के वहाँ होने की उम्मीद बिल्कुल नहीं करते। मेरे जैसे दो-तीन और लोग भी मृतकों या गंभीर रूप से घायलों के बीच कीमती सामान की तलाश कर रहे थे, लेकिन हम एक-दूसरे से उचित दूरी बनाए हुए थे।

तभी मेरी मुलाकात सम्राट रावण से हुई। चाँदनी रात के धुंधले प्रकाश में मैंने अपने स्वामी और राजा को पहचान लिया। वे भारी साँसें ले रहे थे और दर्द से कराह रहे थे। सियार उन्हें जिंदा खा रहे थे। उनके कंगनों की सुनहरी चमक ने मुझे उनकी ओर आकर्षित किया था। पहले तो मुझे यकीन नहीं हुआ, लेकिन जैसे ही मैं उन्हें देखने के लिए झुका, उन्होंने एक कराह निकाली। 'महानतम का पतन हो गया।' इस व्यक्ति ने एक ऐसे समुदाय और लोगों के लिए लड़ाई लड़ी थी जिन्होंने अपना सम्मान, अपनी स्वतंत्रता, अपने मूल्य और अपनी संस्कृति उन विदेशियों के हाथों खो दी थी जिन्होंने उन पर आक्रमण करके उन्हें जीत लिया था। रावण ने असुरों को सम्मान और आत्मविश्वास दिया, हमारी प्राचीन संस्कृति में विश्वास और गौरव जगाया और हमारी सभ्यता को गौरव की नई ऊँचाइयों पर पहुँचाया। हाँ, वह एक अत्याचारी शासक रहा होगा। उसने असुरों के लोकतांत्रिक और समतावादी समाज को नष्ट कर दिया और उसे एक क्रूर युद्ध मशीन में बदल दिया। हाँ, वह विलासिता में डूबा रहा और जो चाहता था वही करता रहा। उसने जो समाज बनाया था वह परिपूर्ण नहीं था। हममें से अधिकांश लोग गरीब ही रहे। फिर भी हम जानते थे कि कड़ी मेहनत और भाग्य हमें धनी और शक्तिशाली बना सकते हैं। देवों में ब्राह्मणों की तरह जन्मजात विशेषाधिकार प्राप्त जातियाँ नहीं थीं। अपनी घोर गरीबी और धनी एवं विशेषाधिकार प्राप्त लोगों के प्रति अपने तीव्र क्रोध के बावजूद, देव राज्यों में अपने समकक्षों की तुलना में हमें एक विलासिता प्राप्त थी - हमारे साथ मनुष्यों जैसा व्यवहार किया जाता था। हममें से अधिकांश गरीब थे, लेकिन हमारी गरीबी में एक मौन गरिमा थी। लेकिन जब मैं अपने गिरे हुए राजा के ऊपर झुकी, तब मुझे इनमें से किसी बात का ज्ञान नहीं था। बहुत बाद में, ये बातें मुझे स्पष्ट हुईं। लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी।
बूढ़े राजा ने कुछ बुदबुदाया, लेकिन मैं समझ गई कि वे क्या कहना चाह रहे थे। मैंने उनके माथे को छुआ। वह बहुत गर्म था। उन्हें बुखार था और वे ज़ोर-ज़ोर से साँस ले रहे थे। वे मर रहे थे और यह देखना असहनीय था। उन्होंने फिर कुछ बुदबुदाया। मैं बस इतना समझ पाई कि वे चाहते थे कि मैं उन्हें कहीं ले जाऊँ। बेचारे! मैं खुद पर काबू नहीं रख पाई और रोने लगी। मैंने उनका सिर अपने हाथों में लिया और उन्हें अपने सीने से लगा लिया। 'मैं एक असली राजा को गले लगा रही थी।' उस पल मुझे कितना रोमांच महसूस हुआ! अपनी उत्तेजना में मैंने उनसे कहा कि मैं बदला लूँगी। "महाराज, मैं आपका काम पूरा करूँगी।

हिलने की हिम्मत करने वाले किसी भी व्यक्ति को बेरहमी से पीटा। असुर भयंकर क्रोध और बेबसी के साथ देख रहे थे, क्योंकि उनकी स्त्रियों को सड़कों पर घसीटा जा रहा था। भय एक भयानक कोहरे की तरह छाया हुआ था जो सूर्योदय के काफी देर बाद तक छंटने का नाम नहीं ले रहा था। हैरानी की बात यह थी कि दिन साफ और हवादार था। कल की मूसलाधार बारिश के बाद सब कुछ ताजा लग रहा था। पेड़ बेहद हरे-भरे थे और आकाश गहरा नीला था, जिसमें मुलायम, रूई जैसे बादल इधर-उधर तैर रहे थे। जगह-जगह छोटे-छोटे पोखर बन गए थे और मेंढक उनमें उछल-कूद कर रहे थे। पूरी दुनिया जगमगा रही थी। एक दिन से भी कम समय में, ऐसा लग रहा था मानो रावण और उसके भयानक सपने कभी अस्तित्व में ही नहीं थे। मैंने रावण के शव से चुराए गए आभूषणों को अपनी धोती में छुपा लिया। चुराया हुआ शब्द काफी नहीं था, वापस पाया हुआ कहना बेहतर होगा, क्योंकि रावण की जो भी संपत्ति थी, वह हमसे छीन ली गई थी - मुझसे और मेरे जैसे लोगों से, जो यहां अगले रावण का इंतजार कर रहे हैं। महल के शिखर पर विष्णु का ध्वज ऊँचा लहरा रहा था। हम अपने नए स्वामी, राम का स्वागत करने के लिए प्रतीक्षारत थे। कहीं हम नए भगवान द्वारा दिए जाने वाले अद्भुत आशीर्वादों से विमुख न हो जाएँ, इसलिए क्रूर वानरों ने हमें बलपूर्वक वहीं रोक रखा था।
दोपहर तक, गर्मी से लोग बेहोश होने लगे थे। मध्य भारत की भीषण लेकिन शुष्क गर्मी के आदी वानर, यहाँ की हल्की लेकिन उमस भरी उष्णकटिबंधीय गर्मी में पसीने से तरबतर हो रहे थे। इससे वे और भी चिड़चिड़े और क्रोधित हो गए थे। ज़रा सी भी हरकत पर उन्हें बेरहमी से पीटा जाता था। मैं एक किशोर के बगल में बैठा था जो कुछ ही दूरी पर खड़े वानर सैनिकों को टकटकी लगाए देख रहा था। मुझे दूर से ही खतरे का आभास हो गया था। मैं जानता था कि उस किशोर के मन में क्या चल रहा है। मुझे जितनी जल्दी हो सके इस जगह से निकलना था। लेकिन मैं किसी का ध्यान आकर्षित किए बिना कैसे निकल सकता था? इससे पहले कि मैं भागने की कोई योजना बना पाता, उस किशोर ने कार्रवाई कर दी। अपनी जगह से उछलकर वह बेखबर सैनिकों की ओर दौड़ा। शोर सुनकर वे मुड़े लेकिन किशोर के वारों की पूरी ताकत उनके चेहरों पर पड़ी। वे लड़खड़ाकर गिर पड़े। किशोर ने उनके भाले छीन लिए और बार-बार उनके शरीर में घोंप दिए। मानो इशारा मिलते ही, कई युवकों ने वानर सैनिकों पर हमला कर दिया। लेकिन मेरे समेत अधिकांश पुरुषों ने बिना किसी प्रतिक्रिया के इस घटनाक्रम को देखा। अधिकाधिक

सूरज ने अशांत सागर को रक्तमय कर दिया, हमने सीमाओं से रहित, समानता की दुनिया के अपने सपनों को दफना दिया। अनेक युगों तक, भारत के असुरों ने दुनिया को गुलामी और जाति-विहीन दुनिया की आशा की किरण दिखाई, जहाँ हृदय में प्रज्वलित और स्वप्न देखने की महत्वाकांक्षा रखने वाला कोई भी व्यक्ति अपना भाग्य स्वयं गढ़ सकता था। वह सपना हजारों वर्ष पहले तब चकनाचूर हो गया जब सरस्वती और सिंधु नदियों के किनारे बसे हमारे शहर देवों के बर्बर आक्रमणों के शिकार हो गए। फिर भी, महाबली और रावण जैसे नायकों में इसे पुनः अभिव्यक्ति मिली।
और वह वीर अब एक जानवर द्वारा पकड़ी गई लाठी की नोक पर ऊपर-नीचे झूल रहा था। जुलूस समुद्र के पास रुक गया। भीड़ यह देखने के लिए समुद्र तट की ओर दौड़ी कि क्या हो रहा है। असुर सैनिक, जो कुछ घंटे पहले वानरों से लड़े थे, अब भीड़ को नियंत्रित करने के लिए अपने शत्रुओं के साथ मिल गए थे। वे अब नए शासन की सेवा कर रहे थे और चाहते थे कि उनके वेतन, पदोन्नति और भत्ते सुरक्षित रहें। वे लोक सेवक थे, जो अपने आकाओं के आदेश पर जनता पर भारी प्रहार करने के लिए तैयार थे। उनकी लाठियाँ बेचारे आम आदमी की पीठ पर भयानक प्रहार कर रही थीं। उन्होंने जनता को नेताओं के बहुत करीब जाने से रोकने के लिए एक श्रृंखला बनाई। महान पुरुषों के हमें संबोधित करने के लिए एक मंच बनाया गया था। हम सभी को समुद्र तट पर बैठने के लिए कहा गया। हमें नीचे धकेला गया, दबाया गया और जरूरत पड़ने पर जमीन पर पटक दिया गया। कुछ देर बाद जब राम के चापलूस, और फिर उनके भी चापलूस, इधर-उधर भागते हुए अपने- अपने आकाओं के सामने गिड़गिड़ाने लगे और अपने अधीनस्थों पर चिल्लाने लगे, तब राम मंच पर चढ़े। उनके माथे पर गहरी शिकन थी। लेकिन जैसे ही उन्होंने हाथ हिलाया, उनके चेहरे पर फिर से मुस्कान आ गई। कुछ लोगों ने हाथ हिलाकर उनका अभिवादन किया और फिर से उनके चेहरे पर शिकन लौट आई। चापलूसों को इशारा मिल गया और उन्होंने अपने-अपने पुलिसकर्मियों के पास संदेशवाहक भेज दिए। जल्द ही हम सब राम को हाथ हिलाकर अभिवादन करने लगे और उनके हर शब्द पर जयकारे लगाने लगे, हालांकि हमें एक भी शब्द समझ नहीं आ रहा था, क्योंकि वे संस्कृत में बोल रहे थे। थोड़ी देर बाद, विभीषण खड़े हुए और राम के कान में कुछ फुसफुसाया। फिर उन्होंने राम के भाषण का वाक्य-दर-वाक्य अनुवाद किया। जाहिर है, हम राम के भाषण में सही जगहों पर ताली नहीं बजा रहे थे।

व्यवस्था थी। वे बिना किसी जिम्मेदारी के सत्ता का आनंद ले सकते थे। यही हमारा भाग्य था, एक विदेशी की सलाह पर एक रीढ़विहीन शासक द्वारा शासित होना। विभीषण ने अपना भाषण शुरू किया। उन्होंने देवताओं से क्षमा मांगी और अपने पथभ्रष्ट भाइयों, रावण और कुंभकर्ण के राम के देवत्व को न पहचानने के विलाप के साथ अपना भाषण समाप्त किया। जैसे ही सूर्य अस्त हुआ और लंका पर अंधकार छा गया, विभीषण ने कहा कि वे अपने शहीद भाई का अंतिम संस्कार देवताओं की वैदिक परंपरा के अनुसार करेंगे। भीड़ में विरोध की लहर उठी, लेकिन तलवारें उठाए पुलिसकर्मियों की बढ़ती संख्या को देखकर वह शांत हो गई। कुछ ब्राह्मण मंच पर आए और राम, विभीषण, लक्ष्मण और सीता, सभी सम्मानपूर्वक उनके पास चढ़ गए। राम, लक्ष्मण और विभीषण ब्राह्मणों के चरणों में गिर पड़े और उनका आशीर्वाद प्राप्त किया।
लेकिन जब सीता ने उनके पैर छूने की कोशिश की, तो वे घृणा से पीछे हट गए। भीड़ में सन्नाटा छा गया। हमें लगा कि कुछ नाटकीय और सनसनीखेज घटित हो रहा है। एक ब्राह्मण ने राम से कुछ फुसफुसाया और हमने देखा कि उनका चेहरा लाल हो गया। राम ने लक्ष्मण से बात की और उनके चेहरे का रंग उड़ गया। एक अजीब क्षण के लिए, किसी ने कुछ नहीं किया। फिर लक्ष्मण ने सीता के हाथ पकड़े और उन्हें मंच से नीचे खींच लिया। उन्होंने छूटने की कोशिश की, लेकिन उनके देवर ने उन्हें कसकर पकड़ लिया। उन्हें मंच के ठीक नीचे एक कोने में धकेल दिया गया, जहाँ वे शर्म, आक्रोश और लज्जा से जलती हुई खड़ी रहीं। एक ब्राह्मण आगे आया और संस्कृत में बोला।
तब विभीषण आगे बढ़े और ब्राह्मण के शब्दों का अनुवाद किया। उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक कहा, “देखो, मेरे देशवासियों, ब्राह्मण कितने सुंदर हैं। मेरे प्रभु राम जगत के राजा हैं, परन्तु वे भी विधि से ऊपर नहीं हैं। हम सब जानते हैं कि उनकी पत्नी सीता को राक्षस रावण ने बंदी बना लिया था। यह हमारा दुख है कि जिसे मैं कभी भाई कहता था, उसके कारण मेरे प्रिय प्रभु की पत्नी जैसी गुणी स्त्री अपवित्र हो गई। कृपया संदेह न करें, सीता देवी मेरे लिए माता के समान हैं। परन्तु हमें इस बात पर गर्व होना चाहिए कि विद्वान पंडितों ने अपने नियमों को सब पर समान रूप से लागू किया है। उन्होंने अपने ज्ञान से यह निर्णय दिया है कि सीता देवी को देवताओं के प्राचीन रीति-रिवाजों के अनुसार अपनी पवित्रता और सतीत्व सिद्ध करना

विष्णु, सामाजिक व्यवस्था के रक्षक हैं। भगवान ने वचन दिया था कि जब भी इस व्यवस्था को कोई खतरा होगा, वे हम जैसे साधारण मनुष्यों के बीच जन्म लेंगे और धर्म की पुनर्स्थापना करेंगे। रावण और उसकी विचारधारा खतरनाक थी और उसने इस व्यवस्था को भंग कर दिया था। वह कहता था कि एक साधारण किसान बालक होने के बावजूद, जिसने आधा गोरी जाति का होने के बावजूद, केवल अपनी बहादुरी, परिश्रम, चतुराई और कुछ साथियों की मदद से दुनिया का सबसे शक्तिशाली साम्राज्य खड़ा किया था। उसकी क्षणिक विजय ने शायद कई लोगों को चकित कर दिया हो। लेकिन मैंने ईश्वर पर भरोसा रखा। अब रावण की सारी उपलब्धियाँ मेरी हैं। क्या मैंने इसके लिए मेहनत की? क्या मैंने अपनी बुद्धि का प्रयोग किया? क्या मैंने प्रहस्त, कुंभकर्ण और रुद्रक जैसे दुष्टों का समूह बनाया? मैंने केवल ईश्वर पर पूर्ण विश्वास रखा। रावण मारा गया और उसका राज्य और उसकी समृद्धि अब मेरी है।
पहले, इस सामाजिक व्यवस्था को हथियाने वाला एक और शासक, जो मूर्खतापूर्वक मानता था कि सभी मनुष्य समान हैं, भारत के पश्चिमी तट पर राज करता था। आप महाबली को जानते होंगे, जिसने मुज़ुरी से शासन किया और विष्णु की सामाजिक व्यवस्था को चुनौती दी। उस समय उस शक्तिशाली सम्राट को एक छोटे ब्राह्मण बालक वामन ने पराजित किया, जो विष्णु का ही दूसरा अवतार थे। यह रावण के लिए एक सबक होना चाहिए था। मैंने उसे चेतावनी देने की कोशिश की, क्योंकि मैं कभी उसे अपने भाई के समान मानता था। लेकिन वह इतना अहंकारी और घमंडी था कि अच्छी सलाह सुनने को तैयार नहीं था; जीवन में इतना मग्न था कि मृत्यु की चिंता ही नहीं करता था। उसने सोचा कि उसकी सेनाएँ उसे बचा लेंगी। उसने सोचा कि उसने अपनी प्रजा को सुखमय जीवन दिया है, इसलिए वे उसे बचा लेंगे। उसने सोचा कि उसने जो विशाल शिव मंदिर बनवाए हैं, वे वास्तुकला के चमत्कार हैं, इसलिए शिव उसे बचा लेंगे। लेकिन जब समय आया, तो रावण के पास कोई उत्तर नहीं था। उसे बचाने वाला कोई नहीं था, सिवाय उन निर्धन और गरीबों के, जिन्हें सही-गलत का ज्ञान नहीं था।
जब राम आए, तो मैंने उनके चरणों में गिरकर उन्हें पहचान लिया, क्योंकि मैंने ईश्वर को पा लिया था। वरुण, लंकिनी और जंबुमाली जैसे सभी बुद्धिमान और प्रतिष्ठित पुरुषों ने भी ऐसा ही किया। और देखिए, हमें कितना फल मिला है। सरकारी कर्मचारी, व्यापारी, पुलिस और रावण की सेना, अधिकांश ने अब अपनी मूर्खता को पहचान लिया है और राम के नाम पर मेरे शासन का समर्थन करने का

वचन दिया है। मुझे विश्वास है कि आप सभी, जिन्होंने रावण या महाबली के काल्पनिक सपनों पर मूर्खतापूर्ण विश्वास किया था, अब हमारे स्मृतियों में बताए गए मार्ग पर चलना शुरू कर देंगे। केवल उनकी सर्वोच्च इच्छा के प्रति पूर्ण समर्पण से ही मोक्ष प्राप्त होता है। महान ऋषि मनु द्वारा परिभाषित हमारे धर्म के नियम शाश्वत और दिव्य हैं। ये नियम जीवन के हर पहलू को समाहित करते हैं। जन्म से मृत्यु तक, ये धार्मिक नियम आपको मार्ग दिखाएंगे।
ज्ञान उन लोगों के हाथों में खतरनाक होता है जो इसका सही उपयोग करना नहीं जानते। असुरों ने अब तक सभी को शिक्षित करने की गलती की थी, यह सोचे बिना कि इससे दुष्ट और अज्ञानी लोगों को ज्ञान मिलेगा। हमने भी सभी मनुष्यों को समान समझने की गलती की। लेकिन अब हालात बदलेंगे। हम इस मूर्खता को जारी नहीं रखेंगे। केवल प्रथम तीन जातियों को ही शिक्षा का अधिकार होगा और वह भी केवल उनके पेशे के लिए आवश्यक शिक्षा तक ही सीमित रहेगा। बाकी जातियों का उद्धार अपने स्वामियों की सेवा में निष्ठा और ईमानदारी से करने में है, अपने कर्मों के परिणामों की चिंता किए बिना। यह नियम स्वयं भगवान विष्णु द्वारा निर्धारित किया गया है। जो कोई भी इस नियम को बदलने या चुनौती देने का प्रयास करे, वह अपने ही जोखिम पर ऐसा करे।
विभीषण रुका और भीड़ की ओर भौंहें चढ़ाकर बोला, “यह भूमि पवित्र है, क्योंकि स्वयं भगवान विष्णु ने यहाँ अवतार लिया था। मनुष्य भाग्य को चुनौती दे रहे थे, मनुष्य देवताओं को चुनौती दे रहे थे। रावण ने संसार को यह सिखाने का प्रयास किया कि मात्र मानवीय प्रयास और इच्छाशक्ति से सफलता प्राप्त की जा सकती है। वह महाबली से भी बदतर था, क्योंकि महाबली ने बुद्धिमानी से अपना राज्य विष्णु के वामन अवतार लेने पर त्याग दिया था। लेकिन मेरे भाई, मुझे यह कहते हुए शर्म आती है, उसने स्वयं भगवान से युद्ध करने का विकल्प चुना। रावण एक वीर पुरुष था, लेकिन वह अहंकारी और घमंडी था, और सोचता था कि वह विष्णु का मुकाबला कर सकता है। उसने तुम्हें भाग्य को चुनौती देना सिखाकर और यह सोचने के लिए प्रोत्साहित करके कि तुम अपने भाग्य के स्वामी हो, तुम्हें गलत शिक्षा दी।”
भगवान ने रावण की दुष्ट बुद्धि से उत्पन्न अराजकता का अंत कर दिया है। वर्णाश्रम धर्म की शांतिपूर्ण व्यवस्था बहाल हो गई है। अब नालियाँ और शौचालय साफ़ करने वाले स्वयं को संस्कृत और वेद पढ़ने वालों के बराबर नहीं

समझेंगे। अब ताड़ी बनाने वाला स्वयं को रेशम बेचने वाले व्यापारी के बराबर नहीं समझेगा। अब खेत जोतने वाला स्वयं को लेखाकार के बराबर नहीं समझेगा। हर किसी का अपना स्थान है और वह अपना स्थान जानता है।
मंदोदरी ने एक सदाचारी विधवा के आचरण का आदर्श स्थापित करने में अग्रणी भूमिका निभाई है। हम सभी जानते हैं कि युद्ध की भीषण गर्मी में उन पर क्या कलंक लगा। दोनों पक्षों द्वारा घोर अपराध किए गए और वह दुर्भाग्यपूर्ण शिकार थीं,” विभीषण रुक गए और मंदोदरी की ओर देखते हुए अपनी मुस्कान दबा ली।
सैनिकों के बीच कुछ ताने और गालियाँ चल रही थीं, लेकिन मैं हम सबके दिलों में जल रही बेबस नफ़रत और गुस्से को महसूस कर सकता था। कमीना! उसका रुकने का कोई इरादा नहीं था। हवा में बारिश की आशंका भरी थी और नारियल के पेड़ों के बीच सूरज लुका-छिपी खेल रहा था। काश मैं किसी तरह उस आदमी का मुंह बंद कर पाता जो खुद को असुरों का सरदार कहता था...
रानी के साथ जो हुआ वह दुर्भाग्यपूर्ण था, और भगवान राम ने इसके लिए जिम्मेदार लोगों को दंडित किया है। लेकिन हमारे लिए शर्म की बात है कि मेरे भाई ने उस घटना के बाद रानी को स्वीकार कर लिया। वह, अन्य असुरों की तरह, स्त्री की पवित्रता और शुद्धता के मूल्यों का पालन नहीं करता था। उस घटना के बाद वह उसे कैसे स्वीकार कर सकता था? लेकिन, उसे अच्छे और बुरे का ज्ञान नहीं था। यह युद्ध क्यों शुरू हुआ? क्या इस विनाश का कोई कारण था? वह महान भगवान राम के सामंत के रूप में राजा बना रह सकता था।
मुझे यह कहते हुए शर्म आती है कि मेरी अपनी बहन सूर्पनखा ने इस युद्ध की शुरुआत की। उसे पूरी तरह दोषी नहीं ठहराया जा सकता। वह हमारी उस संस्कृति की उपज थी जिसने महिलाओं को स्वच्छंद जीवन जीने की स्वतंत्रता दी थी। उसने सुंदर लक्ष्मण को बहकाने की कोशिश की। एक विधवा का प्रेम में पड़ना किसी भी पुरुष को स्वीकार्य नहीं था। लक्ष्मण ने सूर्पनखा को नाक और कान काटकर दंडित किया।
रावण ने भगवान द्वारा हमारी अनैतिक बहन के लिए निर्धारित दंड को स्वीकार करने के बजाय, भगवान राम के विरुद्ध युद्ध छेड़ने का निर्णय लिया। कितना अहंकार, कितना झूठा अभिमान! देखो उसका क्या हाल हुआ। मैंने सूर्पनखा को देश से निकाल दिया है। वह मेरी बहन है, लेकिन मैं एक उदाहरण प्रस्तुत करना चाहता था और अपने स्वामी को यह सिद्ध करना चाहता था कि असुरों ने अपने

पुराने तौर-तरीकों को त्याग दिया है। मेरे मित्र वरुण ने यह सुनिश्चित किया कि उसे समुद्र पार बर्बरों के देश में निर्वासित कर दिया जाए। अब वह एक भिखारी और निर्धन है, भीख मांगकर अपना जीवन यापन कर रही है। मुझे अपनी बहन के इस भाग्य पर दुख है, लेकिन वह इससे कम की पात्र नहीं थी।
फिर मेरे भाई ने भगवान राम की पत्नी का अपहरण कर लिया। मैंने सुना है कि सीता रावण की पुत्री हैं और रावण ने उनका अपहरण करके अपनी पुत्री को बचाने की कोशिश की। इससे अधिक घृणित कुछ नहीं हो सकता। एक नीच कुल का असुर एक देव राजकुमारी का पिता कैसे हो सकता है? राम रावण के समान नहीं हैं। सीता, उनकी प्रिय पत्नी, जिनके लिए उन्होंने एक भीषण युद्ध लड़ा और अपने और अपने सैनिकों के प्राण दांव पर लगाए, उन्होंने भी पाप किया है। मुझे विश्वास है कि सीता, देव राजकुमारी और भगवान राम की पत्नी होने के नाते, पवित्र रहीं। रावण ने उनका अपमान करने का साहस नहीं किया। लेकिन, भगवान राम जानते हैं कि रावण और अन्य असुरों की वासना भरी निगाहें उनकी पत्नी के पवित्र शरीर पर पड़ी थीं। कौन सा पति इसे सहन करेगा? भगवान राम एक ऐसे पुरुष हैं, मेरे मृत भाई के विपरीत, जिसने अपमानित पत्नी को स्वीकार किया, जो एक उदाहरण स्थापित करना चाहते हैं और पूरी दुनिया को अपनी पत्नी की पवित्रता और शुद्धता साबित करना चाहते हैं। वे रावण और अन्य पुरुषों के वासनापूर्ण विचारों को अपनी पत्नी के शरीर और आत्मा से हमेशा के लिए जला देना चाहते हैं।
यह एक अत्यंत मार्मिक व्यक्तिगत मामला है, लेकिन यह देव राजा द्वारा पूरे विश्व के लिए अनुकरणीय एक सार्वजनिक संकेत भी है। असुरों के विपरीत, देव अग्नि और जीवन की पवित्रता में विश्वास करते हैं। अग्नि सर्वोच्च ईश्वर है, जीवन और ऊर्जा का दाता है। अग्नि सब कुछ शुद्ध करती है। सीता का असुरों के साथ रहना और उनकी कामुक दृष्टियों का सामना करना; इतने लंबे समय तक अपने पति से दूर रहना; रावण की पुत्री होने की निराधार अफवाहें; ये सभी अशुद्धियाँ अग्नि द्वारा शुद्ध हो जाएँगी। आप सभी के सामने, असुरों और वानरों के सामने, पूरे विश्व के सामने, सीता उस सर्वोच्च परीक्षा से गुजरेंगी जो देव एक स्त्री की पवित्रता को परखने के लिए लेते हैं - अग्नि परीक्षा। मेरे भाई की चिता के पास जल रही दिव्य अग्नि यह निर्धारित करेगी कि सीता माता कितनी पवित्र हैं। यदि वह पवित्र और शुद्ध हैं, तो वह अक्षुण्ण रहेंगी। यदि वह अशुद्ध हैं, तो दिव्य अग्नि उन्हें भस्म कर देगी।

भीड़ में सन्नाटा छा गया। सबकी निगाहें राम की ओर मुड़ गईं, जो अपनी ऊँची पीठ वाली कुर्सी पर बैठे थे। वे नीचे देख रहे थे और मैं देख सकता था कि वे स्पष्ट रूप से भयभीत और परेशान थे। फिर भी वे खड़े होकर यह नहीं बोले, 'बस करो! मुझे अपनी पत्नी पर भरोसा है।' हनुमान तनावग्रस्त और घबराए हुए लग रहे थे, जबकि विभीषण अपने कर्तव्यों का आनंद ले रहे थे। लक्ष्मण का चेहरा पीला और चिंतित लग रहा था, लेकिन उन्होंने अपने जाने-माने गुस्से वाले चेहरे से इसे छिपाने की कोशिश की। मंदोदरी, जो एक कोने में अपने मुंडे हुए सिर को सफेद घूंघट से ढके बैठी थी, बेकाबू होकर रो रही थी।
वातावरण में तनाव व्याप्त था और मानो उसी तनाव को और बढ़ाने के लिए आकाश में पहली बार बिजली कड़की। मैं देख सकता था कि तूफान के काले बादल तेजी से द्वीप की ओर बढ़ रहे हैं। सूर्य उन घने काले बादलों की चांदी जैसी परछाई मात्र था। तेज हवा से नारियल के पेड़ हिल रहे थे और विशाल लहरें समुद्र तट के पथरीले पत्थरों से टकरा रही थीं। लोग खड़े हो गए और सीता को दिव्य अग्नि की ओर खींचने लगे। पहले तो सीता ने विरोध किया और अपने पति से उन्हें बचाने की गुहार लगाई। लेकिन जब उन्हें समझ आया कि उनके पति अपनी पवित्रता साबित करने के लिए उनसे क्या करवाना चाहते हैं, तो वे निराश हो गईं और दया भरी निगाहों से उन्हें देखने लगीं। पति ने अपनी निगाहें फेर लीं और सीधे आगे देखने लगे, सीता से परे, अपने सैनिकों से परे, हमसे परे, क्षितिज पर किसी दूर बिंदु की ओर। उनकी आँखों में आँसू भर आए। उनके और उनके क्रोधित भाई के बगल में, मोटे ब्राह्मण पुजारी संस्कृत में मंत्रोच्चार कर रहे थे, जिससे भीड़ की उत्तेजित आवाजें और मंदोदरी और अन्य महिलाओं के सिसकने की आवाज दब गई।
समुद्र तट पर, असुरों के नव-राजा और राम के सानिध्य विभीषण, हाथ में जलती हुई मशाल लिए, चेहरे पर संतुष्टि भरी मुस्कान लिए खड़े थे। उनके सामने असुरों के पूर्व राजा मृत पड़े थे, जिनका आधा चेहरा जानवरों द्वारा खाया जा चुका था, और सिर उनके सड़ते हुए शरीर से अलग हो चुका था, और वे चिता पर पड़े थे। उनके पास ही, पवित्रता का ज्ञान रखने वाली अग्नि अपनी सौ भुजाओं के साथ प्रज्वलित हो रही थी।
असुर सैनिक सीता को विभीषण के पास छोड़कर वापस लौट गए। भीड़ में उत्साह चरम पर पहुँच गया। उन्होंने पहले कभी ऐसा दृश्य नहीं देखा था। सूर्य लाल सागर में डूब गया जो ऊपर-नीचे हो रहा था। चाँदी जैसे किनारों वाले काले

बादल आकाश में छा गए, मानो एक अंधकारमय और भयावह दुनिया बना रहे हों, जिसमें भयानक दिखने वाले सरीसृप घूम रहे थे और डूबते सूरज से अनगिनत रंग प्रतिबिंबित कर रहे थे।
“इसी के साथ रावण के दुष्ट शासन का अंत होता है। इसी के साथ उस व्यक्ति के दुस्साहस का अंत होता है जिसने देवताओं को चुनौती देने का साहस किया। इसी के साथ उस राक्षस के भ्रष्ट जीवन का अंत होता है जिसने लगभग संसार को नष्ट कर दिया था। श्री राम की जय हो…” विभीषण ने भीड़ पर गरजते हुए कहा और बारिश शुरू होते ही अपने भाई की चिता को अग्नि दी।
रावण को राख में बदलते देख मुझ पर गहरा और अकथनीय शोक छा गया। एक युग का अंत हो गया था। वानरों में ज़ोरदार जयकार हुई जबकि असुर शर्म से सिर झुकाए खड़े रहे। सीता अपने पिता के जलते हुए शरीर के पास निर्मल खड़ी रहीं, अपने ही दुख और विश्वासघात की दुनिया में खोई हुई थीं।
“असुरों के राजा के रूप में, मैं घोषणा करता हूँ कि यह दिन भारत के प्रत्येक गाँव में प्रतिवर्ष विजय दिवस के रूप में मनाया जाएगा। इस दिन, प्रत्येक पुरुष, स्त्री और बच्चे को भगवान विष्णु के अवतार, अयोध्या के श्री रामचंद्र की रावण नामक दुष्ट पर विजय की याद दिलाई जाएगी। रावण का इस दिन, भारत के प्रत्येक गाँव, गली और घर में प्रतिवर्ष दस लाख बार वध हो…” विभीषण ने जलती हुई मशाल आकाश की ओर उठाई और वानरों तथा कुछ असुरों ने उत्साहपूर्वक जयकार की। आकाश ने क्रोधित होकर गरजते हुए उत्तर दिया और हल्की बारिश शुरू हो गई। चिता धीरे-धीरे जल रही थी और घना, काला धुआँ ऊपर की ओर उठ रहा था, हवा में झिलमिलाता, बिखरता और फिर से बनता हुआ।
“अब पवित्रता की परीक्षा का समय आ गया है, हमारे प्रभु की आदरणीय और प्रिय पत्नी की अग्नि परीक्षा।” विभीषण ने घोषणा की। एक असुर सेवक ने जलती हुई चिता में और घी डाला। लपटें ऊंची उठ गईं और हवा में चटकने लगीं। हम सब भय और उत्तेजना से देख रहे थे, सीता हिचकिचा रही थीं, उस धधकती आग को देख रही थीं जिसमें उन्हें अपने पति के सामने अपनी पवित्रता साबित करने के लिए कदम रखना था। उन्होंने राम की ओर देखा, उनकी निगाहें अपनी ओर खींचने की कोशिश की, लेकिन भगवान, अन्य देवताओं की तरह, उस समय नज़रें फेर लेते हैं जब उनकी सबसे ज़्यादा ज़रूरत होती है। विभीषण अधीर हो गए और आग में और घी डालने का आदेश दिया। सीता कुछ क्षण और वहीं खड़ी रहीं। फिर वह धीरे-धीरे ज़मीन पर गिर पड़ीं। भीड़ में सन्नाटा छा गया। क्या वह पीछे हट गई थीं?

मेरे पास ही किसी ने फुसफुसाते हुए कहा, "हो सकता है कि वह उतनी पवित्र न हो जितनी दिखती है, इसीलिए वह आग का सामना करने के लिए तैयार नहीं है।"
उसके पड़ोसी दबे स्वर में हँसे, और हर कोई अपने-अपने मन में कामुक विचार भर रहा था।
मैंने गुस्से से मुड़कर कहा, “ये सब बकवास है! अगर वो गुणी नहीं भी है, तो भी ऐसा कैसे हो सकता है?”
क्या धधकती आग में प्रवेश करके इसे सिद्ध किया जा सकता है? आग सद्गुणी और दुर्गुणी के बीच भेद नहीं कर सकती।
सीता के बारे में टिप्पणी करने वाले व्यक्ति को मेरी बातें पसंद नहीं आईं। “तो तुम, एक अनपढ़ किसान, आग के बारे में सब कुछ जानते हो? विद्वान ब्राह्मणों ने यही कहा है। हम कौन होते हैं उनसे सवाल करने वाले?” हालांकि कुछ लोग संशय में दिखे, लेकिन अधिकतर ने सहमति में सिर हिलाया। इन मूर्खों से बात करने के चक्कर में मैं कुछ बातें समझ नहीं पाया था।
सीता खड़ी हो गई थीं। भीड़ को फिर से आभास हुआ कि कुछ होने वाला है। फिर अचानक शक्ति से वह धधकती आग की ओर दौड़ पड़ीं। क्या हमने सही सुना या यह मेरा भ्रम था? मुझे अभी भी यकीन नहीं है। क्या आग में कूदने से पहले उन्होंने "पिताजी..." कहा था? भीड़ में सन्नाटा छा गया और उसी क्षण आसमान खुल गया और मूसलाधार बारिश होने लगी। हवा एक भयंकर तूफान में बदल गई और नारियल के पेड़ हिलने-डुलने लगे, उनकी पत्तियां किसी डूबते हुए आदमी की बाहों की तरह बेकाबू होकर घूमने लगीं। चारों ओर असामान्य रूप से अंधेरा छा गया और चमकती बिजली ने सबको भूतिया रूप दे दिया। भीड़ अपने मृत राजा की चिता की ओर बढ़ने लगी और जल्द ही बेकाबू हो गई। पुलिसकर्मियों ने भीड़ को पीछे धकेला और चारों ओर अफरा-तफरी मच गई। चिता बुझ गई और हमने हनुमान को सीता को राम के पास ले जाते देखा। वह बेजान लग रही थीं, लेकिन मेरी अनुभवी दृष्टि से वह जीवित प्रतीत हुईं। तो, आखिरकार वह पवित्र थीं। मुझे वह क्षण याद आया जब मैंने विंध्य के जंगलों में उसे अपनी बाहों में लिया था, जीवन का एक छोटा सा बंडल जिसे असुर सरदारों ने मुझे दफनाने के लिए दिया था। मेले के बाद भीड़ छंट गई क्योंकि मुख्य कलाकार एक और रात के जश्न के लिए किले में चले गए। मैं भयंकर उष्णकटिबंधीय तूफान में भीगता हुआ वहीं खड़ा रहा जब तक कि भीड़ कम नहीं हो गई, फिर धीरे-धीरे रावण की चिता की ओर बढ़ा।
बारिश अभी भी हो रही थी, लेकिन पहले जितनी तेज़ नहीं। चिता अस्त-व्यस्त थी।

राख और कीचड़ का ढेर था, जिसमें हड्डियों के टुकड़े और अधजली खोपड़ी बेतरतीब ढंग से बाहर निकली हुई थीं। मैं वहाँ खड़ा था, समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूँ। फिर मैंने हड्डियों और महान असुर सम्राट के अन्य अवशेषों को उफनते समुद्र में फेंक दिया। कुछ देर बाद, मैं सोने के लिए घर वापस चला गया।

62 जीवन फिर से अंकुरित होता है

भद्र
रावण की मृत्यु के बाद के महीने असुरों के जीवन में एक भयानक दौर थे। नई जाति व्यवस्था को लेकर भ्रम की स्थिति थी और जातिगत संघर्ष भी खूब चल रहे थे। हर परिवार ने खुद को उस जाति से जोड़ लिया जिसे वे सर्वोच्च मानते थे। यदि केवल चार वर्णों के आधार पर स्पष्ट विभाजन होता, तो अपनी जाति का पता लगाना इतना मुश्किल नहीं होता। जाति व्यवस्था स्पष्ट होती और हर कोई या तो उसका पालन करता या उसके विरुद्ध संघर्ष करता। मुझे नहीं पता कि यह प्रतिभा का कमाल था या उलझे हुए विचारों का नतीजा, जिसने जाति और उपजातियों की इस विकट व्यवस्था को जन्म दिया। इसने हमारे समाज को लाखों हिस्सों में बाँट दिया, जिसमें ब्राह्मण स्पष्ट रूप से शीर्ष पर थे।
मुझे यह समझने में लगभग तीन महीने लग गए कि मैं धोबी जाति का था, जो सैद्धांतिक रूप से सुनारों, बढ़ई आदि से नीची थी, लेकिन घुमंतू गायकों, लकड़हारों, कुम्हारों और बाकी सभी से कहीं ऊँची थी। जब ऊँची जाति के लोग सड़क का इस्तेमाल करते थे, तो मुझे उस पर चलने की अनुमति नहीं थी। लेकिन बदले में, मुझे किसी कुम्हार को लात मारने का अधिकार था, अगर वह मेरे रास्ते में आने की हिम्मत करता। मेरी पवित्रता धूमिल हो जाती थी अगर मैं किसी लकड़हारे को छूता, लेकिन बदले में, अगर मैं कभी किसी बढ़ई को छूता, तो मैं अपवित्र कर सकता था। सबसे निचली जाति के इन लोगों में से कोई भी सड़कों पर नहीं चल सकता था, अच्छे कपड़े नहीं पहन सकता था, आलीशान घर नहीं बना सकता था और मंदिरों में प्रवेश नहीं कर सकता था - ये सभी अधिकार अन्य तीन वर्णों के लोगों के लिए आरक्षित थे। यह एक विकृत व्यवस्था थी और मनुष्य की नीच भावनाओं पर आधारित थी, जो अपने से नीचे वालों को अपमानित करती थी। मुझे

हो गया, तो मैंने इसे आजमाने का फैसला किया। जैसे ही मैंने प्रवास करने की अपनी इच्छा अस्पष्ट रूप से व्यक्त की, एक एजेंट मेरे लिए व्यवस्था करने आ गया।
एजेंट अधेड़ उम्र का आदमी था, शायद मेरी ही उम्र का। लेकिन चूंकि उसने मेरी तरह गरीबी और भूख का सामना नहीं किया था, इसलिए मैं उसे बूढ़ा चाचा जैसा लगता होगा। मुझे बहुत गुस्सा आया और मेरी पत्नी को हंसी भी आई, क्योंकि वह मुझे 'चाचा' कहकर बुलाने पर अड़ा हुआ था। वह एक सरकारी अधिकारी था, जिसने कुबेरा के साथ अपना करियर शुरू किया था और अब विभीषण के प्रशासन में एक वरिष्ठ अधिकारी था। उसका दावा था कि वह उदारवादी है और नए जाति नियमों को बहुत महत्व नहीं देता। हालांकि, अपनी पत्नी की खातिर, वह मेरे घर में नहीं आना चाहता था क्योंकि जाति व्यवस्था में वह मुझसे कुछ पायदान ऊपर था। उसने जलपान से भी इनकार कर दिया क्योंकि उसकी पत्नी को यह मंजूर नहीं होता कि वह किसी धोबी के हाथ का बना खाना खाए। मैं गुस्से से आग बबूला हो गया, लेकिन मेरी पत्नी शांत दिखी। वैसे भी हमारे पास उसे देने के लिए कुछ था नहीं, इसलिए जाति की शुद्धता पर उसके जोर देने से हम कुछ शर्मिंदगी से बच गए। हम नदी के किनारे एक पुराने इमली के पेड़ के नीचे मिले। वह पेड़ की एक उभरी हुई जड़ पर बैठ गया और फिर मोलभाव शुरू हो गया। दो बार उसने सौदे से मुकरने का नाटक किया और एक बार मैंने भी ऐसा ही किया। वह मुझे बताता रहा कि वह एक महत्वपूर्ण सरकारी अधिकारी है और उसे निम्न जाति के लोगों द्वारा दी जाने वाली छोटी-मोटी कमीशन की परवाह नहीं है। लेकिन यह स्पष्ट था कि वह सौदा पक्का करने के लिए बेताब था क्योंकि उसे दोनों पक्षों से एजेंट का कमीशन मिलने वाला था। वरुण अपने एजेंटों को अच्छी तनख्वाह नहीं देता था, इसलिए वे इच्छुक प्रवासियों से धमकी, फुसलाने और बहलाने-फुसलाने का काम करते थे। हम लगभग हाथापाई पर उतर आए थे, लेकिन मेरी पत्नी मुझे एक तरफ ले गई और मेरे उत्तेजित मन को शांत करने की कोशिश की।
अनिच्छा से मैं घर लौटा और आधे घंटे की खुदाई और बहुत सारी बेचैनी के बाद, रावण के आभूषण हाथों में कांपते हुए, मैं उस लालची सरकारी कर्मचारी से मिलने वापस गया। चांदनी में सोना चमक रहा था और एजेंट की आँखों में एक अलग ही चमक थी। वह नौकरशाह मेरी पत्नी से आम हालात और बढ़ती कीमतों, शिक्षा की बढ़ती लागत आदि के कारण मध्यमवर्गीय परिवार के लिए जीवन यापन कितना मुश्किल हो गया है, इस बारे में बातें कर रहा था। उसने अनमने ढंग से सोना

अपने हाथों में लिया और उसका वजन किया। उसके बाद वह मुस्कुरा उठा। सब तय हो गया था। दो दिनों के भीतर एक डोंगी हमें खुले समुद्र में लंगर डाले एक जहाज तक ले जाएगी। हमें बस जहाज पर चढ़ना था और सुदूर पूर्व के देशों के लिए प्रथम श्रेणी की यात्रा सुनिश्चित हो जाएगी। उसने पूर्वी देशों की खूब प्रशंसा की, जहाँ काम की कोई कमी नहीं थी और सोने से सजी सड़कों से आसानी से सोने के सिक्के उठाए जा सकते थे। जब चाँद सिर के ऊपर आ गया और सड़क पर यातायात कम हो गया, तब वह हमें छोड़कर चला गया। माला और मैं नदी किनारे पुराने इमली के पेड़ के नीचे हाथ में हाथ डाले खड़े थे, मानो दो प्यार में डूबे किशोर हों। हम नदी की मधुर कलकल ध्वनि सुन रहे थे और हवा में तैरती चमेली की हल्की खुशबू का आनंद ले रहे थे। शायद जीवन हमें एक और मौका दे रहा था। कौन जानता था?
दो सप्ताह तक नाव नहीं आई और मैं चिंता से बीमार पड़ गया। दो बार मैं उस कार्यालय तक पैदल गया जहाँ उस मोटे अधिकारी ने हमें बताया था कि वह काम करता है, लेकिन दोनों बार उससे मिल नहीं पाया। फिर, जब मैंने लगभग उम्मीद छोड़ दी थी, एक घोर अंधेरी रात में, दरवाजे पर हल्की सी दस्तक हुई। मैं जागा और दशकों पहले की एक ऐसी ही अंधेरी रात की भयानक तस्वीरों को जल्दी से दूर धकेल दिया, जब देव लुटेरे पूर्णा नदी के किनारे मेरी साधारण सी झोपड़ी में आए थे। मैंने दूसरी दस्तक का इंतजार किया। जब दस्तक हुई, तो मैंने धीरे से दरवाजा खोला और टिमटिमाते दीपक की रोशनी में उस मोटे अधिकारी का भूतिया चेहरा देखा। वह मुस्कुराया और मुझे बाहर आने का इशारा किया। मैंने दरवाजा खोला और उसने मेरी ओर ताड़ का पत्ता बढ़ा दिया। परछाइयों में दो-तीन काली आकृतियाँ छिपी हुई थीं।
मैं अंदर गया और अपनी पत्नी को जगाया। स्वर्ग जाने का टिकट मिलने की खबर सुनकर वह बहुत खुश हुई। उसने जल्दी से कपड़े के गट्ठे में बंधा हमारा थोड़ा-सा सामान उठाया और मेरे पीछे-पीछे बाहर आ गई। हम नदी की ओर चले जहाँ एक डोंगी इंतज़ार कर रही थी। डोंगी में तीन और दंपत्ति और एक साधु थे। हम चुपचाप डोंगी में बैठ गए और इंतज़ार करने लगे। आधे घंटे बाद एक और दंपत्ति हमारे साथ आ गया और उस साधु ने हम सबको खुशी से हाथ हिलाकर अभिवादन किया। डोंगी धीरे-धीरे धारा के साथ नदी के मुहाने की ओर बहने लगी। लंका, वह भूमि जिसे मैंने अपना लिया था और जहाँ मैंने अपने जीवन का अधिकांश भाग बिताया था, धीरे-धीरे हमसे दूर होती चली गई, और मैं विरोधाभासी भावनाओं से घुटता

हुआ बैठा रहा; इतने सारे लोगों के बीच अकेला, जो सभी अपने-अपने विचारों और सपनों में खोए हुए थे।
दूर से एक विशाल काला जहाज दिखाई दे रहा था। धीरे-धीरे हमारी डोंगी जहाज के पास पहुंची। जहाज के किनारे एक रस्सी की सीढ़ी लटक रही थी। एक-एक करके हमें ऊपर खींच लिया गया। हम उस बड़े जहाज के डेक पर खड़े होकर किसी के आने का इंतज़ार कर रहे थे जो हमें हमारे प्रथम श्रेणी के केबिनों तक ले जाए। कुछ देर बाद एक क्लर्क ताड़ के पत्ते के साथ आया। उसने टिकट चेक किए और यात्रियों को उनके केबिनों में जाने का आदेश दिया। मेरी एक युवा जोड़े से बातचीत शुरू हुई और मुझे पता चला कि उनकी हाल ही में शादी हुई है। लड़की शर्मीली थी, उसकी आंखें बादाम जैसी सुंदर थीं, और लड़का मासूम और सुंदर दिख रहा था। उन्होंने अपना नारियल का बाग एक ब्राह्मण को बेच दिया था और जहाज से यात्रा की थी। लड़की का नाम अरसी और लड़के का नाम शिव था।
जब क्लर्क हमारे पास आया, तो हमने अपनी बातचीत बंद कर दी और सम्मानपूर्वक उसे अपने टिकट सौंप दिए। उसने भौंहें चढ़ाकर पूछा, "आप किस जाति के हैं?" “इससे तुम्हें क्या फर्क पड़ता है?” शिव चिढ़ गया।
“आप लोग इतने काले और असभ्य दिखते हैं, लगता है आप अछूत जाति के हैं। मैं आपको जहाज पर नहीं ले जा सकता। दूसरे उच्च जाति के यात्री आपत्ति कर सकते हैं।”
“आपका क्या मतलब है कि आप हमें जहाज पर नहीं ले जा सकते? हमने यात्रा के लिए पूरी रकम चुका दी है।” शिव के कोई जल्दबाजी और मूर्खतापूर्ण कदम उठाने से पहले ही मैंने बीच में दखल दिया।
“मुझे नहीं पता। कुछ गड़बड़ लग रही है। कंपनी छह महीने के भीतर आपका पैसा वापस कर देगी, बशर्ते आप राजधानी स्थित हमारे कार्यालय में जाकर रिफंड के लिए आवेदन करें। मुझे खेद है, लेकिन मैं आपको नहीं ले जा सकता। आप अभी उतर सकते हैं क्योंकि नाव अभी रवाना नहीं हुई है। वरना आपको तैरकर वापस लौटना पड़ सकता है।” क्लर्क अपने केबिन की ओर जाने लगा।
“मुझे अपना हार दो,” मेरी पत्नी ने व्याकुल अरसी को आदेश दिया। अनिच्छा से लड़की ने अपना एकमात्र कीमती हार खोला और माला को दे दिया, जिसने उसे मेरे हाथों में थमाते हुए फुसफुसाया, “उसके पैरों में गिर जाओ और किसी तरह स्थिति को संभालो। हम पीछे नहीं हट सकते।”
मैं लगभग क्लर्क के पैरों में से एक को पकड़ने के लिए कूद पड़ा।

“अरे तुम!” उसने अपने खाली पैर से मुझे लात मारी। “तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मुझे छूने और अपवित्र करने की? निकल जाओ! निकल जाओ, बूढ़े बदमाश।” लेकिन मैंने हार नहीं मानी। अत्यंत दयनीय स्वर में मैंने कहा, “स्वामी जी, कृपया हमें विदा न कीजिए। हम वापस नहीं जा सकते। हम डेक साफ करेंगे और शौचालय साफ करेंगे, लेकिन कृपया हमें अपने साथ ले जाइए। हमें मत छोड़िए। आप हमारे भगवान हैं। यह आपके लिए एक छोटी सी भेंट है। हम पर दया कीजिए स्वामी जी।” मैंने हार को ऊपर उठाया ताकि वे उसे अच्छी तरह देख सकें। जब उन्होंने उसे देखा, तो वे अपवित्रता के बारे में सब कुछ भूल गए और तत्परता से उस अनमोल वस्तु को थाम लिया। मैं खड़ी हो गई, अपने हाथों को अपनी छाती पर रखा, हथेलियों को अपनी बगल में दबाया और प्रार्थना में अपनी पीठ झुका ली। मेरे साथियों ने भी मुझसे प्रेरणा ली और पूरी विनम्रता के साथ खड़े हो गए।
उसने एक बार फिर अपना पत्ता देखा और हार को जेब में रखते हुए, मानो हम पर कोई बड़ा एहसान कर रहा हो, बोला, “नीचे वाले डेक पर जाओ। जब तक हम सिंह नगरी नहीं पहुँच जाते, मैं तुम्हारे उदास चेहरे नहीं देखना चाहता। रसोई के फर्श साफ़ करो, गंदे कपड़े धोओ और शौचालय साफ़ करो, कुछ काम करो। जल्दी करो!” इतना कहकर, उसने मुझे सीढ़ियों से नीचे की ओर धकेल दिया, इस बात का ध्यान रखते हुए कि हममें से किसी से भी मेरा संपर्क न हो। बाकी लोग मेरे पीछे- पीछे आए। सबसे निचले डेक पर अंधेरा और गंदगी थी और रसोई से बासी लहसुन और सड़े हुए प्याज की बदबू आ रही थी।
वरुणा के जहाज पर काम करते-करते हमारी कमर लगभग टूट गई थी। हम लगातार बर्तन साफ करते, फर्श रगड़ते, कपड़े धोते और शौचालय के कूड़ेदान समुद्र में खाली करते रहते थे। सूरज की रोशनी हमें मुश्किल से ही देखने को मिलती थी और उस विशाल लकड़ी के जहाज के लगातार हिलने-डुलने से हम बीमार पड़ जाते थे। आखिरकार, लगभग एक महीने की यात्रा के बाद, हमें ऊपरी डेक से पुरुषों की खुशी भरी आवाज सुनाई दी, जो जमीन दिखाई देने का जश्न मना रहे थे। हम चुपके से ऊपरी डेक पर गए और तेज धूप से हमारी आंखें चौंधिया गईं। वहां एक नदी का मुहाना था और उसके दोनों ओर हरे-भरे जंगल फैले हुए थे। मैंग्रोव के जंगल दूर-दूर तक फैले हुए थे और जैसे ही जहाज चौड़ी नदी में दाखिल हुआ, एक मंदिर का ऊंचा, काला शिखर दिखाई दिया। हमने इतनी चौड़ी नदी पहले कभी नहीं देखी थी और उत्साह हमारे शरीर में दौड़ पड़ा। जल्द ही जहाज एक बंदरगाह पर पहुंचा,

जहां सफेद पगड़ी पहने अजीब से दिखने वाले लोग जहाजों से सामान लादने और उतारने में लगे हुए थे।
क्लर्क ने शरमाते हुए हमारी तरफ मुस्कुराया और भीड़ में शामिल होने के लिए सीढ़ी से नीचे उतर गया। कुछ देर की उलझन के बाद, हमने ज़मीन पर जाने का फैसला किया और धीरे-धीरे नीचे उतरे। वरुणा की जहाज़ सेवा के टिकट काउंटर पर पहले से ही लंबी कतार लगी हुई थी, और मैंने यह पता लगाने का फैसला किया कि क्या यह पूर्व में स्थित सिंह नगर है। मैंने जिन पहले कुछ लोगों से पूछा, उन्होंने मुझे खाली चेहरों से घूर कर देखा। लेकिन आखिरकार मुझे हम ही की तरह सांवले रंग का एक आदमी मिला और मैंने हिम्मत जुटाकर उससे बात की। वह दो लंबे और गोरे आदमियों से बात कर रहा था और मैंने बोलने का मौका मिलने का इंतज़ार किया। फिर मैंने उससे तमिल में पूछा कि क्या यह सिंह नगर है। उसने मुझे ऐसे घूर कर देखा जैसे मैं पागल हूँ और फिर पूछा, "क्या तुम बेवकूफ वरुणा के जहाज़ से आए हो?"
हमने एक-दूसरे की ओर देखा और हमारे दिलों में एक सिहरन दौड़ गई। "स्वामी जी, आप ऐसा क्यों पूछ रहे हैं...?"
उस काले आदमी ने अपने गोरे साथियों से संस्कृत में कुछ कहा और वे सब ज़ोर से हंस पड़े। फिर वह मेरी तरफ मुड़ा और बोला, "तुम किस जाति के हो?"
“धोबी, स्वामी,” मैंने उत्तर दिया, हालाँकि मुझे यह पक्का पता नहीं था कि अरसी और शिव किस जाति के थे।
“इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि तुम लोग इतने मूर्ख हो। यह देवी काली का नगर है। वरुण ने तुम्हें भी धोखा दिया है, जैसे उसने कई अन्य लोगों को दिया है।”
अरसी जोर से रोने लगी और जमीन पर बैठकर अपना सिर पीटने लगी। माला भी जल्द ही उसके साथ बैठ गई। मैं गुस्से से उबल रहा था। मेरी आँखों से आंसू बहने लगे और मैं भी उन महिलाओं के साथ बैठ गया। शर्मिंदा शिव ने उस काले आदमी से हमारी समस्या का हल निकालने की गुहार लगाई। उसने हमें धक्का देकर हटाने की कोशिश की, लेकिन शिव डटे रहे। आखिरकार, उस काले आदमी ने अपने गोरे दोस्तों को अलविदा कहा। फिर वह हमारी तरफ मुड़ा और हमें चुप रहने के लिए चिल्लाया ताकि वह सोच सके। अंत में उन्होंने कहा, “देखो मित्रों, यह एक छोटा सा शहर है। तुम्हें यहाँ नौकरी मिल सकती है, लेकिन उत्तर-पश्चिम में एक और बड़ा शहर है, अयोध्या, जहाँ राम राजा राज करते हैं। वह शहर आजकल खूब तरक्की कर

उसी जगह से आता था जहाँ हम गंदे कपड़े धोते थे। धीरे-धीरे हमारी जिंदगी अपनी लय में ढल गई। हमने संस्कृत सीख ली और पड़ोसियों से बेहतर संवाद स्थापित कर पाए। जब तक हम अपनी जगह पर कायम रहे और किसी ऊँची पदवी की आकांक्षा नहीं रखी, देवों की कठोर जाति व्यवस्था सुचारू रूप से चलती रही। सरकार मुखिया के माध्यम से कर वसूल करती थी, जो फिर अपना हिस्सा तय करता था। कोई भी पुलिसकर्मी या सरकारी अधिकारी कभी भी धोबी गाँव में नहीं जाता था। कुम्हारों या बुनकरों के गाँवों में भी यही हाल होता था।
पखवाड़े में एक बार, हम शहर के बाहर बाज़ार जाते और अपनी ज़रूरत का सामान खरीदते। जीवन सरल और सीधा था, असुरों की उस बेफिक्र, प्रतिस्पर्धी शहरी दुनिया की जटिलताओं से रहित। जाति व्यवस्था क्रूर थी और निचली जातियों पर होने वाले अत्याचार अमानवीय थे, लेकिन अपने जाति-आधारित गाँव में एक अजीब तरह की समानता थी, शायद मुखिया के परिवार को छोड़कर। उच्च जाति का कोई भी सदस्य गाँव में प्रवेश नहीं करता था।
देव व्यवस्था का एक सबसे बड़ा लाभ प्रतिस्पर्धा का अभाव था। प्रत्येक कार्य एक जाति को सौंपा जाता था और एक ही जाति के सभी सदस्यों को नौकरी और दो वक्त का भोजन सुनिश्चित होता था। रावण के नगरों, जैसे त्रिकोटा, मुजुरिस, गोकर्ण या महाबलीपुरम, जहाँ विभिन्न संस्कृतियाँ और नस्लें आपस में घुलमिल जाती थीं; जहाँ लोग बड़े सपने देखने का साहस करते थे; जहाँ व्यापार, विज्ञान, कला और वास्तुकला फली-फूली; जहाँ शहरी व्यवस्था, योजना, डिजाइन और सौंदर्यशास्त्र का अपना-अपना स्थान था; जहाँ जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी पहचान बनाने के लिए प्रतिस्पर्धी पुरुष और महिलाएं संघर्ष करते थे; जहाँ माया जैसे असीम प्रतिभावान पुरुष और वैज्ञानिक फले- फूले; लेकिन जहाँ एक विशाल आबादी, जो जीवन की चूहा दौड़ में पिछड़ गई थी, अमानवीय झुग्गियों में रहने को मजबूर थी, जहाँ वे मुश्किल से अपना पेट पाल पाते थे, इसके विपरीत राम के नगर, जैसे अयोध्या या मिथिला, बिल्कुल अलग थे। ये नगर आत्मनिर्भर जाति-आधारित गांवों का एक समूह थे जो अपनी न्यूनतम आवश्यकताओं के लिए एक-दूसरे से जुड़े रहते थे। असुरों के गतिशील और बेहद प्रतिस्पर्धी, भौतिकवादी, फिर भी भव्य शहरों के विपरीत, राम के शहर एक बंद और स्थिर दुनिया का चित्र प्रस्तुत करते थे, जिसकी नींव जाति व्यवस्था पर टिकी थी। इसने जन्म के संयोग के आधार पर प्रत्येक व्यक्ति को उसकी जगह पर दृढ़ता से स्थापित कर दिया था। इस व्यवस्था में सपनों का कोई स्थान नहीं

था और आकांक्षाएँ रखना खतरनाक था। हम अप्रवासियों को जल्द ही इसका अनुभव होगा।
जीवन सुचारू रूप से चलता रहा और जैसे-जैसे वर्ष बीतते गए, अरसी ने एक पुत्र को जन्म दिया। हमने उसका नाम शिव के नाम पर शंबुका रखा। लड़का तेजी से बढ़ा और अपनी उम्र से कहीं अधिक बुद्धिमान था। धीरे-धीरे मुझे अपने जीवन में सुख मिलने लगा। लड़के के साथ खेलते हुए, उसे तैरना सिखाते हुए, उसे छोटे पक्षियों का शिकार करना सिखाते हुए, मैंने अपने यौवन को पुनः पा लिया था। मैंने कई वर्षों तक परिश्रम करना छोड़ दिया था और शिव, जो मेरे लिए पुत्र समान हो गया था, ने अतिरिक्त भार उठा लिया। वह अत्यंत परिश्रमी और उद्यमशील भी था। उसने महल के कपड़े धोने का ठेका पाने के लिए गिड़गिड़ाया और रिश्वत भी दी, और यही हमारी सांसारिक सफलता का द्वार था। उसकी समृद्धि का कारण शायद उसके असुर वंश की अंतर्निहित प्रतिस्पर्धात्मक प्रकृति थी, जो अवसर मिलने पर जागृत हो जाती थी। हमने अपने घर का विस्तार किया और हमारे पास पहले से मौजूद गधों के साथ दो गायें और जोड़ लीं। हम धीरे-धीरे जीवन में प्रगति कर रहे थे। मेरे दिन शांत बहती नदी, निर्मल, बादलों से भरे आकाश और नदी में धीरे-धीरे तैरती नावों को निहारते हुए व्यतीत होते थे। और जंगली बगुले और किंगफिशर जो मछलियों के लिए पानी में गोता लगाते थे। कई बार शंबुका इन सैरों में मेरे साथ आता था, मुझे दादाजी कहकर पुकारता था और किसी न किसी बात के लिए मुझसे ज़िद करता रहता था। जब भी मैं उसकी बचकानी बातें सुनता, मेरा दिल खुशी और गर्व से भर जाता और एक बार फिर मुझे इस खूबसूरत जीवन और इस अद्भुत दुनिया से प्यार हो जाता।

63 बचकाने सपने

भद्र
जब सब कुछ स्वप्निल प्रतीत होता है और जीवन का आकर्षण कभी न खत्म होने वाला लगता है, तभी मनुष्य के मन में मूर्खतापूर्ण विचार और खतरनाक आकांक्षाएँ जन्म लेती हैं। शंबुका बुद्धिमान और सुंदर था, लेकिन अरसी के लिए यह सोचना कोई कारण नहीं था कि वह धोबी से बढ़कर कुछ बने। एक बार जब किसी माँ के मन में यह विचार आ जाता है कि उसका बच्चा विशेष है, तो उसे कोई भी दूर नहीं कर सकता। वह चाहती थी कि उसका बेटा कोई महत्वपूर्ण अधिकारी बने, या शायद कोई प्रसिद्ध कवि, या कोई महान व्यापारी – एक साधारण धोबी के अलावा कुछ भी। मैंने उसे समझाया कि हम जैसे लोगों को सपने देखने की हिम्मत नहीं करनी चाहिए। शिव ने भी उसे समझाने की कोशिश की, लेकिन वह अपनी बात पर अड़ी रही। माला ने अरसी का साथ देते हुए शंबुका की शिक्षा की मांग की। महिलाओं ने तर्क दिया कि हमारे पास धन है और लड़के में प्रतिभा है, तो उसे अनपढ़ क्यों रहने दिया जाए? लेकिन लड़का आठ साल का था और बहुत देर हो चुकी थी। अगर वह असुर नगरों में से किसी एक में रहता, तो तब तक वह पढ़ना-लिखना और गणित में काफी कुशल हो चुका होता।
वे लगातार दबाव डालते रहे और अंततः, मेरे विरोध और आपत्तियों के बावजूद, शिव मान गए और लड़के को स्कूल भेजने का कोई रास्ता निकालने का फैसला किया। मुझे यह निर्णय पसंद नहीं आया, लेकिन मुझे पूरा भरोसा था कि कोई भी धोबी के बेटे को कुछ नहीं पढ़ाएगा, इसलिए मैं बहुत चिंतित नहीं थी। लेकिन मैंने इस बात पर ध्यान नहीं दिया था कि पैसा सबसे सख्त रूढ़ियों को भी तोड़ सकता है। शिव ने नदी के उस पार रहने वाले एक ऐसे शिक्षक को ढूंढ लिया जो लगभग एकांतवासी थे।
सरयू नदी के उस पार घना जंगल था। पक्षियों और जानवरों के साथ, कुछ तपस्वी रहते थे जो राख से अपना शरीर मलते, खोपड़ियों और हड्डियों को आभूषणों की तरह पहनते और कभी-कभी घंटों तक कठिन और कलाबाज़ी वाले आसन करते रहते थे। ज़ाहिर तौर पर वे ईश्वर, अपने अंतर्मन या ब्रह्म की खोज में थे, लेकिन वे एक ऐसे निम्न वर्ग के लोग थे जो देवों की कठोर जाति व्यवस्था में फिट नहीं बैठते थे और अपने एकांत में शरण पाते थे। आम तौर पर वे मादक पदार्थों के आदी थे और कुछ लोग अजीबोगरीब तरीकों से खुद को सज़ा देते थे। आम लोग इस मिश्रित समूह से डरते थे और दबी आवाज़ में उनकी रहस्यमयी शक्तियों के बारे में फुसफुसाते थे। मैं कई बार उस इलाके में गया था और उनमें से कुछ से

जबली और उसके अनुयायियों को सरयू नदी के दूसरे किनारे पर निर्वासित कर दिया गया था, और जल्द ही अलग-अलग मतों और विचारधाराओं वाले अन्य लोगों ने भी उस किनारे पर शरण ले ली। जबली की मृत्यु हो गई थी, लेकिन उसकी परंपराएँ और अन्य परस्पर विरोधी विचारधाराएँ कायम रहीं। जबली की मृत्यु के बाद, उसके अनुयायियों ने जाति-भेदभाव किए बिना अधिक से अधिक लोगों को शिक्षित करने का बीड़ा उठाया। लेकिन वर्षों बीतने के साथ, व्यवस्था की पकड़ और भी मजबूत हो गई और केवल कुछ ही लोगों ने शिक्षित होने का साहस किया। जो लोग शिक्षित हुए, वे भारत से भागकर पहाड़ों के पार, चीन या समुद्र पार के उन देशों में चले गए, जहाँ केवल व्यक्ति के गुणों का महत्व था, न कि उसके जन्म के संयोग का।
शंबुका आँखें फाड़कर ये सब सुन रहा था और उसकी आँखों में एक अजीब सी चमक देखकर मैं परेशान हो गया। बाद में, जब मैं उसे सरयू नदी के काले पानी में नाव से वापस लाता, तो वह एक महान कवि बनने के अपने सपने के बारे में बताता, जो अपनी शानदार कविताओं से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देगा। मैं नाव चलाता रहा क्योंकि वह लड़का जीवन और आशा से भरा हुआ था। फिर एक रात, लाखों तारों की मौजूदगी में, भारत के हृदय पर सरयू नदी का ठंडा पानी लहरें बना रहा था और चाँदी की चाँदी उसके काले घुंघराले बालों में झलक रही थी, शंबुका मधुर गीत गाने लगा। उसने आज़ादी की दुनिया, आशा की दुनिया, एक ऐसे कल के बारे में गाया जो कभी आने वाला नहीं था। उसका गीत उस हवा में घुल गया जो गरीबों की झोपड़ियों को सहला रही थी और उन महलनुमा मीनारों के चारों ओर घूम रही थी जहाँ देवता मनुष्य रूप धारण करके निवास करते थे। मैं धोबी घाट के किनारे पहुँचा, तब तक ज़्यादातर घरों की बत्तियाँ बुझ चुकी थीं। लड़का सो गया था। भारी मन से मैंने नाव को बांधा और सोते हुए लड़के को अपने थके हुए कंधों पर उठाकर घर ले गया।

64 धर्म की तलवार
भद्र
दिन बीतने के साथ-साथ लड़के का अद्भुत विकास हुआ। उसकी आवाज़ में मधुरता आ गई और उसके गीत लयबद्ध हो गए। लोग रात में हमारी नाव के लौटने का इंतज़ार घाट पर करने लगे। उसके गीत किनारे तक हमारी नाव के अगले हिस्से के पहुँचने से पहले ही पहुँच जाते थे। किनारे पर सुनहरी रोशनी के उस छोटे से घेरे में पुरुष और महिलाएं मंत्रमुग्ध होकर उस मधुर आवाज़ को सुनते थे जो शांत, धीरे-धीरे लहरों वाले पानी पर तैरती हुई आती थी। हर रात, जब मैं अपने छोटे बेटे को, जिसकी नन्ही उंगलियाँ मेरी झुर्रीदार कलाई से कसकर लिपटी होती थीं, प्रशंसा करने वाली भीड़ के बीच से ले जाता था, तो दर्शक कभी उसके साथ गाते थे, कभी ताल पर ताली बजाते थे, या कभी चुपचाप उसके साथ रोते थे। वह संस्कृत में गाता था, लेकिन उसमें जो भावनाएँ उमड़ती थीं वे सार्वभौमिक थीं और जो आकांक्षाएँ प्रकट होती थीं वे आदिम थीं। जिसने भी उसे एक बार भी सुना, उसके दिल को छू गया। इसने धर्म, जाति और रीति-रिवाजों की उस मोटी परत को भेद दिया जो मनुष्यों के दिलों पर जमी हुई थी और इसके बजाय, सभी मनुष्यों की आंतरिक अच्छाई को जगा दिया।
जैसे-जैसे उसकी प्रसिद्धि बढ़ती गई, मेरा डर भी बढ़ता गया। मैंने उसे अपने छोटे से जाति-आधारित गाँव से बाहर जाने से रोकने की कोशिश की, उसे समझाने की कोशिश की कि बाहर एक अंधकारमय और क्रूर दुनिया उसका इंतज़ार कर रही है, एक ऐसी दुनिया जहाँ देवता और उनके चुने हुए लोग रहते हैं, जो अपनी सर्वोच्चता को चुनौती देने वालों को बर्दाश्त नहीं करते। लेकिन उस लड़के ने आज़ादी का स्वाद चख लिया था। वह परंपराओं की बेड़ियों में जकड़े हुए उस दुर्गंधयुक्त गाँव में नहीं रह सकता था। वह जीवन के ऐसे पड़ाव पर था जहाँ सब कुछ उज्ज्वल और उज्ज्वल लग रहा था और भविष्य असीम संभावनाओं से भरा हुआ था। यही शिक्षा का खतरा था।
इससे ऐसे सपनों को जन्म मिला जिनका वास्तविक दुनिया में कोई आधार नहीं था। मैंने उसे समझाने की कोशिश की, यह कहते हुए कि वेदों के अनुसार, हम अछूतों को अपनी जातिगत जिम्मेदारियों के अलावा कुछ भी नहीं सीखना चाहिए। ऐसा नहीं था कि मुझे वेदों का बहुत ज्ञान था, सिवाय इसके कि मैंने ब्राह्मण पुजारियों से सुना था, जो बिना किसी अर्थ के अस्पष्ट वाक्यांश उद्धृत करते थे। इसके विपरीत, उसने मुझे वेदों की अपनी स्पष्ट व्याख्या से

हिलाया। ऐसा लग रहा था मानो वे अपने पुरोहितों से विनती कर रहे हों, लेकिन प्रधान पुरोहित, एक काले, मोटे और विशाल शरीर वाले व्यक्ति ने क्रोधित होकर राजा से कुछ माँग की। पुरोहितों की बातें सुनकर राजा के कंधे झुक गए। वे शंबुका को समाधि से जगाने के लिए आगे बढ़े। भीड़ साँस रोके देख रही थी। लेकिन मोटे पुरोहित ने बीच में आकर महान राजा को ऐसे अपवित्र स्पर्श से बचा लिया। शंबुका को भी कुछ आभास हुआ और वे समाधि से जाग गए। वे अपने सामने का दृश्य देखकर अचंभित रह गए। लड़का डर गया और रोने लगा। रोने से जादू टूट गया। वे अब महान कवि और गायक नहीं रहे जो लोगों को रुला सकते थे। वह मात्र चौदह वर्ष का एक छोटा लड़का था, एक अछूत, एक काला असुर और एक महत्वहीन प्राणी। उसने अपने राजा और रक्षक की ओर देखा और गहरा प्रणाम किया। राम ने एक बार फिर असहाय होकर अपने पुरोहितों की ओर देखा, जो क्रोधित होकर लड़के की ओर इशारा करते हुए चिल्ला रहे थे।
राजा ने ब्राह्मणों को चुप कराने के लिए अपने हाथ उठाए और लड़के से पूछा, "पुत्र, तुम कौन हो?"
“मैं शिव का पुत्र शंबुका हूँ,” लड़के ने धीरे से कहा।
आप किस जाति के हैं?
“मेरी कोई जाति नहीं है, न ही आपकी।” लड़के ने राजा की आँखों में देखा। क्या यह सच है कि आप अछूत हैं?
मैं अछूत नहीं हूं, न ही कोई और है।
क्या आप नास्तिक हैं?
मैं ईश्वर में दृढ़ विश्वास रखता हूँ, जो हममें से प्रत्येक के भीतर विद्यमान है। मैं ईश्वर हूँ और आप भी ईश्वर हैं।
“एक शूद्र को वेद सीखने की अनुमति किसने दी?” राम अब क्रोधित हो रहे थे। “क्या पक्षियों को उड़ने के लिए अनुमति की आवश्यकता होती है? क्या मछलियाँ किसी के अधिकार पर तैरती हैं? मनुष्यों के लिए सीखना, मछलियों के लिए तैरने या पक्षियों के लिए उड़ने जैसा है।”
“अहंकारी मूर्ख! क्या तुझे पता है कि हमारे राज्य में जाति धर्म तोड़ने की हिम्मत करने वाले निम्न जातियों को क्या दंड दिया जाता है?” प्रधान पुजारी शंबुका पर गरजते हुए बोला।
राम ने पुरोहितों की ओर देखा और विनती की। उनके चेहरे पर वही भाव थे जब उनकी पत्नी की पवित्रता अग्नि परीक्षा से गुज़री थी। वे जानते थे कि बालक

ने जो कहा वह सत्य था, और उनकी आँखों में उस नन्हे बालक के लिए असीम करुणा झलक रही थी, जिसका भावपूर्ण गीत भीड़ के शोर के बीच भी गूंज रहा था। उन्होंने एक बार फिर पुरोहितों की ओर देखा।
इस सवाल के जवाब में शंबुका ने किसी गुमनाम उपनिषद का संस्कृत गीत गाना शुरू कर दिया, जिसमें कहा गया था कि मृत्यु आत्मा के लिए केवल एक अस्थायी ठिकाना परिवर्तन है, और जैसे कोई व्यक्ति पुराने और फटे हुए कपड़े बदलकर नए कपड़े खरीदता है, वैसे ही आत्मा भी एक नए शरीर की तलाश करती है। मुझे सच में उस गुरु से बात करनी चाहिए थी जिसने मेरे छोटे बेटे को ऐसी बकवास सिखाई थी। लोग ये सरल बातें कब सीखेंगे – कि मृत्यु अंत है और मरने के बाद शरीर सड़कर मिट्टी में मिल जाता है।
मोटे पुजारी ने अब ऊँची आवाज़ में भीड़ से कहा, “इस शूद्र, इस अहंकारी अछूत ने जाति के सबसे महत्वपूर्ण नियम को तोड़ने का साहस किया है। इस शूद्र ने न केवल साक्षर होने का साहस किया है, बल्कि पवित्र वेदों का अध्ययन भी किया है। और यह पवित्र ग्रंथों में लिखी बातों की गलत व्याख्या कर रहा है। ऐसे अहंकारी और उतावले लोगों का एक ही अंजाम होगा।”
उसने राजा राम को ऐसे देखा मानो उसने सही बात कह दी हो और अब उस बात पर अमल करने की ज़िम्मेदारी दूसरों पर आ गई हो। भीड़ में एक सिहरन दौड़ गई। सैनिक तलवारें खींचे, भाले भीड़ की ओर ताने, एक तंग घेरे में खड़े हो गए, मानो किसी मूर्ख के हिलने-डुलने का इंतज़ार कर रहे हों। एक कौवे की कांव-कांव ने सन्नाटे को तोड़ दिया। आने वाली स्थिति के बारे में सोचकर मैं कांप उठा। राम ने अब अपनी तलवार खींच ली थी। शंबुका के गाल आंसुओं से भीगे हुए थे और उसके छोटे, मासूम चेहरे पर ऐसा भाव था मानो उसने पूरी कोशिश की हो और नाकाम रहा हो। वह अपनी उम्र से कहीं ज़्यादा थका हुआ लग रहा था। मुझे दूर कहीं कुछ औरतों के गंदे कपड़े धोने की धप-धप की आवाज़ सुनाई दे रही थी, जिससे उस उमस भरे दिन में एक अजीब सी लय बन गई थी। ऐसा लग रहा था जैसे किसी ने उलटी गिनती शुरू कर दी हो। जब मैंने चौदह धप-धप गिनीं, तो राम की शक्तिशाली तलवार तेज़ी से नीचे आई और मेरे नन्हे पोते का सिर धड़ से अलग कर दिया।
शो खत्म हो चुका था। भीड़ अपने-अपने घरों की ओर चली गई, कुछ लोग आपस में उत्साह से बातें कर रहे थे, तो कुछ अपने-अपने काम में लग गए मानो कुछ हुआ ही न हो। मैं उस जगह की ओर बढ़ा जहाँ शंबुका का सिर कटा पड़ा था। राम का रथ

तेज़ी से गुज़रा, भीड़ को दो हिस्सों में बाँटते हुए। सैनिकों ने भागते हुए राजा को उनके महल तक सुगम मार्ग देने के लिए पुरुषों और महिलाओं को रथ के रास्ते से हटा दिया। मैं रथ के सामने कूदकर उस आदमी को उस ऊँचे चबूतरे से नीचे खींच लाना चाहता था जिससे वह चिपका हुआ था; उसे कीचड़ में घसीटकर नीचे लाना चाहता था और उसकी खून से लथपथ तलवार, वही चिपचिपी, लाल तलवार जिसने मेरे छोटे बेटे का गला काटा था, छीनकर उसके दिल में घोंप देना चाहता था। लेकिन मैं कमज़ोर और सिसकते हुए खड़ा रहा, अपने गहरे दुख में डूबा हुआ, तेज़ी से जाते रथ में गायब हुए उस आदमी को देखता रहा।
मैं असहाय होकर देखता रहा, धूल के बादल में रथ गायब हो गया, तभी अचानक वह बाईं ओर मुड़ा और रुक गया। सैनिक शाही रथ की ओर दौड़े और वहाँ अफरा-तफरी मच गई। मैं भी घसीटते हुए वहाँ पहुँचा कि क्या हुआ है। एक पल के लिए, मैंने चाहा कि राम की हत्या कर दी गई हो, लेकिन फिर मुझे अफसोस के साथ याद आया कि प्राकृतिक न्याय जैसी बातें केवल आदर्शवादियों की कल्पनाओं में ही होती हैं। मैं इतना बूढ़ा हो चुका था कि ऐसी कल्पनाओं में बहक नहीं सकता था। रामा व्याकुल अरसी और माला के सामने खड़े थे, उनके चेहरे पर शर्मिंदगी और क्रोध स्पष्ट रूप से झलक रहे थे। दोनों स्त्रियों ने राजा का रास्ता रोक दिया था। माँ हताशा में अपने बाल नोच रही थी और उसके मुँह से जानवरों जैसी चीखें निकल रही थीं। माला अपने सीने को इतनी बेरहमी से पीट रही थी कि मैं दंग रह गया।
“तुमने मेरे नन्हे बच्चे को क्यों मार डाला? तुम्हें किस बात का डर था? तुम…”
सैनिक महिलाओं को भगवान के रास्ते से हटाने के लिए दौड़े। लेकिन राम ने हाथ के एक इशारे से उन्हें रोक दिया। “माँ, आपके पुत्र ने इस भूमि के पवित्र नियमों का उल्लंघन किया है और राजा होने के नाते मुझे धर्म की रक्षा करनी होगी।”

अरसी ने ज़मीन पर थूका और राजा पर क्रोधपूर्वक चिल्लाते हुए कहा, “पवित्र नियम…धर्म… यदि आपके धर्म को एक छोटे बच्चे से बचाने के लिए उसे मारना पड़ता है, यदि धर्म एक बच्चे द्वारा बोले गए कुछ संस्कृत शब्दों से डरता

है, तो हे इस पवित्र भूमि के शासक, सोचिए कि आप किस प्रकार के धर्म की रक्षा कर रहे हैं और किसके हाथों में वे डोरियाँ हैं जो आपको नियंत्रित करती हैं…”
राम अवाक खड़े थे, उनके ब्राह्मण सहायक उस छोटी, सांवली स्त्री को घूर रहे थे जिसने ऐसे सवाल पूछे थे जिनके बारे में सोचने की हिम्मत भी किसी और ने नहीं की थी। मैं धक्का-मुक्की करते हुए उस जगह की ओर बढ़ा, लेकिन इससे पहले कि मैं वहां पहुंच पाता, सैनिकों ने उस स्त्री को वहां से हटा दिया। जब उसे बालों से पकड़कर गली में घसीटा जा रहा था, तो अरसी ने अपने राजा को उस असहाय माँ के क्रोध से कोसा जिसकी इकलौती संतान की हत्या कर दी गई हो, “राम, तुम्हें इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी, तुम्हें इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी। तुम भले ही कुछ स्मृतियों के समर्थक हो जो असहाय, गरीब, कमजोर और स्त्रियों को कीड़े-मकोड़ों के समान मानती हैं, लेकिन मेरी बात याद रखना…फिर कभी…फिर कभी…तुम्हें सुख का ज्ञान नहीं होगा। एक धर्म है, प्राकृतिक जगत का नियम है, जो इन सभी श्लोकों से बड़ा…शक्तिशाली है। वह धर्म तुम्हारे पास आएगा…” वह चीखती रही लेकिन उसके शाप धीरे-धीरे मंद होते गए और सैनिकों द्वारा राजा से दूर ले जाते समय धीरे-धीरे शांत हो गए।
भीड़ इस दृश्य को टकटकी लगाकर देख रही थी, मानो नाटक का आनंद ले रही हो। वे इसके बारे में बहुत देर तक बातें करते रहेंगे। रथ तक पहुँचने से पहले ही मैंने कोड़े की आवाज़ सुनी जो बेचारे घोड़ों की पीठ पर ज़ोर से पड़ रही थी और रथ महल की दीवारों की सुरक्षा की ओर तेज़ी से बढ़ गया। मैं वहाँ खाँसती और घुटती हुई खड़ी थी, शाही रथ के पीछे उठी धूल में। मैं पसीने से भीगी हुई थी और धर्म के बोझ तले दबी हुई थी जो हमें कुचल रहा था। भीड़ छंट गई। मैं धूल भरी लाल मिट्टी पर गिर पड़ी और बहुत देर तक रोई। मैं अपने छोटे बेटे और उसके माता-पिता के लिए रोई, अपने दूसरे बेटे के लिए जिसे मैंने अपना बेटा मान लिया था, लेकिन जिसे राजाओं और देवताओं ने अपनी महिमा के लिए छीन लिया था। लेकिन सबसे ज़्यादा, मैं अपने तबाह देश के लिए रोई। मैंने दोनों मुट्ठियों से मिट्टी को भींचा और चीखी, “मेरी माँ, रो, उन शासकों के लिए जिन्हें तुम जन्म देती हो… इससे भी बदतर… रो, मेरी माँ, उन पुरुषों के लिए जिन्हें तुम पैदा करती हो…”
किसी ने मेरी पसलियों पर लात मारी। मैंने उठने की कोशिश की, लेकिन उसने फिर लात मारी। उसने मुझे खुले नाले में धकेल दिया। “शराबी भिखारी, मैं तुझे

कुचल देता, बेवकूफ। मेरी गाड़ी में आत्महत्या क्यों की? नीच जाति के बेटे।” एक व्यापारी बाज़ार जा रहा था ताकि ज़्यादा पैसा कमा सके और मैं उसके रास्ते में पड़ा अपने देश को सुधारने की कोशिश कर रहा था। उसने मुझे वहीं धकेल दिया जहाँ मुझे होना चाहिए था… बदबूदार नाले में। मैं अयोध्या के खुले नाले में पड़ा रहा और दुनिया को देखता रहा, किसी को परवाह नहीं थी कि क्या हुआ था। मैंने अपने छोटे शंबुका के शव को घाट पर दाह संस्कार के लिए ले जाते हुए भी देखा।
महल और अमीरों के घरों में आधी रात बीत चुकी थी जब उत्सव समाप्त हुआ और मैं अपनी छोटी सी झोपड़ी में पहुँची। एक पल के लिए मैंने कल्पना की कि मेरा छोटा बच्चा होंठों पर गीत लिए बाहर आ रहा है। लेकिन क्या वह धर्म की रक्षा के लिए स्वर्गलोक नहीं चला गया था? शायद अगले जन्म में वह उच्च जाति के बालक के रूप में जन्म ले ताकि वह कमतर गर्भ से जन्मे लोगों को सता सके। इस विचार में कुछ सुकून था। घर में प्रवेश करने का साहस न होने के कारण मैं नदी की ओर चली गई और एक गिरे हुए पेड़ पर लेट गई।
नींद में खलल डालते हुए, मुझे सरयू नदी के गहरे पानी पर बहती हल्की धुन सुनाई दी। कोई भोला-भाला मूर्ख, शायद शंबुका का वह बदमाश ब्राह्मण गुरु, सीमाओं से रहित दुनिया, युद्धों से मुक्त भविष्य, भेदभाव रहित समाज और ऐसी ही बेतुकी बातों के बारे में गा रहा था। काश कोई उस आदर्शवादी मूर्ख का गला घोंटकर मार डाले ताकि कोई और मासूम ऐसे अकल्पनीय सपनों में बहकर अपनी कीमती जान न गँवा दे। दुनिया के आदर्शवादियों से कोई बच नहीं सकता। वे चूहे की तरह बढ़ते हैं और दुनिया को महामारी की तरह फैलाते हैं। जब वे मरते हैं, तो अपने साथ कई जानें ले जाते हैं। मेरी झुंझलाहट बढ़ती जा रही थी, क्योंकि गाना और भी तेज़ और जोशीला होता जा रहा था, और जब समानता के उसके बेवकूफी भरे विषय बहुत परेशान करने वाले हो गए, तो मैं अपनी कुटिया में चला गया और वहाँ के गहरे अंधेरे में खो गया ताकि सब कुछ भूल सकूँ।

65 शुरुआत
भद्र
मैं लगभग पूरे साल पैदल चलती रही, लेकिन अपने जन्मस्थान तक पहुँचने में अभी भी मीलों का सफर बाकी था। दशकों पहले, मैंने एक नौजवान के साथ अपनी यात्रा शुरू की थी, जिसने हमें एक नई दुनिया का वादा किया था। उसने हमें उम्मीद दी और हमारे सपनों को नई आकांक्षाओं से भर दिया। उसने एक साम्राज्य खड़ा किया और उसे खो दिया। वह उन अनगिनत लोगों में शामिल हो गया, जिन्होंने साहस दिखाया, सफलता हासिल की और फिर सब कुछ खो दिया। मैंने अपनी जवानी उसकी उपलब्धियों के लिए कुर्बान कर दी। मैं इतनी भोली थी कि रावण जैसे मीठी- मीठी बातें करने वालों के बहकावे में आ गई, जिन्होंने मुझे तुरंत बेवकूफ बना दिया। बाद में, जब मेरी मासूमियत खो गई और दुनिया ने मुझे काफी सबक सिखा दिए, तो मैंने जो खोया था उसे लंका की मिट्टी में दफना दिया, और जो थोड़ा-बहुत बचा था उसे समेटकर फिर से आगे बढ़ने का साहस किया। मैं ऐसी जगह पहुँच गई जहाँ मैं कभी जाना नहीं चाहती थी, लेकिन मैंने अपना जीवन फिर से शुरू किया। इस धरती पर देवताओं और उनकी मर्जी के बिना जीवन क्या था? देवताओं की भुजाओं ने मेरे नन्हे से जीवन को जकड़ लिया और उसे तब तक हिलाया, निचोड़ा और रौंदा जब तक कि खून की आखिरी बूंद भी निकल न गई। शंबुका की मृत्यु के बाद अयोध्या में जीवन नरक बन गया। शिव ने शराब में अपना दुख भुलाने की कोशिश की और परिवार बिखर गया, जैसा कि अक्सर तब होता है जब उनके साझा सपने टूट जाते हैं। मैं भी अक्सर शराब पीकर हंगामा करता था। शराब पीने की ये आदत एक मृत बच्चे के शोक को छिपाने के बहाने शुरू हुई थी, लेकिन बाद में यही इसका कारण बन गई। शिव और मैं दोनों शराब पीकर घर की बेचारी महिलाओं पर अपना गुस्सा निकालते थे। हम अपनी पत्नियों को बेरहमी से पीटते थे और पड़ोसी इकट्ठा होकर तमाशा देखते और गंदी टिप्पणियाँ करते

था। दरबार में सन्नाटा छा गया और कई लोगों के चेहरे आरोप-प्रत्यारोप से लाल हो गए।
मुझे आश्चर्य हुआ कि मुझे बिना किसी दंड के छोड़ दिया गया। मैंने रामा के मंत्रिमंडल को गहन चर्चा में मशगूल छोड़ दिया, मानो दुनिया का भविष्य एक धोबी की नशे में कही गई बात पर निर्भर हो। एक घंटे से अधिक समय बाद मैं उस मंदिर में पहुँचा जहाँ रावण का पुराना विमान रखा था। मैं कुछ दूरी पर खड़ा होकर पुष्क विमान के सामने श्रद्धापूर्वक झुके श्रद्धालुओं का मनोरंजक दृश्य देख रहा था, तभी अचानक एक रथ तेज़ी से मेरे पास से गुजरा। व्याकुल सीता पीछे की सीट पर बैठी थीं और क्रोधित लक्ष्मण घोड़ों को भयानक हिंसा से कोड़े मार रहे थे। मैंने उस समय इस बारे में नहीं सोचा और एक और पेय पीने के लिए शराबखाने की ओर चल दिया। बाद में, जब पड़ोसियों ने हम पर राजपरिवार को बिखेरने का आरोप लगाया, तब मुझे पता चला कि मेरी नशे में कही गई बात ने किस तरह की घटनाओं की श्रृंखला शुरू कर दी थी। पंडितों ने फैसला कर लिया था कि सीता अपवित्र हैं और लंका में अपनी पवित्रता साबित करने के लिए उन्होंने जो भी परीक्षा और तपस्या की थी, वह अयोध्या में मान्य नहीं है। उन्होंने राम को सलाह दी कि वे अपने बेदाग जीवन पर लगे इस कलंक को मिटा दें और उन्होंने अपनी गर्भवती पत्नी को वन में भेजने का फैसला किया। राजा की पत्नी को संदेह से परे रखना आवश्यक था। उनका तर्क कुछ अजीब था। महल के चापलूसों ने दावा किया कि राजा हमेशा की तरह अपनी प्रजा की इच्छाओं का पालन कर रहे थे।
दिन-ब-दिन जीवन और भी दयनीय होता गया, परिवार की स्थिति उम्मीद से परे बिगड़ती चली गई। हमें लगभग अपनी जाति से बहिष्कृत कर दिया गया था और कपड़े धोने के जो काम मिलते थे, वे भी बहुत कम और अनियमित थे। जो भी थोड़ी-बहुत कमाई होती, शिवा और मैं उसे शराब पर खर्च कर देते थे। महिलाएं कष्ट सहती थीं और ज्यादातर समय बीमार रहती थीं, लेकिन हमें कोई परवाह नहीं थी। दस साल बीत गए, और जीवन और भी निराशाजनक होता चला गया।
तब हमारे राजा ने संपूर्ण भारत पर अपना प्रभुत्व घोषित करने का विचार किया। उनके सलाहकारों ने उन्हें अश्वमेध यज्ञ करने को कहा, जिसमें वे एक घोड़े को खुला छोड़ देंगे। घोड़ा जहाँ भी जाएगा, वह स्थान राजा का होगा और जो कोई भी इसका विरोध करेगा, उसे राम से युद्ध करके उसे परास्त करना होगा। आसपास के छोटे-छोटे राज्यों के साथ अनेक युद्ध हुए और राम के विष्णु अवतार

के रूप में स्वयं को स्थापित करने के बाद सभी ने आत्मसमर्पण कर दिया। देवताओं के नाममात्र के राजा इंद्र ने हिमालय की एक अज्ञात पहाड़ी रियासत में शरण ली थी और उन्हें जल्द ही सभी भूल गए। जब घोड़ा पास के जंगल में प्रवेश किया, तब राजमहल की राजनीति का नाटक शुरू हुआ।
घोड़े को दो युवकों ने रोक दिया, जो संयोगवश सीता के वनवास के दौरान जन्मे जुड़वां बच्चे थे। यह बात सभी को ज्ञात थी और सबने इन जुड़वां बच्चों को अजेय घोषित कर दिया था। यह खबर प्रसन्न राजा तक पहुंची, जिन्होंने वहां जाने की कृपा की। राजा को यह जानकर राजपरिवार का पुनर्मिलन हुआ कि उनकी वनवासित पत्नी ने जुड़वां पुत्रों को जन्म दिया है। वह कवि-संत वाल्मीकि के आश्रम में रह रही थीं। लेकिन जो मिलन खुशी से होना चाहिए था, वह राम के सलाहकारों के षड्यंत्र के कारण एक दुखद कहानी में बदल गया। उन्होंने सीता को अपवित्र घोषित कर दिया और उनकी पवित्रता पर संदेह जताया क्योंकि वह कवि वाल्मीकि के साथ एक ही छत के नीचे रह रही थीं। वाल्मीकि सबसे संत व्यक्ति थे जिन्हें मैंने कभी देखा था और यह स्पष्ट था कि वे सीता को अपनी पुत्री के समान मानते थे। लेकिन विद्वानों के तर्क पर कोई सवाल नहीं उठाया जा सकता था। सरयू नदी के किनारे एक चट्टान पर फिर से अग्नि प्रज्वलित की गई और लोग सीता को अग्नि में प्रवेश करते हुए अपनी पवित्रता को पुनः सिद्ध करते देखने के लिए उमड़ पड़े।
मैं अपने पसंदीदा शराबखाने में बैठा था, तभी हमें खबर मिली कि राजा ने अपनी निर्वासित पत्नी को ढूंढ लिया है और उससे अपनी पवित्रता साबित करने के लिए आग में कूदने को कहा है। मैंने एक गंजे, बूढ़े आदमी से बहस शुरू कर दी, जिसने राम की स्तुति में गीत गाकर मुझे चिढ़ाया था। मैंने उससे सवाल पूछने शुरू कर दिए। “जब पूरा शहर चाहता था कि राजा यहीं रहे, तो सौतेली माँ की ज़िद पर वह चौदह साल के लिए वनवास क्यों चला गया? क्या उसे अपनी प्रजा की इच्छाओं का ज्ञान नहीं था? उसने छल से बाली की हत्या क्यों की? जब उसकी गर्भवती पत्नी ने कोई गलती नहीं की थी, तो उसे दूर भेजने का क्या औचित्य था? वह उसे बार-बार आग में क्यों धकेल रहा था? उसने शंबुका को क्यों मारा?” जल्द ही यह एक गरमागरम बहस में बदल गया, जिसमें दोनों तरफ से लोग शामिल हो गए और एक-दूसरे को बेरहमी से पीटने और घूंसे मारने लगे। सराय के गुंडों ने हम सबको बाहर निकाल दिया और मैंने अपने मूर्खतापूर्ण गुस्से पर खुद को कोसा, जिसकी वजह से मुझे एक ड्रिंक नहीं मिली। थोड़ी देर बाद मैं एक और

होती हैं, जैसा कि देव कहते हैं। जो कुछ भी हुआ, वही व्यक्ति का भाग्य होता है। कौन जाने?
हम अपनी झोपड़ी से बाहर निकलने से डरते थे और रात के लाल आसमान को भय से देखते रहते थे। फिर वह लाल आसमान जितनी जल्दी शुरू हुआ था उतनी ही जल्दी शांत भी हो गया और हमें राहत मिली कि हम सुरक्षित बच गए। राम अब टूटे हुए इंसान थे, उनमें शासन करने की इच्छा नहीं बची थी। उनके चापलूसों ने उनके नाम पर शासन करना शुरू कर दिया और दिन-ब-दिन स्थिति और भी खराब होती चली गई। राजा अपने कक्ष में बंद रहे, प्रार्थना और उपवास करते रहे, शायद अपनी प्रिय सीता के लिए क्षमा मांगते रहे। विडंबना यह थी कि वे दुनिया के सबसे शक्तिशाली राजा से सीता को वापस पाने में सफल रहे, फिर भी अपनी पत्नी को रूढ़िवादिता के चंगुल से बचाने में असमर्थ रहे। मैं अनिच्छा से स्वीकार करता हूँ कि वे वास्तव में लोगों की परवाह करते थे। जब तक उनकी प्रजा जातिगत कर्तव्यों के सख्त मार्ग से नहीं भटकती थी, तब तक वे उनके शासन में शांतिपूर्ण जीवन जी सकते थे। लेकिन जिस क्षण शंबुका जैसे किसी व्यक्ति ने अपनी किस्मत अपने हाथों में लेने का प्रयास किया, धर्म की लंबी तलवार उन्हें पकड़ लेती। जब पूरी व्यवस्था जन्म के आधार पर भेदभाव और विशेषाधिकारों पर टिकी थी, तब न्यायप्रिय शासक बनना कठिन था। जब तक राम का कुछ हद तक नियंत्रण था, विभिन्न जातियों के बीच एक असहज सहअस्तित्व बना रहा, क्योंकि जनता उनका आदर करती थी। लेकिन सीता की मृत्यु के बाद, राम एकांतप्रिय और अवसादग्रस्त हो गए और पुरोहितों के रूढ़िवादी समूह ने राज्य की बागडोर संभाल ली। अत्याचार और जातिगत नियम और भी कठोर हो गए और जब स्थिति असहनीय हो गई, तो एक-एक करके परिवार शहर छोड़कर चले गए। कुछ समय तक हमारा काम चलता रहा क्योंकि धोबी जाति के कई परिवार गायब हो गए थे और प्रतिस्पर्धा कम हो गई थी, जिससे व्यापार में थोड़ी तरक्की हुई थी। लेकिन आर्थिक स्थिति में थोड़ी वृद्धि के साथ ही, शिव और मैंने अपनी शराब पीने की आदतें फिर से शुरू कर दीं और अपना जीवन फिर से दयनीय बना लिया। एक दिन, शिव ने अपने नियमित झगड़ों में से एक में अपनी पत्नी को चाकू मार दिया और दो दिन बाद उसकी मृत्यु हो गई। वे शिव को पकड़कर जेल में डाल दिया। इस प्रकार, राम के राज्य से हमारा एकमात्र बंधन टूट गया। कुछ महीनों तक सोच-विचार करने के बाद, भारी मन से हमने शहर छोड़ने और दक्षिण की ओर पैदल चलने का फैसला किया। रामा की पीड़ा देखकर जो खुशी मुझे महसूस हुई थी, वह गायब हो गई

और केवल एक भयानक उदासी ही रह गई। सब कुछ अर्थहीन लगने लगा। हमने अपना थोड़ा-बहुत सामान समेटा और अपनी लंबी यात्रा शुरू की।
हम घने जंगलों और बंजर भूमि से होकर गुजरे। कई परिवार दक्षिण की ओर पलायन कर रहे थे और दो बार डाकुओं ने हम पर हमला किया। जिनके पास खोने को कुछ था, उन्होंने वह खो दिया। हम सह्या पर्वतमाला के पास, नर्मदा नदी के किनारे बसे हेहेया पहुंचे – जो कार्त्यवीरअर्जुन की राजधानी थी। शहर काफी समृद्ध प्रतीत हुआ। पुराने राजा की मृत्यु हो चुकी थी, जिन्हें परशुराम के उग्र ब्राह्मण समूह ने मार डाला था। अब उनका पुत्र राज्य पर शासन कर रहा था। हम एक वर्ष तक वहीं रहे, क्योंकि जाति व्यवस्था इतनी कठोर नहीं थी और हमें काम मिल गया। लेकिन स्थानीय लोग प्रवासियों से नाराज़ होने लगे और जल्द ही लाठी लिए और संकीर्ण मानसिकता वाले गुंडे सभी नए आने वालों को निशाना बनाने लगे। जो शहर कभी फलता-फूलता था, वह जल्द ही मंदबुद्धि हो गया। एक बार गुंडों के एक गिरोह ने मुझे सड़क पर पकड़ लिया और मुझे 'काला दक्षिण भारतीय' कहकर पीटा। बचने के लिए मैंने अयोध्या में सीखी हुई संस्कृत में बोलने की कोशिश की। यह और भी खतरनाक साबित हुआ। मुझे इस बात का दुखद एहसास हुआ कि वे दक्षिण भारतीयों से भी अधिक उत्तर भारतीयों से नफरत करते थे। इस बेलगाम क्षेत्रवाद के कारण शहर तबाह हो गया और राजा असहाय प्रतीत हुआ।
हम एक बार फिर आगे बढ़े और जब हम गोकर्ण पहुँचे, जहाँ रावण के आदेश पर माया सभ्यता के लोगों ने भव्य शिव मंदिर का निर्माण करवाया था, तो हम इतनी थक चुके थे कि हिल भी नहीं सकते थे। हमने कुछ समय वहीं रुकने का फैसला किया, जंगल के किनारे, शहर से दूर, जहाँ हमें, अछूत होने के कारण, प्रवेश करने की अनुमति नहीं थी। हमने जैसे-तैसे गुजारा किया और धीरे-धीरे अपनी दिनचर्या में वापस आ रहे थे, तभी माला को बुखार आया और उनका निधन हो गया। यह अचानक और अप्रत्याशित था, हालाँकि वह सत्तर वर्ष से अधिक की थीं। इससे मेरे हृदय में एक गहरा खालीपन आ गया। मैंने उन्हें नदी के किनारे दफनाया और अपनी यात्रा फिर से शुरू की। मैं गोकर्ण के पास ही था जब मुझे खबर मिली कि पुरोहितों ने राम से लक्ष्मण को मृत्युदंड देने का आदेश दिलवाया है। छोटे राजकुमार ने पुरोहितों द्वारा निर्धारित कई कठोर और बेतुके नियमों पर सवाल उठाना शुरू कर दिया था। उन्होंने शासन में रुचि लेना शुरू कर दिया था और पाया कि कई नियम विचित्र थे और आम लोगों को कष्ट पहुँचा रहे थे। अर्थव्यवस्था चरमरा रही थी क्योंकि कुशल श्रमिक और कारीगर पलायन करने लगे

थे। पुरोहित लक्ष्मण से बदला लेने के अवसर की प्रतीक्षा कर रहे थे। एक दिन, उनकी प्रसन्नता के लिए, स्वयं राम ने उन्हें यह अवसर प्रदान किया। साधुओं का एक समूह राजा से एकांत में मिलना चाहता था। राम ने लक्ष्मण को निर्देश दिया था कि वे किसी को भी अपने कक्ष में प्रवेश न करने दें, क्योंकि उन्होंने ब्राह्मणों के एक समूह को पहले ही एकांत में मिलने की अनुमति दे दी थी। एक अन्य महर्षि ने अंदर आने की जिद की। उन्होंने राम के पूरे वंश को श्राप देने की धमकी दी। भयभीत होकर लक्ष्मण ने उन्हें अंदर आने दिया, जिससे दूसरा समूह क्रोधित हो गया। उन्होंने विभिन्न शास्त्रों के लंबे- लंबे उद्धरण दिए और परिणामस्वरूप राम ने अपने भाई को इस 'गंभीर अपराध' के लिए मृत्युदंड देने का आदेश दिया। इस प्रकार महान योद्धा और मेघनाद का वध करने वाले लक्ष्मण का अंत हुआ; वह व्यक्ति जिसने अपने भाई के साथ 14 वर्षों के लंबे वनवास में जाने के लिए अपनी युवा पत्नी को छोड़ दिया था; वह व्यक्ति जिसने बचपन से ही अपने भाई की अत्यंत भक्ति से सेवा की थी। उनका सारा बलिदान, भक्ति और प्रेम एक ऐसे व्यक्ति के चरणों में नतमस्तक हो गया जो एक आदर्श शासक के रूप में अपनी छवि को लेकर आसक्त था; एक ऐसा व्यक्ति जो अपने सलाहकारों के नियंत्रण में था। एक ऐसा व्यक्ति जिसने चुपचाप और गंभीर रूप से पीड़ा सहन की, फिर भी अपने पुजारियों द्वारा खींची गई रेखाओं को पार करने का साहस नहीं किया।
जब मैं पायस्विनी नदी पार कर रहा था, तभी एक यात्रा कर रहे साधु से मुझे राम के अंत का समाचार मिला। राम ने अपने धर्म के लिए अपने दो सबसे प्रिय लोगों का बलिदान कर दिया था। वे दिन-प्रतिदिन अवसादग्रस्त और एकांतप्रिय होते गए और अंततः सरयू नदी के अंधकारमय जल में उन्हें शाश्वत शांति प्राप्त हुई। इतिहास के सबसे तेजस्वी और गौरवशाली पुरुषों में से एक को पराजित करने वाले राजा का यह एक दुखद अंत था। राम ने शास्त्रों का अक्षरशः पालन किया। उन्होंने एक दुखी जीवन व्यतीत किया और अपने धर्म के लिए सब कुछ
- अपनी पत्नी, अपने भाई और अपनी अंतरात्मा - का बलिदान कर दिया। मैं आज भी उनकी आँखों में उस असहाय भाव को नहीं भूल सकता जब उन्होंने मेरे छोटे शंबुका के विरुद्ध तलवार उठाई थी। उनका रूप उस व्यक्ति से बिल्कुल विपरीत था जिसे उन्होंने पराजित किया था।
रावण एक ऐसा व्यक्ति था जिसने अपने मन मुताबिक जीवन जिया, वही किया जो उसे सही लगा और धर्मगुरुओं द्वारा लिखी गई बातों की उसे कोई परवाह नहीं थी; एक

स्वीकृतियाँ
असुर कई लोगों का ऋणी है। सबसे पहले और सर्वप्रथम, मैं अपने माता-पिता, स्वर्गीय एल. नीलकांतन और चेल्लमल नीलकांतन का बहुत आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे भारतीय महाकाव्यों की जादुई दुनिया से परिचित कराया। मैं अपने भाइयों, लोकनाथन और राजेंद्रन का भी बहुत आभारी हूँ, जिन्होंने मेरे माता- पिता और पड़ोसियों के साथ मिलकर कई ऐसी मनमोहक शामें बनाईं, जिनमें भारतीय दर्शन, महाकाव्यों और लोक कथाओं पर चर्चा और बहस होती थी। मेरी बहन चंद्रिका और उनके पति परमेश्वरन ने मेरे व्यक्तित्व और लेखक के विकास में जो भूमिका निभाई है, उसे अनदेखा नहीं किया जा सकता। मेरी भतीजियों, दिव्या, राखी और भतीजे दिलीप की अक्सर बिना माँगे की गई, बेबाक और शरारती आलोचना ने मुझे उन कल्पनाओं में डूबने से रोका है, जिनमें मैं आमतौर पर डूब जाता हूँ। यह पुस्तक मेरे 25 वर्षों के पुराने मित्र संतोष प्रभु के साथ होने वाली गरमागरम बहसों के बिना आकार नहीं ले पाती, जिनका आनंद मैं आज भी लेता हूँ। मैं लक्ष्मी नायर का भी आभारी हूं, जिन्होंने मेरे पहले मसौदे को सुधारने में काफी मेहनत की, और अपने मित्र और सहकर्मी प्रेमजीत का भी, जिन्होंने अंतिम मसौदे को पढ़ा और उसमें सुधार किया। मैं राजीव प्रकाश का भी आभारी हूं, जिन्होंने पूरी कहानी को ध्यानपूर्वक पढ़ा और वर्तनी की गलतियों और त्रुटियों को बताया।
रावण और भद्रा को अपनी बात कहने का अवसर देने के लिए मैं लीडस्टार्ट की पूरी टीम का आभारी हूँ। लीडस्टार्ट की संपादकीय निदेशक चंद्रलेखा मैत्रा का प्रोत्साहन अद्भुत था और मैं उनका बहुत आभारी हूँ। उनके समर्थन और मार्गदर्शन के बिना, असुर मेरे लैपटॉप में पड़े कुछ शब्दों के अलावा कुछ भी नहीं होता। एंड्रिया बार्टन डिसूजा, जिन्होंने एक नवोदित लेखक के मसौदे को सुधारने और संपादित करने की कठिन प्रक्रिया से गुज़रा, धैर्य के

लिए पुरस्कार की पात्र हैं। मैं मिष्टा रॉय को उनके शानदार कवर डिज़ाइन के लिए और एम्पलक्रिएशन्स स्टूडियो के सुबू और अशोक को चित्रों के लिए धन्यवाद देता हूँ।
मेरी जीवनसाथी अपर्णा के सहयोग, प्रेम और प्रोत्साहन के बिना यह पुस्तक संभव नहीं हो पाती। मैं उनका बहुत आभारी हूँ। और हमारे दो प्यारे बच्चे अनन्या और अभिनव, जिन्हें मेरी लिखी कहानियों से ज़्यादा मेरी सुनाई कहानियों में रुचि है, मैं उन्हें अगले सौ रातों तक सौ कहानियाँ सुनाने का वादा करता हूँ। अंत में, मैं भारत के उन गुमनाम कहानीकारों का आभारी हूँ, जिन्होंने तीन सहस्राब्दियों से कहानी सुनाने की परंपरा को जीवित रखा है। और सबसे ज़्यादा मैं अपने देश और उसके धार्मिक पौराणिक कथाओं के अथाह भंडार का आभारी हूँ।

शब्दावली
अग्नि परीक्षा। प्राचीन भारत में, एक महिला की पवित्रता की परीक्षा इस प्रकार ली जाती थी; यदि महिला अग्नि परीक्षा में सफल नहीं होती थी, तो उसे जलते हुए चिराग में प्रवेश कराया जाता था।
Agni pariksha
वह बाल-बाल बच गई, उसे पवित्र माना जाता था।
अंगवस्त्र शॉल, जिसे कुलीन लोग पहनते थे
एक भारतीय औषधीय वृक्ष; रामायण महाकाव्य में, सीता रावण की लंका में अपने कारावास का समय इसी वृक्ष के उपवन में बिताती हैं।
अशोक
अशोक के पेड़
अस्त्र: तीर/शाखा; महाकाव्यों में अक्सर इन्हें दैवीय शक्तियों से युक्त बताया गया है। असुर: हिंदू पौराणिक कथाओं में असुरों को अंधकार के राक्षस के रूप में चित्रित किया गया है - जो देवताओं के विपरीत हैं। अथर्व: चौथा वेद, जिसमें जादू, मंत्र आदि का वर्णन है। आत्मा: आयुर्वेद: प्राचीन भारतीय चिकित्सा प्रणाली।
बख्शीश रिश्वत होती है, लेकिन इसमें यह भाव निहित होता है कि प्राप्तकर्ता इसे अपना अधिकार समझता है, जैसे कोई टिप या कमीशन। भांग मादा कैनाबिस पौधे से बना एक हल्का मादक पदार्थ होता है। बिंदी हिंदू महिलाओं द्वारा माथे पर लगाई जाने वाली लाल बिंदी होती है।
हिंदू धर्म के त्रिदेवों में से एक ब्रह्मा ने ब्रह्मांड की रचना की। इस पुस्तक में, यह एक सामान्य नाम है।
ब्रह्मा
असुर मूल की प्राचीन जनजाति
हिंदू मान्यताओं के अनुसार, ब्रह्म ही वह सर्वोच्च शक्ति है जो ब्रह्मांड की रचना और अस्तित्व के लिए जिम्मेदार है।
हिंदू समाज को चार वर्णों में विभाजित किया गया था (विवरण के लिए वर्ण अनुभाग देखें), और आगे इसे विभिन्न उप-वर्गों में विभाजित किया गया था। जातियाँ या नस्लें। जातियाँ क्षेत्र के अनुसार भिन्न-भिन्न थीं (उदाहरण के लिए, उत्तर में कश्मीर का ब्राह्मण और दूसरे क्षेत्र का ब्राह्मण)।

दक्षिण में स्थित आंध्र प्रदेश के लोग एक ही वर्ण के थे, लेकिन अलग-अलग जातियों के होने के कारण वे आपस में विवाह नहीं करते थे।
चैत्र भारतीय महीना है जब वसंत ऋतु शुरू होती है।
चंदग्यो
उपनिषदों में से एक सबसे महत्वपूर्ण उपनिषद।
उपनिषद
चंद्रहास रावण की तलवार है - पौराणिक कथाओं के अनुसार, यह भगवान शिव द्वारा उसे उपहार में दी गई थी।
दक्षिण भारत का एक ढोल, जिसे घुमावदार छड़ी से बजाया जाता है; आज भी इसे असुर वाद्य या 'संगीत वाद्ययंत्र' कहा जाता है।
चेन्दा
यह असुरों की परंपरा है और केरल तथा दक्षिण कर्नाटक और तमिलनाडु के कुछ हिस्सों में त्योहारों के दौरान इसका उपयोग अभी भी किया जाता है।
चेट्टी दक्षिण भारत की व्यापारी जाति है; श्रेष्ठी शब्द का बिगड़ा हुआ रूप है; करोड़ का अर्थ है एक सौ लाख।
शाब्दिक अर्थ में 'दर्शन'; भारतीय सम्राटों के लिए यह प्रथा थी कि वे बालकनी में प्रकट होकर अपने अनुयायियों की याचिकाएँ सुनते थे।
दर्शन
विषयों
दस मुखों वाला दशमुख
दासा सेवक या दास
सामान्य अनुवाद: 'कर्तव्य, धर्म आदि'; लेकिन धर्म इससे कहीं अधिक व्यापक है
- यह जीवन का नियम है; विलोम शब्द:
धर्म
अधर्म
धर्मयुद्ध युद्ध की प्राचीन नैतिक संहिता
धोबी, धोबी जाति
पुरुषों का पारंपरिक निचला वस्त्र, जो बिना सिले कपड़े के एक टुकड़े से बनाया जाता था; धोती को भी पहना जाता था।
धोती

प्राचीन भारत में निम्न वर्ग की महिलाओं द्वारा अपनाई जाने वाली विभिन्न शैलियाँ
दरबार न्यायालय या सभा
गांधारा (वर्तमान में अफगानिस्तान का कंधार)
देवताओं के दरबार में गायक; उन्हें प्रेम के लिए तड़पते अलौकिक प्राणी माना जाता था और वे इस प्रकार कार्य करते थे।
गंधर्व देवताओं और मनुष्यों के बीच संदेशवाहक होते हैं। इस पुस्तक में, उन्हें एक अन्य आदिवासी जनजाति के रूप में दर्शाया गया है, जो समाज के हाशिये पर निवास करती है।
असुर और देव साम्राज्यों के बीच संघर्ष।
घाट: नदी के किनारे तक जाने वाली चौड़ी सीढ़ियाँ जिनका उपयोग स्नान करने वाले या कपड़े धोने वाले करते हैं। गोबर: गाय का गोबर।
लें लें
भगवान शिव की जय हो!
महादेव
इंद्र, देवताओं के राजा; इस पुस्तक में, यह उस जनजाति का सामान्य नाम है जो देवों के नाममात्र शासक हैं। इंद्रजीत, 'इंद्र को पराजित करने वाला' - मेघनाद जंबू का दूसरा नाम।
एशियाई महाद्वीप का प्राचीन नाम
द्वीप
जय, जय, जय हो; विजय
समय; समय के देवता और मृत्यु के देवता, जिन्हें आमतौर पर यम के नाम से जाना जाता है (यह नाम समय की इकाई से लिया गया है)।
अलग
समय मापना – यमम)
कलरिपयट्टू दक्षिण भारत, विशेषकर केरल की एक पारंपरिक मार्शल आर्ट है। कर्म का अर्थ है क्रिया या कार्य।
किंगारा के सेवक; सैनिक-दास
हिंदू पौराणिक कथाओं में ये आधे घोड़े और आधे मनुष्य के दिव्य संगीतकार थे। इस पुस्तक में, वे हैं...
दस्ताने

उन्हें बस एक और जनजाति की तरह माना जाता था।
हिंदू पौराणिक कथाओं में, उन्हें धन का देवता और व्यापारियों का संरक्षक देवता माना जाता है। इस कहानी में, वे बस एक आम आदमी हैं जो एक छोटा व्यवसाय चलाते हैं।
क्योंकि
विशाल व्यापारिक साम्राज्य
कुर्ता भारतीय शर्ट
लाख एक सौ हजार
लंका के स्वामी लंकेश्वर, रावण का दूसरा नाम।
लाठी एक प्रकार की छड़ी होती है जिसका इस्तेमाल आमतौर पर पुलिस भीड़ को नियंत्रित करने के लिए करती है।
दक्षिण भारतीय पुरुषों का पारंपरिक निचला वस्त्र, जो बिना सिले कपड़े के एक टुकड़े से बना होता है जिसे लपेटा जाता है।
लुंगी
कमर के आसपास
मलायन, भारत के पश्चिमी घाट (सह्य) की जनजातियाँ। ब्राह्मणों के प्रमुख होने से पहले ये जनजातियाँ पुजारी थीं।
वन्नन जाति: आज भी मालाबार क्षेत्र में कई अनुष्ठान इसी जाति के लोगों द्वारा संपन्न किए जाते हैं। माता:
मेहंदी त्वचा को अस्थायी रूप से सजाने के लिए मेहंदी लगाने की प्रक्रिया है, खासकर शादी, मेले या समारोहों के लिए।
म्लेचा बर्बर/ असभ्य लोग
मोक्ष (मोटा-मोटा अनुवाद: 'मुक्ति'; बौद्ध धर्म में निर्वाण) मृदंगम, Milavu,
ताल वाद्ययंत्र, जो चेंडा की तरह, असुर वाद्ययंत्रों के रूप में जाने जाते हैं
तिमिला और
मद्दल्लम
मुंडू दक्षिण भारत का एक पारंपरिक निम्न वर्ग का औपचारिक वस्त्र है, जिसे पुरुष और महिलाएं दोनों पहनते हैं। नागा एक प्राचीन जनजाति है, जिसका शाब्दिक अर्थ है 'सांप'।

यह एकमात्र भारतीय त्योहार है जो असुर राजा महाबली के सम्मान में मनाया जाता है। यह केरल का राजकीय त्योहार है।
ओणम के दौरान लोग आज भी मानते हैं कि उस असुर राजा का शासनकाल, जिसे भगवान विष्णु ने धोखे से उसके राज्य से वंचित कर दिया था,
उनका वामन अवतार आदर्श था, जब प्रत्येक मनुष्य को समान माना जाता था। पल्लू, साड़ी के ढीले सिरे को कहते हैं जिसे महिलाएं पहनती हैं। पंचायत, भारतीय ग्राम परिषद, जिसमें आमतौर पर 5 सदस्य होते हैं।
शाब्दिक अर्थ 'सर्वोच्च ईश्वर' और शिव का एक अन्य नाम, जो हिंदू धर्म के त्रिमूर्ति देवताओं में से एक हैं (अन्य दो हैं...)
परमेस्वारा
ब्रह्मा और विष्णु)
अछूत: सबसे निचली और सबसे अधिक भेदभाव वाली जाति। पार्वती, भगवान शिव की पत्नी।
पशुपति, जिसका शाब्दिक अर्थ है 'पशुओं का स्वामी', आमतौर पर शिव पाताल के लिए प्रयोग किया जाता है; इस पुस्तक में इसका अर्थ है निर्वासन में असुरों की राजधानी; केरल में पूर्णा नदी, जिसे पेरियार नदी के नाम से भी जाना जाता है।
प्रभु सर, एक सम्मानसूचक उपाधि; इसका प्रयोग धनी व्यक्ति के लिए भी किया जाता है। पूजा, किसी देवता के प्रति श्रद्धापूर्वक किया जाने वाला धार्मिक अनुष्ठान। राग, भारतीय संगीत के पैमाने।
राज धर्म: शासक की आचार संहिता। राजसूय: प्राचीन भारतीय राजाओं द्वारा किया जाने वाला यज्ञ, जो स्वयं को सम्राट बनने के योग्य शक्तिशाली समझते थे।
राक्षस: पौराणिक दुष्ट प्राणी; रावण को अक्सर राक्षस राजा या 'राक्षसों का राजा' कहा जाता है। सरस्वती: एक शक्तिशाली नदी जो कभी सिंधु और गंगा के बीच बहती थी लेकिन अब विलुप्त हो चुकी है। रुद्र वीणा: प्राचीन तार वाद्य यंत्र।
सह्या पर्वतमाला भारत के पश्चिमी तट के समानांतर स्थित है। संहिता पवित्र भजनों/विज्ञान/ज्ञान का संग्रह है। साड़ी भारतीय महिलाओं का पारंपरिक परिधान है, जो 6 गज बिना सिले कपड़े से बनी होती है। सरपंच ग्राम प्रधान या पंचायत प्रमुख होता है।

हिंदू धर्म के त्रिदेवों में से एक - संहारक, जो प्रत्येक युग के बाद ब्रह्मांड का विनाश करता है, जिसके बाद
शिव ब्रह्मा ने इसे पुनः रचा है। इस पुस्तक में, यह एक प्राचीन असुर राजा का नाम है जो अपने कर्मों के फलस्वरूप देवता बन गया था।
महान कार्य।
श्रावण हिंदू पंचांग का पाँचवाँ महीना; इसे पवित्र महीना माना जाता है। शूद्र चार वर्णों में सबसे निचला वर्ण है, अन्य तीन वर्ण क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य हैं। सिंधु
‘जो याद रखा जाता है’; विभिन्न ऋषियों द्वारा रचित हिंदू कानून, जिनमें मनुस्मृति भी शामिल है, जो समाज के लिए संहिता है।
smritis
प्राचीन भारत में
सोमा वैदिक काल में एक महत्वपूर्ण अनुष्ठानिक पेय था।
प्राचीन भारतीय प्रथा जिसमें एक लड़की दूल्हों के समूह में से अपना दूल्हा चुनती है, कभी-कभी किसी महिला के माध्यम से।
swayamvara
प्रतियोगिता
tapsya Penance
तिमिला भारत में प्रयुक्त एक ताल वाद्य यंत्र है, जिसे असुर वाद्य यंत्र के रूप में भी जाना जाता है। त्रिमूर्ति देवताओं की त्रिमूर्ति है। पवित्र ग्रंथों का संग्रह; ये ग्रंथ, अपने ब्राह्मण ग्रंथों सहित, भारतीय संस्कृति का आधार बनते हैं।
उपनिषदों
दार्शनिक विचार
वाना ग्रोव
शाब्दिक अर्थ में 'बंदर'। इस पुस्तक में, वे असुर और देवों के मिश्रित मूल की एक जाति हैं, जो दक्षिण-मध्य क्षेत्र पर प्रभुत्व रखती है।
पृौढ अबस्था
भारत

शाब्दिक रूप से 'रंग' लेकिन अर्थ में 'सामाजिक समूह'; हिंदू समाज को चार मूल वर्णों में विभाजित किया गया था, जिनमें ब्राह्मण (पुजारी और शिक्षक) सर्वोच्च थे। क्षत्रिय योद्धा थे जो दूसरे पायदान पर थे;
वर्ण और वैश्य या व्यापारी तीसरे स्थान पर थे। शूद्र जाति व्यवस्था में सबसे निचले पायदान पर थे।
किसान, शिल्पकार, पैदल सैनिक, छोटे व्यापारी, नर्तक, संगीतकार आदि। चार मूल वर्णों के नीचे सबसे गरीब, अछूत आदि आते थे।
प्राचीन हिंदू जीवन शैली में, व्यक्ति के आदर्श जीवनकाल को चार चरणों में विभाजित किया गया था: विद्यार्थी, गृहस्थ, सेवानिवृत्त और संन्यासी। यही आदर्श वर्ण-आश्रम-धर्म जीवन प्रणाली का आधार बना।
varnashrama
जिस समाज को व्यक्ति की स्वाभाविक प्रतिभाओं और प्रवृत्तियों के अनुसार चार सामाजिक समूहों (वर्णों) में विभाजित किया गया था -
धर्म
बुद्धिजीवी और पुरोहित (ब्राह्मण), प्रशासक और योद्धा (क्षत्रिय), व्यापारी (वैश्य) और सर्वहारा (शूद्र)।
हिंदू पौराणिक कथाओं में वरुण समुद्र के देवता हैं। इस पुस्तक में, उन्हें एक समुद्री डाकू के रूप में दर्शाया गया है जो हिंद महासागर पर राज करता था।
हिंदुओं के चार पवित्र ग्रंथ (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद) को समस्त ज्ञान का भंडार माना जाता है।
वेदों
दुनिया
विजया विजय
विमान: उड़ने वाली मशीन; महान महाकाव्य रामायण में रावण की पुष्पक नामक उड़ने वाली मशीन का वर्णन है।
हिंदू धर्म के त्रिदेवों में दूसरे देवता, जो ब्रह्मांड की लय की रक्षा करते हैं और संरक्षक हैं।
विष्णु
पुस्तक में, उस वंश का नाम है जिसने देव वर्चस्व के लिए काम किया।

यज्ञ एक ऐसी रस्म है जिसमें वैदिक मंत्रों के उच्चारण के साथ अग्नि में जड़ी-बूटियों से बनी औषधियों का अर्पण किया जाता है।
हिंदू पौराणिक कथाओं में अलौकिक शक्तियों को वृक्षों और जंगलों के संरक्षक देवता भी माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि वे छिपे हुए खजानों की रक्षा करते हैं। इस प्रजाति की मादा, जिसे यक्षी कहा जाता है, अपने आकर्षण के लिए प्रसिद्ध है।
यक्षों
वे जंगल में बेखबर यात्रियों का खून पीते हैं या उन्हें खा जाते हैं। इस पुस्तक में, वे केवल एक ऐसी जनजाति हैं जिन्हें विजय प्राप्त करने वाले देवों ने हाशिए पर धकेल दिया था।

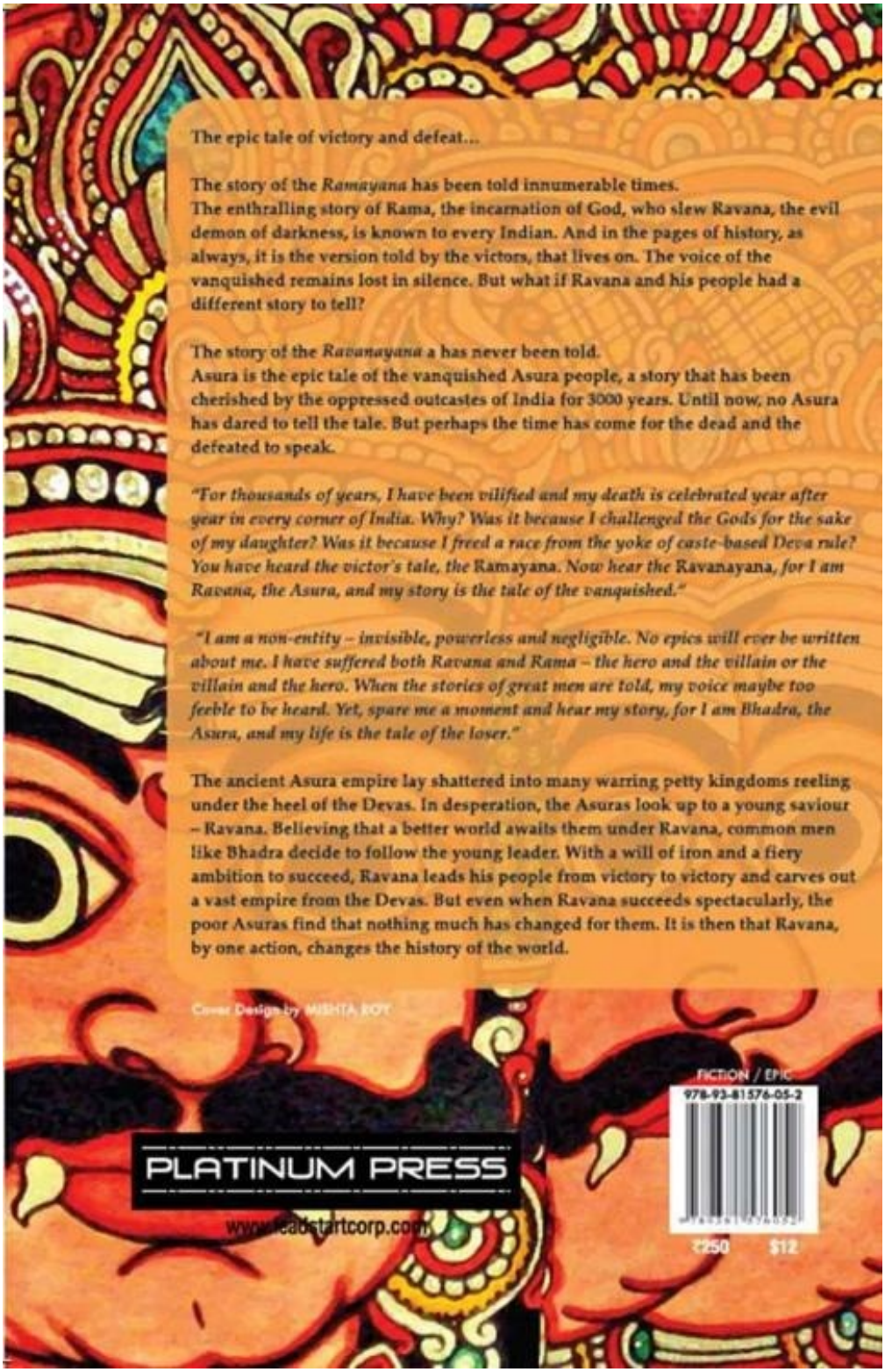

The epic tale of victory and defeat...

The story of the *Ramayana* has been told innumerable times.
The enthralling story of Rama, the incarnation of God, who slew Ravana, the evil demon of darkness, is known to every Indian. And in the pages of history, as always, it is the version told by the victors, that lives on. The voice of the vanquished remains lost in silence. But what if Ravana and his people had a different story to tell?

The story of the *Ravanayana* a has never been told.
Asura is the epic tale of the vanquished Asura people, a story that has been cherished by the oppressed outcastes of India for 3000 years. Until now, no Asura has dared to tell the tale. But perhaps the time has come for the dead and the defeated to speak.

"For thousands of years, I have been vilified and my death is celebrated year after year in every corner of India. Why? Was it because I challenged the Gods for the sake of my daughter? Was it because I freed a race from the yoke of caste-based Deva rule? You have heard the victor's tale, the Ramayana. *Now hear the* Ravanayana, *for I am Ravana, the Asura, and my story is the tale of the vanquished."*

"I am a non-entity – invisible, powerless and negligible. No epics will ever be written about me. I have suffered both Ravana and Rama – the hero and the villain or the villain and the hero. When the stories of great men are told, my voice maybe too feeble to be heard. Yet, spare me a moment and hear my story, for I am Bhadra, the Asura, and my life is the tale of the loser."

The ancient Asura empire lay shattered into many warring petty kingdoms reeling under the heel of the Devas. In desperation, the Asuras look up to a young saviour – Ravana. Believing that a better world awaits them under Ravana, common men like Bhadra decide to follow the young leader. With a will of iron and a fiery ambition to succeed, Ravana leads his people from victory to victory and carves out a vast empire from the Devas. But even when Ravana succeeds spectacularly, the poor Asuras find that nothing much has changed for them. It is then that Ravana, by one action, changes the history of the world.

Cover Design by MISHTA ROY

FICTION / EPIC
978-93-81576-05-2

PLATINUM PRESS
www.leadstartcorp.com

₹250 $12